पाइअ-सद्द-महण्णवो।

[प्राकृत-शब्द-महार्णवः

अर्थात्

प्राकृत भाषाओं के शब्दों का, संस्कृत-प्रतिशब्दों से युक्त, हिन्दी अर्थों से अलंकृत, प्राचीन ग्रन्थों के अवतरणों और परिपूर्ण प्रमाणों से विभूषित बृहत्कोष।

(तृतीय खण्ड)

कर्त्ता

कलकत्ता-विश्वविद्यालय के प्राकृत-साहित्य-व्याख्याता, न्याय-व्याकरण-तीर्थ

पंडित हरगोविन्ददास त्रिकमचंद शेठ।

कलकत्ता

प्रथम आवृत्ति।

संवत १९८२।

PĀIA-SADDA-MAHAṆṆAVO

A COMPREHENSIVE PRAKRIT HINDI DICTIONARY

with Sanskrit equivalents, quotations

AND

complete references.

—— :o: ——

Vol. II

—— :o: ——

BY

PANDIT HARGOVIND DAS T. SHETH, Nyaya-Vyakarana-tirtha,

Lecturer in Prakit. Calcutta University.

CALCUTTA.

—— :o: ——

FIRST EDITION

—— :o: ——

—— :o: ——

1925

Printed by GANESH PERSHAD, at the Shri Raja Ram Press, 20, Armanian Street,
and Published by Pandit HARGOVIND DAS T. SHETH, 26 Zakariah Street, Calcutta.

प्रमाणग्रन्थों (रेफरन्सेज़) की सूची का कोड़पत्र ।

संकेत ।		ग्रन्थ का नाम ।	संस्करण आदि ।		जिसके अंक दिये गये हैं वह ।
अज्झ	=	अध्यात्ममतपरीक्षा	१ भीमसिंह माणक, संवत् १६३३	...	गाथा
			२ जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर	...	,,
आत्म	=	आत्मसंबोधकुलक	†हस्तलिखित	...	,,
आत्महि	=	आत्महितोपदेशकुलक	,,	...	,,
आत्मानु	=	आत्मानुशास्तिकुलक	,,	...	,,
उत्त	=	उत्तराध्ययन सूत्र	‡३ हस्तलिखित	...	अध्ययन, गाथा
उपपं	=	उपदेशपंचाशिका	†हस्तलिखित	...	गाथा
उवकु	=	उपदेशकुलक	,,	...	,,
कम्म ५	=	कर्मग्रन्थ पाँचवाँ	२ भावनगर जैनधर्म प्रसारक सभा, संवत १६६८		,,
कम्म ६	=	कर्मग्रन्थ छठवाँ	,,		,,
कर्पूर	=	कर्पूरचरित (भाण)	गायकवाड़ ओरिएन्टल सिरिज़, नं. ८. १६१८		पृष्ठ
कर्म	=	कर्मकुलक	†हस्तलिखित	...	गाथा
किरात	=	किरातार्जुनीय (व्यायोग)	गायकवाड़ ओरिएन्टल सिरिज़, नं ८. १६१८ ...		पृष्ठ
कुलक	=	कुलकसंग्रह	जैन श्रेयस्कर मंडल, म्हेसाणा, १६१४	...	,,
खा	=	खामणाकुलक	†हस्तलिखित	...	गाथा
गच्छा	=	गच्छाचारपयन्नो	१ चंदुलाल मोहोलाल कोठारी, अहमदाबाद, संवत् १६८०		अधिकार•
			२ शेठ जमनाभाई भगुभाई, अहमदाबाद, १६२४ ...		,,
चेइय	=	चेइयवंदणमहाभास	जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर, संवत् १६७७		गाथा
जीवस	=	जीवसमासप्रकरण	†हस्तलिखित	...	,,
तंदु	=	तंदुवेयालियपयन्नो	२ दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १६२२ ...		पत्र
त्रि	=	त्रिपुरदाह (डिम)	गायकवाड़ ओरिएन्टल सिरिज़, नं ८. १६१८		पृष्ठ
देवेन्द्र	=	देवेन्द्रनरकेन्द्रप्रकरण	जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर. १६२२ ...		गाथा
द्रव्य	=	द्रव्यसंग्रह	जैन-ग्रन्थ-रत्नाकर-कार्यालय, बम्बई, १६०६ ...		,,
धम्मो	=	धम्मोवएसकुलक	†हस्तलिखित	...	,,
धर्मवि	=	धर्मविधिप्रकरण सटीक	जेसंगभाई छोटालाल सुतरीया, अहमदाबाद, १६२४		पत्र
धर्मसं	=	धर्मसंग्रहणी	दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई. १६१६—१८		गाथा
धात्वा	=	प्राकृतधात्वादेश	एसियाटिक सोसाइटी ओफ बेंगाल, १६२४	...	पृष्ठ
निसा	=	निशाविरामकुलक	†हस्तलिखित	...	गाथा
पव	=	प्रवचनसारोद्धार	२ दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, १६२२—२५ ...		+द्वार
पार्थ	=	पार्थपराक्रम	गायकवाड़ ओरिएन्टल सिरिज़, नं० ४. १६१७		पृष्ठ
पिंड	=	पिण्डनिर्युक्ति	२ दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १६२२ ...		गाथा
पिंडभा	=	पिंडनिर्युक्तिभाष्य	,,	...	,,

† श्रद्धेय श्रीयुत केशवलालभाई प्रेमचंद मोदी, बी. ए., एल्. एल्. बी. से प्राप्त।

‡ सुखबोधा-नामक प्राकृत-बहुल टीका से विभूषित यह उत्तराध्ययन सूत्र की हस्तलिखित प्रति आचार्य श्री विजयमेघसूरिजी के भंडार से श्रद्धेय श्रीयुत के. प्रे. मोदी द्वारा प्राप्त हुई थी, इस प्रति के पत्र १८६ हैं।

+ द्वार-प्रारम्भ के पूर्व के प्रस्ताव के लिए 'पव' के बाद केवल गाथा के अंक दिए गए हैं।

संकेत।	ग्रन्थ का नाम।	संस्करण आदि।		जिसके अंक दिये गये हैं वह।
प्रवि	= प्रवज्याविधानकुलक	†हस्तलिखित		गाथा
प्राकृ	= प्राकृतसर्वस्व (मार्कण्डेयकृत)	विजागापटम्		पृष्ठ
भवि	= भविसयत्तकहा	*१ गायकवाड़ ओरिएन्टल् सिरिज़, १९२३	...	
मंगल	= मंगलकुलक	†हस्तलिखित	...	गाथा
मन	= मनोनिग्रहभावना	,,	...	,,
मोह	= मोहराजपराजय	गायकवाड़ ओरिएन्टल् सिरिज़, नं. ९, १९१८		पृष्ठ
यति	= यतिशिक्षापंचाशिका	†हस्तलिखित	...	गाथा
रत्न	= रत्नत्रयकुलक	,,	...	,,
रुक्मि	= रुक्मिणीहरण (ईहामृग)	गायकवाड़ ओरिएन्टल् सिरिज़, नं० ८, १९१८		पृष्ठ
वि	= विषयत्यागोपदेशकुलक	†हस्तलिखित	...	गाथा
विचार	= विचारसारप्रकरण	आगमोदय समिति, बम्बई, १९२३	...	,,
श्रावक	= श्रावकप्रज्ञप्ति	श्रीयुत केशवलाल प्रेमचंद संपादित, १९०५	...	गाथा
श्रु	= श्रुतास्वाद	†हस्तलिखित	...	,,
संबोध	= संबोधप्रकरण	जैन-ग्रन्थ-प्रकाशक सभा, अहमदाबाद, १९१६	...	पत्र
संवि	= संवेगचूलिकाकुलक	†हस्तलिखित	...	गाथा
संवेग	= संवेगमंजरी	,,	...	,,
सट्ठि	= सट्ठिसयपयरण सटीक	सत्यविजय जैन ग्रन्थमाला, नं० ६, अहमदाबाद, १९२५		,,
समु	= समुद्रमथन (समवकार)	गायकवाड़ ओरिएन्टल् सिरिज़, नं० ८, १९१८		पृष्ठ
सम्मत्त	= सम्यक्त्वसप्तति सटीक	दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १९१६	...	पत्र
सम्यक्त्वो	= सम्यक्त्वोत्पादविधिकुलक	†हस्तलिखित	...	गाथा
सा	= सामान्यगुणोपदेशकुलक	,,	...	,,
सिक्खा	= शिक्षाशतक	,,	...	,,
सिरि	= सिरिसिरिवालकहा	दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई १९२३	...	,,
सुख	= सुखबोधा टीका (उत्तराध्ययनस्य)	‡हस्तलिखित	...	अध्ययन, गाथा
सूअनि	= सूत्रकृतांगनिर्युक्ति	१ आगमोदय समिति, बम्बई, संवत १९७३	...	गाथा
		२ भीमसिंह माणक, बम्बई, संवत १९३६	...	,,
हम्मीर	= हम्मीरमदमर्दन	गायकवाड़ ओरिएन्टल् सिरिज़, नं १०, १९२०		पृष्ठ
हास्य	= हास्यचूडामणि (प्रहसन)	,,	...	,,
हि	= हितोपदेशकुलक	†हस्तलिखित	...	गाथा
हित	= हितोपदेशसारकुलक	,,		,,

---

† श्रद्धेय श्रीयुत के० प्रे० मोदी से प्राप्त।

‡ देखो 'उत्त' के नीचे की टिप्पनी।

प

प पुं [**प**] १ ओष्ठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष ; (प्राप)। २ पाप-त्याग ; " पत्ति य पाववज्जणे " (आवम)।

प अ [**प्र**] इन अर्थों का सूचक अव्यय ; —१ प्रकर्ष ; जैसे—'पअल' (से १, ११)। २ प्रारम्भ ; जैसे—'पगामिअ', 'पकरेइ' (जं १ ; भग १,१)। ३ उत्पत्ति ; ४ ख्याति, प्रसिद्धि ; ५ व्यवहार ; ६ चारों ओर से ; (निचू १ ; हे २, २१७)। ७ प्रस्रवण, मूत्र ; (विसे ७८१)। ८ फिर फिर ; (निचू ३ ; १७)। ६ गुजरा हुआ, विनष्ट ; जैसे —'पालुअ' ; (ठा ४, २ —पत्र २१३ टी)।

पं वि [**प्राञ्च्**] पूर्व तर्फ स्थित ; (भवि)।

पअंगम पुं [**प्लवङ्गम**] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

पअंघ पुं [**प्रजङ्घ**] राक्षस-विशेष ; (से १२, ८३)।

पइ पुं [**पति**] १ धव, भर्ता ; (पात्र ; गा १५६ ; कप्प)। २ मालिक ; ३ रक्षक ; जैसे —'भूवई', 'निअसगणवई' 'नरवइ' (सुपा ३६ ; अजि १७ ; १६)। ४ श्रेष्ठ, उत्तम ; जैसे —'धरणिधरवई' (अजि १७)। °घर न [°गृह] ससुराल ; (षड्)। °वया, °व्वया स्त्री [°व्रता] पति-सेवा-परायण स्त्री, कुलवती स्त्री ; (गा ४१७ ; सुर ६, ६७)। °हर देखो °घर ; (हे १, ४)।

पइ देखो **पडि** ; (ठा २, ९ ; काल ; उवर २१)।

पइअ वि [**दे**] १ भर्त्सित, तिरस्कृत ; २ न. पहिया, रथ-चक्र ; (दे ६, ६४)।

पइइ देखो **पगइ**=प्रकृति ; (से २, ४५)।

पइउं देखो **पय**=पच्।

पइउवचरण न [**प्रत्युपचरण**] प्रत्युपचार, प्रति-सेवा; (रंभा)।

पइऊल देखो **पडिकूल** ; (नाट—विक ४५)।

पइंवया देखो **पइ-वया** ; (गाया १, १६—पत्र २०४)।

पइक (अप) देखो **पाइक्क** ; (पिंग)।

पइकिदि देखो **पडिकिदि** ; (नाट —शकु ११६)।

पइक्क देखो **पाइक्क** ; (पिंग ; पि १६४)।

पइगिइ देखो **पडिकिदि** ; (स ६२५)।

पइच्छन्न पुं [**प्रतिच्छन्न**] भूत-विशेष ; (राज)।

पइज्ज (अप) वि [**पतित**] गिरा हुआ, (पिंग)।

पइज्ज (अप) वि [**प्राप्त**] मिला हुआ, लब्ध ; (पिंग)।

पइज्जा देखो **पइण्णा** ; (भवि ; सण)।

पइट्ठ वि [**दे**] १ जिसने रस को जाना हो वह ; २ विरल ; ३ पुं. मार्ग, रास्ता ; (दे ६, ६६)।

पइट्ठ पुं [**प्रतिष्ठ**] भगवान् सुपार्श्वनाथ के पिता का नाम ; (सम १५०)।

पइट्ठ वि [**प्रविष्ट**] जिसने प्रवेश किया हो वह ; (स४२६)।

पइट्ठवण देखो **पइट्ठावण** ; (राज)।

पइट्ठा स्त्री [**प्रतिष्ठा**] १ आदर, सम्मान ; २ कीर्ति, यश ; ३ व्यवस्था ; (हे १, २०६)। ४ स्थापना, संस्थापन ; (णंदि)। ५ अवस्थान, स्थिति ; (पंचा ८)। ६ मूर्ति में ईश्वर के गुणों का आरोपण ; " जिणबिंबाण पइट्ठं कइया वि हु आइसंतस्स " (सुर १६, १३)। ७ आश्रय, आधार ; (औप)।

पइट्ठाण न [**प्रतिष्ठान**] १ स्थिति, अवस्थान ; " काऊण पइट्ठाणं रमणिज्जे एत्थ अच्छामो " (पउम ४२, २७ ; ठा ६)। २ आधार, आश्रय ; (भग)। ३ महल आदि की नींव ; (पव १६८)। ४ नगर-विशेष; (आक २१)।

पइट्ठाण न [**दे**] नगर, शहर ; (दे ६, २६)।

पइट्ठावक } **पइट्ठावग** } देखो **पइट्ठावय** ; (गाया १, १६; राज)।

पइट्ठावण न [**प्रतिष्ठापन**] १ संस्थापन ; (पंचा ८)। २ व्यवस्थापन ; (पंचा ७)।

पइट्ठावय वि [**प्रतिष्ठापक**] प्रतिष्ठा करने वाला ; (औप ; पि २२०)।

पइट्ठाविय वि [**प्रतिष्ठापित**] संस्थापित; (स ६२ ; ७०५)।

पइट्ठिय वि [**प्रतिष्ठित**] १ स्थित, अवस्थित ; (उवा)। २ आश्रित ; " रयणायरतीरपइट्ठियाण पुरिसाण जं च दालिद्दं " (प्रासू ७०)। ३ व्यवस्थित ; (आचा २, १, ७)। ४ गौरवान्वित ; (हे १, ३८)।

पइण्ण वि [**दे**] विपुल, विस्तृत ; (दे ६, ७)।

पइण्ण वि [**प्रतीर्ण**] प्रकर्ष से तीर्ण ; (आचा)।

पइण्ण } **पइण्णग** } वि [**प्रकीर्ण, °क**] १ विक्षिप्त, फेंका हुआ ; " रत्थापइण्णणअणुप्पला तुमं सा पडिच्छए एतं" (गा १४०)। २ अनेक प्रकार से मिश्रित ; (पंचू)। ३ बिखरा हुआ ; (ठा ६)। ४ विस्तारित ; (बृह १)। ५ न. ग्रन्थ-विशेष, तीर्थंकर-देव के सामान्य शिष्य ने बनाया हुआ ग्रन्थ ; (णंदि)। °कहा स्त्री [°कथा] उत्सर्ग, सामान्य नियम ; " उस्सग्गो पइण्णकहा अववाओ अववादो

निच्छयकहा भण्णइ " (निचू ४)। **तव** पुं [**तपस्**] तपश्चर्या-विशेष ; (पंचा १६)।

पइण्णा स्त्री [**प्रतिज्ञा**] १ प्रण, शपथ ; (नाट —मालती १०६)। २ नियम ; (औप ; पंचा १८)। ३ तर्क-शास्त्र-प्रसिद्ध अनुमान-प्रमाण का एक अवयव, साध्य वचन का निर्देश ; (दसनि १)।

पइण्णाद (शौ) वि [**प्रतिज्ञात**] जिसकी प्रतिज्ञा की गई हो वह ; (मा १४)।

पइत्त देखो **पउत्त**=प्रवृत्त ; (भवि)।

पइत्त वि [**प्रदीप्त**] जला हुआ, प्रज्वलित ; (स १४, ७३)।

पइत्त देखो **पवित्त**=पवित्र ; (सुपा ७४)।

पइदि (शौ) देखो **पगइ** ; (नाट— शकु ६१)।

पइदिण न [**प्रतिदिन**] हर रोज ; (काल)।

पइदिद्ध वि [**प्रतिदिग्ध**] विलिप्त ; (सूअ १, ५, १)।

पइदियह न [**प्रतिदिवस**] प्रतिदिन, हर रोज ; (सुर १, ५०)।

पइनियय वि [**प्रतिनियत**] मुकरर किया हुआ, नियुक्त किया हुआ ; (आवम)।

पइन्न }
पइन्नग } देखो **पइण्ण** ; (उव ; भवि ; आ ६)।

पइन्ना देखो **पइण्णा** ; (सुर १, १)।

पइप्प देखो **पलिप्प**। वकृ— **पइप्पमाण** ; (गा ७१६)।

पइप्पईय न [**प्रतिप्रतीक**] प्रत्यंग, हर अंग ; (रंभा)।

पइभय वि [**प्रतिभय**] प्रत्येक प्राणी को भय उपजाने वाला ; (गाया १, २ ; पगह १, १ ; औप)।

पइभा स्त्री [**प्रतिभा**] बुद्धि-विशेष, प्रत्युत्पन्न-मतित्व ; (पुप्फ ३३१)।

पइमुह वि [**प्रतिमुख**] संमुख ; (उप ७४४)।

पइरिक्क वि [**दे. प्रतिरिक्त**] १ शून्य, रहित ; (दे ६, ७१ ; से २, १४)। २ विशाल, विस्तीर्ण ; (दे ६, ७१)। ३ तुच्छ, हलका ; (से १, ५८)। ४ प्रचुर, विपुल ; (आघ २४६ ; पव १०३)। ५ नितान्त, अत्यन्त ; " पइरिक्कसुहाए मणाणुकूलाए विहारभूमीए " (कप्प)। ६ न. एकान्त स्थान, विजन स्थान, निर्जन जगह ; (दे ६, ७१ ; स २३५ ; ७५५ ; गा ८८ ; उप २६३)।

पइल (अप) देखो **पढम** ; (पि ४४६)।

पइलाइया स्त्री [**प्रतिलाविका**] हाथ के बल चलने वाली सर्प की एक जाति ; (राज)।

पइल्ल पुं [**दे. पदिक**] १ ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३)। २ रोग-विशेष, श्लीपद ; (पगह २, ५)।

पइव पुं [**प्रतिव**] एक यादव का नाम ; (राज)।

पइवरिस न [**प्रतिवर्ष**] हरएक वर्ष ; (पि २२०)।

पइवाइ वि [**प्रतिवादिन्**] प्रतिवादी, प्रतिपक्षी ; (विसे २४८८)।

पइविसिट्ठ वि [**प्रतिविशिष्ट**] विशेष-युक्त, विशिष्ट ; (उवा)।

पइविसेस पुं [**प्रतिविशेष**] विशेष, भेद, भिन्नता ; (विसे ५२)।

पइस देखो **पविस**। पइसइ ; (भवि)। पइसंति ; (दे १, ८४ टि)। कर्म —पइसिज्जइ ; (भवि)। वकृ— **पइसंत** ; (भवि)। कृ —**पइसियव्व** ; (स २३४)।

पइसमय न [**प्रतिसमय**] हर समय, प्रतिक्षण ; (पि २२०)।

पइसर देखो **पविस**। पइसरइ ; (भवि)।

पइसार सक [**प्र+वेशय्**] प्रवेश कराना। पइसारइ ; (भवि)।

पइसारिय वि [**प्रवेशित**] जिसका प्रवेश कराया गया हो वह ; " पइसारिओ य नयरिं " (महा ; भवि)।

पइहंत पुं [**दे**] जयन्त, इन्द्र का एक पुत्र ; (दे ६, १६)।

पइहा सक [**प्रति+हा**] त्याग करना। संकृ— **पइहिऊण** ; (उव)।

पई देखो **पइ**=पति ; (षड् ; हे १, ४ ; सुर १, १७६)।

पईअ वि [**प्रतीत**] १ विज्ञात। २ विश्वस्त। ३ प्रसिद्ध, विख्यात ; (विसे ७०६)।

पईअ न [**प्रतीक**] अंग, अवयव ; (रंभा)।

पईइ स्त्री [**प्रतीति**] १ विश्वास। २ प्रसिद्धि ; (राज)।

पईव देखो **पलीव**। पईवेइ ; (कस)।

पईव पुं [**प्रदीप**] दीपक, दिया ; (पाअ ; जी १)।

पईव वि [**प्रतीप**] १ प्रतिकूल ; (हे १, २०६)। २ पुं. शत्रु, दुश्मन ; (उप ६४८ टी ; हे १, २३१)।

पईस (अप) देखो **पइस**। पईसइ ; (भवि)।

पउ (अप) वि [**पतित**] गिरा हुआ ; (पिंग)।

पउंअ पुं [**दे**] दिन, दिवस ; (दे ६, ५)।

पउअ न [**प्रयुत**] संख्या-विशेष, 'प्रयुताङ्ग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (इक ; ठा २, ४)।

पउअंग न [**प्रयुताङ्ग**] संख्या-विशेष ; 'अयुत' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह : (ठा २, ४)।

पउंज सक [**प्र + युज्**] १ जोड़ना, युक्त करना। २ उच्चारण करना। ३ प्रवृत्त करना। ४ प्रेरणा करना। ५ व्यवहार करना। ६ करना। पउंजइ : (महा ; भवि ; पि ५०७)। पउंजेंति : (कप्प)। वकृ— **पउंजंत, पउंजमाण** : (औप ; पउम ३५, ३६)। कवकृ— **पउज्जमाण** ; (प्रयौ २३)। कृ— **पउंजिअव्व, पउज्ज**; (पगह २, ३ : उप ७२८ टी ; विसे ३३८४), **पउइव्व** (अप) ; (कुमा)।

पउंजग वि [**प्रयोजक**] प्रेरक, प्रेरणा करने वाला : (पंचव १)।

पउंजण वि [**प्रयोजन**] प्रयोग करने वाला ; (पउम १४, २०)। देखो **पओअण**।

पउंजणया } स्त्री [**प्रयोजना**] प्रयोग : (ओघ ११४),
पउंजणा } "दुक्खं कीरइ कव्वं, कव्वम्मि कए पउंजणा दुक्खं" (वज्जा २)।

पउंजिअ वि [**प्रयुक्त**] जिसका प्रयोग किया गया हो वह : (सुपा १४० ; ४४७)।

पउंजित्तु वि [**प्रयोक्तृ**] प्रवृत्ति करने वाला ; (ठा ५,१)।

पउंजित्तु वि [**प्रयोजयितृ**] प्रवृत्ति कराने वाला : (ठा ५, १)।

पउज्ज } देखो **पउंज**।
पउज्जमाण }

पउट्ट अ [**परिवृत्य**] मर कर। °**परिहार** पुं [°**परिहार**] मर कर फिर उसी शरीर में उत्पन्न होकर उस शरीर का परिभोग करना : "एवं खलु गोसाला ! वणस्सइ-काइया पउट्टपरिहारं परिहरंति" (भग १५ —पत्र ६६७)।

पउट्ट वि [**परिवर्त**] १ परिवर्त, मर कर फिर उसी शरीर में उत्पन्न होना ; २ परिवर्त-वाद ; "एस णं गोयमा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स पउट्टे" (भग १५ · पत्र ६६७)।

पउट्ट वि [**प्रवृष्ट**] बरसा हुआ ; (हे १,१३१)।

पउट्ट पुं [**प्रकोष्ठ**] हाथ का पहुँचा ; कलाई और कहुनी के बीच का भाग ; (पगह १, ४ —पत्र ७८ ; कप्प; कुमा)।

पउट्ठ वि [**प्रजुष्ट**] १ विशेष सेवित ; २ न. अति उच्छिष्ट ; (चंड)।

पउट्ठ वि [**प्रद्विष्ट**] द्वेष-युक्त ; "ता सा पउट्ठचित्ता" (सुपा ४७५)।

पउढ न [**दे**] १ गृह, घर ; २ पुं. घर का पश्चिम प्रदेश ; (दे ६, ४)।

पउण पुं [**दे**] १ व्रण-प्ररोह ; २ नियम-विशेष ; (दे ६, ६५)।

पउण वि [**प्रगुण**] १ पटु, निर्दोष : "कह पच्चक्खविहीणो जायइ पउणिंदियाणंपि" (सुपा ४७२ ; महा)। २ तय्यार ; (दंस ३)।

पउणाड पुं [**प्रपुनाट**] वृक्ष-विशेष, पमाड का पेड़, चकवड़ ; (दे ५, ५ टि)।

पउत्त अक [**प्र + वृत्**] प्रवृत्ति करना। कृ—**पउत्तिदव्व** (शौ) ; (नाट — शकु ८७)।

पउत्त वि [**प्रयुक्त**] जिसका प्रयोग किया गया हो वह ; (महा ; भवि)। २ न. प्रयोग ; (गाया १, १)।

पउत्त न [**प्रतोत्र**] प्रतोद, प्राजन, पैना ; (दसा १०)।

पउत्त वि [**प्रवृत्त**] जिसने प्रवृत्ति की हो वह ; (उवा)।

पउत्ति स्त्री [**प्रवृत्ति**] १ प्रवर्तन ; (भग १५)। २ समाचार, वृत्तान्त ; (पाअ ; सुर २, ४८ : ३, ८४)। ३ कार्य, काज। °**वाउय** वि [°**व्यापृत**] कार्य में लगा हुआ ; (औप)।

पउत्ति स्त्री [**प्रयुक्ति**] बात, हकीकत ; (उप पृ २२८ ; गज)।

पउत्तिदव्व देखो **पउत्त**=प्र + वृत्।

पउत्थ न [**दे**] १ गृह, घर ; (दे ६, ६६)। २ वि. प्रोषित, प्रवास में गया हुआ ; "गहिइ मावि पउत्थो अहं अ कुप्पेज्ज मावि अणुणेज्ज" (गा १७ ; ६६७ ; हेका ३० , पउम १७, ३ ; वज्जा ७६ ; विवे १३२ ; उव ; दे ६, ६६ ; भवि)। °**वइया** स्त्री [°**पतिका**] जिसका पति देशान्तर गया हो वह स्त्री ; (ओघ ४१३ ; सुपा ५०८)।

पउद्दव्व देखो **पउंज**।

पउप्पय देखो **पओप्पय** ; (भग ११, ११ टी)।

पउप्पय देखो **पओप्पय**=प्रपौत्रिक ; (भग ११,११ टी)।

पउम न [**पद्म**] १ सूर्य-विकासी कमल ; (हे २, ११२; पगह १, ३ ; कप्प ; औप ; प्रासू ११३)। २ देव-विमान विशेष : (सम ३३ ; ३५)। ३ संख्या-विशेष,

'पद्मांग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (ठा २, ४ : इक)। ४ गन्ध-द्रव्य-विशेष ; (औप ; जीव ३)। ५ सुधर्मा सभा का एक सिंहासन ; (णाया २)। ६ दिन का नववाँ मुहूर्त ; (जं २)। ७ दक्षिण-रुचक-पर्वत का एक शिखर ; (ठा ८)। ८ राजा रामचन्द्र, सीता-पति ; (पउम १, ५ : २५, ८)। ९ आठवाँ बलदेव, श्रीकृष्ण के बड़े भाई ; १० इस अवसर्पिणीकाल में उत्पन्न नववाँ चक्रवर्ती राजा, राजा पद्मोत्तर का पुत्र ; (पउम ५, १५३ ; १५४)। ११ एक राजा का नाम ; (उप ६४८ टी)। १२ माल्यवन्नामक पर्वत का अधिष्ठाता देव ; (ठा २, ३)। १३ भरतक्षेत्र में आगामी उत्सर्पिणी में उत्पन्न होने वाला आठवाँ चक्रवर्ती राजा ; (सम १५४)। १४ भरतक्षेत्र का भावी आठवाँ बलदेव ; (सम १५४)। १५ चक्रवर्ती राजा का निधि, जो रोग-नाशक सुन्दर वस्त्रों की पूर्ति करता है ; (उप ९८६ टी)। १६ राजा श्रेणिक का एक पौत्र ; (निर २, १)। १७ एक जैन मुनि का नाम ; (कप्प)। १८ एक ह्रद ; (कप्प)। १९ पद्म-वृक्ष का अधिष्ठाता देव ; (ठा २, ३)। २० महापद्म-नामक जिन-देव के पास दीक्षा लेने वाला एक राजा, एक भावी राजर्षि ; (ठा ८)। °**गुम्म** न [°**गुल्म**] १ आठवें देवलोक में स्थित एक देव-विमान का नाम ; (सम ३५)। २ प्रथम देवलोक में स्थित एक देव-विमान का नाम ; (महा)। ३ पुं. राजा श्रेणिक का एक पौत्र ; (निर २, १)। ४ एक भावी राजर्षि, महापद्म-नामक जिन-देव के पास दीक्षा लेने वाला एक राजा ; (ठा ८)। °**चरिय** न [°**चरित**] १ राजा रामचन्द्र की जीवनी चरित ; २ प्राकृत भाषा का एक प्राचीन ग्रन्थ, जैन रामायण ; (पउम ११८, १२१)। °**णाभ** पुं [°**नाभ**] १ वासुदेव, विष्णु ; (पउम ४०, १)। २ आगामी उत्सर्पिणी-काल में भरतक्षेत्र में होने वाले प्रथम जिन-देव का नाम ; (पव ४६)। ३ कपिल-वासुदेव के एक माण्डलिक राजा का नाम ; (णाया १, १६—पत्र २१३)। °**दल** न [°**दल**] कमल-पत्र ; (प्राह)। °**द्दह** पुं [°**द्रह**] विविध प्रकार के कमलों से परिपूर्ण एक महान् ह्रद का नाम ; (सम १०४ ; कप्प ; पउम १०२, ३०)। °**द्धय** पुं [°**ध्वज**] एक भावी राजर्षि, जो महापद्म-नामक जिन-देव के पास दीक्षा लेगा ; (ठा ८)। °**नाह** देखो °**णाभ** ; (उप ६४८ टी)। °**पुर** न [°**पुर**] एक दाक्षिणात्य नगर, जो आजकल 'नासिक' नाम से प्रसिद्ध है ; (राज)। °**प्पभ** पुं [°**प्रभ**] इस अवसर्पिणी-काल में उत्पन्न षष्ठ जिन-देव का नाम ; (कप्प)। °**प्पभा** स्त्री [°**प्रभा**] एक पुष्करिणी का नाम ; (इक)। °**प्पह** देखो °**प्पभ** ; (ठा ५, १ ; सम ४३ ; पडि)। °**भद्द** पुं [°**भद्र**] राजा श्रेणिक का एक पौत्र ; (निर २, १)। °**मालि** पुं [°**मालिन्**] विद्याधर-वंश के एक राजा का नाम ; (पउम ५, ४२)। °**मुह** देखो **पउमाणण** ; (षड्)। °**रह** पुं [°**रथ**] १ विद्याधर-वंश का एक राजा ; (पउम ५, ४३)। २ मथुरा नगरी के राजा जयसेन का पुत्र ; (महा)। °**राय** पुं [°**राग**] रक्त-वर्ण मणि-विशेष ; (पि १३९ ; १६६)। °**राय** पुं [°**राज**] धातकीखण्ड की अपरकंका नगरी का एक राजा, जिसने द्रौपदी का अपहरण किया था ; (ठा १०)। °**रुक्ख** पुं [°**वृक्ष**] १ उत्तर-कुरु क्षेत्र में स्थित एक वृक्ष ; (ठा २, ३)। २ वृक्ष-सदृश बड़ा कमल ; (जीव ३)। °**लया** स्त्री [°**लता**] १ कमलिनी, पद्मिनी ; (जीव ३ ; भग ; कप्प)। २ कमल के आकार वाली वल्ली ; (णाया १,१)। °**वडिंसय**, °**वडेंसय** न [°**वतंसक**] पद्मावती-देवी का सौधर्म-नामक देवलोक में स्थित एक विमान ; (राज ; णाया २—पत्र २५३)। °**वरवेइया** स्त्री [°**वरवेदिका**] १ कमलों की श्रेष्ठ वेदिका ; (भग)। २ जम्बूद्वीप की जगती के ऊपर रही हुई देवों की एक भोग-भूमि ; (जीव ३)। °**वूह** पुं [°**व्यूह**] सैन्य की पद्माकार रचना ; (पराह १, ३)। °**सर** पुं [°**सरस्**] कमलों से युक्त सरोवर ; (णाया १, १ ; कप्प ; महा)। °**सिरी** स्त्री [°**श्री**] १ अष्टम चक्रवर्ती सुभूमि-राज की पटरानी ; (सम १५२)। २ एक स्त्री का नाम ; (कुमा)। °**सेण** पुं [°**सेन**] १ राजा श्रेणिक के एक पौत्र का नाम, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी ; (निर १, २)। २ नागकुमार-जातीय एक देव का नाम ; (दीव)। °**सेहर** पुं [°**शेखर**] पृथ्वीपुर नगर के एक राजा का नाम ; (धम्म ७)। °**गर** पुं [°**कर**] १ कमलों का समूह ; २ सरोवर ; (उप १३३ टी)। °**सण** न [°**सन**] पद्माकार आसन ; (जं १)।

पउमा स्त्री [**पद्मा**] १ बीसवें तीर्थंकर श्रीमुनिसुव्रतस्वामी की माता का नाम ; (सम १५१)। २ सौधर्म देवलोक के इन्द्र की एक पटरानी का नाम ; (ठा ८—पत्र ४२९ ; पउम १०२, १५९)। ३ भीम-नामक राक्षसेन्द्र की एक पटरानी ; (ठा ४,

१—पत्र २०४)। ४ एक विद्याधर-कन्या का नाम; (पउम ६,२४)। ५ रावण की एक पत्नी; (पउम ७४, १०) ६ लक्ष्मी; (राज)। ७ वनस्पति-विशेष; (पराण १—पत्र ३६)। ८ चौदहवें तीर्थंकर श्रीअनन्तनाथ की मुख्य शिष्या का नाम; (पव ६)। ६ सुदर्शना-जम्बू की उत्तर दिशा में स्थित एक पुष्करिणी; (इक)। १० दूसरे बलदेव और वासुदेव की माता का नाम; ११ लेश्या-विशेष; (राज)।

पउमाड पुं [**दे**] वृक्ष-विशेष, पमाड का पेड़, चकवड़; (दे ५, ५)।

पउमाणण पुं [**पद्मानन**] एक राजा का नाम; (उप १०३१ टी)।

पउमाभ पुं [**पद्माभ**] छठे तीर्थंकर का नाम; (पउम १,२)।

पउमार [**दे**] देखो **पउमाड**; (दे ५, ५ टि)।

पउमावई स्त्री [**पद्मावती**] १ जम्बूद्वीप के सुमेरु पर्वत के पूर्व तरफ के रुचक पर्वत पर रहने वाली एक दिक्कुमारी-देवी; (ठा ८)। २ भगवान् पार्श्वनाथ की शासन-देवी, जो नागराज धरणेन्द्र की पटरानी है; (संति १०)। ३ श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम; (अंत १५)। ४ भीम-नामक राक्षसेन्द्र की एक पटरानी; (भग १०, ५)। ५ शक्रेन्द्र की एक पटरानी; (णाया २ पत्र २५३)। ६ चम्पेश्वर राजा दधिवाहन की एक स्त्री का नाम; (आव ४)। ७ राजा कूणिक की एक पत्नी; (भग ७, ६)। ८ अयोध्या के राजा हरिसिंह की एक पत्नी; (धम्म ८)। ६ तेतलिपुर के राजा कनककेतु की पत्नी; (दंस १)। १० कौशाम्बी नगरी के राजा शतानीक के पुत्र उदयन की पत्नी; (विपा १, ५)। ११ शैलकपुर के राजा शैलक की पत्नी; (णाया १, ५)। १२ राजा कूणिक के पुत्र काल-कुमार की भार्या का नाम; १३ राजा महाबल की भार्या का नाम; (निर १, १; ५; पि १३६)। १४ बीसवें तीर्थंकर श्रीमुनिसुव्रत-स्वामी की माता का नाम; (पव ११)। १५ पुण्डरीकिणी नगरी के राजा महापद्म की पटरानी; (आवृ १)। १६ रम्य-नामक विजय की राजधानी; (जं ४)।

पउमावत्ती (अप) स्त्री [**पद्मावती**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

पउमिणी स्त्री [**पद्मिनी**] १ कमलिनी, कमल-लता; (कप्प; सुपा १५५)। २ एक श्रेष्ठी की स्त्री का नाम; (उप ७२८ टी)।

पउमुत्तर पुं [**पद्मोत्तर**] १ नववें चक्रवर्ती श्रीमहापद्म-राज के पिता का नाम; (सम १५२)। २ मन्दर पर्वत के भद्रशाल वन का एक दिग्हस्ती पर्वत; (इक)।

पउमुत्तरा स्त्री [**पद्मोत्तरा**] एक प्रकार की शक्कर; (णाया १, १७—पत्र २२६; पराण १७)।

पउर वि [**प्रचुर**] प्रभूत, बहुत; (हे १, १८०; कुमा; सुर ४, १४)।

पउर वि [**पौर**] १ पुर-संबन्धी, नगर से संबन्ध रखने वाला; २ नगर में रहने वाला; (हे १, १६२)।

पउरव पुं [**पौरव**] पुरु-नामक चन्द्र-वंशीय नृप का पुत्र; (मंजि ६)।

पउराण (अप) देखो **पुराण**; (भवि)।

पउरिस } पुंन [**पौरुष**] पुरुषत्व, पुरुषार्थ; (हे १, १११; **पउरुस** } १६२)। "पउरुसं" (प्राप्र), "पउरुसं" (मंजि ६)।

पउल सक [**पच्**] पकाना। पउलइ; (हे ४, ९०; ड ६, २६)।

पउलण न [**पचन**] पकाना, पाक; (पण्ह १, १)।

पउलिअ वि [**पक्व**] पका हुआ; (पाअ)।

पउलिअ वि [**प्रज्वलित**] दग्ध, जला हुआ; (उवा)।

पउल्ल देखो **पउल**। पउल्लइ; (षड्; हे ४, ९० टि)।

पउल्ल वि [**पक्व**] पका हुआ; (पंचा १)।

पउविय वि [**प्रकुपित**] विशेष कुपित, क्रुद्ध; (महा)।

पउस सक [**प्र + द्विष्**] द्वेष करना। पउसेज्जा; (ओघ २५ भा)।

पउसय वि [**दे**] देश-विशेष में उत्पन्न। स्त्री —°**सिया**; (औप)।

पउस्स देखो **पउस**। पउस्सामि; (कुप्र ३७७)। वकृ— **पउस्संत, पउस्समाण**; (राज; अंत २२)। संकृ— **पउस्सिऊण**; (स ५१३)।

पउहण (अप) देखो **पवहण**; (भवि)।

पऊढ न [**दे**] गृह, घर; (दे ६, ४)।

पए अ [**प्राक्**] पहले, पूर्व; "नित्थारगपारगाकरणं आयरि-आणं कयं पए होइ" (ओघ ४७ भा), "जइ पुण वियाल-पत्ता पए व पत्ता उवस्सयं न लभे" (ओघ १६८)।

पएणियार पुं [**प्रैणीचार**] व्याध की एक जाति, जो हरिणों को पकड़ने के लिए हरिणी-समूह को चराते एवं पालते हैं; (पण्ह १, १—पत्र १४)।

पएर पुं [**दे**] १ वृति-विवर, बाड़ का छिद्र ; २ मार्ग, रास्ता; ३ कंठदीनार-नामक भूषण-विशेष ; ४ गले का छिद्र ; ५ दीन-नाद, आर्त-स्वर ; ६ वि. दुःशील, दुराचारी ; (दे ६, ६७)।

पएल्ल पुं [**दे**] प्रातिवेश्मिक, पड़ोसी ; (दे ६, ३)।

पएस पुं [**प्रदेश**] १ जिसका विभाग न हो सके, ऐसा सूक्ष्म अवयव ; (ठा १, १)। २ कर्म-दल का संचय ; (नव ३१)। ३ स्थान, जगह ; (कुमा ६, ५८)। ४ देश का एक भाग, प्रान्त ; (कुमा ६)। ५ परिमाण-विशेष, निरंश-अवयव-परिमित माप ; ६ छोटा भाग ; ७ परमाणु ; ८ द्व्यणुक ; ९ त्र्यणुक, तीन परमाणुओं का समूह ; (राज)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] कर्म-विशेष, प्रदेश-रूप कर्म ; (भग)। °**ग्ग** न [°**ाग्र**] कर्मों के दलिकों का परिमाण ; (भग)। °**घण** वि [°**घन**] निबिड प्रदेश ; (औप) । °**णाम** न [°**नामन्**] कर्म-विशेष ; (ठा ६) । °**णाम** पुं [°**नाम**] कर्म-द्रव्यों का परिणाम ; (ठा ६)। °**बंध** पुं [°**बन्ध**] कर्म-दलों का आत्म-प्रदेशों के साथ संबन्धन ; (सम ९)। °**संकम** पुं [°**संक्रम**] कर्म-द्रव्यों का भिन्न स्वभाव-वाले कर्मों के रूप में परिणत करना ; (ठा ४, २)।

पएसण न [**प्रदेशन**] उपदेश ; " पएसणायं णाम उवएसो " (आचू १)।

पएसय वि [**प्रदेशक**] उपदेशक, प्रदर्शक ; " सिद्धिपहपएसए वंदे" (विसे १०२५)।

पएसि पुं [**प्रदेशिन्**] स्वनाम-ख्यात एक राजा, जो श्री पार्श्वनाथ भगवान् के केशि-नामक गणधर से प्रबुद्ध हुआ था ; (राय ; कुप्र १४५ ; श्रा ६)।

पएसिणी स्त्री [**दे**] पड़ोस में रहने वाली स्त्री ; (दे ६, ३ टी)।

पएसिणी स्त्री [**प्रदेशिनी**] अंगुष्ठ के पास की उंगली, तर्जनी ; (ओघ ३६०)।

पएसिय देखो **पदेसिय** ; (राज)।

पओअ देखो **पओग** ; (हे १, २४५ ; अभि ६ ; मा ; पि ८५)।

पओअण न [**प्रयोजन**] १ हेतु, निमित्त, कारण ; (सूअ १, १२) । २ कार्य, काम ; ३ मतलब ; (महा ; उत्त २३ ; स्वप्न ४८)।

पओइद (शौ) वि [**प्रयोजित**] जिसका प्रयोग कराया गया हो वह ; (नाट—विक्र १०३)।

पओग पुं [**प्रयोग**] १ शब्द-योजना ; (भास ६३)। २ जीव का व्यापार, चेतन का प्रयत्न ; "उप्पाए दुविगप्पे पओग-जणिए य विस्ससा चेव" (सम २५ ; ठा ३, १ ; सम्म १३६ ; स ५३४)। ३ प्रेरणा ; (श्रा १४)। ४ उपाय ; (आचू १)। ५ जीव के प्रयत्न में कारण-भूत मन आदि ; (ठा ३, ३)। ६ वाद-विवाद, शास्त्रार्थ ; (दसा ४)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] मन आदि की चेष्टा से आत्म-प्रदेशों के साथ बँधने वाला कर्म ; (राज)। °**करण** न [°**करण**] जीव के व्यापार द्वारा होने वाला किसी वस्तु का निर्माण ; " होइ उ एगो जीवव्वावारो तेण जं विणिम्माणं पओगकरणं तयं बहुहा" (विसे)। °**किरिया** स्त्री [°**क्रिया**] मन आदि की चेष्टा ; (ठा ३, ३)। °**फड्डय** न [°**स्पर्धक**] मन आदि के व्यापार-स्थान की वृद्धि-द्वारा कर्म-परमाणुओं में बढ़ने वाला रस; (कम्मप २३)। °**बंध** पुं [°**बन्ध**] जीव-प्रयत्न द्वारा होने वाला बन्धन ; (भग १८, ३)। °**मइ** स्त्री [°**मति**] वाद-विषयक परिज्ञान ; (दसा ४)। °**संपया** स्त्री [°**संपत्**] आचार्य का वाद-विषयक सामर्थ्य ; (ठा ८)। °**सा** अ [**प्रयोगेण**] जीव-प्रयत्न से ; (पि ३६४)।

पओट्ट देखो **पउट्ट** = प्रकाष्ठ ; (प्राप्र ; औप ; पि ८४) ।

पओत्त न [**प्रतोत्त्र**] प्रतोद, प्राजन-यष्टि, पैना । °**धर** पुं [°**धर**] बैल गाड़ी हाँकने वाला, बहलवान ; (णाया १, १)।

पओद पुं [**प्रतोद**] ऊपर देखो ; (औप)।

पओप्पय पुं [**प्रपौत्रक**] १ प्रपौत्र, पौत्र का पुत्र ; २ प्रशिष्य का शिष्य ; " तेणं कालेणं तेणं समएणं विमलस्स अरहओ पओप्पए धम्मघोसे नामं अणगारे " (भग ११, ११ पत्र ५४८)।

पओप्पय पुं [**दे. प्रपौत्रिक**] १ वंश-परम्परा ; २ शिष्य-संतति, शिष्य-सन्तान ; (भग ११, ११ पत्र ५४८ टी)।

पओल पुं [**पटोल**] पटोल, परवर, परोरा ; (पण्ण १)।

पओली स्त्री [**प्रतोली**] १ नगर के भीतर का रास्ता ; (अणु)। २ नगर का दरवाजा ; " गोउरं पओली य " (पाअ ; सुपा २६१ ; श्रा १२ ; उप पृ ८५ ; भवि) ।

पओवट्ठाव देखो **पज्जवत्थाव** । पओवट्ठावेहि ; (पि २८४)।

पओवाह पुं [**पयोवाह**] मेघ, बादल ; (पउम ८, ४६ ; से १, २४ ; सुर २, ८५)।

पओस पुं [**दे. प्रद्वेष**] प्रद्वेष, प्रकृष्ट द्वेष ; (ठा १० ; अंत ; राय ; आव ४ ; सुर १५, ५८ ; सुपा ४६५ ; कम्म १ ; महानि ४ ; कुप्र १० ; स ६६६)।

पओस पुंन [**प्रदोष**] १ सन्ध्याकाल, दिन और रात्रि का सन्धि-काल ; (से १, ३४ ; कुमा)। २ वि प्रभूत दोषों से युक्त ; (से २, ११)।

पओहण (अप) देखो **पवहण** ; (भवि)।

पओहर पुं [**पयोधर**] १ स्तन, थन ; (पाअ ; से १, २४ ; गउड ; सुर २, ८५)। २ मेघ, बादल ; (वज्जा १००)। ३ छन्द-विशेष ; (पिंग)।

पंक पुंन [**पङ्क**] १ कर्दम, कादा, कीच ; "धम्ममिणंपि नो लग्गं पंकंव गयणंगणे" (श्रा २८ ; हे १, ३० ; ४, ३५७ ; प्रासू २५), "मुसइ व पंकं" (वज्जा १३४)। २ पाप ; (सुअ २, २)। ३ असंयम, इन्द्रिय वगैरः का अ-निग्रह ; (निचू १)। °**आवलिआ** स्त्री [°**ावलिका**] छन्द-विशेष; (पिंग)। °**प्पभा** स्त्री [°**प्रभा**] चौथी नरक-भूमि ; (ठा ७ ; इक)। °**बहुल** वि [°**बहुल**] १ कर्दम-प्रचुर ; (सम ८०)। २ पाप-प्रचुर ; (सूअ २, २)। ३ रत्नप्रभा-नामक नरक-भूमि का प्रथम काण्ड ; (जीव ३)। °**य** न [°**ज**] कमल, पद्म ; (हे ३, २६ ; गउड ; कुमा)। °**वई** स्त्री [°**वती**] नदी-विशेष ; (ठा २, ३ पत्र ८०)।

पंका स्त्री [**पङ्का**] चतुर्थ नरक-भूमि ; (इक ; कम्म ३,५)।

पंकावई स्त्री [**पङ्कावती**] पुष्कल-नामक विजय के पश्चिम तरफ की एक नदी ; (इक ; जं ४)।

पंकिय वि [**पङ्कित**] पंक-युक्त, कीच वाला; (भग ६, ३ ; भवि)।

पंकिल वि [**पङ्किल**] कर्दम वाला ; (श्रा २८ ; गा ७६६ ; कप्पू ; कुप्र १८७)।

पंकेरुह न [**पङ्केरुह**] कमल, पद्म ; (कप्पू ; कुप्र १४१)।

पंख पुंस्त्री [**पक्ष**] १ पंख, पाँखि, पत्त ; (पि ७४ ; गाय ; पउम ११, ११८ ; श्रा १४)। २ पनरह दिन, पखवाड़ा ; (गाज)। °**ासण** न [°**ासन**] आसन-विशेष ; (गाय)।

पंखि पुंस्त्री [**पक्षिन्**] पंखी, चिड़िया, पत्ती ; (श्रा १४)। स्त्री °**णी** ; (पि ७४)।

पंखुडिआ } स्त्री [**दे**] पंख, पत्र ; (कुप्र २६; दे ६, ८)।
पंखुडी }

पंग सक [**ग्रह्**] ग्रहण करना। पंगइ ; (हे ४, २०६)।

पंगण न [**प्राङ्गण**] आँगन ; (कुप्र २५०)।

पंगु वि [**पङ्गु**] पाद-विकल, खञ्ज, खोड़ा ; (पाअ ; पि ३८०; पिंग)।

पंगुर सक [**प्रा + वृ**] ढकना, आच्छादन करना। पंगुरइ ; (भवि)। संकृ —**पंगुरिवि** ; (भवि)।

पंगुरण न [**प्रावरण**] वस्त्र, कपड़ा ; (हे १, १७५ ; कुमा ; गा ७८२)।

पंगुल वि [**पङ्गुल**] देखो **पंगु**; (विपा १, १; सं ७५;पाअ)।

पंच त्रि. ब. [**पञ्चन्**] पाँच, ५ ; (हे ३, १२३ ; कप्प ; कुमा)। °**उल** न [°**कुल**] पंचायत ; (म २२२)। °**उलिअ** पुं [°**कुलिक**] पंचायत में बैठ कर विचार करने वाला ; (म २२२)। °**कत्तिअ** पुं [°**कृत्तिक**] भगवान् कुन्थुनाथ, जिनके पाँचों कल्याणक कृत्तिका नक्षत्र में हुए थे ; (ठा ५, १)। °**कप्प** पुं [°**कल्प**] श्रीभद्रबाहुस्वामि-कृत एक प्राचीन ग्रन्थ का नाम ; (पंचभा)। °**कल्लाणय** न [**कल्याणक**] १ तीर्थंकर का च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान और निर्वाण ; २ काम्पिल्यपुर, जहां तेरहवें जिन-देव श्रीविमलनाथ के पाँचों कल्याणक हुए थे ; (ती २४)। ३ तप-विशेष ; (जीत)। °**कोट्ठग** वि [°**कोष्ठक**] १ पाँच काष्ठों से युक्त ; २ पुं. पुरुष ; (तंदु)। °**गव्व** न [°**गव्य**] गौ के ये पाँच पदार्थ —दही, दूध, घृत, गोमय और मूत्र, पंचगव्य ; (कप्पू)। °**गाह** न [°**गाथ**] गाथा-छन्द-वाले पाँच पद्य ; (कस)। °**गुण** वि [°**गुण**] पाँच-गुना ; (ठा ५, ३)। °**चित्त** पुं [°**चित्र**] षष्ठ जिन-देव श्रीपद्मप्रभ, जिनके पाँचों कल्याणक चित्रा नक्षत्र में हुए थे ; (ठा ५, १ ; कप्प)। °**जाम** न [°**याम**] १ अहिंसा, सत्य, अ-चौर्य, ब्रह्मचर्य और त्याग ये पाँच महाव्रत ; २ वि. जिसमें इन पाँच महाव्रतों का निरूपण है, वह ; (ठा ६)। °**णउइ** स्त्री [°**नवति**] पंचानवे, ६५ ; (काल)। °**णउय** वि [°**नवत**] ६५ वाँ ; (काल)। °**तालीस** (अप) स्त्रीन [°**चत्वारिंशत्**] पैंतालीस, ४५ ; (पिंग ; पि ४४५)। °**तित्थी** स्त्री [°**तीर्थी**] पाँच तीर्थों का समुदाय ; (धर्म २)। °**तीसइम** वि [°**त्रिंशत्तम**] पैंतीसवाँ, ३५ वाँ ; (पण्ण ३५)। °**दस** त्रि. ब. [°**दशन्**] पनरह, १५ ; (कप्पू)। °**दसम** वि [°**दशम**] पनरहवाँ, १५ वाँ ; (णाया १, १)॥ °**दसी** स्त्री [°**दशी**] १ पनरहवीं, १५ वीं; (विसे ५७६)। २ पूर्णिमा ; ३ अमावास्या ; (सुज्ज १०)। °**दसुत्तरसय** वि [°**दशोत्तरशततम**] एक सौ पनरहवाँ, ११५ वाँ ; (पउम ११५, २४)। °**नउइ** देखो °**णउइ** ; (पि ४४७)। °**नाणि** वि [°**ज्ञानिन्**] मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यव और

केवल इन पाँचों ज्ञानों से युक्त, सर्वज्ञ; (सम्म ६६)। **पव्वी** स्त्री [°**पर्वी**] मास की दो अष्टमी, दो चतुर्दशी और शुक्ल पंचमी ये पाँच तिथियाँ ; (रयण २६)। °**पुव्वासाढ** पुं [°**पूर्वाषाढ**] दसवें जिन-देव श्रीशीतलनाथ, जिनके पाँचों कल्याणक पूर्वाषाढा नक्षत्र में हुए थे ; (ठा ५, १)। °**पूस** पुं [°**पुष्य**] पनरहवें जिन-देव श्रीधर्मनाथ ; (ठा ५, १)। °**बाण** पुं [°**बाण**] काम-देव ; (सुर ४, २४६ ; कुमा)। °**भूय** न [°**भूत**] पृथिवी, जल, अग्नि, वायु और आकाश ये पाँच पदार्थ ; (सूत्र १, १, १)। **भूयवाइ** वि [**भूतवादिन्**] आत्म आदि पदार्थों को न मान कर केवल पाँच भूतों को ही मानने वाला, नास्तिक ; (सूत्र १, १, १)। **महव्वइय** वि [°**महाव्रतिक**] पाँच महाव्रतों वाला ; (सूत्र २, ७)। °**महव्वय** न [°**महाव्रत**] हिंसा, असत्य, चोरी, मैथुन, और परिग्रह का सर्वथा परित्याग ; (पण्ह २, ५)। °**महाभूय** न [°**महाभूत**] पृथिवी, जल, अग्नि, वायु और आकाश ये पाँच पदार्थ ; (विसे)। °**मुट्ठिय** त्रि [°**मुष्टिक**] पाँच मुष्टिओं का, पाँच मुष्टिओं से पूर्ण किया जाता (लोच) ; (णाया १, १ ; कप्प ; महा)। °**मुह** पुं [°**मुख**] सिंह, पंचानन; (उप १०३१ टी)। **यसी** देखो °**दसी** ; (पउम ६६, १४)। °**रत्त**, °**राय** पुं [°**रात्र**] पाँच रात ; (सा ४३ ; पण्ह २, ४ ; पव १४८)। °**रासिय** न [°**राशिक**] गणित-विशेष ; (ठा ४, ३)। °**रूविय** वि [°**रूपिक**] पाँच प्रकार के वर्ण वाला ; (ठा ४, ४)। °**वत्थुग** न [°**वस्तुक**] आचार्य हरिभद्रसूरि-रचित ग्रन्थ-विशेष ; (पंचव १, १)। **वरिस** त्रि [°**वर्ष**] पाँच वर्ष की अवस्था वाला ; (सुर २, ७३)। °**विह** वि [°**विध**] पाँच प्रकार का ; (अणु)। **वीसइम** त्रि [°**विंशतितम**] पचीसवाँ ; (पउम २५, २६)। °**संगह** पुं [°**संग्रह**] आचार्य श्रीहरिभद्रसूरि-कृत एक जैन ग्रन्थ ; (पंच १)। **संवच्छरिय** वि [°**सांवत्सरिक**] पाँच वर्ष परिमाण वाला, पाँच वर्ष की आयु वाला ; (सम ७५)। **सट्ठ** वि [°**षष्ट**] पैंसठवाँ, ६५वाँ ; (पउम ६५, ५१)। **सट्ठि** स्त्री [°**षष्टि**] पैंसठ, ६५ ; (कप्प)। **समिय** वि [**समित**] पाँच समितिओं का पालन करने वाला ; (सं ८)। °**सर** पुं [°**शर**] काम-देव ; (पाअ ; सुर २, ६३ ; सुपा ६० ; रंभा)। **सीस** पुं [°**शीर्ष**] देव-विशेष ; (दीव)। **सुण्ण** न [**शून्य**] पाँच प्राणि-वध-स्थान ; (सूत्र १, १, ४)। °**सुत्तग** न [°**सूत्रक**] आचार्य-श्रीहरिभद्रसूरि निर्मित एक जैन ग्रन्थ ; (पसू १)। °**सेल**, °**सेलग**, °**सेलय** पुं [°**शैल**, °**क**] लवणोदधि में स्थित और पाँच पर्वतों से विभूषित एक छोटा द्वीप ; (महा ; बृह ४)। °**सोगंधिअ** वि [°**सौगन्धिक**] इलायची, लवंग, कपूर, कक्कोल और जातिफल इन पाँच सुगन्धित वस्तुओं से संस्कृत ; "तत्तत्थ पंचसोगंधिएणं तंबोलेणं, अवसेस-मुह-वासविहिं पच्चक्खामि " (उवा)। **हत्तर** वि [**सप्तत**] पचहत्तरवाँ, ७५ वाँ ; (पउम ७५, ८६)। °**हत्तरि** स्त्री [°**सप्तति**] १ संख्या-विशेष, ७५ ; २ जिनकी संख्या पचहत्तर हो वे ; (पि २६४ ; कप्प)। °**हत्थुत्तर** पुं [°**हस्तोत्तर**] भगवान् महावीर, जिनके पाँचों कल्याणक उत्तरफाल्गुनी-नक्षत्र में हुए थे ; (कप्प)। °**उह** पुं [°**युध**] कामदेव ; (सण)। °**णउइ** स्त्री [°**नवति**] १ संख्या-विशेष, पंचानवे, ६५ ; २ जिनकी संख्या पंचानवे हो वे ; (सम ९७ ; पउम २०, १०३ ; पि ४४०)। °**णउय** वि [°**नवत**] पंचानवाँ, ६५ वाँ; (पउम ६५, ६६)। °**णण** पुं [°**नन**] सिंह, गजेन्द्र ; (सुपा १७६ ; भवि)। °**णुव्वइय** वि [°**णुव्रतिक**] हिंसा, असत्य, चोरी, मैथुन और परिग्रह का आंशिक त्याग वाला ; (उवा ; औप ; णाया १, १२)। °**याम** देखो °**जाम** ; (बृह ६)। °**स** स्त्रीन [°**शत्**] १ संख्या-विशेष, पचास, ५० ; २ जिनकी संख्या पचास हो वे ; "पंचासं अज्जियासाहस्सीओ " (सम ७०)। °**सग** न [°**शक**] आचार्य श्रीहरिभद्रसूरि-कृत एक जैन ग्रन्थ ; (पंचा)। °**सीइ** स्त्री [°**शीति**] १ संख्या-विशेष, अस्सी और पाँच, ८५ ; २ जिनकी संख्या पचासी हो वे ; (सम ९२ ; पि ४४६)। °**सीइम** वि [°**शीतितम**] पचासीवाँ, ८५ वाँ ; (पउम ८५, ३१ ; कप्प ; पि ४४९)।

पंचअण्ण देखो **पंचजण्ण** ; (गउड)।

पंचंग न [**पञ्चाङ्ग**] १ दो हाथ, दो जानू और मस्तक ये पाँच शरीरावयव ; २ वि. पूर्वोक्त पाँच अंग वाला ; (प्रणाम आदि) " पंचंगं करिय ताहे पणिवायं " (सुर ४, ६८)।

पंचंगुलि पुं [**दे**] एरण्ड-वृक्ष, रेंडी का गाछ ; (दे ६, १९)।

पंचंगुलि पुं [**पञ्चाङ्गुलि**] हस्त, हाथ ; (णाया १, ३ ; कप्प)।

पंचंगुलिआ स्त्री [**पञ्चाङ्गुलिका**] वल्ली-विशेष ; (पराण १—पत्र ३३) ।

पंचग न [**पञ्चक**] पाँच का समूह ; (आचा) ।

पंचजण्ण पुं [**पाञ्चजन्य**] श्रीकृष्ण का शंख ; (काप्र ८६२ ; गा ६७४) ।

पंचत्त } न [**पञ्चत्व**] १ पाँचपन, पञ्चरूपता ; (सुर १, **पंचत्तण** } ५) । २ मरण, मौत ; (सुर १, ५ ; महा ; उप पृ १२४) ।

पंचपुल पुंन [**दे**] मत्स्य-बन्धन विशेष, मछली पकड़ने की जाल-विशेष ; (विपा १, ८—पत्र ८५ टि) ।

पंचम वि [**पञ्चम**] १ पाँचवाँ ; (उवा) । २ स्वर-विशेष ; (ठा ७) । °**धारा** स्त्री [°**धारा**] अश्व की एक तरह की गति ; (महा) ।

पंचमासिअ वि [**पाञ्चमासिक**] १ पाँच मास की उम्र का ; २ पाँच मास में पूर्ण होने वाला (अभिग्रह आदि) ; स्त्री °**आ** ; (सम २१) ।

पंचमिय वि [**पाञ्चमिक**] पाँचवाँ, पंचम ; (ओघ ६१) ।

पंचमी स्त्री [**पञ्चमी**] १ पाँचवीं ; (प्रामा) । २ तिथि-विशेष, पंचमी तिथि; (सम २६ ; श्रा २८) । ३ व्याकरण प्रसिद्ध अपादान विभक्ति ; (अणु) ।

पंचयन्न देखो **पञ्चजण्ण** ; (णाया १, १६ ; सुपा २६४) ।

पंचलोइया स्त्री [**पञ्चलौकिका**] भुजपरिसर्प-विशेष, हाथ से चलने वाले सर्प-जातीय प्राणी की एक जाति; (जीव २) ।

पंचवडी स्त्री [**पञ्चवटी**] पाँच वट वृक्ष वाला एक स्थान, जहां श्रीरामचन्द्रजी ने अपने वनवास के समय आवास किया था, इस स्थान का अस्तित्व कई लोग 'नासिक' नगर के पास गोदावरी नदी के किनारे मानते हैं, जब कि आधुनिक गवेषक लोग बस्तर रजवाड़े के दक्षिणी छोर पर, गोदावरी के किनारे, इसका होना सिद्ध करते हैं ; (उत्तर ८१) ।

पंचाल पुं. ब. [**पञ्चाल, पाञ्चाल**] १ देश-विशेष, पञ्जाब देश ; (णाया १, ८ ; महा ; पराण १) । २ पुं. पञ्जाब देश का राजा ; (भवि) । ३ छन्द-विशेष ; (पिंग)।

पंचालिआ स्त्री [**पञ्चालिका**] पुतली, काष्ठादि-निर्मित छोटी प्रतिमा ; (कप्पू) ।

पंचालिआ स्त्री [**पाञ्चालिका**] १ द्रुपद-राज की कन्या, द्रौपदी ; (वेणी ११८) । २ गान का एक भेद ; (कप्पू) ।

पंचावण्ण } स्त्रीन [**दे. पञ्चपञ्चाशत्**] १ संख्या-विशेष, **पंचावन्न** } पचपन, ५५ ; २ जिनकी संख्या पचपन हो वे ; (हे २, १७४ ; दे २, २७ ; दे २, २७ टि) ।

पंचावन्न वि [**दे. पञ्चपञ्चाश**] पचपनवाँ ; (पउम ५५, ६१) ।

पंचिंदिय } वि [**पञ्चेन्द्रिय**] १ वह जीव जिसको त्वचा, **पंचिंदिय** } जीभ, नाक, आँख और कान ये पाँचों इन्द्रियाँ हों ; (पराण १ ; कप्प ; जीव १ ; भवि) । २ न. त्वचा आदि पाँच इन्द्रियाँ ; (धर्म ३) ।

पंचुंबर स्त्रीन [**पञ्चोदुम्बर**] वट, पीपल, उदुम्बर, प्लक्ष और काकोदुम्बरी का फल ; (भवि) । स्त्री °री ; (श्रा २०) ।

पंचुत्तरसय वि [**पञ्चोत्तरशततम**] एक सौ पाँचवाँ, १०५वाँ ; (पउम १०५, ११५) ।

पंचेडिय वि [**दे**] विनाशित ; " जेण लोयस्स लोहत्ताणं फडियं दुक्कंदप्पदप्पं च पंचेडिअं " (भवि) ।

पंचेसु पुं [**पञ्चेषु**] कामदेव, कंदर्प ; (कप्पू ; रंभा) ।

पंछि पुं [**पक्षिन्**] पक्षी, पंखी, पंखेरू, चिड़िया ; (उप १०३१ टी) ।

पंजर न [**पञ्जर**] पिंजरा, पिंजड़ा ; (गउड ; कप्पू ; अच्चु २) ।

पंजरिय वि [**पञ्जरित**] पिंजरे में बंद किया हुआ ; (गउड) ।

पंजल वि [**प्राञ्जल**] सरल, सीधा, ऋजु ; (सुपा ३९४ ; वज्जा ३०) ।

पंजलि पुंस्त्री [**प्राञ्जलि**] प्रणाम करने के लिए जोड़ा हुआ कर-संपुट, हस्त-न्यास-विशेष, संयुक्त कर-द्वय ; (उवा) । °**उड** पुं [°**पुट**] अञ्जलि-पुट, संयुक्त कर-द्वय ; (सम १५१, औप) । °**उड, कड** वि [**कृतप्राञ्जलि**] जिसने प्रणाम के लिए हाथ जोड़ा हो वह ; (भग ; औप) ।

पंड वि [**पाण्ड्य**] देश-विशेष में उत्पन्न । स्त्री °**डी** ; " पंडीणं गंडवालीपुलअणचवला " (कप्पू) ।

पंड } पुं [**पण्ड, °क**] १ नपुंसक, क्लीब ; (ओघ ४६७ ; **पंडग** } सम १५ ; पाअ) । २ न. मेरु पर्वत का एक वन ; **पंडय** } (ठा २, ३ ; इक) ।

पंडय देखो **पंडव** ; (हे १, ७०) ।

पंडर पुं [**पाण्डर**] १ क्षीरवर-नामक द्वीप का अधिष्ठाता देव ; (राज) । २ श्वेत वर्ण, सफेद रंग ; ३ वि. श्वेत-

वर्ण वाला, सफेद ; (कप्प)। °भिक्खु पुं [°भिक्षु] श्वेताम्बर जैन संप्रदाय का मुनि ; (स ५५२)।

पंडर देखो **पंडुर** ; (स्वप्न ७१)।

पंडरंग पुं [**दे**] रुद्र, महादेव, शिव ; (दे ६, २३)।

पंडरंगु पुं [**दे**] ग्रामेश, गाँव का अधिपति ; (षड्)।

पंडरिय देखो **पंडुरिअ** ; (भवि)।

पंडव पुं [**पाण्डव**] राजा पाण्डु का पुत्र —१ युधिष्ठिर, २ भीम, ३ अर्जुन, ४ सहदेव और ५ नकुल ; (गाया १, १६ ; उप ६४८ टी)।

पंडविअ वि [**दे**] जलार्द्र, पानी से भीजा हुआ ; (दे ६, २०)।

पंडिअ वि [**पण्डित**] १ विद्वान्, शास्त्रों के मर्म को जानने वाला, बुद्धिमान्, तत्त्वज्ञ ; " कामकमया गामं गणिया हान्था बावत्तरीकलापंडिया " (विपा १, २ ; प्रासू ७४ ; १२६)। २ संयत, साधु ; (सूअ १, ८, ६)। °मरण न [°मरण] साधु का मरण, शुभ मरण-विशेष ; (भग ; पच्च ४६)। °माण वि [°म्मन्य] विद्याभिमानी, निज को पण्डित मानने वाला, दुर्विदग्ध ; (ओघ २७ भा)। °माणि वि [°मानिन्] देखो पूर्वोक्त अर्थ ; (पउम १०५, २१ ; उप १३४ टी)। °वीरिअ न [°वीर्य] संयत का आत्म-बल ; (भग)।

पंडिच्च } न [**पाण्डित्य**] पण्डिताई, विद्वत्ता, वैदुष्य ;
पंडिस } (उव ; सुर १२, ६८ ; सुपा २६ ; रंभा ; स ५७)।

पंडी देखो **पंड**=पाण्ड्य।

पंडीअ (अप) देखो **पंडिअ** ; (पिंग)।

पंडु पुं [**पाण्डु**] १ नृप-विशेष, पाण्डवों का पिता ; (उप ६४८ टी ; सुपा २७०)। २ रोग-विशेष, पाण्डु-रोग ; (जं १)। ३ वर्ण-विशेष, शुक्ल और पीत वर्ण ; ४ श्वेत वर्ण ; ५ वि.शुक्ल और पीत वर्ण वाला ; (कप्पू ; गउड)। ६ सफेद, श्वेत ; " सेअं सिअं वलक्खं अवदायं पंडु धवलं च " (पाअ ; गउड)। ७ शिला-विशेष, पाण्डु-कम्बला-नामक शिला ; (जं ४ ; इक)। °कंबलसिला स्त्री [°कम्बलशिला] मेरु पर्वत के पाण्डक वन के दक्षिण छोर पर स्थित एक शिला, जिस पर जिन-देवों का जन्माभिषेक किया जाता है; (जं ४)। °कंबला स्त्री [°कम्बला] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (ठा २, ३)। °तणय पुं [°तनय] पाण्डुराज का पुत्र, पाण्डव ; (गउड ४८५)। °भद्द पुं [°भद्र] एक जैन मुनि ,जो आर्य संभूतिविजय के शिष्य थे ; (कप्प)। °मट्टिआ, °मत्तिआ स्त्री [°मृत्तिका] एक प्रकार की सफेद मिट्टी ; (जीव १ ; पगण १—पत्र २५)। °महुरा स्त्री [°मथुरा] स्वनाम-ख्यात एक नगरी, पाण्डवों ने बनाई हुई भारतवर्ष के दक्षिण तरफ की एक नगरी का नाम ; (णाया १, १६—पत्र २२५ ; अंत)। °राय पुं [°राज] राजा पाण्डु, पाण्डवों का पिता ; (णाया १, १६)। °सुय पुं [°सुत] पाण्डव ; (उप ६४८ टी)। °सेण पुं [°सेन] पाण्डवों का द्रौपदी से उत्पन्न एक पुत्र ; (णाया १, १६ ; उप ६४८ टी)।

पंडुइय वि [**पाण्डुकित**] १ श्वेत रंग का किया हुआ ; (णाया १, १—पत्र २८)।

पंडुग } पुं [**पाण्डुक**] १ चक्रवर्ती का धान्यों की पूर्ति
पंडुय } करने वाला एक निधि ; (राज ; ठा २, १—पत्र ४४ ; उप ६८६ टी)। २ सर्प की एक जाति ; (आवृ १)। ३ न. मेरु पर्वत पर स्थित एक वन, पाण्डक-वन ; (सम ६६)।

पंडुर पुं [**पाण्डुर**] १ श्वेत वर्ण, सफेद रंग ; २ पीत-मिश्रित श्वेत वर्ण ; ३ वि. सफेद वर्ण वाला ; ४ श्वेत-मिश्रित पीत वर्ण वाला ; (कप्प ; उव ; से ८, ४६)। °ज्जा स्त्री [°ार्या] एक जैन साध्वी का नाम ; (आवम)। °ट्ठिय पुं [°ास्थिक] एक गाँव का नाम ; (आचू १)।

पंडुरग } पुं [**पाण्डुरक**] १ शिव-भक्त संन्यासिओं की
पंडुरय } एक जाति ; (णाया १, १५—पत्र १६३)। २ देखो **पंडुर** ; " केसा पंडुरया हवंति ते " (उत्त ३)।

पंडुरिअ } वि [**पाण्डुरित**] पाण्डुर वर्ण वाला बना
पंडुल्लइय } हुआ ; (गा ३८८ ; विपा १, २—पत्र २७)।

पंत वि [**प्रान्त**] १ अन्त-वर्ती, अन्तिम ; (भग ६, ३३)। २ असोभन, असुन्दर ; (आचा ; ओघ १७ भा)। ३ इन्द्रियों का अननुकूल, इन्द्रिय-प्रतिकूल ; (पण्ह २, ५)। ४ अभद्र, असभ्य, अशिष्ट ; (ओघ ३६ टी)। ५ अपशद, नीच, दुष्ट ; (णाया १, ८)। ६ दरिद्र, निर्धन ; (ओघ ६१)। ७ जीर्ण, फटा-टूटा ; " पंतवत्थ—" (बृह २)। ८ व्यापन्न, विनष्ट ; " णिप्फावचणमाई अंतं, पंतं च होइ वावन्नं " (बृह १ ; आचा)। ६ नीरस, सूखा ; (उत्त ८)। १० भुक्तावशिष्ट, खा लेने पर बचा हुआ ; ११ पर्युषित, बासी ; (णाया १, ५—पत्र १११)। °कुल न [°कुल] नीच कुल, जघन्य जाति ;

(ठा ८) । °चर वि [°चर] नीरस आहार की खोज करने वाला तपस्वी ; (पण्ह २, १) । °जीवि वि [°जीविन्] नीरस आहार से शरीर-निर्वाह करने वाला ; (ठा ५, १) । °हार वि [°हार] लूखा-सूखा आहार करने वाला ; (ठा ५, १) ।

पंति स्त्री [**पङ्क्ति**] १ पंक्ति, श्रेणी ; (हे १, २५ ; कुमा ; कप्प) ; २ सेना-विशेष, जिसमें एक हाथी, एक रथ, तीन घोड़े और पाँच पदाती हों ऐसी सेना ; (पउम ५६, ४) ।

पंति स्त्री [**दे**] वेणी, केश-रचना ; (दे ६, २) ।

पंतिय स्त्रीन [**पङ्क्ति**] पंक्ति, श्रेणी ; " सणाणि वा सप्पंतियाणि वा सरसरपंतियाणि वा " (आचा २, ३, ३, २) । स्त्री " पंतियाओ " (अणु) ।

पंथ पुं [**पन्थ, पथिन्**] मार्ग, रास्ता ; " पंथं किर देसित्ता " (हे १, ८८), " पंथम्मि पहपरिब्भट्ठे " (सुपा ५५० ; हेका ५४ ; प्रासू १७३) ।

पंथ पुं [**पान्थ**] पथिक, मुसाफिर ; (हे १, ३० ; अच्चु ७४) । °कुट्टण न [°कुट्टन] मार-पीट कर मुसाफिरों को लूटना ; (णाया १, १८) । °कोट्ट पुं [°कुट्ट] वही अर्थ ; (विपा १, १—पत्र ११) । °कोट्टि स्त्री [°कुट्टि] वही अर्थ ; "से चोरसेणावई गामघायं वा जाव पंथकोट्टिं वा काउं वच्चति " (णाया १, १८) ।

पंथग पुं [**पान्थक**] एक जैन मुनि ; (णाया १, ५ ; धम्म ६ टी) ।

पंथाण देखो **पंथ**=पन्थ, पथिन् ; " पंथझाणे पंथाणंझाणे " (आउ ११) ।

पंथिअ पुं [**पन्थिक, पथिक**] मुसाफिर, पान्थ ; " पंथिअ णं एत्थ संथर " (काप्र १५८ ; महा ; कुमा ; णाया १, ८ ; वज्जा ६० ; १५८) ।

पंथुच्छुहणी स्त्री [**दे**] श्वशुर-गृह से पहली बार आनीत स्त्री ; (दे ६, ३५) ।

पंपुअ वि [**दे**] दीर्घ, लम्बा ; (दे ६, १२) ।

पंफुल्ल वि [**प्रफुल्ल**] विकसित ; (पिंग) ।

पंफुलिअ वि [**दे**] गवेषित, जिसकी खोज की गई हो वह ; (दे ६, १७) ।

पंस सक [**पांसय्**] मलिन करना । पंसेइ ; (विसे ३०५२) ।

पंसण वि [**पांसन**] कलङ्कित करने वाला, दूषण लगाने वाला ; (हे १, ७० ; सुपा ३४५) ।

पंसु पुं [**पांसु, पांशु**] धूली, रज, रेणु ; (हे १, २६ ; पाअ ; आचा) । °कीलिय, °क्कीलिय वि [°क्रीडित] जिसके साथ बचपन में पांशु-क्रीडा की गई हो वह, बचपन का दोस्त ; (महा ; सण) । °पिसाय पुंस्त्री [°पिशाच] जो रेणु-लिप्त होने के कारण पिशाच के तुल्य मालूम पड़ता हो वह ; (उत्त १२) । °मूलिय पुं [°मूलिक] विद्याधर, मनुष्य-विशेष ; (राज) ।

पंसु पुं [**पर्शु**] कुठार ; (हे १, २६) ।

पंसु देखो **पसु** ; (षड्) ।

पंसुल पुं [**दे**] १ कोकिल, कोयल ; २ जार, उपपति ; (दे ६, ६६) । ३ वि. रुद्ध, रोका हुआ ; (षड्) ।

पंसुल पुं [**पांसुल**] १ पुंश्चल, परस्त्री-लम्पट ; (गा ५१० ; ५६६) । २ वि. धूलि-युक्त ; (गउड) ।

पंसुला स्त्री [**पांसुला**] कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री ; (कुमा) ।

पंसुलिअ वि [**पांसुलित**] धूलि-युक्त किया हुआ ; " पंसुलिअकरंग " (गउड) ।

पंसुलिआ स्त्री [**दे, पांशुलिका**] पार्श्व की हड्डी ; (पव २५३) ।

पंसुली स्त्री [**पांसुली**] कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री ; (पाअ ; सुर १५, २ ; हे २, १७६) ।

पकंथ देखो **पगंथ** ; (आचा १, ६, २) ।

पकंथग पुं [**प्रकन्थक**] अश्व-विशेष ; (ठा ४, ३—पत्र २४८) ।

पकंप पुं [**प्रकम्प**] कम्प, काँपना ; (आव ४) ।

पकंपण न [**प्रकम्पन**] ऊपर देखो ; (सुपा ६५१) ।

पकंपिअ वि [**प्रकम्पित**] प्रकम्प-युक्त, काँपा हुआ ; (आव २) ।

पकंपिर वि [**प्रकम्पितृ**] काँपने वाला ; (उप पृ १३२) । स्त्री °री ; (रंभा) ।

पकड्ढ देखो **पगड्ढ** । कवकृ—**पकड्ढिज्जमाण** ; (औप) ।

पकड्ढ वि [**प्रकृष्ट**] १ प्रकर्ष-युक्त ; २ खींचा हुआ ; (औप) ।

पकड्ढण न [**प्रकर्षण**] आकर्षण, खींचाव ; (निचू २०) ।

पकत्थ सक [**प्र+कत्थ्**] श्लाघा करना, प्रशंसा करना । पकत्थइ ; (सूअ १, ४, १, १६ ; पि ५४३) ।

पकप्प अक [**प्र + क्लृप्**] १ काम में आना, उपयोग में आना। २ काटना, छेदना। कृ **पकप्प** ; (ठा ५, १ पत्र ३००)। देखो **पगप्प**=प्र + क्लृप्।

पकप्प सक [**प्र + कल्पय्**] १ करना, बनाना। २ संकल्प करना। "वायं वयं विति पकप्पयामो" (सूअ २, ६, ५२)।

पकप्प पुं [**प्रकल्प**] १ उत्कृष्ट आचार, उत्तम आचरण ; (ठा ४, ३)। २ अपवाद, बाधक नियम ; (उप ६७७ टी ; निचू १)। ३ अध्ययन-विशेष 'आचारांग' सूत्र का एक अध्ययन ; ४ व्यवस्थापन ; "अट्ठावीसविहे आयार-पकप्पे" (सम २८)। ५ कल्पना ; ६ प्ररूपणा ; ७ विच्छेद, प्रकृष्ट छेदन ; (निचू १)। ८ जैन साधुओं का एक प्रकार का आचार, स्थविर-कल्प ; (पंचभा)। ९ एक महाग्रह, ज्योतिष देव-विशेष ; (सुज्ज २०)। °**गंथ** पुं [°**ग्रन्थ**] एक जैन प्राचीन ग्रन्थ, 'निशीथ' सूत्र ; (जीव १)। °**जइ** पुं [°**यति**] 'निशीथ' अध्ययन का जानकार साधु ; "धम्मो जिणपन्नत्तो पकप्पजइणा कहेयव्वो" (धर्म १)। °**धर** वि [°**धर**] 'निशीथ' अध्ययन का जानकार ; (निचू २०)। देखो **पगप्प**=प्रकल्प।

पकप्पणा स्त्री [**प्रकल्पना**] प्ररूपणा, व्याख्या ; "पन्नवणा त्ति वा पकप्पणा त्ति वा एगट्ठा" (निचू १)।

पकप्पिअ वि [**प्रकल्पित**] १ संकल्पित ; (द्र २)। २ निर्मित ; (महा)। ३ न. पूर्वोपार्जित द्रव्य ; "ण मा अत्थि पकप्पियं" (सूअ १, ३, ३, ४)। देखो **पगप्पिअ**।

पकय वि [**प्रकृत**] प्रक्रान्त, कार्य में लगा हुआ ; (उप ६२०)।

पकर सक [**प्र + कृ**] १ करने का प्रारम्भ करना। २ प्रकर्ष से करना। ३ करना। पकरेइ, पकरेंति, पकरेंति ; (भग ; पि ५०९)। वकृ **पकरेमाण** ; (भग)। संकृ **पकरित्ता** ; (भग)।

पकर देखो **पयर**=प्रकर ; (नाट वेणी ७२)।

पकरणया स्त्री [**प्रकरणता**] करण, कृति ; (भग)।

पकहिअ वि [**प्रकथित**] जिसने कहने का प्रारम्भ किया हो वह ; (उप १०३१ टी ; वसु)।

पकाम न [**प्रकाम**] १ अत्यर्थ, अत्यन्त ; (गाया १, १ ; महा ; नाट—शकु २७)। २ पुं. प्रकृष्ट अभिलाष ; (भग ७, ७)।

पकाव (अप) सक [**पच्**] पकाना। पकावउ ; (पिंग ; पि ४५४)।

पकास देखो **पयास**=प्रकाश ; (पिंग)।

पकिट्ठ देखो **पगिट्ठ** ; (गज)।

पकिण्ण वि [**प्रकीर्ण**] १ उप्त, बोया हुआ ; २ दत्त, दिया हुआ ; "जहिं पकिण्णा (न्ना) विरुहंति पुण्णा" (उत्त १२, १३)। देखो **पइण्ण**=प्रकीर्ण।

पकिदि (शौ) देखो **पइइ**=प्रकृति ; (स्वप्न ६० ; अभि ६५)।

पकिन्न देखो **पकिण्ण** ; (उत्त १२, १३)।

पकुण देखो **पकर**=प्र + कृ। पकुणइ ; (कम्म १, ६०)।

पकुप्प अक [**प्र + कुप्**] क्रोध करना। पकुप्पंति ; (महानि ४)।

पकुप्पित (चूपै) वि [**प्रकुपित**] क्रुद्ध, कुपित ; (हे ४, ३२६)।

पकुविअ ऊपर देखो ; (महानि ४)।

पकुव्व सक [**प्र + कृ, प्र + कुर्व्**] १ करने का प्रारम्भ करना। २ प्रकर्ष से करना। ३ करना। पकुव्वइ ; (पि ५०८)। वकृ **पकुव्वमाण** ; (सुर १६, २४ ; पि ५०८)।

पकुव्वि वि [**प्रकारिन्, प्रकुर्विन्**] १ करने वाला, कर्ता। २ पुं. प्रायश्चित्त देकर शुद्धि कराने में समर्थ गुरु ; (द्र ४६ ; ठा ८ ; पुप्फ ३५६)।

पकूविअ वि [**प्रकूजित**] ऊँचे स्वर से चिल्लाया हुआ ; (उप पृ ३३२)।

पकोट्ठ देखो **पओट्ठ** ; (गज)।

पकोव पुं [**प्रकोप**] गुस्सा, क्रोध ; (श्रा १४)।

पक्क वि [**पक्व**] पका हुआ ; (हे १, ४७ ; २, ७९ ; पाअ)।

पक्क वि [**दे**] १ दृप्त, गर्वित ; २ समर्थ, पक्का, पहुँचा हुआ ; (दे ६, ६४ ; पाअ)।

पक्कंत वि [**प्रक्रान्त**] प्रस्तुत, प्रकृत ; (कुमा २७)।

पक्कग्गाह पुं [**दे**] १ मकर, मगरमच्छ ; (दे ६, २३)। २ पानी में बसने वाला सिंहाकार जल-जन्तु ; (से ५, ५७)।

पक्कण वि [दे] १ अ-सहन, अ-सहिष्णु ; २ समर्थ, शक्त ; (दे ६, ६६)। ३ पुं. चाण्डाल ; (सं ६३)। ४ एक अनार्य देश; ५ पुंस्त्री. अनार्य देश-विशेष में रहने वाली एक मनुष्य-जाति . (औप ; गउ); स्त्री °णी ; (गाया १, १ ; औप ; इक)। ६ पुं. एक नीच जाति का घर, शबर-गृह ; (पंग ५२)। °उल न [°कुल] १ चाण्डाल का घर ; (बृह ३)। २ एक गर्हित कुल ; "पक्कणउले वसंतो सउणी इयरोवि गरहिओ होइ" (आव ३)।

पक्कणि वि [दे] १ अतिशय शोभमान, खूब शोभता हुआ ; २ भग्न, भाँगा हुआ ; ३ प्रियंवद, प्रिय-भाषी ; (दे ६, ६५)।

पक्कणिय पुंस्त्री [दे] एक अनार्य देश में रहने वाली मनुष्य-जाति ; (पगह १, १ पत्र १४ ; इक)।

पक्कन्न न [पक्वान्न] केवल घी में बनी हुई वस्तु, मिठाई आदि ; (सुपा ३८७)।

पक्कम सक [प्र + क्रम्] प्रकर्ष से समर्थ होना। पक्कमइ ; (भग १५ पत्र ६७८)।

पक्कम पुं [प्रक्रम] प्रस्ताव, प्रसंग ; (सुपा ३७४)।

पक्कल वि [दे] १ समर्थ, शक्त , (हे २, १७४ ; पाअ ; सुर ११, १०४ ; वज्जा ३४)। २ दर्प-युक्त, गर्वित ; (सुर ११, १०४ ; गा ११८)। ३ प्रौढ ; "चत्तारि पक्कल-बइल्ला" (गा ८१२ ; पि ४३६)।

पक्कस देखो **वक्कस** ; (आचा)।

पक्कसावअ पुं [दे] १ शरभ ; २ व्याघ्र ; (दे ६, ७५)।

पक्काइय वि [पक्वीकृत] पकाया हुआ ; " पक्काइयमाउलिंगमाग्च्छिा " (वज्जा ६२)।

पक्किर सक [प्र + कॄ] फेंकना। वकृ—"छारं च धूलिं च कयवरं च उवरिं **पक्किरमाणा** "(गाया १, २)।

पक्कीलिय वि [प्रक्रीडित] जिसने क्रीड़ा का प्रारम्भ किया हो वह ; (गाया १, १ ; कप्प)।

पक्केलुय वि [पक्व] पका हुआ ; (उवा)।

पक्ख पुं [पक्ष] १ पाख, पखवारा, आधा महीना, पन्द्रह दिन-रात ; (ठा २, ४ — पत्र ८६ ; कुमा)। २ शुक्ल और कृष्ण पक्ष, उजेला और अँधेरा पाख ; (जीव २ ; हे २, १०६)। ३ पार्श्व, पाँजर, कन्धा के नीचे का भाग ; ४ पक्षियों का अवयव-विशेष, पंख, पर, पतत्र ; (कुमा)। ५ तर्क-शास्त्र-प्रसिद्ध अनुमान-प्रमाण का एक अवयव, साध्य वाली वस्तु ; (विसे २८२४)। ६ तरफ, ओर ; ७ जत्था, दल, टोली ; ८ मित्र, सखा ; ६ शरीर का आधा भाग ; १० तरफदार ; ११ तीर का पंख ; (हे २, १४७)। १२ तरफदारी ; (वव १)। °ग वि [°ग] पक्ष-गामी, पक्ष-पर्यन्त स्थायी ; (कम्म १, १८)। °पिंड पुंन [°पिण्ड] आसन-विशेष—१ जानु और जाँघ पर वस्त्र बाँध कर बैठना ; २ दोनों हाथों से शरीर का बन्धन कर बैठना ; (उत्त १, १६)। °य पुं [°क] पंखा, तालवृन्त ; (कप्प)। °वंत वि [°वत्] तरफदारी वाला ; (वव १)। °वाइल्ल वि [°पातिन्] पक्षपात करने वाला, तरफदारी करने वाला ; (उप ७२८ टी ; धम्म १ टी)। °वाद पुं [°पात] तरफदारी ; (उप ६७० ; स्वप्न ४५)। °वादि (शौ) देखो °वाइल्ल ; (नाट—विक्र २ ; मालती ६५)। °वाय देखो °वाद ; (सुपा २०६ ; ३६३)। °वाय पुं [°वाद] पक्ष-संबन्धी विवाद ; (उप पृ ३१२)। °वाह पुं [°वाह] वेदिका का एक देश-विशेष ; (जं १)। °ावडिअ वि [°पतित] पक्षपाती ; (हे ४, ४०१)। °ावाइया स्त्री [°ापिका] होम-विशेष ; (स ७५७)।

पक्खंत न [पक्षान्त] अन्यतर इन्द्रिय-जात ; " अन्नयरं इंदियजायं पक्खंतं भएणाइ " (निचू ६)।

पक्खंतर न [पक्षान्तर] अन्य पक्ष, भिन्न पक्ष, दूसरा पक्ष ; (नाट—महावी २५)।

पक्खंद सक [प्र + स्कन्द्] १ आक्रमण करना। २ दौड़ कर गिरना। ३ अध्यवसाय करना। " पक्खंदे जलियं जोइं धूमकेउं दुरासयं " (गउ)। " अगणिं व पक्खंद पयंगसेणा " (उत्त १२, २७)।

पक्खंदण न [प्रस्कन्दन] १ आक्रमण ; २ अध्यवसाय। ३ दौड़ कर गिरना ; (निचू ११)।

पक्खज्जमाण वि [प्रखाद्यमान] जो खाया जाता हो वह , (सुअ १, ५, २)।

पक्खडिअ वि [दे] प्रस्फुरित, विजृम्भित, समुत्पन्न ; " पक्खडिए सिहिपडिन्थिरे विरहे " (दे ६, २०)।

पक्खर सक [सं + नाहय्] संनद्ध करना, अश्व का कवच से सज्जित करना। पक्खरेइ ; (सुपा २८८)। संकृ—**पक्खरिअ** ; (पिंग)।

पक्खर न [**दे**] पाखर, अश्व-संनाह, घोड़े का कवच; (कुप्र ४४६; पिंग)।

पक्खरा स्त्री [**दे**] पाखर, अश्व-संनाह; (दे ६, १०)। "ओसारिअपक्खरं" (विपा १, २)।

पक्खरिअ वि [**संनद्ध**] कवचित, संनद्ध, कवच से सज्जित, (अश्व); (सुपा ५०२; कुप्र १२०; भवि)।

पक्खल अक [प्र + **स्खल्**] गिरना, पड़ना, स्खलित होना। पक्खलइ; (कस)। वकृ — **पक्खलंत, पक्खलमाण**; (दस ५, १; पि ३०६; नाट—मृच्छ १७; बृह ६)।

पक्खाउज्ज न [**पक्षातोद्य**] पखाउज, पखावज, एक प्रकार का बाजा; (कप्प)।

पक्खाय वि [**प्रख्यात**] प्रसिद्ध, विश्रुत; (प्राकृ)।

पक्खारिण पुं [**प्रक्षारिण**] १ अनार्य-देश विशेष; २ पुंस्त्री. उस देश का निवासी मनुष्य; स्त्री — °**णी**; (राय)।

पक्खाल सक [**प्र + क्षालय्**] पखारना, शुद्ध करना, धोना। कवकृ—**पक्खालिज्जमाण**; (णाया १, ५)। संकृ — **पक्खालिअ, पक्खालिऊण**; (नाट—चैत ४०; महा)।

पक्खालण न [**प्रक्षालन**] पखारना, धोना; (स ५२; औप)।

पक्खालिअ वि [**प्रक्षालित**] पखारा हुआ, धोया हुआ; (औप; भवि)।

पक्खासण न [**पक्ष्यासन**] आसन-विशेष, जिसके नीचे अनेक प्रकार के पक्षिओं का चित्र हो ऐसा आसन; (जीव ३)।

पक्खि पुंस्त्री [**पक्षिन्**] पाखी, पक्षी; (ठा ४, ४; आचा; सुपा ५६२)। स्त्री °**णी**; (श्रा १४)। °**बिराल** पुंस्त्री [°**बिराल**] पक्षि-विशेष; (भग १३, ६)। स्त्री °**ली**; (जीव १)। °**राय** पुं [**राज**] गरुड़; (सुपा २१०)। नीचे देखो।

पक्खिअ पुंस्त्री [**पक्षिक**] १ ऊपर देखो; (श्रा २८)। २ वि. पक्षपाती, तरफदारी करने वाला; "नय्पक्खिओ पुणो अम्मो" (श्रा १२)।

पक्खिअ वि [**पाक्षिक**] १ पाख में होने वाला; २ पक्ष से संबन्ध रखने वाला, अर्ध मास-संबन्धी; (कप्प; धर्म २)। ३ न. पर्व-विशेष, चतुर्दशी; (लहुअ १६; द्र ४५)। °**पक्खिअ** पुं [°**पक्षिक**] नपुंसक-विशेष, जिसको एक पाख में तीव्र विषयाभिलाष होता हो और एक पक्ष में अल्प, ऐसा नपुंसक; (पुप्फ १२७)।

पक्खिकायण न [**पाक्षिकायन**] गोत्र-विशेष जो कौशिक गोत्र की एक शाखा है; (ठा ७)।

पक्खिण देखो **पक्खि**; "जह पक्खिणाण गरुडो" (पउम १४, १०४)।

पक्खिणी देखो **पक्खि**।

पक्खित्त वि [**प्रक्षिप्त**] फेंका हुआ; (महा; पि १८१)।

पक्खिप्प } देखो **पक्खिव**।
पक्खिप्पमाण }

पक्खिव सक [**प्र + क्षिप**] १ फेंकना, फेंक देना। २ छोड़ना, त्यागना। ३ डालना। पक्खिवइ; (महा; कप्प)। पक्खिवह, पक्खिवेज्जा; (आचा २, ३, २, ३)। कवकृ — **पक्खिप्पमाण**; (णाया १, ८ — पत्र १२६; १४७)। संकृ — **पक्खिविऊण, पक्खिप्प**; (महा; सुअ १, ५, १; पि ३१६)। कृ — **पक्खिवेयव्व**; (उप ६४८ टी)। प्रयो वकृ **पक्खिवाविमाण**; (णाया १, १२)।

पक्खीण वि [**प्रक्षीण**] अत्यन्त क्षीण; "अहं पक्खीण-विभवो" (महा)।

पक्खुडिअ वि [**प्रखण्डित**] खण्डित, अ-संपूर्ण; (सुपा ११६)।

पक्खुभ अक [**प्र + क्षुभ्**] १ क्षोभ पाना; २ वृद्ध होना, बढ़ना। वकृ — **पक्खुब्भंत**; (स २, २४)।

पक्खुब्भंत देखो **पक्खोभ**।

पक्खुभिय वि [**प्रक्षुभित**] क्षोभ-प्राप्त; प्रक्षुब्ध; (औप)।

पक्खेव } पुं [**प्रक्षेप, °क**] १ क्षेपण, फेंकना; **पक्खेवग** } "बहिया पोग्गलपक्खेवे" (उवा)। २ पूर्ति करने वाला द्रव्य, पूर्ति के लिये पीछे से डाली जाती वस्तु; "अपक्खेवगस्स पक्खेवं दलयइ" (णाया १, १५ — पत्र १६३)।

पक्खेवण न [**प्रक्षेपण**] क्षेपण, प्रक्षेप; (औप)।

पक्खेवय देखो **पक्खेवग**; (बृह १)।

पक्खोड सक [**वि + कोशय्**] १ खोलना। २ फैलाना। पक्खोडइ; (हे ४, ४२)। संकृ **पक्खोडिऊण**; (सुपा ३३८)।

पक्खोड सक [**शद्**] १ कँपाना; २ झाड़ कर गिराना। पक्खोडइ; (हे ४, १३०)। संकृ — **पक्खोडिय**; (उप ५८४)।

पक्खोड सक [**प्र + छादय्**] ढकना, आच्छादन करना। संकृ. **पक्खोडिय** ; (उप ५८४) ।

पक्खोडण न [**शदन**] धूनन, कँपाना ; (कुमा) ।

पक्खोडिअ वि [**शदित**] निर्भाटित, झाड़ कर गिराया हुआ ; (दे ६, २७ ; पाअ) ।

पक्खोडिय देखो **पक्खोड** = शद्, प्र + छादय् ।

पक्खोभ सक [**प्र + क्षोभय्**] क्षुब्ध करना, क्षोभ उत्पन्न कर हिला देना । कवकृ. **पक्खुब्भंत** ; (से २, २४) ।

पक्खोलण न [**शदन**] १ स्खलित होने वाला ; २ रुष्ट होने वाला ; (गउ) ।

पखल वि [**प्रखर**] प्रचण्ड, तीव्र ; (प्राप्र) ।

पगइ स्त्री [**प्रकृति**] १ प्रकृति, स्वभाव ; (भग ; कम्म १, २ ; सुर १४, ६६ ; सुपा ११०) । २ प्रकृत अर्थ, प्रस्तुत अर्थ ; " पडिसेहदुगं पगइं गमेइ " (विसे २५०२) । ३ प्राकृत लोक, साधारण जन-समूह ; " दिन्नमुद्दारं बहुदव्वं पगईणं " (सुपा ५६७) । ४ कुम्भकार आदि अठारह मनुष्य-जातियाँ ; " अट्ठारसपगइब्भंतराणा को सो न जो गइ " (आक १२) । ५ कर्मों का भेद ; (सम ६) । ६ सत्त्व, रज और तम की साम्यावस्था ; ७ बलदेव के एक पुत्र का नाम ; (राज) । °**बंध** पुं [°**बन्ध**] कर्म-पुद्गलों में भिन्न भिन्न शक्तियों का पैदा होना ; (कम्म १, २) । देखो **पगडि** ।

पगंठ पुं [**प्रकण्ठ**] १ पीठ-विशेष ; २ अन्त का अवनत प्रदेश ; (जीव ३) ।

पगंथ सक [**प्र + कथय्**] निन्दा करना । " अलियं पगं-(कं)थे अदुवा पगं(कं)थे " (आचा) ।

पगड वि [**प्रकट**] व्यक्त, खुला ; (पि २१९)

पगड वि [**प्रकृत**] प्रविहित, विनिर्मित ; (उत्त १३) ।

पगडण न [**प्रकटन**] प्रकाश करना, खुला करना ; (गांदि) ।

पगडि स्त्री [**प्रकृति**] १ भेद, प्रकार ; (भग) । २—देखो **पगइ** ; (सम ४६ ; सुर १४, ६८) ।

पगडीकय वि [**प्रकटीकृत**] व्यक्त किया हुआ ; (सुपा १८१) ।

पगड्ढ सक [**प्र + कृष्**] खींचना । कवकृ—**पगड्ढिज्जमाण** ; (विपा १, १) ।

पगप्प देखो **पकप्प** = प्र + कल्पय् । संकृ —**पगप्पएत्ता** ; (सूअ २, ६, ३७) ।

पगप्प देखो **पकप्प** = प्र + क्लृप् ; (सूअ १, ८, ५) ।

पगप्प पुं [**प्रकल्प**] १ उत्पन्न होने वाला, प्रादुर्भूत होने वाला ; " बहुगुणप्पगप्पाइं कुज्जा अत्तसमाहिए " (सूअ १, ३, ३, १९) । देखो **पकप्प=प्रकल्प** ; (आचा) ।

पगप्पिअ वि [**प्रकल्पित**] प्ररूपित, कथित; " वा उ एयाहिं दिट्ठीहिं पुव्वमासि पगप्पियं " (सूअ १, ३, ३,१६) । देखो **पकप्पिअ** ।

पगप्पित्तु वि [**प्रकल्पयितृ, प्रकर्तयितृ**] काटने वाला, कतरने वाला ; " हंता छेत्ता पगब्भि(प्पि)त्ता आय-सायाणुगामिणो " (सूअ १, ८, ५) ।

पगब्भ अक [**प्र + गल्भ्**] १ धृष्टता करना, धृष्ट होना ; २ समर्थ होना । पगब्भइ, पगब्भई ; (आचा ; सूअ १, २, २, २१ ; १, २, ३, १० ; उत्त ५, ७) ।

पगब्भ वि [**प्रगल्भ**] धृष्ट, धीठ ; (पउम ३३, ६६) । २ समर्थ ; (उप २६४ टी) ।

पगब्भ न [**प्रागल्भ्य**] धृष्टता, धीठाई ; " पगब्भि पाणे बहुणांतिवाती " (सूअ १, ७, ८) ।

पगब्भा स्त्री [**प्रगल्भा**] भगवान् पार्श्वनाथ की एक शिष्या ; (आवम) ।

पगब्भिअ वि [**प्रगल्भित**] धृष्टता-युक्त ; (सूअ १, १, १, १३ ; १, २, ३, ४) ।

पगय वि [**प्रकृत**] प्रस्तुत, अधिकृत ; (विसे ८३३ ; उप ४७६) ।

पगय वि [**प्रगत**] १ प्राप्त ; (राज) । २ जिसने गमन करने का प्रारम्भ किया हो वह ; " मुणिणोवि जहाभि-मयं पगया पगएण कज्जेण " (सुपा २३५) । ३ न. प्रस्ताव, अधिकार ; (सूअ १, ११ ; १५) ।

पगय न [**दे**] पग, पाँव, पैर ; " पल्थंतम्मि लग्गो चंड-मारुओ । तेण भग्गो तुरयपगयमग्गो " (महा) ।

पगर पुं [**प्रकर**] समूह, राशि ; (सुपा ६५५) ।

पगरण न [**प्रकरण**] १ अधिकार, प्रस्ताव ; २ ग्रन्थ-खण्ड-विशेष, ग्रन्थांश-विशेष ; (विसे १११५) । ३ किसी एक विषय को लेकर बनाया हुआ छोटा ग्रन्थ ; (उव) ।

पगरिस पुं [**प्रकर्ष**] १ उत्कर्ष, श्रेष्ठता ; (सुपा १०६) । २ आधिक्य, अतिशय ; (सुर ४, १६६) ।

पगरिसण न [**प्रकर्षण**] ऊपर देखो ; (यति १६) ।

पगल अक [**प्र + गल्**] झरना, टपकना । वकृ—**पगलंत** ; (विपा १, ७ ; महा) ।

पगहिय वि [**प्रगृहीत**] ग्रहण किया हुआ, उपात्त ; (सुर ३, १६७) ।
पगाइय वि [**प्रगीत**] जिसने गाने का प्रारम्भ किया हो वह ; " पगाइयाइं मंगलमंतेउराइं " (स ७३६) ।
पगाढ वि [**प्रगाढ**] अत्यन्त गाढ ; (विपा १, १ ; सुपा ५३०) ।
पगाम देखो **पकाम** ; (आचा ; आ १४ ; सुर ३, ८७ ; कुप्र ३१५) ।
पगार पुं [**प्रकार**] १ भेद ; (आवृ १) । २ रीति : " एएण पगारेण सव्वं दव्वं दवाविओ " (महा) । ३ आदि, वगैरः, प्रभृति ; (सूअ १, १२) ।
पगास देखो **पयास** = प्र + काशय् । वकृ—**पगासेंत** ; (महा) ।
पगास पुं [**प्रकाश**] १ प्रभा, दीप्ति, चमक ; (गाया १, १), " एगं महं नीलुप्पलगवलगुलियअयसिकुसुमप्पगासं असिं खुरधारं गहाय " (उवा) । २ प्रसिद्धि, ख्याति ; (सूअ १, ६) । ३ आविर्भाव, प्रादुर्भाव : ४ उद्योत, आतप ; (राज) । ५ क्रोध, गुस्सा ; " छन्नं च पसंस णो करे न य उक्कोस पगास माहणे " (सूअ १, २, २६) । ६ वि प्रकट, व्यक्त ; (निचू १) ।
पगासग देखो **पगासय** ; (राज) ।
पगासण देखो **पयासण** ; (औप) ।
पगासणया स्त्री [**प्रकाशनता**] प्रकाश, आलोक ; (ओघ ५५०) ।
पगासय वि [**प्रकाशक**] प्रकाश करने वाला ; (विसे ११५५) ।
पगासिय वि [**प्रकाशित**] उद्योतित, दीप्त ; "से सूरियस्स अब्भुग्गमेणं मग्गं वियाणाइ पगासियंसि " (सूअ १, १४, १२) ।
पगिज्झिय देखो **पगिण्ह** ; (कस ; औप ; पि ५९१) ।
पगिट्ठ वि [**प्रकृष्ट**] १ प्रधान, मुख्य ; (सुपा ७७) । २ उत्तम, श्रेष्ठ ; (कुप्र २० ; सुपा २२६) ।
पगिण्ह सक [**प्र + ग्रह्**] १ ग्रहण करना । २ उठाना । ३ धारण करना । ४ करना । संकृ—**पगिण्हित्ता**, **पगिण्हित्ताणं**, **पगिज्झिय** ; (पि ५८२ ; ५८३ ; औप ; आचा २,३,४, १ ; कस) ।
पगीअ वि [**प्रगीत**] १ गाया हुआ ; (पउम ३७, ४८) । २ जिसका गीत गाया गया हो वह ; (उप २११ टी) ।
पगुण देखो **पउण** ; (सूअ १, १, २) ।
पगुणीकर सक [**प्रगुणी + कृ**] प्रगुण करना, तय्यार करना, सज्ज करना । कवकृ—**पगुणीकीरंत**; (सुर १३, ३१) ।
पगे अ [**प्रगे**] सुबह, प्रभात काल ; (सुर ७,७८ ; कुप्र १५५) ।
पग्ग सक [**ग्रह्**] ग्रहण करना । पग्गइ ; (षड्) ।
पग्गह पुं [**प्रग्रह**] १ उपधि, उपकरण ; (ओघ ६६६) । २ लगाम ; (से ९, २७ ; १२, ६६) । ३ पशुओं को नाक में लगाई जाती डोरी, नाक की रस्सी, नाथ : ४ पशुओं को बाँधने की डोरी, रस्सी ; (गाया १, ३ ; उवा) । ५ नायक, मुखिया ; (ठा १) । ६ ग्रहण, उपादान ; ७ योजन, जोड़ना ; " अंजलिपग्गहेणं " (अम) ।
पग्गहिअ वि [**प्रगृहीत**] १ अभ्युपगत, सम्यक् स्वीकृत ; (अनु ३) । २ प्रकर्ष से गृहीत ; (भग ; औप) । ३ उठाया हुआ ; (धर्म ३ ; ठा ६) ।
पग्गहिय वि [**प्रग्रहिक**] ऊपर देखो ; (उवा) ।
पग्गिम } (अप) अ [**प्रायस्**] प्रायः, बहुधा ; (षड् ;
पग्गिम्व } हे ४, ४१४ ; कुमा) ।
पग्गेज्ज पुं [**दे**] निकर, समूह ; (दे ६, १५) ।
पघंस सक [**प्र + घृष्**] फिर फिर घिसना । पघंसेज्ज ; (निचू १७) । प्रयो —वकृ—**पघंसावेंत** ; (निचू १७) ।
पघंसण न [**प्रघर्षण**] पुनः पुनः घर्षण ; " एक्कं दिणं आघंसणं, दिणे दिणे पघंसणं " (निचू ३) ।
पघोल अक [**प्र + घूर्णय्**] मिलना, संगत होना । वकृ " कंठपघोलंतपंचमुग्गारा " (कुप्र २२६) ।
पघोस पुं [**प्रघोष**] उच्चैः शब्द-प्रकाश, उद्घोषणा ; (भवि) ।
पघोसिय वि [**प्रघोषित**] घोषित किया हुआ, उच्च स्वर से प्रकाशित किया हुआ ; (भवि) ।
पच सक [**पच्**] पकाना । पचइ, पचए, पचंति ; पचसि, पचसे, पचह, पचत्थ ; पचामि, पचामो, पचामु, पचाम, पचिमो, पचिमु ; (संक्षि ३० ; पि ४३६ ; ४५५) । कवकृ **पच्चमाण** ; "नरए नेरइयाणं अहोनिसिं पच्चमाणाणं " (सुर १४, ४६ ; सुपा ३२८) ।
पच (अप) देखो **पंच** । °आलीस, °तालीस स्त्रीन [°**चत्वारिंशत्**] १ संख्या-विशेष, पैंतालीस , ४५ ; २ पैंतालीस संख्या जिनकी हो वे ; (पि २७३ ; ४४५ ; पिंग) ।

पचंकमणग न [**प्रचङ्क्रमण, °क**] पाँव से चलना ; (औप) ।

पचंकमावण न [**प्रचङ्क्रमण**] पाँव से संचारण, पाँव से चलाना ; (औप १०५ टि) ।

पचंड देखो **पयंड** ; (वव ८) ।

पचलिय देखो **पयलिय**=प्रचलित ; (औप) ।

पचाल सक [**प्र + चालय्**] अतिशय चलाना, खूब चलाना । वकृ —**पचालेमाण** ; (भग १७, १) ।

पचिय वि [**प्रचित**] समृद्ध ; (स्वप्न ६६) ।

पचीस (अप) स्त्रीन [**पञ्चविंशति**] १ पचीस, संख्या-विशेष, बीस और पाँच, २५ ; २ जिनकी संख्या पचीस हो वे ; (पिंग ; पि २७३) ।

पचुन्निय वि [**प्रचूर्णित**] चूर चूर किया हुआ ; (सुर २, ८७) ।

पचेलिम वि [**पचेलिम**] पक्व, पका हुआ ; " महुमहुर-पचेलिमफलेहिं " (सुपा ८३) ।

पचोइअ वि [**प्रचोदित**] प्रेरित ; (सूअ १, २, ३) ।

पच्चइय वि [**प्रत्ययिक**] १ विश्वासी, विश्वास वाला ; (गाया १, १२) । २ ज्ञान वाला, प्रत्यय वाला ; ३ न. श्रुत-ज्ञान, आगम-ज्ञान ; (विसे २१३६) ।

पच्चइय वि [**प्रत्ययित**] विश्वास वाला, विश्वस्त ; (महा ; सुर १६, १६६) ।

पच्चइय वि [**प्रात्ययिक**] प्रत्यय से उत्पन्न, प्रतीति से संजात ; (ठा ३, ३—पत्र १५१) ।

पच्चंग न [**प्रत्यङ्ग**] हर एक अवयव ; (गुण १५ ; कप्प) ।

पच्चंगिरा स्त्री [**प्रत्यङ्गिरा**] विद्या-देवी विशेष ; " ईसिविय-संतवयणा पभणइ पच्चंगिरा अहं विज्जा " (सुपा ३०६) ।

पच्चंत पुं [**प्रत्यन्त**] १ अनार्य देश ; (प्रयौ १६) । २ वि. समीपस्थ देश, संनिकृष्ट प्रान्त भाग ; (सुर २, २००) ।

पच्चंतिय वि [**प्रत्यन्तिक**] समीप-देश में स्थित ; (उप २११ टी) ।

पच्चंतिय वि [**प्रात्यन्तिक**] प्रत्यन्त देश से आया हुआ ; (धम्म ६ टी) ।

पच्चक्ख न [**प्रत्यक्ष**] १ इन्द्रिय आदि की सहायता के बिना ही उत्पन्न होने वाला ज्ञान ; (विसे ८६) । २ इन्द्रियों से उत्पन्न होने वाला ज्ञान ; (ठा ४, ३) । ३ वि. प्रत्यक्ष ज्ञान का विषय ; " पच्चक्खा [illegible] अम्हं [illegible] महाभागा " (सुर ३, १७१) ।

पच्चक्ख } सक [**प्रत्या + ख्या**] त्याग करना, त्याग करने का नियम करना । पच्चक्खाइ ; (भग) ।
पच्चक्खा }
वकृ - **पच्चक्खमाण, पच्चक्खामाण** ; (पि ५६१ ; उवा) । संकृ - **पच्चक्खाइत्ता** ; (पि ५८२) । कृ **पच्चक्खेय** ; (आव ६) ।

पच्चक्खाण न [**प्रत्याख्यान**] १ परित्याग करने की प्रतिज्ञा ; (भग ; उवा) । २ जैन ग्रन्थांश-विशेष, नववाँ पूर्व-ग्रन्थ ; (सम २६) । ३ सर्व सावद्य कर्मों से निवृत्ति ; (कम्म १, १७) । °**वरण** पुं [°**वरण**] कषाय-विशेष, सावद्य-विरति का प्रतिबन्धक क्रोध-आदि ; (कम्म १, १७) ।

पच्चक्खाणि वि [**प्रत्याख्यानिन्**] त्याग की प्रतिज्ञा करने वाला ; (भग ६, ४) ।

पच्चक्खाणी स्त्री [**प्रत्याख्यानी**] भाषा-विशेष, प्रतिषेध-वचन ; (भग १०, ३) ।

पच्चक्खाय वि [**प्रत्याख्यात**] त्यक्त, छोड़ दिया हुआ ; (गाया १, १ ; भग ; कप्प) ।

पच्चक्खायय वि [**प्रत्याख्यायक**] त्याग करने वाला, " भत्तपच्चक्खायए " (भग १४, ७) ।

पच्चक्खाव सक [**प्रत्या + ख्यापय्**] त्याग कराना, किसी विषय का त्याग करने की प्रतिज्ञा कराना । वकृ **पच्चक्खावित** ; (आव ६) ।

पच्चक्खि वि [**प्रत्यक्षिन्**] प्रत्यक्ष ज्ञान वाला ; (वव १) ।

पच्चक्खिय देखो **पच्चक्खाय** ; (सुपा ६२४) ।

पच्चक्खीकर सक [**प्रत्यक्षी + कृ**] प्रत्यक्ष करना, साक्षात् करना । भवि —**पच्चक्खीकरिस्सं** ; (अभि १८८) ।

पच्चक्खीकिद (शौ) वि [**प्रत्यक्षीकृत**] प्रत्यक्ष किया हुआ, साक्षात् जाना हुआ ; (पि ४६) ।

पच्चक्खीभू अक [**प्रत्यक्षी + भू**] प्रत्यक्ष होना, साक्षात् होना । संकृ **पच्चक्खीभूय** ; (आत्म) ।

पच्चक्खेय देखो **पच्चक्खा** ।

पच्चग्ग वि [**प्रत्यग्र**] १ प्रधान, मुख्य ; (स २४) । २ श्रेष्ठ, सुन्दर ; (उप ६८६ टी ; सुर १०, १५२) । ३ नवीन, नया ; (पाअ) ।

पच्चच्छिम देखो **पच्चत्थिम** ; (राज ; ठा २, ३—पत्र ७६) ।

पच्चच्छिमा देखो **पच्चत्थिमा** ; (राज) ।

पच्चच्छिमिल्ल वि [**पाश्चात्य**] पश्चिम दिशा में उत्पन्न, पश्चिम-दिशा-सम्बन्धी ; (सम ६६ ; पि ३६५) ।

पच्चच्छिमुत्तरा देखो **पच्चत्थिमुत्तरा** ; (राज) ।

पच्चड अक [**क्षर्**] झरना, टपकना । पच्चडइ; (हे ४, १७३) । वकृ—**पच्चडमाण** ; (कुमा) ।

पच्चड्ड सक [**गम्**] जाना, गमन करना । पच्चड्डइ ; (हे ४, १६२) ।

पच्चड्डिअ वि [**क्षरित**] झरा हुआ, टपका हुआ ; (हे २, १७४) ।

पच्चड्डिया स्त्री [**दे. प्रत्यर्धिका**] मल्लों का एक प्रकार का करण ; (विसे ३३५७) ।

पच्चणीय वि [**प्रत्यनीक**] विरोधी, प्रतिपक्षी, दुश्मन ; (उप १४६ टी ; सुपा ३०१) ।

पच्चणुभव सक [**प्रत्यनु + भू**] अनुभव करना । वकृ—**पच्चणुभवमाण** ; (गाया १, २) ।

पच्चत्त वि [**प्रत्यक्त**] जिसका त्याग करने का प्रारम्भ किया गया हो वह ; (उप ८२८) ।

पच्चत्थ न [**दे**] चाटु, खुशामद ; (दे ६, २१) ।

पच्चत्थरण न [**प्रत्यास्तरण**] बिछौना ; (पि २८५) । देखो **पल्लत्थरण** ।

पच्चत्थि वि [**प्रत्यर्थि न्**] प्रतिपक्षी, विरोधी, दुश्मन ; (उप १०३१ टी ; पाअ ; कुप्र १४१) ।

पच्चत्थिम वि [**पाश्चात्य, पश्चिम**] १ पश्चिम दिशा तरफ का ; २ न. पश्चिम दिशा ; "पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दे जोयणसाहस्सियं खेत्तं जाणइ, पासइ ; एवं दक्खिणेणं, पच्चत्थिमेणं" (उवा ; भग ; आचा ; ठा २, ३) ।

पच्चत्थिमा स्त्री [**पश्चिमा**] पश्चिम दिशा; (ठा १० पत्र ४७८ ; आचा) ।

पच्चत्थिमिल्ल वि [**पाश्चात्य**] पश्चिम दिशा का ; (विपा १, ७ ; पि ५६५ ; ६०२) ।

पच्चत्थिमुत्तरा स्त्री [**पश्चिमोत्तरा**] पश्चिमोत्तर दिशा, वायव्य कोण ; (ठा १०—पत्र ४७८) ।

पच्चत्थुय वि [**प्रत्यास्तृत**] आच्छादित, ढका हुआ ; (पउम ६४, ६६; जीव ३) । २ बिछाया हुआ; (उप ६८८ टी) ।

पच्चद्ध न [**पश्चार्ध**] पिछला आधा, उत्तरार्ध ; (गउड) ।

पच्चद्धचक्कवट्टि पुं [**प्रत्यर्धचक्रवर्तिन्**] वासुदेव का प्रतिपक्षी राजा, प्रतिवासुदेव ; (ती ३) ।

पच्चप्पण न [**प्रत्यर्पण**] वापिस देना ; (विसे ३०५७) ।

पच्चप्पिण सक [**प्रति + अर्पय्**] १ वापिस देना, लौटाना । २ सौंपे हुए कार्य का करके निवेदन करना । पच्चप्पिणइ ; (कप्प) । कर्म—पच्चप्पिणिज्जइ ; (पि ५५७) । वकृ—**पच्चप्पिणमाण** ; (ठा ५, २—पत्र ३११) । संकृ—**पच्चप्पिणित्ता** ; (पि ५५७) ।

पच्चबलोक्क वि [**दे**] आसक्त-चित्त, तल्लीन-मनस्क ; (दे ६, ३४) ।

पच्चब्भास पुं [**प्रत्याभास**] निगमन, प्रत्युच्चारण ; (विसे २८३२) ।

पच्चभिआण देखो **पच्चभिजाण** । पच्चभिआणादि (शौ); (पि १७० ; ५१०) ।

पच्चभिआणिद (शौ) देखो **पच्चभिजाणिअ**; (पि ५६५) ।

पच्चभिजाण सक [**प्रत्यभि + ज्ञा**] पहिचानना, पहिचान लेना । पच्चभिजाणइ ; (महा)। वकृ—**पच्चभिजाणमाण** ; (गाया १, १६) । संकृ—**पच्चभिजाणिऊण** ; (महा) ।

पच्चभिजाणिअ वि [**प्रत्यभिज्ञात**] पहिचाना हुआ ; (स ३६०) ।

पच्चभिणाण न [**प्रत्यभिज्ञान**] पहिचान; (स २१२ ; नाट—शकु ८४) ।

पच्चभिन्नाय देखो **पच्चभिजाणिअ** ; (स १०० ; सुर ६, ७६ ; महा) ।

पच्चमाण देखो **पच=पच्** ।

पच्चय पुं [**प्रत्यय**] १ प्रतीति, ज्ञान, बोध ; (उव ; ठा १; विसे २१६०) । २ निर्णय, निश्चय ; (विसे २१३२) । ३ हेतु, कारण ; (ठा २, ४) । ४ शपथ, विश्वास उत्पन्न करने के लिए किया या कराया जाता तप-माष आदि का चर्वण वगैरः ; (विसे २१३१) । ५ ज्ञान का कारण ; ६ ज्ञान का विषय, ज्ञेय पदार्थ ; (राज) । ७ प्रत्यय-जनक, प्रतीति का उत्पादक ; (विसे २१३१ ; आवम) । ८ विश्वास, श्रद्धा ; ९ शब्द, आवाज ; १० छिद्र, विवर ; ११ आधार, आश्रय ; १२ व्याकरण-प्रसिद्ध प्रकृति में लगता शब्द-विशेष ; (हे २, १३) ।

पच्चल वि [**दे**] १ पक्का, समर्थ, पहुँचा हुआ ; (दे ६, ६६ ; सुपा ३४ ; सुर १, १४ ; कुप्र ६६ ; पाअ) । २ असहन, अ-सहिष्णु ; (दे ६, ६६) ।

पच्चलिउ) (अप) अ [**प्रत्युत**] वैपरीत्य , वरञ्च,

पच्चल्लिउ) बरन ; (हे ४, ४२०) ।

पच्चवणद (शौ) वि [**प्रत्यवनत**] नमा हुआ ; "एस मं कोवि पच्चवणदसिरोहरं उच्छुं विअ णिग्गा(?)भंगं करेदि" (अभि २२४) ।

पच्चवत्थय वि [**प्रत्यवस्तृत**] १ बिछाया हुआ ; २ आच्छादित ; (आचम) ।

पच्चवत्थाण न [**प्रत्यवस्थान**] १ शङ्का-परिहार, समाधान ; (विसे १००७) । २ प्रतिवचन, खण्डन ; (बृह १)।

पच्चवर न [**दे**] मुसल, एक प्रकार की मोटी लकड़ी जिसमें चावल आदि अन्न कूटे जाते हैं ; (दे ६, १५) ।

पच्चवाय पुं [**प्रत्यवाय**] १ बाधा, विघ्न, व्याघात; (गाया १, ६ ; महा ; स २०६) । २ दोष, दूषण ; (पउम ६५, १२ ; अच्चु ७० ; ओघ २४) । ३ पाप ; "बहुपच्चवायभरिओ गिहवासो" (सुपा १६२) । ४ दुःख, पीडा ; (कुप्र ५५२) ।

पच्चवेक्खिद (शौ) वि [**प्रत्यवेक्षित**] निरीक्षित ; (नाट —शकु १३०) ।

पच्चह न [**प्रत्यह**] हररोज, प्रतिदिन ; (अभि ६०) ।

पच्चहिजाण } देखो **पच्चभिजाण** । पच्चहिजाणेदि ; (पि **पच्चहियाण** } ५१०) । पच्चहियाणइ ; (स ४२) । संकृ—**पच्चहियाणिऊण** ; (स ४४०) ।

पच्चा स्त्री [**दे**] तृण-विशेष, बल्वज ; (ठा ५, ३) । °**पिच्चियय** न [**दे**] बल्वज तृण की कूटी हुई छाल का बना हुआ रजोहरण— जैन साधु का एक उपकरण ; (ठा ५, ३— पत्र ३३८) ।

पच्चा देखो **पच्छा** ; (प्रयौ ३६ ; नाट रत्ना ७) ।

पच्चाअच्छ सक [**प्रत्या+गम्**] पीछे लौटना, वापिस आना । पच्चाअच्छइ ; (षड्) ।

पच्चाअद (शौ) देखो **पच्चागय** ; (प्रयौ २५) ।

पच्चाइक्ख देखो **पच्चक्ख**=प्रत्या+ख्या । पच्चाइक्खामि; (आचा २, १५, ५, १) । भवि —पच्चाइक्खिस्सामि; (पि ५२६) । वकृ **पच्चाइक्खमाण** , (पि ५६२) ।

पच्चाएस पुंन [**प्रत्यादेश**] दृष्टान्त, निदर्शन, उदाहरण ; "पच्चाएसोव्व धम्मनिरयाणं" (स ३५ ; उव ; कुप्र ५०) , "पच्चाएसं दिट्ठं" (पाअ) । देखो **पच्चादेस** ।

पच्चागय वि [**प्रत्यागत**] १ वापिस आया हुआ ; (गा ६३३ ; दे १, ३१ ; महा) । २ न प्रत्यागमन ; (ठा ६—पत्र ३६५) ।

पच्चाचक्ख सक [**प्रत्या+चक्ष्**] परित्याग करना । हेकृ— **पच्चाचक्खिदुं** (शौ) ; (पि ४९९ ; ५७४) ।

पच्चाणयण न [**प्रत्यानयन**] वापिस ले आना; (मुद्रा २७०)।

पच्चाणि° } सक [**प्रत्या+णी**] वापिस ले आना । कवकृ **पच्चाणी** } **पच्चाणिज्जंत** ; (से ११, १३५) ।

पच्चाणीद (शौ) वि [**प्रत्यानीत**] वापिस लाया हुआ ; (पि ८१ ; नाट -विक्र १०) ।

पच्चात्थरण न [**प्रत्यास्तरण**] सामने होकर लड़ना; (राज)।

पच्चादिट्ठ वि [**प्रत्यादिष्ट**] निरस्त, निराकृत; (पि १४५; मृच्छ ९) ।

पच्चादेस पुं [**प्रत्यादेश**] निराकरण ; (अभि ७२ ; १७८ ; नाट —विक्र ३) । देखो **पच्चाएस** ।

पच्चापड अक [**प्रत्या+पत्**] वापिस आना, लौट कर आ पड़ना । वकृ—"अमरपडिहयपुणरविपच्चापडंतचंचलसिरिट्ठ-कवयं ; (औप) ।

पच्चामित्त पुंन [**प्रत्यमित्र**] अमित्र, दुश्मन ; (णाया १, २—पत्र ८७ ; औप) ।

पच्चाय सक [**प्रति+आयय्**] १ प्रतीति कराना । २ विश्वास कराना । पच्चाअइ ; (गा ७१२) । पच्चाएमो ; (स ३२४) ।

पच्चाय° देखो **पच्चाया** ।

पच्चायण न [**प्रत्यायन**] ज्ञान कराना, प्रतीति-जनन ; (विसे २१३९) ।

पच्चायय वि [**प्रत्यायक**] १ निर्णय-जनक ; २ विश्वास-जनक ; (विक्र ११३) ।

पच्चाया अक [**प्रत्या+जन्**] उत्पन्न होना, जन्म लेना । पच्चायंति ; (औप)। भवि—पच्चायाहिइ ; (औप; पि ५२७)।

पच्चाया अक [**प्रत्या+या**] ऊपर देखो । पच्चायंति ; (पि ५२७) ।

पच्चायाइ स्त्री [**प्रत्याजाति, प्रत्यायाति**] उत्पत्ति, जन्म-ग्रहण ; (ठा ३, ३—पत्र १४४) ।

पच्चायाय वि [**प्रत्यायात**] उत्पन्न ; (भग) ।

पच्चार सक [**उपा+लम्भ्**] उपालम्भ देना, उलहना देना । पच्चारइ, पच्चारंति ; (हे ४, १५६ ; कुमा) ।

पच्चारण न [**उपालम्भन**] प्रतिभेद ; (पाअ) ।

पच्चारिय वि [**उपालब्ध**] जिसको उलहना दिया गया हो वह ; (भवि) ।

पच्चालिय वि [दे. प्रत्यार्द्रित] आर्द्र किया हुआ, गीला किया हुआ ; "पच्चालियाय से अहिययं बाहसलिलेण दिट्ठी" (स ३०८)।

पच्चालीढ न [प्रत्यालीढ] वाम पाद को पीछे हटा कर और दक्षिण पाँव को आगे रख कर खड़े रहने वाले धानुष्क की स्थिति ; (वव १)।

पच्चावरण्ह पुं [प्रत्यपराह्ण] मध्याह्न के बाद का समय, तीसरा पहर ; (विपा १, ३ टि ; पि ३३०)।

पच्चासण्ण वि [प्रत्यासन्न] समीप में स्थित ; (विसे २६३१)।

पच्चासत्ति स्त्री [प्रत्यासत्ति] समीपता, सामीप्य ; (मुद्रा १६१)।

पच्चासन्न देखो **पच्चासण्ण** "निव्वं पच्चासन्नो परिसक्कइ सव्वओ मच्चू" (उप ६ टी)।

पच्चासा स्त्री [प्रत्याशा] १ आकाङ्क्षा, वाञ्छा, अभिलाषा ; २ निराशा के बाद की आशा ; (स ३६८)। ३ लोभ, लालच ; (उप पृ ७८)।

पच्चासि वि [प्रत्याशिन्] वान्त वस्तु का भक्षण करने वाला ; (आचा)।

पच्चिम देखो **पच्छिम** ; (पिंग ; पि ३०१)।

पच्चुअ (दे) देखो **पच्चुहिअ** ; (दे ६, २५)।

पच्चुअआर देखो **पच्चुवयार**; (चारु ३६; नाट मृच्छ ५७)।

पच्चुग्गच्छणया स्त्री [प्रत्युद्गमनता] अभिमुख गमन ; (भग १४, ३)।

पच्चुच्चार पुं [प्रत्युच्चार] अनुवाद, अनुभाषण ; (स १८४)।

पच्चुच्छुहणी स्त्री [दे] नूतन सुरा, ताजा दारू; (दे २,३५)।

पच्चुज्जीविअ वि [प्रत्युज्जीवित] पुनर्जीवित ; (गा ६३१ ; कुप्र ३१)।

पच्चुट्ठिअ वि [प्रत्युत्थित] जो सामने खड़ा हुआ हो वह ; (सुर १, १३४)।

पच्चुण्णम अक [प्रत्युद् + नम्] थोड़ा ऊँचा होना। पच्चुण्णमइ ; (कप्प)। संकृ—पच्चुण्णमित्ता ; (कप्प ; औप)।

पच्चुत्त वि [प्रत्युप्त] फिर से बोया हुआ ; (दे ७, ७७; गा ६१८)।

पच्चुत्तर सक [प्रत्यव + तृ] नीचे आना। पच्चुत्तरइ ; (पि ४७७)। संकृ **पच्चुत्तरित्ता** ; (राज)।

पच्चुत्तर न [प्रत्युत्तर] जवाब, उत्तर ; (श्रा १२ ; सुपा २१ ; १०४)।

पच्चुत्थ वि [दे] प्रत्युप्त, फिर से बोया हुआ ; (दे ६,१३)।

पच्चुत्थय | वि [प्रत्यवस्तृत] आच्छादित ; (गाया १, **पच्चुत्थुय** | १—पत्र १३, २० ; कप्प)।

पच्चुद्दरिअ वि [दे] संमुखागत, सामने आया हुआ ; (दे ६, २४)।

पच्चुद्धार पुं [दे] संमुख आगमन ; (दे ६, २४)।

पच्चुप्पण्ण | वि [प्रत्युत्पन्न] वर्तमान-काल-संबन्धी ; **पच्चुप्पन्न** | (पि ५१६ ; भग ; गाया १, ८ ; सम्म १०३)। °**नय** पुं [°**नय**] वर्तमान वस्तु को ही सत्य मानने वाला पक्ष, निश्चय नय ; (विसे ३१६१)।

पच्चुप्फलिअ वि [प्रत्युत्फलित] वापिस आया हुआ ; (से १४, ८१)।

पच्चुरस न [प्रत्युरस] हृदय के सामने ; (राज)।

पच्चुवकार देखो **पच्चुवयार**; (नाट मृच्छ २५५)।

पच्चुवगच्छ सक [प्रत्युप + गम्] सामने जाना। पच्चुवगच्छइ ; (भग)।

पच्चुवगार | पुं [प्रत्युपकार] उपकार के बदले उपकार; **पच्चुवयार** | (ठा ४, ४ ; पउम ४६, ३६ ; स ६५० ; प्रासू)।

पच्चुवयारि वि [प्रत्युपकारिन्] प्रत्युपकार करने वाला ; (सुपा ५६५)।

पच्चुवेक्ख सक [प्रत्युप + ईक्ष्] निरीक्षण करना। पच्चुवेक्खइ ; (औप)। संकृ **पच्चुवेक्खित्ता** ; (औप)।

पच्चुवेक्खिय वि [प्रत्युपेक्षित] अवलोकित, निरीक्षित ; (प ४४१)।

पच्चुहिअ वि [दे] प्रस्नुत, प्रक्षरित ; (दे ६, २५)।

पच्चूढ न [दे] थाल, थार, भोजन करने का पात्र, बड़ी थाली ; (दे ६, १२)।

पच्चूस [दे] देखो **पच्चूह**=(दे) ; "किरणेहिं पयंगोवि छाइज्जइ कह णु पच्चूसो ?" (सुर ३, १३४)।

पच्चूस | पुं [प्रत्यूष] प्रभात काल ; (हे २, १४ ; **पच्चूह** | गाया १, १ ; गा ६०४)।

पच्चूह पुंन [प्रत्यूह] विघ्न, अन्तराय; (पाअ; कुप्र ५२)।

पच्चूह पुं [दे] सूर्य, रवि ; (दे ६, ५ ; गा ६०४ ; पाअ)।

पच्चेअ न [प्रत्येक] प्रत्येक, हर एक ; (षड्)।

पच्चोड न [**दे**] मुसल ; (दे ६, १५)।
पच्चोल्लिउ (अप) देखो **पच्चल्लिउ** ; (भवि)।
पच्चोगिल सक [**प्रत्यव + गिल्**] आस्वादन करना। वकृ—**पच्चोगिलमाण** ; (कम ५, १०)
पच्चोणामिणी स्त्री [**प्रत्यवनामिनी**] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से वृक्ष आदि फल देने के लिए स्वयं नीचे नमते हैं ; (उप पृ १५५)।
पच्चोणिवत्त वि [**प्रत्यवनिवृत्त**] ऊँचा उछल कर नीचे गिरा हुआ ; (पराह १, ३ —पत्र ४५)।
पच्चोणिवय अक [**प्रत्यवनि + पत्**] उछल कर नीचे गिरना। वकृ --**पच्चोणिवयंत** ; (औप)।
पच्चोणी [**दे**] देखो **पच्चोवणी** ; (स २२५ ; ३०२ ; सुपा ६१ ; २२४ ; २७६)।
पच्चोयड न [**दे**] १ तट के समीप का ऊँचा प्रदेश ; (जीव ३)। २ आच्छादित ; (राय)।
पच्चोयर सक [**प्रत्यव + तॄ**] नीचे उतरना। पच्चोयरइ ; (आचा २, १५, २८)। संकृ -**पच्चोयरित्ता** ; (आचा २, १५, २८)।
पच्चोरुभ } सक [**प्रत्यव + रुह्**] नीचे उतरना। पच्चो-
पच्चोरुह } रुभइ; (णाया १, १)। पच्चोरुहइ; (कप्प)। संकृ --**पच्चोरुहित्ता** ; (कप्प)।
पच्चोवणिअ वि [**दे**] संमुख आया हुआ ; (दे ६, २४)।
पच्चोवणी स्त्री [**दे**] संमुख आगमन ; (दे ६, २४)।
पच्चोसक्क अक [**प्रत्यव + ष्वष्क्**] १ नीचे उतरना। २ पीछे हटना। पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कंति ; (उवा ; पि ३०२ ; भग)। संकृ **पच्चोसक्कित्ता** ; (उवा ; भग)।
पच्छ सक [**प्र + अर्थय्**] प्रार्थना करना। कवकृ - **पच्छिज्जमाण** ; (कप्प ; औप)।
पच्छ वि [**पथ्य**] १ रोगी का हितकारी आहार ; (हे २, २१ ; प्राप्र ; कुमा ; स ७२४ ; सुपा ५७६)। २ हित-कारक, हितकारी ; " पच्छा वाया " (णाया १, ११ — पत्र १७१)।
पच्छ न [**पश्चात्**] १ चरम, शेष ; (चंद १)। २ पीछे, पृष्ठ भाग ; ३ पश्चिम दिशा ; " पुव्वेण सत्तं पच्छेण वंजुला दाहिणेण वडविडुआ " (वज्जा ६६)। °**ओ** अ [°**तस्**] पीछे, पृष्ठ की ओर ; " हत्थी वेगेण पच्छओ लग्गो " (महा), " वहइ व महीअलभरिओ णालेइ व पच्छओ धरेइ व पुरओ " (से १०, ३०), " ता वेडयाओ तक्खणमाणावेऊण पच्छओ बाहं बद्धं देसइ " (सुपा २२१)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] १ अनन्तर का कर्म, बाद की क्रिया ; २ यतिओं की भिक्षा का एक दोष, दातृ-कर्तृक दान देने के बाद की पात्र को साफ करने आदि क्रिया ; (आचा ५१६)। °**ताअ** पुं [°**ताप**] अनुतापः (वज्जा १४२)। °**द्ध** न [°**अर्ध**] पीछला आधा, उत्तरार्ध; (गउड ; महा)। °**वत्थुक्क** न [°**वास्तुक**] पीछला घर, घर का पीछला हिस्सा ; (पराह २, ४ --पत्र १३१)। °**याव** पुं [°**ताप**] पश्चात्ताप, अनुताप ; (आवम)। देखो **पच्छा=पश्चात्**।
पच्छइ } (अप) अ [**पश्चात्**] ऊपर देखो ; (हे ४,४२० ;
पच्छए } षड् ; भवि)। °**ताव** पुं [°**ताप**] अनुताप, अनुशय ; (कुमा)।
पच्छंद सक [**गम्**] जाना, गमन करना। पच्छंदइ ; (हे ४, १६२)।
पच्छंदि वि [**गन्तृ**] गमन करने वाला ; (कुमा)।
पच्छंभाग पुं [**पश्चाद्भाग**] १ दिवस का पीछला भाग ; (राज)। २ पुंन. नक्षत्र-विशेष, चन्द्र पृष्ठ देकर जिसका भोग करता है वह नक्षत्र ; (ठा ६)।
पच्छण स्त्रीन [**प्रतक्षण**] त्वक् का बारीक विदारण, चाकू आदि से पतली छाल निकालना; "तच्छणेहि य पच्छणेहि य " (विपा १, १), " तच्छणाहि य पच्छणाहि य " (णाया १, १३)।
पच्छण्ण वि [**प्रच्छन्न**] गुप्त, अप्रकट ; (गा १८३); °**पइ** पुं [°**पति**] जार, उपपति ; (सुम १, ४, १)।
पच्छद देखो **पच्छय** ; (औप)।
पच्छदण न [**प्रच्छदन**] आस्तरण, शय्या के ऊपर का आच्छादन-वस्त्र ; " पुप्फच्छणाए सय्याए णिद्दं ण लभामि " (स्वप्न ६०)।
पच्छन्न देखो **पच्छण्ण** ; (उव ; सुर २, १८४)।
पच्छय पुं [**प्रच्छद**] वस्त्र-विशेष, दुपट्टा, पिछौरी ; (णाया १, १६)।
पच्छलिउ (अप) देखो **पच्चलिउ** ; (षड्)।
पच्छा अ [**पश्चात्**] १ अनन्तर, बाद, पीछे ; (सुर १, २४४; पाअ; प्रासू ५७), " पच्छा तस्स विवागे रुयंति कलुणं महादुक्खा " (प्रासू १२६)। २ परलोक, परजन्म ; " पच्छा कडुअविवागा " (राज)। ३ पीछला भाग, पृष्ठ ; ४ चरम, शेष ; (हे २, २१)। ५ पश्चिम दिशा ;

(गाया १, ११) । °उत्त वि [°आयुक्त] जिसका आयोजन पीछे से किया गया हो वह ; (कप्प) । °कड पुं [°कृत] साधुपन को छोड़कर फिर गृहस्थ बना हुआ ; (द ५० ; बृह १) । °कम्म देखो पच्छ-कम्म ; (पि ११२) । °णिवाइ देखो °निवाइ ; (राज) । °णुताव पुं [°अनुताप] पश्चात्ताप, अनुताप ; " पच्छाणुतावेण सुभउक्कसाएण " (आवम) । °णुपुव्वी स्त्री [°आनुपूर्वी] उलटा क्रम ; (अणु ; कम्म ४, ४३) । °ताव पुं [°ताप] अनुताप ; (आव ४) । °ताविय वि [°तापिक] पश्चात्ताप वाला ; (पण्ह २, ३) । °निवाइ वि [°निपातिन्] १ पीछे से गिर जाने वाला ; २ चारित्र ग्रहण कर बाद में उससे च्युत होने वाला ; (आचा) । °भाग पुं [°भाग] पीछला हिस्सा ; (गाया १, १) । °मुह वि [°मुख] पराङ्मुख, जिसने मुँह पीछे की तरफ फेर लिया हो वह ; (श्रा १२) । °यव, °याव देखो °ताव ; (पउम ६५, ६६ ; सुर १५, १४५ ; सुपा १२१ ; महा) । °यावि वि [°तापिन्] पश्चात्ताप करने वाला ; (उप ७२८ टी) । °वाय पुं [°वात] पश्चिम दिशा का पवन ; २ पीछे का पवन ; (गाया १, ११) । °संखडि स्त्री [दे. संस्कृति] १ पीछला संस्कार ; २ मरण के उपलक्ष्य में ज्ञाति वगैरः प्रभूत मनुष्यों के लिए पकायी जाती रसोई ; (आचा २, १, ३, २) । °संथव पुं [°संस्तव] १ पीछला संबन्ध, स्त्री, पुत्री वगैरः का संबन्ध ; २ जैन मुनिओं के लिए भिक्षा का एक दोष, श्वशुर आदि पक्ष में अच्छी भिक्षा मिलने की लालच से पहले भिक्षार्थ जाना ; (ठा ३, ४) । °संथुय वि [°संस्तुत] पीछले संबन्ध से परिचित ; (आचा २, १, ४, ५) । °हुत्त वि [दे] पीछे की तरफ का ; "अलमत्थयम्मि पच्छाहुत्ताइं पयाइंतीए दट्ठूण" (सुपा २८१)।

पच्छा स्त्री [**पथ्या**] हर्रे, हरीतकी ; (हे २, २१) ।

पच्छाअ सक [**प्र+छादय्**] १ ढकना । २ छिपाना । वकृ—**पच्छाअंत** ; (से ६, ४२ ; ११,६) । कृ—**पच्छाइज्ज** ; (वसु) ।

पच्छाअ वि [**प्रच्छाय**] प्रचुर छाया वाला ; (अभि ३६) ।

पच्छाइअ वि [**प्रच्छादित**] १ ढका हुआ, आच्छादित ; २ छिपाया हुआ ; (पाअ ; भवि) ।

पच्छाइज्ज देखो **पच्छाअ**=प्र+छादय् ।

पच्छाग पुं [**प्रच्छादक**] पात्र बाँधने का कपड़ा ; (ओघ २६५ भा) ।

पच्छाडिद (शौ) वि [**प्रक्षालित**] धोया हुआ; (नाट— मृच्छ २५५) ।

पच्छाणिअ (**दे**) देखो **पच्छोवणिअ** ; (षड्) ।

पच्छादो (शौ) देखो **पच्छा**=पश्चात् ; (पि ६६) ।

पच्छायण न [**पथ्यदन**] पाथेय, रास्ते में खाने का भोजन; " वहणं कारियं पच्छायणस्स भारियं " (महा) ।

पच्छायण न [**प्रच्छादन**] १ आच्छादन, ढकना ; २ वि. आच्छादन करने वाला । °या स्त्री [°ता] आच्छादन ; " परगुणपच्छायणया " (उव) ।

पच्छाल देखो **पक्खाल** । पच्छालेइ ; (काल) ।

पच्छि स्त्री [**दे**] पिटिका, पटारी , वेत्रादि-रचित भाजन-विशेष ; (दे ६, १) । °पिडय न [°पिटक] 'पच्छी' रूप पिटारी ; (भग ७, ८ टी—पत्र ३१३) ।

पच्छि (अप) देखो **पच्छइ** ; (हे ४, ३८८) ।

पच्छिज्जमाण देखो **पच्छ**=प्र+अर्थय् ।

पच्छित्त न [**प्रायश्चित्त**] १ पाप की शुद्धि करने वाला कर्म, पाप का क्षय करने वाला कर्म ; (उव ; सुपा ३६६ ; द ५२) । २ मन को शुद्ध करने वाला कर्म ; (पंचा १६, ३) ।

पच्छित्ति वि [**प्रायश्चित्तिन्**] प्रायश्चित का भागी, दोषी ; (उप ३७६) ।

पच्छिम न [**पश्चिम**] १ पश्चिम दिशा ; (उवा ७४ टि) । २ वि. पश्चिम दिशा का, पाश्चात्य ; (महा ; हे २, २१ ; प्राप्र) । ३ पीछला, बाद का ; " दियसस्स पच्छिमे भाए " (कप्प) । ४ अन्तिम, चरम ; " पुरिमपच्छिमगाणं तित्थगराणं " (सम ४४) । °द्ध न [°ार्ध] उत्तरार्ध, उतरी आधा हिस्सा ; (महा ; ठा २, ३ पत्र ८१) । °सेल पुं [°शैल] अस्ताचल पर्वत ; (गउड) ।

पच्छिमा स्त्री [**पश्चिमा**] पश्चिम दिशा ; (कुमा ; महा) ।

पच्छिमिल्ल वि [**पाश्चात्य**] पीछे से उत्पन्न, पीछे का ; (विसे १७६५) ।

पच्छिल्ल (अप) देखो **पच्छिम** ; (भवि) ।

पच्छिल्ल } वि [**पश्चिम, पाश्चात्य**] १ पश्चिम दिशा **पच्छिल्लय** } का ; २ पीछला, पृष्ठ-वर्ती ; (पि ५६५ ५६५ टि ४) ।

पच्छुत्ताविअ (अप) वि [**पश्चात्तापित**] जिसको पश्चात्ताप हुआ हो वह ; (भवि)।

पच्छेकम्म देखो **पच्छ-कम्म** ; (हे १, ७६)।

पच्छेणय न [**दे**] पाथेय, रास्ते में निर्वाह करने की भोजन-सामग्री ; (दे ६, २४)।

पच्छोववण्णग } वि [**पश्चादुपपन्न**] पीछेसे उत्पन्न ;
पच्छोववन्नक } (भग)।

पजंप सक [**प्र + जल्प्**] बोलना, कहना। पजंपह ; (पि २६६)।

पजंपावण न [**प्रजल्पन**] बोलाना, कथन कराना ; (औप ; पि २६६)।

पजंपिअ वि [**प्रजल्पित**] कथित, उक्त ; (गा ६४६)।

पजणण न [**प्रजनन**] लिङ्ग, पुरुष-चिन्ह ; (विसे २५७६ टी ; ओघ ७२२)।

पजल अक [**प्र + ज्वल्**] १ विशेष जलना, अतिशय दग्ध होना। २ चमकना। वकृ **पजलंत** ; (भवि)।

पजलिर वि [**प्रज्वलितृ**] अत्यन्त जलने वाला ; " मिय-उज्झाणानलपजलिरकम्मकंतारधूमलइउव्व " (सुपा १)।

पजह सक [**प्र + हा**] त्याग करना। पजहामि ; (पि ५००)। कृ—**पजहियव्व** ; (आचा)।

पजाला स्त्री [**प्रज्वाला**] अग्नि-शिखा ; (कुप्र ११७)।

पजुत्त देखो **पउत्त**=प्रयुक्त ; (चंड)।

पज्ज सक [**पायय्**] पिलाना, पान कराना। पज्जेइ ; (विपा १, ६)। कवकृ —" तण्हाइया ते तउ तंब तत्तं पज्जिज्जमाणाट्टतरं रसंति " (सुअ १, ५, १, २५)। कृ—**पज्जेयव्व** ; (भत्त ४०)।

पज्ज न [**पद्य**] छन्दो-बद्ध वाक्य ; (ठा ४, ४—पत्र २८७)।

पज्ज न [**पाद्य**] पाद-प्रक्षालन जल; "अग्घं च पज्जं च गहाय" (णाया १, १६—पत्र २०६)।

पज्ज देखो **पज्जत्त** ; (दं ३३ ; कम्म ३, ७)।

पज्जंत पुं [**पर्यन्त**] अन्त सीमा, प्रान्त भाग ; (हे १, ५८ ; २, ६५ ; सुर ४, २१६)।

पज्जण न [**दे**] पान, पीना ; (दे ६, ११)।

पज्जण न [**पायन**] पिलाना, पान कराना ; (भग १४, ७)।

पज्जण्ण पुं [**पर्जन्य**] मेघ, बादल ; (भग १४, २ ; नाट—मृच्छ १७५)। देखो **पज्जन्न**।

पज्जतर वि [**दे**] दलित, विदारित ; (षड्)।

पज्जत्त वि [**पर्याप्त**] १ 'पर्याप्ति' से युक्त, 'पर्याप्ति' वाला ; (ठा २, १ ; पण्ण १, १ ; कम्म १, ४६)। २ समर्थ, शक्तिमान् ; ३ लब्ध, प्राप्त ; ४ काफी, यथेष्ट, उतना जितने से काम चल जाय ; ५ न. तृप्ति ; ६ सामर्थ्य ; ७ निवारण ; ८ योग्यता ; (हे २, २४ ; प्राप्र)। ६ कर्म-विशेष, जिसके उदय से जीव अपनी २ 'पर्याप्तियों' से युक्त होता है वह कर्म ; (कम्म १, २६)। °णाम, °नाम न [°नामन्] अनन्तर उक्त कर्म-विशेष ; (राज ; सम ६७)।

पज्जत्तर [**दे**] देखो **पज्जतर** ; (षड्—पत्र २१०)।

पज्जत्ति स्त्री [**पर्याप्ति**] १ शक्ति, सामर्थ्य ; (सुअ १, १, ४)। २ जीव की वह शक्ति, जिसके द्वारा पुद्गलों का ग्रहण करने तथा उनको आहार, शरीर आदि के रूप में बदल देने का काम होता है, जीव की पुद्गलों का ग्रहण करने तथा परिणमाने की शक्ति ; (भग ; कम्म १, ४६ ; नव ४ ; दं ४)। ३ प्राप्ति, पूर्ण प्राप्ति ; (दे ५, ६२)। ४ तृप्ति ; "पिअदंस-णधणजीवियाण को लहइ पज्जत्तिं ?" (उप ७६८ टी)।

पज्जन्न पुं [**पर्जन्य**] मेघ-विशेष, जिसके एक बार बरसने से भूमि में एक हजार वर्ष तक चिक्कनता रहती है ; "पज्जु-(ज्ज)न्ने णं महामेहे एगे णं वासेणं दस वाससयाइं भावेति " (ठा ४, ४—पत्र २७०)।

पज्जय पुं [**दे, प्रार्यक**] प्रपितामह, पितामह का पिता; (भग ६, ३; दस ७ ; सुर १, १७४ ; २२७)।

पज्जय पुं [**पर्यय**] १ श्रुत-ज्ञान का एक भेद, उत्पत्ति के प्रथम समय में सूक्ष्म-निगोद के लब्धि-अपर्याप्त जीव को जो कुश्रुत का अंश होता है उससे दूसरे समय में ज्ञान का जितना अंश बढ़ता है वह श्रुतज्ञान ; (कम्म १, ७)। २—देखो **पज्जाय** ; (सम्म १०३ ; णंदि ; विसे ४७८ ; ४८८ ; ४६० ; ४६१)। °**समास** पुं [°**समास**] श्रुतज्ञान का एक भेद, अनन्तर उक्त पर्यय-श्रुत का समुदाय; (कम्म १,७)।

पज्जयण न [**पर्ययन**] निश्चय, अवधारण ; (विसे ८३)।

पज्जर सक [**कथय्**] कहना, बोलना। पज्जरइ, पज्जर; (हे ४, २ ; दे ६, २६ ; कुमा)।

पज्जरय पुं [**प्रजरक**] रत्नप्रभा-नामक नरक-पृथिवी का एक नरकावास ; (ठा ६—पत्र ३६५)। °**मज्झ** पुं [°**मध्य**] एक नरकावास ; (ठा ६—पत्र ३६७ टी)। °**वत्त** पुं [°**वर्त**] नरकावास-विशेष ; (ठा ६)। °**वसिट्ठ** पुं [°**वशिष्ट**] एक नरकावास, नरक-स्थान-विशेष ; (ठा ६)।

पज्जल देखो **पजल**। पज्जलेइ; (महा)। वकृ—**पज्जलंत**; (कप्प)।

पज्जलण वि [**प्रज्वलन**] जलाने वाला; (ठा ४, १)।

पज्जलिय वि [**प्रज्वलित**] १ जलाया हुआ, दग्ध; (महा)। २ खूब चमकने वाला, देदीप्यमान; (गच्छ २)।

पज्जलिर वि [**प्रज्वलितृ**] १ जलने वाला; २ खूब चमकने वाला; (सुपा ६३८; सण)।

पज्जव पुं [**पर्यव**] १ परिच्छेद, निर्णय; (विसे ८३; आवम)। २ देखो **पज्जाय**; (आचा; भग; विसे २७५२; सम्म ३२)। °**कसिण** न [°**कृत्स्न**] चतुर्दश पूर्व-ग्रन्थ तक का ज्ञान, श्रुतज्ञान-विशेष; (पंचभा)। °**जाय** वि [°**जात**] १ भिन्न अवस्था को प्राप्त; (पण्ह २, ५)। २ ज्ञान आदि गुणों वाला; (ठा १)। ३ न. विषयोपभोग का अनुष्ठान; (आचा)। °**जाय** वि [°**यात**] ज्ञान-प्राप्त; (ठा १)। °**ट्ठिय** पुं [°**स्थित**, °**र्थिक**, °**स्तिक**] नय-विशेष, द्रव्य को छोड़ कर केवल पर्यायों को ही मुख्य मानने वाला पक्ष; (सम्म ६)। °**णय**, °**नय** पुं [°**नय**] वही अनन्तर उक्त अर्थ; (राज; विसे ७५), " उप्पज्जंति वयंति अ भावा नियमेण पज्जवनयस्स " (सम्म ११)।

पज्जवण न [**पर्यवन**] परिच्छेद, निश्चय; (विसे ८३)।

पज्जवत्थाव सक [**पर्यव**+**स्थापय्**] १ अच्छी अवस्था में रखना। २ विरोध करना। ३ प्रतिपक्ष के साथ वाद करना। पज्जवत्थावेदु (शौ); (मा ३६)। पज्जवत्थावेहि; (पि ५५१)।

पज्जवसाण न [**पर्यवसान**] अन्त, अवसान; (भग)।

पज्जवसिअ न [**पर्यवसित**] अवसान, अन्त; " अपज्जवसिए लोए " (आचा)।

पज्जा देखो **पण्णा**; (हे २, ८३)।

पज्जा स्त्री [**पद्या**] मार्ग, रास्ता; " भद्दं च पडुच समा भावाणं पन्नवणपज्जा " (सम्म १५७; दे ६, १; कुप्र १७६)।

पज्जा स्त्री [**दे**] निःश्रेणि, सीढ़ी; (दे ६, १)।

पज्जा स्त्री [**पर्याय**] अधिकार, प्रबन्ध-भेद; (दे ६, १; पाम)।

पज्जा देखो **पया**; " अगणिअ'ति नासं विज्जा दंडिज्जंती नासे पज्जा " (प्रासू ६६)।

पज्जाअर पुं [**प्रजागर**] जागरण, निद्रा का अभाव; (अभि ६६)।

पज्जाउल वि [**पर्याकुल**] विशेष आकुल, व्याकुल; (से ७२; ६७३; हे ४, २६६)।

पज्जाभाय सक [**पर्या**+**भाजय्**] भाग करना। संकृ—**पज्जाभाइत्ता**; (राज)।

पज्जाय पुं [**पर्याय**] १ समान अर्थ का वाचक शब्द; (विसे २५)। २ पूर्ण प्राप्ति; (विसे ८३)। ३ पदार्थ-धर्म, वस्तु-गुण; ४ पदार्थ का सूक्ष्म या स्थूल रूपान्तर; (विसे ३२१; ४७६; ४८०; ४८१; ४८२; ४८३; ठा १; १०)। ५ क्रम, परिपाटी; (गाया १, १)। ६ प्रकार, भेद; (आवम)। ७ अवसर; ८ निर्माण; (हे २, २४)। देखो **पज्जव** तथा **पज्जव**।

पज्जाल सक [**प्र**+**ज्वालय्**] जलाना, सुलगाना। पज्जालेइ; (भवि)। संकृ—**पज्जालिअ**, **पज्जालिऊण**; (दस ५, १; महा)।

पज्जालण न [**प्रज्वालन**] सुलगाना; (उप ५६७ टी)।

पज्जालिअ वि [**प्रज्वालित**] जलाया हुआ, सुलगाया हुआ; (सुपा १५१; प्रासू १८)।

पज्जिआ स्त्री [**दे. प्रार्यिका**] १ माता की मातामही; २ पीता की मातामही; (दस ७; हे ३, ४१)।

पज्जिज्जमाण देखो **पज्ज**=पायय्।

पज्जुट्ठ वि [**पर्युष्ट**] कड़कड़ाया हुआ (?); " भिउडी णं कआ, कडुअं णालविअं, अहरअं ण पज्जुट्ठं " (गा ६२१)।

पज्जुच्छुअ वि [**पर्युत्सुक**] अति उत्सुक; (नाट)।

पज्जुणसर न [**दे**] ऊख के तुल्य एक प्रकार का तृण; (दे ६, ३२)।

पज्जुण्ण पुं [**प्रद्युम्न**] १ श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम; (अंत)। २ कामदेव; (कुमा)। ३ वैष्णव शास्त्र में प्रतिपादित चतुर्व्यूह रूप विष्णु का एक अंश; (हे २,४२)। ४ एक जैन मुनि; (निवृ १)। देखो **पज्जुन्न**।

पज्जुत्त वि [**प्रयुक्त**] जटित, खचित; " माणिक्कपज्जुत्तकणयकडयसणाहेहिं " (स ३१२), " दिव्वखग्गचामरपज्जुत्तकुडंतरालाइं " (स ५६; भवि)। देखो **पउत्त**।

पज्जुदास पुं [**पर्युदास**] निषेध, प्रतिषेध; (विसे १८३)।

पज्जुन्न देखो **पज्जुण्ण**; (णाया १, ५; अंत १४; कुप्र १८; सुपा ३२)। ५ वि. धनी, श्रीमन्त, प्रभूत धन वाला; " पज्जुन्नओवि पडिपुन्नसयलंगो " (सुपा ३२)।

पज्जुवट्ठा सक [**पर्यु प + स्था**] उपस्थित होना। हेकृ—**पज्जुवट्ठादुं** (शौ): (नाट—वेणी २५)।

पज्जुवट्ठिय वि [**पर्यु पस्थित**] उपस्थित, तत्पर; (उत्त १८, ४५)।

पज्जुवास सक [**पर्यु प + आस्**] सेवा करना, भक्ति करना। पज्जुवासइ, पज्जुवासंति; (उव; भग)। वकृ—**पज्जुवासमाण**; (गाया १, १; २)। कवकृ—**पज्जुवासिज्जमाण**; (सुपा ३७८)। संकृ—**पज्जुवासित्ता**; (भग)। कृ—**पज्जुवासणिज्ज**; (गाया १, १; ओप)।

पज्जुवासण न [**पर्यु पासन**] सेवा, भक्ति, उपासना; (भग; स ११६; उप ३५७ टी; अभि ३८)।

पज्जुवासणया } स्त्री [**पर्यु पासना**] ऊपर देखो; (ठा **पज्जुवासणा** } ३, ३; भग; गाया १, १३; ओप)।

पज्जुवासय वि [**पर्यु पासक**] सेवा करने वाला; (काल)।

पज्जुसणा स्त्री [**पर्यु षणा**] देखो **पज्जोसवणा**; "परिवसणा पज्जुसणा पज्जोसवणा य वासवासो य" (निचू १०)।

पज्जुस्सुअ } वि [**पर्यु त्सुक**] अति उत्सुक, विशेष **पज्जूसुअ** } उत्कण्ठित; (अभि १०६; पि ३२० ग)।

पज्जोअ पुं [**प्रद्योत**] १ प्रकाश, उद्द्योत। २ उज्जयिनी नगरी का एक राजा; (उव)। **°गर** वि [**°कर**] प्रकाश-कर्ता; (सम १; कप्प; ओप)।

पज्जोइय वि [**प्रद्योतित**] प्रकाशित; (उप ७२८ टी)।

पज्जोयण पुं [**प्रद्योतन**] एक जैन आचार्य; (राज)।

पज्जोसव अक [**परि + वस्**] १ वास करना, रहना। २ जैनागम-प्रोक्त पर्युषणा-पर्व मनाना। पज्जोसवेइ, पज्जोसविंति, पज्जोसवेंति; (कप्प)। वकृ—**पज्जोसवंत**, **पज्जोसवेमाण**; (निचू १०; कप्प)। हेकृ—**पज्जोसवित्तए**, **पज्जोसवेत्तए**; (कप्प; कस)।

पज्जोसवणा स्त्री [**पर्यु षणा**] १ एक ही स्थान में वर्षा-काल व्यतीत करना; (ठा १०; कप्प)। २ वर्षा-काल; (निचू १०)। ३ पर्व-विशेष, भाद्रपद के आठ दिनों का एक प्रसिद्ध जैन पर्व; "कारविआ अमारि पज्जोसवणाईसु दिहीसु" (मुणि १०६००; सुर १६, १६१)। **°कप्प** पुं [**°कल्प**] पर्युषणा में करने योग्य शास्त्र-विहित आचार, वर्षाकल्प; (ठा५,२)।

पज्जोसवणा स्त्री [**पर्योसवना, पर्यु पशमना**] ऊपर देखो; (ठा १० — पत्र ५०६)।

पज्जोसविय वि [**पर्यु षित**] स्थित, रहा हुआ; (कप्प)।

पज्झंझ अक [**प्र + झञ्झ्**] शब्द करना, आवाज करना। वकृ—**पज्झंझमाण**; (राज)।

पज्झट्टिआ स्त्री [**पज्झट्टिका**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

पज्झर अक [**क्षर्, प्र + क्षर्**] झरना, टपकना। पज्झरइ; (हे ४, १७३)।

पज्झर पुं [**प्रक्षर**] प्रवाह-विशेष; (पराण २)।

पज्झरण न [**प्रक्षरण**] टपकना; (वज्जा १०८)।

पज्झरिअ वि [**प्रक्षरित**] टपका हुआ; (पात्र; कुमा; महा; संक्षि १५)।

पज्झल देखो **पज्झर**=क्षर्। पज्झलइ; (पिंग)।

पज्झलिआ देखो **पज्झट्टिआ**; (पिंग)।

पज्झाय वि [**प्रध्यात**] चिन्तित; (अणु)।

पज्झुत्त वि [**दे**] खचित, जड़ित, जड़ा हुआ; (पात्र)। देखो **पज्जुत्त**।

पटउडी स्त्री [**पटकुटी**] तंबू, वस्त्र-गृह, कपड़कोट; (सुर १३, ६)।

पटल देखो **पडल**=पटल; (कुमा)।

पटह देखो **पडह**; (प्रति १०)।

पटिमा (पै. चूपै) देखो **पडिमा**; (षड्; पि १६१)।

पट्ट सक [**पा**] पीना, पान करना। पट्टइ; (हे ४, १०)। भूका—पट्टीअ; (कुमा)।

पट्ट पुं [**पट्ट**] १ पहनने का कपड़ा; "पट्टो वि होइ इक्को देहपमाणेण सो य भइयव्वो" (बृह ३; ओघ ३४)। २ रथ्या, मुहल्ला; "तणवि मालियपट्टे गंतूण करे कया माला" (सुपा ३७३)। ३ पाषाण आदि का तख्ता, फलक; "मणिसिलापट्टअसणाहो माहवीमंडवो" (अभि २००), "पिअंगुसिलापट्टए उवविट्ठा" (स्वप्न ५२), "पट्टसंठियपसत्थविच्छिण्णपिहुलसोणीओ" (जीव ३)। ४ ललाट पर से बँधी जाती एक प्रकार की पगड़ी; "तप्पभिइं पट्टबद्धा रायाणो जाया पुव्वं मउडबद्धा आसी" (महा)। ५ पट्टा, चकनामा, किसी प्रकार का अधिकार-पत्र; (कुप्र ११; जं ३)। ६ रेशम; ७ पाट, सन; (गा ५२०; कप्पू)। ८ रेशमी कपड़ा; ९ सन का कपड़ा; (कप्प; ओप)। १० सिंहासन, गद्दी, पाट; (कुप्र २८; सुपा २८५)। ११ कलाबत्तू; (राज)। १२ पट्टी, फोड़ा आदि पर बाँधा जाता लम्बा वस्त्रांश, पाटा; "चउरंगुलपमाणपट्टबंधेण सिरिवच्छालंकियं छाइयं वच्छत्थलं" (महा; विपा १, १)। १३ शाक-विशेष; (सुज्ज २०)।

°**इल्ल** पुं [°**वत्**] पटेल, गाँव का मुखी ; (जं ३)
°**उडी** स्त्री [°**कुटी**] तंबू, वस्त्र-गृह ; (सुर १३, १६७)।
°**करि** पुं [°**करिन्**] प्रधान हस्ती ; (सुपा ३७३)।
°**कार** पुं [°**कार**] तन्तुवाय, वस्त्र बुनने वाला ; (पगण १)। °**वासिआ** स्त्री [°**वासिता**] एक शिरो-भूषण ; (दे ४, ४३)। °**साला** स्त्री [°**शाला**] उपाश्रय, जैन मुनि को रहने का स्थान ; (सुपा २८५)। °**सुत्त** न [°**सूत्र**] रेशमी सूता; (आवम)। °**हत्थि** पुं [°**हस्तिन्**] प्रधान हाथी ; (सुपा ३७२)।

पट्टइल } **पट्टइल्ल** } पुं [**दे**] पटेल, गाँव का मुखिया ; (सुपा २७३; ३६१)।

पट्टंसुअ न [**पट्टांशुक**] १ रेशमी वस्त्र ; २ सन का वस्त्र ; (गा ५२० ; कप्पू)।

पट्टग देखो **पट्ट** ; (कस)।

पट्टण न [**पत्तन**] नगर, शहर ; (भग ; ओप ; प्राप्र; कुमा)।

पट्टय देखो **पट्ट**; (उवा ; णाया १, १६)।

पट्टाढा स्त्री [**दे**] पट्टा, घोड़े की पेटी, कसन ; "छोडिया पट्टाढा, ऊसारियं पल्लाणं" (महा ; सुर १८, ३७)।

पट्टिय वि [**पट्टिक**] पट्टे पर दिया जाता गाँव वगैरः ; "पुव्विं पट्टियगामम्मि तुट्टदव्वत्थं पट्टइलो नरवालो पुव्विं जो आसि गुत्तीए खित्तो" (सुपा २७३)।

पट्टिया स्त्री [**पट्टिका**] १ छोटा तख्ता, पाटी ; "चित्तपट्टिया" (सुर १, ८८)। २—देखो **पट्टी**; "मगरासणपट्टिआ" (राज—जं ३)।

पट्टिस पुं [**दे, पट्टिश**] प्रहरण-विशेष, एक प्रकार का हथियार ; (पण्ह १, १ ; पउम ८, ४५)।

पट्टी स्त्री [**पट्टी**] १ धनुर्यष्टि ; २ हस्तपट्टिका, हाथ पर की पट्टी ; "उप्पीडियमगरासणपट्टिए" (विपा १, १ —पत्र २४)।

पट्टुया स्त्री [**दे**] पाद-प्रहार, लात ; गुजराती में 'पाटु' ; "सिरिवच्छो गोलेणं तहाहओ पट्टुयाए हिययम्मि" (सुपा २३७)। देखो —**पड्डुआ**।

पट्टुहिअ न [**दे**] कलुषित जल; "पट्टुहियं जाण कलुसजलं" (पाअ)।

पट्ठ वि [**प्रष्ठ**] १ अग्र-गामी, अग्रसर ; (णाया १, १ —पत्र १६)। २ कुशल, निपुण ; ३ प्रधान, मुखिया ; (ओप ; राज)।

पट्ठ वि [**स्पृष्ट**] जिसका स्पर्श किया गया हो वह ; (ओप)।

पट्ठ न [**पृष्ठ**] १ पीठ, शरीर के पीछे का भाग ; (णाया १, ६ ; कुमा)। २ तल, ऊपर का भाग ; "तलिमं पट्ठं च तलं" (पाअ)। °**चर** वि [°**चर**] अनुयायी, अनुगामी ; (कुमा)।

पट्ठ वि [**पृष्ट**] १ जिसको पूछा गया हो वह। २ न. प्रश्न, सवाल ; 'छव्विहे पट्ठे पण्णत्ते" (ठा ६—पत्र ३७५)।

पट्ठव सक [**प्र+स्थापय्**] १ प्रस्थान कराना, भेजना। २ प्रवृत्ति कराना। ३ प्रारम्भ करना। ४ प्रकर्ष से स्थापन करना। ५ प्रायश्चित देना। पट्ठवइ ; (हे ४, ३७)। भूका—पट्ठवइंसु ; (कप्प)। कृ—**पट्ठवियव्व** ; (कस; सुपा ६२७)।

पट्ठवण न [**प्रस्थापन**] १ प्रकृष्ट स्थापन ; २ प्रारम्भ ; "इमं पुण पट्ठवणं पडुच्च" (अणु)।

पट्ठवणा स्त्री [**प्रस्थापना**] १ प्रकृष्ट स्थापना। २ प्रायश्चित्त-प्रदान ; "दुविहा पट्ठवणा खलु" (वव १)।

पट्ठवय वि [**प्रस्थापक**] १ प्रवर्तक, प्रवृत्ति कराने वाला; (णाया १, १—पत्र ६३)। २ प्रारम्भ करने वाला ; (विसे ६२७)।

पट्ठविअ वि [**प्रस्थापित**] भेजा हुआ; (पाअ ; कुमा)। २ प्रवर्तित ; (निचू २०)। ३ स्थिर किया हुआ ; (भग १२, ८)। ४ प्रकर्ष से स्थापित, व्यवस्थापित; (पगण २१)।

पट्ठविइया } **पट्ठविया** } स्त्री [**प्रस्थापिता**] प्रायश्चित-विशेष, अनेक प्रायश्चित्तों में जिसका पहले प्रारम्भ किया जाय वह ; (ठा ५, २ ; निचू २०)।

पट्ठाअ देखो **पट्ठाव**। वकृ—**पट्ठाएंत** ; (गा ४४०)।

पट्ठाण न [**प्रस्थान**] प्रयाण ; (सुपा १४२)।

पट्ठाव देखो **पट्ठव**। पट्ठावइ ; (हे ४, ३७)। पट्ठावेइ ; (पि ५५३)।

पट्ठाविअ देखो **पट्ठविअ** ; (हे ४, १६ ; कुमा ; पि ३०६)।

पट्ठि स्त्री देखो **पट्ठ=पृष्ठ** ; (गउड ; सण)। °**मंस** न [°**मांस**] पीठ का मांस ; (पण्ह १, २)।

पट्ठिअ वि [**प्रस्थित**] जिसने प्रस्थान किया हो वह, प्रयात ; (हे ४, १६ ; ओघ ८१ भा ; सुपा ७८)।

पट्ठिअ वि [**दे**] अलंकृत, विभूषित ; (षड्)।

पट्ठिउकाम वि [**प्रस्थातुकाम**] प्रयाण का इच्छुक ; (श्रा १४)।

पट्ठिसंग न [**दे**] ककुद, बैल के कंधे का कुब्बड़ ; (दे ६, २३)।

पढी देखो **पढि**; (महा ; काल)।

पठ देखो **पढ**। पठदि (शौ) ; (नाट—मृच्छ १४०)। पठंति ; (पिंग)। कर्म —पठविमइ ; (पि ३०६; ५५१)।

पठग देखो **पाढग** ; (कप्प)।

पड अक [**पत्**] पड़ना, गिरना। पडइ ; (उत्र ; पि २१८ ; २४४)। वकृ—**पडंत, पडमाण**; (गा २६४; महा ; भवि ; बृह ६)। संकृ—**पडिअ** ; (नाट—शकु ६७)। कृ—**पडणीअ** ; (काल)।

पड पुं [**पट**] वस्त्र, कपड़ा ; (औप ; उत्त ; स्वप्न ८५ ; स ३२६ ; गा १८)। °**कार** देखो °**गार** ; (राज)। °**कुडी** स्त्री [°**कुटी**] तंबू, वस्त्र-गृह ; (दे ६, ६ ; नी ३)। °**गार** पुं [°**कार**] तन्तुवाय, कपड़ा बुनने वाला ; (पगह १, २—पत्र २८)। °**बुद्धि** वि [°**बुद्धि**] प्रभूत सूत्रार्थों को ग्रहण करने में समर्थ बुद्धि वाला ; (औप)। °**मंडव** पुं [°**मण्डप**] तंबू, वस्त्र-मण्डप ; (आक)। °**मा** वि [°**वत्**] पट वाला, वस्त्र वाला ; (षड्)। °**वास** पुं [°**वास**] वस्त्र में डाला जाता कुंकुम-चूर्ण आदि सुगन्धित पदार्थ ; (गउड ; स ७३८)। °**साडय** पुं [°**शाटक**] १ वस्त्र, कपड़ा ; २ धोती, पहनने का लम्बा वस्त्र ; (भग ६, ३३)। ३ धोती और दुपट्टा ; (णाया १, १ —पत्र ५३)।

पडंचा स्त्री [**दे. प्रत्यञ्चा**] ज्या, धनुष का चिल्ला ; (दे ६, १४ ; पात्र)।

पडंसुअ देखो **पडिंसुद** ; (पि ११५)।

पडंसुआ स्त्री [**प्रतिश्रुत**] १ प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि ; (हे १, ८८)। २ प्रतिज्ञा ; (कुमा)।

पडंसुआ स्त्री [**दे**] ज्या, धनुष का चिल्ला ; (दे ६, १४)।

पडच्चर पुं [**दे**] साला जैसा विदूषक आदि; (दे ६,२५)।

पडच्चर पुं [**पटच्चर**] चोर, तस्कर; (नाट—मृच्छ १३८)।

पडज्झमाण देखो **पडह**=प्र+दह्।

पडण न [**पतन**] पात, गिरना ; (णाया १, १ ; प्रासू१०१)।

पडणीअ वि [**प्रत्यनीक**] विरोधी, प्रतिपक्षी, वैरी ; (स ४६६)।

पडणीअ देखो **पड**=पत्।

पडम देखो **पढम** ; (पि १०४ ; नाट —शकु ६८)।

पडल न [**पटल**] १ समूह, संघात, वृन्द ; (कुमा)। २ जैन साधुओं का एक उपकरण, भिक्षा के समय पात्र पर ढका जाता वस्त्र-खण्ड ; (पगह २, ५ —पत्र १४८)।

पडल न [**दे**] नीव्र, नरिया, मिट्टी का बना हुआ एक प्रकार का खपड़ा जिससे मकान छाये जाते हैं ; (दे ६, ५ ; पात्र)।

पडलग } स्त्रीन [**दे. पटलक**] गठरी, गाँठ ; गुजराती में
पडलय } 'पोटलुं' 'पोटली' ; "पुप्फपडलगहत्थाओ" (णाया १, ८)। स्त्री —°**लिगा**, °**लिया** ; (स २१३ ; सुपा ६)।

पडवा स्त्री [**दे**] पट-कुटी, पट-मण्डप, वस्त्र-गृह; (दे ६, ६)।

पडह सक [**प्र+दह्**] जलाना, दग्ध करना। कवकृ—**पडज्झमाण** ; (पगह १, ३)।

पडह पुं [**पटह**] वाद्य-विशेष, ढोल ; (औप ; सांदि ; महा)।

पडहत्थ वि [**दे**] पूर्ण, भरा हुआ ; (स १८०)।

पडहिय पुं [**पाटहिक**] ढोल बजाने वाला, ढोली ; (पउम ४८, ८६)।

पडहिया स्त्री [**पटहिका**] छोटा ढोल ; (सुर ३, ११५)।

पडाअ देखो **पलाय**=परा+अय्। कृ—**पडाइअव्व** ; (से १४, १२)।

पडाइअ वि [**पलायित**] जिसने पलायन किया हो वह, भागा हुआ ; (से १५, १५)।

पडाइअव्व देखो **पडाअ**।

पडाइया स्त्री [**पताकिका**] छोटी पताका, अन्तर-पताका ; (कुप्र १४५)।

पडाग पुं [**पटाक, पताक**] पताका, ध्वजा ; (कप्प ; औप)।

पडागा } स्त्री [**पताका**] ध्वजा, ध्वज ; (महा ; पात्र ;
पडाया } हे १, २०६ ; प्राप्र ; गउड)। °**इपडाग** पुं [°**तिपताक**] १ मत्स्य की एक जाति; (विपा १, ८—पत्र ८३)। २ पताका के ऊपर की पताका ; (औप)। °**हरण** न [°**हरण**] विजय-प्राप्ति ; (संथा)।

पडायाण देखो **पल्लाण** ; (हे १, २५२)।

पडायाणिय वि [**पर्याणित**] जिस पर पर्याण बाँधा गया हो वह ; (कुमा २, ६३)।

पडाली स्त्री [**दे**] १ पङ्क्ति, श्रेणी ; (दे ६, ६)। २ घर के ऊपर की चटाई आदि की कच्ची छत ; (वव ७)।

पडास देखो **पलास** ; (नाट—मृच्छ २४३)।

पडि अ [**प्रति**] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ विरोध, जैसे—'पडिवक्ख', 'पडिवासुदेव' (गउड; पउम २०, २०२)। २ विशेष, विशिष्टता ; जैसे —'पडिमंजरिवडिंसय' (औप)। ३ वीप्सा, व्याप्ति ; जैसे - 'पडिदुवार', 'पडिपल्लग' ; (पगह

१, ३; से ६, ३२)। ४ वापिस, पीछे; जैसे —'पडिगय' (विपा १, १ ; भग ; सुर १, १४६)। ५ आभिमुख्य, संमुखता; जैसे —'पडिविरइ', 'पडिबद्ध' (पण्ह २, २ ; गउड)। ६ प्रतिदान, बदला ; जैसे—'पडिंदइ' (विसे ३२४१)। ७ फिर से ; जैसे—'पडिपडिय', 'पडिवत्तिय' (सार्ध ६४ ; दे ६, १३)। ८ प्रतिनिधियन ; जैसे 'पडिच्छंद' (उप ७२८ टी)। ६ प्रतिषेध, निषेध ; जैसे -'पडियाइक्खिय' (भग ; सम ५६)। १० प्रतिकूलता, विपरीतपन ; जैसे 'पडिवंथ' (से २, ४६)। ११ स्वभाव ; जैसे 'पडिवाइ' (ठा २, १)। १२ सामीप्य, निकटता ; जैसे 'पडिवेसिय' (सुपा ५५२)। १३ आधिक्य, अतिशय ; जैसे—'पडियाणंद' (औप)। १४ सादृश्य, तुल्यता ; जैसे -'पडिइंद' (पउम १०५, १११)। १५ लघुता, छोटाई; जैसे--'पडिदुवार' (कप्प ; पण्ण २)। १६ प्रशस्तता, श्लाघा ; जैसे—'पडिरूव' (जीव ३)। १७ सांप्रतिकता, वर्तमानता ; (ठा ३, ४ -पत्र १५८)। १८ निरर्थक भी इसका प्रयोग होता है, जैसे —'पडिइंद' (पउम १०५, ६), 'पडिउवारियव्व' (भग)।

पडि देखो **परि** ; (से ४, ५० ; ५, १६ ; ६६ ; अंत ७)।

पडिअ वि [**दे**] विघटित, वियुक्त ; (दे ६, १२)।

पडिअ वि [**पतित**] १ गिरा हुआ ; (गा ११ ; प्रासू ५ ; १०१)। २ जिसने चलने का प्रारम्भ किया हो वह ; "आगयमग्गेण य पडिओ" (वसु)।

पडिअ देखो **पड**=पत्।

पडिअंकिअ वि [**प्रत्यङ्कित**] १ विभूषित ; २ उपलिप्त ; "बहुवण्णघुसिणपंकि पडिअंकिआ" (भवि)।

पडिअंतअ पुं [**दे**] कर्मकर, नौकर ; (दे ६, ३२)।

पडिअग्ग सक [**अनु + व्रज्**] अनुसरण करना, पीछे जाना। पडिअग्गइ ; (हे ४, १०७ ; षड्)।

पडिअग्ग सक [**प्रति + जागृ**] १ सम्हालना। २ सेवा करना, भक्ति करना। ३ शुश्रूषा करना। "वच्छ ! पडियग्गेहि सणिमोत्तियाइयं सारदव्वं" (स २८८), पडियग्गह; (स ५४८)।

पडिअग्गिअ वि [**दे**] १ परिभुक्त, जिसका परिभोग किया गया हो वह ; २ जिसका बधाई दी गई हो वह ; ३ पालित, रक्षित ; (दे ६, ७४)।

पडिअग्गिअ वि [**अनुव्रजित**] अनुगत ; (दे ६, ७४)।

पडिअग्गिअ वि [**प्रतिजागृत**] भक्ति से आदृत; (स २१)।

पडिअग्गिर वि [**अनुव्रजित**] अनुसरण करने की आदत वाला ; (कुमा)।

पडिअज्झअ पुं [**दे**] उपाध्याय, विद्या-दाता गुरु ; (दे ६, ३१)।

पडिअट्टलिअ वि [**दे**] घृष्ट, घिसा हुआ ; (से ६, ३१)।

पडिअत्त देखो **परि + वत्त**=परि + वृत्। संकृ --**पडिअत्तिअ** ; (नाट)।

पडिअत्तण न [**परिवर्तन**] फेरफार ; (से ५, ६६)।

पडिअमित्त पुं [**प्रत्यमित्र**] मित्र-शत्रु, मित्र होकर पीछे से जो शत्रु हुआ हो वह ; (राज)।

पडिअम्मिअ वि [**प्रतिकर्मित**] मण्डित, विभूषित ; (दे ६, ३५)।

पडिअर सक [**प्रति + चर्**] १ बिमार की सेवा करना। २ आदर करना। ३ निरीक्षण करना। ४ परिहार करना। संकृ **पडियरिऊण** ; (निचू १)।

पडिअर सक [**प्रति + कृ**] १ बदला चुकाना। २ इलाज करना। ३ स्वीकार करना। हेकृ **पडिकाउं**; (गा ३२०)। संकृ -"नहनि **पडिकाऊण** ठाविओ पुरो" (कुप्र ४०)।

पडिअर पुं [**दे**] चुल्ली-मूल, चुल्हे का मूल भाग ; (दे ६, १७)।

पडिअर पुं [**परिकर**] परिवार ; "पडियरि(? र)त्थो पुरिसो व्व नियत्तो तेहिं चेव पयहिं नलो" (कुप्र ५७)।

पडिअरग वि [**प्रतिचारक**] सेवा-शुश्रूषा करने वाला ; (निचू १ ; वव १)।

पडिअरण न [**प्रतिचरण**] सेवा, शुश्रूषा ; (ओघ ३६ भा; श्रा १ ; सुपा २६)।

पडिअरणा स्त्री [**प्रतिचरणा**] १ बिमार की सेवा-शुश्रूषा ; (ओघ ८३)। २ भक्ति, आदर, सत्कार ; (उप १३६ टी)। ३ आलोचना, निरीक्षण ; (ओघ ८३)। ४ प्रतिक्रमण; पाप-कर्म से निवृत्ति ; ५ सत्-कार्य में प्रवृत्ति ; (आव ४)।

पडिअलि वि [**दे**] त्वरित, वेग-युक्त ; (दे ६, २८)।

पडिआगय वि [**प्रत्यागत**] १ वापिस आया हुआ, लौटा हुआ; (पउम १६, २६)। २ न. प्रत्यागमन, वापिस आना ; (आचू १)।

पडिआर पुं [**प्रतिकार**] १ चिकित्सा, उपाय, इलाज ; (आव ४; कुमा)। २ बदला, शोध ; (आचा)। ३ पूर्वाचरित कर्म का अनुभव ; (सूअ १, ३, १, ६)।

पडिआर पुं [**प्रत्याकार**] तलवार की म्यान ; (दे २, ५ ; स २१५), "न एक्कम्मि पडियारे दोन्नि करवालाइं मायंति" (महा) ।

पडिआर पुं [**प्रतिचार**] सेवा-शुश्रूषा ; (गाया १, १३ — पत्र १७६) ।

पडिआरय वि [**प्रतिचारक**] सेवा-शुश्रूषा करने वाला ; (गाया १, १३ टी —पत्र १८१) । स्त्री —**रिया** ; (गाया १, १ —पत्र २८) ।

पडिआरि वि [**प्रतिचारिन्**] ऊपर देखो ; (वव १) ।

पडिइ सक [**प्रति + इ**] पीछे लौटना, वापिस आना । वकृ —**पडिइंत** ; (उप ५६४ टी) । हेकृ —**पडिएत्तए** ; (कस) ।

पडिइ स्त्री [**पतिति**] पतन, पात ; (वव ५) ।

पडिइंद पुं [**प्रतीन्द्र**] १ इन्द्र, देव-राज ; (पउम १०५, ६) । २ इन्द्र का सामानिक-देव, इन्द्र के तुल्य वैभव वाला देव ; (पउम १०५, १११) । ३ वानर-वंश के एक राजा का नाम ; (पउम ६, १५२) ।

पडिइंधण न [**प्रतीन्धन**] अस्त्र-विशेष, इन्धनास्त्र का प्रतिपक्षी अस्त्र ; (पउम ७१, ६४) ।

पडिइक्क देखो **पडिक्क** ; (आचा) ।

पडिउंचण न [**दे**] अपकार का बदला ; (पउम ११, ३८; ४४, १६) ।

पडिउंबण न [**परिचुम्बन**] संगम, संयोग ; (से २, २७)।

पडिउच्चार सक [**प्रत्युत् + चारय्**] उच्चारण करना, बोलना ; (भग ; उवा) ।

पडिउट्ठिअ वि [**प्रत्युत्थित**] जो फिर से खड़ा हुआ हो वह; (से १५, ८० ; पउम ६१, ४०) ।

पडिउण्ण देखो **परिपुण्ण** ; (से ५, १८) ।

पडिउत्तर न [**प्रत्युत्तर**] जवाब, उत्तर ; (सुर २, १५८ ; भवि) ।

पडिउत्तरण न [**प्रत्युत्तरण**] पार जाना, पार उतरना ; (निचू १) ।

पडिउत्ति स्त्री [**दे**] खबर, समाचार ; "अम्मापियरस्स कुसलपडिउत्ती सविसेसं परिपुट्ठा" (महा) ।

पडिउत्थ वि [**पर्युषित**] संपूर्ण रूप से अवस्थित ; (से ४, ५०) ।

पडिउद्ध वि [**प्रतिबुद्ध**] १ जागृत, जगा हुआ ; (से १२, २२) । २ प्रकाश-युक्त ; "जलणिहिविइण्णपडिउद्धं आअमणाअड्ढिअं विअंभइ व धणु" (से ५, २७) ।

पडिउवयार पुं [**प्रत्युपकार**] उपकार का बदला, प्रतिफल; (पउम ४८, ७२ ; सुपा ११५) ।

पडिउस्सस अक [**प्रत्युत् + श्वस्**] पुनर्जीवित होना, फिर से जीना । वकृ —**पडिउस्ससंत** ; (से ९, १२)।

पडिऊल देखो **पडिकूल** ; (अच्चु ८० ; से ३, ३५) ।

पडिएत्तए देखो **पडिइ** ।

पडिएल्लिअ वि [**दे**] कृतार्थ, कृत-कृत्य ; (दे ६, ३२) ।

पडिंसुआ देखो **पडंसुआ**=प्रतिश्रुत् ; (औप) ।

पडिंसुद वि [**प्रतिश्रुत**] अंगीकृत, स्वीकृत ; (प्राप्र ; पि ११५) ।

पडिकंटय वि [**प्रतिकण्टक**] प्रतिस्पर्धी ; (गउ)।

पडिकंत देखो **पडिक्कंत** ; (उप २२० टी) ।

पडिकत्तु वि [**प्रतिकर्तृ**] इलाज करने वाला ; (ठा ४, ४) ।

पडिकप्प सक [**प्रति + कृप्**] १ सजाना, सजावट करना । "खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! कूणियस्स रण्णो भिंभिसारपुत्तस्स आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेहि " (औप), पडिकप्पेइ ; (औप) ।

पडिकप्पिअ वि [**प्रतिक्लृप्त**] सजाया हुआ ; (विपा १, २ —पत्र २३ ; महा ; औप) ।

पडिकम देखो **पडिक्कम** । कृ "पडिकमणं पडिकमओ पडिकमिअव्वं च आणुपुव्वीए " (आनि ४) ।

पडिकमय देखो **पडिक्कमय** ; (आनि ४) ।

पडिकम्म न [**प्रतिकर्मन्, परिकर्मन्**] देखो **परिकम्म** ; (औप ; सण) ।

पडिकय वि [**प्रतिकृत**] १ जिसका बदला चुकाया गया हो वह ; २ न. प्रतिकार, बदला ; (ठा ४, ४) ।

पडिकाउं }
पडिकाऊण } देखो **पडिअर**=प्रति + कृ ।

पडिकामणा देखो **पडिक्कामणा** ; (आचभा ३६ टी) ।

पडिकिदि स्त्री [**प्रतिकृति**] १ प्रतिकार, इलाज ; २ बदला ; (दे ६, १६) । ३ प्रतिबिम्ब, मूर्ति ; (अभि १६६) ।

पडिकिरिया स्त्री [**प्रतिक्रिया**] प्रतीकार, बदला ; "कयपडिकिरिया " (औप) ।

पडिकुट्ठ } वि [प्रतिकुष्ट] १ निषिद्ध, प्रतिषिद्ध ;
पडिकुट्ठिल्लग } (ओघ ४०३ ; पञ्च ८ ; सुपा २०७)। "पडिकुट्ठिल्लगदिवसे वज्जेज्जा अट्ठमिं च नवमिं च" (वव १)। २ प्रतिकूल ; (स २७०)। "अन्नोन्न पडिकुट्ठा दोन्निवि एए असव्वाया" (सम्म १४३)।

पडिकूड देखो **पडिकूल=प्रतिकूल** ; (सुर ११, २०१)।

पडिकूल सक [प्रतिकूलय्] प्रतिकूल आचरण करना। वकृ "पडिकूलंतस्स मज्झ जिण-वयणं" (सुपा २०७ ; २०६)। कृ—**पडिकूलेयव्व** ; (कुप्र २४२)।

पडिकूल वि [प्रतिकूल] १ विपरीत, उलटा ; (उत १२)। २ अनिष्ट, अनभिमत ; (आचा)। ३ विरोधी, विपक्ष ; (हे २, ६७)।

पडिकूलिय वि [प्रतिकूलित] प्रतिकूल किया हुआ ; (गज)।

पडिकूवग पुं [प्रतिकूपक] कूप के समीप का छोटा कूप ; (स १००)।

पडिकेसव पुं [प्रतिकेशव] वासुदेव का प्रतिपक्षी राजा, प्रतिवासुदेव ; (पउम २०, २०४)।

पडिक्क न [प्रत्येक] प्रत्येक, हरएक ; (आचा)।

पडिक्कंत वि [प्रतिकान्त] पीछे हटा हुआ, निवृत्त; (उवा ; पण्ह २, १ ; श्रा ४३ ; सं १०६)।

पडिक्कम अक [प्रति+क्रम्] निवृत्त होना, पीछे हटना। पडिक्कमइ ; (उव ; महा)। पडिक्कमे ; (श्रा ३ ; ५ ; पच्च १२)। हेकृ -**पडिक्कमिउं, पडिक्कमित्तए** ; (धर्म २ ; कस ; ठा २, १)। संकृ -**पडिक्कमित्ता** ; (आचा २, १५)। कृ -**पडिक्कंतव्व, पडिक्कमियव्व** ; (आवम ; ओघ ८००)।

पडिक्कमण न [प्रतिक्रमण] १ निवृत्ति, व्यावर्तन ; २ प्रमाद-वश शुभ योग से गिर कर अशुभ योग को प्राप्त करने के बाद फिर से शुभ योग को प्राप्त करना ; ३ अशुभ व्यापार से निवृत्त होकर उत्तरोत्तर शुद्ध योग में वर्तन ; (पण्ह २, १ ; औप ; चउ ५ ; पडि)। ४ मिथ्या-दुष्कृत-प्रदान, किए हुए पाप का पश्चात्ताप ; (ठा १०)। ५ जैन साधु और गृहस्थों का सुबह और शाम को करने का एक आवश्यक अनुष्ठान ; (श्रा ४८)।

पडिक्कमय वि [प्रतिकामक] प्रतिक्रमण करने वाला ; "जीवो उ पडिक्कमओ असुहाणं पावकम्मजोगाणं" (आनि ४)।

पडिक्कमिउं देखो **पडिक्कम**। °**काम** वि [°काम] प्रतिक्रमण करने की इच्छा वाला ; (गाथा १, ५)।

पडिक्कय पुं [दे] प्रतिक्रिया, प्रतीकार ; (दे ६, १६)।

पडिक्कामणा स्त्री [प्रतिक्रमणा] देखो **पडिक्कमण** ; (ओघ ३६ भा)।

पडिक्कूल देखो **पडिकूल** ; (हे २, ६७ ; षड्)।

पडिक्ख सक [प्रति+ईक्ष्] १ प्रतीक्षा करना, बाट देखना, बाट जोहना। २ अक. स्थिति करना। पडिक्खइ ; (षड् ; महा)। वकृ -**पडिक्खंत** (पउम ५, ७२)।

पडिक्खअ वि [प्रतीक्षक] प्रतीक्षा करने वाला, बाट जोहने वाला ; (गा ५५७ अ)।

पडिक्खंभ पुं [प्रतिस्तम्भ] अर्गला, आगल ; (स ६, २३)।

पडिक्खण न [प्रतीक्षण] प्रतीक्षा, बाट ; (दे १,३४;कुमा)।

पडिक्खर वि [दे] १ क्रूर, निर्दय ; (दे ६, ३५)। २ प्रतिकूल ; (षड्)।

पडिक्खल अक [प्रति+स्खल्] १ हटना। २ गिरना। ३ रुकना। ४ सक. रोकना। वकृ -**पडिक्खलंत** ; (भवि)।

पडिक्खलण न [प्रतिस्खलन] १ पतन ; २ अवरोध ; (आवम)।

पडिक्खलिअ वि [प्रतिस्खलित] १ परावृत, पीछे हटा हुआ ; (से १, ७)। २ रुका हुआ ; (से १, ७ ; भवि)। देखो **पडिखलिअ**।

पडिक्खाविअ वि [प्रतीक्षित] १ स्थापित ; २ कृत ; "विरमालिअ संसारे जेण पडिक्खाविआ समयसत्था" (कुमा)।

पडिक्खिअ वि [प्रतीक्षित] जिसकी प्रतीक्षा की गई हो वह ; (दे ८, १३)।

पडिक्खित्त वि [परिक्षिप्त] विस्तारित ; (अंत ७)।

पडिखंध न [दे] १ जल-वहन, जल भरने का दृति आदि पात्र ; २ जलवाह, मेघ ; (दे ६, २८)।

पडिखंधी स्त्री [दे] ऊपर देखो ; (दे ६, २८)।

पडिखद्ध वि [दे] हत, मारा हुआ (?) ; "किमेइणा सुगह-पाणा पडिखद्धेण" (महा)।

पडिखल देखो **पडिक्खल** ; (भवि)। कर्म- -पडिखलियइ ; (कुप्र २०५)।

पडिखलिअ वि [प्रतिस्खलित] १ रुका हुआ ; (भवि)। २ रोका हुआ ; "सहसा तत्तो पडिखलिआ अंगरक्खेण" (सुपा ५२७)। देखो **पडिक्खलिअ**।

पडिखिज्ज अक [परि + खिद्] खिन्न होना, क्लान्त होना। पडिखिज्जदि (शौ) ; (नाट—मालती ३१) ।

पडिगमण न [प्रतिगमन] व्यावर्तन, पीछे लौटना ; (वव १०) ।

पडिगय पुं [प्रतिगज] प्रतिपक्षी हाथी ; (गउड) ।

पडिगय पुं [प्रतिगत] पीछे लौटा हुआ, वापिस गया हुआ ; (विपा १, १ ; भग ; ओैप ; महा ; सुर १, १४६) ।

पडिगह देखो **पडिग्गह** ; (दे ४, ३१) ।

पडिगाह सक [प्रति + ग्रह्] ग्रहण करना, स्वीकार करना। पडिगाहइ ; (भवि) । पडिगाह, पडिगाहेहि ; (कप्प) । संकृ—**पडिगाहिया, पडिगाहित्ता, पडिगाहेत्ता**; (कप्प; आचा २, १, ३, ३) । हेकृ—**पडिगाहित्तए** ; (कप्प)।

पडिगाहग वि [प्रतिग्राहक] ग्रहण करने वाला ; (णाया १, १—पत्र ५३ ; उप पृ २६३) ।

पडिगाहिय वि [प्रतिगृहीत] लिया हुआ, उपात्त ; (सुपा १४३) ।

पडिग्गह पुं [पतद्ग्रह, प्रतिग्रह] १ पात्र, भाजन ; (पण्ह २, ५ ; ओैप ; ओघ ३६ ; २५१ ; दे ५, ४८ ; कप्प) । २ कर्म-प्रकृति विशेष, वह प्रकृति जिसमें दूसरी प्रकृति का कर्म-दल परिणत होता है ; (कम्मप) । °**धारि** वि [°**धारिन्**] पात्र रखने वाला ; (कप्प) ।

पडिग्गहिअ वि [प्रतिग्रहिन्, पतद्ग्रहिन्] पात्र वाला ; "समणे भगवं महावीरे संवच्छरं साहियं मासं जाव चीवरधारी होत्था, तेण परं अचेलए पाणिपडिग्गहिए" (कप्प)।

पडिग्गहिद (शौ) वि [प्रतिगृहीत, परिगृहीत] स्वीकृत ; (नाट मृच्छ ११० ; रत्ना १२) ।

पडिग्गाह देखो **पडिगाह** । पडिग्गाहेइ ; (उवा)। संकृ - **पडिग्गाहेत्ता** ; (उवा) । हेकृ **पडिग्गाहेत्तए** ; (कस ; ओैप) ।

पडिग्गाह सक [प्रति + ग्राहय्] ग्रहण कराना । कृ— **पडिग्गाहिदव्व** (शौ) ; (नाट) ।

पडिग्गाहय वि [प्रतिग्राहक] प्रत्यादाता, वापिस लेने वाला ; (दे ७, ५६) ।

पडिघाय पुं [प्रतिघात] १ नाश, विनाश ; २ निराकरण, निरसन ; " दुक्खपडिघायहेउं " (आचा ; सुर ७, २३४) ।

पडिघायग वि [प्रतिघातक] प्रतिघात करने वाला ; (उप २६४ टी) ।

पडिघोलिर वि [प्रतिघूर्णितृ] डोलने वाला, हिलने वाला ; (से ६, ५१) ।

पडिचंद पुं [प्रतिचन्द्र] द्वितीय चन्द्र, जो उत्पात आदि का सूचक है ; (अणु) ।

पडिचक्क न [प्रतिचक्र] अनुरूप चक्र—समुदाय ; (राज) । देखो **पडियक्क**=प्रतिचक्र ।

पडिचर देखो **पडिअर**=प्रति + चर् । संकृ - **पडिचरिय** ; (दस ६, ३)। कृ—"संजमा **पडिचरियव्वो**" (आव ४)।

पडिचरग पुं [प्रतिचरक] जासूस, चर पुरुष; (बृह १) ।

पडिचरणा देखो **पडिअरणा** ; (राज) ।

पडिचार पुं [प्रतिचार] कला-विशेष ; १ ग्रह आदि की गति का परिज्ञान ; २ रोगी की सेवा-शुश्रूषा का ज्ञान ; (जं २ ; ओैप ; स ६०३) ।

पडिचारय पुंस्त्री [प्रतिचारक] नौकर, कर्मकर । स्त्री—°**रिया** ; (सुपा ३०४) ।

पडिचोइज्जमाण देखो **पडिचोय** ।

पडिचोइय वि [प्रतिचोदित] १ प्रेरित ; (उप पृ ३६४)। २ प्रतिभणित, जिसको उत्तर दिया गया हो वह ; (पउम ४४, ४६) ।

पडिचोएत्तु वि [प्रतिचोदयितृ] प्रेरक ; (ठा ३, ३) ।

पडिचोय सक [प्रति + चोदय्] प्रेरणा करना । पडिचोएंति ; (भग १५) । कवकृ—**पडिचोइज्जमाण** ; (भग १५—पत्र ६७६) ।

पडिचोयणा स्त्री [प्रतिचोदना] प्रेरणा ; (ठा ३, ३ ; भग १५—पत्र ६७६) ।

पडिच्चारग देखो **पडिचारय** ; (उप ६८६ टी) ।

पडिच्छ देखो **पडिक्ख** । वकृ—**पडिच्छंत**, "अहियासियव्वाणि **पडिच्छमाणो** विहरइ" (उव ; स १२५ ; महा) । कृ—**पडिच्छियव्व** ; (महा) ।

पडिच्छ सक [प्रति + इष्] ग्रहण करना । पडिच्छइ, पडिच्छंति ; (कप्प ; सुपा ३६) । वकृ **पडिच्छमाण, पडिच्छेमाण** ; (ओैप; कप्प ; णाया १, १) । संकृ **पडिच्छइत्ता, पडिच्छिअ, पडिच्छिउं, पडिच्छिऊण**; (कप्प ; अभि १८५ ; सुपा ८७ ; निचू २०) । हेकृ—**पडिच्छिउं** ; (सुपा ७२) । कृ **पडिच्छियव्व** ; (सुपा (१२५ ; सुर ४, १८६) । प्रयो—कर्म—**पडिच्छावीअदि** (शौ) ; (पि ५५२ ; नाट) ; वकृ **पडिच्छावेमाण** ; (कप्प) ।

पडिच्छंद पुंन [**प्रतिच्छन्द**] १ मूर्ति, प्रतिबिम्ब ; (उप ७२८ टी ; स १६१ ; ६०६)। २ तुल्य, समान ; (से ८, ४६)। °**किय** वि [°**कृत**] समान किया हुआ ; (कुमा)।

पडिच्छंद पुं [**दे**] मुख, मुँह ; (दे ६, २४)।

पडिच्छग वि [**प्रत्येषक**] ग्रहण करने वाला ; (निचू ११)।

पडिच्छण न [**प्रतीक्षण**] प्रतीक्षा, बाट ; (उप ३७८)।

पडिच्छण न [**प्रत्येषण**] १ ग्रहण, आदान ; २ उत्सारण, विनिवारण ; "कुलिसपडिच्छणजोग्गा पच्छा कउया महिहराण" (गउड)।

पडिच्छणा [**त्येषणा**] ग्रहण, आदान ; (निचू १६)।

पडिच्छण्ण } वि [**प्रतिच्छन्न**] आच्छादित, ढका हुआ ;
पडिच्छन्न } (गाया १, १ पत्र १३ ; कप्प)।

पडिच्छय पुं [**दे**] समय, काल ; (दे ६, १६)।

पडिच्छय देखो **पडिच्छग** ; (औप)।

पडिच्छयण न [**प्रतिच्छदन**] देखो **पडिच्छायण** ; (राज)।

पडिच्छा स्त्री [**प्रतीच्छा**] ग्रहण, अंगीकार ; (द्र ३३ ; सम)।

पडिच्छायण न [**प्रतिच्छादन**] आच्छादन वस्त्र, प्रच्छादन-पट ; "हिरिपडिच्छायणं च नो संचाएमि अहियासित्तए" (आचा; गाया १, १ पत्र १५ टी)।

पडिच्छाया स्त्री [**प्रतिच्छाया**] प्रतिबिम्ब ; (उप ५९३ टी)।

पडिच्छावेमाण देखो **पडिच्छ**=प्रति + इष्।

पडिच्छिअ वि [**प्रतीष्ट, प्रतीप्सित**] १ गृहीत, स्वीकृत ; (स १, ५४ ; उवा ; औप ; सुपा ८४)। २ विशेष रूप से वाञ्छित ; (भग)।

पडिच्छिअ देखो **पडिच्छ**=प्रति + इष्।

पडिच्छिआ स्त्री [**दे**] १ प्रतिहारी ; २ चिरकाल से ब्यायी हुई भैंस ; (दे ६, २१)।

पडिच्छिउं }
पडिच्छिऊण } देखो **पडिच्छ**=प्रति + इष्।
पडिच्छियव्व }

पडिच्छिर वि [**प्रतीक्षितृ**] प्रतीक्षा करने वाला ; (गउड ३६)।

पडिच्छिर वि [**दे**] सदृश, समान ; (हे २, १७४)।

पडिछंद देखो **पडिच्छंद** ; "रत्रियं नियपडिछंदं" (उप ७२८ टी)।

पडिछा स्त्री [**प्रतीक्षा**] प्रतीक्षण, बाट ; (आव १७५)।

पडिजंप सक [**प्रति + जल्प्**] उत्तर देना। पडिजंपइ ; (भवि)।

पडिजग्ग देखो **पडिजागर**=प्रति + जागृ। पडिजग्गइ ; (बृह ३)।

पडिजग्गय वि [**प्रतिजागरक**] सेवा-शुश्रूषा करने वाला ; (उप ७६८ टी)।

पडिजग्गिय वि [**प्रतिजागृत**] जिसकी सेवा-शुश्रूषा की गई हो वह, (सुर ११, २४)।

पडिजागर सक [**प्रति + जागृ**] १ सेवा-शुश्रूषा करना। २ गवेषणा करना। पडिजागरंति ; (कप्प)। वकृ— **पडिजागरमाण** ; (विपा १, १ ; उवा ; महा)।

पडिजागर पुं [**प्रतिजागर**] १ सेवा-शुश्रूषा ; २ चिकित्सा; "भणिओ सिट्ठी आगमु विज्जं पडिजागरट्ठाए" (सुपा ५७६)।

पडिजागरण न [**प्रतिजागरण**] ऊपर देखो ; (वव ६)।

पडिजागरिय देखो **पडिजग्गिय** ; (दे १, ४१)।

पडिजुवइ स्त्री [**प्रतियुवति**] १ स्व-समान अन्य युवति ; २ सपत्नी ; (कुप्र ४)।

पडिजोग पुं [**प्रतियोग**] कार्मण आदि योग का प्रतिघातक योग, चूर्ण-विशेष ; (सुर ८, २०४)।

पडिट्ठ वि [**पटिष्ठः**] अत्यन्त निपुण ; (सुर १, १३५ ; १३, ९६)।

पडिट्ठविअ वि [**परिस्थापित**] संस्थापित ; (से ५, ५२)।

पडिट्ठविअ वि [**प्रतिष्ठापित**] जिसकी प्रतिष्ठा की गई हो वह ; (अच्चु ६४)।

पडिट्ठा देखो **पइट्ठा** ; (नाट—मालती ७०)।

पडिट्ठाव सक [**प्रति + स्थापय्**] प्रतिष्ठित करना। पडिट्ठावेहि ; (पि २२० ; ५५१)।

पडिट्ठावअ देखो **पइट्ठावय** ; (नाट—वेणी ११२)।

पडिट्ठाविद (शौ) देखो **पइट्ठाविय** ; (अभि १८७)।

पडिट्ठिअ देखो **पइट्ठिय** ; (षड् ; पि २२०)।

पडिण देखो **पडीण** ; (पि ८२ ; ९९)।

पडिणव वि [**प्रतिनव**] नया, नूतन ; "तुरअपडिणवखुरघाद णिरंतरस्थलीई" (विक २६)।

पडिणिअंसण न [**दे**] रात में पहनने का वस्त्र; (दे ६, ३६)।

पडिणिअत्त अक [**प्रतिनि + वृत्**] पीछे लौटना, पीछे वापिस जाना। पडिणियत्तई ; (औप)। वकृ—**पडिणिअत्तंत, पडिणिअत्तमाण** ; (से १३, ७५ ; नाट—मालती २६)। संकृ—**पडिणियत्तित्ता** ; (औप)।

पडिणिअत्त } वि [**प्रतिनिवृत्त**] पीछे लौटा हुआ ; (गा
पडिणिउत्त } ६८ अ ; विपा १, ५ ; उवा ; से १, २६ ;
अभि १२४)।

पडिणिक्खम अक [**प्रतिनिर् + क्रम्**] बाहर निकलना। पडिणिक्खमइ ; (उवा)। संकृ -**पडिणिक्खमित्ता** ; (उवा)।

पडिणिग्गच्छ अक [**प्रतिनिर् + गम्**] बाहर निकलना। पडिणिग्गच्छइ ; (उवा)। संकृ -**पडिणिग्गच्छित्ता** ; (उवा)।

पडिणिभ वि [**प्रतिनिभ**] १ सदृश, तुल्य ; २ हेतु-विशेष, वादी की प्रतिज्ञा का खंडन करने के लिए प्रतिवादी की तरफ से प्रयुक्त समान हेतु—युक्ति ; (ठा ४, ३)।

पडिणिवत्त देखो **पडिणिअत्त**=प्रतिनि + वृत्। वकृ—**पडिणिवत्तमाण** ; (नाट—रत्ना ५८)।

पडिणिवत्त देखो **पडिणिअत्त**=प्रतिनिवृत्त ; (काल)।

पडिणिविट्ठ वि [**प्रतिनिविष्ट**] द्विष्ट, द्वेष-युक्त ; (पगह १, १—पत्र ७)।

पडिणिवुत्त देखो **पडिणिअत्त**=प्रतिनि + वृत्। वकृ—**पडिणिवुत्तमाण** ; (वेणी २३)।

पडिणिवुत्त देखो **पडिणिअत्त**=प्रतिनिवृत्त ; (अभि ११८)।

पडिणिवेस देखो **पडिनिवेस** ; (राज)।

पडिणिव्वत्त देखो **पडिणिअत्त**=प्रतिनि + वृत्। वकृ—**पडिणिव्वत्तंत** ; (हेका ३३२)।

पडिणिसंत वि [**प्रतिनिश्रान्त**] १ विश्रान्त ; २ निलीन ; (णाया १, ४—पत्र ६७)।

पडिणीय न [**प्रत्यनीक**] १ प्रतिसैन्य, प्रतिपक्ष की सेना ; (भग ८, ८)। २ वि. प्रतिकूल, विपक्षी, विपरीत आचरण करने वाला ; (भग ८, ८; णाया १, २ ; सम्म १६३ ; औप ; ओघ ६३ ; ठ ३३)।

पडिण्णत्त वि [**प्रतिज्ञप्त**] उक्त, कथित ; "जस्स णं भिक्खुस्स अयं पगप्पे ; अहं च खलु पडिण्ण(न्न)त्तो अपडिण्णा(न्न)त्तेहिं" (आचा १, ८, ५, ४)।

पडिण्णा देखो **पइण्णा**; (स्वप्न २०७ ; सूत्र १,२,२,२०)।

पडिण्णाद देखो **पइण्णाद** ; (पि २७६; ५६५ ; नाट—मालवि १२)।

पडितंत वि [**प्रतितन्त्र**] स्व-शास्त्र ही में प्रसिद्ध अर्थ ; "जो खलु सतंतसिद्धो न य परतंतसु सो उ पडितंतो" (बृह१)।

पडितप्प सक [**प्रतितर्पय्**] भोजनादि से तृप्त करना। पडितप्पह ; (ओघ ५३५)।

पडितप्पिय वि [**प्रतितर्पित**] भोजन आदि से तृप्त किया हुआ ; (वव १)।

पडितुट्ठ देखो **परितुट्ठ**; (नाट—मृच्छ ८१)।

पडितुल्ल वि [**प्रतितुल्य**] समान, सदृश ; (पउम ५, १४६)।

पडित्त देखो **पलित्त**=प्रदीप्त ; (से १, ५ ; ५, ८७)।

पडित्ताण देखो **परित्ताण**; (नाट—शकु १४)।

पडित्थिर वि [दे] समान, सदृश ; (दे ६, २०)।

पडित्थिर वि [**परिस्थिर**] स्थिर ; "गुप्पंतपडित्थिरे" (से २, ४)।

पडिदंड पुं [**प्रतिदण्ड**] मुख्य दण्ड के समान दूसरा दण्ड ; "सपडिदंडाणं धरिज्जमाणेणं आयवत्तेणं विरायंत" (औप)।

पडिदंस सक [**प्रति + दर्शय्**] दिखलाना। पडिदंसेइ ; (भग ; उवा)। संकृ -**पडिदंसेत्ता** ; (उवा)।

पडिदा सक [**प्रति + दा**] पीछे देना, दान का बदला देना। **पडिदेइ** ; (विसे ३२४१)। कृ **पडिदायव्व**; (कप्प)।

पडिदाण न [**प्रतिदान**] दान के बदले में दान ; "दाणपडिदाणउचियं" (उप ५६७ टी)।

पडिदिसा } स्त्री [**प्रतिदिश्**] विदिशा, विदिक् ; (राज;
पडिदिसि } पि ४१३)।

पडिदुगंछि वि [**प्रतिजुगुप्सिन्**] १ निन्दा करने वाला ; २ परिहार करने वाला ; "सीओदगपडिदुगंछिणो" (सुअ १, २, २, २०)।

पडिदुवार न [**प्रतिद्वार**] १ हर एक द्वार ; (पगह १,३)। २ छोटा द्वार ; (कप्प ; पगण २)।

पडिनमुक्कार पुं [**प्रतिनमस्कार**] नमस्कार के बदले में नमस्कार प्रणाम ; (रंभा)।

पडिनिक्खंत वि [**प्रतिनिष्क्रान्त**] बाहर निकला हुआ ; (णाया १, १३)।

पडिनिक्खम देखो **पडिणिक्खम**। पडिनिक्खमइ ; (कप्प)। संकृ **पडिनिक्खमित्ता** ; (कप्प ; भग)।

पडिनिग्गच्छ देखो **पडिणिग्गच्छ**। पडिनिग्गच्छइ ; (उवा)। पडिनिग्गच्छंति ; (भग)। संकृ—**पडिनिग्गच्छित्ता** ; (उवा ; पि ५८२)।

पडिनिभ देखो **पडिणिभ** ; (दसनि १) ।
पडिनियत्त देखो **पडिणिअत्त**=प्रतिनि + वृत् । पडिनियत्तइ ; (महा) । हेकृ—**पडिनियत्तए**; (कप्प) ।
पडिनियत्त देखो **पडिणिअत्त**=प्रतिनिवृत्त ; (गाया १,१४ ; महा) ।
पडिनिवेस पुं [**प्रतिनिवेश**] १ आग्रह, कदाग्रह ; (पञ्च ६) । २ गाढ़ अनुशय ; (विसे २२६६) ।
पडिनिसिद्ध वि [**प्रतिनिषिद्ध**] निवारित; (उप पृ ३३३) ।
पडिन्नत्त देखो **पडिण्णत्त** ; (आचा १, ८, ५, ४) ।
पडिन्नव सक [**प्रति + ज्ञपय्**] कहना । संकृ—**पडिन्नवित्ता** ; (कप्प) ।
पडिन्ना देखो **पडिण्णा** ; (आचा) ।
पडिपंथ पुं [**प्रतिपथ**] १ उलटा मार्ग, विपरीत मार्ग ; २ प्रतिकूलता ; (सूअ १, ३, १, ६) ।
पडिपंथि वि [**प्रतिपन्थिन्**] प्रतिकूल, विरोधी ; " अप्पेगे पडिभासंति पडिपंथियमागता " (सूअ १, ३, १, ६) ।
पडिपक्ख देखो **पडिवक्ख** ; (आघ १३) ।
पडिपडिय वि [**प्रतिपतित**] फिर से गिरा हुआ ; " सत्था सिवत्थिणो चालियावि पडिपडिया भवारण्णे " (सार्ध ६८)।
पडिपत्ति) देखो **पडिवत्ति** ; (नाट —चैत ३४ ; संक्षि
पडिपद्दि) ६)
पडिपह पुं [**प्रतिपथ**] १ उन्मार्ग, विपरीत रास्ता ; (स १४७ ; पि ३६६ ए) । २ न. अभिमुख, संमुख ; (सूअ २, २, ३१ टी) ।
पडिपहिअ वि [**प्रातिपथिक**] संमुख आने वाला ; (सूअ २, २, २८) ।
पडिपाअ सक [**प्रति + पादय्**] प्रतिपादन करना, कथन करना । कृ—**पडिपाअणीअ** ; (नाट —शकु ६५) ।
पडिपाय पुं [**प्रतिपाद**] मुख्य पाद को सहायता पहुँचाने वाला पाद ; (राय) ।
पडिपाहुड न [**प्रतिप्राभृत**] बदले की भेंट; (सुपा १४५)।
पडिपिंडिअ वि [**दे**] प्रवृद्ध, बढ़ा हुआ ; (दे ६, ३४) ।
पडिपिल्ल सक [**प्रति + क्षिप्, प्रतिप्र + ईरय्**] प्रेरणा करना । पडिपिल्लइ ; (भवि) ।
पडिपिल्लण न [**प्रतिप्रेरण**] १ प्रेरणा ; (सुर १५, १४१) । २ ढक्कन, पिधान ; ३ वि. प्रेरणा करने वाला ; " दीवसिहापडिपिल्लणमल्ले मिल्लंति नीसासे " (कुप्र १३१) ।
पडिपिहा देखो **पडिपेहा** । संकृ—**पडिपिहित्ता**; (पि ५८२)।

पडिपीलण न [**प्रतिपीडन**] विशेष पीडन, अधिक दबाव ; (गउड) ।
पडिपुच्छ सक [**प्रति + प्रच्छ्**] १ पृच्छा करना, पूछना । २ फिर से पूछना । ३ प्रश्न का जवाब देना । पडिपुच्छइ ; (उव) । वकृ—**पडिपुच्छमाण** ; (कप्प) । कृ—**पडिपुच्छणिज्ज, पडिपुच्छणीय** ; (उवा ; णाया १, १; राय) ।
पडिपुच्छण न [**प्रतिप्रच्छन**] नीचे देखो ; (भग ; उवा) ।
पडिपुच्छणया) स्त्री [**प्रतिप्रच्छना**] १ पूछना, पृच्छा ;
पडिपुच्छणा) २ फिर से पृच्छा; (उत्त २६, २० ; औप)। ३ उत्तर, प्रश्न का जवाब ; (बृह ४ ; उप पृ ३६८) ।
पडिपुच्छणिज्ज) देखो **पडिपुच्छ** ।
पडिपुच्छणीय)
पडिपुच्छा स्त्री [**प्रतिपृच्छा**] देखो **पडिपुच्छणा**; (पंचा २ ; वव २ ; बृह १) ।
पडिपुच्छिअ वि [**प्रतिपृष्ट**] जिससे प्रश्न किया गया हो वह ; (गा २८६) ।
पडिपुज्जिय वि [**प्रतिपूजित**] पूजित, अर्चित ; " वंदणवरकणगकलसमुविणिम्मियपडिपुंजि(? पुजि, पूइ) यसरसपउमसोहंतदारभाए " (णाया १, १ —पत्र १२)।
पडिपुण्ण देखो **पडिपुन्न** ; (उवा ; पि २१८) ।
पडिपुत्त पुं [**प्रतिपुत्र**] प्रपुत्र, पुत्र का पुत्र ; " अंकनिवेसियनियनियपुत्तयपडिपुत्तनत्तपुत्तीयं " (सुपा ६) । देखो **पडिपोत्तय** ।
पडिपुन्न वि [**प्रतिपूर्ण**] परिपूर्ण, संपूर्ण ; (णाया १,१ ; सुर ३, १८ ; ११४) ।
पडिपूइय देखो **पडिपुज्जिय** ; (राज) ।
पडिपूयग) वि [**प्रतिपूजक**] पूजा करने वाला ; (राज;
पडिपूयय) सम ५१) ।
पडिपूरिय वि [**प्रतिपूरित**] पूर्ण किया हुआ ; (पउम १००, ५० ; ११५, ७) ।
पडिपेल्लण देखो **पडिपिल्लण** ; (गउड ; से ६, ३२) ।
पडिपेल्लण न [**परिप्रेरण**] देखो **पडिपिल्लण**; (से २, २४)।
पडिपेल्लिय वि [**प्रतिप्रेरित**] प्रेरित, जिसको प्रेरणा की गई हो वह ; (सुर १५, १८० ; महा) ।
पडिपेहा सक [**प्रतिपि + धा**] ढकना, आच्छादन करना । संकृ—**पडिपेहित्ता** ; (सूअ २, २, ५१) ।

पडिपोत्तय पुं [**प्रतिपुत्रक**] नप्ता, कन्या का पुत्र, लड़की का लड़का ; (सुपा १६२)। देखो **पडिपुत्तय**।

पडिप्पह देखो **पडिपह** ; (उप ७२८ टी)।

पडिप्फद्धि वि [**प्रतिस्पर्धिन्**] स्पर्धा करने वाला ; (हे १, ४४ ; २, ५३ ; प्राप्र ; संक्षि १६)।

पडिप्फलणा स्त्री [**प्रतिफलना**] १ स्खलना ; २ संक्रमण; " पडिसद्दपडिप्फलणावज्जिरनीसेसमुरघंटं " (सुपा ८७)।

पडिप्फलिअ } वि [**प्रतिफलित**] १ प्रतिबिम्बित, संक्रान्त;
पडिफलिअ } (से १५, ३१ ; दे १, २७)। २ स्खलित ; (पाअ)।

पडिबंध सक [**प्रति + बन्ध्**] रोकना, अटकाना। पडिबंधइ ; (पि ५१३)। कृ —**पडिबंधेयव्व** ; (वसु)।

पडिबंध पुं [**प्रतिबन्ध**] १ रुकावट ; (उवा ; कप्प)। २ विघ्न, अन्तराय ; (उप ८८७)। ३ आदर, बहुमान ; (उप ७७६ ; उत्त १४६)। ४ स्नेह, प्रीति, राग ; (ठा ६ ; पंचा १७)। ५ आसक्ति, अभिष्वङ्ग ; (गाया १, ५ ; कप्प)। ६ वेष्टन ; (सूअ १, ३, २)।

पडिबंधअ } वि [**प्रतिबन्धक**] प्रतिबन्ध करने वाला,
पडिबंधग } रोकने वाला ; (अभि २५३ ; उप ६८५)।

पडिबंधण न [**प्रतिबन्धन**] प्रतिबन्ध, रुकावट ; (पि २१८)।

पडिबंधेयव्व देखो **पडिबंध**=प्रति + बन्ध्।

पडिबद्ध वि [**प्रतिबद्ध**]१ रोका हुआ, संरुद्ध ; " वायुरिव अप्पडिबद्धे " (कप्प ; पण्ह १, ३)। २ उपजनित, उत्पादित ; (गउड १८२)। ३ संसक्त, संबद्ध, संलग्न ; " सरिआण तरंगिअपंकवडलपडिबद्धवालुआमलिणा......... पुलिणविरआण " (गउड ; कुम्र ११५ ; उत्त)। ४ सामने बँधा हुआ; " पडिबद्धं नवर तुन नरिंदचक्कं पयाववियडंपि" (गउड)। ५ व्यवस्थित ; (पंचा १३)। ६ वेष्टित; (गउड)। ७ समीप में स्थित ; " तं चेव य सागरियं जस्स अदूरे स पडिबद्धा " (बृह १)।

पडिबाह सक [**प्रति + बाध्**] रोकना। हेकृ —**पडिबाहिदुं** (शौ) ; (नाट—महावी ६६)।

पडिबाहिर वि [**प्रतिबाह्य**] अनधिकारी, अयोग्य; (सम ५०)।

पडिबिंब न [**प्रतिबिम्ब**] १ परछाँही, प्रतिच्छाया ; (सुपा २६६)। २ प्रतिमा, प्रतिमूर्ति ; (पाअ ; प्रासा)।

पडिबिंबिअ वि [**प्रतिबिम्बित**] जिसका प्रतिबिम्ब पड़ा हो वह ; (कुमा)।

पडिबुज्झ अक [**प्रति + बुध्**] १ बोध पाना। २ जागृत होना। पडिबुज्झइ ; (उवा)। वकृ—**पडिबुज्झंत, पडिबुज्झमाण** ; (कप्प)।

पडिबुज्झणया } स्त्री [**प्रतिबोधना**] १ बोध, समझ ;
पडिबुज्झणा } २ जागृति ; (स १५६ ; औप)।

पडिबुद्ध वि [**प्रतिबुद्ध**] १ बोध-प्राप्त ; (प्रासू १३५ ; उव)। २ जागृत ; (गाया १, १)। ३ न. प्रतिबोध; (आचा)। ४ पुं. एक राजा का नाम ; (गाया १, ८)।

पडिबूहणया स्त्री [**प्रतिबृंहणा**] उपचय, पुष्टि ; (सूअ २, २, ८)।

पडिबोध देखो **पडिबोह**=प्रतिबोध ; (नाट—मालती ५६)।

पडिबोधिअ देखो **पडिबोहिय** ; (अभि ५६)।

पडिबोह सक [**प्रति + बोधय्**] १ जगाना। २ बोध देना, समझाना, ज्ञान प्राप्त कराना। पडिबोहेइ ; (कप्प ; महा)। कवकृ —**पडिबोहिज्जंत** ; (अभि ५६)। संकृ —**पडिबोहिअ** ; (नाट—मालती १३६)। हेकृ— **पडिबोहिउं** ; (महा)। कृ—**पडिबोहियव्व** ; (स ७०७)।

पडिबोह पुं [**प्रतिबोध**] १ बोध, समझ ; २ जागृति, जागरण ; (गउड ; पि १७१)।

पडिबोहग वि [**प्रतिबोधक**] १ बोध देने वाला; २ जगाने वाला ; (विसे २४७ टी)।

पडिबोहण न [**प्रतिबोधन**] देखो **पडिबोह**=प्रतिबोध ; (काल ; स ७०८)।

पडिबोहि वि [**प्रतिबोधिन्**] प्रतिबोध प्राप्त करने वाला ; (आचा २, ३, १, ८)।

पडिबोहिय वि [**प्रतिबोधित**] जिसको प्रतिबोध किया गया हो वह ; (गाया १, १ ; काल)।

पडिभंग पुं [**प्रतिभङ्ग**] भङ्ग, विनाश ; (से ५, १६)।

पडिभंज अक [**प्रति + भञ्ज्**] भाँगना, टूटना। हेकृ— **पडिभंजिउं** ; (वव ४)।

पडिभंड न [**प्रतिभाण्ड**] एक वस्तु को बेच कर उसके बदले में खरीदी जाती चीज ; (स २०५ ; सुर ६, १५८)।

पडिभंस सक [**प्रति + भ्रंशय्**] भ्रष्ट करना, च्युत करना। " पंथाओ य पडिभंसइ " (स ३६३)।

पडिभग्ग वि [**प्रतिभग्न**] भागा हुआ, पलायित ; (ओघ ५३३)।

पडिभड पुं [**प्रतिभट**] प्रतिपक्षी योद्धा ; (से १३, ७२ ; आरा ५६ ; भवि)।

पडिभण सक [**प्रति+भण्**] उत्तर देना, जवाब देना। पडिभणइ ; (महा ; उवा ; सुपा २१५), पडिभणामि; (महानि ४)।

पडिभणिअ वि [**प्रतिभणित**] प्रत्युत्तरित, जिसका उत्तर दिया गया हो वह ; (महा ; सुपा ६०)।

पडिभम सक [**प्रति, परि+भ्रम्**] घूमना, पर्यटन करना। संकृ—" कत्थइ कडुआविय गयह पंति **पडिभमिय** सुहडसीसइँ दलंति " (भवि)।

पडिभमिय वि [**प्रतिभ्रान्त, परिभ्रान्त**] घूमा हुआ ; (भवि)।

पडिभय न [**प्रतिभय**] भय, डर ; (पउम ७३, १२)।

पडिभा अक [**प्रतिभा**] मालूम होना। पडिभादि (शौ); (नाट—रत्ना ३)।

पडिभाग पुं [**प्रतिभाग**] १ अंश, भाग; (भग २५, ७)। २ प्रतिबिम्ब ; (राज)।

पडिभास अक [**प्रति+भास्**] मालूम होना। पडिभासदि (शौ); (नाट—पृच्छ १४१)।

पडिभास सक [**प्रति+भाष्**] १ उत्तर देना। २ बोलना, कहना। " अप्पेगे पडिभासंति " (सूअ १, ३, १, ६)।

पडिभिण्ण वि [**प्रतिभिन्न**] संबद्ध, संलग्न ; (से ४, ५)।

पडिभू पुं [**प्रतिभू**] जामिनदार, मनौतिया ; (नाट-चैत ७५)।

पडिभेअ पुं [**दे. प्रतिभेद**] उपालम्भ ; " पडिभेओ पच्चारणं " (पाअ)।

पडिभोइ वि [**प्रतिभोगिन्**] परिभोग करने वाला; "अकाल-पडिभोईणि " (आचा २, ३, १, ८ ; पि ४०५)।

पडिम° देखो **पडिमा**। °**ट्ठाइ** वि [**°स्थायिन्**] १ कायोत्सर्ग में रहने वाला ; २ नियम-विशेष में स्थित ; (पण्ह २, १—पत्र १०० ; ठा ५, १—पत्र २९६)।

पडिमल्ल पुं [**प्रतिमल्ल**] प्रतिपक्षी मल्ल ; (भवि)।

पडिमा स्त्री [**प्रतिमा**] १ मूर्ति, प्रतिबिम्ब ; " जिणपडिमादंसणेण पडिबुद्धं " (दसनि १ ; पाअ ; गा १ ; ११४)। २ कायोत्सर्ग ; ३ जैन-शास्त्रोक्त नियम-विशेष ; (पण्ह २,१; सम १९ ; ठा २, ३; ५, १)। °**गिह** न [**गृह**] मन्दिर ; (निवू १२)। देखो **पडिम**।

पडिमाण न [**प्रतिमान**] जिससे सुवर्ण आदि का तौल किया जाता है वह रत्ती, मासा आदि परिमाण ; (अणु)।

पडिमि } सक [**प्रति+मा**] १ तौल करना, माप करना। **पडिमिण** } २ गिनती करना। कर्म —पडिमिणिज्जइ; (अणु)। कवकृ **पडिमिज्जमाण** ; (राज)।

पडिमुंच सक [**प्रति+मुच्**] छोड़ना। हेकृ—**पडिमुंचिउं**; (से १४, २)।

पडिमुंडणा स्त्री [**प्रतिमुण्डना**] निषेध, निवारण ; (बृह १)।

पडिमुक्क वि [**प्रतिमुक्त**] छोड़ा हुआ ; (से ३, १२)।

पडिमोअणा स्त्री [**प्रतिमोचना**] छुटकारा ; (से १,४६)।

पडिमोक्खण न [**प्रतिमोचन**] छुटकारा ; (स ४१)।

पडिमोयग वि [**प्रतिमोचक**] छुटकारा करने वाला ; (राज)।

पडिमोयण देखो **पडिमोक्खण** ; (औप)।

पडियक्क देखो **पडिक्क** ; (आचा)।

पडियक्क न [**प्रतिचक्र**] युद्ध-कला विशेष ; " तेण पुणो विव निप्फाइतो ईसत्थे पडियक्के जन्तमुक्के य अन्नासुवि कलासु " (महा)।

पडियच्च देखो **पत्तिअ**=प्रति+इ।

पडिया स्त्री [**प्रतिज्ञा**] १ उद्देश ; " पिंडवायपडियाए " (कप्प ; आचा)। २ अभिप्राय; (ठा ५, २—पत्र ३१४)।

पडिया स्त्री [**पटिका**] वस्त्र-विशेष ;
" सुपमाणा य सुसुत्ता, बहुरूवा तह य कोमला सिसिरे।
कंतो पुण्णेहि विणा, वेसा पडियव्व संपडइ " (वज्जा ११६)।

पडियाइक्ख सक [**प्रत्या+ख्या**] त्याग करना। पडियाइक्खे ; (पि १६६)।

पडियाइक्खिय वि [**प्रत्याख्यात**] त्यक्त, परित्यक्त ; (ठा २, १ ; भग ; उवा ; कप्प ; विपा १, १ ; औप)।

पडियाणय न [**दे. पर्याणक**] पर्याण के नीचे दिया जाता चर्म आदि का एक उपकरण ; (णाया १, १७—पत्र २३०)।

पडियाणंद पुं [**प्रत्यानन्द**] विशेष आनन्द, प्रभूत आह्लाद; (औप)।

पडियाणय न [**दे. पटतानक, पर्याणक**] पर्याण के नीचे रखा जाता वस्त्र आदि का एक घुड़सवारी का उपकरण ; (णाया १, १७—पत्र २३२ टी)।

पडिर वि [**पतितृ**] गिरने वाला ; (कुमा)।

पडिरअ देखो **पडिरव** ; (गा ५५ अ ; से ९, १६)।

पडिरंजिअ वि [**दे**] भग्न, टूटा हुआ ; (दे ६, ३२) ।
पडिरक्खिय वि [**प्रतिरक्षित**] जिसकी रक्षा की गई हो वह ; (भवि) ।
पडिरव पुं [**प्रतिरव**] प्रतिध्वनि, प्रतिशब्द ; (गउड ; गा ५५ ; सुर १, २४४) ।
पडिराय पुं [**प्रतिराग**] लाली, रक्तपन ;
" उव्वहइ दइयगहियाहरोट्ठभिज्जंतरोसपडिरायं ।
पाणोसरंतमइरं व फलिहचसयं इमा वयणं " (गउड) ।
पडिरिंगअ [**दे**] देखो **पडिरंजिअ** ; (षड्) ।
पडिरु सक [**प्रति + रु**] प्रतिध्वनि करना , प्रतिशब्द करना । वकृ—**पडिरुअंत** ; (से १२, ६ ; पि ४७३) ।
पडिरुंध } सक [**प्रति + रुध्**] १ रोकना, अटकाना ।
पडिरुंभ } २ व्याप्त करना । पडिरुंभइ ; (से ८, ३६) । वकृ—**पडिरुंधंत** ; (से ११, ५) ।
पडिरुद्ध वि [**प्रतिरुद्ध**] रोका हुआ, अटकाया हुआ; (सुपा ८५ ; वज्जा ५०) ।
पडिरूअ } वि [**प्रतिरूप**] १ रम्य, सुन्दर, चारु, मनोहर ;
पडिरूव } (सम १३७ ; उवा ; औप) । २ रूपवान्, प्रशस्त रूप वाला, श्रेष्ठ आकृति वाला ; (औप) । ३ असाधारण रूप वाला ; ४ नूतन रूप वाला ; (जीव ३) । ५ योग्य, उचित ; (स ८७ ; भग १५ ; दस ६, १) । ६ सदृश, [illegible] ; (गाया १,१—पत्र ६१) । ७ समान रूप वाला, सदृ[illegible]ाकार वाला ; (उत्त २६, ४२) । ८ न. प्रतिबिम्ब, प्र[illegible]ति ; " कइयावि चित्तफलए कइया वि पडम्मि तस्स पडिरू[illegible] लहिऊण " (सुर ११, २३८ ; गय) । ९ समान रूप, समान आकृति ; " तुम्हपडिरूवधारिं पासइ विज्जाहरसुदाढं " (सुपा २६८) । १० पुं. इन्द्र-विशेष , भूत-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३ —पत्र ८५) । ११ विनय का एक भेद ; (वव १) ।
पडिरूवा स्त्री [**प्रतिरू**[illegible]] एक कुलकर पुरुष की पत्नी का नाम ; (सम १५०) ।
पडिरोव पुं [**प्र**[illegible]**प**] पुनरारोपण ; (कुप्र ५५) ।
पडिरोह पुं [[illegible] **रोध**] रुकावट ; (गउड ; गा ७२४) ।
पडिरोहि वि [**प्रतिरोधिन्**] रोकने वाला ; (गउड) ।
पडिलंभ सक [**प्रति + लभ्**] प्राप्त करना । संकृ—**पडिलंभिय** ; (सूअ १, १३) ।
पडिलंभ पुं [**प्रतिलम्भ**] प्राप्ति, लाभ ; (सूअ २, ५) ।
पडिलग्ग वि [**प्रतिलग्न**] लगा हुआ, संबद्ध ; (से ६, ८६) ।
पडिलग्गल न [ ] वल्मीक, कीट-विशेष-कृत मृत्तिका-स्तूप ; (दे ६, ३३) ।
पडिलाभ } सक [**प्रति + लाभय् , लम्भय्**] साधु आदि
पडिलाह } को दान देना । पडिलाहिज्जह ; (काल) । वकृ—**पडिलाभेमाण** ; (गाया १, ५ ; भग ; उवा) । संकृ—**पडिलाभित्ता** ; (भग ८, ५) ।
पडिलाहण न [**प्रतिलाभन**] दान, देना ; (रंभा) ।
पडिलिहिअ वि [**प्रतिलिखित**] लिखा हुआ ; "सम्मं मंतं दुवारि पडिलिहिअं" (ति १४) ।
पडिलेह सक [**प्रति + लेखय्**] १ निरीक्षण करना, देखना । २ विचार करना । पडिलेहइ ; (उव ; कम ; भग) । "एतं नु जाणे पडिलेह सायं, एतेण काएण य आय-दंडे" (सूअ १, ७, २) । संकृ—"भूएहिं जाणं **पडिलेह** सायं" (सूअ १, ७, १६), **पडिलेहित्ता** ; (भग) । हेकृ—**पडिलेहित्तए, पडिलेहेत्तए** ; (कप्प) । कृ—**पडिलेहियव्व** ; (ओघ ४ ; कप्प) ।
पडिलेहग देखो **पडिलेहय** ; (राज) ।
पडिलेहण न [**प्रतिलेखन**] निरीक्षण ; (ओघ ३ भा ; अंत) ।
पडिलेहणा स्त्री [**प्रतिलेखना**] निरीक्षण, निरूपण ; (भग) ।
पडिलेहय वि [**प्रतिलेखक**] निरीक्षक, देखने वाला ; (ओघ ४) ।
पडिलेहा स्त्री [**प्रतिलेखा**] निरीक्षण, अवलोकन ; (ओघ ३ ; ठा ५, ३ ; कप्प) ।
पडिलेहिय वि [**प्रतिलेखित**] निरीक्षित ; (उवा) ।
पडिलेहियव्व देखो **पडिलेह** ।
पडिलोम वि [**प्रतिलोम**] १ प्रतिकूल ; (भग) । २ विपरीत, उल्टा ; (आचा २, २, २) । ३ न. पश्चानुपूर्वी, उल्टा क्रम ; "वत्थं दुहाणुलोमेण तह य पडिलोमओ भवे वत्थं" (सुर १६, ४८ ; निचू १) । ४ उदाहरण का एक दोष ; (दसनि १) । ५ अपवाद ; (राज) ।
पडिलोमइत्ता अ [**प्रतिलोमयित्वा**] वाद-विशेष, वाद-सभा के सदस्य या प्रतिवादी को प्रतिकूल बनाकर किया जाता वाद[illegible]शास्त्रार्थ ; (ठा ६) ।
पडिल्ली स्त्री [**दे**] १ वृति, बाड़ ; २ यवनिका, पर्दा; (दे ६, ६५) ।
पडिव देखो **पलीव**=प्र + दीपय् । पडिवेइ ; (से ५, ६७) ।

पडिवइर न [**प्रतिवैर**] वैर का बदला ; (भवि)।

पडिवंचण न [**प्रतिवञ्चन**] बदला ; "वेरपडिवंचणट्ठं" (पउम २६, ७३)।

पडिवंथ देखो **पडिपंथ** ; (से २, ४६)।

पडिवंध देखो **पडिबंध** ; (भवि)।

पडिवंस पुं [**प्रतिवंश**] छोटा वाँस ; (राय)।

पडिवक्क सक [**प्रति + वच्**] प्रत्युत्तर देना, जवाब देना। पडिवक्कइ ; (भवि)।

पडिवक्ख पुं [**प्रतिपक्ष**] १ रिपु, दुश्मन, विरोधी ; (पाअ ; गा १५२ ; सुर १, ५६ ; २, १२६ ; से ३, १५)। २ छन्द-विशेष ; (पिंग) । ३ विपर्यय, वैपरीत्य ; (सण)।

पडिवक्खिय वि [**प्रतिपक्षिक**] विरुद्ध पक्ष वाला, विरोधी, (सण)।

पडिवच्च सक [**प्रति + व्रज्**] वापिस जाना। पडिवच्चइ ; (पि ५६०)।

पडिवच्छ देखो **पडिवक्ख** ; "अह णाअरअस्स दोसा पडिवच्छेहिंपि पडिवण्णा" (गा ६७६)।

पडिवज्ज सक [**प्रति + पद्**] स्वीकार करना, अंगीकार करना। पडिवज्जइ, पडिवज्जए ; (उव ; महा ; प्रासू १४१)। भवि -पडिवज्जिस्सामि, पडिवज्जिस्सामो ; (पि ५२७ ; औप)। वकृ —**पडिवज्जमाण** ; (पि ५६२)। संकृ **पडिवज्जिऊण, पडिवज्जित्ताणं, पडिवज्जिय** ; (पि ५८६ ; ५८३ ; महा; रंभा)। हेकृ **पडिवज्जिउं, पडिवज्जित्तए, पडिवत्तुं** ; (पंचा १८; ठा २, १, कस ; रंभा)। कृ -**पडिवज्जियव्व, पडिवज्जेयव्व** ; (उत्त ३२ ; उप ६८४ ; १००१)।

पडिवज्जण न [**प्रतिपदन**] स्वीकार, अंगीकार ; (कुप्र १४७)।

पडिवज्जण न [**प्रतिपादन**] अंगीकारण, स्वीकार कराना ; (कुप्र १४७ ; ३८६)।

पडिवज्जय वि [**प्रतिपादक**] स्वीकार करने वाला ; "एस ताव कसणधवलपडिवज्जओ त्ति" (स ५०५)।

पडिवज्जावण न [**प्रतिपादन**] स्वीकारण, स्वीकार कराना ; (कुप्र ६६)।

पडिवज्जाविय वि [**प्रतिपादित**] स्वीकार कराया हुआ ; (महा)।

पडिवज्जिय वि [**प्रतिपन्न**] स्वीकृत ; (भवि)।

पडिवट्टअ न [**प्रतिपट्टक**] एक जात का रेशमी कपड़ा ;(कप्पू)।

पडिवड्ढावअ वि [**प्रतिवर्धापक**] १ बधाई देने पर उसे स्वीकार कर धन्यवाद देने वाला ; २ बधाई के बदले में बधाई देने वाला। स्त्री—°**विआ** ; (कप्पू)।

पडिवण्ण वि [**प्रतिपन्न**] १ प्राप्त ; (भग)। २ स्वीकृत, अंगीकृत ; (षड्)। ३ आश्रित ; (औप ; ठा ७)। ४ जिसने स्वीकार किया हो वह ; (ठा ४, १)।

पडिवत्त पुं [**परिवर्त**] परिवर्तन ; (नाट—मृच्छ ३१८)।

पडिवत्तण देखो **पडिअत्तण** ; (नाट)।

पडिवत्ति स्त्री [**प्रतिपत्ति**] १ परिच्छित्ति ; २ प्रकृति, प्रकार ; (विसे ५७८)। ३ प्रवृत्ति, खबर ; (पउम ४७, ३० ; ३१)। ४ ज्ञान ; (सुर १४, ७४)। ५ आदर, गौरव ; (महा)। ६ स्वीकार, अंगीकार ; (सांदि)। ७ लाभ, प्राप्ति ; "धम्मपडिवत्तिहेउत्तणेण" (महा)। ८ मतान्तर ; ६ अभिग्रह-विशेष ; (सम १०६)। १० भक्ति, सेवा ; (कुमा ; महा)। ११ परिपाटी, क्रम ; (आव ४)। १२ श्रुत-विशेष, गति, इन्द्रिय आदि द्वारों में से किसी एक द्वार के जरिये समस्त संसार के जीवों को जानना ; (कम्म १, ७)। °**समास** पुं [°**समास**] श्रुत-ज्ञान विशेष—गति आदि दो चार द्वारों के जरिये जीवों का ज्ञान ; (कम्म १, ७)।

पडिवत्तु देखो **पडिवज्ज**।

पडिवद्दि देखो **पडिवत्ति** ; (प्राप्र)।

पडिवद्धावअ देखो **पडिवड्ढावअ**। स्त्री—°**विआ** ; (रंभा)।

पडिवन्न देखो **पडिवण्ण** ; "पडिवन्नपालणे सुपुरिसाण जं होइ तं होउ" (प्रासू ३ ; णाया १, ५ ; उवा ; सुर ४, ५७ ; स ६५६ ; हे २, २०६ ; पाअ)।

पडिवन्निय (अप) देखो **पडिवण्ण** ; (भवि)।

पडिवय अक [**प्रति + पत्**] ऊँचे जाकर गिरना। वकृ - **पडिवयमाण** ; (आचा)।

पडिवयण न [**प्रतिवचन**] १ प्रत्युत्तर, जवाब ; (गा ४१६ ; सुर २, १२३ ; सुपा १४३ ; भवि)। २ आदेश, आज्ञा ; "देहि मे पडिवयणं" (आवम)। ३ पुं. हरिवंश के एक राजा का नाम ; (पउम २२, ६७)।

पडिवया स्त्री [**प्रतिपत्**] पडवा, पक्ष की पहली तिथि ; (हे १, ४४ ; २०६ ; षड्)।

पडिवविय वि [**प्रत्युप्त**] फिर से बोया हुआ ; (दे ६, १३)।

पडिवस अक [**प्रति + वस्**] निवास करना । वकृ—**पडि-वसंत** ; (पि ३९७ ; नाट—मृच्छ ३२१) ।

पडिवह सक [**प्रति + वह्**] वहन करना, ढोना । कवकृ — **पडिवुज्झमाण** ; (कप्प) ।

पडिवह देखो **पडिपह** ; (से ३, २४ ; ८, ३३ ; पउम ७३, २४) ।

पडिवह पुं [**प्रतिवध, परिवध**] वध, हत्या ; (पउम ७३, २४) ।

पडिवाइ वि [**प्रतिवादिन्**] प्रतिवाद करने वाला, वादी का विपक्षी ; (भवि ४१, ३) ।

पडिवाइ वि [**प्रतिपादिन्**] प्रतिपादन करने वाला ; (भवि ४१, ३) ।

पडिवाइ वि [**प्रतिपातिन्**] १ विनश्वर, नष्ट होने के स्व-भाव वाला ; (ठा २, १ ; ओघ ५३२ ; उप पृ ३५८) । २ अवधिज्ञान का एक भेद, फूंक से दीपक के प्रकाश के समान यकायक नष्ट होने वाला अवधिज्ञान ; (ठा ६ ; कम्म १, ८) ।

पडिवाइअ वि [**प्रतिपातित**] १ फिर से गिराया हुआ ; २ नष्ट किया हुआ ; (भवि) ।

पडिवाइअ वि [**प्रतिपादित**] जिसका प्रतिपादन किया गया हो वह, निरूपित ; (अच्चु ५ ; स ४६ ; ५४३) ।

पडिवाइअ वि [**प्रतिवाचित**] १ लिखने के बाद पढ़ा हुआ ; २ फिर से बाँचा हुआ ; (कुप्र १६७) ।

पडिवाइऊण } देखो **पडिवाय**=प्रति + वाचय् ।
पडिवाइयव्व }

पडिवाडि देखो **परिवाडि** ; (गा ५३०) ।

पडिवाद (शौ) सक [**प्रति + पादय्**] प्रतिपादन करना, निरूपण करना । पडिवादेदि ; (नाट—रत्ना ५७) । कृ—**पडिवादणिज्ज** ; (अभि ११७) ।

पडिवादय वि [**प्रतिपादक**] प्रतिपादन करने वाला । स्त्री—°**दिआ** ; (नाट—चैत ३४) ।

पडिवाय सक [**प्रति + वाचय्**] १ लिखने के बाद उसे पढ़ लेना । २ फिर से पढ़ लेना । संकृ—**पडिवाइऊण** ; कुप्र १६७) । कृ—**पडिवाइयव्व** ; (कुप्र १६७) ।

पडिवाय पुं [**प्रतिपात**] १ पुनः-पतन, फिर से गिरना ; (नव ३६) । २ नाश, ध्वंस ; (विसे ५७७) ।

पडिवाय पुं [**प्रतिवाद**] विरोध ; (भवि) ।

पडिवाय पुं [**प्रतिवात**] प्रतिकूल पवन ; (आवम) ।

पडिवायण न [**प्रतिपादन**] निरूपण ; (कुप्र ११६) ।

पडिवारय देखो **परिवार** ; "पडिवारयपरियरिओ" (महा) ।

पडिवाल सक [**प्रति + पालय्**] १ प्रतीक्षा करना, बाट जोहना । २ रक्षण करना । पडिवालेइ ; (हे ४, २५९) । पडिवालेदु (शौ) ; (स्वप्न १००) । पडिवालह ; (अभि १८५) । वकृ—**पडिवालअंत, पडि-वालेमाण** ; (नाट—रत्ना ४८ ; णाया १, ३) ।

पडिवालण न [**प्रतिपालन**] १ रक्षण ; २ प्रतीक्षा, बाट ; (नाट—महा ११८ ; उप ९९९) ।

पडिवालिअ वि [**प्रतिपालित**] १ रक्षित । २ प्रतीक्षित, जिसकी बाट देखी गई हो वह ; (महा) ।

पडिवास पुं [**प्रतिवास**] औषध आदि को विशेष उत्कट बनाने वाला चूर्ण आदि ; (उर ८, ५ ; सुपा ६७) ।

पडिवासर न [**प्रतिवासर**] प्रतिदिन, हर रोज ; (गउड) ।

पडिवासुदेव पुं [**प्रतिवासुदेव**] वासुदेव का प्रतिपक्षी राजा ; (पउम २०, २०२) ।

पडिविक्किण सक [**प्रतिवि + क्री**] बेचना । पडिविक्कि-णइ ; (आक ३३ ; पि ५११) ।

पडिवित्थर पुं [**प्रतिविस्तर**] परिकर, विस्तार ; (सूअ २, २, ६२ टी ; राज) ।

पडिविद्धंसण न [**प्रतिविध्वंसन**] विनाश, ध्वंस ; (राज)।

पडिविप्पिय न [**प्रतिविप्रिय**] अपकार का बदला, बदले के रूप में किया जाता अनिष्ट ; (महा) ।

पडिविरइ स्त्री [**प्रतिविरति**] निवृत्ति ; (पण्ह २, ३) ।

पडिविरय वि [**प्रतिविरत**] निवृत्त ; (सम ५१ ; सूअ २, २, ७५ ; औप ; उव) ।

पडिविसज्ज सक [**प्रतिवि + सर्जय्**] विसर्जन करना, विदाय करना । पडिविसज्जेइ ; (कप्प ; औप) । भवि—पडिविसज्जेहिंति ; (औप) ।

पडिविसज्जिय वि [**प्रतिविसर्जित**] विदाय किया हुआ, विसर्जित ; (णाया १, १ - पत्र ३०) ।

पडिविहाण न [**प्रतिविधान**] प्रतीकार ; (स ५६७) ।

पडिवुज्झमाण देखो **पडिवह**=प्रति + वह् ।

पडिवुत्त वि [**प्रत्युक्त**] १ जिसका उत्तर दिया गया हो वह ; (अनु ३ ; उप ७२८ टी) । २ न. प्रत्युत्तर ; (उप ७२८ टी) ।

पडिवुद (शौ) वि [**परिवृत**] परिवेष्टित ; (अभि ५७ ; नाट—मृच्छ २०५) ।

पडिवूह पुं [**प्रतिव्यूह**] व्यूह का प्रतिपक्षी व्यूह, सैन्य-रचना-विशेष ; (औप) ।

पडिवूहण वि [**प्रतिबृंहण**] १ बढ़ने वाला ; (आचा १, २, ५, ५) । २ न वृद्धि, पुष्टि ; (आचा १, २, ५, ४) ।

पडिवेल पुं [**दे**] विक्षेप, फेंकना ; (दे ६, २१) ।

पडिवेसिअ वि [**प्रातिवेश्मिक**] पड़ोसी, पड़ोस में रहने वाला ; (दे ६, ३ ; सुपा ५५२) ।

पडिवोह देखो **पडिबोह** ; (सण) ।

पडिसंका स्त्री [**प्रतिशङ्का**] भय, शंका; (पउम ६७,१५)।

पडिसंखा सक [**प्रतिसं + ख्या**] व्यवहार करना, व्यपदेश करना । पडिसंखाए ; (आचा) ।

पडिसंखिव सक [**प्रतिसं + क्षिप्**] संक्षेप करना । संकृ —**पडिसंखिविय** ; (भग १४, ७) ।

पडिसंचिक्ख सक [**प्रतिसम् + ईक्ष्**] चिन्तन करना । पडिसंचिक्खे ; (उत्त २, ३०) ।

पडिसंजल सक [**प्रतिसं + ज्वालय्**] उद्दीपित करना । पडिसंजलेज्जासि ; (आचा) ।

पडिसंत वि [**परिशान्त**] शान्त, उपशान्त ; (से ६, ६१) ।

पडिसंत वि [**प्रतिश्रान्त**] विश्रान्त ; (बृह १) ।

पडिसंत वि [**दे**] १ प्रतिकूल ; २ अस्तमित, अस्त-प्राप्त ; (दे ६, १६) ।

पडिसंध } सक [**प्रतिसं + धा**] १ आदर करना ।
पडिसंधा } २ स्वीकार करना । पडिसंधए ; (पच्च ७) । संकृ —**पडिसंधाय** ; (सूअ २, २, ३१ ; ३२ ; ३३ ; ३४; ३५) ।

पडिसंमुह न [**प्रतिसंमुख**] संमुख, सामने ; "गओ पडि-संमुहं पउजोयस्स" (महा) ।

पडिसंलाव पुं [**प्रतिसंलाप**] प्रत्युत्तर, जवाब ; (सं १, २६ ; ११, ३४) ।

पडिसंलीण वि [**प्रतिसंलीन**] १ सम्यक् लीन, अच्छी तरह लीन ; २ निरोध करने वाला ; (ठा ४, २ ; औप) ।

'**पडिया** स्त्री ['**प्रतिमा**] क्रोध आदि के निरोध करने की प्रतिज्ञा ; (औप) ।

पडिसंवेद } सक [**प्रतिसं + वेदय्**] अनुभव करना ।
पडिसंवेय } पडिसंवेदेइ, पडिसंवेययंति ; (भग ; पि ४९०) ।

पडिसंसाहणया स्त्री [**प्रतिसंसाधना**] अनुव्रजन, अनु-गमन ; (औप ; भग १४, ३ ; २५, ७) ।

पडिसंहर सक [**प्रतिसं + हृ**] १ निवृत्त करना ; २ निरोध करना । पडिसंहरेज्जा ; (सूअ १, ७, २०) ।

पडिसक्क देखो **परिसक्क** । पडिसक्कइ ; (भवि) ।

पडिसडण न [**प्रतिशदन, परिशदन**] १ सड़ जाना ; २ विनाश; "निरन्तरपडिसडणसीलाणि आउदलाणि" (काल) ।

पडिसत्तु पुं [**प्रतिशत्रु**] प्रतिपक्षी, दुश्मन, वैरी ; (सम १५३ ; पउम ५, १५६) ।

पडिसत्थ पुं [**प्रतिसार्थ**] प्रतिकूल यूथ ; (निचू ११) ।

पडिसद्द पुं [**प्रतिशब्द**] १ प्रतिध्वनि ; (पउम १६, ५३ ; भवि) । २ उत्तर, प्रत्युत्तर, जवाब ; (पउम ८, ३५) ।

पडिसम अक [**प्रति + शम्**] विरत होना । पडिसमइ ; (से ६, ४४) ।

पडिसर पुं [**प्रतिसर**] १ सैन्य का पश्चाद्भाग ; (प्राप्र) । २ हस्त-सूत्र, कंकण ; (धर्म २) ।

पडिसलागा स्त्री [**प्रतिशलाका**] पल्य-विशेष; (कम्म ४, ७३) ।

पडिसव सक [**प्रति + शप्**] शाप के बदले में शाप देना । "अहमाहओ त्ति न य पडिहणंति सत्तावि न य पडिसवंति" (उव) ।

पडिसव सक [**प्रति + श्रु**] १ प्रतिज्ञा करना । २ स्वीकार करना । ३ आदर करना । कृ—**पडिसवणीय** ; (सण) ।

पडिसा अक [**शम्**] शान्त होना । पडिसाइ; (हे ४, १६७) ।

पडिसा अक [**नश्**] भागना, पलायन करना । पडिसाइ, पडिसंति ; (हे ४, १७८ ; कुमा) ।

पडिसाइल्ल वि [**दे**] जिसका गला बैठ गया हो, घर्घर कण्ठ वाला ; (दे ६, १७) ।

पडिसाड सक [**प्रति + शादय्, परिश॰॰य्**] १ सड़ाना । २ पलटाना । ३ नाश करना । पडिसाडेंति ; (आचा २, १५, १८) । संकृ —**पडिसाडित्ता**; (आचा २,१५, १८) ।

पडिसाडणा स्त्री [**परिशाटना**] च्युत करना, भ्रष्ट करना ; (वव १) ।

पडिसाम अक [**शम्**] शान्त होना । पडिसामइ ; (हे ४, १६७ ; षड्) ।

पडिसाय वि [**शान्त**] शान्त, शम-प्राप्त ; (कुमा) ।

पडिसाय पुं [**दे**] घर्घर कण्ठ, बैठा हुआ गला ; (दे ६, १७) ।

पडिसार सक [प्रतिस्मारय्] याद दिलाना। पडिसारेउ ; (भग १५)।

पडिसार सक [प्रति+सारय्] सजाना, सजावट करना। पडिसारेदि (शौ), कर्म —पडिसारीअदि (शौ); (कप्पू)।

पडिसार पुं [दे] १ पटुता; २ वि. निपुण, पटु; (दे ६, १६)।

पडिसार पुं [प्रतिसार] १ सजावट; २ अपसरण; ३ विनाश; ४ पराङ्मुखता; (हे १, २०६; दे ६, ७६)।

पडिसारणा स्त्री [प्रतिस्मारणा] संस्मारण; (भग १५)।

पडिसारिअ वि [दे] स्मृत, याद किया हुआ; (दे ६, ३३)।

पडिसारिअ वि [प्रतिसारित] १ दूर किया हुआ, अपसारित; (से ११, १)। २ विनाशित; (से १४, ५८)। ३ पराङ्मुख; (से १३, ३२)।

पडिसारी स्त्री [दे] जवनिका, परदा; (दे ६, २२)।

पडिसाह सक [प्रति+कथ्] उत्तर देना। पडिसाहिज्जा; (सूअ १, ११, ४)।

पडिसाहर सक [प्रतिसं+हृ] १ संकलना, समेटना। २ वापिस ले लेना। ३ ऊँचे ले जाना। पडिसाहरइ; (औप; णाया १, १ पत्र ३३)। संकृ **पडिसाहरित्ता, पडिसाहरिय**; (णाया १, १; भग १४, ७)।

पडिसाहरणा न [प्रतिसंहरण] १ समेट, संकोच; २ विनाश; "सीयतेयलेस्सापडिसाहरणट्ठयाए" (भग १५—पत्र ६६६)।

पडिसिद्ध वि [दे] १ भीत, डरा हुआ; २ भग्न, त्रुटित; (दे ६, ७१)।

पडिसिद्ध वि [प्रतिषिद्ध] निषिद्ध, निवारित; (पाअ; उव; ओघ १ टी; सण)।

पडिसिद्धि स्त्री [दे] प्रतिस्पर्धा; (षड्)।

पडिसिद्धि स्त्री [प्रतिसिद्धि] १ अनुरूप सिद्धि; २ प्रतिकूल सिद्धि; (हे १, ४४; षड्)।

पडिसिद्धि देखो **पडिप्फद्धि**; (संक्षि १६)।

पडिसिविणअ पुं [प्रतिस्वप्नक] एक स्वप्न का विरोधी स्वप्न, स्वप्न का प्रतिकूल स्वप्न; (कप्प)।

पडिसीसअ, **पडिसीसक** न [प्रतिशीर्षक] १ कृत्रिम मुँह, मुँह का परदा; (कप्प)। २ सिर के प्रतिरूप सिर, पिष्टान्न आदि का बनाया हुआ सिर; (पण्ह १, २—पत्र ३०)।

पडिसुइ पुं [प्रतिश्रुति] १ ऐरवत वर्ष के एक भावी कुलकर; (सम १५३)। २ भरतक्षेत्र में उत्पन्न एक कुलकर पुरुष का नाम; (पउम ३, ५०)।

पडिसुण सक [प्रति+श्रु] १ प्रतिज्ञा करना। २ स्वीकार करना। पडिसुणइ, पडिसुणेइ; (औप; कप्प; उवा)। वकृ **पडिसुणमाण**; (वव १; पि ५०३)। संकृ—**पडिसुणित्ता, पडिसुणेत्ता**; (आव ४; कप्प)। हेकृ— **पडिसुणेत्तए**; (पि ५७८)।

पडिसुणण न [प्रतिश्रवण] अंगीकार; (उप ४६३)।

पडिसुणणा स्त्री [प्रतिश्रवण] १ अंगीकार, स्वीकार; २ मुनि-भिक्षा का एक दोष, आधाकर्म-दोष वाली भिक्षा लाने पर उसका स्वीकार और अनुमोदन; (धर्म ३)।

पडिसुण्ण वि [प्रतिशून्य] खाली, रिक्त, शून्य; "नय निलया निच्चपडिसुण्णा" (ठा १ टी—पत्र २६)।

पडिसुत्ति वि [दे] प्रतिकूल; (दे ६, १८)।

पडिसुय वि [प्रतिश्रुत] १ स्वीकृत, अंगीकृत; (उप पृ १८४)। २ न. अंगीकार, स्वीकार; (उत्त २६)। देखो **पडिस्सुय**।

पडिसुया देखो **पडंसुआ**=प्रतिश्रुत; (पण्ह १, १—पत्र १८)।

पडिसुया स्त्री [प्रतिश्रुता] प्रव्रज्या-विशेष, एक प्रकार की दीक्षा; (ठा १० टी—पत्र ४७४)।

पडिसुहड पुं [प्रतिसुभट] प्रतिपक्षी योद्धा; (काल)।

पडिसूयग पुं [प्रतिसूचक] गुप्त चरों की एक श्रेणी, नगर-द्वार पर रहने वाला जासूस; (वव १)।

पडिसूर वि [दे] प्रतिकूल; (दे ६, १६; भवि)।

पडिसूर पुं [प्रतिसूर्य] इन्द्र-धनुष; (राज)।

पडिसेज्जा स्त्री [प्रतिशय्या] शय्या-विशेष, उत्तर-शय्या; (भग ११, ११; पि १०१)।

पडिसेव सक [प्रति+सेव्] १ प्रतिकूल सेवा करना, निषिद्ध वस्तु की सेवा करना। २ सहन करना। ३ सेवा करना। **पडिसेवइ**, पडिसेवए, पडिसेवंति; (कप्प; वव ३; उव)। वकृ **पडिसेवंत, पडिसेवमाण**; (पंचृ ५; सम ३६; पि १७), "पडिसेवमाणो फरुसाइं अचले भगवं रीइत्था" (आचा)। कृ **पडिसेवियव्व**; (वव १)।

पडिसेवग देखो **पडिसेवय**; (निचू १)।

पडिसेवण न [प्रतिषेवण] निषिद्ध वस्तु का सेवन; (कस)।

पडिसेवणा स्त्री [प्रतिषेवणा] ऊपर देखो; (भग २५, ७; उव; ओघ २)।

पडिसेवय वि [प्रतिषेवक] प्रतिकूल सेवा करने वाला, निषिद्ध वस्तु का सेवन करने वाला; (भग २५, ७)।

पडिसेवा स्त्री [**प्रतिषेवा**] १ निषिद्ध वस्तु का आसेवन ; (उप ८०१)। २ सेवा ; (कुप्र ५२)।
पडिसेवि वि [**प्रतिषेविन्**] शास्त्र-प्रतिषिद्ध वस्तु का सेवन करने वाला; (उव; पउम ५, २८)।
पडिसेविअ वि [**प्रतिषेवित**] जिस निषिद्ध वस्तु का आसेवन किया गया हो वह ;(कप्प ; औप) ।
पडिसेवेत्तु वि [**प्रतिषेवितृ**] प्रतिषिद्ध वस्तु की सेवा करने वाला ; (ठा ७)।
पडिसेह सक [**प्रति+सिध्**] निषेध करना, निवारण करना। कृ --**पडिसेहेअव्व** ; (भग)।
पडिसेह पुं [**प्रतिषेध**] निषेध, निवारण, रोक ; (ओघ ६ भा ; पंचा ६)।
पडिसेहण न [**प्रतिषेधन**] ऊपर देखो; (विसे २७५१ ; श्रा २७)।
पडिसेहिय वि [**प्रतिषेधित**] जिसका प्रतिषेध किया गया हो वह, निवारित ; (विपा १, ३) ।
पडिसेहेअव्व देखो **पडिसेह**=प्रति+सिध् ।
पडिसोअ } पुं [**प्रतिस्रोतस्**] प्रतिकूल प्रवाह, उलटा
पडिसोत्त } प्रवाह ; (ठा ४, ४; हे २, ६८; उप २५२; पि ६१)।
पडिसोत्त वि [**दे**] प्रतिकूल ; (षड्)।
पडिस्संत देखो **परिस्संत** ; (नाट मृच्छ १८८)।
पडिस्संति स्त्री [**परिश्रान्ति**] परिश्रम ; (नाट मृच्छ ३२१)।
पडिस्सय पुं [**प्रतिश्रय**] जैन साधुओं को रहने का स्थान, उपाश्रय ; (ओघ ८७ भा ; उप ५७१ ; स ६८७)।
पडिस्साव सक [**प्रति+श्रावय्**] १ प्रतिज्ञा कराना। २ स्वीकार कराना। वकृ -**पडिस्सावअन्त**; (नाट वेणी १८)।
पडिस्सावि वि [**प्रतिस्राविन्**] झरने वाला, टपकने वाला ; (राज)।
पडिस्सुय वि [**प्रतिश्रुत**] १ प्रतिज्ञात ; २ स्वीकृत ; (महा ; ठा १०) । देखो **पडिसुय** ।
पडिस्सुया देखो **पडंसुआ** ; (गाया १, ५)।
पडिस्सुया देखो **पडिसुया**=प्रतिश्रुता ; (ठा १० पत्र ४७३)।
पडिहच्छ वि [**दे**] पूर्ण; (सुपा)। देखो **पडिहत्थ**।
पडिहट्टु अ [**प्रतिहृत्य**] अर्पण करके; (कस ; बृह ३)।
पडिहड पुं [**प्रतिभट**] प्रतिपक्षी योद्धा ; (से ३, ५३)।
पडिहण सक [**प्रति+हन्**] प्रतिघात करना, प्रतिहिंसा करना। पडिहणंति ; (उव)।
पडिहणण न [**प्रतिहनन**] १ प्रतिघात। २ वि. प्रतिघातक ; (कुप्र ३७)।
पडिहणणा स्त्री [**प्रतिहनन**] प्रतिघात ; (ओघ ११०)।
पडिहणिय देखो **पडिहय** ; (सुपा २३)।
पडिहत्थ वि [**दे**] १ पूर्ण, भरा हुआ ; (दे ६, २८ ; पाअ ; कुप्र ३४; वज्जा १२६ ; उप पृ १८१; सुर ४, २३६; सुपा ४८८), "पडिहत्थविंबगलवइवअणे ता वज्ज उज्जाणं" (वाअ १५)। २ प्रतिक्रिया, प्रतिकार ; ३ वचन, वाणी ; (दे ६, १९)। ४ अतिप्रभूत ; (जीव ३)। ५ अपूर्व, अद्वितीय ; (षड्)।
पडिहत्थ सक [**दे**] प्रत्युपकार करना, उपकार का बदला चुकाना। पडिहत्थेइ ; (से १२, ६६)।
पडिहत्थ वि [**प्रतिहस्त**] तिरस्कृत ; (चंड)।
पडिहत्थी स्त्री [**दे**] वृद्धि ; (दे ६, १७)।
पडिहम्म देखो **पडिहण** । पडिहम्मउज्जा ; (पि ५४०)। भवि पडिहम्मिहिइ ; (पि ५४९)।
पडिहय वि [**प्रतिहत**] प्रतिघात-प्राप्त ; (औप; कुमा ; महा; सुपा)।
पडिहर सक [**प्रति+हृ**] फिर से पूर्ण करना। पडिहरइ ; (हे ४, २५९)।
पडिहा अक [**प्रति+भा**] मालूम होना, लगना। पडिहाइ ; (वज्जा १६२ ; पि ४८७)।
पडिहा स्त्री [**प्रतिभा**] बुद्धि विशेष, नूतन २ उल्लेख करने में समर्थ बुद्धि ; (कुमा)।
पडिहा देखो **पडिहाय**=प्रतिघात ; "पंचविहा पडिहा पन्नत्ता, तं जहा, गतिपडिहा" (ठा ५, १ पत्र ३०३)।
पडिहाण देखो **परिहाण**; " मणादुप्पडिहाणे" (उवा)।
पडिहाण न [**प्रतिभान**] प्रतिभा, बुद्धि-विशेष। °**व** वि [°**वत्**] प्रतिभा वाला; (सूअ १, १३ ; १४)।
पडिहाय देखो **पडिहा**=प्रति+भा। पडिहायइ ; (स ४६१ ; स ७५६)।
पडिहाय पुं [**प्रतिघात**] १ प्रतिहनन, घात का बदला ; २ निरास, अटकायत, रोक ; (पउम ६, ५३)।
पडिहार पुंस्त्री [**प्रतिहार**] द्वारपाल, दरवान ; (हे १, २०६ ; गाया १, ५; स्वप्न २२८; अभि ७७)। स्त्री °**री**; (गृह १)।

पडिहारिय देखो **पाडिहारिय** ; (कस ; आचा २, २, ३, १७ ; १८) ।
पडिहारिय वि [**प्रतिहारित**] अवरुद्ध, रोका हुआ; (स५४६)।
पडिहास अक [**प्रति+भास्**] मालूम होना, लगना । पडिहासेदि (शौ) ; (नाट) ।
पडिहास पुं [**प्रतिभास**] प्रतिभास, प्रतिभान ; (हे १, २०६ ; षड्) ।
पडिहासिय वि [**प्रतिभासित**] जिसका प्रतिभास हुआ हो वह ; (उप ८८६ टी) ।
पडिहुअ } पुं [**प्रतिभू**] जामीन, जामीनदार, मनौतिया ;
पडिहू } (षाअ ; दे ६, ३८) ।
पडिहू अक [**परि+भू**] पराभव करना, हराना । कवकृ - **पडिहूअमाण**; (अभि ३६) ।
पडी स्त्री [**पटी**] वस्त्र, कपड़ा ; (गउड ; सुर ३, ४१) ।
पडीआर पुं [**प्रतीकार**] देखो **पडिआर**=प्रतिकार ; (वेणी १७७ ; कुप्र ६१) ।
पडीकर सक [**प्रति+कृ**] प्रतिकार करना । पडीकरेमि ; (मै ६६) ।
पडीकार देखो **पडिआर** ; (पगह १, १) ।
पडीछ देखो **पडिच्छ**=प्रति+इष् । पडीछंति ; (पि २७५)।
पडीण वि [**प्रतीचीन**] पश्चिम दिशा से संबन्ध रखने वाला ; (आचा ; औप ; ठा ५, ३) । °**वाय** पुं [°**वात**] पश्चिम का वायु ; (ठा ७) ।
पडीणा स्त्री [**प्रतीची**] पश्चिम दिशा ; (ठा ६ - पत्र ३५६ ; सुअ २, २, ५८) ।
पडीर पुं [**दे**] चोर-समूह, चोरों का यूथ ; (दे ६, ८) ।
पडीव वि [**प्रतीप**] प्रतिकूल, प्रतिपक्षी, विरोधी ; (भवि)।
पडु वि [**पटु**] निपुण, चतुर, कुशल ; (औप ; कुमा ; सुर २, १४५) ।
पडु (अप) देखो **पडिअ**=पतित ; (पिंग) ।
पडुआलिअ वि [**दे**] १ निपुण बनाया हुआ ; २ ताड़ित, पिटा हुआ ; ३ धारित ; (दे ६, ७३) ।
पडुक्खेव पुं [**प्रत्युत्क्षेप, प्रतिक्षेप**] १ वाद्य-ध्वनि ; २ क्षेपण, फेंकना; "समतालपडुक्खेवं" (ठा ७ पत्र ३९४)।
पडुच्च अ [**प्रतीत्य**] १ आश्रय करके ; (आचा ; सुअ १, ७ ; सम ३६ ; नव ३६) । २ अपेक्षा करके ; (भग) । ३ अधिकार करके ; " पडुच्च त्ति वा पप्प त्ति वा अहिकिच्च त्ति वा एगट्ठा " (आचू १ ; अणु) । °**करण** न [°**करण**] किसी की अपेक्षा से जो कुछ करना, आपेक्षिक कृति ; (बृह १)। °**भाव** पुं [°**भाव**] सप्रतियोगिक पदार्थ, आपेक्षिक वस्तु ; (भास २८) । °**वयण** न [°**वचन**] आपेक्षिक वचन; (सम्म १००) । °**सच्चा** स्त्री [°**सत्या**] सत्य भाषा का एक भेद, अपेक्षा-कृत सत्य वचन ; (पगण ११) ।
पडुच्चा ऊपर देखो ; " जे हिंसंति आयसुहं पडुच्चा " (सुअ १, ५, १, ४) ।
पडुजुवइ स्त्री [**दे**] युवति, तरुणी; (दे ६, ३१)।
पडुत्तिया स्त्री [**प्रत्युक्ति**] प्रत्युत्तर, जवाब ; (भवि) ।
पडुप्पण्ण } पुं [**प्रत्युत्पन्न**] १ वर्तमान काल ; (ठा
पडुप्पन्न } ३, ४) । २ वि. वार्तमानिक, वर्तमान काल में विद्यमान ; (ठा १० ; भग ८, ५; सम १३२ ; उवा) । ३ प्राप्त, लब्ध ; (ठा ४, २), " न पडुप्पन्नो य से जहोचिओ आहारो " (स २६१) । ४ उत्पन्न, जात ; (ठा ४, २), "होंति य पडुप्पन्नविणासणम्मि गंधव्विआ उदाहरणां " (दसनि १) ।
पडुल्ल न [**दे**] १ लघु पिठर, छोटी थाली ; २ वि. चिर-प्रसूत ; (दे ६, ६८) ।
पडुवइअ वि [**दे**] तीक्ष्ण, तेज ; (दे ६, १४) ।
पडुवत्ती स्त्री [**दे**] जवनिका, परदा ; (दे ६, २२) ।
पडुह देखो **पड्डुह** । पडुहइ ; (हे ४, १५४ टि) ।
पडोअ वि [**दे**] बाल, लघु, छोटा ; (दे ६, ६) ।
पडोच्छन्न वि [**प्रत्यवच्छन्न**] आच्छादित, आवृत ; " अइविहकम्मतमपडलपडोच्छन्ने " (उवा) ।
पडोयार सक [**प्रत्युप+चारय्**] प्रतिकूल उपचार करना । पडोयारेंति, पडोयारेह ; (भग १५ - पत्र ६७६) । पडो-यारेउ; (भग १५- पत्र ६७१)। पडोयारे; (पि १५५) । कवकृ -**पडोय(? या)रिज्जमाण, पडोयारेज्जमाण;** (पि १६३ ; भग १५ -पत्र ६७६) ।
पडोयार पुं [**प्रत्युपचार**] प्रतिकूल उपचार; (भग १५ — पत्र ६७१ ; ६७६) ।
पडोयार पुं [**प्रत्यवतार**] १ अवतरण ; २ आविर्भाव ; " भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभावपडोयारे होत्था " (भग ६, ७ -पत्र २७६ ; ७, ६ —पत्र ३०५; औप) ।
पडोयार पुं [**पदावतार**] किसी वस्तु का पदों में विचार के लिए अवतरण ; (ठा ४, १ -पत्र १८८) ।
पडोयार पुं [**प्रत्युपकार**] उपकार का उपकार ; (राज)।

पडोयार पुं [**दे**] परिकर ; " पायम्स पडोयारं " (ओघ ३५२)।
पडोल पुंस्त्री [**पटोल**] लता-विशेष, परवल का गाछ ; (पण्ण १—पत्र ३२)।
पडोहर न [**दे**] घर का पीछला आँगन ; (दे ६, ३२ ; गा ३१३ ; काप्र २२४)।
पड्ड वि [**दे**] धवल, सफेद ; (दे ६, १)।
पड्डंस पुं [**दे**] गिरि-गुहा, पहाड़ की गुफा ; (दे ६, २)।
पड्डच्छी स्त्री [**दे**] भैंस ; " पड्डच्छिखीरं " (ओघ ८७)।
पड्डत्थी स्त्री [**दे**] १ बहुत दूध वाली ; २ दोहने वाली ; (दे ६, ७०)।
पड्डय पुं [**दे**] भैंसा, गुजराती में ' पाडो ' ; " सो चेव इमो वसभो पड्डयपरिहट्टणं सहइ " (महा)।
पड्डला स्त्री [**दे**] चरण-घात, पाद-प्रहार ; (दे ६, ८)।
पड्डस वि [**दे**] सुसंयमित, अच्छी तरह से संयमित ; (दे ६, ६)।
पड्डाविअ वि [**दे**] समापित, समाप्त कराया हुआ ; (षड्)।
पड्डिया स्त्री [**दे**] १ छोटी भैंस ; २ छोटी गौ, वछिया ; (विपा १, २—पत्र २६)। ३ प्रथम-प्रसूता गौ ; ४ नव-प्रसूता महिषी ; (वव ३)।
पड्डी स्त्री [**दे**] प्रथम-प्रसूता ; (दे ६, १)।
पड्डुहुआ स्त्री [**दे**] चरण-घात, पाद-प्रहार ; (दे ६, ८)।
पड्डुह अक [**क्षुभ्**] क्षुब्ध होना। पड्डुहइ ; (हे ४, १५४ ; कुमा)।
पढ सक [**पठ्**] १ पढ़ना, अभ्यास करना। २ बोलना, कहना। पढइ ; (हे १, १९९ ; २३१)। कर्म—पढीअइ, पढिज्जइ ; (हे ३, १६०)। वकृ—**पढंत** ; (सुर १०, १०३)। कवकृ—**पढिज्जंत, पढिज्जमाण** ; (सुपा २६७ ; उप ५३० टी)। संकृ—**पढित्ता** ; (हे ४, २७१ ; षड्), **पढिअ, पढिदूण** (शौ) ; (हे ४, २७१), **पढि** (अप) ; (पिंग)। हेकृ—**पढिउं** ; (गा २ ; कुमा)। कृ—**पढियव्व, पढेयव्व** ; (पंसू १ ; वज्जा ६)। प्रयो—पढावइ ; (कुप्र १८२)।
पढ पुं [**पढ**] भारतीय देश-विशेष ; (इक)।
पढग वि [**पाठक**] पढ़ने वाला ; (कप्प)।
पढण न [**पठन**] पाठ, अभ्यास ; (विसे १३८४ ; कप्प)।
पढम वि [**प्रथम**] १ पहला, आद्य ; (हे १, ५५ ; कप्प ; उवा ; भग ; कुमा ; प्रासू ४८ ; ६८)। २ नूतन, नया ; (दे)। ३ प्रधान, मुख्य ; (कप्प)। °**करण** न [°**करण**] आत्मा का परिणाम-विशेष ; (पंचा ३)। °**कसाय** पुं [°**कषाय**] कषाय-विशेष, अनन्तानुबन्धी कषाय ; (कम्मप)। °**ट्ठाणि, °ठाणि** वि [°**स्थानिन्**] अव्युत्पन्न-बुद्धि, अनिष्णात ; (पंचा १६)। °**पाउस** पुं [°**प्रावृष्**] आषाढ मास ; (निचू १०)। °**समोसरण** न [°**समवसरण**] वर्षा-काल ; " बिइयसमोसरणं उदुबद्धं तं पडुच्च वासावासोग्गहो पढमसमोसरणं भण्णइ " (निचू १)। °**सरय** पुं [°**शरत्**] मार्गशीर्ष मास ; (भग १५)। °**सुरा** स्त्री [°**सुरा**] नया दारू ; (दे)।
पढमा स्त्री [**प्रथमा**] १ प्रतिपदा तिथि, पड़वा ; (सम २९)। २ व्याकरण-प्रसिद्ध पहली विभक्ति ; "णिद्देसे पढमा होइ " (अणु)।
पढमालिआ स्त्री [**दे, प्रथमालिका**] प्रथम भोजन ; (ओघ ४७ भा ; धर्म ३)।
पढमिल्ल, पढमिल्लुअ, पढमिल्लुग, पढमुल्लअ, पढमेल्लुय वि [**प्रथम**] पहला, आद्य ; (भग ; श्रा २८ ; सुपा ५७ ; पि ४४९ ; ५९५ ; विसे १२२६ ; णाया १, ६—पत्र १४४ ; बृह १ ; पउम ९२, ११ ; भग १६ ; सण)।
पढाइद [**शौ**] नीचे देखो ; (नाट—चैत ८९)।
पढावण न [**पाठन**] पढ़ाना ; (कुप्र ६०)।
पढाविअ वि [**पाठित**] पढ़ाया हुआ ; (सुपा ४५३ ; कुप्र ९१)।
पढि, पढिअ देखो **पढ**=पठ्।
पढिअ वि [**पठित**] पढ़ा हुआ ; (कुमा ; प्रासू १३८)।
पढिज्जंत, पढिज्जमाण देखो **पढ**=पठ्।
पढिर वि [**पठितृ**] पढ़ने वाला ; (सण)।
पढुक्क वि [**प्रढौकित**] भेंट के लिए उपस्थापित ; (भवि)।
पढुम देखो **पढम** ; (हे १, ५५ ; नाट—विक्र २६)।
पढेयव्व देखो **पढ**=पठ्।
पण देखो **पंच** ; (सुपा १ ; नव १० ; कम्म २, ६ ; २६ ; ३१)। °**णउइ** स्त्री [°**नवति**] पचानवे, नव्वे

और पाँच ; (पि ४४६)। °तीस स्त्रीन [°त्रिंशत्] पैंतीस, तीस और पाँच ; (औप ; कम्म ४, ५३ ; पि २७३ ; ४४५)। °नुवइ देखो °णउइ ; (सुपा ६७)। °रस वि.ब. [°दशन्] पनरह ; (सम)। °वन्निय वि [°वर्णिक] पाँच रंग का ; (सुपा ४०२)। °वीस स्त्रीन [°विंशति] पचीस, बीस और पाँच ; (सम ४४ ; नव १३ ; कम्म २)। °वीसइ स्त्री [°विंशति] वही अर्थ ; (पि ४४५)। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] पेंसठ, साठ और पाँच; (सम ७८ ; पि २७३)। °सय न [°शत] पाँच सौ; (दं ६)। °सीइ स्त्री [°शीति] पचासी, अस्सी और पाँच ; (कम्म २)। °सुन्न न [°शून] पाँच हिंसा-स्थान ; (राज)।

पण पुं [**पण**] १ शर्त, होड ; "लक्खपणेण जुज्झावेंतस्स" (महा)। २ प्रतिज्ञा ; (आक)। ३ धन ; ४ विक्रेय वस्तु, कयाणक ; " तत्थ विढप्पिअ पणगाणं " (ती ३)।

पण पुं [**प्रण**] पन, प्रतिज्ञा ; (नाट —मालती १२४)।

पणअत्तिअ वि [**दे**] प्रकटित, व्यक्त किया हुआ ; (दे ६, ३०)।

पणअन्न देखो **पणपन्न** ; (हे २, १७४ टि ; राज)।

पणइ स्त्री [**प्रणति**] प्रणाम, नमस्कार ; (पउम ६६, ६६ ; सुर १२, १३३ ; कुमा)।

पणइ वि [**प्रणयिन्**] १ प्रणय वाला, स्नेही, प्रेमी ; २ पुं. पति, स्वामी ; (पाअ ; गउड ८३७)। ३ याचक, अर्थी, प्रार्थी ; (गउड २४६ ; २५१ ; सुर १, १०८)। ४ भृत्य, दास ; " वप्पइराओ त्ति पणइलवो " (गउड ७६७)।

पणइणी स्त्री [**प्रणयिनी**] पत्नी, भार्या ; (सुपा २१६)।

पणइय वि [**प्रणयिक, प्रणयिन्**] देखो **पणइ**=प्रणयिन् ; (सण)।

पणंगणा स्त्री [**पणाङ्गना**] वेश्या, वारांगना ; (उप १०३१ टी ; सुपा ४६०; कुप्र ५)।

पणग न [**पञ्चक**] पाँच का समूह ; (सुर ६, ११२ ; सुपा ६३६ ; जी ६ ; दं ३१; कम्म २, ११)।

पणग पुं [**दे. पनक**] १ शैवाल, सिंवाल, तृण-विशेष जो जल में उत्पन्न होता है ; (बृह ४ ; दस ८ ; पण्ण १ ; आदि)। २ काई, वर्षा-काल में भूमि, काष्ठ आदि में उत्पन्न होता एक प्रकार का जल-मैल ; (आचा ; पडि ; ठा ८—पत्र ४२६ ; कप्प)। ३ कर्दम-विशेष, सूक्ष्म पंक ; (बृह ६ ; भग ७, ६)। देखो **पणय** (दे)। °मट्टिया, °मत्तिया स्त्री [°मृत्तिका] नदी आदि के पूर के खतम होने पर रह जाती कोमल चिकनी मिट्टी ; (जीव १ ; पण्ण १—पत्र २५)।

पणच्च अक [**प्र+नृत्**] नाचना, नृत्य करना। वकृ—**पणच्चमाण**; (णाया १, ८—पत्र १३३ ; सुपा ४७२), स्त्री—°**णी** ; (सुपा २४२)।

पणच्चण न [**प्रनर्तन**] नृत्य, नाच ; (सुपा १५४)।

पणच्चिअ वि [**प्रनृत्त**] नाचा हुआ, जिसका नाच हुआ हो वह ; (णाया १, १—पत्र २५)।

पणच्चिअ वि [**प्रनृत्त**] नाचा हुआ ; " अन्नया रायपुरओ पणच्चिया देवदत्ता " (महा ; कुप्र १०)।

पणच्चिअ वि [**प्रनर्तित**] नचाया हुआ ; (भवि)।

पणट्ठ वि [**प्रनष्ट**] प्रकर्ष से नाश को प्राप्त ; (सूअ १, १, २ ; से ७, ८ ; सुर २, २४७ ; ३, ६६ ; भवि ; उव)।

पणड्ढ वि [**प्रणद्ध**] परिगत ; (औप)।

पणपण्ण देखो **पणपन्न** ; (कप्प १४७ टि)।

पणपण्णइम देखो **पणपन्नइम** ; (कप्प १७४ टि; पि २७३)।

पणपन्न स्त्रीन [**दे. पञ्चपञ्चाशत्**] पचपन, पचास और पाँच ; (हे २, १७४ ; कप्प ; सम ७२ ; कम्म ४, ५४ ; ५५ ; नि ५)।

पणपन्नइम वि [**दे. पञ्चपञ्चाश**] पचपनवाँ, ५५वाँ ; (कप्प)।

पणपन्निय देखो **पणवन्निय** ; (इक)।

पणम सक [**प्र+नम्**] प्रणाम करना, नमन करना। पणमइ, पणमए ; (स ३४४ ; भग)। वकृ—**पणमंत** ; (सण)। कवकृ—**पणमिज्जंत**; (सुपा ८८)। संकृ—**पणमिअ, पणमिऊण, पणमिऊणं, पणमित्ता, पणमित्तु**; (अभि ११८ ; प्राप्र ; पि ५६० ; भग ; काल)।

पणमण न [**प्रणमन**] प्रणाम, नमस्कार ; (उव ; सुपा २७ ; ५६१)।

पणमिअ देखो **पणम**।

पणमिअ वि [**प्रणत**] १ नमा हुआ ; (भग ; औप)। २ जिसने नमने का प्रारम्भ किया हो वह ; (णाया १, १—पत्र ५)। ३ जिसको नमन किया गया हो वह; "पणमिओ अणेण गया " (स ७३०)।

पणमिअ वि [**प्रणमित**] नमाया हुआ ; (भवि)

पणमिर वि [प्रणन्तृ] प्रणाम करने वाला, नमने वाला ; (कुमा ; कुप्र ३५० ; सण) ।

पणय सक [प्र + णी] १ स्नेह करना, प्रेम करना । २ प्रार्थना करना । वकृ—**पणअंत** ; (से २, ६) ।

पणय वि [प्रणत] १ जिसको प्रणाम किया गया हो वह ; " नरनाहपणयपयकमलं " (सुपा २४०) । २ जिसने नमस्कार किया हो वह ; " पणयपडिवक्खं " (सुर १, ११२; सुपा ३६१) । ३ प्राप्त ; (सूत्र १, ४, १) । ४ निम्न, नीचा ; (जीव ३ ; राय) ।

पणय पुं [प्रणय] १ स्नेह, प्रेम ; (गाया १, ६ ; महा ; गा २७) । २ प्रार्थना ; (गउड) । °**वंत** वि [°वत्] स्नेह वाला, प्रेमी ; (उप १३१) ।

पणय पुं [दे] पंक, कर्दम ; (दे ६, ७) ।

पणय पुं [दे. पनक] १ शैवाल, सिंवाल, तृण-विशेष ; २ काई, जल-मैल ; (ओघ ३४६) । ३ सूक्ष्म कर्दम ; (पणह १, ४) ।

पणयाल वि [दे. पञ्चचत्वारिंश] पैंतालीसवाँ, ४५वाँ ; (पउम ४५, ४६) ।

पणयाल } स्त्रीन [दे. पञ्चचत्वारिंशत्] पैंतालीस, **पणयालीस** } चालीस और पाँच, ४५ ; (सम ६६ ; कम्म २, २७ ; ति ३ ; भग ; सम ६८ ; ओप ; वि ४४५) ।

पणव देखो **पणम** । पणवइ ; (भवि) । पणवह ; (हे २, १६५) । वकृ—**पणवंत** ; (भवि) ।

पणव पुं [पणव] पटह, ढोल, वाद्य-विशेष ; (ओप ; कप्प ; अंत) ।

पणवणिय देखो **पणवन्निय** ; (ओप) ।

पणवण्ण } देखो **पणपन्न** ; (वि २६५ ; २७३ ; भग ; **पणवन्न** } हे २, १७४ टि) ।

पणवन्निय पुं [पणपन्निक] व्यन्तर देवों की एक जाति ; (पणह १, ४) ।

पणविय देखो **पणमिय**=प्रणत ; (भवि) ।

पणस पुं [पनस] वृक्ष-विशेष, कटहल ; (पि २०८ ; नाट—मृच्छ ११८) ।

पणाम सक [अर्पय्] अर्पण करना, देने के लिए उपस्थित करना । पणामइ ; (हे ४, ३९), " वंदिओ य पवयणा कल्लाणाइं पणामइ " (सुपा ३६३) ।

पणाम सक [प्र + नमय्] नमाना । पणामेइ ; (महा) ।

पणाम पुं [प्रणाम] नमस्कार, नमन ; (दे ७, ६ ; भवि) ।

पणामणिआ स्त्री [दे] स्त्री-विषयक प्रणय ; (दे ६, ३०) ।

पणामय वि [अर्पक] देने वाला ; (सूत्र १, २, २) ।

पणामिअ वि [अर्पित] समर्पित, देने के लिए धरा हुआ ; (पात्र ; कुमा) । " अपणामियंपि गहिअं कुसुमसरेण महुमासलच्छीए मुहं " (हेका ५०) ।

पणामिअ वि [प्रणमित] नमाया हुआ ; (से ४, ३१ ; गा २२) ।

पणामिअ वि [प्रणामित] नत, नमा हुआ ; " पणामिया मायरं " (स ३१६) ।

पणायक } वि [प्रणायक] ले जाने वाला ; " निव्वाण-**पणायग** } गमणसग्गप्पणायकाइं " (पणह २, १ ; पणह २, १ टी ; वव १) ।

पणाल पुं [प्रणाल] मोरी, पानी आदि जाने का रास्ता ; (से १३, ५४ ; उर १, ५ ; ६) ।

पणालिआ स्त्री [प्रणालिका] १ परम्परा ; (सम्म १, १३) । २ पानी जाने का रास्ता ; (कुमा) ।

पणाली स्त्री [प्रणाली] मोरी, पानी जाने का रास्ता ; (गउड) ।

पणाली स्त्री [प्रनाली] शरीर-प्रमाण लम्बी लाठी ; (पणह १, ३ पत्र ५४) ।

पणास सक [प्र + नाशय्] विनाश करना । पणासेइ, पणासए ; (महा) ।

पणास पुं [प्रणाश] विनाश, उच्छेदन ; (आवम) ।

पणासण वि [प्रणाशन] विनाश करने वाला ; " सव्वपा-वप्पणासणो " (पडि ; कप्प) । स्त्री— °**णी** ; (श्रा ४६) ।

पणासिय वि [प्रणाशित] जिसका विनाश किया गया हो वह ; (कप्प ; भवि) ।

पणिअ वि [दे] प्रकट, व्यक्त ; (दे ६, ७) ।

पणिअ न [पणित] १ बेचने योग्य वस्तु ; (दे १, ७४ ; ६, ७ ; णाया १, १) । २ व्यवहार, लेन-देन, क्रय-विक्रय ; (भग १५ ; णाया १, ३—पत्र ६५) । ३ शर्त, होड़, एक तरह का जूआ ; (भास ६२) । °**भूमि**, °**भूमी** स्त्री [°भूमि, भूमी] १ अनार्य देश-विशेष, जहां भगवान् महावीर ने एक चौमासा बिताया था ; (राज ; कप्प) । २ विक्रेय वस्तु रखने का स्थान ; (भग १५) । °**साला** स्त्री [°शाला] हाट, दुकान ; (बृह २ ; निचु १६) ।

पणिअ न [**पण्य**] विक्रेय वस्तु ; (सुपा २७५ ; औप ; आचा) । °**गिह**, °**घर** न [°**गृह**] दुकान, हाट ; (निचू १२ ; आचा २, २, २) । °**साला** स्त्री [°**शाला**] °हाट, दुकान; (आचा) । °**वण** पुं [°**पण**] दुकान, हाट ; (आचा) ।

पणिअ वि [**प्रणीत**] सुन्दर, मनोहर । °**भूम** स्त्री [°**भूमि**] मनोज्ञ भूमि ; (भग १५) ।

पणिआ स्त्री [**दे**] करोटिका, सिर की हड्डी ; (दे ६, ३) ।

पणिंदि } वि [**पञ्चेन्द्रिय**] त्वक्, जीभ, नाक, आँख और
पणिंदिय } कान इन पाँचों इन्द्रियों वाला प्राणी ; (कम्म २ ; ४, १० ; १८ ; १६) ।

पणिधाण देखो **पडिहाण** ; (अभि १८६ ; नाट विक ७२) ।

पणिधि पुंस्त्री [**प्रणिधि**] माया, छल; "पुणो पुणो पणिधि (? धी)ए हरिता उवहंसे जणं " (सम ५०) । देखो **पणिहि** ।

पणियत्थ वि [**प्रणिवसित**] पहना हुआ ; (औप) ।

पणिलिअ वि [**दे**] हत, मारा हुआ ; (षड्) ।

पणिवइअ वि [**प्रणिपतित**] नत, नमा हुआ ; "पणिव-इयवच्छला णं देवाणुप्पिया ! उत्तमपुरिसा " (गाया १, १६ -पत्र २१६ ; स ११ ; उप ७६८ टी) ।

पणिवय सक [**प्रणि + पत**] नमन करना, वन्दन करना । पणिवयामि ; (कप्प ; सार्ध ६१) ।

पणिवाय पुं [**प्रणिपात**] वन्दन, नमस्कार ; (सुर ८, ६८ ; सुपा २८ ; २२२ ; महा) ।

पणिहा सक [**प्रणि + धा**] १ एकाग्र चिन्तन करना, ध्यान करना । २ अपेक्षा करना । ३ अभिलाषा करना । ४ चेष्टा करना, प्रयत्न करना । संकृ **पणिहाय** ; (गाया १, १० ; भग १५) ।

पणिहाण न [**प्रणिधान**] १ एकाग्र ध्यान, मनो-निग्रह, अवधान ; (उत्त १६, १४ ; स ८७ ; प्रामा) । २ प्रयोग, व्यापार, चेष्टा ; " तिविहे पणिहाणे पण्णत्ते ; तं जहा — मणपणिहाणे, वयपणिहाणे, कायपणिहाणे" (ठा ३, १; ४, १ ; भग १८ ; उवा) । ३ अभिलाष, कामना ; " संकाठाणाणि सव्वाणि वज्जेज्जा पणिहाणवं " (उत्त १६, १४) ।

पणिहाय देखो **पणिहा** ।

पणिहि पुंस्त्री [**प्रणिधि**] १ एकाग्रता, अवधान ; (पण्ह २, ५) । २ कामना, अभिलाष ; (ठा ८७) । ३ पुं. चर पुरुष, दूत ; (पण्ह १, ३ ; पाअ ; सुर ३, ४ ; सुपा ४६२) । ४ चेष्टा, व्यापार ; (दसनि १) । ५ माया, कपट; (आव ४) । ६ व्यवस्थापन ; (राज) ।

पणिहिय वि [**प्रणिहित**] १ प्रयुक्त, व्यापृत ; (दसनि ८) । २ व्यवस्थित ; (आव ४) ।

पणीय वि [**प्रणीत**] १ निर्मित, कृत, रचित ; " वइरेसियं पणीयं " (विसे २५०७ ; सुर १२, ६२ ; सुपा ३८ ; १६७) । २ स्निग्ध, घृत आदि स्नेह की प्रचुरता वाला ; " विभूसा इत्थीसंसग्गी पणीयरसभोयणं " (दस ८, ५७ ; उत्त १६, ७ ; ओघ १५० भा ; औप ; बृह ५) । ३ निरूपित, प्ररूपित, आख्यात ; (अणु ; आव ३) । ४ मनोज्ञ, सुन्दर ; (भग ५, ४) । ५ सम्यग् आचरित ; (सूअ १, ११) ।

पणुल्ल देखो **पणोल्ल** । वकृ **पणुल्लेमाण** ; (पि २२४) ।

पणुल्लिअ देखो **पणोल्लिअ** ; (पाअ ; सुपा २४ ; प्रासू १६६) ।

पणुवीस स्त्रीन [**पञ्चविंशति**] संख्या-विशेष, पचीस, बीस और पाँच ; २ जिनकी संख्या पचीस हों वे ; (स १०६ ; पि १०४ ; २७३) ।

पणुवीसइम वि [**पञ्चविंशतितम**] पच्चीसवाँ, २५ वाँ ; (विसे ३१२०) ।

पणोल्ल सक [**प्र + णुद्**] १ प्रेरणा करना । २ फेंकना । ३ नाश करना । पणोल्लइ ; (प्राप्र) । " पावाइं कम्माइं पणोल्लयामो " (उत्त १२, ४०) । कवकृ — **पणोल्लिज्जमाण** ; (गाया १, १ ; पण्ह १, ३) । संकृ **पणोल्ल** ; (सूअ १, ८) ।

पणोल्लण न [**प्रणोदन**] प्रेरणा ; (ठा ८ ; उप पृ ३४१) ।

पणोल्लय वि [**प्रणोदक**] प्रेरक ; (आचा) ।

पणोल्लि वि [**प्रणोदिन्**] १ प्रेरणा करने वाला ; २ पुं. प्राजन दण्ड, बैल इत्यादि हाँकने की लकड़ी; (पण्ह १, ३ — पत्र ५४) ।

पणोल्लिअ वि [**प्रणोदित**] प्रेरित ; (औप ; पि २४४) ।

पण्ण वि [**प्रज्ञ**] जानकार, दक्ष, निपुण ; (उत्त १, ८ ; सूअ १, ६) ।

पण्ण वि [**प्राज्ञ**] १ प्रज्ञा वाला, बुद्धिमान्, दक्ष ; (हे १, ५६ ; उप ६२३) । २ वि. प्राज्ञ-संबन्धी ; (सूअ १, १) ।

पण्ण न [**पर्ण**] पत्र, पत्ती ; (कुमा) ।

पण्ण देखो **पणिअ**=पण्य ; (नाट) ।

पण्ण स्त्रीन [दे] पचास, ५०। स्त्री—°ण्णा ; (षड्)।
पण्ण देखो **पंच, पण** ; (पि २७३ ; ४४० ; ४४५)।
°**रस** त्रि. ब. [°**दशन्**] पनरह, १५ ; (सम २६ ; उवा)। °**रसम** वि [°**दश**] पनरहवाँ ; (उवा) °**रसी** स्त्री [°**दशी**] १ पनरहवीं ; २ तिथि-विशेष ; (पि २७३ ; कप्प)। °**रह** देखो °**रस** ; (प्राप्र)। °**रह** वि [°**दश**] पनरहवाँ, १५ वाँ ; (प्राप्र)। देखो **पन्न**=पंच।
पण्ण वि [**पार्ण**] पर्ण-संबन्धी, पत्ती से संबन्ध रखने वाला ; (राज)।
पण्ण° देखो **पण्णा°**। °**व** वि [°**वत्**] प्रज्ञा वाला, प्राज्ञ ; (उप ६१२ टी)।
पण्णई स्त्री [**पन्नगी**] भगवान् धर्मनाथ की शासन-देवी ; (पव २७)।
पण्णग पुं [**पन्नग**] सर्प, साँप ; (उप ७२८ टी)। °**रसण** पुं [°**शन**] गरुड पक्षी ; (पिंग)। देखो **पन्नय**।
पण्णग वि [**दे. पन्नक**] दुर्गन्धी। °**तिल** पुं [°**तिल**] दुर्गन्धी तिल ; (राज)।
पण्णट्ठि स्त्री [**पञ्चषष्टि**] पैंसठ, साठ और पाँच, ६५; (कप्प)।
पण्णत्त वि [**प्रज्ञप्त**] निरूपित, उपदिष्ट, कथित ; (औप; उवा ; ठा ३, १ ; ४, १ ; २; विपा १, १ ; प्रासू १२१)। २ प्रणीत, रचित ; (आचम ; चंद २० ; भग ११, ११ ; औप)।
पण्णत्ति स्त्री [**प्रज्ञप्ति**] १ विद्यादेवी-विशेष ; (जं १)। २ जैन आगम-ग्रन्थ विशेष, सूर्यप्रज्ञप्ति आदि उपांग-ग्रन्थ; (ठा ३, १; ४, १)। ३ विद्या-विशेष; (आचू १)। ४ प्ररूपण, प्रतिपादन ; (उवा ; वव ३)। °**खेवणी** स्त्री [°**क्षेपणी**] कथा का एक भेद ; (ठा ४, २)। °**पक्खेवणी** स्त्री [°**प्रक्षेपणी**] कथा का एक भेद ; (राज)।
पण्णपण्णिय पुं [**पण्णपर्णि**] व्यन्तर देवों की एक जाति; (इक)।
पण्णय देखो **पण्णग** ; (से ४, ४)।
पण्णव सक [**प्र+ज्ञापय्**] प्ररूपण करना, उपदेश करना, प्रतिपादन करना। पण्णवेइ, पण्णवेंति ; (उवा ; भग)। वकृ—**पण्णवयंत, पण्णवेमाण** ; (भग ; पि ५५१)। कृ—**पण्णवणिज्ज**; (द ७)।
पण्णवग वि [**प्रज्ञापक**] प्ररूपक, प्रतिपादक ; (विसे ५४६)।
पण्णवण न [**प्रज्ञापन**] १ प्ररूपण, प्रतिपादन ; २ शास्त्र, सिद्धान्त ; (विसे ८६४)।
पण्णवणा स्त्री [**प्रज्ञापना**] १ प्ररूपणा, प्रतिपादन ; (णाया १, ६ ; उवा)। २ एक जैन आगम-ग्रन्थ, प्रज्ञापना सूत्र ; (भग)।
पण्णवणिज्ज देखो **पण्णव**।
पण्णवणी स्त्री [**प्रज्ञापनी**] भाषा-विशेष, अर्थ-बोधक भाषा ; (भग १०, ३)।
पण्णवण्ण स्त्रीन [**दे. पञ्चपञ्चाशत्**] पचपन, पचास और पाँच ; (दे ६, २७ ; षड्)।
पण्णवय देखो **पण्णवग** ; (विसे ५४७)।
पण्णवयंत देखो **पण्णव**।
पण्णविय वि [**प्रज्ञापित**] प्रतिपादित, प्ररूपित ; (अणु ; उत्त २६)।
पण्णवेत्तु वि [**प्रज्ञापयितृ**] प्रतिपादक, प्ररूपण करने वाला ; (ठा ७)।
पण्णवेमाण देखो **पण्णव**।
पण्णा सक [**प्र+ज्ञा**] १ प्रकर्ष से जानना। २ अच्छी तरह जानना। कर्म—पण्णायंति ; (भग)।
पण्णा देखो **पण्ण** (दे)।
पण्णा स्त्री [**प्रज्ञा**] १ बुद्धि, मति ; (उप १५४ ; ७२८ टी ; निचू १)। २ ज्ञान ; (सुअ १, १२)। °**परिसह**, °**परीसह** पुं [°**परिषह**, °**परीषह**] १ बुद्धि का गर्व न करना ; २ बुद्धि के अभाव में खेद न करना ; (भग ८, ८ ; पव ८६)। °**मय** पुं [°**मद**] बुद्धि का अभिमान ; (सुअ १, १३)। °**वंत** वि [°**वत्**] ज्ञानवान् ; (राज)।
पण्णाड देखो **पन्नाड**। पण्णाडइ ; (दे ६, २६)।
पण्णाण न [**प्रज्ञान**] १ प्रकृष्ट ज्ञान ; २ सम्यग् ज्ञान ; (सम ५१)। ३ आगम, शास्त्र ; (आचा)। °**व** वि [°**वत्**] १ ज्ञानवान् ; २ शास्त्र-ज्ञ ; (आचा)।
पण्णारह (अप) त्रि. ब. [**पञ्चदशन्**] पनरह ; (पिंग)।
पण्णावीसा स्त्री [**पञ्चविंशति**] पचीस, बीस और पाँच ; (षड्)।
पण्णास स्त्रीन [**दे. पञ्चाशत्**] पचास, ५० ; (दे ६, २७ ; षड् ; पि २७३ ; ४४५ ; कुमा)। देखो **पन्नास**।
पण्णुवीस देखो **पणुवीस** ; (स १४६)।

पण्ह पुंस्त्री [**प्रश्न**] प्रश्न, पृच्छा ; (हे १, ३५ ; कुमा)। स्त्री— °**ण्हा** ; (हे १, ३५)। °**वाहण** न [°**वाहन**] जैन मुनि-गण का एक कुल ; (ती ३८)। °**वागरण** न [°**व्याकरण**] ग्यारहवाँ जैन अंग-ग्रन्थ ; (पण्ह २, ५ ; अ १० ; विपा १, १ ; सम १)। देखो **पसिण**।

पण्हुअ अक [**प्र**+**स्नु**] झरना, टपकना। "एक्को पण्हुअइ थणो" (गा ४०६ ; ४६२ अ)।

पण्हुअ } पुं [**दे. प्रस्नव**] १ स्तन—धारा, स्तन से दूध का **पण्हव** } झरना ; (दे ६, ३ ; पि २३१ ; राज ; अंत ७ ; षड्)। २ झरन, टपकना ; "दिट्ठिपण्हव—" (पिंड ४८७)।

पण्हव पुं [**पह्नव**] १ अनार्य देश-विशेष ; २ वि. उस देश का निवासी ; (पण्ह १, १—पत्र १४)।

पण्हवण न [**प्रस्नवन**] झरण, झरना ; (विपा १, २)।

पण्हविअ देखो **पण्हुअ** ; (दे ६, २५)।

पण्हा देखो **पण्ह**।

पण्हि पुंस्त्री [**पार्ष्णि**] फीली का अधोभाग, गुल्फ का नीचला हिस्सा ; (पण्ह १, ३ ; दे ७, ६२)।

पण्हिया स्त्री [**पार्ष्णिका**] एड़ी, गुल्फ का अधोभाग ; "मंसलिसु पण्हियाओ चरणे वित्थारिऊण बाहिरओ" (चेइय ४८६)।

पण्हुअ वि [**प्रस्नुत**] १ क्षरित, झरा हुआ ; २ जिसने झरने का प्रारम्भ किया हो वह ; "पण्हुयपओहराओ" (पउम ७६, २० ; हे २, ७५)।

पण्हुइर वि [**प्रस्नोतृ**] झरने वाला ;

"हत्थप्फंसेण जरग्गवीवि पण्हअइ दोहअगुणेण।
अवलोअणपण्हुइरिं पुत्तअ पुण्णेहिँ पाविहिसि" (गा ४६२)।

पण्होत्तर न [**प्रश्नोत्तर**] सवाल-जवाब ; (सुर १६, ४१ ; कप्पू)।

पतणु देखो **पयणु** ; (राज)।

पतार सक [**प्र**+**तारय्**] ठगना। संकृ. **पतारिअ** ; (अभि १७१)।

पतारय वि [**प्रतारक**] वञ्चक, ठग ; (धर्मसं १४७)।

पतिण्ण } वि [**प्रतीर्ण**] पार पहुँचा हुआ, निस्तीर्ण ; **पतिन्न** } (राज ; पण्ह २, १—पत्र ६६)।

पतुण्ण } न [**प्रतुन्न**] वल्कल का बना हुआ वस्त्र ; (आचा **पतुन्न** } २, ५, १, ६)।

पतेरस } वि [**प्रत्रयोदश**] प्रकृष्ट तेरहवाँ। °**वास** न [°**व- पतेलस** } र्ष**] १ प्रकृष्ट तेरहवाँ वर्ष ; २ प्रकृत तेरहवाँ वर्ष ; ३ प्रस्थित तेरहवाँ वर्ष ; (आचा)।

पत्त वि [**प्राप्त**] मिला हुआ, पाया हुआ ; (कप्प ; सुर ४, ७० ; सुपा ३५७ ; जी ४४ ; दं ४६ ; प्रासू ३१ ; १६२ ; १८२ ; गा २४१)। °**काल**, °**याल** न [°**काल**] १ समय-विशेष ; (राज)। २ वि. अवसरोचित ; (स ४६०)।

पत्त न [**पत्र**] १ पत्ती, दल, पर्ण ; (कप्प ; सुर १, ७१ ; जी १० ; प्रासू ६२)। २ पक्ष, पंख पाँख ; (वाया १, १—पत्र २४)। ३ जिस पर लिखा जाता है वह, कागज, पन्ना ; (स ६२ ; सुर १, ७२ ; हे २, १७३)। °**च्छेज्ज** न [°**च्छेद्य**] कला-विशेष ; (औप ; स ६५)। °**मंत** वि [°**वत्**] पत्र वाला ; (णाया १, १)। °**रह** पुं [°**रथ**] पक्षी ; (पाअ)। °**लेहा** स्त्री [°**लेखा**] चन्दनादि से पत्र के आकृति वाली रचना-विशेष, भूषा का एक प्रकार ; (अजि २८)। °**वल्ली** स्त्री [°**वल्ली**] १ पत्र वाली लता ; २ मुँह पर चन्दन आदि से की जाती पत्र-श्रेणी-तुल्य रचना ; (कुप्र ३६५)। °**विंट** न [°**वृन्त**] पत्र का बन्धन ; (पि ५३)। °**विंटिय** वि [°**वृन्तक**, °**वृन्तीय**] त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष, पत्र वृन्त में उत्पन्न होता एक प्रकार का त्रीन्द्रिय जन्तु ; (पएण १—पत्र ४५)। °**विच्छुय** पुं [°**वृश्चिक**] जीव-विशेष, एक तरह का वृश्चिक, चतुरिन्द्रिय जीवों की एक जाति ; (जीव १)। °**वेंट** देखो °**विंट** ; (पि ५३)। °**सगडिआ** स्त्री [°**शकटिका**] पत्तों से भरी हुई गाड़ी ; (भग)। °**समिद्ध** वि [°**समृद्ध**] प्रभूत पत्ती वाला ; (पाअ)। °**हार** पुं [°**हार**] त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष ; (पएण १—पत्र ४५ ; उत्त ३६, १३८)। °**ाहार** पुं [°**ाहार**] पत्ती पर निर्वाह करने वाला वानप्रस्थ ; (औप)।

पत्त न [**पात्र**] १ भाजन ; (कुमा ; प्रासू ३६)। २ आधार, आश्रय, स्थान ; (कुमा)। ३ दान देने योग्य गुणी लोक ; (उप ६४८ टी ; महा)। ४ लगातार बत्तीस उपवास ; (संबोध ५८)। °**बंध** पुं [°**बन्ध**] पात्रों को बाँधने का कपड़ा ; (ओघ ६६८)। देखो **पाय**=पात्र।

पत्त वि [**प्रात्त**] प्रसारित ; (कप्प)।

पत्तइअ वि [**प्रत्ययित**] विश्वस्त ; (भग)।

पत्तइअ वि [**पत्रकित**] १ अल्प पत्र वाला ; २ कुत्सित पत्र वाला; (णाया १, ७—पत्र ११६)।

पत्तउर पुं [**दे**] वनस्पति-विशेष, एक जात का गाछ ; (पएण १—पत्र ३१)।

पत्तट्ठ वि [दे. प्रस्तार्थ] १ बहु-शिक्षित, विद्वान्, अति कुशल ; (दे ६, ६८ ; सुर १, ८१ ; सुपा १२६ ; भग १४, १ ; पाअ) । २ समर्थ ; (जीवस २८५) ।

पत्तट्ठ वि [दे] सुन्दर, मनोहर ; (दे ६, ६८) ।

पत्तण देखो **पट्टण** ; (राज) ।

पत्तण न [दे. पत्त्रण] १ इषु-फलक, बाण का फल ; २ पुंख, बाण का मूल भाग ; (दे ६, ६४ ; गा १०००) ।

पत्तणा स्त्री [दे. पत्त्रणा] १—२ ऊपर देखो ; (गउड ; से १५, ७३) । ३ पुंख में की जाती रचना-विशेष ; (से ७, ५२) ।

पत्तणा स्त्री [प्रापणा] प्राप्ति ; (पंचू ४) ।

पत्तपसाइआ स्त्री [दे] पत्तिओं की एक तरह की पगड़ी, जिसे भील लोग पहनते हैं ; (दे ६, २) ।

पत्तपिसालस न [दे] ऊपर देखो ; (दे ६, २) ।

पत्तय न [पत्रक] एक प्रकार का गेय ; (ठा ४, ४) ।

पत्तय देखो **पत्त** ; (महा) ।

पत्तरक न [दे. प्रतरक] आभूषण-विशेष ; (पगह २, ५—पत्र १४६) ।

पत्तल वि [दे] १ तीक्ष्ण, तेज ; (दे ६, १४),

"नयणाइं समाणियपत्तलाइं परपुरिसजीवहरणाइं ।
असियसियाइं व मुद्धे खग्गा इव कं न मारंति ?"

(वज्जा ६०) । २ पतला, कृश; (दे ६, १४; वज्जा ४६) ।

पत्तल वि [पत्रल] १ पत्र-समृद्ध, बहुत पत्ती वाला ; (पाअ ; से १, ६२ ; गा ५३२ ; ६३५ ; दे ६, १४) । २ पक्ष्म वाला ; (औप ; जं २) ।

पत्तल न [पत्र] पत्ती, पर्ण ; (हे २, १७३ ; प्रामा ; सण; हे ४, ३८७) ।

पत्तलण न [पत्रलन] पत्र-समृद्ध होना, पत्र-बहुल होना ; "बाउलिआपरिसोसणकुडंगपत्तलणसुलहसंकेअ" (गा ६२६) ।

पत्तली स्त्री [दे] कर-विशेष, एक प्रकार का राज-देय ; "गिगहह तह सपत्तलिं भत्ति" (सुपा ४६३) ।

पत्ताण सक [दे] पताना, मिटाना । "पुच्छउ अन्नु कोवि जो आवइ सो तुम्हह किवाउ पत्ताणइ" (भवि), पत्ताणहि ; (भवि) ।

पत्तामोड पुंन [आमोटपत्र] तोड़ा हुआ पत्र ; "दब्भे य कुसे य पत्तामोडं च गेरहइ" (अंत ११) ।

पत्ति स्त्री [प्राप्ति] लाभ ; (दे १, ४२ ; उप २२६ ; महा ८६४) ।

पत्ति पुं [पत्ति] १ सेना-विशेष जिसमें एक रथ, एक हाथी, तीन घोड़े और पाँच पैदल हों ; २ पैदल चलने वाली सेना ; (उप ७२८ टी) ।

पत्ति ⎱ सक [प्रति + इ] १ जानना । २ विश्वास करना । ३ आश्रय करना । पत्तिअइ, पत्तियंति, पत्तिअसि, पत्तिआमि ; (से १३, ४४ ; पि ४८७ ; हे ११, ६० ; भग) । पत्तिएज्जा, पत्तिअ, पत्तिहि, पत्तिसु ; (राय ; गा २१६ ; ६६६ ; पि ४८७) । वकृ—**पत्तिअंत, पत्तियमाण** ; (गा २१६, ६७८ ; आचा २, २, २, १०) । संकृ—**पडियच्च, पत्तियाइत्ता** ; (सूअ १, ६, २७; उत्त २६, १) ।
पत्तिअ ⎰

पत्तिअ वि [पत्रित] संजात-पत्र, जिसमें पत्र उत्पन्न हुए हों वह ; (णाया १, ७ ; ११—पत्र १७१) ।

पत्तिअ वि [प्रतीति, प्रत्ययित] प्रतीति वाला, विश्वस्त ; (ठा ६—पत्र ३५५ ; कप्प ; कस) ।

पत्तिअ न [प्रीतिक] प्रीति, स्नेह ; (ठा ४, ३ ; ठा ६—पत्र ३५५) ।

पत्तिअ पुंन [प्रत्यय] प्रत्यय, विश्वास ; (ठा ४, ३—पत्र २३५ ; धर्म २) ।

पत्तिअ न [पत्रिक] मरकत-पत्र ; (कप्प) ।

पत्तिआ स्त्री [पत्रिका] पत्र, पर्ण, पत्ती ; (कुमा) ।

पत्तिआअ देखो **पत्तिअ**=प्रति + इ । पत्तिआअइ ; (प्राकृ ७५), पत्तिआअंति; (पि ४८७) ।

पत्तिआव सक [प्रति + आयय्] विश्वास कराना, प्रतीति कराना । पत्तिआवेइ; (भास २३) ।

पत्तिग देखो **पत्तिअ**=प्रीतिक ; (पंचा ७, १०) ।

पत्तिज्ज देखो **पत्तिअ**=प्रति + इ । पत्तिज्जसि, पत्तिज्जामि; (पि ४८७) ।

पत्तिज्जाव देखो **पत्तिआव** । पत्तिज्जावइ ; (सुपा ३०२), पत्तिज्जावेमि ; (धर्मवि १३४) ।

पत्तिसमिद्ध वि [दे] तीक्ष्ण ; (दे ६, १४) ।

पत्ती स्त्री [दे] पत्तों की बनी हुई एक तरह की पगड़ी जिसे भील लोग सिर पर पहनते हैं ; (दे ६, २) ।

पत्ती स्त्री [पत्नी] स्त्री, भार्या; (उप पृ १६३ ; औप ६६ ; महा ; पाअ) ।

पत्ती स्त्री [**पात्री**] भाजन, पात्र ; (उप ६३२ ; महा ; धर्मवि १२६) ।

पत्तु देखो **पाव**=प्र+आप् ।

पत्तुवगद (शौ) वि [**प्रत्युपगत**] १ सामने गया हुआ ; २ वापिस गया हुआ ; (नाट—विक्र २३) ।

पत्तेअ } न [**प्रत्येक**] १ हरएक, एक एक ; (हे २, **पत्तेग** } १० ; कुमा ; निचू १ ; पि ३४६) । २ एक की तरफ, एक के सामने ; "पत्तेयं पत्तेयं वणसंडपरिक्खित्ताओ" (जीव ३) । ३ न. कर्म-विशेष जिसके उदय से एक जीव का एक अलग शरीर होता है ; "पत्तेयतणू पत्तेउदएणं" (कम्म १, ५०) । ४ पृथग् पृथग्, अलग अलग; (कम्म १, ५०) । ५ पुं. वह जीव जिसका शरीर अलग हो, एक स्वतंत्र शरीर वाला जीव; "साहारणपत्तेआ वणस्सइजीवा दुहा सुए भणिया" (जी ८) । °**णाम** न [°**नामन्**] देखो ऊपर का ३रा अर्थ ; (राज) । °**निगोयय** पुं [°**निगोदक**] जीव-विशेष ; (कम्म ४, ८२) । °**बुद्ध** पुं [°**बुद्ध**] अनित्यतादि भावना के कारणभूत किसी एक वस्तु से परमार्थ का ज्ञान जिसको उत्पन्न हुआ हो ऐसा जैन मुनि ; (महा; नव ४३) । °**बुद्धसिद्ध** पुं [°**बुद्धसिद्ध**] प्रत्येकबुद्ध होकर मुक्ति को प्राप्त जीव ; (धर्म २) । °**रस** वि [°**रस**] विभिन्न रस वाला ; (ठा ४, ४,) । °**सरीर** वि [°**शरीर**] १ विभिन्न शरीर वाला ; "पत्तेयसरीराणं तह होंति सरीरसंघाया" (पंच ३) । २ न. कर्म-विशेष जिसके उदय से एक जीव का एक विभिन्न शरीर होता है ; (पण्ह १, १) । °**सरीरनाम** न [°**शरीरनामन्**] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (सम ६७) ।

पत्थ सक [**प्र+अर्थय्**] १ प्रार्थना करना । २ अभिलाषा करना । ३ अटकाना, रोकना । पत्थेइ, पत्थेंति ; (उव ; औप) । कर्म—पत्थिज्जसि ; (महा) । वकृ—**पत्थंत, पत्थिंत, पत्थेअमाण** ; (नाट—मालवि २५ ; सुपा २१३ ; प्रासू १२०), "कामे **पत्थेमाणा** अकामा जंति दुग्गइं" (उप ३५७ टी) । कवकृ—**पत्थिज्जंत, पत्थिज्जमाण** ; (गा ४०० ; सुर १, २० ; से ३, ३३ ; कप्प) । कृ—**पत्थ, पत्थणिज्ज, पत्थेयव्व** ; (सुपा ३७० ; सुर १, ११६ ; सुपा १४८ ; पण्ह २, ४) ।

पत्थ पुं [**पार्थ**] १ अर्जुन, मध्यम पाण्डव ; (स ६१२ ; वेणी १२६ ; कुमा) । २ पाञ्चाल देश के एक राजा का नाम ; (पउम ३७, ८) । ३ अहिलपुर नगर का एक राजा ; (सुपा ६१६) ।

पत्थ पुं [**प्रार्थ**] १ प्रार्थन, प्रार्थना ; (गय) । २ दो दिन का उपवास ; (संबोध ५८) ।

पत्थ देखो **पच्छ**=पथ्य ; (गा ८१४ ; पउम १७, ६४ ; गज) ।

पत्थ देखो **पत्थ**=प्र+अर्थय् ।

पत्थ पुं [**प्रस्थ**] १ कुडव का एक परिमाण; (बृह १; जीवस ८८ ; तंदु २६) । २ सेतिका, एक कुडव का परिमाण ; (उप पृ ६६), "पत्थगा उ जे पुरा आसी हीणमाणा उ तेधुणा" (वव १) ।

पत्थंत देखो **पत्थ**=प्र+अर्थय् ।

पत्थंत देखो **पत्था** ।

पत्थग देखो **पत्थय** ; (राज) ।

पत्थड पुं [**प्रस्तर**] १ रचना-विशेष वाला समूह ; (ठा ३, ४ ; पव १७६) । २ भवनों के बीच का अन्तराल भाग ; (पण्ण २; सम २५) ।

पत्थड वि [**प्रस्तृत**] १ बिछाया हुआ ; २ फैला हुआ ; (भग ६, ८) ।

पत्थण न [**प्रार्थन**] प्रार्थना ; (महा ; भवि) ।

पत्थणया } स्त्री [**प्रार्थना**] १ अभिलाषा, वाञ्छा; **पत्थणा** } (आव ४) । २ याचना, माँग ; ३ विज्ञप्ति, निवेदन ; (भग १२, ५ ; सुर १, १ ; सुपा २६६ ; प्रासू २१) ।

पत्थय देखो **पत्थ**=पथ्य ; (णाया १, १) ।

पत्थय वि [**प्रार्थक**] अभिलाषा करने वाला ; (सुअ १, १, २, १६ ; स २५३) ।

पत्थय देखो **पत्थ**=प्रस्थ; (उप १७६ टी; औप) ।

पत्थयण न [**पथ्यदन**] शम्बल, पाथेय, मार्ग में खाने का खुराक ; (णाया १, १५ ; स १३० ; उर ८, ७ ; सुपा ६२४) ।

पत्थर सक [**प्र+स्तृ**] १ बिछाना । २ फैलाना । संकृ—पत्थरेत्ता ; (कस; ठा ६) ।

पत्थर पुं [**प्रस्तर**] पत्थर, पाषाण ; (औप ; उव ; पउम १७, २६ ; सिरि ३३१),

"पत्थरेणाहओ कीवो पत्थरं डक्कुमिच्छई ।
मिगारिओ सरं पप्प सउप्पत्तिं विमग्गई" (सुर ६, २०७) ।

पत्थर न [**दे**] पाद-ताडन, लात ; (षड्) ।

पत्थर देखो **पत्थार**; (प्राप्र ; संक्षि २)।

पत्थरण न [**प्रस्तरण**] बिछौना ; "खट्टापत्थरणयं तहा गमं" (धर्मवि १४७)।

पत्थरपल्लिक्कअ न [**दे**] कोलाहल करना ; (दे ६, ३६)।

पत्थरा स्त्री [**दे**] चरण-घात, लात ; (दे ६, ८)।

पत्थरिअ पुं [**दे**] पल्लव ; (दे ६, २०)।

पत्थरिअ वि [**प्रस्तृत**] बिछाया हुआ ; "पत्थरिअं अत्थुअं" (पाअ)।

पत्थव देखो **पत्थाव** ; (हे १, ६८ ; कुमा ; पउम ५, २१६)।

पत्था अक [**प्र+स्था**] प्रस्थान करना, प्रवास करना। वकृ—**पत्थंत** ; (से ३, ५७)।

पत्थाण न [**प्रस्थान**] प्रयाण, गमन ; (अभि ८१ ; अजि ९)।

पत्थार पुं [**प्रस्तार**] १ विस्तार ; (उवर ९९)। २ तृण-वन ; ३ पल्लवादि-निर्मित शय्या ; ४ पिंगल-प्रसिद्ध प्रक्रिया-विशेष ; (प्राप्र)। ५ प्रायश्चित्त की रचना-विशेष ; (ठा ६—पत्र ३७१ ; कस)। ६ विनाश ; (पिंड ५०१ ; ५११)।

पत्थारी स्त्री [**दे**] १ निकर, समूह ; (दे ६, ६९)। २ शय्या, बिछौना, गुजराती में 'पथारी' ; (दे ६, ६९ ; पाअ ; सुपा ३२०)।

पत्थाव सक [**प्र+स्तावय्**] प्रारंभ करना। वकृ—**पत्थावअंत** ; (हास्य १२२)।

पत्थाव पुं [**प्रस्ताव**] १ अवसर ; २ प्रसङ्ग, प्रकरण ; (हे १, ६८ ; कुमा)।

पत्थिअ वि [**प्रस्थित**] १ जिसने प्रयाण किया हो वह; (से २, १६ ; सुर ४, १६८)। २ न. प्रस्थान, गति, चाल ; (अजि ९)।

पत्थिअ वि [**प्रार्थित**] १ जिसके पास प्रार्थना की गई हो वह ; २ जिस चीज की प्रार्थना की गई हो वह ; (भग ; सुर ६, १८ ; १६, ६ ; उव)।

पत्थिअ वि [**दे**] शीघ्र, जल्दी करने वाला ; (दे ६, १०)।

पत्थिअ वि [**प्रार्थिक**] प्रार्थी, प्रार्थना करने वाला ; (उव)।

पत्थिअ वि [**प्रास्थित**] विशेष आस्था वाला, प्रकृष्ट श्रद्धा वाला ; (उव)।

पत्थिआ° } स्त्री [**दे**] बाँस का बना हुआ भाजन-विशेष ;
पत्थिआ } (ओघ ४७६)। °**पिडग**, °**पिडय** न [°**पिटक**] बाँस का बना हुआ भाजन-विशेष ; (विपा १,२)।

पत्थिद देखो **पत्थिअ**=प्रस्थित, प्रार्थित ; (प्राकृ २५)।

पत्थिव पुं [**पार्थिव**] १ राजा, नरेश ; (णाया १, १६ ; पाअ)। २ वि. पृथिवी का विकार ; (गज)।

पत्थी स्त्री [**दे. पात्री**] पात्र, भाजन ; "अंधकरबोरपत्थिं व माउआ मह पई विलुंपंति" (गा २४० अ)।

पत्थीण न [**दे**] १ स्थूल वस्त्र, मोटा कपड़ा ; २ वि. स्थूल, मोटा ; (दे ६, ११)।

पत्थुअ वि [**प्रस्तुत**] १ प्रकरण-प्राप्त, प्राकरणिक; (सुर ३, १९६ ; महा)। २ प्राप्त, लब्ध ; (सूअ १,४, १,१७)।

पत्थुर देखो **पत्थर**=प्र+स्तृ। संकृ—**पत्थुरेत्ता**; (कस)।

पत्थेअमाण
पत्थेंत
पत्थेमाण
पत्थेयव्व } देखो **पत्थ**=प्र+अर्थय्।

पत्थोड वि [**प्रस्तोतृ**] १ प्रस्ताव करने वाला ; २ प्रवर्तक। स्त्री—°**त्थोई** ; (पण्ह १, ३—पत्र ४२)।

पथम (शौ) देखो **पढम** ; (पि १९०)।

पद देखो **पय**=पद ; (भग ; स्वप्न १५ ; हे ४, २७० ; पण्ह २, १ ; नाट—शकु ८१)।

पदअ सक [**गम्**] जाना, गमन करना। पदअइ; (हे ४, १६२)। पदअंति ; (कुमा)।

पदंसिअ वि [**प्रदर्शित**] दिखलाया हुआ, बतलाया हुआ ; (श्रा ३०)।

पदक्खिण वि [**प्रदक्षिण**] १ जिसने दक्षिण की तरफ से लेकर मण्डलाकार भ्रमण किया हो वह ; २ न. दक्षिणावर्त भ्रमण ; "पदक्खिणीकरअंतो भट्टारं" (प्रयौ ३५)। देखो **पयाहिण**।

पदक्खिण सक [**प्रदक्षिणय्**] प्रदक्षिणा करना, दक्षिण से लेकर मण्डलाकार भ्रमण करना। हेकृ—**पदक्खिणेउं** ; (पउम ४८, १११)।

पदक्खिणा स्त्री [**प्रदक्षिणा**] दक्षिण की ओर से मण्डलाकार भ्रमण; (नाट—चैत ३८)।

पदण न [**पदन**] प्रत्यायन, प्रतीति कराना ; (उप ८८३)।

पदण (शौ) न [**पतन**] गिरना ; (नाट—मालती ३७)।

पदम (शौ) देखो **पउम** ; (नाट—मृच्छ १३९)।

पदय देखो **पयय**=पदग, पदक, पतग, पतंग ; (इक)।

पदरिसिअ देखो **पदंसिअ** ; (अवि)।

पदहण न [**प्रदहन**] संताप, गरमी ; (कुमा)।

पदाइ वि [**प्रदायिन्**] देने वाला ; (नाट—विक ८)।

पदाण [**प्रदान**] दान, वितरण ; (ओघ ; अभि ३५)।

पदाहि (शौ) पुं [**पदाति**] पैदल चलने वाला सैनिक ; (प्रयौ १७ ; नाट—वेणी ६१) ।
पदायग वि [**प्रदायक**] देने वाला ; (विसे ३२००) ।
पदाय देखो **पयाय** ; (गा ३२६) ।
पदाहिण वि [**प्रदक्षिण**] प्रकृष्ट दक्षिण, प्रकर्ष से दक्षिण दिशा में स्थित ; (जीव ३) । देखो **पदक्खिण** ।
पदिक्किदि (शौ) देखो **पडिकिदि**; (मा १० ; नाट—विक २१) ।
पदित्त देखो **पलित्त** ; (राज) ।
पदिस° स्त्री [**प्रदिशा**] विदिशा, ईशान आदि कोण ; "लभंति पाणा पदिसो दिसासु य" (आचा) ।
पदिस्सा देखो **पदेक्ख** ।
पदीव सक [**प्र + दीपय्**] १ जलाना । २ प्रकाश करना । पदीवेसि ; (पि २४४) । वकृ—**पदीवेंत** ; (पउम १०२, १०) ।
पदीव देखो **पईव**=प्रदीप ; (नाट—मृच्छ ३०) ।
पदीविआ स्त्री [**प्रदीपिका**] छोटा दिया ; (नाट—मृच्छ ५१) ।
पदुट्ठ वि [**प्रद्विष्ट, प्रदुष्ट**] विशेष द्वेष को प्राप्त; (उत्त ३२ ; बृह ३) ।
पदुमोइय न [**पदोद्देश्क**] पद-विभाग और शब्दार्थ मात्र का पारायण ; (राज) ।
पदूमिय वि [**प्रदावित, प्रदून**] अत्यन्त पीड़ित; (बृह ३) ।
पदूस सक [**प्र + द्विष्**] द्वेष करना । पदूसंति ; (पंचा २, ३५) ।
पदूसणया स्त्री [**प्रद्वेषणा, प्रदूषणा**] द्वेष, मात्सर्य ; (उप ४८६) ।
पदेक्ख सक [**प्र + दृश्**] प्रकर्ष से देखना । पदेक्खइ ; (भवि) । संकृ—"**पदिस्सा** य दिस्सा वयमाणा" (भग १८,८ ; पि ३३४) ।
पदेस देखो **पएस**=प्रदेश ; (भग) ।
पदेस पुं [**प्रद्वेष**] द्वेष ; (धर्मसं ६७) ।
पदेसिअ वि [**प्रदेशित**] प्ररूपित, प्रतिपादित ; (आचा) ।
पदोस देखो **पओस**=दे. प्रद्वेष ; (अंत १३ ; निचू १) ।
पदोस देखो **पओस**=प्रदोष ; (राज) ।
पद्द न [**दे**] १ ग्राम-स्थान ; (दे ६, १) । २ छोटा गाँव; (पाअ) ।
पद्द न [**पद्य**] श्लोक, वृत्त, काव्य ; (प्राकृ २१) ।
पद्देस देखो **पदेस**=प्रद्वेष ; (सुअ १, १६, ३) ।
पद्धइ स्त्री [**पद्धति**] १ मार्ग, रास्ता ; (सुपा १८६) । २ पङ्क्ति, श्रेणी; (ठा २, ४) । ३ परिपाटी, क्रम; (आवम) । ४ प्रक्रिया, प्रकरण ; (कप्पा २) ।
पद्धंस पुं [**प्रध्वंस**] ध्वंस, नाश । °**ाभाव** पुं [°**ाभाव**] अभाव-विशेष, वस्तु के नाश होने पर उसका जो अभाव होता है वह ; (विसे १८३७) ।
पद्धर वि [**दे**] ऋजु, सरल, सीधा ; (दे ६, १०) । २ शीघ्र ; गुजराती में 'पाधरु' : "पद्धरपएहिं सुहडं पयारेइ" (सिरि ४३५) ।
पद्धल वि [**दे**] दोनों पार्श्वों में अ-प्रवृत्त ; (षड्) ।
पद्धार वि [**दे**] जिसका पूँछ कट गया हो वह, पूँछ-कटा ; (दे ६, १३) ।
पधाइय देखो **पधाविय** ; (भवि) ।
पधाण देखो **पहाण** ; (नाट—मृच्छ २०५) ।
पधार देखो **पहार**=प्र + धारय् । भूका—पधारित्थ ; (औप ; आया १, २—पत्र ८८)
पधाव सक [**प्र + धाव्**] दौड़ना, अधिक वेग से जाना । संकृ—**पधाविअ** ; (नाट) ।
पधावण न [**प्रधावन**] १ दौड़, वेग से गमन ; २ कार्य की शीघ्र सिद्धि ; (आ १) । ३ प्रक्षालन; (धर्मसं १०७८) ।
पधाविअ वि [**प्रधावित**] १ दौड़ा हुआ ; (महा ; पण्ह १, ४) । २ गति-रहित ; (राज) ।
पधाविर वि [**प्रधावितृ**] दौड़ने वाला ; (आ २८) ।
पधूवण न [**प्रधूपन**] १ धूप देना । २ एक प्रकार का आलेपन द्रव्य ; (कस) ।
पधूविय वि [**प्रधूपित**] जिसको धूप दिया गया हो वह ; (राज) ।
पधोअ सक [**प्र + धाव्**] धोना । संकृ—**पधोइत्ता** ; (आचा २, १, ६, ३) ।
पधोअ वि [**प्रधौत**] धोया हुआ ; (औप) ।
पधोव सक [**प्र + धाव्**] धोना । पधोवेंति ; (पि ४८२) ।
पन देखो **पंच** । °**र**, °**रस** त्रि. ब. [°**दशन्**] पनरह, दस और पाँच, १५ ; (कम्म १ ; ४, ५२ ; ६८ ; जी २५) ।
पनय (पै. चूपै) देखो **पणय**=प्रणय ; (हे ४, ३२६) ।
पन्न देखो **पण्ण**=पर्ण ; (सुपा ३३६ ; कुप्र ४०८) ।
पन्न देखो **पण्ण**=दे ; (भग ; कम्म ४, ५४) ।
पन्न देखो **पण्ण**=प्रज्ञ ; (आचा ; कुप्र ४०८) ।

पन्न वि [**प्राज्ञ**] १ पंडित, जानकार, विद्वान् ; (ठा ७; उप ५६१ ; धर्मसं ४५२) । २ वि. प्रज्ञ-संबन्धी ; (सूअ २, १, ६६) ।

पन्न देखो **पंच** । °र, °रस त्रि. ब. [°**दशन्**] पनरह, १५; (हे २२ ; सम २६ ; भग ; गण) । °रस, °रसम वि [°**दश**] पनरहवाँ, १५वाँ ; (सुर १५, २५० ; पउम १५, १००) । °रसी स्त्री [°**दशी**] १ पनरहवीं ; २ पनरहवीं तिथि ; (कप्प) ।

पन्न देखो **पण्णिअ** = पण्य ; (उप १०३१ टी) ।

पन्नंगणा स्त्री [**पण्याङ्गना**] वेश्या, वाराङ्गना ; (उप १०३१ टी) ।

पन्नग देखो **पण्णग** = पन्नग ; (विपा १, ७ ; सुर २, १३८) ।

पन्नट्ठि देखो **पण्णट्ठि** ; (कप्प) ।

पन्नत्त देखो **पण्णत्त** ; (आया १, १ ; भग ; सम १) ।

पन्नत्तरि स्त्री [**पञ्चसप्तति**] पचहत्तर, ७५ ; (सम ८५ ; ति ३) ।

पन्नत्ति देखो **पण्णत्ति** ; (सुपा १५३ ; संति ५ ; महा) । ५ प्रकृष्ट ज्ञान ; ६ जिससे प्ररूपणा किया जाय वह ; (तंदु ५४) । ७ पाँचवाँ अंग-ग्रन्थ, भगवतीसूत्र ; (श्रावक ३३२) ।

पन्नत्तु वि [**प्रज्ञापयितृ**] आख्याता, प्रतिपादक ; (पि ३९०) ।

पन्नपत्तिया स्त्री [**प्रज्ञप्रत्यया**] देखो **पुन्नपत्तिया**; (कप्प) ।

पन्नपन्नइम देखो **पणपन्नइम** ; (पि ४४६) ।

पन्नय देखो **पण्णग** ; (पाअ) । °रिउ पुं [°**रिपु**] गरुड़ पक्षी ; (पाअ) ।

पन्नया स्त्री [**पन्नगा**] भगवान् धर्मनाथजी की शासन-देवी ; संति १०) ।

पन्नव देखो **पण्णव** । पन्नवेइ ; (उव) । कर्म— पन्नविज्जइ; (उव) । वकृ—**पन्नवयंत** ; (सम्म १३४) । संकृ—**पन्नवेऊणं** ; (पि ५८५) ।

पन्नवग वि [**प्रज्ञापक**] प्रतिपादक, प्ररूपक; (कम्म ५, ८५ टी) ।

पन्नवण देखो **पण्णवण** ; (सुपा २६६) ।

पन्नवणा देखो **पण्णवणा** ; (भग ; पण्ण १ ; ठा ३, ४) ।

पन्नवय देखो **पन्नवग** ; (सम्म १६) ।

पन्नवयंत देखो **पन्नव** ।

पन्ना देखो **पण्णा**=प्रज्ञा ; (आचा ; ठा ४, १ ; १०) ।

पन्ना देखो **पण्णा**=दे; (पव ५०) ।

पन्नाड सक [**मृद्**] मर्दन करना । पन्नाडइ ; (हे ४, १२६) ।

पन्नाडिअ वि [**मृदित**] जिसका मर्दन किया गया हो वह ; (पाअ ; कुमा) ।

पन्नाण देखो **पण्णाण** ; (आचा ; पि ६०१) ।

पन्नारस (अप) त्रि. ब. [**पञ्चदशन्**] पनरह, १५ ; (भवि) ।

पन्नास देखो **पण्णास** ; (सम ७० ; कुमा) । स्त्री— °सा ; (कप्प) । °इम वि [°**तम**] पचासवाँ, ५० वाँ; (पउम ५०, २३) ।

पन्ह देखो **पण्ह** ; (कप्प) ।

पन्हु (अप) देखो **पण्हुअ** = दे. प्रस्नव ; (भवि) ।

पपंच देखो **पवंच** ; (सुपा २३५) ।

पपलीण वि [**प्रपलायित**] भागा हुआ ; (पि ३४६ ; ३६७ ; नाट—मृच्छ ५८) ।

पपिआमह पुं [**प्रपितामह**] १ ब्रह्मा, विधाता ; (राज) । २ पितामह का पिता ; (धर्मसं १४६) ।

पपुत्त पुं [**प्रपुत्र**] पौत्र, पुत्र का पुत्र ; (सुपा ४०७) ।

पपुत्त } पुं [**प्रपौत्र**] पौत्र का पुत्र ; पोते का पुत्र ;
पपोत्त } (विसे ८६२ ; राज) ।

पप्प सक [**प्र+आप्**] प्राप्त करना । पप्पोइ, पप्पोत्ति ; (पि ५०४ ; उत्त १४, १४) । पप्पोदि (शौ) ; (पि ५०४) । संकृ— **पप्प** ; (पणण १७ ; ओघ ५५ ; विसे ५५१) । कृ—**पप्प** ; (विसे २६८७) ।

पप्पग न [**दे. पर्पक**] वनस्पति-विशेष ; (सूअ २, २, ६) ।

पप्पड } पुंस्त्री [**पर्पट**] १ पापड़, मूँग या उर्द की बहुत
पप्पडग } पतली एक प्रकार की रोटी; (पव ३७ ; भवि) । २ पापड़ के आकार वाला शुष्क मृत्खण्ड ; (निचू १) । °पायय पुं [°**पाचक**] नरकावास-विशेष; (देवेन्द्र ३०) । °मोदय पुं [°**मोदक**] एक प्रकार की मिष्ट वस्तु ; (पणण १७—पत्र ५३३) ।

पप्पडिया स्त्री [**पर्पटिका**] तिल आदि की बनी हुई एक प्रकार की खाद्य वस्तु ; (पणण १ ; पिंड ५५६) ।

पप्पल देखो **पप्पड** ; (नाट—विक्र २१) ।

पप्पीअ पुं [**दे**] चातक पक्षी ; (दे ६, १२) ।

पप्फुअ वि [**प्रप्लुत**] १ जलार्द्र, पानी से भीजा हुआ; (पण्ह १, १ ; गाया १, ८)। २ व्याप्त ; "पयपप्फुअ-वंजणाइं च" (पव ४ टी)। ३ न. कूदना, लाँघना ; (गउड १२८)।

पप्फोइ } देखो **पप्प**।
पप्फोत्ति }

पप्फंदण न [**प्रस्पन्दन**] प्रचलन, फरकना ; (राज)।

पप्फाड पुं [**दे**] अग्नि-विशेष ; (दे ६, ६)।

पप्फिडिअ वि [**दे**] प्रतिफलित ; (दे ६, २२)।

पप्फुअ वि [**दे**] १ दीर्घ, लम्बा ; २ उड्डीयमान, उड़ता ; (दे ६, ६४)।

पप्फुट्ट अक [**प्र+स्फुट्**] १ खिलना ; २ फूटना। पप्फुट्टइ; (प्राकृ ७४)।

पप्फुडिअ पुं [**प्रस्फुटित**] नरकावास-विशेष ; (देवेन्द्र २६)।

पप्फुय देखो **पप्फुअ**; "बाहपप्फुयच्छो" (सुख २, २६)।

पप्फुर अक [**प्र+स्फुर्**] १ फरकना, हिलना। २ काँपना। पप्फुरइ ; (से १५, ७७ ; गा ६४७)।

पप्फुरिअ वि [**प्रस्फुरित**] फरका हुआ ; (दे ६, १६)।

पप्फुल्ल अक [**प्र+फुल्ल्**] विकसना। वकृ—**पप्फुल्लंत**; (रंभा)।

पप्फुल्ल वि [**प्रफुल्ल**] विकसित, खिला हुआ ; (गाया १, १३ ; उप पृ ११४; पउम ३, ६६ ; सुर २, ७६ ; षड् ; गा ६३६ ; ६७०), "इअ भणिएण णअंगी पप्फुल्लविलोअणा जाआ" (काप्र १६१)।

पप्फुल्लिअ वि [**प्रफुल्लित**] ऊपर देखो ; (सम्मत्त १८६; भवि)।

पप्फुल्लिआ स्त्री [**प्रफुल्लिका**] देखो **उप्फुल्लिआ**; (गा १६६ अ)।

पप्फोड देखो **पप्फुट्ट**। पप्फोडइ, पप्फोडए ; (धात्वा १४३)।

पप्फोड सक [**प्र+स्फोटय्**] १ झाड़ना, झाड़ कर गिराना। २ आस्फालन करना। ३ प्रक्षेपण करना। पप्फोडइ ; (गा ४३३)। पप्फोडे; (उत्त २६, २४)। वकृ—**पप्फोडंत, पप्फोडयंत, पप्फोडेमाण** ; (गा १४५, पि ४६१; ठा ६)। संकृ—"**पप्फोडेऊण** सेसयं कम्मं" (आउ ६७)।

पप्फोडण न [**प्रस्फोटन**] १ झाड़ना, प्रकृष्ट धूनन ; (ओघ भा १६३)। २ आस्फोटन, आस्फालन ; (पण्ह २, ५—पत्र १४८ ; पिंड २६३)।

पप्फोडणा स्त्री [**प्रस्फोटना**] ऊपर देखो ; (ओघ २६६; उत्त २६, २६)।

पप्फोडिअ वि [**दे. प्रस्फोटित**] निर्भाटित, झाड़ कर गिराया हुआ; (दे ६, २७; पाअ), "पप्फोडिअमोहजालस्स" (पडि)। २ फोड़ा हुआ, तोड़ा हुआ ; "पप्फोडिअसउणि-अंडगं व ते हुंति निस्सारा" (संबोध १७)।

पप्फोडेमाण देखो **पप्फोड**=प्र+स्फोटय्।

पफुल्ल देखो **पप्फुल्ल**; (षड्)।

पफुल्लिअ देखो **पप्फुल्लिअ** ; (हे ४, ३६६ ; पिंग)।

पबंध पुं [**प्रबन्ध**] १ सन्दर्भ, ग्रन्थ, परस्पर अन्वित वाक्य-समूह, (रंभा ८)। २ अ-विच्छेद, निरन्तरता; (उत्त ११, ७)।

पबंधण न [**प्रबन्धन**] प्रबन्ध, संदर्भ, अन्वित वाक्य-समूह की रचना; "कहाए य पबंधणे" (सम २१)।

पबल वि [**प्रबल**] बलिष्ठ, प्रचण्ड, प्रखर; (कुमा)।

पबाहा स्त्री [**प्रबाधा**] प्रकृष्ट बाधा, विशेष पीड़ा; (गाया १, ४)।

पबुद्ध वि [**प्रबुद्ध**] १ प्रवीण, निपुण; (से १२, ३७)। २ जागा हुआ; (सुर ५, १२६)। ३ जिसने अच्छी तरह जानकारी प्राप्त की हो वह; (आचा)।

पबोध सक [**प्र+बोधय्**] १ जागृत करना। २ ज्ञान कराना। कर्म— पबोधीआमि; (पि ५४३)।

पबोधण न [**प्रबोधन**] प्रकृष्ट बोधन; (राज)।

पबोह देखो **पबोध**। कृ—**पबोहणीय**; (पउम ७०, २८)।

पबोह पुं [**प्रबोध**] १ जागरण ; २ ज्ञान, समझ ; (चारु ५४ ; पि १६०)।

पबोहण देखो **पबोधण** ; (राज)।

पबोहय वि [**प्रबोधक**] प्रबोध-कर्ता ; (विसे १७३)।

पबोहिअ वि [**प्रबोधित**] १ जगाया हुआ ; २ जिसको ज्ञान कराया गया हो वह ; (सुपा ३१३)।

पब्बल देखो **पबल** ; (से ४, २५ ; ६, ३३)।

पब्बाल देखो **पव्वाल**=छादय्। पब्बालइ ; (हे ४, २१)।

पब्बाल देखो **पव्वाल**=प्लावय्। पब्बालइ ; (हे ४, ४१)।

पब्बुद्ध देखो **पबुद्ध** ; (पि १६६)।

पब्भ वि [**प्रह्व**] नम्र ; (औप ; प्राकृ २४)।

पब्भट्ट } वि [**प्रभ्रष्ट**] १ परिभ्रष्ट, प्रस्खलित, चूका हु-
पब्भसिअ } आ ; (पण्ह १, ३ ; अभि ११६; गा २१८; सुर ३, १२३ ; गा ३३ ; ६५)। २ विस्मृत ; (से १४,

४१)। ३ पुं. नरकावास-विशेष ; (देवेन्द्र २८)।
पब्भार पुं [दे. प्राग्भार] १ संघात, समूह ; जत्था; (दे ६, ६६ ; से ४, २० ; सुर १, १२३ ; कप्पू ; गउड ; कुलक २१)।
पब्भार पुं [दे] गिरि-गुफा, पर्वत-कन्दरा ; (दे ६, ६६), "पब्भारकंदरगया साहंती अप्पणो अट्ठं" (पव ८१)।
पब्भार पुं [प्राग्भार] १ प्रकृष्ट भार ; "कुमेरं संकमियरज्जपब्भारो" (धम्म ८ टी)। २ ऊपर का भाग; (से ४, २०)। ३ थोड़ा नमा हुआ पर्वत का भाग; (णाया १, १—पत्र ६३; भग ५, ७)। ४ एक देश, एक भाग ; (से १, ५८)। ५ उत्कर्ष, परभाग ; (गउड)। ६ पुंन. पर्वत के ऊपर का भाग ; (णंदि)। ७ वि. थोड़ा नमा हुआ, ईषदवनत ; (अंत ११ ; ठा १०)।
पब्भारा स्त्री [प्राग्भारा] दशा-विशेष, पुरुष की सत्तर से अस्सी वर्ष तक की अवस्था ; (ठा १०—पत्र ५१६ ; तंदु १६)।
पब्भूअ वि [प्रभूत] उत्पन्न; "मंडुक्कीए गब्भे, पब्भूओ दद्दुरत्तेण" (धर्मवि ३५)।
पब्भोअ पुं [दे. प्रभोग] भोग, विलास ; (दे ६, १०)।
पभ पुं [प्रभ] १ हरिकान्त-नामक इन्द्र का एक लोकपाल ; (ठा ४, १ ; इक)। २ द्वीप-विशेष और समुद्र-विशेष का अधिपति देव ; (राज)।
°**पभ** वि [प्रभ] सदृश, तुल्य ; (कप्प ; उवा)।
°**पभइ** देखो °**पभिइ**; "चंडाणं चंडरुद्दपभईणं" (अज्झ १४१)।
पभंकर पुं [प्रभङ्कर] १ ग्रह-विशेष, ज्योतिष-देव-विशेष ; (ठा २, ३)। २ पुंन. देव-विमान विशेष; (सम ८; १४ ; पव २६७)।
पभंकर वि [प्रभाकर] प्रकाशक ; "सव्वलोयपभंकरो" (उत्त २३, ७६)।
पभंकरा स्त्री [प्रभङ्करा] १ विदेह-वर्ष की एक नगरी का नाम ; (ठा २, ३)। २ चन्द्र की एक अग्र-महिषी का नाम; (ठा ४, १)। ३ सूर्य की एक अग्रमहिषी का नाम ; (भग १०, ५)।
पभंकरावई स्त्री [प्रभङ्करावती] विदेह वर्ष की एक नगरी; (आचू १)।
पभंगुर वि [प्रभङ्गुर] अति विनश्वर ; (आचा)।
पभंजण पुं [प्रभञ्जन] १ वायुकुमार-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र ; (ठा २, ३ ; ४, १ ; सम ६६)। २ लवणसमुद्र के एक पातालकलश का अधिष्ठायक देव; (ठा ४, २)। ३ वायु, पवन ; (से १४, ६६)। ४ मानुषोत्तर पर्वत के एक शिखर का अधिपति देव; (राज)। °**तणअ** पुं [°तनय] हनूमान् ; (से १४, ६६)।
पभंसण न [प्रभ्रंशन] स्खलना ; (धर्मसं १०७६)।
पभकंत पुं [प्रभकान्त] १—२ विद्युत्कुमार देवों के हरिकान्त और हरिस्सह-नामक दोनों इन्द्रों के लोकपालों के नाम ; (ठा ४, १—पत्र १९७ ; इक)।
पभण सक [प्र + भण्] कहना, बोलना। पभणइ ; (महा; सण)।
पभणिय वि [प्रभणित] उक्त, कथित ; (सण)।
पभम सक [प्र + भ्रम्] भ्रमण करना, भटकना। पभमेसि ; (श्रु १५३)।
पभव अक [प्र + भू] १ समर्थ होना, पहुँचना। २ होना, उत्पन्न होना। पभवइ ; (पि ४७५)। वकृ—**पभवंत** ; (सुपा ८६ ; नाट—विक्र ४५)।
पभव पुं [प्रभव] १ उत्पत्ति, प्रसूति ; (ठा ६ ; वसु)। २ प्रथम उत्पत्ति-कारण ; (णंदि)। ३ एक जैन मुनि, जम्बुस्वामी का शिष्य ; (कप्प ; वसु ; णंदि)।
पभवा स्त्री [प्रभवा] तृतीय वासुदेव की पटरानी ; (पउम २०, १८६)।
पभविय वि [प्रभूत] जो समर्थ हुआ हो ; "सा विज्जा सिद्धुए उदग्गपुण्णम्मि पभविया नेव" (धर्मवि १२३)।
पभा स्त्री [प्रभा] १ कान्ति, तेज; (महा ; धर्मसं १३३३)। २ प्रभाव; "निच्चुज्जोया रम्मा,सयंपभा ते विरायंति" (देवेन्द्र ३२०)।
पभाइअ } पुंन [प्रभात] १ प्रातः काल, सुबह; (पउम
पभाय } ७०, ५६; सुर ३, ६६; महा; सण २४४)। २ वि. प्रकाशित ; "रयणीए पभायाए" (उप ६४८ टी)। °**तणय** वि [°संबन्धिन्] प्राभातिक, प्रभात-संबन्धी; (सुर ३, २४८)।
पभार पुं [प्रभार] प्रकृष्ट भार ; (सम १५३)।
पभाव देखो **पहाव**=प्र + भावय्। पभावेइ, पभावंति ; (उव ; पव १४८)। वकृ—**पभाविंत** ; (सुपा ३७६)।
पभाव देखो **पहाव**—प्रभाव ; (स्वप्न ६८)।
पभावई स्त्री [प्रभावती] १ उन्नीसवें जिन-देव की माता का नाम; (सम १५१)। २ रावण की एक पत्नी का नाम; (पउम ७४, ११)। ३ उद्रायन राजर्षि की पटरानी और

चेडा नरेश की पुत्री का नाम; (पडि)। ४ बलदेव के पुत्र निषध की भार्या ; (आचू१)। ५ राजा बल की पत्नी; (भग ११, ११)।

पभावग वि [**प्रभावक**] प्रभाव बढ़ाने वाला, शोभा की वृद्धि करने वाला; (श्रा ६; द्र २३)। २ उन्नति-कारक; ३ गौरव-जनक; (कुप्र १६८)।

पभावण न [**प्रभावन**] नीचे देखो ; (श्रु ५)।

पभावणा स्त्री [**प्रभावना**] १ माहात्म्य, गौरव; २ प्रसिद्धि, प्रख्याति; (णाया १, १६—पत्र १२२; श्रा ६ ; महा)।

पभावय वि [**प्रभावक**] गौरव बढ़ाने वाला ; (संबोध ३१)।

पभावाल पुं [**प्रभावाल**] वृक्ष-विशेष ; (राज)।

पभाविंत देखो **पभाव**=प्र+भावय् ।

पभास सक [**प्र+भाष्**] बोलना, भाषण करना। पभासंति ; (विसे ४६६ टी)। वकृ—**पभासंत, पभासयंत, पभासमाण**; (उप पृ २३ ; पउम ५५, १८ ; ८६, १०)।

पभास अक [**प्र+भास्**] प्रकाशित होना। पभासिंति ; (सुज्ज १६)। भूका—पभासिंसु ; (भग ; सुज्ज १६)। भवि—पभासिस्संति ; (सुज्ज १६)। वकृ—**पभासमाण**; (कप्प)।

पभास सक [**प्र+भासय्**] प्रकाशित करना। प्रभासेइ ; (भग)। पभासंति ; (सुज्ज ३ पत्र ६४)। वकृ—**पभासयंत, पभासेमाण**; (पउम १०८, ३३ ; रयण ७५; कप्प; उवा; औप; भग)।

पभास पुं [**प्रभास**] १ भगवान् महावीर के एक गणधर का नाम; (सम १६ ; कप्प)। २ एक विकटापाती पर्वत का अधिष्ठाता देव ; (ठा २, ३—पत्र ६६)। ३ एक जैन मुनि का नाम; (धर्म ३)। ४ एक चित्रकार का नाम ; (धम्म ३१ टी)। ५ न. तीर्थ-विशेष; (जं ३; महा)। ६ देव-विमान विशेष; (सम १३; ४१)। °**तित्थ** न [°**तीर्थ**] तीर्थ-विशेष, भारतवर्ष की पश्चिम दिशा में स्थित एक तीर्थ; (इक)।

पभासा स्त्री [**प्रभासा**] अहिंसा, दया ; (पण्ह २, १)।

पभासिय वि [**प्रभाषित**] उक्त, कथित; (सूअ १, १, १, १६)।

पभासेमाण देखो **पभास**=प्र+भासय् ।

पभिइ देखो **पभिइं**; (अ ५५)।

°**पभिइ** वि. ब. [°**प्रभृति**] इत्यादि, वगैरह; (भग; उवा ; महा)।

पभिइं / **पभिई** / **पभीइ** / **पभीइं** अ [**प्रभृति**] प्रारम्भ कर, (वहां से) शुरू कर, लेकर ; "बालभावाओ पभिइं" (सुर ४,१६७; कप्प; महा; स ७३६; ३७५ टि)।

पभीय वि [**प्रभीत**] अति भीत, अत्यन्त डरा हुआ ; (उत्त ५, ११)।

पभु पुं [**प्रभु**] १ इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम ; (पउम ५, ७)। २ स्वामी, मालिक ; (पउम ६३, ३६; बृह २)। ३ राजा, नृप , "पभू राया अणुप्पभू जुवराया" (निचू २)। ४ वि. समर्थ, शक्तिमान् ; (श्रा २७; भग १५; उत्रा, ठा ४, ४)। ५ योग्य, लायक ; "पभुत्ति वा जोग्गोत्ति वा एगट्ठा" (निचू २०)।

पभुंज सक [**प्र+भुज्**] भोग करना। पभुंजेदि (शौ); (द्रव्य ६)।

पभुति (पै) देखो **पभिइं** ; (कुमा)।

पभुत्त वि [**प्रभुक्त**] १ जिसने खाने का प्रारम्भ किया हो वह; (सुर १०, ५८)। २ जिसने भोजन किया हो वह; (स १०४)।

पभूइ / **पभूइं** देखो **पभिइं** ; (पउम ६, ७६ ; स २७५)।

पभूय वि [**प्रभूत**] प्रचुर, बहुत ; (भग ; पउम ५, ५ ; णाया १, १ ; सुर ३, ८१ ; महा)।

पभोय (अप) देखो **उवभोग**; "भोय-पभोयमाणु जं किज्जइ" (भवि)।

पमइल वि [**प्रमलिन**] अति मलिन ; (णाया १, १)।

पमक्खण न [**प्रम्रक्षण**] १ अभ्यञ्जन, विलेपन ; २ विवाह के समय किया जाता एक तरह का उबटन; (स ७४)।

पमक्खिअ वि [**प्रम्रक्षित**] १ विलिप्त ; २ विवाह के समय जिसको उबटन किया गया हो वह ; (वसु ; सम ७५)।

पमज्ज सक [**प्र+मृज्, मार्ज्**] मार्जन करना, साफ-सुथरा करना, झाड़ आदि से धूलि वगैरः को दूर करना। पमज्जइ; (उव ; उवा)। पमज्जिया ; (आचा)। वकृ—**पमज्जेमाण**; (ठा ७)। संकृ—**पमज्जित्ता**; (भग ; उवा)। हेकृ—**पमज्जित्तु**; (पि ५७७)।

पमज्जण न [**प्रमार्जन**] मार्जन, भूमि-शुद्धि; (अंत)।

पमज्जणिया } स्त्री [**प्रमार्जनी**] झाडू, भूमि साफ करने
पमज्जणी } का उपकरण; (णाया १, ७; धर्म ३) ।
पमज्जय वि [**प्रमार्जक**] प्रमार्जन करने वाला ; (दे ५, १८) ।
पमज्जिअ वि [**प्रमृष्ट, प्रमार्जित**] साफ किया हुआ ; (उवा; महा) ।
पमत्त वि [**प्रमत्त**] १ प्रमाद-युक्त, असावधान, प्रमादी, बेदरकार; (उव ; अभि १८५ ; प्रासू ६८) । २ न. छठवाँ गुण-स्थानक; (कम्म ४, ४७; ५६) । ३ प्रमाद ; (कम्म २) । °**जोग** पुं [°**योग**] प्रमाद-युक्त चेष्टा ; (भग) । °**संजय** पुं [°**संयत**] प्रमादी साधु, प्रमाद-युक्त मुनि ; (भग ३,३) ।
पमद देखो **पमय**; (स्वप्न ५१; कप्पू) ।
पमदा देखो **पमया**; (नाट—शकु २) ।
पमद्द सक [**प्र + मृद्**] १ मर्दन करना । २ विनाश करना । ३ कम करना । ४ चूर्ण करना । ५ रुई की पूणी बनाना । वकृ—**पमद्दमाण** ; (पिंड ५७४) ।
पमद्द पुं [**प्रमर्द**] १ ज्योतिष शास्त्र में प्रसिद्ध एक योग; (सम १३; सुज्ज १०, ११) । २ संघर्ष, संमर्द ; (राज) । ३ वि. मर्दन करने वाला; ४ विनाशक ; "सारं मणगइ सव्वं पच्चक्खाणं खु भवदुहपमद्दं" (संबोध ३७) ।
पमद्दण न [**प्रमर्दन**] १ चूरना, चूर्ण करना; (राय) । २ नाश करना । ३ कम करना; (सम १२२) । ४ रुई की पूणी करना ; (पिंड ६०३) । ५ वि. विनाश करने वाला ; (पंचा १४, ४२) ।
पमद्दि वि [**प्रमर्दिन्**] प्रमर्दन करने वाला; (औप; पि २६१) ।
पमय पुं [**प्रमद**] १ आनन्द, हर्ष ; (काल ; श्रा २७) । २ न. धतूरे का फल । °**च्छी** स्त्री [°**ाक्षी**] स्त्री, महिला; (सुपा २३०) । °**वण** न [°**वन**] राजा का अन्तःपुर-स्थित वन ; (से ११, ३७ ; णाया १, ८; १३) ।
पमया स्त्री [**प्रमदा**] उत्तम स्त्री, श्रेष्ठ महिला; (उव; बृह ४) ।
पमह पुं [**प्रमथ**] शिव का अनुचर ; (पाअ) । °**णाह** पुं [°**नाथ**] महादेव ; (समु १५०) । °**ाहिव** पुं [°**ाधिप**] शिव, महादेव ; (गा ४४८) ।
पमा सक [**प्र + मा**] सत्य सत्य ज्ञान करना । कर्म—पमीयए; (विसे ६४६) ।
पमा स्त्री [**प्रमा**] १ प्रमाण, परिमाण; "पीअलधाउविणिम्मिअ-विहत्थिपमपमाणुलिंगआहरणं" (कुमा) । २ प्रमाण, न्याय; "अतिप्पसंगो पमासिद्धो" (धर्मसं ६८१) ।
पमा° देखो **पमाय**=प्रमाद; (वव १) ।
पमाइ वि [**प्रमादिन्**] प्रमादी, बेदरकार; (सुपा ५४३; उव; आचा) ।
पमाइअव्व देखो **पमाय**—प्र + मद् ।
पमाइल्ल देखो **पमाइ**; "धम्मपमाइल्ले" (उप ७२८ टी) ।
पमाण सक [**प्र + मानय्**] विशेष रीति से मानना, आदर करना । कृ—**पमाणणिज्ज** ; (श्रा २७) ।
पमाण न [**प्रमाण**] १ यथार्थ ज्ञान; सत्य ज्ञान; २ जिससे वस्तु का सत्य सत्य ज्ञान हो वह, सत्य ज्ञान का साधन; (अणु) । ३ जिससे नाप किया जाय वह; "अणुप्पमाणंपि" (श्रा २७; भग ; अणु) । ४ नाप, माप, परिमाण; (विचार ५४४; ठा ५, ३ ; जीवस ६४ ; भग ; विपा १, २) । ५ संख्या ; (अणु ; जी २६) । ६ प्रमाण-शास्त्र, न्याय-शास्त्र, तर्क-शास्त्र; "लक्खणसाहित्तपमाणजोइसाईणि सा पढइ" (सुपा १०३) । ७ पुंन. सत्य रूप से जिसका स्वीकार किया जाय वह ; ८ माननीय , आदरणीय ; ६ सच्चा, सही, ठीक ठीक, यथार्थ; "कमागओ जो य जेसिं किल धम्मो सो य पमाणो तेसिं" (सुपा ११०; श्रा १४),
"सुचिरंपि अच्छमाणो नलथंभो पिच्छ इच्छुवाडम्मि ।
कीस न जायइ महुरो जइ संसग्गी पमाणं ते" (प्रासू ३३) ।
°**वाय** पुं [°**वाद**] न्याय-शास्त्र, तर्क-शास्त्र; (सम्मत्त ११७) । °**संवच्छर** पुं [°**संवत्सर**] वर्ष-विशेष; (सुज्ज १०, २०) ।
पमाण सक [**प्रमाणय्**] प्रमाण रूप से स्वीकार करना । पमाण, पमाणह; (पिंग) । वकृ—**पमाणंत** ; (उवर १८६) । कृ—**पमाणियव्व** ; (सिरि ६१) ।
पमाणिअ वि [**प्रमाणित**] प्रमाण रूप से स्वीकृत ; (सुपा ११० ; श्रा १२) ।
पमाणिआ } स्त्री [**प्रमाणिका, प्रमाणी**] छन्द-विशेष;
पमाणी } (पिंग) ।
पमाणीकर सक [**प्रमाणी + कृ**] प्रमाण करना, सत्य रूप से स्वीकार करना । कर्म—पमाणीकरीअदि (शौ) ; (पि ३२४) । संकृ—**पमाणीकिअ**; (नाट—मालवि ४०) ।
पमाद देखो **पमाय**=प्र + मद् । कृ—**पमादेयव्व**; (णाया १,१—पत्र ६०) ।
पमाद देखो **पमाय**=प्रमाद; (भग; औप; स्वप्न १०६) ।

पमाय अक [**प्र+मद्**] प्रमाद करना, बेदरकारी करना। पमाअइ, पमायए; (उव; पि ४६०)। वकृ—**पमायंत**; (सुपा १०)। कृ—**पमाइअव्व**; (भग)।

पमाय पुं [**प्रमाद**] १ कर्तव्य कार्य में अप्रवृत्ति और अकर्तव्य में प्रवृत्ति रूप अ-सावधानता, बेदरकारी ; (आचा; उत्त ४, १२ ; महा; प्रासू ३८; १३४)। २ दुःख, कष्ट; "समग्गलोयाण वि जा विमायासमा समुप्पाइयसुप्पमाया" (सत्त ३५)।

पमार पुं [**प्रमार**] १ मरण का प्रारम्भ; (भग १५)। २ बुरी तरह मारना ; (ठा ५, १)।

पमारणा स्त्री [**प्रमारणा**] बुरी तरह मारना; (वव ३)।

पमिय वि [**प्रमीत**] परिमित, नापा हुआ; "अंगुलमूलासंखिअभागप्पमिया उ होंति सेढीओ" (पंच २,२०)।

पमिलाण वि [**प्रम्लान**] अतिशय मुरझाया हुआ; (ठा३, १: धर्मवि ५५)।

पमिलाय अक [**प्र+म्लै**] मुरझाना । "पणपन्नाय परेणं जोणी पमिलायए महिलियाणं" (तंदु ४)।

पमिल्ल अक [**प्र+मील्**] विशेष संकोच करना, सकुचना। पमिल्लइ; (हे ४, २३२; प्राप्र)।

पमीय° देखो **पमा=प्र+मा**।

पमील देखो **पमिल्ल**। पमीलइ; (हे ४, २३२)।

पमुइअ वि [**प्रमुदित**] हर्ष-प्राप्त, हर्षित; (औप; जीव ३)।

पमुंच सक [**प्र+मुच्**] छोड़ना, परित्याग करना। पमुंचंति; (उव)। कर्म—पमुच्चइ; (पि५४२)। भवि—पमोक्खसि; (आचा)। वकृ—**पमुंचमाण**; (राज)।

पमुक्क वि [**प्रमुक्त**] परित्यक्त ; (हे २, ९७ ; षड्)।

°**पमुक्ख** देखो °**पमुह**; (सुपा १०; गु ११; जी १०)।

पमुच्छिअ पुं [**प्रमूर्च्छित**] नरकावास-विशेष; (देवेन्द्र २७)।

पमुत्त देखो **पमुक्क**; (पि ५६६)।

पमुदिय देखो **पमुइअ**; (सुर ३, २०)।

पमुद्ध वि [**प्रमुग्ध**] अत्यन्त मुग्ध; (नाट —मालती ४४)।

पमुह वि [**प्रमुख**] १ तल्लीन दृष्टि वाला; "एगप्पमुहे" (आचा)। २ पुं. ग्रह-विशेष, ज्योतिष्क देव-विशेष; (ठा २, ३)। ३ न. प्रकृष्ट आरम्भ, आदि, आपात; "किंपागफलसरिच्छा भोगा पमुहे हवंति गुणमहुरा" (पउम १०८, ३१ ; पाअ)।

°**पमुह** वि. ब. [°**प्रमुख**] १ वगैरह, आदि; २. प्रधान, श्रेष्ठ, मुख्य; (औप; प्रासू १६९)।

पंमुहर वि [**प्रमुखर**] वाचाल, बकवादी; (उत्त १७, ११)।

पमेइल वि [**प्रमेदस्विन्**] जिसके शरीर में चर्बी बहुत हो वह "थूले पमेइले वज्झे पाइमेत्ति य नो वए" (दस ७, २२)।

पमेय वि [**प्रमेय**] प्रमाण-विषय, सत्य पदार्थ; (धर्मसं ११९०)

पमेह पुं [**प्रमेह**] रोग-विशेष, मेह रोग, मूल-दोष, बहुमूत्रता; (निचू १)।

पमोअ पुं [**प्रमोद**] १ आनन्द, खुशी, हर्ष; (सुर १, ७८; महा; गांदि)। २ राक्षस-वंश के एक राजा का नाम, एक लंका-पति ; (पउम ५, २६३)।

पमोक्ख° देखो **पमुंच**।

पमोक्ख पुंन [**प्रमोक्ष**] १ मुक्ति, निर्वाण ; (सूअ १, १०, १२)। २ प्रत्युत्तर, जवाब; "नो संचाएइ......किंचिवि पमोक्खमक्खाइउ" (भग)।

पमोक्खण न [**प्रमोक्षण**] परित्याग; "कंठाकंठिअं अवयासिय बाहपमोक्खणं करेइ" (णाया १, २—पत्र ८८)।

पमोयणा स्त्री [**प्रमोदना**] प्रमोदन, प्रमोद, आह्लाद; (चेइय ४११)।

पम्मलाअ अक [**प्र+म्लै**] अधिक म्लान होना। पम्मलाअदि (शौ); (पि १३६; नाट—मालती ५३)।

पम्माअ, **पम्माइअ** वि [**प्रम्लान**] १ विशेष म्लान, अत्यन्त मुरझाया हुआ; "पम्माअसिरीसाइं व। जह से जायाइं अंगाइं" (गा ५६; गा ५६ टि)। २ शुष्क; "वसहा य जायथामा, गामा पम्मायविक्खल्ला" (धर्मवि ५३)।

पम्मि पुं [**दे**] पाणि, हाथ, कर ; (षड्)।

पम्मुक देखो **पमुक** ; (हे २, ९७; षड्; कुमा)।

पम्मुह वि [**प्राङ्मुख**] पूर्व की ओर जिसका मुँह हो वह; (भवि; वज्जा १६४)।

पम्ह पुंन [**पक्ष्मन्**] १ अक्षि-लोम, बरवनी, आँख के बाल; (पाअ)। २ पद्म आदि का केसर, किंजल्क ; (उवा; भग; विपा १, १)। ३ सूत आदि का अत्यल्प भाग ; ४ पँख, पाँख; (हे २, ७४; प्राप्र)। ५ केश का अग्र-भाग; (से ६, २०)। ६ अग्र-भाग; "[illegible]" (से १५, ७३)। ७ महाविदेह वर्ष का एक विजय—प्रदेश; (ठा २, ३; इक)। ८ न. एक देव-विमान; (सम १५)।

°**कंत** न [°**कान्त**] एक देव-विमान का नाम; (सम १५)।

°कूड पुं [°कूट] १ पर्वत-विशेष; (राज)। २ न. ब्रह्मलोक-नामक देवलोक का एक देव-विमान; (सम १५)। ३ पर्वत-विशेष का एक शिखर; (ठा २, ३ ; ६)। °ज्झय न [°ध्वज] देव-विमान-विशेष; (सम १५)। °प्पम न [°प्रभ] ब्रह्मलोक का एक देव-विमान; (सम १५)। °लेस, °लेस्स न [°लेश्य] ब्रह्मलोक-स्थित एक देव-विमान; (सम १५ ; राज)। °वण्ण न [°वर्ण] वही पूर्वोक्त अर्थ; (सम १५)। °सिंग न [°शृङ्ग] वही अर्थ; (सम १५)। °सिट्ठ न [°सृष्ट] वही पूर्वोक्त अर्थ; (सम १५)। °वत्त न [°वर्त्त] वही अर्थ; (सम १५)।

पम्ह देखो पउम; (पण्ह १, ४—पत्र ६७; ७८; जीव ३)। °गंध वि [°गन्ध] १ कमल की गन्ध। २ वि. कमल के समान गन्ध वाला ; (भग ६, ७)। °लेस वि [°लेश्य] पद्म-नामक लेश्या वाला; (भग)। °लेसा स्त्री [°लेश्या] लेश्या-विशेष, पाँचवीं लेश्या, आत्मा का शुभतर परिणाम-विशेष; (ठा ३, १ ; सम ११)। °लेस्स देखो °लेस; (पण्ण १७—पत्र ५११)।

पम्हअ सक [प्र+स्मृ] भूल जाना, विस्मरण होना। पम्हअइ; (प्राकृ ६१)।

पम्हगावई स्त्री [पक्ष्मकावती] महाविदेह वर्ष का एक विजय, प्रदेश-विशेष; (ठा २, ३; इक)।

पम्हट्ठ वि [प्रस्मृत] १ विस्मृत; (से ४, ४२)। २ जिसको विस्मरण हुआ हो वह; "किं पम्हट्ठ म्हि अहं तुह चल-णुप्पणयातिवहआपडिउणयां" (से ६, १२)।

पम्हट्ठ वि [दे] १ प्रभ्रष्ट, विलुप्त; (से ४, ४२)। २ फेंका हुआ, प्रक्षिप्त; "पम्हट्ठं वा परिट्ठवियं ति वा एगट्ठं" (वव १)।

पम्हय वि [पक्ष्मज] १ पक्ष्म से उत्पन्न। २ न. एक प्रकार का सूता; (पंचभा)।

पम्हर पुं [दे] अपमृत्यु, अकाल-मरण; (दे ६, ३)।

पम्हल वि [पक्ष्मल] पक्ष्म-युक्त, सुन्दर अक्षि-लोम वाला; (हे २, ७४ ; कुमा ; षड् ; औप ; गउड ; सुर ३, १३६ ; पाअ)।

पम्हल पुं [दे] किंजल्क, पद्म आदि का केसर; (दे ६, १३; षड्)।

पम्हलिय वि [दे. पक्ष्मलित] धवलित, सफेद किया हुआ ; "लायण्णजोन्हापवाहपम्हलियपउट्ठिसाभोओ" (स ३६)।

पम्हस सक [वि+स्मृ] विस्मरण करना, भूल जाना। पम्हसइ; (षड्), पम्हसिउआउ; (गा ३४८)।

पम्हसाविय वि [विस्मारित] भूलाया हुआ, विस्मृत कराया हुआ ; (सुख २, ५)।

पम्हा स्त्री [पद्मा] १ लेश्या-विशेष, पद्म-लेश्या, आत्मा का शुभतर परिणाम-विशेष; (कम्म ३, २२; श्रा २६)। २ विजय-क्षेत्र विशेष; (राज)।

पम्हार पुं [दे] अपमृत्यु, अनमौत मरण; (दे ६, ३)।

पम्हावई स्त्री [पक्ष्मावती] १ विजय-विशेष की एक नगरी; (ठा २, ३; इक)। २ पर्वत-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ८०)।

पम्हुट्ठ वि [दे] १ नष्ट, नाश-प्राप्त; (हे ४, २५८)। २ विस्मृत; "पम्हुट्ठं विम्हरिअं" (पाअ), "किं थ तयं पम्हुट्ठं" (गाया १, ८—पत्र १४८; विचार २३८)।

पम्हुत्तरवडिंसग न [पक्ष्मोत्तरावतंसक] ब्रह्मलोक में स्थित एक देव-विमान; (सम १५)।

पम्हुस सक [वि+स्मृ] भूलना, विस्मरण करना। पम्हुसइ; (हे ४, ७५)।

पम्हुस सक [प्र+मृश्] स्पर्श करना। पम्हुसइ, पम्हुस; (हे ४, १८४ ; कुमा ७, २६)।

पम्हुस सक [प्र+मुष्] चोरना, चोरी करना। पम्हुसइ ; पम्हुसेइ; पम्हुसंति ; (हे ४, १८४; सुपा १३७; कुमा ७, २६)।

पम्हुसण न [विस्मरण] विस्मृति; (पंचा १५, ११)।

पम्हुसिअ वि [विस्मृत] जिसका विस्मरण हुआ हो वह; (कुमा; उप ७६८ टी)।

पम्हुह सक [स्मृ] स्मरण करना। पम्हुहइ ; (हे ४, ७४)।

पम्हुहण वि [स्मर्तृ] स्मरण करने वाला; (कुमा)।

पय सक [पच्] पकाना, पाक करना। पयइ ; (हे ४, ६०)। वकृ—पयंत; (कप्प)। संकृ—पइउं ; (कुप्र २६६)।

पय सक [पद्] १ जाना। २ जानना। ३ विचारना। पयइ ; (विसे ४०८)।

पय पुंन [पयस्] १ क्षीर, दूध; "पओ"; (हे १, ३२ ; ओघ १२ ; पाअ)। २ पानी, जल ; (सुपा १३६ ; पाअ)। °हर देखो पओहर; (पिंग)।

पय पुं [प्रज] प्राणी, जन्तु ; (आचा)।

पय पुंन [**पद**] १ विभक्ति के साथ का शब्द; "पयमत्थवायगं जोयगं च तं नामियाइं पंचविहं" (विसे १००३ ; प्रासू १३८; श्रा २३)। २ शब्द-समूह, वाक्य; "उवएसपया इहं समक्खाया" (उप १०३८; श्रा २३)। ३ पैर, पाँव, चरण; "जायं च लज्जणाउज्जणीइ लग्गो ठवेमि मंदपए, कव्वपंह बाला इव", "जाव न सत्तट्ठ पए पच्चाहुत्तं नियत्तो सि" (सुपा १ ; धर्मवि ५४; सुर ३, १०७; श्रा २३)। ४ पाद-चिन्ह, पदाङ्क; (सुर २, २३२ ; सुपा ३५४; श्रा २३ ; प्रासू ५०)। ५ पद्य का चौथा हिस्सा; (अणु)। ६ निमित्त, कारण; (आचा)। ७ स्थान; "अवमाणपयं हि सेव त्ति" (सुर २, १६७; श्रा २३)। ८ पदवी, अधिकार; "जुवरायपए किं नवि अहिसिच्चइ देव मे पुत्तो?" (सुर २, १७५ ; महा)। ९ त्राण, शरण; १० प्रदेश; ११ व्यवसाय ; (श्रा २३)। १२ कूट, जाल-विशेष; (सूअ १, १, २, ८)। °**खेम** न [°**क्षेम**] शिव, कल्याण ; "कुव्वइ अ सो पयखेममप्पणो" (दस ६, ४, ६)। °**त्थ** पुं [°**स्थ**] पदाति, प्यादा ; "तुरएण सह तुरंगो पाइक्को सह पयत्थेण" (पउम ६, १८२)। °**पास** पुं [°**पाश**] वागुरा, जाल आदि बन्धन; (सूअ १, १, २, ८; ९)। °**रक्ख** पुं [**रक्ष**] पदाति, प्यादा; (भवि; हे ४, ४१८)। °**विग्गह** पुं [°**विग्रह**] पद-विच्छेद ; (विसे १००६)। °**विभाग** पुं [°**विभाग**] उत्सर्ग और अपवाद का यथा-स्थान निवेश, सामाचारी-विशेष ; (आव १)। °**वीढ** देखो **पाय-वीढ** ; (पव ४०; सुपा ६५६)। °**समास** पुं [°**समास**] पदों का समुदाय; (कम्म १, ७)। °**णुसारि** वि [°**ानुसारिन्**] एक पद से अनेक अनुक्त पदों का भी अनुसंधान करने की शक्ति वाला; (औप; बृह १)। °**णुसारिणी** स्त्री [°**ानुसारिणी**] बुद्धि-विशेष, एक पद के श्रवण से दूसरे अ-श्रुत पदों का स्वयं पता लगाने वाली बुद्धि ; (पराण २१)।

पय (अप) देखो **पत्त**=प्राप्त; (पिंग)।

पय° देखो **पया**=प्रजा। °**पाल** वि [°**पाल**] १ प्रजा का पालक ; २ पुं. नृप-विशेष ; (सिरि ४५)।

पयइ देखो **पगइ**; (गा ३१७; गउड; महा; नव ३१ ; भत्त ११४ ; कप्पू; कुप्र ३४६)।

पयइंद पुं [**पतगेन्द्र, पदकेन्द्र**] वानव्यन्तर-जातीय देवों का इन्द्र; (ठा २, ३)।

पयई देखो **पयवी** ; (गउड)।

पयंग पुं [**पतङ्ग**] १ सूर्य, रवि; (पाअ), "तो हरिसपुलइयंगो चक्को इव दिट्ठउग्गयपयंगो" (उप ७२८ टी)। २ रंग-विशेष, रञ्जन-द्रव्य-विशेष; (उर ६, ४; सिरि १०५७)। ३ शलभ, फतिंगा, उड़ने वाला छोटा कीट ; (णाया १, १७; पाअ)। ४—५ देखो **पयय**=पतग, पदक, पदग ; (पराह १, ४—पत्र ६८; गउ)। °**वीहिया** स्त्री [°**वीथिका**] १ शलभ का उड़ना; २ भिक्षा के लिए पतंग की तरह चलना, बीच में दो चार घरों को छोड़ते हुए भिक्षा लेना; (उत्त ३०, १६)। °**वीही** स्त्री [°**वीथी**] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (उत्त ३०, १६)।

पयंगुल पुंन [**प्रपङ्गुल**] मत्स्य-बन्धन-विशेष, मच्छी पकड़ने का एक प्रकार का जाल; (विपा १, ८—पत्र ८५)।

पयंड वि [**प्रचण्ड**] १ अत्युग्र, तीव्र, प्रखर; २ भयानक, भयंकर, (पराह १, १; ३; ४; उव)।

पयंड वि [**प्रकाण्ड**] अत्युग्र, उत्कट; (पराह १, ४)।

पयंत देखो **पय**=पच्।

पयंप अक [**प्र+कम्प्**] अतिशय काँपना। वकृ—**पयंपमाण** ; (स ५६६)।

पयंप सक [**प्र+जल्प्**] १ कहना, बोलना। २ बकवाद करना। पयंपए; (महा)। संकृ—**पयंपिऊण, पयंपिऊणं**; (महा; पि ५८५)। कृ—**पयंपिअव्व**; (गा ४५०; सुपा ५५२)।

पयंपण न [**प्रजल्पन**] कथन, उक्ति; (उप पृ २१७)।

पयंपिय वि [**प्रकम्पित**] अति काँपा हुआ ; (स ३७७)।

पयंपिय वि [**प्रजल्पित**] १ कथित, उक्त ; २ न. कथन, उक्ति; ३ बकवाद, व्यर्थ जल्पन; (विपा १, ७)।

पयंपिर वि [**प्रजल्पितृ**] १ बोलने वाला; २ वाचाट, बकवादी ; (सुर १६, ५८ ; सुपा ४१५ ; श्रा २७)।

पयंस सक [**प्र+दर्शय्**] दिखलाना। पयंसेंति ; (विसे ६३२)।

पयंसण न [**प्रदर्शन**] दिखलाना; (स ६१३)।

पयंसिअ वि [**प्रदर्शित**] दिखलाया हुआ ; (सुर १, १०१ ; १२, ३२)।

पयक्ख सक [**प्रत्या+ख्या**] प्रत्याख्यान करना, प्रतिज्ञा करना। पयक्खेइ; (विचार ७५५)।

पयक्खिण देखो **पदक्खिण**=प्रदक्षिण; (णाया १, १६)।

पयक्खिण देखो **पदक्खिण**=प्रदक्षिणय्। संकृ—**पयक्खिणिऊण** ; (सुर ८, १०५)।

पयक्खिणा देखो **पदक्खिणा** ; (उप १४१ टी ; सुर १४, ३०) ।

पयग देखो **पयय**=पतग, पदक, पदग ; (राज ; पव १६४) ।

पयच्छ सक [**प्र+यम्**] देना, अर्पण करना । पयच्छइ ; (महा) । संकृ—**पयच्छिऊण** ; (राज) ।

पयच्छण न [**प्रदान**] १ दान, अर्पण ; (सुर २, १४१) । २ वि. देने वाला ; (सण) ।

पयट्ट अक [**प्र+वृत्**] प्रवृत्ति करना । पयट्टइ ; (हे २, ३० ; ४, ३४७; महा) । कृ—**पयट्टिअव्व**; (सुपा १२६) । प्रयो—पयट्टावेइ; (स २२); संकृ—**पयट्टाविउं**; (स ७१५) ।

पयट्ट वि [**प्रवृत्त**] १ जिसने प्रवृत्ति की हो वह; (हे २, २९ ; महा) । २चलित ; "पयट्टयं चलियं" (पाअ) ।

पयट्टय वि [**प्रवर्तक**] प्रवृत्ति करने वाला; (पण्ह १, १) ।

पयट्टावअ वि [**प्रवर्तक**] प्रवृत्ति कराने वाला; (कप्पू) ।

पयट्टाविअ वि [**प्रवर्तित**] प्रवृत्त किया हुआ, किसी कार्य में लगाया हुआ ; (महा) ।

पयट्टिअ वि [**दे. प्रवर्तित**] ऊपर देखो; (दे ६, २६) ।

पयट्टिअ वि [**प्रवृत्त**] प्रवृत्ति-युक्त; (उत्त ४, २; सुख ४, २) ।

पयट्ठाण देखो **पइट्ठाण**; (काल; पि २२०) ।

पयड सक [**प्र+कटय्**] प्रकट करना, व्यक्त करना । पयडइ, पयडेइ; (सण ; महा) । वकृ—**पयडंत**; (सुपा १; गा ४०६; भवि) । हेकृ—**पयडित्तु**; (पि ५७७) । प्रयो—पयडावइ; (भवि) ।

पयड वि [**प्रकट**] १ व्यक्त, खुला; (कुमा; महा) । २ विख्यात, विश्रुत, प्रसिद्ध; "विक्खाओ विस्सुओ पयडो" (पाअ) ।

पयडण न [**प्रकटन**] १ व्यक्त करना, खुला करना; (सण) । २ वि. प्रकट करने वाला; "जे तुज्झ गुणा बहुनेह-पयडणा" (धर्मवि ६६) ।

पयडावण न [**प्रकटन**] प्रकट कराना; (भवि) ।

पयडाविय वि [**प्रकटित**] प्रकट कराया हुआ; (काल; भवि) ।

पयडि देखो **पगइ**; (पण्ण २३; पि २१९) ।

पयडि स्त्री [**दे**] मार्ग, रास्ता; "जे पुण सम्मद्दिट्ठी तेसिं मणो चडणपयडीए" (सट्ठि १४२) ।

पयडिअ वि [**प्रकटित**] प्रकट किया हुआ; (सुर ३, ४८; श्रा २) ।

पयडिय वि [**प्रपतित**] गिरा हुआ; (णाया १, ८—पत्र १३३) ।

पयडीकय वि [**प्रकटीकृत**] प्रकट किया हुआ; (महा) ।

पयडीकर सक [**प्रकटी+कृ**] प्रकट करना । प्रयो—पयडीकरावेमि; (महा) ।

पयडीभूअ } वि [**प्रकटीभूत**] जो प्रकट हुआ हो;
पयडीहूअ } (सुर ६, १८४; श्रा १६; महा; सण) ।

पयडुणी स्त्री [**दे**] १ प्रतीहारी; २ आकृष्टि, आकर्षण; ३ महिषी; (दे ६, ७२) ।

पयण देखो **पवण**; (गा ७७७) ।

पयण देखो **पडण**; (विसे १८५६) ।

पयण } न [**पचन, °क**] १ पाक, पकाना; (औप;
पयणग } कुमा) । २ पात्र-विशेष, पकाने का पात्र; (सूअनि ८०; जीव ३) । **°साला** स्त्री [**°शाला**] पाक-स्थान; (बृह २) ।

पयणु } वि [**प्रतनु**] १ कृश, पतला; २ सूक्ष्म, बारीक ;
पयणुअ } ३ अल्प, थोड़ा ; (स २४६; सुर ८, १६५; भग ३, ४ ; जं २; पउम ३०, ६६; से ११, ५६; गा ६८२; गउड) ।

पयण्णय देखो **पइण्णग**; (तंदु १) ।

पयत्त अक [**प्र+यत्**] प्रयत्न करना । पअत्तध (शौ) ; (पि ४७१) ।

पयत्त देखो **पयट्ट**=प्र+वृत; (काल) ।

पयत्त पुं [**प्रयत्न**] चेष्टा, उद्यम, उद्योग; (सुपा ; उव ; सुर १, ६ ; २, १८२; ४, ८१) ।

पयत्त वि [**प्रदत्त, प्रत्त**] १ दिया हुआ; (भग) । २ अनुज्ञात, संमत; (अनु ३) ।

पयत्त देखो **पयट्ट**=प्रवृत्त; (सुर २, १५९; ३, २४८; से ३, २४; ८, ३; गा ४३६) ।

पयत्ताविअ वि [**प्रवर्तित**] प्रवृत्त किया हुआ; (काल) ।

पयत्थ पुं [**पदार्थ**] १ शब्द का प्रतिपाद्य, पद का अर्थ; (विसे १००३; चेइअ २७१) । २ तत्व; (सम १०६; सुपा २०५) । ३ वस्तु, चीज; (पाअ) ।

पयन्न देखो **पइण्ण**=प्रकीर्ण; (भवि) ।

पयन्ना देखो **पइण्णा** ; (उप १४२ टी) ।

पयप्पण न [**प्रकल्पन**] कल्पना, विचार; (धर्मसं ३०७) ।

पयय देखो **पायय**=प्राकृत; (हे १, ६७; गउड) ।

पयय वि [**प्रयत**] प्रयत्न-शील, सतत प्रयत्न वाला;

औप; पउम ३; ६५; सुर १, ४; उत्त), "इच्छिज्ज न इच्छिज्ज व तहवि पयओ निमंतए साहू" (पुप्फ ४२६; पंडि)।

पयय पुं [**पतग, पतक, पदग**] १ वानव्यन्तर देवों की एक जाति ; (ठा २, ३ ; पण्ण १ ; इक)। २ पतग देवों का दक्षिण दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३)। °**वइ** पुं [°**पति**] पतग देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र ; (ठा २, ३—पत्र ८५)।

पयय न [**दे**] अनिश, निरन्तर ; (दे ६, ६)।

पयर सक [**स्मृ**] स्मरण करना। पयरेइ; (हे ४, ७४)। वकृ—**पयरंत**; (कुमा)।

पयर अक [**प्र + चर्**] प्रचार होना। "रन्ना सुयारा भणिया जं लोए पयरइ तं सव्वं सव्वे रंधह" (श्रावक ७३ टी)।

पयर पुं [**प्रकर**] समूह, सार्थ, जत्था; "पयरो पिवीलियाणं भीमंपि भुयंगमं डसइ" (स ४२१; पाअ; कप्प)।

पयर पुं [**प्रदर**] १ योनि का रोग-विशेष; २ विदारण, भंग; ३ शर, बाण ; (दे ६, १४)।

पयर देखो **पयार**=प्रकार; (हे १, ६८; षड्)।

पयर देखो **पयार**=प्रचार; (हे १, ६८)।

पयर पुंन [**प्रतर**] १ पत्रक, पत्ता, पतरा; "कणगपयरलंबमाणमुत्तासमुज्जलं..............वरविमाणपुंडरीयं" (कप्प; जीव ३ ; आचू १)। २ वृत्त पत्राकार आभूषण-विशेष, एक प्रकार का गहना ; (औप ; णाया १, १)। ३ गणित-विशेष, सूची से गुणी हुई सूची; (कम्म ५, ६७; जीवस ६२ ; १०२)। ४ भेद-विशेष, बाँस आदि की तरह पदार्थ का पृथग्भाव; (भास ७)। °**तव** पुंन [°**तपस्**] तप-विशेष ; °**वट्ट** न [°**वृत्त**] संस्थान-विशेष; (राज)।

पयरण न [**प्रकरण**] १ प्रस्ताव, प्रसंग; २ एकार्थ-प्रतिपादक ग्रन्थ। ३ एकार्थ-प्रतिपादक ग्रन्थांश; "जुम्हदम्हपयरणं" (हे १, २४६)।

पयरण न [**प्रतरण**] प्रथम दातव्य भिक्षा; (राज)।

पयरिस देखो **पयंस**। वकृ—**पयरिसंत**; (पउम ६, ६४)।

पयरिस देखो **पगरिस** ; (महा)।

पयल अक [**प्र + चल्**] १ चलना। २ स्खलित होना। पयलेज्ज; (आचा २, १, ३, ३)। वकृ—**पयलेमाण**; (आचा २, २, ३, ३)।

पयल देखो **पयड**=प्र + कटय्। पयलइ; (पिंग)। संकृ—**पयलि**; (अप); (पिंग)।

पयल देखो **पयड**=प्रकट; (पिंग)।

पयल (अप) सक [**प्र + आकय्**] १ चलाना। २ गिराना। पयलइ; (पिंग)।

पयल वि [**प्रचल**] चलायमान, चलने वाला; (पउम १००, ६)।

पयल पुं [**दे**] नीड़, पक्षि-गृह; (दे ६, ७)।

पयल° } स्त्री [**दे, प्रचला**] १ निद्रा, नींद; (दे ६, ६)। **पयला** } २ निद्रा-विशेष, बैठे बैठे और खड़े खड़े जो नींद आती है वह; ३ जिसके उदय से बैठे २ और खड़े २ नींद आती है वह कर्म; (सम १५; कम्म १, ११)। °**पयला** स्त्री [**दे, °प्रचला**] १ कर्म-विशेष, जिसके उदय से चलते २ निद्रा आती है वह कर्म; २ चलते २ आने वाली नींद; (कम्म १, ११; ठा ६; निचू ११)।

पयला अक [**प्रचलाय्**] निद्रा लेना, नींद करना। पयलाइ; (पाअ)। हेकृ—**पयलाइत्तए**; (कस)।

पयलाइअ न [**प्रचलायित**] १ नींद, निद्रा; २ घूर्णन, नींद के कारण बैठे २ सिर का डोलना; (से १२, ४२)।

पयलाइया स्त्री [**दे**] हाथ से चलने वाले जन्तु की एक जाति; (सूअ २, ३, २५)।

पयलाय देखो **पयला**=प्रचलाय्। पयलायइ; (जीव ३)। वकृ—**पयलायंत**; (राज)।

पयलाय पुं [**दे**] १ हर, महादेव; (दे ६, ७२)। २ सर्प, साँप; (दे ६, ७२; षड्)।

पयलायण न [**प्रचलायन**] देखो **पयलाइअ**; (बृह ३)।

पयलायमत्त पुं [**दे**] मयूर, मोर; (दे ६, ३६)।

पयलिअ देखो **पयडिअ**; (पिंग; पि २३८)।

पयलिय वि [**प्रचलित**] १ स्खलित, गिरा हुआ; (राय; आउ)। २ हिला हुआ; (पउम ६८, ७३; णाया १, ८; कप्प; औप)।

पयलिय वि [**प्रदलित**] भाँगा हुआ, तोड़ा हुआ; (कप्प)।

पयल्ल अक [**प्र + सृ**] पसरना, फैलना। पयल्लइ; (हे ४, ७७; प्राकृ ७६)।

पयल्ल अक [**कृ**] १ शिथिलता करना, ढीला होना। २ लटकना। पयल्लइ; (हे ४, ७०)।

पयल्ल वि [**प्रसृत**] फैला हुआ; (पाअ)।

पयल्ल पुं [**प्रकल्य**] महाग्रह-विशेष; (सुज २०)।

पयल्लिर वि [प्रसृमर] फैलने वाला, (कुमा)।

पयल्लिर वि [शैथिल्यकृत्] शिथिल होने वाला, ढीला होने वाला; (कुमा ६, ४३)।

पयल्लिर वि [लम्बनकृत्] लटकने वाला; (कुमा ६, ४३)।

पयव सक [प्र+तप्, तापय्] तपाना, गरम करना। पअवेज्ज; (से ४, २८)। वकृ—**पअविउअंत**; (से २, २४)।

पयव सक [पा] पीना, पान करना। कवकृ—"धीरम्मं सहमुहल पयावअविउअंतअं" (से २, २४)।

पयवई स्त्री [दे] सेना, लश्कर; (दे ६, १६)।

पयवि स्त्री [पदवि] देखो **पयवी**; (चेइय ८७२)।

पयविअ वि [प्रतप्त, प्रतापित] गरम किया हुआ, तपाया हुआ; (गा १८५; से २, २५)।

पयवी स्त्री [पदवी] १ मार्ग, रास्ता; (पाअ; गा १०७; सुपा ३७८)। २ बिरुद, पदवी; (उप पृ ३८६)।

पयह सक [प्र+हा] त्याग करना, छोड़ना। पयहे, पयहिज्ज, पयहेज्ज; (सूअ १,१०,१५; १, २, २, ११; १, २, ३, ६; उत्त ४, १२; स १३६)। संकृ—**पयहिय**; (पउम ६३, १६; गच्छ १, २४)। कृ—**पयहियव्व**; (स ७१४)।

पयहिण देखो **पदक्खिण** = प्रदक्षिण; (भवि)।

पया सक [प्र+जनय्) प्रसव करना, जन्म देना। पयामि; (विपा १, ७)। पयाएज्जासि; (विपा १, ७)। भवि—पयाहिति, पयाहिंति, पयाहिसि; (कप्प; पि ७६; कप्प)।

पया सक [प्र+या] प्रयाण करना, प्रस्थान करना। पयाइ; (उत्त १३, २४)।

पया स्त्री [दे] चुल्ली, चुल्हा; (राज)।

पया स्त्री. ब. [प्रजा] १ वश-वर्ती मनुष्य, रैयत; "जह य पयाण नरिंदो" (उव; विपा १, १)। २ लोक, जन-समूह; (सिरि ४२; पंचा ७, ३७)। ३ जन्तु-समूह; "निव्विणचारी अरए पयासु" (आचा; सूअ १, ५, २, ६)। ४ संतान वाली स्त्री; "निव्विंद नंदिं अरए पयासु अमोहदंसी" (आचा; सूअ १, १०, १५)। ५ संतान, संतति; (सिरि ४२)। °णंद पुं [°नन्द] एक कुलकर पुरुष का नाम; (पउम ३, ५३)। °णाह पुं [°नाथ] राजा, नरेश; (सुपा ५७५)। °पाल पुं [°पाल] एक जैन मुनि जो पाँचवें बलदेव के पूर्वजन्म में गुरु थे; (पउम २०, १६२)। °वइ पुं [°पति] १ ब्रह्मा, विधाता; (पाअ; सुपा ३०५)। २ प्रथम वासुदेव के पिता का नाम; (पउम २०, १८२; सम १५२)। ३ नक्षत्र-देव विशेष, रोहिणी-नक्षत्र का अधिष्ठायक देव; (ठा २, ३—पत्र ७७; सुज्ज १०, १२)। ४ दक्ष, कश्यप आदि ऋषि; ५ राजा, नरेश; ६ सूर्य, रवि; ७ वह्नि, अग्नि; ८ त्वष्टा; ९ पिता, जनक; १० कीट-विशेष; ११ जामाता; (हे १, १७७; १८०)। १२ अहोरात्र का उन्नीसवाँ मुहूर्त्त; (सुज्ज १०, १३)।

पयाइ पुं [पदाति] प्यादा, पाँव से चलने वाला सैनिक; (हे २, १३८; षड्; कुमा; महा)।

पयाग पुंन [प्रयाग] तीर्थ-विशेष जहाँ गंगा और यमुना का संगम है; (पउम ८२, ८१ ; हे १, १७७)।

पयाण न [प्रदान] दान, वितरण; (उवा; उप ५६७ टी; सुर ४, २१०; सुपा ४६२)।

पयाण न [प्रतान] विस्तार; (भग १६, ६)।

पयाण न [प्रयाण] प्रस्थान, गमन; (णाया १, ३; पराह २, १; पउम ५४, २८; महा)।

पयाम देखो **पकाम**; (स ६५६)।

पयाम न [दे] अनुपूर्व, क्रमानुसार; (दे ६, ६; पाअ)।

पयाय देखो **पयाग**; (कुमा)।

पयाय वि [प्रयात] जिसने प्रयाण किया हो वह; (उप २११ टी; महा; औप)।

पयाय वि [प्रजात] उत्पन्न, संजात; "पयायसाला विडिमा" (दस ७, ३१)।

पयाय वि [प्रजात, प्रजनित] प्रसूत, जिसने जन्म दिया हो वह; "दारगं पयाया" (विपा १, १; २; कप्प; णाया १, १—पत्र ३३)। "पयाया पुत्तं" (वसु)।

पयाव देखो **पयाव** = प्रताप; (गा ३२६; से ४, ३०)।

पयार सक [प्र+चारय्] प्रचार करना। पयारइ; (सण)। संकृ—**पयारिवि** (अप); (सण)।

पयार सक [प्र+तारय्] प्रतारण करना, ठगना। पयारइ, पयारसि; (सण)।

पयार पुं [प्रकार] १ भेद, किस्म; २ ढंग, रीति, तरह; (हे १, ६८; कुमा)।

पयार पुं [प्राकार] किला, दुर्ग; (पउम ३०, ४६)।

पयार पुं [प्रचार] १ संचार, संचरण; (सुपा २४)। २ प्रसार, फैलाव; (हे १,६८)।

पयारण न [प्रतारण] वञ्चना, ठगाई; (सुर १२, ६१)।

पयारिअ वि [प्रतारित] ठगा हुआ, वञ्चित; (पाअ; सुर ४, १५५)।

पयाल पुं [पाताल] भगवान् अनन्तनाथजी का शासन-यक्ष; "छम्मुह पयाल किन्नर" (संति ८)।

पयाव सक [प्र+तापय्] तपाना, गरम करना । वकृ—**पयावेमाण**; (पि ५५२)। हेकृ— **पयावित्तए**; (कप्प)।

पयाव पुं [प्रताप] १ तेज, प्रखरता; (कुमा; सण) । २ प्रकृष्ट ताप, प्रखर ऊष्मा; (पव ४) ।

पयावण न [पाचन] पकवाना, पाक कराना; (पण्ह १, १; श्रा ८) ।

पयावण न [प्रतापन] १ गरम करना, तपाना; (ओघ १८० भा; पिंड ३४; आचा) । २ अग्नि; (कुप्र ३८६) ।

पयावि वि [प्रतापिन्] १ प्रताप-शाली; २ पुं. इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम; (पउम ५, ५) ।

पयास सक [प्र+काशय्] १ व्यक्त करना । २ चमकाना। ३ प्रसिद्ध करना । पयासेइ; (हे ४, ४५) । वकृ—**पयासं-त, पयासेंत, पयासअंत**; (सण; गा ४०३; उप ८३३ टी; पि ३६७) । कृ—**पयासणिज्ज, पयासियव्व**; (उप ५६७ टी; उप पृ ५५) ।

पयास देखो **पगास**=प्रकाश; (पाअ; कुमा) ।

पयास पुं [प्रयास] प्रयत्न, उद्यम; (चेइय २६०) ।

पयास (अप) नीचे देखो; (भवि) ।

पयासग वि [प्रकाशक] प्रकाश करने वाला; (सं ७८) ।

पयासण न [प्रकाशन] १ प्रकाश-करण; (आचा; सुपा ४१६) । २ वि. प्रकाशक, प्रकाश करने वाला; "परमत्थ-पयासणं वीरं" (पुप्फ १) ।

पयासय देखो **पयासग**; (विसे ११३०; सं १; पव ८६) ।

पयासि वि [प्रकाशिन्] प्रकाश करने वाला; (सण; हम्मीर १४) ।

पयासिय देखो **पगासिय**; (भवि) ।

पयासिर वि [प्रकाशितृ] प्रकाश करने वाला; (भवि) ।

पयासेंत देखो **पयास**=प्र+काशय् ।

पयाहिण देखो **पदक्खिण**=प्रदक्षिण; (उवा; औप; भवि; पि ६५) ।

पयाहिण देखो **पदक्खिण**=प्रदक्षिणय् । पयाहिणइ; (भवि)। पयाहिणंति; (कुप्र २६३) ।

पयाहिणा देखो **पदक्खिणा**; (सुपा ४७) ।

पय्यवत्थाण (शौ) न [**पर्यवस्थान**] प्रकृति में अवस्थान; (स्वप्न ४८) ।

पर सक [भ्रम्] भ्रमण करना, घूमना । परइ; (हे ४, १६१; कुमा) ।

पर देखो **प**=प्र; (तंदु ४६) ।

पर वि [पर] १ अन्य, भिन्न, इतर; (गा १८४; महा; प्रासू ८; १५७) । २ तत्पर, तल्लीन; "कोउहलपरा" (महा; कुमा) । ३ श्रेष्ठ, उत्तम, प्रधान; (आचा; स्वप्न १५) । ४ प्रकर्ष-प्राप्त, प्रकृष्ट; (आचा; श्रा २३) । ५ उत्तर-वर्ती बाद का; "परलोग—"(महा) । ६ दूरवर्ती; (सूअ १, ८; निचू १) । ७ अनात्मीय, अ-स्वीय; (ठा १; निचू २) । ८ पुं. शत्रु, दुश्मन, रिपु; (सुर १२, ६२; कुमा; प्रासू ६) । ९ न. केवल, फक्त; (कुमा; भवि) । °**उट्ठ** वि [°**पुष्ट**] अन्य से पालित; २ पुं. कोकिल पक्षी; (हे १, १७९) । °**उत्थिय** वि [°**तीर्थिक**] भिन्न दर्शन वाला; (भग) । °**एस** पुं [°**देश**] विदेश, भिन्न-देश, अन्य देश; (भवि) । °**ओ** अ [°**तस्**] १ बाद में, परली तर्फ; "अवणीए परओ" (महा) । २ भिन्न में, इतर में; (कुमा) । ३ इतर से, अन्य से; (सूअ १, १२) । °**गणिच्चय** वि [°**गणीय**] भिन्न गण से संबन्ध रखने वाला; स्त्री—°**च्चिया**; (निचू ८) । °**गरिहज्झाण** न [°**गर्हाध्यान**] इतर की निन्दा का विचार; (आउ) । °**घाय** पुं [°**घात**] १ दूसरे को आघात पहुँचाना । २ पुंन. कर्म-विशेष, जिसके उदय से जीव अन्य बलवानों की भी दृष्टि में अजेय समझा जाता है वह कर्म; "परघाउदया पाणी परेसिं बलीणंपि होइ दुद्धरिसो" (कम्म १, ४४) । °**चित्तण्णु** वि [°**चित्तज्ञ**] अन्य के मन के भाव को जानने वाला; (उप १७६ टी) । °**च्छंद**, °**छंद** पुं [°**च्छन्द**] १ पर का अभिप्राय, अन्य का आशय; (ठा ४, ४; भग २५, ७) । २ पराधीन, परतन्त्र; (राज; पाअ) । °**जाणुअ** वि [°**ज्ञ**]१ पर को जानने वाला; २ प्रकृष्ट जानकार; (प्राकृ १८) । °**ट्ठ** पुं [°**र्थ**] परोपकार; (राज) । °**ट्ठा** स्त्री [°**र्थ**] दूसरे के लिए; "कडं परट्ठाए" (आचा) । °**णिंदज्झाण** न [°**निन्दाध्यान**] अन्य की निन्दा का चिन्तन; (आउ) । °**ण्णुअ** देखो °**जाणुअ**; (प्राकृ १८) । °**तंत** वि [°**तन्त्र**] पराधीन, परायत्त; (सुपा २३३) । °**तित्थिअ** देखो °**उत्थिय**; (भग; सम्म ८५) । °**तीर** न [°**तीर**] सामने वाला किनारा; (पाअ)। °**त्त** न [°**त्व**] १ भिन्नत्व; पार्थक्य; २ वैशेषिक दर्शन में प्रसिद्ध गुण-विशेष; (विसे २४६१) । °**त्त** अ [°**त्र**] १ जन्मान्तर में, परलोक में; (सुपा

५०८)। २ न. जन्मान्तर, " ते इहयंपि परत्ते नरयगइं जंति निव्वमेव" (सुपा ५२१), "इह लोए च्चिय दीसइ सग्गो नरओ य किं परलेण" (कुमा १३८)। °त्थ अ [°त्र] जन्मान्तर में, "इहं परत्थावि य जं विरुद्धं न किज्जए तंपि सया विसिद्धं" (सत ३७; सुर १४, ३३; उव)। °त्थ देखो °इ; (सुर ४, ७३)। °त्थी स्त्री [°स्त्री] परकीय स्त्री; (प्रासू १५५)। °दार पुंन [°दार] परकीय स्त्री; (पडि), "जो वज्जइ परदारं सो सेवइ नो कयाइ परदारं" (सुपा ३६६), "इच्चेव अप्पकालं गहिया वेसावि होइ परदारं" (सुपा३८०)। °दारि वि [°दारिन्] परस्त्री-लम्पट; "ता एस वसुमईए कएण परदारियाए आयाओ" (सुर ६, १७६)। °पक्ख वि [°पक्ष] वैधर्मिक, भिन्न धर्म का अनुयायी; (द्र १७)। °परिवाइय वि [°परिवादिक] इतर के दोषों को बोलने वाला, पर-निन्दक; (औप)। °परिवाय पुं [°परिवाद] १ पर के गुण-दोषों का विप्रकीर्ण वचन; (औप; कप्प)। २ पर-निन्दा, इतर के दोषों का परिकीर्तन; (ठा १; ४, ४)। ३ अन्य के सद्गुणों का अपलाप; (पंचू)। °परिवाय पुं [°परिपात] अन्य का पातन, दोषोद्‌घाटन-द्वारा दूसरे को गिराना; (भग १२, ५)। °पुट्ठ देखो °उट्ठ; (पण्ण १७; स ४१६)। °भव पुं [°भव] आगामी जन्म; (औप; पण्ह १, १)। °भविअ वि [°भविक] आगामी जन्म से संबन्ध रखने वाला; (भग; ठा ६)। °भाग पुं [°भाग] १ श्रेष्ठ अंश; २ अन्य का हिस्सा; ३ अत्यन्त उत्कर्ष; (उप पृ ६७)। °महेला स्त्री [°महेला] १ उत्तम स्त्री; २ परकीय स्त्री; (सुपा ४७०)। °यत्त देखो °व्वस; "परयत्तो परछंदो" (पाअ)। °लोअ, °लोग पुं [°लोक] १ इतर जन, स्वजन से भिन्न; (उप ९८६ टी)। २ जन्मान्तर; (पण्ह १, १; विसे १९५१; महा; प्रासू ७५; सण)। °वस वि [°वश] पराधीन, परतन्त्र; (कुमा; सुपा २३७)। °वाइ पुं [°वादिन्] इतर दार्शनिक; (औप)। °वाय पुं [°वाद] १ इतर दर्शन, भिन्न मत; (औप)। २ श्रेष्ठ वादी; (श्रा२३)। °वाय पुं [°वाच्] १ सज्जन, सुजन; २ वि. श्रेष्ठ वाणी वाला; (श्रा २३)। °वाय वि [°वाज] १ श्रेष्ठ गति वाला; २ पुं. श्रेष्ठ अश्व; (श्रा २३)। °वाय वि [°वाय] जानकार, ज्ञानी; (श्रा २३)। °वाय वि [°पाक] १ सुन्दर रसोई बनाने वाला; २ पुं. रसोइया; (श्रा २३)। °वाय पुं [°पात]१ जुआड़ी, जूए का खेलाड़ी; २ अशुभ समय; (श्रा २३)। °वाय पुं [°व्याद] ब्राह्मण, विप्र; (श्रा२३)। °वाय पुं [°वाय] धनी जुलाहा; धनाढ्य तन्तुवाय; (श्रा २३)। °वाय वि [°व्रात] १ प्रकृष्ट समूह वाला; २ न. सुभिक्ष समय का धान्य; (श्रा २३)। °वाय पुं [°वात] ग्रीष्म समय का जलधि-तट; (श्रा २३)। °वाय पुं [°व्याय] धूर्त, ठग; (श्रा २३)। °वाय वि [°पाय] अनीति वाला; (श्रा २३)। °वाय वि [°वाक] वेद-ज्ञ, वेद-वित्; (श्रा २३)। °वाय वि [°पातृ] १ दयालु, कारुणिक; २ खूब पान करने वाला; ३ खूब सूखने वाला; ४ पुं. प्रावृट् काल का यवास वृक्ष; ५ मद्य-व्यसनी; (श्रा २३)। °वाय वि [°वाद] सुस्थिर; (श्रा २३)। °वाय वि [°व्यातृ] १ श्रेष्ठ आच्छादक; २ पुं. वस्त्र, कपड़ा; (श्रा २३)। °वाय वि [°वातृ] १ प्रकृष्ट वहन करने वाला; २ पुं. श्रेष्ठ तन्तुवाय, उत्तम जुलाहा; ३ महान् पवन; (श्रा २३)। °वाय वि [°व्यागस्] १ अति बड़ा अपराधी, गुरुतर अपराधी; (श्रा २३)। °वाय वि [°व्याप] प्रकृष्ट विस्तार वाला; (श्रा २३)। °वाय वि [°वाक] १ जहाँ पर प्रकृष्ट बक-समूह हो वह स्थान; २ न. मत्स्य-परिपूर्ण सरोवर; (श्रा २३)। °वाय वि [°व्याय] १ श्रेष्ठ वायु वाला; २ जहाँ पर पक्षियों का विशेष आगमन होता हो वह; ३ पुं. अनुकूल पवन से चलता जहाज; ४ सुन्दर घर; ५ वनोद्देश, वन-प्रदेश; (श्रा २३)। °वाय वि [°वाय] १ जहाँ पानी का प्रकृष्ट आगमन हो वह; २ न. जलधि-मुख, समुद्र का मुँह; ३ पुं. महा-समुद्र, महा-सागर; (श्रा २३)। °वाय वि [°व्याज] अन्य के पास विशेष गमन करने वाला; २ प्रार्थना-परायण; (श्रा २३)। °वाय वि [°पाय] १ अत्यन्त हीन-भाग्य; २ नित्य-दरिद्र; (श्रा २३)। °वाय वि [°वाप] १ प्रकृष्ट वपन वाला; २ पुं. कृषक; (श्रा २३)। °वाय वि [°पाप] १ महा-पापी; २ हत्या करने वाला; (श्रा २३)। °वाय पुं [°पाक] १ कुम्भकार, कुम्हार; २ मुक्त जीव; ३ पहली तीन नरक-भूमि; (श्रा २३)। °वाय वि [°पाग] वृक्ष-रहित, वृक्ष-वर्जित; (श्रा २३)। °वाय वि [°वाज्] शत्रु-नाशक; (श्रा २३)। °वाय पुं [°पाद] महान् वृक्ष, बड़ा पेड़; (श्रा २३)। °वाय वि [°पात्] प्रकृष्ट पैर वाला; (श्रा २३)। °वाय वि [°वाय] फलित शालि; (श्रा २३)। °वाय वि [°वाप] १ विशेष भाव से शत्रु की चिन्ता करने वाला; २ पुं. मन्त्री, अमात्य; ३ सुभट, योद्धा; (श्रा २३)। °वाय वि [°पात] आपात-सुन्दर जो प्रारम्भ में ही सुन्दर हो वह; (श्रा २३)। °वाय वि [°वाय] श्रेष्ठ विवाह वाला;

(श्रा २३)। °वाय वि [°पाय] श्रेष्ठ रक्षा वाला, जिसकी रक्षा का उत्तम प्रबन्ध हो वह; २ अत्यन्त प्यासा; ३ पुं. राजा, नरेश; (श्रा २३)। °वाय वि [°व्यात] १ इतर के पास विशेष गमन करने वाला; २ पुं. भिक्षुक, याचक; (श्रा २३)। °वाय वि [°पायस्] १ दूसरे की रक्षा के लिये हथियार रखने वाला; २ पुं. सुभट, योद्धा; (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°व्याजा] वेश्या, वारांगना; (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°व्यागस्] असती, कुलटा; (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°व्यापा] अन्तिम समुद्र की स्थिति; (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°रपाता] धूर्त-मैत्री; (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°माया] नृप-कन्या; (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°रपागा] मरु-भूमि; (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°वाच्] कश्मीर-भूमि; (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°वाज्] नृप-स्थिति; (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°पात्] शतपदी, जन्तु-विशेष (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°व्यावा] भेरी, वाद्य-विशेष; (श्रा २३)। °विएस पुं [°विदेश] परदेश, विदेश; (पउम ३२, ३६)। °व्वस देखो °वस; (वज्जा २६५; भवि)। °संतिग वि [°सत्क] पर-संबन्धी, परकीय; (पगह १, ३)। °समय पुं [°समय] इतर दर्शन का सिद्धान्त; "जावइया नयवाया तावइया चेव परसमया" (सम्म १४४)। °हुअ वि [°भृत] १ दूसरे से पुष्ट, अन्य से पालित; (प्राप्र)। २ पुंस्त्री. कोयल, पिक पक्षी; (कप्प), स्त्री—°आ; (सुर ३, ५४; पाअ)। °हाय देखो °घाय; (प्रासू १०४; सम ६७)। °हीण देखो °हीण; (धर्मवि १३६)। °यत्त वि [°यत्त] पराधीन, परतन्त्र; (पउम ६४, ३४; उप पृ १८२; महा)। °हीण वि [°धीन] परतन्त्र, परायत्त; (नाट—मालवि २०)।

पर° देखो परा=प्र; (श्रा २३; पउम ६१, ८)।

परं अ [परम्] १ परन्तु, किन्तु; "जं तुमं आणवेसित्ति, परं तुह दूरे नयरं" (महा)। २ उपरान्त; "नो से कप्पइ एत्तो बाहिं; तेण परं, जत्थ नाणदंसणचरित्ताइं उस्सप्पंति त्ति बेमि" (कस १, ५१; २, ४—७; ४, १२—२६)। ३ केवल, फक्त; "एस मह संतावो, परं भावससरमज्जणेण जइ अवगच्छइत्ति" (महा)।

परं अ [परुत्] आगामी वर्ष; "अज्जं कल्लं परं परारिं" (वै २), "अज्जं परं परारिं पुरिसा चिंतंति अत्थसंपत्तिं" (प्रासू ११०)।

परंग सक [परि + अङ्ग्] चलना, गति करना, । वकृ—परंगिज्जमाण; (औप)।

परंगमण न [पर्यङ्गन] पाँव से चलना, चंक्रमण; (औप)।

परंगामण न [पर्यङ्गन] चलाना, चंक्रमण कराना; (अग ११, ११—पत्र ५४४)।

परंतम वि [परतम] अन्य को हैरान करने वाला; (ठा ४, २—पत्र २१६)।

परंतम वि [परतमस्] १ अन्य पर क्रोध करने वाला; २ अन्य-विषयक अज्ञान रखने वाला; (ठा ४, २—पत्र २१६)।

परंतु अ [परन्तु] किन्तु; (सुपा ४६६)।

परंदम वि [परन्दम] १ अन्य को पीड़ा पहुँचाने वाला; (उत्त ७, ६)। २ अन्य को शान्त करने वाला; ३ अश्व आदि को सीखाने वाला; (ठा ४, २—पत्र २१३)।

परंपर, परंपरग, परंपरय वि [परम्पर] १ भिन्न भिन्न; (बंवि)। २ व्यवहित; "परंपर-सिद्ध—" (पण्ण १; ठा २, १; १०)। ३ पुंन. परम्परा, अविच्छिन्न धारा; (उप ७३३), "पुरिसपरंपरएण तेहिं इहया आणिआ" "एस दव्वपरंपरगो" (भाव १), "परंपरेणं" (कप्प; धर्मसं ५३१; १३०६)।

परंपरा स्त्री [परम्परा] १ अनुक्रम, परिपाटी; (अग; औप; पाअ)। २ अविच्छिन्न धारा, प्रवाह; (गाया १, १)। ३ निरन्तरता, अ-व्यवधान; (भग ६, १)। ४ व्यवधान, अन्तर; "अणंतरोववण्णगा चेव परंपरोववण्णगा चेव" (ठा २, २; भग १३, १)।

परंभरि वि [परम्भरि] दूसरे का पेट भरने वाला; (ठा ४,३—पत्र २४७)।

परंमुह वि [पराङ्मुख] मुँह-फिरा, विमुख; (पि २६७)।

परकीअ, परकेर, परक्क वि [परकीय] अन्य-संबन्धी, इतर से संबन्ध रखने वाला; (विसे ४१; सुपा ३४६; अभि १५१; षड्; स्वप्न ४०; स २०७; षड्), "न हि विअव्वा पमया परक्का" (गोय १३)।

परक्क न [दे] छोटा प्रवाह; (दे ६, ८)।

परक्कंत वि [पराक्रान्त] १ जिसने पराक्रम किया हो वह; २ अन्य से आक्रान्त; "गामाणुगामं दूइज्जमाणस्स दुज्जायं दुप्परक्कंतं भवइ" (आचा)। ३ न. पराक्रम, बल; ४ उद्यम, प्रयत्न; ५ अनुष्ठान; "जे अबुद्धा महाभागा वीरा असम्मत्तदंसिणो, असुद्धं तेसि परक्कंतं" (सूअ १, ८, २२)।

परक्कम सक [परा + क्रम्] पराक्रम करना । परक्कमे, परक्कमेज्जा, परक्कमेज्जासि ; (आचा) । वकृ—परक्कममंत, परक्कममाण; (आचा)। कृ—परक्कमियव्व, परक्कमम्म; (आचा १, १ ; सूत्र १, १, १) ।

परक्कम पुंन [पराक्रम] १ वीर्य, बल, शक्ति, सामर्थ्य ; (विसे १०४६ ; ठा ३, १ ; कुमा), "तस्स परक्कमं गीय-मायां न तए सुयं" (सम्मत्त१७६) । २ उत्साह ; ३ चेष्टा, प्रयत्न ; (आचू १; प्रासू ६३ ; आचा) । ४ शत्रु का नाश करने की शक्ति ; (जं ३) । ५ पर-आक्रमण, पर-पराजय ; (ठा ४ , १ ; आवम) । ६ गमन, गति ; (सूत्र २, १, ६) ।

परक्कमि वि [पराक्रमिन्] पराक्रम-संपन्न ; (धर्मवि १६ ; १२०) ।

परग न [दे. परक] १ तृण-विशेष, जिससे फूल गूँथे जाते हैं ; (आचा २, २, ३, २० ; सूत्र २, २, ७) । २ धान्य-विशेष ; (सूत्र २, २, ११) ।

परगासय वि [प्रकाशक] प्रकाश करने वाला; (तंदु ४६)।

परज्ज (अप) सक [परा + जि] पराजय करना, हराना । परज्जइ ; (भवि) ।

परज्जिअ (अप) वि [पराजित] पराजय-प्राप्त, हराया हुआ ; (भवि) ।

परज्झ वि [दे] १ पर-वश, पराधीन, परतन्त्र ; "जेसंखया; तुच्छपरप्पवाई ते पेज्जदोसाणुगया परज्झा" (उत्त ४, १३ बुह ४) । २ पुंन परतन्त्रता, पराधीनता ; (ठा १०— पत्र ५०५ ; भग ७, ८—पत्र ३१४) ।

परट्ट देखो **परियट्ट**=परिवर्त ; (जीवस २५२ ; पव १६२ ; कम्म ५, ५६) ।

परडा स्त्री [दे] सर्प-विशेष ; (दे ६, ५), "उयारं कुक्कमा-थो अत्थवेसम्मि अल्पमरडाए, बद्धो पीडाए ममो" (सुपा ६३०) ।

परदारिअ पुं [पारदारिक] परस्त्री-लम्पट ; (पउम १०५, १०७) ।

परद्ध वि [दे] १ पीडित, दुःखित ; (दे ६, ७०; पाअ; सुर ७, ४ ; १६, १४४ ; उप पृ २१० ; महा) । २ पतित; ३ भीरु, डरपोक ; (दे ६, ७०) । ४ व्याप्त; " जीइ परद्धा जीवा न दोसगुणदंसिणो होंति" (धम्मो १४)।

परप्पर देखो **परोप्पर**; (पि ३११; नाट—मालती १६८) ।

परब्भवमाण देखो **पराभव** ॥ परा+भू ।

परब्भस वि [दे] भीरु, डरपोक ; (षड्) ।

परमाअ पुं [दे] सुरत, मैथुन ; (दे ६, २७) ।

परम वि [परम] १ उत्कृष्ट, सर्वाधिक ; (सूत्र १, ६ ; जी ३७) । २ उत्तम, सर्वोत्तम, श्रेष्ठ ; (पंचव ४ ; धर्म ३ ; कुमा) । ३ अत्यर्थ, अत्यन्त ; (पण्ह १, ३ ; भग ; औप) । ४ प्रधान, मुख्य; (आचा; दस ६, ३) । ५ पुं मोक्ष, मुक्ति; ६ संयम, चारित्र ; (आचा ; सूत्र १, ६) । ७ न. सुख ; (दस ४) । ८ लगातार पाँच दिनों का उपवास; (संबोध ५८) । °ट्ठ पुं [°ार्थ] १ सत्य पदार्थ, वास्तविक चीज ; "अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे" (भग; धर्म १) । २ मोक्ष, मुक्ति ; (उत्त १८ ; पण्ह १, ३) । ३ संयम, चारित्र ; (सूत्र १, ६) । ४ पुंन. देखो नीचे °त्थ=ार्थ ; "परमट्ठनिट्ठिअट्ठा" (पडि ; धर्म २) । °ण्ण देखो °न्न ; (सम १५१) । °त्थ पुंन [°ार्थ] १ तत्त्व, सत्य; "तत्तं परमत्थं " (पाअ), "परम-त्थदो" (अभि ६१) । २—४ देखो °ट्ठ ; (सुपा २४ ; ११० ; सण ; प्रासू १६४; महा)। °त्थ न [°ास्त्र] सर्वो-त्तम हथियार, अमोघ अस्त्र ; (से १, १) । °दंसि वि [°दर्शिन्] १ मोक्ष देखने वाला ; २ मोक्ष-मार्ग का जान-कार ; (आचा) । °न्न न [°न्न] १ खीर, दुग्ध-प्रधान मिष्ट भोजन ; (सुपा ३६०) । २ एक दिन का उपवास ; (संबोध ५८) । °पय न [°पद] मोक्ष, निर्वाण, मुक्ति ; (पाअ; भवि ; अजि ४० ; पंचा १४) । °प्प पुं [°ात्मन्] सर्वोत्तम आत्मा, परमेश्वर ; (कुमा ; सुपा ८३ ; रयण४३)। °प्पय देखो °पय ; (सुपा १२७) । °प्पय देखो °प्प ; (भवि)। °प्पया स्त्री [°ात्मता] मुक्ति, मोक्ष ; "सेले-सिं आरुहिउं अरिकेसरिसूरी परमप्पयं पत्तो" (सुपा १२७) । °बोधिसत्त पुं [°बोधिसत्त्व] परमार्हत, अर्हन् देव का परम भक्त ; (मोह ३) । °संखिज्ज न [°संख्येय] संख्या-विशेष ; (कम्म ४, ७१) । °सोमणस्सिय वि [°सौमनस्यित] सर्वोत्तम मन वाला, संतुष्ट मन वाला; (औप; कप्प) । °सोमणस्सिय वि [°सौमनस्यिक] वही अर्थ ; (औप ; कप्प) । °हेला स्त्री [°हेला] उत्कृष्ट तिरस्कार ; (सुपा ४७०) । °ाउ न [°ायुस्] १ लम्बा आयुष्य, बड़ी उमर ; (पउम १०, ७) । २ जीवित-काल, उमर; (विपा १, १) । °ाणु पुं [°ाणु] सर्व-सूक्ष्म वस्तु; (भग; गउड) । °ाहम्मिय पुं [°ाधार्मिक] असुर-विशेष, नारक जीवों को दुःख देने वाले

देवों की एक जाति; (सम २८)। °होहिअ वि [°धोधिक] अवधिज्ञान-विशेष वाला, ज्ञानि-विशेष; (भग)।

परमिट्ठि पुं [परमेष्ठिन्] १ ब्रह्मा, चतुरानन; (पाअ; सम्मत्त ७८)। २ अर्हन्, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और मुनि; (सुपा ६६; भाव ६८; गच्छ ६; सिला १०)।

परमुक्क वि [परामुक्त] परित्यक्त; (पउम ७१, २६)।

परमुवगारि, परमुवयारि वि [परमोपकारिन्] बड़ा उपकार करने वाला; (सुर २, ४२; २, ३७)।

परमुह देखो परम्मुह; (से २, १६)।

परमेट्ठि देखो परमिट्ठि; (कुमा; भवि; चेइय ४६६)।

परमेसर पुं [परमेश्वर] सर्वैश्वर्य-संपन्न, परमात्मा; (सम्मत्त १४४; भवि)।

परम्मुह वि [पराङ्मुख] विमुख, मुँह-फिरा; (गाया १, २; काप्र ७२३; गा ६८८)।

परय न [परक] आधिक्य, अतिशय; (उत्त ३४, १४)।

परलोइअ वि [पारलौकिक] जन्मान्तर-संबन्धी; (आचा; सम ११६ ; पण्ह १, ५)।

परवाय वि [प्ररवाज] १ प्रकृष्ट शब्द से प्रेरणा करने वाला; २ पुं. सारथि, रथ हाँकने वाला; (श्रा २३)।

परवाय वि [प्रारवाय] १ श्रेष्ठ गाना गाने वाला; २ पुं. उत्तम गवैया; (श्रा २३)।

परवाय पुं [प्ररपाज] नाज भरने का कोठा, वह घर जहाँ नाज संगृहीत किया जाता है; (श्रा २३)।

परवाया स्त्री [प्ररवाप्] गिरि-नदी, पहाड़ी नदी; (श्रा २३)।

परस (अप) देखो फास=स्पर्श; (पिंग; भवि)। °मणि पुं [°मणि] रत्न-विशेष, जिसके स्पर्श से लोहा सुवर्ण होता है; (पिंग)।

परसण्ण (अप) देखो पसण्ण; (पिंग)।

परसु पुं [परशु] अस्त्र-विशेष, परश्वध, कुठार, कुल्हाड़ी; (भग ६, ३३; प्रासू ६; ६२; काल)। °राम पुं [°राम] जमदग्नि ऋषि का पुत्र, जिसने इक्कीस बार निःक्षत्रिय पृथिवी की थी; (कुमा; पि २०८)।

परसुहत्त पुं [दे] वृक्ष, पेड़, दरख्त; (दे ६, २६)।

परस्सर पुंस्त्री [दे. पराशर] गेंडा, पशु-विशेष; (पण्ण १; राज)। स्त्री—°री; (पण्ण ११)।

परहुत्त वि [पराभूत] पराजित, हराया गया; (पउम ६१, ८)।

परा अ [परा] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ आभिमुख्य, संमुखता; २ त्याग; ३ धर्षण; ४ प्राधान्य, मुख्यता; ५ विक्रम; ६ गति, गमन; ७ भङ्ग; ८ अनादर; ९ तिरस्कार; १० प्रत्यावर्तन; (हे २, २१७)। ११ भृश, अत्यन्त; (ठा ३, २; श्रा २३)।

परा स्त्री [दे. परा] तृण-विशेष; (पण्ह २, ३—पत्र १२३)।

पराइ सक [परा + जि] हराना, पराजय करना। संकृ—पराइइत्ता; (सुअनि १६६)।

पराइअ वि [पराजित] पराभव-प्राप्त; (पउम १, ८६; औप; स ६३४; सुर ६, २५; १३, १७१; उत्त ३२, १२)।

पराइअ (अप) वि [परागत] गया हुआ; (भवि)।

पराइण देखो पराजिण। पराइणइ; (पि ४७३; भग)।

पराई स्त्री [परकीया] इतर से संबन्ध रखने वाली; (हे ४, ३५०; ३६७)। देखो पराय=परकीय।

पराकम देखो परक्कम; (सुअ २, १, ६)।

पराकय वि [पराकृत] निराकृत, निरस्त; (अज्झ ३०)।

पराकर सक [परा + कृ] निराकरण करना। पराकरोदि (शौ); (नाट—चैत ३५)।

पराजय पुं [पराजय] परिभव, अभिभव; (राज)।

पराजय, पराजिण सक [परा + जि] पराजय करना, हराना। भूका—पराजयित्था; (पि ५१७)। भवि—पराजिणिस्सइ; (पि ५२१)। संकृ—पराजिणित्ता; (ठा ५, २)। हेकृ— पराजिणित्तए; (भग ७, ६)।

पराजिणिअ, पराजिय देखो पराइअ=पराजित; (उपपृ ५१; महा)।

पराण देखो पाण=प्राण; (नाट—चैत ५४; पि १३२)।

पराणअ वि [परकीय] अन्य का, दूसरे का; "अत्थ हिरण्ण-सुवण्णं हत्थेण पराणगंपि नो छिप्पे" (गच्छ २, ५०)।

पराणिय वि [पराणीत] पहुँचा हुआ; (भवि)।

पराणी सक [परा + णी] पहुँचाना। पराणइ; (भवि)। पराणेमि; (स २३४), "जइ भणसि ता निमेसमित्तेण तुमं तायमंदिरं पराणेमि" (कुप्र ६०)।

परानयण न [पराणयन] पहुँचाना; "नियमणिगिहीसपानयणो का लज्जा, भवि य ऊसवो एस" (उप ७२८ टी)।

पराभव सक [परा + भू] हराना। कवकृ—पराभविज्जंत, पराभवमाण; (उप ३२० टी; गाया १, २; १८)।

पराभव पुं [पराभव] पराजय; (विपा १, १)।

परामविअ वि [पराभूत] अभिभूत, हराया हुआ; (धर्मवि ६८)।

परामट्ठ देखो **परामुट्ठ**; (पउम ६८, ७३)।

परामरिस सक [परा + मृश्] १ विचार करना, विवेचन करना। २ स्पर्श करना। परामरिसइ; (भवि)। वकृ—**परामरिसंत**; (भवि)। संकृ—**परामरिसिअ**; (नाट—मृच्छ ८७)।

परामरिस पुं [परामर्श] १ विवेचन, विचार; (प्रामा)। २ युक्ति, उपपत्ति; ३ स्पर्श; ४ न्याय-शास्त्रोक्त व्याप्ति-विशिष्ट रूप से पक्ष का ज्ञान; (हे २, १०५)।

परामिट्ठ, **परामुट्ठ** } वि [परामृष्ट] १ विचारित, विवेचित; २ स्पृष्ट, छुआ हुआ; (नाट—मृच्छ ३३; हे १, १३१; स १००; कुप्र ५१)।

परामुस सक [परा + मृश्] १ स्पर्श करना, छूना। २ विचार करना, विवेचन करना। ३ आच्छादित करना। ४ पोंछना। ५ लोप करना। परामुसइ; (कस)। कर्म—"सूरो परामुसिज्जइ खामिमुहुक्खित्तधूलिहिं" (उवर १२३)। वकृ—"निवडतरिउज्जेण नयणाइं **परामुसंतेण** भणियं" (कुप्र ६६)। कवकृ—**परामुसिज्जमाण**; (स ३४६)।

परामुसिय देखो **परामुट्ठ**; (महा; पाअ)।

पराय अक [प्र + राज्] विशेष शोभना। वकृ—**परायंत**; (कप्प)।

पराय पुं [पराग] १ धूली, रज; "रेणू पंसू रओ पराओ य" (पाअ)। २ पुष्प-रज; (कुमा; गउड)।

पराय, **परायग** } वि [परकीय] पर-संबन्धी, इतर से संबन्ध रखने वाला; "नो अप्पणा पराया गुरुणो कइयावि हुंति सुद्धाणं" (सट्ठि १०५; हे ४, ३७६; भग ८, ५)।

परायण वि [परायण] तत्पर; (कम्म १, ६१)।

परारि अ [परारि] आगामी तीसरा वर्ष; (प्रासू ११०; वै २)।

पराल देखो **पलाल**; (प्रासू १३८)।

पराव (अप) सक [प्र + आप्] प्राप्त करना। परावहिं; (हे ४, ४४२)।

परावत्त अक [परा + वृत्] १ बदलना, पलटना। २ पीछे लौटना। परावत्तइ; (उवर ८८)। वकृ—**परावत्तमाण**; (राज)।

परावत्त सक [परा + वर्तय्] १ फिराना। २ आवृत्ति करना। परावत्तंति; (पव ७१), परावत्तेसि; (मोह ४७)। संकृ—"तो सागरेण भणियं अरे **परावत्तिऊण** नियवरइं" (कुप्र ३७८)।

परावत्त पुं [परावर्त] परिवर्तन, हेराफेरी; (स ६२; उप पृ २७; महा)।

परावत्ति वि [परावर्तिन्] परिवर्तन कराने वाला; "वेस-परावत्तिणी गुलिया" (महा)।

परावत्ति स्त्री [परावृत्ति] परिवर्तन, हेराफेरी; (उप १०३१ टी)।

परावत्तिय वि [परावर्तित] परिवर्तित, बदला हुआ; (महा)।

परासर पुं [पराशर] १ पशु-विशेष; (राज)। २ ऋषि-विशेष; (औप; गा ८६२)।

परासु वि [परासु] प्राण-रहित, मृत; (श्रा १४; धर्मसं ६७)।

पराहव देखो **पराभव**=पराभव; (गुण ६)।

पराहुत्त वि [दे. पराङ्मुख] विमुख, मुँह-फिरा; (ग २४५; से १०, ६४; उप पृ ३८८; ओघ ५१४; वज्जा २६), "महविणयपराहुत्तो" (पउम ३३, ७४; सुख २, १७)।

पराहुत्त, **पराहूअ** } वि [पराभूत] अभिभूत, हराया हुआ; (उप ६४८ टी; पाअ)।

परि अ [परि] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ सर्वतो-भाव, समंतात, चारों ओर; (गा २१; सुअ १, ६)। २ परिपाटी, क्रम; (पिंग)। ३ पुनः पुनः; फिर फिर; (पण्ह १, १; श्रावक २८४)। ४ सामीप्य, समीपता; (गउड ७७६)। ५ विनिमय, बदला; जैसे—'परियाण'= परिदान; (भवि)। ६ अतिशय, विशेष; (स ७३४)। ७ संपूर्णता; जैसे—'परिहिअ'; (पव ६६)। ८ बाहरपन; (श्रावक २८४)। ६ ऊपर; (हे २, २११; सुपा २६६)। १० शेष, बाकी; ११ पूजा; १२ व्यापकता; १३ उपरम, निवृत्ति; १४ शोक; १५ किसी प्रकार की प्राप्ति; १६ आख्यान; १७ संतोष-भाषण; १८ भूषण, अलंकरण; १६ आलिंगन; २० नियम; २१ वर्जन, प्रतिषेध; (हे २, २१७; भवि; गउड)। २२ निरर्थक भी इसका प्रयोग होता है; (गउड १०; सण)।

परि देखो **पडि**=प्रति; (ठा ५, १—पत्र ३०२; पण्ण १६—पत्र ७७४; ७८१)।

परि स्त्री [दे] गीति, गीत; (कुमा)।

परि सक [क्षिप्] फेंकना। परिइ; (षड्)।

परिअंज सक [परि+भञ्ज्] भाँगना, तोड़ना । परिभं-जइ; (धात्वा १४३) ।
परिअंत सक [श्लिष्] १ आलिंगन करना । २ संसर्ग करना । परिअंतइ; (हे ४, १६०) ।
परिअंत देखो पज्जंत; (पण्ह १, ३; पउम ६५, १६; सूअ १, १, १५) ।
परिअंतणा स्त्री [परियन्त्रणा] अतिशय यन्त्रणा; (नाट—मालती २८) ।
परिअंतिअ वि [श्लिष्ट] आलिंगित; (कुमा) ।
परिअंभिअ वि [परिजृम्भित] विकसित; (से २, २०) ।
परिअट्ट अक [परि+वृत्] पलटना, बदलना । वकृ—"दिट्ठो अपरिअट्टंतीए सहयारच्छायाए एसो" (कुप्र ४५; महा), परियट्टमाण; (महा) ।
परिअट्ट सक [परि+वर्तय्] १ पलटाना, बदलाना । २ आवृत्ति करना, पठित पाठ को याद करना । ३ फिराना, घुमाना । परियट्टइ, परियट्टेइ; (भवि; उव) । हेकृ—"परि-यट्टिउमाढत्तो नलिणीगुम्मं ति अज्झयणं" (कुप्र १७३) ।
परिअट्ट सक [परि+अट्] परिभ्रमण करना, घूमना । परिअट्टइ; (हे ४, २३०) । संकृ—परियट्टिवि (अप); (भवि) ।
परिअट्ट पुं [दे] रजक, धोबी; (दे ६, १५) ।
परिअट्ट पुं [परिवर्त] १ पलटाव, बदला; २ समय का परिमाण-विशेष, अनन्त उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी काल; (विपा १, १; सुर १६, १४५; पव १६२) ।
परिअट्टग वि [परिवर्तक] परिवर्तन करने वाला; (निचू १०) ।
परिअट्टण न [परिवर्तन] १ पलटाव, बदला करना; (पिंड ३२४; वै ६७) । २ द्विगुण, त्रिगुण आदि उपकरण; (आचा १, २, १, १) ।
परिअट्टणा स्त्री [परिवर्तना] १ फिर फिर होना; (पण्ह १, १) । २ आवृत्ति, पठित पाठ का आवर्तन; (आचा २, १, ४, २; उत्त २६, १; ३०, ३४; औप; ठा ५, ३) । ३ द्विगुण आदि उपकरण; (पि २८६) । ४ बदला करना; (पिंड ३२५) ।
परिअट्टय वि [पर्यटक] परिभ्रमण करने वाला; "मेरुगिरिस-ययपरियट्टयं" (कप्प ३६) ।
परिअट्टलिअ वि [दे] परिच्छिन्न; (दे ६, ३६) ।
परिअट्टिअ वि [दे] परिच्छन्न; (षड्) ।
परिअट्टिय वि [परिवर्तित] बदलाया हुआ; (ठा ३,४; पिं-ड ३२३; पंचा १३, १२) । देखो परिवत्तिअ ।
परिअड सक [परि+अट्] परिभ्रमण करना । परिअडंति; (श्रावक १३३) । वकृ—परियडंत; (सुर २, ३) ।
परिअडण न [पर्यटन] परिभ्रमण; (स ११४) ।
परिअडि स्त्री [दे] १ वृति वाड; २ वि. मूर्ख, बेवकूफ; (दे ६, ७३) ।
परिअडिअ वि [पर्यटित] परिभ्रान्त, भटका हुआ; (सिक्खा १७) ।
परिअड्ढिअ वि [दे] प्रकटित, व्यक्त किया हुआ; (षड्) ।
परिअड्ढ अक [परि+वृध्] बढ़ना । "परिअड्ढइ लायण्णं" (हे ८, २२०) ।
परिअड्ढ सक [परि+वर्धय्] बढ़ाना; (हे ४, २२०) ।
परिअड्ढि स्त्री [परिवृद्धि] विशेष वृद्धि; (प्राकृ २१) ।
परिअड्ढिअ वि [परिवर्धिन्, °क] बढ़ाने वाला; "समकमल-वंदपरियड्ढिए" (औप) ।
परिअड्ढिअ वि [पर्याढ्यक] परिपूर्ण; (औप) ।
परिअड्ढिअ वि [परिकर्षिन्, °क] खींचने वाला, आकर्षक; (औप) ।
परिअड्ढिअ वि [परिकृष्ट] खींचा हुआ, आकृष्ट; "जस्स समरेसु रेहइ हयगयमयमिलियपरिमलुग्गारा । दढपरियड्ढियजयसिरिकेसकलावो व्व खग्गलया" (सुपा ११)।
परिअण पुं [परिजन] १ परिवार, कुटुम्ब, पुत्र-कलत्र आदि पालनीय वर्ग; २ अनुचर, अनुगामी ; (गा २८३ ; गउड ; पि ३५०) ।
परिअत्त देखो परिअंत=श्लिष् । परिअत्तइ ; (हे ४, १६० टि) ।
परिअत्त देखो परिअट्ट=परि+वृत् । परियत्तइ ; (भवि) । " नहुव्व परिअत्तए जीवो " (वै ६०), परियत्तए ; (उवा) । वकृ—परियत्तमाण ; (महा) ।
परिअत्त देखो परिअट्ट=परि+वर्तय् । संकृ—परियत्तेउ ; (तंदु ३८) ।
परिअत्त देखो परिअट्ट=परिवर्त ; (औप) ।
परिअत्त वि [दे] प्रसृत, फैला हुआ ; " सव्वासवरिउसंभवहो करपरिअत्ता ताहँ " (हे ४, ३६५) ।
परिअत्त वि [परिवृत्त] पलटा हुआ ; (भवि) ।
परिअत्तण देखो परिअट्टण ; (गउड),
" वाइयणकरपरंपरपरियत्तणखेयवसपरिस्संता ।

अत्था किंचिअवत्था सुत्थावत्था सुयंति व्व " (सुपा ६३३)।
परिअत्तणा देखो **परिअट्टणा** ; (सज)।
परिअत्तमाण देखो **परिअत्त**।
परिअत्तमाणी स्त्री [**परिवर्तमाना**] कर्म-प्रकृति-विशेष, वह कर्म-प्रकृति जो अन्य प्रकृति के बन्ध या उदय को रोक कर अपने बन्ध या उदय को प्राप्त होती है ; (पंच ३, १४; ३, ४३ ; कम्म ५, १ टी)।
परिअत्ता स्त्री [**परिवर्ता**] ऊपर देखो ; (कम्म ५, १)।
परिअत्तिअ वि [**परिवर्तित**] १ मोड़ा हुआ ; "वालिअयं परिअत्तिअं " (पाअ)। २ देखो **परिअट्टिय** ; (भवि)।
परिअर सक [**परि+चर्**] सेवा करना। वकृ—**परिअरंत**; (नाट—शकु १५८)।
परिअर वि [**दे**] लीन, निमग्न ; (दे ६, २४)।
परिअर पुं [**परिकर**] १ कटि-बन्धन ; " सन्नद्धबद्धपरियर-भडेहिं " (भवि)। २ परिवार ; " किरणकिलामियपरियरभुयंगबिसजलणधूमतिमिरेहिं " (गउड ; चेइय ८४)।
परिअर पुं [**परिचर**] सेवक, भृत्य ; " अणुणिज्जंत रक्खापरिअरधुअधवलचामरपिहंता " (गउड)।
परिअरण न [**परिचरण**] सेवा ; (संबोध ३६)।
परिअरणा स्त्री [**परिचरणा**] सेवा; (सम्मत्त २१५)।
परिअरिय वि [**परिकरित, परिवृत**] १ परिवार-युक्त ; "हयगयरहजोहसुहडपरियरिओ " (महा ; भवि ; सण)। २ परिवेष्टित ; " तओ तं समायणिऊण सुइसुहं ताण गेयं समंतओ परियरिया सव्वलोगेणं " (महा ; सिरि १२८२)।
परिअल सक [**गम्**] जाना, गमन करना। परिअलइ ; (हे ४, १६२)।
परिअल } पुंस्त्री [**दे**] थाल, थलिया, भोजन-पात्र ; (भवि ;
परिअलि } दे ६, १२)।
परिअलिअ वि [**गत**] गया हुआ ; (कुमा)।
परिअल्ल देखो **परिअल**। परिअल्लइ ; (हे ४, १६२)। संकृ—**परिअल्लिऊण** ; (कुमा)।
परिआरअ वि [**परिचारक**] सेवक, भृत्य ; (चारु ५३)। स्त्री—°**रिआ** ; (अभि १६६)।
परिआल सक [**वेष्टय्**] वेष्टन करना, लपेटना। परिआलेइ; (हे ४, ५१)।
परिआल वि [**दे**] परिवृत, परिवेष्टित;
"सो जयइ आमइल्लायमाणमुहलालिवलयपरिआलं।
छच्छिनिवेसंतेउरवइं व जो वहइ वणमालं" (गउड)।
परिआल देखो **परिवार**; (णाया १, ८; ठा ४, २; औप)।
परिआलिअ वि [**वेष्टित**] लपेटा हुआ, वेढा हुआ; (कुमा; पाअ)।
परिआविअ सक [**पर्या+पा**] पीना। परिआविइज्जा; (सूअ २, १, ४६)।
परिआसमंत (अप) अ [**पर्यासमन्तात्**] चारों ओर से; (भवि)।
परिइ सक [**परि+इ**] पर्यटन करना। परियंति; (उत्त २७, १३)।
परिइण्ण वि [**परिकीर्ण**] व्याप्त; (सम्मत्त १५६)।
परिइद (शौ) वि [**परिचित**] परिचय-विशिष्ट, ज्ञात, पहचाना हुआ; (अभि २४५)।
परिउंब सक [**परि+चुम्ब्**] चुम्बन करना। परिउंबइ; (भवि)।
परिउंबण न [**परिचुम्बन**] सर्वतः चुम्बन; (गा २२; हास्य १३४)।
परिउंबणा स्त्री [**परिचुम्बना**] ऊपर देखो; "गंडपरिउंबणापुलइअंग ण पुणो चिराइस्सं" (गा २०)।
परिउज्झिय वि [**पर्युज्झित**] सर्वथा त्यक्त; (सण)।
परिउट्ठ वि [**परितुष्ट**] विशेष तुष्ट; (स ७३४)।
परिउत्थ वि [**दे**] प्रोषित, प्रवास में गया हुआ; (दे ६, १३)।
परिउसिअ वि [**पर्युषित**] वासी, ठण्ढा, भाफ निकला (भोजन); (दे १, ३७)।
परिऊढ वि [**दे. परिगूढ**] क्षाम, कृश, पतला:
"उप्फुल्लिआइ खेल्लउ मा णं वारेहि होउ परिऊढा।
मा जहणभारगरुई पुरिसाअंती किलिम्मिहिइ" (गा१९६)।
परिऊरण न [**परिपूरण**] परिपूर्ति; (नाट— शकु ८)।
परिएस देखो **परिवेस**=परि+विष्। कवकृ—**परिएसिज्जमाण**; (आचा २, १, २, १)।
परिएस देखो **परिवेस**=परिवेश; (स ३१२)।
परिओस सक [**परि+तोषय्**] संतुष्ट करना, खुशी करना। परिओसइ; (भवि; सण)।
परिओस पुं [**परितोष**] आनन्द, संतोष, खुशी; (से ११, ३; गा ६८; २०६; स ६; सुपा ३७०)।
परिओस पुं [**दे. परिद्वेष**] विशेष द्वेष; (भवि)।
परिओसिय वि [**परितोषित**] संतुष्ट किया हुआ; (से १३, २५; भवि)।

परिंत देखो **परी**=परि + इ ।

परिकंख सक [**परि + काङ्क्ष्**] १ विशेष अभिलाषा करना । २ प्रतीक्षा करना । परिकंखए; (उत्त ७, २) ।

परिकंद पुं [**परिक्रन्द**] आक्रन्द, चिल्लाहट; (हम्मीर ३०) ।

परिकंपि वि [**परिकम्पिन्**] अतिशय कँपाने वाला;(गउड)।

परिकंपिर वि [**परिकम्पितृ**] विशेष काँपने वाला; (मण) ।

परिकच्छिय वि [**परिकक्षित**] परिगृहीत; (राय) ।

परिकड्डलिअ वि [**दे**] एकत्र पिण्डीकृत; (पिंड २३६) ।

परिकड्ढ सक [**परि + कृष्**] १ पार्श्व भाग में खींचना । २ प्रारम्भ करना । वकृ—**परिकड्ढमाण**; (राज)। संकृ—**परिकड्ढिऊण**; (पंचव २) ।

परिकढिण वि [**परिकठिन**] अत्यन्त कठिन; (गउड) ।

परिकप्प सक [**परि + कल्पय्**] १ निष्पादन करना । २ कल्पना करना । परिकप्पयंति; (सूअ १, ७, १३) । संकृ—**परिकप्पिऊण**; (चेइय १४) ।

परिकप्पिय वि [**परिकल्पित**] छिन्न, काटा हुआ; (पराह १, ३)। देखो **परिगप्पिय** ।

परिकब्बुर वि [**परिकर्बुर**] विशेष कबरा; (गउड) ।

परिकम्म } न [**परिकर्मन्**] १ गुण-विशेष का आधान,
परिकम्मण } संस्कार-करण; "परिकम्मं किरियाए वत्थूणं गुणविसेसपरिणामो" (विसे ६२३; सुर १३, १२४), "तेवि पयट्टा काउं सरीरपरिकम्मणं एवं" (कुप्र २७१; कप्प; उव) । २ संस्कार का कारण-भूत शास्त्र; (णंदि) । ३ गणित-विशेष; ४ संख्यान-विशेष, एक तरह की गणना; (ठा १०—पत्र ४९६)। ५ निष्पादन; (पव १३३) ।

परिकम्मणा स्त्री ऊपर देखो; "खेलमल्लं निच्चं न तस्स परिकम्मणा नय विणासो" (विसे ६२४; सम्म ५४; संबोध ५३; उपपं ३४) ।

परिकम्मिय वि [**परिकर्मित**] परिकर्म-विशिष्ट, संस्कारित; (कप्प) ।

परिकर देखो **परिअर**=परिकर; (पिंग) ।

परिकलण न [**परिकलन**] उपभोग; "भमरपरिकलणालमकमलभूसियसरो" (सुपा ३) ।

परिकलिअ वि [**परिकलित**] १ युक्त, सहित; (सिरि ३८१) । २ व्याप्त; (सम्मत्त २१५) । ३ प्राप्त; "अंजलिपरिकलियजलं व गलइ इह जीयं" (धर्मवि २५) ।

परिकवलणा स्त्री [**परिकवलना**] भक्षण; "हरियपरिकवलणापुट्ठगोसंकुलो" (सुपा ३) ।

परिकविल वि [**परिकपिल**] सर्वथा कपिल वर्ण वाला; (गउड) ।

परिकविस वि [**परिकपिश**] अतिशय कपिश रँग वाला; (गउड) ।

परिकसण न [**परिकर्षण**] खींचाव; (गउड) ।

परिकह सक [**परि + कथय्**] प्ररूपण करना, कहना । परिकहेइ, (उवा), परिकहंतु; (कम्म ६, ७५) । कर्म—परिकहिज्जइ; (पि ५४३) । हेकृ—**परिकहेउं**; (ओप) ।

परिकहण न [**परिकथन**] आख्यान, प्ररूपण; (सुपा २) ।

परिकहणा स्त्री [**परिकथना**] ऊपर देखो; (आवम) ।

परिकहा स्त्री [**परिकथा**] १ बातचीत; २ वर्णन; (पिंड १२६) ।

परिकहिय वि [**परिकथित**] प्ररूपित, आख्यात; (महा)।

परिकिण्ण देखो **परिकिन्न** "वेडियाचक्कवालपरिकिण्णा" (उवा) ।

परिकित्तिअ वि [**परिकीर्त्तित**] व्यावर्णित, श्लाघित; (श्रु ११०) ।

परिकिन्न वि [**परिकीर्ण**] १ परिवृत, वेष्टित "नियपरियणपरिकिन्नो" (धर्मवि ५४) । २ व्याप्त; (सुर १, ५६)।

परिकिलंत वि [**परिक्लान्त**] विशेष खिन्न; (उप २६५ टी) ।

परिकिलेस सक [**परि + क्लेशय्**] दुःखी करना, हैरान करना । परिकिलेसंति; (भग) । संकृ—**परिकिलेसित्ता**; (भग) ।

परिकिलेस पुं [**परिक्लेश**] दुःख, बाधा, हैरानी; (सूअ २, २, ५५; ओप; स ६७५; धर्मसं १००४) ।

परिकीलिर वि [**परक्रीडितृ**] अतिशय क्रीड़ा करने वाला; (सण) ।

परिकुंठिय वि [**परिकुण्ठित**] जडीभूत; (विसे १८३) ।

परिकुडिल वि [**परिकुटिल**] विशेष वक्र; (सुर १, १) ।

परिकुद्ध वि [**परिक्रुद्ध**] अत्यन्त कुपित; (धर्मवि १२४) ।

परिकुविय वि [**परिकुपित**] अतिशय क्रुद्ध; (गाया १, ८; उव; सण) ।

परिकोमल वि [**परिकोमल**] सर्वथा कोमल; (गउड) ।

परिक्कंत वि [**पराक्रान्त**] पराक्रम-युक्त; (सूअ १, ३, ४, १५) ।

परिक्कम सक [परि+क्रम्] १ पाँव से चलना। २ समीप में आना। ३ पराभव करना। ४ अक. पराक्रम करना। परिक्कमि; (उवंस ४६)। परिक्कमसि; (उवंस ५५)। परिक्कमेब (शौ); (पि ४८१)। वकृ—**परिक्कमंत**; (नाट)। कृ—**परिक्कमियव्व**; (णाया १, ५—पत्र १०३)। संकृ—**परिक्कम्म**; (सूअ १, ४, १, २)।

परिक्कम देखो **परक्कम**=पराक्रम; (णाया १, १; सण; उत्त १८, २४)।

परिक्कहिअ देखो **परिकहिय**; (सुपा २०८)।

परिक्काम देखो **परिक्कम**=परि+क्रम्। परिक्कामदि; (पि ४८१; लि ८७)।

परिक्ख सक [परि+ईक्ष्] परखना, परीक्षा करना। परिक्खइ, परिक्खए, परिक्खंति, परिक्खउ; (भवि; महा; वज्जा १५८; स ४५७)। वकृ—**परिक्खंत, परिक्खमाण**; (ओघ ८० भा; श्रा १४)। संकृ—**परिक्खिय**; (उव)। कृ—**परिक्खियव्व**; (काल)।

परिक्खअ वि [परीक्षक] परीक्षा करने वाला; (सुपा ४२७; श्रा १४)।

परिक्खअ वि [परिक्षत] आहत, जिसको घाव हुआ हो वह; (से ८, ७३)।

परिक्खअ पुं [परिक्षय] १ क्रमशः हानि; "बहुलपक्खचंदस्स जोण्हापरिक्खओ विअ" (चारु ८)। २ क्षय, नाश; (गउड)।

परिक्खण न [परीक्षण] परीक्षा; (स ४६६; कप्पू; सुपा ४४६; णाया १, ७; भवि)।

परिक्खणा स्त्री [परीक्षणा] परीक्षा; (पउम ६१, ३३)।

परिक्खमाण देखो **परिक्ख**।

परिक्खल अक [परि+स्खल्] स्खलित होना। वकृ—**परिक्खलंत**; (से ४, १७)।

परिक्खलिअ वि [परिस्खलित] स्खलना-प्राप्त; (पि ३०६)।

परिक्खा स्त्री [परीक्षा] परख, जाँच; (नाट—मालवि २२)।

परिक्खाइअ वि [दे] परिक्षीण; (षड्)।

परिक्खाम वि [परिक्षाम] अतिशय कृश; (उत्तर ७२; नाट—रत्ना ३)।

परिक्खि वि [परीक्षिन्] परखने वाला, परीक्षक; (श्रा१४)।

परिक्खित्त वि [परिक्षिप्त] १ वेष्टित, घेरा हुआ; (औप; पाअ; से १, ५२; वसु)। २ सर्वथा क्षिप्त; (आवम)। ३ चारों ओर से व्याप्त; (राय)।

परिक्खिय वि [परीक्षित] जिसकी परीक्षा की गई हो वह; (प्रासू १५)।

परिक्खिव सक [परि+क्षिप्] १ वेष्टन करना। २ तिरस्कार करना। ३ व्याप्त करना। ४ फेंकना। "एवं खु जरामरणं परिक्खिवइ वग्गुरा व मयजूहं" (तंदु ३३; जीवस १८६)। कर्म—परिक्खिवीआमो; (पि ३१६)।

परिक्खिविय वि [परिक्षिप्त] फेंका हुआ; (हम्मीर ३२)।

परिक्खेव पुं [परिक्षेप] घेरा, परिधि; (भग; सम ५६; कस; औप)।

परिक्खेवि वि [परिक्षेपिन्] तिरस्कार करने वाला; (उत्त ११, ८)।

परिखंध पुं [दे] काहार, कहार, जलादि-वाहक नौकर; (दे २, २७)।

परिखज्ज सक [परि+खर्ज्] खजवाना। कवकृ—"परिखज्जमाणमत्थयदेसो" (उप ६८६ टी)।

परिखण न [परीक्षण] परीक्षा-करण; (पव ३८)।

परिखविय वि [परिक्षपित] परिक्षीण; "गुरुमहज्झाणपरिखवियसरीरो" (महा)।

परिखाम वि [परिक्षाम] अति दुर्बल, विशेष कृश; (गा १६६)।

परिखिज्ज देखो **परिक्खिव**; (सण)।

परिखिव देखो **परिक्खिव**। परिखिवइ; (भवि), "राया तं परिखिवई दोहग्गवईया मज्झम्मि" (सम्मत्त २१७; चेइय ६५५)।

परिखिविय देखो **परिखित्त**; (सण)।

परिखुहिय वि [परिक्षुब्ध] अतिशय क्षोभ को प्राप्त; (भवि)।

परिखेइय वि [परिखेदित] विशेष खिन्न किया हुआ; (सण)।

परिखेद (शौ) पुं [परिखेद] विशेष खेद; (स्वप्न १०; ८०)।

परिखेय सक [परि+खेदय्] अतिशय खिन्न करना। परिखेयइ; (सण)। संकृ—**परिखेइवि** (अप); (सण)।

परिखेविय (अप) देखो **परिखिविय**; (सण)।

परिगंतु देखो **परिगम**।

परिगण सक [परि+गणय्] १ गणना करना। २ चिन्तन करना, विचार करना। वकृ—"एस थक्को मम गमयस्स त्ति परिगणंतेण विम्हाविओ राया" (महा)।

परिगप्पण न [परिकल्पन] कल्पना; (धर्मसं ६८१)।

परिगप्पणा स्त्री [परिकल्पना] ऊपर देखो; (धर्मसं २०५)।

परिकप्पिय वि [परिकल्पित] जिसकी कल्पना की गई हो वह; (स ११३; धर्मसं ६६६)। देखो **परिकप्पिय**।

परिगम सक [परि+गम्] १ जाना, गमन करना। २ चारों ओर से वेष्टन करना। ३ व्याप्त करना। संकृ—**परिगन्तु**; (सथ)।

परिगमण न [परिगमन] १ गुण, पर्याय; "परिगमणं पज्जाओ अणेगकरणं गुणोत्ति एगत्था" (सम्म १०६)। २ समन्ताद् गमन; (निचू ३)।

परिगमिर वि [परिगन्तृ] जाने वाला; (सण)।

परिगय वि [परिगत] १ परिवेष्टित; "मणुस्सवग्गुरापरिगए" (उवा; गा ६६), "बहुपरियणपरिगया" (सम्मत्त २१७)। २ व्याप्त; "विसपरिगयाहिं दाढाहिं" (उवा)।

परिगर पुं [परिकर] परिवार; "सेसाण तु हरियव्वं परिगर-विहवकालमादीणि णाउं" (धर्मसं ६२६)।

परिगरिय वि [परिकरित] देखो **परिअरिय**; (सुपा १२७)।

परिगल अक [परि+गल्] १ गल जाना, क्षीण होना। २ झरना टपकना। परिगलइ; (काल)। वकृ—**परिगलंत**; (पउम ११२, १५; तंदु ४४)।

परिगलिय वि [परिगलित] गला हुआ, परिक्षीण; (कुप्र ७; महा; सुपा ८७; ३६२)।

परिगलिर वि [परिगलितृ] गल जाने वाला, क्षीण होने वाला; (सण)।

परिगह देखो **परिगेण्ह**। संकृ—**परिगहिअ**; (मा ४८)।

परिगह देखो **परिग्गह** ; (कुमा)।

परिगहिय देखो **परिग्गहिय**; (बृह १)।

परिगा सक [परि+गै] गान करना। कवकृ—**परिगिज्ज-माण**; (णाया १, १)।

परिगालण न [परिगालन] गालन, छानन; (पण्ह १, १)।

परिगिज्जमाण देखो **परिगा**।

परिगिज्झ } देखो **परिगेण्ह**।
परिगिज्झिय }

परिगिण्ह देखो **परिगेण्ह**। परिगिण्हइ; (आचू १)। वकृ—**परिगिण्हंत**, **परिगिण्हमाण**; (सूअ २, १, ४४; ठा ७— पत्र ३८३)।

परिगिला अक [परि+ग्लै] ग्लान होना। वकृ —**परिगि-लायमाण**; (आचा)।

परिगुण सक [परि+गुणय्] परिवर्तन करना, गिनती करना। परिगुणइ (अप); (पिंग)।

परिगुणण न [परिगुणन] स्वाध्याय; (ओघ ६२)।

परिगुव अक [परि+गुप्] १ व्याकुल होना। २ सक. सतत भ्रमण करना। वकृ—**परिगुवंत**; (राज)।

परिगुव सक [परि+गु] शब्द करना। वकृ—**परिगुवंत**; (राज)।

परिगेण्ह } सक [परि+ग्रह्] ग्रहण करना, स्वीकार करना;
परिग्गह } (प्रामा)। वकृ—**परिग्गहमाण**, (आचा १, ८, ३, १)। संकृ—**परिगिज्झिय**, **परिघेत्तूण**; (राज; पि ५८६)। हेकृ—**परिघेत्तुं**; (पि ५७६)। कृ—**परिगिज्झ**, **परिघेतव्व**, **परिघेत्तव्व**; (उत्त १, ४३; सुपा ३३; सूअ २, १, ४८; पि ५७०)।

परिग्गह पुं [परिग्रह] १ ग्रहण, स्वीकार; २ धन आदि का संग्रह; (पण्ह १, ५; औप)। ३ ममत्व, मूर्छा; (ठा १)। ४ ममत्व-पूर्वक जिसका संग्रह किया जाय वह; (आचा; ठा ३, १; धर्म २)। °**वेरमण** न [°विरमण] परिग्रह से निवृत्ति; (ठा १; पण्ह २, ५)। °**वंत** वि [°वत्] परि-ग्रह-युक्त; (आचा; पि ३६६)।

परिग्गहि वि [परिग्रहिन्] परिग्रह-युक्त; (सूअ १, ६)।

परिग्गहिय वि [परिगृहीत] स्वीकृत; (उवा; औप)।

परिग्गहिया स्त्री [पारिग्रहिकी] परिग्रह-संबन्धी क्रिया; (ठा २, १; नव १७)।

परिघग्घर वि [परिघर्घर] बैठा हुआ (आवाज); "हरिणो जयइ चिरं विहयसइपरिघग्घरा वाणी" (गउड)।

परिघट्ट सक [परि+घट्ट्] आघात करना। कवकृ—**परि-घट्टिज्जंत**; (महा)।

परिघट्टण न [परिघट्टन] आघात; (वज्जा ३८)।

परिघट्टण न [परिघटन] निर्माण, रचना; (निचू १)।

परिघट्टिय वि [परिघट्टित] आहत, ताडित; (जीव ३)।

परिघट्ठ वि [परिघृष्ट] १ जिसका घर्षण किया गया हो वह, घिसा हुआ; "मंदरयडपरिघट्ठ" (हे २, १७४)।

परिघाय देखो **परीघाय**; (राज)।

परिघास सक [परि+घासय्] जिमाना, भोजन कराना। हेकृ—**परिघासेउं**; (आचा)।

परिघासिय वि [परिघर्षित] परिघर्ष-युक्त; "एयसा का परि-घासियपुव्वे भवति" (आचा २, १०, ३, ५)।

परिघुम्मिर वि [परिघूर्णितृ] शनैः शनैः काँपता, हिलता,

कोलता; (पउम ८, २८३; गा १४८)।

परिघेतव्व
परिघेत्तव्व
परिघेत्तुं
परिघेत्तूण } देखो **परिगेण्ह**।

परिघोल सक [परि + घूर्ण्] १ डोलना। २ परिभ्रमण करना। वकृ—**परिघोलंत, परिघोलेमाण**; (से १, ३३; औप; णाया १, ४—पत्र ६७)।

परिघोलण न [दे. परिघोलन] विचार; (ठा ४, ४—पत्र २८३)।

परिघोलिर वि [परिघूर्णितृ] डोलने वाला; (गउड)।

परिचअ देखो **परियय**=परिचय; (नाट—शकु ७७)।

परिचअ देखो **परिच्चअ**। संकृ— **परिचइऊण, परिचइय**; (महा)।

परिचंचल वि [परिचञ्चल] अतिशय चपल; (वै १४)।

परिचत्त देखो **परिच्चत्त**; (महा; औप)।

परिचरणा स्त्री [परिचरणा] सेवा, भक्ति; (सुपा १५६)।

परिचल सक [परि+चल्] विशेष चलना। परिचलइ; (पिंग)।

परिचलिअ वि [परिचलित] विशेष चला हुआ; (दे ५, ६)।

परिचारअ वि [परिचारक] सेवा करने वाला, सेवक; (नाट—मालवि ६)। स्त्री—**°रिआ**; (नाट)।

परिचारणा स्त्री [परिचारणा] मैथुन-प्रवृत्ति; (ठा ५, १)।

परिचिंत सक [परि + चिन्तय्] चिन्तन करना, विचार करना। परिचिंतइ, परिचिंतेइ; (सण; उव)। कर्म—परिचिंतिज्जइ (अप); (सण)। वकृ—**परिचिंतंत, परिचिंतयंत**; (सण; पउम ६६, ४)।

परिचिंतिय वि [परिचिन्तित] जिसका चिन्तन किया गया हो वह; (सण)।

परिचिंतिर वि [परिचिन्तयितृ] चिन्तन करने वाला; (सण)।

परिचिट्ठ अक [परि + स्था] रहना, स्थिति करना। परिचिट्ठइ; (सण)।

परिचिय वि [परिचित] ज्ञात, जाना हुआ, चिन्हा हुआ; (औप)।

परिचुंब देखो **परिउंब**। कवकृ—**परिचुंबिज्जमाण**; (औप)। संकृ—**परिचुंबिअ**; (अभि १५०)।

परिचुंबण देखो **परिउंबण**; (पउम १६,)।

परिचुंबिय वि [परिचुम्बित] जिसका चुम्बन किया गया हो वह; "परिचुंबियनहग्गं" (उप ५६७ टी)।

परिच्चअ सक [परि + त्यज्] परित्याग करना, छोड़ देना। परिच्चयइ, परिच्चअमह; (महा; अभि १७७)। वकृ—**परिच्चअंत**; (अभि १३७)। संकृ—**परिच्चइअ, परिच्चइज्ज, परिच्चइऊण**; (पि ५६०; उत्त ३५, २; राज)। हेकृ—**परिच्चइत्तए, परिच्चत्तुं**; (उवा; नाट)।

परिच्चत्त वि [परित्यक्त] जिसका परित्याग किया गया हो वह; (से ८, २०; सुर २; १२०; सुपा ४१८; नाट—शकु १३२)।

परिच्चयण न [परित्यजन] परित्याग; (स ३३)।

परिच्चाइ वि [परित्यागिन्] परित्याग करने वाला; (औप; अभि १४०)।

परिच्चाग
परिच्चाय } पुं [परित्याग] त्याग, मोचन; (पंचा ११, १४; उप ७६२; औप; भग)।

परिच्चाय वि [परित्याज्य] त्याग करने लायक; "अगणेवि असुहजोगा सोहिपयाणे परिच्चाया" (संबोध ५४)।

परिच्छिअ वि [दे] उत्क्षिप्त, ऊपर फेंका हुआ; (षड्)।

परिच्छिअ देखो **परिचिय**; (उप १४२ टी)।

परिच्छ देखो **परिक्ख**। "मणवयणकायगुत्तो सज्जो मरणं परिच्छिज्जा" (पच्च ६८; पिंड ३०), परिच्छंति; (पिंड ३१)।

परिच्छग वि [परीक्षक] परीक्षा-कर्ता; (धर्मसं ५१६)।

परिच्छण्ण
परिच्छन्न } वि [परिच्छन्न] १ आच्छादित, ढका हुआ; (महा)। २ परिच्छद-युक्त, परिवार-सहित; (वव ४)।

परिच्छय वि [परीक्षक] परीक्षा करने वाला; (सम्म १५६)।

परिच्छा स्त्री [परीक्षा] परख, जाँच; (ओघ ३१ भा; विसे ८४८; उप पृ ०)।

परिच्छिअ देखो **परिक्खिय**; (श्रा १६)।

परिच्छिंद सक [परि + छिद्] १ निश्चय करना, निर्णय करना। २ काटना, काट डालना। परिच्छिंदइ; (धर्मसं ३७१)। संकृ—"**परिच्छिंदिय** बाहिरगं च सोयं निक्कम्मदंसी इह मच्चिएहिं" (आचा—टि; पि ५०६; ५६१)।

परिच्छिण्ण वि [परिच्छिन्न] १ काटा हुआ; "नव सुहतणहा परिच्छिण्णा" (पच्च ६५)। २ निर्णीत, निश्चित; (आव ४)।

परिच्छित्ति स्त्री [परिच्छित्ति] १ परिच्छेद, निर्णय; २ परीक्षा, जाँच; (उप ८६५)।

परिच्छिण्ण देखो **परिच्छिण्ण**; (स ५६६; सम्मत्त १४२)।

परिच्छूढ वि [दे परिक्षिप्त] १ उत्क्षिप्त, फेंका हुआ; (दे ६, २५; नमि ६)। २ परित्यक्त; (से १३, १७)।

परिच्छेअ पुं [परिच्छेद] निर्णय, निश्चय; (विसे २२४४; स ६६७)।

परिच्छेअ वि [दे परिच्छेक] लघु, छोटा; (औप)।

परिच्छेअग वि [परिच्छेदक] निश्चय करने वाला; (उप ८५३ टी)।

परिच्छेज्ज वि [परिच्छेद्य] वह वस्तु जिसका क्रय-विक्रय परिच्छेद पर निर्भर रहता है—रत्न, वस्त्र आदि द्रव्य; (श्रा १८)।

परिच्छेद देखो **परिच्छेअ**=परिच्छेद; (धर्मसं १२३१)।

परिच्छेदग देखो **परिच्छेअग**; (धर्मसं ५०)।

परिच्छोय वि [परिस्तोक] थोड़ा, अल्प; (औप)।

परिछेज्ज देखो **परिच्छेज्ज**; (श्रा १८)।

परिजंपिय वि [परिजल्पित] उक्त, कथित; (सुपा ३६४)।

परिजज्जर वि [परिजर्जर] अतिजीर्ण; (उप २६४ टी; ६८६ टी)।

परिजडिल वि [परिजटिल] अतिशय जटिल; (गउड)।

परिजण देखो **परिअण**; (उवा)।

परिजव सक [परि+विच्] पृथक् करना, अलग करना। संकृ—**परिजविय**; (सुअ २, २, ४०)।

परिजव सक [परि+जप्] १ जाप करना। २ बहुत बोलना, बकवाद करना। संकृ—"से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे णो परेहिं सद्धिं **परिजविया** २ गामाणुगामं दूइज्जेज्जा" (आचा २, ३, २, ८)।

परिजवण न [परिजपन] जाप, जपन, मन्त्र आदि का पुनः पुनः उच्चारण; (विसे ११४०; सुर १२, २०१)।

परिजाइय वि [परियाचित] माँगा हुआ; (धर्मसं १०४५)।

परिजाण सक [परि+ज्ञा] अच्छी तरह जानना। परिजाणइ; (उवा)। वकृ—**परिजाणमाण**; (कुमा)। कवकृ—**परिजाणिज्जमाण**; (णाया १, १; कुमा)। संकृ—**परिजाणिया**; (सुअ १, १, १, १; १, ६, ६; १, ६, १०)। कृ—**परिजाणियव्व**; (आचा; पि ५७०)।

परिजिअ वि [परिजित] सर्वथा जित, जिस पर पूरा काबू किया गया हो वह; (विसे ८५१)।

परिजुण्ण वि [परिजीर्ण] १ फटा-टूटा, अत्यन्त जीर्ण; (आचा)। २ दुर्बल; (उत्त २, १२)। ३ दरिद्र, निर्धन; "परिजुण्णो उ दरिद्दो" (वव ४)।

परिजुण्णा देखो **परिजुन्ना**; (ठा १०—पत्र ४७४ टी)।

परिजुत्त वि [परियुक्त] सहित; (संबोध १)।

परिजुन्न देखो **परिजुण्ण**; (उप २६४ टी)।

परिजुन्ना स्त्री [परिजीर्णा, परिद्यूना] प्रव्रज्या-विशेष, दरिद्रता के कारण ली हुई दीक्षा; (ठा १०—पत्र ४७३)।

परिजुसिय देखो **परिझुसिय**; (ठा ४, १—पत्र १८७; औप)।

परिजुसिय न [पर्युषित] रात्रि-परिवसन, रात-बासी रहना; (ठा ४, २—पत्र २१६)। देखो **परिउसिय**।

परिजूर अक [परि+जॄ] सर्वथा जीर्ण होना। "परिजूरइ ते सरीरयं" (उत्त १०, २६)।

परिजूरिय वि [परिजीर्ण] अतिजीर्ण; (भवि)।

परिज्झय पुं [दे] कृष्ण पुद्गल-विशेष; (सुज्ज २०)।

परिज्झामिय वि [परिध्यामित] श्याम किया हुआ; (विपा १)।

परिज्झुसिय, **परिझुसिय**, **परिझूसिय** वि [परिजुष्ट] १ सेवित; २ प्रीत; "परिझुसियकामभोगसंपओगसंपउत्ते" (भग २५, ७—पत्र ६२३; ६२५ टी)। ३ परिक्षीण; (ठा ४, १—पत्र १८८ टी; पि २०६)।

परिट्ठव सक [परि+स्थापय्] १ परित्याग करना। २ संस्थापन करना। परिट्ठवेइ; परिट्ठवेज्जा; (आचा २, १, ६, ५; उवा)। संकृ—**परिट्ठवेऊण**, **परिट्ठवेत्ता**; (बृह ४; कस)। हेकृ—**परिट्ठवेत्तए**; (कस)। वकृ—**परिट्ठवंत**; (निचू २)। कृ—**परिट्ठप्प**, **परिट्ठवेयव्व**; (उत्त १४, ६; कस)।

परिट्ठवण न [प्रतिष्ठापन] प्रतिष्ठा कराना; (चेइय ७७६)।

परिट्ठवण न [परिष्ठापन] परित्याग; (उव; पव १६२)।

परिट्ठवणा स्त्री [परिष्ठापना] ऊपर देखो; "अभिहिपरिट्ठवणाए काउस्सग्गो य गुरुसमीवम्मि" (बृह ४)।

परिट्ठवणा स्त्री [प्रतिष्ठापना] प्रतिष्ठा कराना; "वेयावच्चं जिणगिहरक्खणपरिट्ठवणाइजिणकिच्चं" (चेइय ७७६)।

परिट्ठविय स्त्री [प्रतिष्ठापित] संस्थापित; (भवि)।

परिट्ठा देखो **पइट्ठा**; (हे १, ३८)।

परिट्ठाइ वि [परिष्ठापिन्] परित्यागी; (नाट—साहि १६२)।

परिट्ठाण न [परिस्थान] परित्याग; (नाट)।

परिट्ठाव देखो **परिट्ठव**। हेकृ—**परिट्ठावित्तए**; (कप्प; पि ५७८)।

परिट्ठावअ वि [परिस्थापक] परित्याग करने वाला; (नाट)।

परिट्ठिअ वि [परिस्थित] संपूर्ण रूप से स्थित; (पव ६६)।
परिट्ठिअ देखो **पइट्ठिअ**; (हे १, ३८; २, २११; षड्; महा; सुर ३, १३)।
परिठव देखो **परिट्ठव**। परिठवहु (अप); (पिंग)।
परिठवण देखो **परिट्ठवण**=परिष्ठापन; (पव—गाथा २४)।
परिण देखो **परिणी**। "परिणइ बहुयाउ खयरकन्नाओ" (धर्मवि ८२)। वकृ—**परिणंत**; (भवि)। संकृ—**परिणिऊण**; (महा; कुप्र ७६; १२७)।
परिणइ स्त्री [परिणति] परिणाम; (गा ५६८; धर्मसं ६२३)।
परिणंत देखो **परिण**।
परिणंतु वि [परिणन्तृ] परिणाम को प्राप्त होने वाला, परिणत होने वाला; (विसे ३५३४)।
परिणंद सक [परि+नन्द्] वर्णन करना, श्लाघा करना। "तावंपरिणंदंता (? ति)" (तंदु ४०)।
परिणद्ध वि [परिणद्ध] १ परिगत, वेष्टित; "उंदुरमालापरिणद्धसुकयचिंधे" (उवा; णाया १, ८—पत्र १३३)। २ न. वेष्टन; (णाया १, ८)।
परिणम सक [परि+णम्] १ प्राप्त करना। २ अक. रूपान्तर को प्राप्त करना। ३ पूर्ण होना, पूरा होना। "किण्हलेसं तु परिणमे" (उत्त ३४, २२), "परिणमइ अप्पमाओ" (स ६८४; भग १२, ५)। वकृ—**परिणमंत**, **परिणममाण**; (ठा ७; णाया १, १—पत्र ३१)।
परिणमण न [परिणमन] परिणाम; (धर्मसं ४७२; उप ८६८)।
परिणमिअ } वि [परिणत] १ परिपक्व; (पाअ)। २
परिणय } वृद्धि-प्राप्त; "तह परिणमिओ धम्मो जह तं खोभंति न सुरावि" (धर्मवि ८)। ३ अवस्थान्तर को प्राप्त; (ठा २, १—पत्र ५३; पिंड २६५)। °**वय** वि [°वयस्] वृद्ध, बूढ़ा; (णाया १, १—पत्र ४८)।
परिणयण न [परिणयन] विवाह; (उप १०१४; सुपा २७१)।
परिणयणा स्त्री. ऊपर देखो; (धर्मवि १२६)।
परिणव देखो **परिणम**। परिणवइ; (आरा ३१; महा)।
परिणाइ पुं [परिज्ञाति] परिचय; "कह तुज्झ तेण समयं परिणाई तक्खणेण उप्पन्नो" (पउम ५३, २५)।
परिणाम सक [परि+णमय्] परिणत करना। परिणामेइ; (ठा २, २)। कवकृ—**परिणामिज्जमाण**, **परिणामेज्जमाण**; (भग; ठा १०)। हेकृ—**परिणामइत्तए**; (भग ३, ४)।
परिणाम पुं [परिणाम] १ अवस्थान्तर-प्राप्ति, रूपान्तर-लाभ; (धर्मसं ४७२)। २ दीर्घ काल के अनुभव से उत्पन्न होने वाला आत्म-धर्म विशेष; (ठा ४, ४—पत्र २८३)। ३ स्वभाव, धर्म; (ठा ६)। ४ अध्यवसाय, मनो-भाव; (निचू २०)। ५ वि. परिणत करने वाला; "दिढ़ ता परिणामे" (वव १०; बृह १)।
परिणामणया } स्त्री [परिणामना] परिणमाना, रूपान्तर-
परिणामणा } करण; (पण्ण ३४—पत्र ७७४; विसे २२७८)।
परिणामय वि [परिणामक] परिणत करने वाला; (बृह १)।
परिणामि वि [परिणामिन्] परिणत होने वाला; (दे १, १; श्रावक १८३)। °**कारण** न [°कारण] कार्य-रूप में परिणत होने वाला कारण, उपादान कारण; (उवर २७)।
परिणामिअ वि [परिणामिक] १ परिणाम-जन्य, परिणाम से उत्पन्न; २ परिणाम-संबन्धी; ३ पुं. परिणाम; ४ भाव-विशेष; "सव्वदव्वपरिणइरूवो परिणामिओ सव्वो" (विसे २१७६; ३४९५)।
परिणामिअ वि [परिणमित] परिणत किया हुआ; (पिंड ६१२; भग)।
परिणामिआ स्त्री [परिणामिकी] बुद्धि-विशेष, दीर्घ काल के अनुभव से उत्पन्न होने वाली बुद्धि; (ठा ४, ४)।
परिणाय वि [परिज्ञात] जाना हुआ, परिचित; (पउम ११, २७)।
परिणाव सक [परि+णायय्] विवाह कराना। परिणावसु; (कुप्र ११६)। कृ—**परिणावियव्व**, **परिणावेयव्व**; (कुप्र ३३०; १५४)।
परिणावण न [परिणायन] विवाह कराना; (सुपा ३६८)।
परिणाविअ वि [परिणायित] जिसका विवाह कराया गया हो वह; (सुपा १६५; धर्मवि १३६; कुप्र १४)।
परिणाह पुं [परिणाह] १ लम्बाई, विस्तार; (पाअ; से ११, १२)। २ परिधि; (स ३१२; ठा २, २)।
परिणिंत देखो **परिणी**=परि+गम्।
परिणिज्जंत देखो **परिणी**=परि+णी।
परिणिज्जरा स्त्री [परिनिर्जरा] विनाश, क्षय; (पउम ३१, ६)।

परिणिज्जिअ वि [परिनिर्जित] पराभूत, पराजय-प्राप्त; (पउम ५३, ११) ।

परिणिट्ठा स्त्री [परिनिष्ठा] संपूर्णता, समाप्ति; (उवर १२५) ।

परिणिट्ठाण न [परिनिष्ठान] अवसान, अन्त; (विसे ६२६)।

परिणिट्ठिअ वि [परिनिष्ठित] १ पूर्ण किया हुआ, समाप्त किया हुआ; (रयण २५) । २ पार-प्राप्त; (आया १, ८; भास ६८; पंचा १२, १४) । ३ परिज्ञात; (वव १०) ।

परिणिट्ठिया स्त्री [परिनिष्ठिता] १ कृषि-विशेष, जिसमें दो या तीन बार तृण-शोधन किया गया हो वह कृषि; २ दीक्षा-विशेष, जिसमें बारंबार अतिचारों की आलोचना की जाती हो वह दीक्षा; (राज) ।

परिणिय वि [परिणीत] जिसका विवाह हुआ हो वह; (सण; भवि) ।

परिणिव्वव सक [परिनिर् + वापय्] सर्व प्रकार से अतिशय परिणत करना । संकृ—**परिणिव्वविय**; (कस) ।

परिणिव्वा अक [परिनिर्+वा] १ शान्त होना । २ मुक्ति पाना, मोक्ष को प्राप्त करना । परिणिव्वायंति; (भग)। भूका—परिणिव्वाइंसु; (पि ३१६) । भवि—परिणिव्वाहिंति; (भग) ।

परिणिव्वाण न [परिनिर्वाण] मुक्ति, मोक्ष; (आचा कप्प) ।

परिणिव्वुइ स्त्री [परिनिर्वृति] ऊपर देखो; (राज) ।

परिणिव्वुय देखो **परिनिव्वुअ**; (औप) ।

परिणी सक [परि + णी] १ विवाह करना । २ ले जाना । कवकृ—**परिणिज्जंत, परिणीयमाण**; (कुप्र १२७; आचा)।

परिणी अक [परि + गम्] बाहर निकलना । वकृ—**परिणिंत**; (स ६६१) ।

परिणीअ वि [परिणीत] जिसका विवाह किया गया हो वह; (महा; प्रासू ६३; सण) ।

परिणील वि [परिनील] सर्वथा हरा रंग का; (गउड)।

परिणे देखो **परिणी** । परिणेइ; (महा; पि ४७४) । कृ—**परिणेउं**; (कुप्र ५०) । कृ—**परिणेयव्व**; (सुपा ४५५; कुप्र १३८) ।

परिणेविय (अप) वि [परिणायित] जिसका विवाह कराया गया हो वह; (सण) ।

परिणेव्वुय देखो **परिनिव्वुअ**; (उत्त १८, ३५) ।

परिण्ण वि [परिज्ञ] ज्ञाता, जानकार; (आचा १, ५, ६, ४) ।

परिण्ण° देखो **परिण्णा**; (आचा १, ३, ६, ५) ।

परिण्णा सक [परि + ज्ञा] जानना । संकृ—**परिण्णाय**; (आचा; भग) । हेकृ—**परिण्णाउं** (शौ); (अभि १८६) ।

परिण्णा स्त्री [परिज्ञा] १ ज्ञान, जानकारी; (आचा; वसु; पंचा ६, २५) । २ विवेक; (आचा) । ३ पर्यालोचन, विचार; (सूअ १, १, १) । ४ ज्ञान-पूर्वक प्रत्याख्यान; (ठा ५, २) ।

परिण्णाण वि [परिज्ञान] ज्ञान, जानकारी; (धर्मसं १२५३; उप पृ २७४) ।

परिण्णाय देखो **परिण्णा**=परि + ज्ञा ।

परिण्णाय वि [परिज्ञात] विदित, जाना हुआ; (सम १६; आचा) ।

परिण्णि वि [परिज्ञिन्] परिज्ञा-युक्त; "गीअत्थो य परिण्णी तह जियाइ परीसहाणीयं" (वव १) ।

परितंत वि [परितान्त] सर्वथा खिन्न, निर्विण्ण; (पाअ १, ४—पत्र ६७; विपा १, १; उव) ।

परितंबिर वि [परिताम्र] विशेष ताम्र—अरुण—वर्ण वाला; (गउड) ।

परितज्ज सक [परि + तर्जय्] तिरस्कार करना । वकृ—**परितज्जयंत**; (पउम ४८, १०) ।

परितड्डिय वि [परितत] खूब फैलाया हुआ; (सण) ।

परितणु वि [परितनु] अत्यन्त पतला; (सुपा ५८) ।

परितप्प अक [परि + तप्] संतप्त होना, गरम होना । २ पश्चात्ताप करना । ३ दुःखी होना । परितप्पइ; (महा; उव), परितप्पंति; (सूअ २, २, ५५), "ता लोहआरवाहणलव्व परितप्पसे पच्छा" (धर्मवि ६) । संकृ—**परितप्पिऊण**; (महा) ।

परितप्प सक [परि + तापय्] परिताप उपजाना । परितप्पंति; (सूअ २, २, ५५) ।

परितप्पण न [परितपन] परितप्त होना; (सूअ २, २, ५५) ।

परितप्पण न [परितापन] परिताप उपजाना, (सूअ २, २, ५५) ।

परितलिअ वि [परितलित] तला हुआ; (ओघ ८८) ।

परितविय वि [परितप्त] परिताप-युक्त; (सण) ।

परित्ताण न [परित्राण] १ रक्षण; २ वागुरादि बन्धन; (सूअ १, १, २, ६) ।

परिताव देखो **परितप्प**=परि + तापय्। कृ—**परितावेयव्व**; (पि ५७०)।

परिताव पुं [**परिताप**] १ संताप, दाह; २ पश्चात्ताप; ३ दुःख, पीड़ा; (महा; औप)। °**यर** वि [°**कर**] दुःखोत्पादक; (पउम ११०, ६)।

परितावण देखो **परितप्पण**=परितापन; (औप)।

परिताविअ वि [**परितापित**] १ संतापित; (औप)। २ तपा हुआ; (ओघ १४७)।

परितास पुं [**परित्रास**] अकस्मात् होने वाला भय; (णाया १, १—पत्र ३३)।

परितुट्टिर वि [**परित्रुटितृ**] टूटने वाला; (सण)।

परितुट्ठ वि [**परितुष्ट**] तोष-प्राप्त, संतुष्ट; (उव; चेइय ७०१)।

परितुलिय वि [**परितुलित**] तौला हुआ; (सण)।

परितेज्जिअ देखो **परिच्चअ**।

परितोल सक [**परि+तोलय्**] उठाना। वकृ—"जुगवं **परितोलंता** खणं समरंगणम्मि तो दोवि" (सुपा ५७२)।

परितोस सक [**परि+तोषय्**] संतुष्ट करना। भवि—परितोसइस्सं; (कर्पूर ३२)।

परितोस पुं [**परितोष**] आनन्द, खुशी; (नाट—मालवि २३)।

परितोसिय वि [**परितोषित**] संतुष्ट किया हुआ; (सण)।

परित्त वि [**परीत**] १ व्याप्त; (सिरि १८३)। २ प्रभ्रष्ट; (सूअ २, ६, १८)। ३ संख्येय, जिसकी गिनती हो सके ऐसा; (सम १०६)। ४ परिमित, नियत परिमाण वाला; (उप ४१७)। ५ लघु, छोटा; ६ तुच्छ, हलका; (उप २७०; ६६४)। ७ एक से लेकर असंख्येय जीवों का आश्रय, एक से लेकर असंख्येय जीव वाला; (ओघ ४१)। ८ एक जीव वाला; (पण्ण १)। °**करण** न [°**करण**] लघूकरण; (उप २७०)। °**जीव** पुं [°**जीव**] एक शरीर में एकाकी रहने वाला जीव; (पण्ण १)। °**णंत** न [°**ानन्त**] संख्या-विशेष; (कम्म ४, ७१; ८३)। °**संसारिअ** वि [°**संसारिक**] परिमित संसार वाला; (उप ४१७)। °**ासंख** न [°**ासंख्यात**] संख्या-विशेष; (कम्म ४, ७१; ७८)।

परित्तज देखो **परिच्चय**। संकृ—**परित्तजिअ**; (स्वप्न ५१), **परितेज्जिअ** (अप); (पिंग)।

परित्ता } सक [**परि+त्रै**] रक्षण करना। परित्ताइ, परि-
परित्ताअ } त्तामसु, परित्ताहि, परित्तायह; (प्राकृ ७०; पि ४७६; हे ४, २६८)।

परित्ताइ वि [**परित्रायिन्**] रक्षण-कर्ता; (सुपा ४०५)।

परित्ताण न [**परित्राण**] रक्षण; (से १४,३५; सुपा ७१; आत्मानु ८; सण)।

परित्तास देखो **परितास**; (कप्प)।

परित्तीकय वि [**परीतीकृत**] संक्षिप्त किया हुआ, लघूकृत; (णाया १, १—पत्र ६६)।

परित्तीकर सक [**परीती+कृ**] लघु करना, छोटा करना। परित्तीकरेंति; (भग)।

परित्थोम न [**परिस्तोम**] १ मस्तक; २ वि. वक्र; "चित्तपरित्थोमपच्छदं" (औप)।

परिथंभिअ वि [**परिस्तम्भित**] स्तब्ध किया हुआ; (सुपा ४७५)।

परिथु सक [**परि+स्तु**] स्तुति करना। कवकृ—**परिथुव्वंत**; (सुपा ६०७)।

परिथूर } वि [**परिस्थूर**] विशेष स्थूल, खूब मोटा;
परिथूल } (धर्मसं ८३८; चेइय ८५४; श्रा ११)।

परिदा सक [**परि+दा**] देना। कर्म—परिदिज्जसु (अप); (पिंग)।

परिदाह पुं [**परिदाह**] संताप; (उत्त २, ८; भग)।

परिदिण्ण वि [**परिदत्त**] दिया हुआ; (अभि १२५)।

परिदिद्ध वि [**परिदिग्ध**] उपलिप्त; (सुख २, ३७)।

परिदिन्न देखो **परिदिण्ण**; (सुपा २२)।

परिदेव अक [**परि+देव्**] विलाप करना। **परिदेवए**; (उत्त २, १३)। वकृ—**परिदेवंत**; (पउम २६, ६२; ४५, ३६)।

परिदेवण न [**परिदेवन**] विलाप; "तस्स कंदणसोयणपरिदेवणताडणाइं लिंगाइं" (संबोध ४६; संवे ८)।

परिदेवणया स्त्री [**परिदेवना**] ऊपर देखो; (ठा ४, १—पत्र १८८)।

परिदेवि वि [**परिदेविन्**] विलाप करने वाला; (नाट—शकु १०१)।

परिदेविअ न [**परिदेवित**] विलाप; (पाअ; से ११, ६६; सुर २, २४१)।

परिदो अ [**परितस्**] चारों ओर से; (गा ४५४ अ)।

परिधम्म पुं [**परिधर्म**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

परिधवलिय वि [**परिधवलित**] खूब सफेद किया हुआ; (सण)।

परिधाम पुंन [**परिधामन्**] स्थान; (सुपा ४६३)।

परिधाविअ वि [**परिधावित**] दौड़ा हुआ ; (हम्मीर ३२)।
परिधाविर वि [**परिधावितृ**] दौड़ने वाला ; (सण)।
परिधूविअ वि [**परिधूनित**] अत्यन्त कँपाया हुआ; (सम्मत १२६)।
परिधूसर वि [**परिधूसर**] धूसर वर्ण वाला ; (वज्जा १२८ ; गउड)।
परिनट्ठ वि [**परिनष्ट**] विनष्ट ; (महा)।
परिनिक्खम देखो **पडिनिक्खम**। परिनिक्खमेइ ; (कप्प)।
परिनिट्ठिय देखो **परिणिट्ठिअ** ; (कप्प ; रंभा ३०)।
परिनिय सक [**परि+दृश्**] देखना, अवलोकन करना। वकृ—**परिनियंत** ; (सुपा ५२२)।
परिनिविट्ठ वि [**परिनिविष्ट**] ऊपर बैठा हुआ ; (सुपा २६६)।
परिनिविड वि [**परिनिबिड**] विशेष निबिड ; (महा)।
परिनिव्वा देखो **परिणिव्वा**। परिनिव्वाइ ; (भग), परिनिव्वाइंति ; (कप्प)। भवि—परिनिव्वाइस्संति ; (भग)।
परिनिव्वाण देखो **परिणिव्वाण** ; (णाया १, ८ ; ठा १, १ ; भग ; कप्प ; पव १३८ टी)।
परिनिव्वुअ, **परिनिव्वुड** वि [**परिनिर्वृत**] १ मुक्त, मोक्ष को प्राप्त ; (ठा १, १ ; पउम २०, ८४ ; कप्प)। २ शान्त, ठंढ़ा ; (सूअ १, ३, ३, २१)। ३ स्वस्थ ; (सुपा १८३)।
परिन्न देखो **परिण्ण** ; (आचा)।
परिन्न° देखो **परिण्ण°**; (आचा)।
परिन्ना देखो **परिण्णा** ; (उप ५२५)।
परिन्नाण देखो **परिण्णाण** ; (आचा)।
परिन्नाय देखो **परिण्णाय**=परिज्ञात ; (सुपा २६२)।
परिन्नाय वि [**प्रतिज्ञात**] जिसकी प्रतिज्ञा की गई हो वह ; (पिंड २८१)।
परिपंडुर, **परिपंडुल** वि [**परिपाण्डुर**] विशेष पाण्डुर—धूसर वर्ण वाला ; (सुपा २५६ ; कप्प ; गउड ; से १०, ३३)।
परिपंथग वि [**प्रतिपथक**] दुश्मन, विरोधी, प्रतिकूल ; (स १०५)।
परिपंथिअ, **परिपंथिग** वि [**परिपन्थिक**] ऊपर देखो ; (स ७४६ ; उप ६३६)।

परिपक्क वि [**परिपक्व**] पका हुआ ; (पव ४, भवि)।
परिपडिअ (अप) वि [**परिपतित**] गिरा हुआ ; (पिंग)।
परिपाग पुं [**परिपाक**] विपाक, फल ; "पुव्वभवविहिअदु-चरिअपरिपागो एस उवयसंपत्तो" (रयण ५२ ; आचा)।
परिपाडल वि [**परिपाटल**] सामान्य लाल रंग वाला, गुला-बी रँग का ; (गउड)।
परिपाडिअ वि [**परिपाटित**] फाड़ा हुआ, विदारित ; (से ७, ६१)।
परिपाल सक [**परि+पालय्**] रक्षण करना। परिपालइ ; (भवि)। कृ—**परिपालणीअ** ; (स्वप्न २६)। संकृ—**परिपालिउं** ; (सुपा ३४२)।
परिपालण न [**परिपालन**] रक्षण ; (कुप्र २२६ ; सुपा ३०८)।
परिपालिय वि [**परिपालित**] रक्षित ; (भवि)।
परिपासय [**दे**] देखो **परिवास** (दे); (पाअ)।
परिपिअ सक [**परि+पा**] पीना, पान करना। कवकृ—**परिपिज्जंत** ; (नाट—चैत ४०)।
परिपिंजर वि [**परिपिञ्जर**] विशेष पीत-रक्त वर्ण वाला ; (गउड)।
परिपिंडिय वि [**परिपिण्डित**] १ एकत्र समुदित, इकट्ठा किया हुआ ; (पिंड ४६७)। २ न. गुरु-वन्दन का एक दोष ; (धर्म २)।
परिपिक्क देखो **परिपक्क** ; (पि १०१)।
परिपिज्जंत देखो **परिपिअ**।
परिपिरिया स्त्री [**दे**] वाद्य-विशेष ; (भग ५, ४—पत्र २१६)।
परिपिल्ल सक [**परिप्र+ईरय्**] प्रेरना। परिपिल्लइ ; (सुपा ६४)।
परिपिहा सक [**परिपि+धा**] ढकना, आच्छादन करना। संकृ—**परिपिहित्ता, परिपिहेत्ता** ; (कप्प ; पि ५८२)।
परिपीडिय वि [**परिपीडित**] जिसको पीडा पहुँचाई गई हो वह ; (भवि)।
परिपील सक [**परि+पीडय्**] १ पीड़ना। २ पीलना, दबाना। परिपीलेज्जा ; (पि २४०)। संकृ—**परिपी-लइत्ता, परिपीलिय, परिपीलियाण** ; (भग ; राज ; आचा २, १, ८, १)।
परिपीलिअ देखो **परिपीडिअ** ; (राज)।

परिपुंगल वि [दे] श्रेष्ठ, उत्तम; (?) "जंपइ भविसयत्तु परिपुंगलु होसइ रिद्धिविद्धिसुहमंगलु" (भवि)।

परिपुच्छ सक [परि+प्रच्छ्] प्रश्न करना। परिपुच्छइ; (भवि)।

परिपुच्छण न [परिप्रच्छन] प्रश्न, पृच्छा; (भवि)।

परिपुच्छिअ } **परिपुट्ठ** } वि (परिपृष्ट) पूछा हुआ, जिज्ञासित; (गा ६१३; भवि; सुपा ३८७)।

परिपुण्ण } **परिपुन्न** } वि [परिपूर्ण] संपूर्ण; (भग; भवि)।

परिपुस सक [परि+स्पृश्] संस्पर्श करना। परिपुसइ; (से ४, ५)।

परिपूज सक [परि+पूजय्] पूजना। परिपूजउ (अप); (पिंग)।

परिपूणग पुं [दे. परिपूणक] पक्षि-विशेष का नीड, सुधरी-नामक पक्षी का घोंसला; (विसे १४५४; १४६५)।

परिपूय वि [परिपूत] छाना हुआ; (कप्प; तंदु ३२)।

परिपूर सक [परि+पूरय्] पूर्ण करना, भरपूर करना। वकृ—**परिपूरंत**; (पि ५३७)। संकृ—**परिपूरिअ**; (नाट—मालवि १५)।

परिपूरिय वि [परिपूरित] भरपूर, व्याप्त; (सुर २, ११)।

परिपेच्छ सक [परिप्र+ईक्ष्] देखना। वकृ—**परिपेच्छंत**; (मच्चु ६३)।

परिपेरंत पुं [परिपर्यन्त] प्रान्त भाग; (णाया १, ४; १३; सुर १५, २०२)।

परिपेरिय वि [परिप्रेरित] जिसको प्रेरणा की गई हो वह; (सुपा १८६)।

परिपेलव वि [परिपेलव] १ सुकर, सहल; (से ३, १३)। २ मृदु; ३ निःसार; ४ वराक, दीन; (राज)।

परिपेल्लिअ देखो **परिपेरिय**; (गा ५७७)।

परिपेस सक [परिप्र+इष्] भेजना। परिपेसइ; (भवि)।

परिपेसण न [परिप्रेषण] भेजना; (भवि)।

परिपेसल वि [परिपेशल] सुन्दर, मनोहर; (सुपा १०६)।

परिपेसिय वि [परिप्रेषित] भेजा हुआ; (भवि)।

परिपोस सक [परि+पोषय्] पुष्ट करना। कवकृ—**परिपोसिज्जंत**; (राज)।

परिप्पमाण न [परिप्रमाण] परिमाण; (भवि)।

परिप्पव सक [परि+प्लु] तैरना, गोता लगाना। वकृ—**परिप्पवंत**; (से २, २८; १०, १३; पाअ)।

परिप्पुय वि [परिप्लुत] आप्लुत, व्याप्त; (राज)।

परिप्पुया स्त्री [परिप्लुता] दीक्षा-विशेष; (राज)।

परिप्फंद पुं [परिस्पन्द] १ रचना-विशेष; "जयइ वाया-परिप्फंदो" (गउड)। २ समन्तात् चलन; (चारु ४५)। ३ चेष्टा, प्रयत्न;

"थोयारंभेवि विहिम्मि आयसगे व्व खंडणमुवेंति।
स-परिप्फंदेणं चिय णीआ भमिदारुसयलं व" (गउड)।

परिप्फुड वि [परिस्फुट] अत्यन्त स्पष्ट; (से ११, ६०; सुर ४, २१४; भवि)।

परिप्फुड पुं [परिस्फोट] १ स्फोटन, भेदन; २ वि. फोड़ने वाला, विभेदक; "तमपडलपरिप्फुडं चेव तेअसा पज्जलंतरूवं" (कप्प)।

परिप्फुर अक [परि+स्फुर्] चलना। परिप्फुरदि (शौ); (नाट—उत्तर २८)।

परिप्फुरण न [परिस्फुरण] हिलन, चलन; (सण)।

परिप्फुरिअ वि [परिस्फुरित] स्फूर्ति-युक्त; "वयणु परिप्फुरिउ" (भवि)।

परिफंस पुं [परिस्पर्श] स्पर्श, छूना; (पि ७४; ३११)।

परिफंसण न [परिस्पर्शन] ऊपर देखो; (उप ६८६ टी)।

परिफग्गु वि [परिफल्गु] निस्सार, असार; (धर्मसं ६५३)।

परिफासिय वि [परिस्पृष्ट] व्याप्त; (दस ५, १, ७२)।

परिफुड देखो **परिप्फुड**=परिस्फुट; (पउम ३, ८; प्रासू ११९)।

परिफुडिय वि [परिस्फुटित] फूटा हुआ, भग्न; (पउम ६८, १०)।

परिफुर देखो **परिप्फुर**। परिप्फुरइ; (सण)। वकृ—**परिफुरंत**; (सण)।

परिफुरिअ देखो **परिप्फुरिय**; (सण)।

परिफुल्लिअ वि [परिफुल्लित] फूला हुआ, कुसुमित; (पिंग)।

परिफुस सक [परि+स्पृश्] स्पर्श करना, छूना। वकृ—**परिफुसंत**; (धर्मवि १२६; १३६)।

परिफुसिय वि [परिप्रोञ्छित] पोंछा हुआ; (उप पृ ६४)।

परिफोसिय वि [परिस्पृष्ट] छुआ हुआ; "उदगपरि-फोसियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए णिसीयति" (णाया १, १६; उप ६४८ टी)।

परिबूहण न [परिबृंहण] वृद्धि, उपचय; (सूअ २, २, ६)।

परिभंत वि [दे] १ निषिद्ध, निवारित; २ भीरु, डरपोक; (दे ६, ७२)।

परिब्भंसिद (शौ) नीचे देखो; (मा ५०)।

परिब्भट्ठ वि [परिभ्रष्ट] पतित, स्खलित; (गाया १, १३; सुपा ५०६; अभि १४४)।

परिब्भम सक [परि+भ्रम्] पर्यटन करना, भटकना। परिब्भमइ; (प्राकृ ७६; भवि; उव)। वकृ—**परिब्भमंत**; (सुर २, ८७; ३, ४; ४, ७१; भवि)।

परिब्भमण न [परिभ्रमण] पर्यटन; (महा)।

परिब्भमिअ वि [परिभ्रान्त] भटका हुआ; (वै ६३; सण; भवि)।

परिब्भीअ वि [परिभीत] भय-प्राप्त; (पउम ५३, ३६)।

परिब्भूअ वि [परिभूत] पराभव-प्राप्त; (सुपा २५८)।

परिभग्ग वि [परिभग्न] भाँगा हुआ; (आत्मानु १४)।

परिभट्ठ देखो **परिब्भट्ठ**; (महा; पि ८५)।

परिभणिर वि [परि+भणितृ] कहने वाला; (सण)।

परिभम देखो **परिब्भम**। परिभमइ; (महा)। वकृ—**परिभमंत**, **परिभममाण**; (महा; सण; भवि; संवेग १४)। संकृ—**परिभमिऊणं**; (पि ५८५)। हेकृ—**परिभमिउं**; (महा)।

परिभमिअ देखो **परिब्भमिअ**; (भवि)।

परिभमिर वि [परिभ्रमितृ] पर्यटन करने वाला; (सुपा २६६)।

परिभव सक [परि+भू] पराजय करना, तिरस्कारना। परिभवइ; (उव)। कर्म—परिभविज्जामि; (मोह १०८)। कृ—**परिभवणिज्ज**; (गाया १, ३)।

परिभव पुं [परिभव] पराभव, तिरस्कार; (औप; स्वप्न १०; प्रासू १७३)।

परिभवण न [परिभवन] ऊपर देखो; (राज)।

परिभवणा स्त्री [परिभवन] ऊपर देखो; (औप)।

परिभविअ वि [परिभूत] अभिभूत; (धर्मवि ३६)।

परिभाअ सक [परि+भाजय्] बाँटना, विभाग करना। परिभाएइ; (कप्प)। वकृ—**परिभाइंत**, **परिभायंत**, **परिभाएमाण**; (आचा २, ११, १८; गाया १, ७—पत्र ११७; १, १; कप्प)। कवकृ—**परिभाइज्जमाण**; (राज)। संकृ—**परिभाइत्ता**, **परिभायइत्ता**; (कप्प; औप)। हेकृ—**परिभाएउं**; (पि ५७३)।

परिभाइय वि [परिभाजित] विभक्त किया हुआ; (आचा २, २, ३, २)।

परिभायंत देखो **परिभाअ**।

परिभायण न [परिभाजन] बैंटवा देना; (पिंड १६३)।

परिभाव सक [परि+भावय्] १ पर्यालोचन करना। २ उन्नत करना। परिभावइ; (महा)। संकृ—**परिभाविऊण**; (महा)। कृ—**परिभावणीय**; (राज)।

परिभावइत्तु वि [परिभावयितृ] प्रभावक, उन्नति-कर्ता; (ठा ४, ४—पत्र २६५)।

परिभावि वि [परिभाविन्] परिभव करने वाला; (अभि ७१)।

परिभास सक [परि+भाष्] १ प्रतिपादन करना, कहना। २ निन्दा करना। परिभासइ, परिभासंति, परिभासेइ, परिभासए; (उत्त १८, २० ; सूअ १, ३, ३, ८ ; २, ७, ३६ ; विसे १४४३)। वकृ—**परिभासमाण**; (पउम ५३, ६७)।

परिभासा स्त्री [परिभाषा] १ संकेत; (संबोध ५८; भास १६)। २ तिरस्कार; ३ चूर्णि, टीका-विशेष; (राज)।

परिभासि वि [परिभाषिन्] परिभव-कर्ता; "राइणियपरिभासी" (सम ३७)।

परिभासिय वि [परिभाषित] प्रतिपादित; (सूअनि ८८ ; भास २१)।

परिभिंद सक [परि+भिद्] भेदन करना। कवकृ—**परिभिज्जमाण**; (उप पृ ६७)।

परिभीय वि [परिभीत] डरा हुआ; (उव)।

परिभुंज सक [परि+भुञ्ज्] १ खाना, भोजन करना। सेवन करना, सेवना। ३ बारंबार उपभोग में लेना। कर्म—परिभुंजिज्जइ, परिभुज्जइ; (पि ५४६ ; गच्छ २, ५१)। वकृ—**परिभुंजंत**, **परिभुंजमाण**; (निचू १; गाया १, १; कप्प)। कवकृ—**परिभुज्जमाण**; (औप; उप पृ ६७; गाया १, १—पत्र ३७)। हेकृ—**परिभोत्तुं**; (दस ५, १)। कृ—**परिभोग**, **परिभोत्तव्व**; (पिंड ३४; कस)।

परिभुंजण न [परिभोजन] परिभोग; (उप १३४ टी)।

परिभुंजणया स्त्री [परिभोजना] ऊपर देखो; (सम ४४)।

परिभुत्त वि [परिभुक्त] जिसका परिभोग किया गया हो वह; (सुपा ३००)।

परिभूअ वि [परिभूत] अभिभूत, तिरस्कृत; (सूअ २, ७, २; सुर १६, १२६; चेइय ७१४; महा)।

परिभोअ देखो **परिभोग** ; (अभि १११) ।
परिभोइ वि [**परिभोगिन्**] परिभोग करने वाला ; (पि ४०५ ; नाट—शकु ३५) ।
परिभोग पुं [**परिभोग**] १ बारंबार भोग ; (ठा ५, ३ टी ; आव ६) । २ जिसका बारंबार भोग किया जाय वह वस्त्र आदि ; (ओप) । ३ जिसका एक ही बार भोग किया जाय—जो एक ही बार काम में लाया जाय वह—आहार, पान आदि ; (उवा) । ४ बाह्य वस्तुओं का भोग ; (आव ६) । ५ आसेवन ; (पराह १, ३) ।
परिभोत्तुं, **परिभोत्तव्व**, **परिभोत्तु** } देखो **परिभुंज** ।
परिमइल सक [**परि+मृज्**] मार्जन करना ; (संक्षि ३५) ।
परिमउअ वि [**परिमृदुक**] १ विशेष कोमल ; २ अत्यन्त सुकर, सरल ; (धर्मसं ७६१ ; ७६२) । स्त्री—°उई; (विसे ११६६) ।
परिमउलिअ वि [**परिमुकुलित**] चारों ओर से संकुचित; (सण) ।
परिमंडण न [**परिमण्डन**] अलंकरण, विभूषा ; (उत्त १६, ६) ।
परिमंडल वि [**परिमण्डल**] वृत्त, गोलाकार; (सुअ २, १, १५; उत्त ३६, २२; स २१२; पाअ; ओप; पराण १; ठा १, १) ।
परिमंडिय वि [**परिमण्डित**] विभूषित, सुशोभित; (कप्प; ओप; सुर ३, १२) ।
परिमंथर वि [**परिमन्थर**] मन्द, धीमा; (गउड; स ७१६)।
परिमंथिअ वि [**परिमथित**] अत्यन्त आलोडित; (सम्मत्त २२६) ।
परिमंद वि [**परिमन्द**] मन्द, अशक्त; (सुर ४, २४०) ।
परिमग्ग सक [**परि+मार्गय्**] १ अन्वेषण करना, खोजना । २ माँगना, प्रार्थना करना । वकृ—**परिमग्गमाण**; (नाट—विक्र ३०) । संकृ—**परिमग्गेउं**; (महा) ।
परिमग्गि वि [**परिमार्गिन्**] खोज करने वाला; (गा२६१)।
परिमज्जिर वि [**परिमज्जितृ**] डूबने वाला; (सुपा ६) ।
परिमट्ठ वि [**परिमृष्ट**] १ घिसा हुआ; (से ६,२; ८, ४२)। २ [illegible]; "परिमट्ठमेकसिहरो" (से ४, ३७) । ३ मार्जित, शोधित; (कप्प) ।
परिमद्द सक [**परि+मर्दय्**] मर्दन करना । वकृ—**परिमद्दयंत**; (सुर १२, १७२) ।
परिमद्दण न [**परिमर्दन**] मर्दन, मालिश; (कप्प; ओप)।
परिमद्दा स्त्री [**परिमर्दा**] संबाधन, दबाना, पैचम्पी आदि; (निचू ३) ।
परिमन्न सक [**परि+मन्**] आदर करना । परिमन्नइ; (भवि)।
परिमल सक [**परि+मल्, मृद्**] १ घिसना । २ मर्दन करना । "जो मरणायालि परिमलइ हत्थु" (कुम ४५२),
"णालियीसु भमसि परिमलसि सत्तलं मालइं पि णो मुअसि ।
तरलत्तणं तुह अहो महुअर जइ पाडला हरइ ॥"
(गा ६१६) ।
परिमल पुं [**परिमल**] १ कुंकुम-चन्दनादि-मर्दन; (से १, ६४) । २ सुगन्ध; (कुमा; पाअ) ।
परिमलण न [**परिमलन**] १ परिमर्दन; २ विचार; (गा ४२८ ; गउड) ।
परिमलिअ वि [**परिमलित, परिमृदित**] जिसका मर्दन किया गया हो वह; (गा ६३७; से ७, ६२; महा; वज्जा ११८) ।
परिमहिय वि [**परिमहित**] पूजित; (पउम १, १) ।
परिमा (अप) देखो **पडिमा**; (भवि) ।
परिमाइ स्त्री [**परिमाति**] परिमाण; "जिणसासणि छज्जीवदयाइ व पंडियमरणि सुगइपरिमाइ व" (भवि) ।
परिमाण न [**परिमाण**] मान, माप, नाप; (ओप; स्वप्न ४२; प्रासू ८७) ।
परिमास पुं [**परिमर्श**] स्पर्श; (णाया १, ६; गउड; से ६, ४८; ६, ७६) ।
परिमास पुं [**दे**] नौका का काष्ठ-विशेष; (णाया १, ६—पत्र १५७) ।
परिमासि वि [**परिमर्शिन्**] स्पर्श करने वाला; (पि ६२)।
परिमिउज नीचे देखो ।
परिमिण सक [**परि+मा**] नापना, तौलना । वकृ—**परिमिणंत**; (सुपा ७७) । कृ—**परिमिउज, परिमेय**; (कप्प ५६; पउम ४६, २२) ।
परिमिअ वि [**परिमित**] परिमाण-युक्त; (कप्प; ठा ५, १; ओप; पराह २, १) ।
परिमिअ वि [**परिवृत**] परिकरित, वेष्टित; (पउम १०१, ३०; भवि) ।

परिमिला अक [परि+म्लै] म्लान होना। परिमिलादि (शौ); (पि १३६; ४७६) ।
परिमिलाण वि [परिम्लान] म्लान, विच्छाय, निस्तेज; (महा) ।
परिमिल्लिर वि [परिमोक्तृ] परित्याग करने वाला; (सण) ।
परिमुअ सक [परि+मुच्] परित्याग करना । परिमुअइ; (सण) ।
परिमुक्क वि [परिमुक्त] परित्यक्त; (सुपा २५२; महा; सण)।
परिमुट्ठ वि [परिमृष्ट] स्पृष्ट; (मा ४४) ।
परिमुण सक [परि+ज्ञा] जानना । परिमुणसि; (वज्जा १०४) ।
परिमुणिअ वि [परिज्ञात] जाना हुआ; (पउम १६, ६१; सण) ।
परिमुस सक [परि+मुष्] चोरी करना । वकृ—**परिमुसंत**; (श्रा २७) । संकृ—**परिमुसिऊण**; (कर्पूर २६) ।
परिमुस सक [परि+मृश्] स्पर्श करना, छूना । परिमुसइ; (भवि) ।
परिमुसण न [परिमोषण] १ चोरी; २ वञ्चना, ठगाई; (गा २६) ।
परिमुसिअ वि [परिमृष्ट] स्पृष्ट ; (महानि ४ ; भवि) ।
परिमूसण देखो **परिमुसण** ; (गा २६) ।
परिमेय देखो **परिमिण** ।
परिमोक्कल वि [दे. परिमुक्त] स्वैर, स्वच्छन्दी ; (भवि) ।
परिमोक्ख पुं [परिमोक्ष] १ मोक्ष, मुक्ति; (आचा) । २ परित्याग ; (सूअ १, १२, १०) ।
परिमोय सक [परि+मोचय्] छोड़ाना, छुटकारा कराना । परिमोयइ ; (सूअ २, १, ३६) ।
परिमोयण न [परिमोचन] मोक्ष, छुटकारा ; (सुर ४, २५० ; औप) ।
परिमोस पुं [परिमोष] चोरी ; (महा) ।
परियंच सक [परि+अञ्च्] १ पास में जाना । २ स्पर्श करना । ३ विभूषित करना । संकृ—**परिअंचिवि** (अप); (भवि) ।
परियंच सक [परि+अर्च्] पूजना । संकृ—**परिअंचिवि** (अप) ; (भवि) ।
परियंचण न [पर्यञ्चन] स्पर्श करना; (सुख ३, १) । देखो **पलियंचण** ।
परियंचिअ वि [पर्यञ्चित] विभूषित ; "पवरारामाल-परियंचिउ" (भवि) ।
परियंचिअ वि [पर्यर्चित] पूजित ; (भवि) ।
परियंद सक [परि+वन्द्] वन्दन करना, स्तुति करना । कवकृ—**परियंदिज्जमाण**; (औप) ।
परियंदण न [परिवन्दन] वन्दन, स्तुति ; (आचा) ।
परियच्छ सक [दृश्] १ देखना । २ जानना । परियच्छइ ; (भवि ; उव), परियच्छंति ; (उव) ।
परियच्छिअ देखो **परिकच्छिअ**; (राज) ।
परियत्थि स्त्री [पर्यस्ति] देखो **पल्हत्थिया** ; "अत्तो वायइ पवणो परियत्थी दिज्जए तत्तो" (चेइय १३०) ।
परियप्प सक [परि+कल्पय्] कल्पना करना, चिन्तन करना । वकृ—**परियप्पमाण** ; (आचा १, २, १, २) ।
परियप्पण न [परिकल्पन] कल्पना; (धर्मसं ११०८) ।
परियय पुं [परिचय] जान-पहचान, विशेष रूप से ज्ञान ; (गउड; से १५, ६६ ; अभि १३१) ।
परियय वि [परिगत] अन्वित, युक्त ; (स २२) ।
परियाइ सक [पर्या+दा] १ समन्तात् ग्रहण करना । २ विभाग से ग्रहण करना । परियाइयइ ; (सूअ २, १, ३७) । संकृ—**परियाइत्ता** ; (ठा ७) ।
परियाइअ वि [पर्यात्त] संपूर्ण रूप से गृहीत; (ठा २, ३—पत्र ६३) ।
परियाइअ देखो **परियाईय** ; (ठा २, ३—पत्र ६३) ।
परियाइणया स्त्री [पर्यादान] समन्तात् ग्रहण ; (पण्ण ३४—पत्र ७७४) ।
परियाइत्त वि [पर्यात्त] काफी ; (राज) ।
परियाईय वि [पर्यायातीत] पर्याय को अतिक्रान्त ; (राज) ।
परियाग देखो **पज्जाय** ; (औप ; उवा ; महा ; कप्प) ।
परियागय वि [पर्यागत] १ पर्याय से आगत ; (उत्त ५, २१ ; सुख ५, २१ ; णाया १, ३) । २ सर्वथा निष्पन्न; (णाया १, ७—पत्र ११६) ।
परियाण सक [परि + ज्ञा] जानना । परियाणइ, परियाणाइ; (पि १७० ; उवा) ।
परियाण न [परित्राण] रक्षण ; (सूअ १, १, २, ६; ७) ।
परियाण न [परिदान] १ विनिमय, बदला, लेनदेन ; २ समन्तात् दान ; (भवि) ।
परियाण न [परियान] १ गमन ; (ठा १०) । २ वाहन, यान ; (ठा ८) । ३ अवतरण ; (ठा ३, ३) ।

परियाणण न [**परिज्ञान**] जानकारी ; (स १३)।

परियाणिअ वि [**परित्राणित**] परित्राण-युक्त ; (सूअ १, १, २, ७)।

परियाणिअ वि [**परिज्ञात**] जाना हुआ, विदित ; (पउम ८८, ३३ ; रत्न १८ ; भवि)।

परियाणिअ पुंन [**परियानिक**] १ यान, वाहन ; २ विमान-विशेष ; (ठा ८)।

परियादि देखो **परियाइ**। परियादियति ; (कप्प)। संकृ—**परियादित्ता** ; (कप्प)।

परियाय देखो **पज्जाय** ; (ठा ४, ४ ; सुपा १६ ; विसे २७६१; ओप ; आचा ; उवा)। ६ अभिप्राय, मत; "सएहिं परियाएहिं लोयं बूया कडेति य" (सूअ १, १, ३, ६)। १० प्रव्रज्या, दीक्षा ; (ठा ३, २—पत्र १२६)। ११ ब्रह्मचर्य ; (आव ४)। १२ जिन-देव के केवल-ज्ञान की उत्पत्ति का समय ; (णाया १, ८)। °**थेर** पुं [°**स्थविर**] दीक्षा की अपेक्षा से वृद्ध ; (ठा ३, २)।

परियायंतकरभूमि स्त्री [**पर्यायान्तकृद्भूमि**] जिन-देव के केवल ज्ञान की उत्पत्ति के समय से लेकर तदनन्तर सर्व-प्रथम मुक्ति पाने वाले के बीच के समय का अन्तर ; (णाया १, ८—पत्र १५४)।

परियार सक [**परि + चारय्**] १ सेवा-शुश्रूषा करना। २ संभोग करना, विषय-सेवन करना। परियारेइ ; (ठा ३, १ ; भग)। वकृ—**परियारेमाण** ; (राज)। कवकृ—**परियारिज्जमाण** ; (ठा १०)।

परियार पुं [**परिचार**] मैथुन, विषय-सेवन ; (पण्ण ३४—पत्र ७८० ; ठा ३, १)।

परियारग वि [**परिचारक**] १ विषय-सेवन करने वाला ; (पण्ण २ ; ठा २, ४)। २ सेवा-शुश्रूषा करने वाला ; (विपा १, १)।

परियारण न [**परिचारण**] १ सेवा-शुश्रूषा ; (सुअ १८—पत्र २६५)। २ काम-भोग ; (पण्ण ३४)।

परियारणया } स्त्री [**परिचारणा**] ऊपर देखो ;
परियारणा } (पण्ण ३४ ; ठा ५, १)। °**सद्द** पुं [°**शब्द**] विषय-सेवन के समय का स्त्री का शब्द ; (निचू १)।

परियालोयण न [**पर्यालोचन**] विचार, चिन्तन; (सुपा ५००)।

परियाव देखो **परिताव**=परिताप; (आचा; ओघ १५४)।

परियावज्ज अक [**पर्या + पद्**] १ पीडित होना। २ रूपान्तर में परिणत होना। ३ सक. सेवना। परियावज्जइ, परियावज्जंति; (कप्प; आचा)।

परियावज्जण न [**पर्यापादन**] रूपान्तर-प्राप्ति; (पिंड २८०)।

परियावज्जणा स्त्री [**पर्यापादन**] आसेवन; (ठा ३, ४—पत्र १७४)।

परियावण देखो **परितावण**; (सूअ २, २, ६२)।

परियावणा स्त्री [**परितापना**] परिताप, संताप; (ओप)।

परियावणिया स्त्री [**परियापनिका**] कालान्तर तक अवस्थान, स्थिति; (णाया १, १४—पत्र १८६)।

परियावण्ण } वि [**पर्यापन्न**] स्थित, अवस्थित; (आचा
परियावन्न } २, १, ११, ७; ८; भग ३४, २; कस)।

परियावस सक [**पर्या + वासय्**] आवास कराना। परियावसे; (उत्त १८, ५४; सुख १८, ५४)।

परियावसह पुं [**पर्यावसथ**] मठ, संन्यासी का स्थान; (आचा २, १, ८, २)।

परियाविय वि [**परितापित**] पीडित; (पडि)।

परियासिय वि [**परिवासित**] बासी रखा हुआ; (कस)।

परिरंज सक [**भञ्ज्**] भाँगना, तोड़ना। परिरंजइ; (प्राकृ ७४)।

परिरंभ सक [**परि + रभ्**] आलिंगन करना। परिरंभस्सु (शौ); (पि ४६७)। संकृ—**परिरंभिउं**; (कुप्र २४२)।

परिरंभण न [**परिरम्भन**] आलिङ्गन; (पाअ; गा ८३५; सुपा २; ३६६)।

परिरक्ख सक [**परि + रक्ष्**] परिपालन करना। परिरक्खइ; (भवि)। कृ—**परिरक्खणीअ**; (सिक्खा ३१)।

परिरक्खण न [**परिरक्षण**] परिपालन; (गा ६०१; भवि)।

परिरक्खा स्त्री [**परिरक्षा**] ऊपर देखो; (पउम ५६, ५३; धर्मवि ५३; गउड)।

परिरक्खिय वि [**परिरक्षित**] परिपालित; (भवि)।

परिरद्ध वि [**परिरब्ध**] आलिङ्गित; (गा ३६८)।

परिरय पुं [**परिरय**] १ परिधि, परिक्षेप; (उत्त ३६, ५६; पउम ८६, ६१; पव १५८; ओप)। २ पर्याय, समानार्थक शब्द; "एगपरिरय त्ति वा एगपज्जाय त्ति वा एगयामभेद त्ति वा एगट्ठा" (आवू १)। ३ परिभ्रमण, फिर कर आना; "जइया थेरो, तस्स य अंतरा गड्डा डोंगरा वा, जे समत्था ते उज्जुएण

कल्पंति, जो असमत्थो सो परिरएणं—अमाडेण वच्चइ" (ओघ-भा २० टी) ।
परिराय अक [परि + राज्] विराजना, शोभना । वकृ—**परिरायमाण**; (कप्प) ।
परिरिंख सक [परि + रिङ्ख्] चलना, फरकना, हिलना । वकृ—**परिरिंखमाण**; (उप ५३० टी) ।
परिरुंभ सक [परि+रुध्] रोकना, अटकायत करना । कर्म—परिरुज्झइ; (गउड ४३४) । संकृ—**परिरुंभिऊण**; (उवकु १) ।
परिलंघि वि [परिलङ्घिन्] लङ्घन करने वाला; (गउड) ।
परिलंबि वि [परिलम्बिन्] लटकने वाला; (गउड) ।
परिलंभिअ वि [परिलम्भित] प्राप्त कराया हुआ; " सो गयवरो मुणीयं (मुणीहिं) वयाणि परिलंभिओ पसन्नप्पा" (पउम ८४, १) ।
परिलग्ग वि [परिलग्न] लगा हुआ, व्यापृत; (उप ३५६ टी)।
परिलिअ वि [दे] लीन, तन्मय; (दे ६, २४) ।
परिली अक [परि+ली] लीन होना । वकृ—**परिलिंत, परिलेंत, परिलीयमाण**; (णाया १, १—पत्र ५; औप; से ६, ४८; पराह १, ३; राय) ।
परिली स्त्री [दे] आतोद्य-विशेष, एक तरह का बाजा; (राज)।
परिलीण वि [परिलीन] निलीन; (पाअ) ।
परिलुंप सक [परि+लुप्] लुप्त करना, अ-दृष्ट करना । कवकृ—**परिलुप्पमाण**; (महा) ।
परिलेंत देखो **परिली**=परि + ली ।
परिलोयण न [परिलोचन, परिलोकन] अवलोकन, निरीक्षण; २ वि. देखने वाला; " जुगंतरपरिलोयणाए दिट्ठीए " (उत्त) ।
परिल्ल देखो **पर**=पर; (से ६, १७) ।
परिल्लवास वि [दे] अज्ञात-गति; (दे ६, ३३) ।
परिल्ली देखो **परिली** । वकृ—**परिल्लिंत, परिल्लेंत**; (औप) ।
परिल्हस अक [परि+स्रंस्] गिर पडना, सरक जाना । परिल्हसइ; (हे ४, १९७) ।
परिवइत्तु वि [परिव्रजितृ] गमन करने में समर्थ; (ठा ४, ४—पत्र २७१) ।
परिवंकड (अप) वि [परिवक्र] सर्वथा टेढ़ा; (भवि) ।
परिवंच सक [परिवञ्चय्] ठगना । संकृ—**परिवंचिऊण**; (सम्मत्त ११८) ।
परिवंछिअ वि [परिवाञ्छित] जो चाहा गया हो; (हे ४, १८) ।
परिवंथि वि [परिपन्थिन्] विरोधी, दुस्मन; (पि ४०५; नाट—विक ७) ।
परिवंदण न [परिवन्दन] स्तुति, प्रशंसा; (आचा) ।
परिवंदिय वि [परिवन्दित] स्तुत, पूजित; (पउम १, ६) ।
परिवक्खिअय देखो **परिवच्छिअय**; (औप) ।
परिवग्ग पुं [परिवर्ग] परिजन-वर्ग; (पउम २३, २४) ।
परिवच्छिअय देखो **परिकच्छिअय**; "उज्जलनेवत्थहव्वपरिवच्छिअय" (णाया १, १६ टी—पत्र २२१; औप) । देखो **परिवत्थिअ** ।
परिवज्ज सक [प्रति + पद्] स्वीकार करना । परिवज्जइ; (भवि) ।
परिवज्ज सक [परि+वर्जय्] परिहार करना, परित्याग करना । परिवज्जइ; (भवि) । संकृ—**परिवज्जिय, परिवज्जियाण**; (आचा; पि ५९२) ।
परिवज्जण न [परिवर्जन] परित्याग; (धर्मसं ११२०) ।
परिवज्जणा स्त्री [परिवर्जना] ऊपर देखो; (उव) ।
परिवज्जिअ वि [परिवर्जित] परित्यक्त; (उवा; भग; भवि)।
परिवट्ट देखो **परिवत्त**=परि + वर्तय् । परिवट्टइ; (भवि) । संकृ—**परिवट्टिवि** (अप); (भवि) ।
परिवट्टण न [परिवर्तन] आवर्तन, आवृत्ति; "आगमपरिवट्टणं" (संबोध ३६) ।
परिवट्टि देखो **परिवत्ति**; (मा ५२) ।
परिवट्टिय देखो **परिवत्तिय**; (भवि) ।
परिवट्टुल वि [परिवर्तुल] गोलाकार; (स ६८) ।
परिवड अक [परि+पत्] पड़ना । वकृ—**परिवडंत, परिवडमाण**; (पंच ५, ६२; ६७; उप पृ ३) ।
परिवडिअ वि [परिपतित] गिरा हुआ; (सुपा ३६०; वसु; मति २३; हम्मीर ३०; पंचा ३, २४) ।
परिवड्ढ अक [परि+वृध्] बढ़ना । परिवड्ढइ; (महा; भवि) । भवि—परिवड्ढिस्सइ; (औप) । कृ—**परिवड्ढंत, परिवड्ढमाण, परिवड्ढमाण**; (गा ३४६; णाया १, १३; महा; णाया १, १०) ।
परिवड्ढण न [परिवर्धन] परिवृद्धि, बढ़ाव; (गउड; धर्मसं ८७५) ।
परिवड्ढि स्त्री [परिवृद्धि] ऊपर देखो; (से ५, २) ।
परिवड्ढिअ देखो **परिवड्ढिअ**=परिवर्धित; (औप १६ टि) ।

परिवड्ढिअ वि [परिवर्धित] बढ़ाया हुआ ; (गा १४२ ; ४३१) ।
परिवड्ढमाण देखो **परिवड्ढ** ।
परिवण्ण सक [परि+वर्णय्] वर्णन करना । कृ—**परिवण्णेअव्व** ; (भग) ।
परिवण्णिअ वि [परिवर्णित] जिसका वर्णन किया गया हो वह ; (आत्म ७) ।
परिवत्त देखो **परिअट्ट**=परि + वृत् । परिवत्तई ; (उत्त ३३, १) । परिवत्तसु ; (गा ८०७) । वकृ—**परिवत्तंत** ; (गा २८३) ।
परिवत्त देखो **परिअट्ट**=परि + वर्तय् । वकृ—**परिवत्तेंत**, **परिवत्तयंत** ; (स ६ ; सुअ १, ५, १, १५) । संकृ—**परिवत्तिऊण**; (काल) ।
परिवत्त देखो **परिअट्ट**=परिवर्त ; "विहियरूवपरिवत्तो" (कुप्र १३४) । २ संचरण, भ्रमण ; (राज) ।
परिवत्त देखो **परिअत्त**=परिवृत्त ; (काल) ।
परिवत्तण देखो **पडिअत्तण**; (पि २८६; नाट—विक ८३) ।
परिवत्तर (अप) वि [परिपक्त्रिम] पकाया गया, गरम किया गया; "अंगु मलेवि सुअंधामोएं निमज्जिउ परिवत्तरतोएं" (भवि) ।
परिवत्ति वि [परिवर्तिन्] बदलाने वाला; "रूवपरिवत्तिणी विज्जा" (कुप्र १२६; महा) ।
परिवत्तिय देखो **परिअट्टिय**; (सुपा २६२) ।
परिवत्थ न [परिवस्त्र] वस्त्र, कपड़ा; (भवि) ।
परिवत्थिय वि [परिवस्त्रित] आच्छादित; "उज्जलनेवच्छहत्थ(?व्व)परिवत्थियं" (औप) । देखो **परिवच्छिय** ।
परिवद्ध देखो **परिवड्ढ** । वकृ— **परिवद्धमाण**; (राज) ।
परिवन्न देखो **पडिवन्न**; (उप १३६ टी) ।
परिवय सक [परि + वद्] निन्दा करना । परिवएज्जा, परिवयंति; (आचा) । वकृ—**परिवयंत**; (पराह १, ३) ।
परिवरिअ वि [परिवृत] परिकरित, वेष्टित; (सुपा १२५) ।
परिवलइअ वि [परिवलयित] वेष्टित; (सुख १०, १) ।
परिवस अक [परि + वस्] बसना, रहना । परिवसइ, परिवसंति; (भग ; महा; पि ४१७) ।
परिवसण न [परिवसन] आवास; (राज) ।
परिवसणा स्त्री [परिवसना] पर्युषणा-पर्व; (निचू १०) ।
परिवसिअ वि [पर्युषित] रहा हुआ, वास किया हुआ; (सख) ।
परिवह सक [परि + वह्] वहन करना, ढोना । २ अक, चालु रहना । परिवहइ; (कप्प) । परिवहंति; (गउड) । वकृ—**परिवहंत**; (पिंड ३५६) ।
परिवहण न [परिवहन] ढोना; (राज) ।
परिवा अक [परि + वा] सूखना । परिवाअइ ; (गउड) ।
परिवाइ वि [परिवादिन्] निन्दा करने वाला; (उव) ।
परिवाइय वि [परिवाचित] पढ़ा हुआ; (पउम ३७, १५) ।
परिवाई स्त्री [परिवाद] कलङ्क-वार्ता; "दहयस्स ताव वत्ता जणपरिवाई लहुं पत्ता" (पउम ६५, ४१) ।
परिवाड सक [घटय्] १ घटाना, संगत करना । २ रचना, निर्माण करना । परिवाडेइ; (हे ४, ५०) ।
परिवाडल देखो **परिपाडल**; (गउड) ।
परिवाडि स्त्री [परिपाटि] १ पद्धति, रीति; (विसे १०८५)। २ पंक्ति, श्रेणि; (उत्त १, ३२) । ३ क्रम, परंपरा; (संबे ६) । ४ सूत्रार्थ-वाचना, अध्यापन; "थिरपरिवाडी गहियमको" (धर्मवि ३६), "एगत्थीहिं वत्तिं न करे परिवाडिदाणमवि तासिं" (कुलक ११) ।
परिवाडिअ वि [घटित] रचित; (कुमा) ।
परिवाडी देखो **परिवाडि**; " परिवाडीआगयं हवइ रज्जं " (पउम ३१, १०६; पाअ) ।
परिवाद पुं [परिवाद] निन्दा, दोष-कीर्तन; (धर्मसं ६५४) ।
परिवादिणी स्त्री [परिवादिनी] वीणा-विशेष; (राज) ।
परिवाय देखो **परिवाद**; (कप्प; औप; पउम ६५, ६०; णाया १, १; स ३२; आत्महि १५) ।
परिवायग } पुं [परिव्राजक] संन्यासी, बाबा; (सण; **परिवायय** } सुर १५, ५) ।
परिवार सक [परि+वारय्] १ वेष्टन करना । २ कुटुम्ब करना । वकृ—**परिवारयंत**; (उत्त १३, १४) । संकृ—**परिवारिया**; (सुअ १, ३, २, २) ।
परिवार पुं [परिवार] गृह-लोक, घर के मनुष्य; (औप; महा; कुमा) । २ न. म्यान; (पाअ) ।
परिवारण न [परिवारण] १ निराकरण; (पराह १, १—पत्र १६) । २ आच्छादन, ढकना ; (वे १, ८६) ।
परिवारिअ वि [दे] घटित, रचित ; (दे ६,३०) ।
परिवारिअ वि [परिवारित] १ परिवार-संपन्न; २ वेष्टित; "जहा से उडुवई चंदे नक्खत्तपरिवारिए" (उत्त ११, २५; काल) ।

परिवाल देखो **परिआल** । परिवालइ; (दे ६, ३५ टी) ।

परिवाल सक [**परि + पालय्**] पालन करना । परिवालइ, परिवालेइ ; (भवि ; महा) । वकृ—**परिवालयंत**; (सुर १, १७१) । संकृ—**परिवालिय**; (राज) ।

परिवाल देखो **परिवार=परिवार** ; (गाया १, ८—पत्र १३१) ।

परिवाविय वि [**परिवापित**] उखाड़ कर फिर बोया हुआ; (ठा ४, ४) ।

परिवाविया स्त्री [**परिवापिता**] दीक्षा-विशेष, फिर से महाव्रतों का आरोपण ; (ठा ४, ४) ।

परिवास पुं [**दे**] खेत में सोने वाला पुरुष; (दे ६, २६) ।

परिवास न [**परिवासस्**] वस्त्र, कपड़ा; "अंघोरुयगुज्झंतरपासइँ सुनियत्थइँ मि भीणपरिवासइँ" (भवि) ।

परिवासि वि [**परिवासिन्**] बसने वाला ; (सुपा ४२) ।

परिवासिय वि [**परिवासित**] सुवासित, सुगन्ध-युक्त ; "मयपरिमलपरिवासियइइँ" (भवि) ।

परिवाह सक [**परि + वाहय्**] १ वहन कराना । २ अश्वादि खेलाना, अश्वादि-क्रीडा करना ; "विवरीयसिक्खतुरयं परिवाहइ वाहियालीए" (महा) ।

परिवाह पुं [**परिवाह**] जल का उछाल, बहाव ;
"भरिउच्चरंतपसरिअपिअसंभरणपिसुणो वराईए ।
परिवाहो विअ दुक्खस्स वहइ णअणट्ठिओ बाहो" (गा ३७७) ।

परिवाह पुं [**दे**] दुर्विनय, अ-विनय ; (दे ६, २३) ।

परिवाहण न [**परिवाहन**] अश्वादि-खेलन ; "आसपरिवाहणानिमित्तं गएणा" (स ८१ ; महा) ।

परिविआल सक [**परि + विश्**] वेष्टन करना । परिविआलइ ; (प्राकृ ७५ ; धात्वा १४४) ।

परिविच्चिट्ठ अक [**परिवि + स्था**] १ उत्पन्न होना । २ रहना । परिविच्चिट्ठइ ; (आचा १, ४, २, २; पि ४८३) ।

परिविच्छय वि [**परिविक्षत**] सर्वथा छिन्न—हत; (सूअ १, ३, १, २) ।

परिविट्ठ वि [**परिविष्ट**] परोसा हुआ ; (स १८६ ; सुपा ६२३) ।

परिवित्तस अक [**परिवि + त्रस्**] डरना । परिवित्तसंति; परिवित्तसेज्जा ; (आचा १, ६, ५, ५) ।

परिवित्ति स्त्री [**परिवृत्ति**] परिवर्तन; (सुपा ५८७) ।

परिविद्ध वि [**परिविद्ध**] जो बिंधा गया हो वह ; (सुपा २७०) ।

परिविद्धंस सक [**परिवि + ध्वंसय्**] १ विनाश करना । २ परिताप उपजाना । संकृ—**परिविद्धंसित्ता** ; (कप्प) ।

परिविद्धत्थ वि [**परिविध्वस्त**] १ विनष्ट ; २ परितापित; (सूअ २, ३, १) ।

परिविप्फुरिय वि [**परिविस्फुरित**] स्फूर्ति-युक्त ;(सण) ।

परिवियलिय वि [**परिविगलित**] चूआ हुआ, टपका हुआ; (सण) ।

परिवियलिर वि [**परिविगलितृ**] झरने वाला, चूने वाला; (सण) ।

परिविरल वि [**परिविरल**] विशेष विरल ; (गउड ; गा ३२६) ।

परिविलसिर वि [**परिविलसितृ**] विलासी ; (सण) ।

परिविस सक [**परि + विश्**] वेष्टन करना । परिविसइ ; (प्राकृ ७५) ।

परिविस सक [**परि+विष्**] परोसना, खिलाना । संकृ—**परिविस्स**; (उत्त १४, ६) ।

परिविसाय पुं [**परिविषाद**] समन्तात् खेद; (धर्मवि १२६)।

परिविहुरिय वि [**परिविधुरित**] अति पीड़ित ; "भविसंजुयदेविकरपरिविहुरिओ गयं मोत्तुं" (सुर १५, १५) ।

परिवीअ सक [**परि+वीजय्**] पँखा करना, हवा करना । परिवीएमि ; (स ६७) ।

परिवीइअ वि [**परिवीजित**] जिसको हवा की गई हो वह ; (उप २११ टी) ।

परिवीढ न [**परिपीठ**] आसन-विशेष ; (भवि) ।

परिवुड वि [**परिवृत**] परिकरित, वेष्टित ; (णाया १, १४; धर्मवि २४; औप; महा) ।

परिवुत्थ वि [**पर्युषित**] १ रहा हुआ ; २ न. वास, निवास ; (गउड ५४०) । देखो **परिवुसिअ** ।

परिवुद देखो **परिवुड** ; (प्राकृ १२) ।

परिवुदि स्त्री [**परिवृति**] वेष्टन ; (प्राकृ १२) ।

परिवुसिअ वि [**पर्युषित**] स्थित, रहा हुआ; "जे भिक्खू अचेले परिवुसिए" (आचा १, ८, ७, १; १, ६, २, २)। देखो **परिवुत्थ** ।

परिवूढ वि [**परिवृढ**] समर्थ ; (उत्त ७, २) ।

परिवूढ वि [**परिवृढ**] स्थूल ; (भास ८६; उत्त ७, ६) ।

परिवूढ वि [**परिव्यूढ**] वहन किया हुआ, ढोया हुआ ; "न चइस्सामि अहं पुण चिरपरिवूढं इमं लोहं" (धर्मवि ७) ।

परिवूहण देखो **परिवूहण** ; (राज) ।

परिवेढ सक [परि+वेष्ट्] वेढना, लपेटना। परिवेढइ; (भवि)। संकृ—**परिवेढिय**; (निचू १)।

परिवेढ पुं [परिवेष्ट] वेष्टन, घेरा; "जा जग्गइ तो पिच्छइ सेवापरसुहडपरिवेढं" (सिरि ६३८)।

परिवेढाविय वि [परिवेष्टित] वेष्टित कराया हुआ; (पि ३०४)।

परिवेढिय वि [परिवेष्टित] वेढा हुआ, घेरा हुआ, लपेटा हुआ; (उप ७६८ टी; पव २० ; पि ३०४)।

परिवेव अक [परि+वेप्] काँपना। "कायरवरिणि परिवेवइ" (भवि)।

परिवेविलर वि [परिवेविलतृ] कम्पन-शील; (गउड)।

परिवेव अक [परि+वेप्] काँपना। वकृ—**परिवेवमाण**; (णाया)।

परिवेस सक [परि+विष्] परोसना। परिवेसइ; (सुपा ३८६)। कर्म—परिवेसिज्जइ; (णाया १, ८)। वकृ—**परिवेसंत, परिवेसयंत**; (पिंड १२० ; सुपा ११; णाया १, ७)।

परिवेस पुं [परिवेश, °ष] १ वेष्टन; (गउड)। २ मंडल, मेघादि से सूर्य-चंद्र का वेष्टनाकार मंडल; "परिवेसो अंबरे फरुसवयणो" (पउम ६६, ४७; स ३१२ टी; गउड)।

परिवेसण न [परिवेषण] परोसना; (स १८७ ; पिंड ११६)।

परिवेसणा स्त्री [परिवेषणा] ऊपर देखो; (पिंड ४४५)।

परिवेसि [परिवेशिन्] समीप में रहने वाला; (गउड)।

परिव्वअ सक [परि+व्रज्] १ समन्तात् गमन करना। २ दीक्षा लेना। परिव्वए; परिव्वएज्जासि; (सूअ १, १, ४, ३; पि ४६०)।

परिव्वअ वि [परिवृत] परिवेष्टित; "तारापरिव्वओ विव सरयपुण्णिमाचंदो" (वसु)।

परिव्वअ वि [परिव्यय] विशेष व्यय; (नाट—मृच्छ ७)।

परिव्वह सक [परि+वह्] वहन करना, धारण करना। परिव्वहइ; (संबोध २२)।

परिव्वाइया स्त्री [परिव्राजिका] संन्यासिनी; (णाया १, ८; महा)।

परिव्वाज (शौ) पुं [परि+व्राज्] संन्यासी; (चारु ४६)।

परिव्वाजअ (शौ) पुं [परिव्राजक] संन्यासी; (पि १८७ ; नाट—मृच्छ ८५)।

परिव्वाजिआ (शौ) देखो **परिव्वाइया**; (मा २०)।

परिव्वाय देखो **परिव्वाज**; (सूअनि ११२; औप)।

परिव्वायग, **परिव्वायय** } पुं [परिव्राजक] संन्यासी, साधु; (भग)।

परिव्वायय वि [पारिव्राजक] परिव्राजक-संबन्धी; (कप्प)।

परिस देखो **फरिस**=स्पर्श; (गउड; चारु ४२)।

परिसंक अक [परि+शङ्क्] भय करना, डरना। वकृ—**परिसंकमाण**; (सूअ १, १०, २०)।

परिसंकिय वि [परिशङ्कित] भीत; (पण्ह १, ३)।

परिसंखा सक [परिसं+ख्या] १ अच्छी तरह जानना। २ गिनती करना। संकृ—**परिसंखाय**; (दस ७, १)।

परिसंखा स्त्री [परिसंख्या] संख्या, गिनती; (पउम २, ४६; जीवस ४०; पव—गाथा १३; तंदु ४; सम्म)।

परिसंग पुं [परिषङ्ग] संग, सोहबत; (हम्मीर १६)।

परिसंग पुं [परिष्वङ्ग] आलिङ्गन; (पउम २१, ५२)।

परिसंगय वि [परिसंगत] युक्त, सहित; (धर्मवि १३)।

परिसंठव सक [परिसं+स्थापय्] संस्थापन करना। परिसंठवहु (अप); (पिंग)। वकृ—**परिसंठवित**; (उप्प ४३)।

परिसंठविय वि [परिसंस्थापित] संस्थापित; (तंदु ३८)।

परिसंठिय वि [परिसंस्थित] स्थित, रहा हुआ; (महा)।

परिसंत वि [परिश्रान्त] थका हुआ; (महा)।

परिसंथविय वि [परिसंस्थापित] आश्वासित; (स ५६६)।

परिसक्क सक [परि+ष्वष्क्] चलना, गमन करना, इधर-उधर घूमना। परिसक्कइ; (उप ६ टी; कुप्र १७५)। वकृ—**परिसक्कंत, परिसक्कमाण**; (काप्र ६१७; स ४१; १३६)। संकृ—**परिसक्किऊण**; (सुपा ३१३)। कृ—**परिसक्कियव्व**; (स १६२)।

परिसक्कण न [परिष्वष्कण] परिभ्रमण; (से ५, ५५; १३, ५६; सुपा २०१)।

परिसक्किअ वि [परिष्वष्कित] १ गत; (भवि)। २ न. परिक्रमण, परिभ्रमण; (मा ६०६)।

परिसक्किर वि [परिष्वष्कितृ] गमन करने वाला; (णाया १, १; पि ५६६)।

परिसज्जिअ (अप) वि [परिष्वक्त] आलिंगित; (सण)।

परिसडिय वि [परिशटित] सड़ा हुआ, विनष्ट; (णाया १, २; औप)।

परिसण्ह वि [परिश्लक्ष्ण] सूक्ष्म, छोटा; (से १, १) ।
परिसन्न वि [परिषण्ण] जो हैरान हुआ हो, पीडित; (पउम १५, ३०) ।
परिसप्प सक [परि + सृप्] चलना । परिसप्पेइ; (नाट—विक ६१) ।
परिसप्पि वि [परिसर्पिन्] १ चलने वाला; (कप्पू) । २ पुंस्त्री. हाथ और पैर से चलने वाली जन्तु-जाति—नकुल, सर्प आदि प्राणि-गण । स्त्री—°णी; (जीव २) ।
परिसम देखो परिस्सम; (महा) ।
परिसमत्त वि [परिसमाप्त] संपूर्ण, जो पूरा हुआ हो वह; (से १५, ६५; सुर १५, २५०) ।
परिसमत्ति स्त्री [परिसमाप्ति] समाप्ति, पूर्णता; (उप ३५७; स ५२) ।
परिसमाविय वि [परिसमापित] जो समाप्त किया गया हो, पूरा किया हुआ; (विसे ३६०२) ।
परिसमाव सक [परिसम् + आप्] पूर्ण करना । संकृ—परिसमाविअ; (अभि ११६) ।
परिसर पुं [परिसर] नगर आदि के समीप का स्थान; (औप; सुपा १३०; मोह ७६) ।
परिसल्लिय वि [परिशल्यित] शल्य-युक्त; (सण) ।
परिसव सक [परि + स्रु] झरना, टपकना । वकृ—परिसवंत; (तंदु ३६; ४१) ।
परिसह पुं [परिषह] देखो परीसह; (भग) ।
परिसा स्त्री [परिषद्] १ सभा, पर्षद्; (पाअ; औप; उवा; विपा १, १) । २ परिवार; (ठा ३, २—पत्र १२७) ।
परिसाइ देखो परिस्साइ; (राज) ।
परिसाइयाण देखो परिसाव ।
परिसाड सक [परि+शाटय्] १ त्याग करना । २ अलग करना । परिसाडेइ; (कप्प; भग) । संकृ—परिसाडइत्ता; (भग) ।
परिसाडणा स्त्री [परिशाटना] पृथक्करण; (सुअनि ७; २०) ।
परिसाडि वि [परिशाटिन्] परिशाटन-युक्त; (ओघ ३१) ।
परिसाडि स्त्री [परिशाटि] परिशाटन, पृथक्करण; (पिंड ५५२) ।
परिसाम अक [शम्] शान्त होना । परिसामइ; (हे ४, १६७) ।
परिसाम वि [परिश्याम] नीचे देखो; (गउड) ।
परिसामल वि [परिश्यामल] कृष्ण, काला; (गउड) ।
परिसामिअ वि [शान्त] शान्त, शम-युक्त; (कुमा) ।
परिसामिअ वि [परिश्यामित] कृष्ण किया हुआ; (आचा १, १) ।
परिसाव सक [परि+स्रावय्] १ निचोड़ना । २ गालना । संकृ—परिसाइयाण; (आचा २, १, ८, १) ।
परिसावि देखो परिस्साचि; (बृह १) ।
परिसाहिय वि [परिकथित] प्रतिपादित, उक्त; (सण) ।
परिसिंच सक [परि + सिच्] सींचना । परिसिंचिज्जा; (उत्त २, ६) । वकृ—परिसिंचमाण; (आचा १, १) । कवकृ—परिसिच्चमाण; (कप्प; पि ५४२) ।
परिसिट्ठ वि [परिशिष्ट] अवशिष्ट, बाकी बचा हुआ; (आचा १, २, ३, ५) ।
परिसिढिल वि [परिशिथिल] विशेष शिथिल, ढीला; (गउड) ।
परिसित्त वि [परिषिक्त] १ सींचा हुआ; (गा १८५; सण) । २ न. परिषेक, सेचन; (पण्ह १, १) ।
परिसिल्ल वि [पर्षद्वत्] परिषद् वाला; (बृह ३) ।
परिसील सक [परि+शीलय्] अभ्यास करना, आदत डालना । संकृ—परिसीलिवि (अप); (सण) ।
परिसीलण न [परिशीलन] अभ्यास, आदत; (रंभा; सण) ।
परिसीलिय वि [परिशीलित] अभ्यस्त; (सण) ।
परिसीलग देखो पडिसीलग; (राज) ।
परिसुक्क वि [परिशुष्क] खूब सूखा हुआ; (विपा १, २; गउड) ।
परिसुण्ण वि [परिशून्य] खाली, रिक्त, सुन्न; (से ११, ८७) ।
परिसुत्त वि [परिसुप्त] सर्वथा सोया हुआ; (नाट—उत्तर २३) ।
परिसुद्ध वि [परिशुद्ध] निर्मल, निर्दोष; (उव; गउड) ।
परिसुद्धि स्त्री [परिशुद्धि] विशुद्धि, निर्मलता; (अच्चु; द्र ६५) ।
परिसुन्न देखो परिसुण्ण ; (विसे १८५०; सण) ।
परिसुस (अप) सक [परि+शोषय्] सुखाना । संकृ—परिसुसिवि (अप); (सण) ।
परिसूअणा स्त्री [परिसूचना] सूचना; (सुपा ३०) ।
परिसेय पुं [परिषेक] सेचन ; (ओघ ३४७) ।

परिसेस पुं [परिशेष] १ बाकी बचा हुआ, अवशिष्ट; (से १०, २३; पउम ३५, ४०; गा ८८; कम्म ६, ६०)। २ अनुमान-प्रमाण का एक भेद, पारिशेष्य-अनुमान; (धर्मसं ६८; ६६)।

परिसेसिअ वि [परिशेषित] १ बाकी बचा हुआ; (भग)। २ परिच्छिन्न, निर्णीत ;

"उज्झसि उज्झसु कढ्ढसि
कढ्ढसु अह फुडसि हिअअ ता फुडसु।
तहवि परिसेसिओ च्चिअ
सो हु मए गलिअसब्भावो" (गा ४०१)।

परिसेह पुं [परिषेध] प्रतिषेध, निवारण; "पावट्ठाणाण जो उ परिसेहो, झाणज्झयणाईणं जो य विही, एस धम्मकसो" (काल)।

परिसोण वि [परिशोण] लाल रँग का; (गउड)।

परिसोसण न [परिशोषण] सुखाना; (गा ६२८)।

परिसोसिअ वि [परिशोषित] सुखाया हुआ; (सण)।

परिसोह सक [परि+शोधय्] शुद्ध करना। कवकृ—**परिसोहिज्जंत**; (सण)।

परिस्सअ सक [परि+स्वञ्ज्] आलिंगन करना। परिस्सअदि (शौ); (पि ३१५)। संकृ—**परिस्सइअ**; (पि ३१५; नाट—शकु ७२)।

परिस्संत देखो **परिसंत**; (णाया १, १ ; स्वप्न ४०; अभि ११०)।

परिस्सज (शौ) देखो **परिस्सअ**। परिस्सजह; (उत्तर १७६)। वकृ—**परिस्सजंत**; (अभि १३३)। संकृ—**परिस्सजिअ**; (अभि १२५)।

परिस्सम पुं [परिश्रम] मेहनत; (धर्मसं ७८८, स्वप्न १०; अभि ३६)।

परिस्सम्म अक [परि+श्रम्] १ मेहनत करना। २ विश्राम लेना। परिस्सम्मइ; (बिसे ११६७; धर्मसं ७८६)।

परिस्सव सक [परि+स्रु] चूना, झरना, टपकना। वकृ—**परिस्सवमाण**; (विपा १, १)।

परिस्सव पुं [परिस्रव] आस्रव, कर्म-बन्ध का कारण; (आचा)।

परिस्सह देखो **परीसह**; (आचा)।

परिस्सार्इ देखो **परिस्सावि=परिस्राविन्**; (ठा ४, ४—पत्र २७६)।

परिस्साव देखो **परिसाव**। संकृ—**परिस्साविथाण**; (पि ५६२)।

परिस्सावि वि [परिस्राविन्] १ कर्म-बन्ध करने वाला; (भग २५, ६)। २ चूने वाला, टपकने वाला; ३ गुप्त बात को प्रकट कर देने वाला ; (गच्छ १, २३; पंचा १५, १४)।

परिस्सावि वि [परिश्राविन्] सुनाने वाला ; (द्रव्य ४६)।

परिह सक [परि+धा] पहिरना। परिहइ; (धर्मवि १५०; भवि), " सव्वंगीणेवि परिहए जंबू रयणमयालंकारे " (धर्मवि १४६)।

परिह पुं [दे] रोष, गुस्सा; (दे ६, ७)।

परिह पुं [परिघ] अर्गला, आगल ; (अणु)।

परिहच्छ वि [दे] १ पटु, दक्ष, निपुण; (दे ६, ७६; भवि)। २ पुं. मन्यु, रोष, गुस्सा; (दे ६, ७१)। देखो **परिहत्थ**।

परिहच्छ देखो **पडिहच्छ**; (औप)।

परिहट्ट सक [मृद्, परि+घट्टय्] मर्दन करना, चूर करना, कचड़ना। परिहट्टइ; (हे ४, १२६; नाट—साहित्य ११६)।

परिहट्ट सक [वि+लुल्] १ मारना, मार कर गिरा देना। २ सामना करना। ३ लूट लेना। ४ अक. जमीन पर लोटना। परिहट्टइ; (प्राकृ ७३)।

परिहट्टण न [परिघट्टन] १ अभिघात, आघात; (से १०, ४१)। २ घर्षण, घिसना; (से ८, ४३)।

परिहट्टि स्त्री [दे] आकृष्टि, आकर्षण, खींचाव; (दे ६, २१)।

परिहट्टिअ वि [मृदित] जिसका मर्दन किया गया हो वह; " परिहट्टिओ माणो " (कुमा; पाअ)।

परिहण न [दे, परिधान] वस्त्र, कपड़ा; (दे ६, २१; पाअ; हे ४, ३४१; सुर १, २५; भवि)।

परिहत्थ पुं [दे] १ जलजन्तु-विशेष; "परिहत्थमच्छपुंछच्छडअच्छोडणपोच्छलंतसलिलोहं " (सुर १३, ४१), "पोक्खरिणी....... परिहत्थभमंतमच्छकच्छभअणेगसउणगणमिहुणवियरियसद्दुन्नइयमहुरसरनाइया पासाईया " (णाया १, १३—पत्र १७६)। २ वि. दक्ष, निपुण; "अन्ने रणपरिहत्था सुरा" (पउम ६१, १; पण्ह १, ३—पत्र ५५; पाअ; आव ४)। ३ परिपूर्ण; (औप; कप्प)। देखो **परिहच्छ, पडिहत्थ**।

परिहर सक [परि+धृ] धारण करना। संकृ—**परिहरिअ**; (उत्त १२, ६)।

परिहर सक [परि+हृ] १ त्याग करना, छोड़ना । २ करना । ३ परिभोग करना, आसेवन करना । परिहरइ; (हे ४, २५९; उव; महा) । परिहरंति; (भग १५—पत्र ६६७) । वकृ—**परिहरंत, परिहरमाण**; (गा १६६; राज) । संकृ—**परिहरिअ**; (पिंग) । हेकृ—**परिहरित्तए, परिहरिउं**; (ठा ५, ३; काप्र ४०८) । कृ—**परिहरणीअ, परिहरिअव्व**; (पि ५७१; गा २२७; ओघ ५९; सुर १४, ८३; सुपा ३६६; ५८८; पण्ह २, ५)।

परिहरण न [परिहरण] १ परित्याग, वर्जन; (महा) । २ आसेवन, परिभोग; (ठा १०) ।

परिहरणा स्त्री [परिहरणा] ऊपर देखो; (पिंड १९७), " परिहरणा होइ परिभोगो " (ठा ५, ३ टी—पत्र ३३८)।

परिहरिअ वि [परिहृत] परित्यक्त, वर्जित; (महा; सण; भवि) ।

परिहरिअ देखो **परिहर**=परि+धृ, हृ ।

परिहरिअ वि [परिधृत] धारण किया हुआ;
" परिहरिअकणअकुंडलगंडत्थलमणहरेसु सवणेसु ।
अवणुअ ! समअवसेणं परिहिज्जइ तालवेंटजुअं ॥"
(गा ३९८ अ) ।

परिहलाविअ पुं [दे] जल-निर्गम, मोरी, पनाला; (दे ६, २९) ।

परिहव सक [परि+भू] पराभव करना । वकृ—**परिहवंत**; (वव १) । कृ—**परिहवियव्व**; (उप १०३६) ।

परिहव पुं [परिभव] पराभव, तिरस्कार; (से १,३, ४६; गा ३६६; हे ३, १८०) ।

परिहवण न [परिभवन] ऊपर देखो; (स ५७२) ।

परिहविय वि [परिभूत] पराजित, तिरस्कृत; (उप पृ १८०) ।

परिहस सक [परि+हस्] उपहास करना, हँसी करना । परिहसइ; (नाट) । कर्म—परिहसीअदि (शौ); (नाट—शकु २) ।

परिहस्स वि [परिह्रस्व] अत्यन्त लघु; (स ८) ।

परिहा अक [परि+हा] हीन होना, कम होना । परिहाइ, परिहायइ; (उव; सुख २, ३०) । भवि—परिहाइस्सदि (शौ); (अभि ९) । वकृ—**परिहायंत, परिहायमाण**; (सुर १०, ९; १२, १४; णाया १, १३; औप; ठा ३, ३), **परिहीअमाण**; (पि ५४५) ।

परिहा सक [परि+धा] पहिरना । भवि—परिहिस्सामि; (णाया १, ६, ३, १)। संकृ—**परिहिऊण, परिहित्ता**; (कुप्र ७२; सुअ १, ४, १, २५) । कृ—**परिहियव्व**; (स ३१५)।

परिहा स्त्री [परिखा] खाई; (उर ४, २; पाअ) ।

परिहाइअ वि [दे] परिक्षीण; (षड्) ।

परिहाइवि देखो **परिहाव**=परि + धापय् ।

परिहाण न [परिधान] १ वस्त्र, कपड़ा; (कुप्र ५६; सुपा ५५) । २ वि. पहिरने वाला; " अहिविलया सलिलवत्थपरिहाणी " (पउम ११, ११९) ।

परिहाणि स्त्री [परिहाणि] ह्रास, नुकसान, क्षति; (सम ६७; उप ३२९; जी ३३; प्रासू ३६) ।

परिहाय वि [दे] क्षीण, दुर्बल; (दे ६, २५; पाअ) ।

परिहायंत
परिहायमाण } देखो **परिहा**=परि + हा ।

परिहार पुं [परिहार] १ परित्याग, वर्जन; (गउड) । २ परिभोग, आसेवन; "एवं खलु गोसाला ! वणस्सइकाइयाओ पउट्टपरिहारं परिहरंति" (भग १५) । ३ परिहार-विशुद्धि-नामक संयम-विशेष; (कम्म ४, १२; २१) । ४ विषय; (वव १) । ५ तप-विशेष; (ठा ५, २; वव १) । °**विसुद्धिअ, °विसुद्धीअ** न [°विशुद्धिक] चारित्र-विशेष, संयम-विशेष; (ठा ५, २; नव २६) ।

परिहारि वि [परिहारिन्] परिहार करने वाला; (बृह ४)।

परिहारिणी स्त्री [दे] देर से ब्याई हुई भैंस; (दे ६, ३१)।

परिहारिय वि [पारिहारिक] १ परित्याग के योग्य; (बृह २) । २ परिहार-नामक तप का पालक; (पव ६९) ।

परिहाल पुं [दे] जल-निर्गम, मोरी; (दे ६, २९) ।

परिहाव सक [परि+धापय्] पहिराना । संकृ—**परिहाइवि** (अप); (भवि) ।

परिहाव सक [परि+हापय्] ह्रास करना, कम करना, हीन करना । वकृ—**परिहावेमाण**; (णाया १, १—पत्र २८)।

परिहाविअ वि [परिहापित] हीन किया हुआ; (वव ४)।

परिहाविअ वि [परिधापित] पहिराया हुआ; (महा; सुर १०, १७; स ५२९; कुप्र ९) ।

परिहास पुं [परिहास] उपहास, हँसी; (गा ७७१; पाअ)।

परिहासणा स्त्री [परिभाषणा] उपालम्भ; (आव १)।

परिहि पुंस्त्री [परिधि] १ परिवेष; "ससिबिंबं व परिहिया रुद्धं सिन्नेण तस्स रायगिहं" (पव २५५) । २ परिणाह, विस्तार; (राज) ।

परिहिअ वि [परिहित] पहिरा हुआ; (उवा; भग; कप्प; औप; पात्र; सुर २, ८०)।

परिहिऊण देखो परिहा=परि+धा।

परिहिंड सक [परि+हिण्ड्] परिभ्रमण करना। परिहिंडए; (ठा ४, १ टी—पत्र १६२)। वकृ—**परिहिंडंत, परिहिंडमाण;** (पउम ८, १६८; ६०, ५; ८, १५५; औप)।

परिहिंडिय वि [परिहिण्डित] परिभ्रान्त, भटका हुआ; (पउम ६, १३१)।

परिहित्ता }
परिहियव्व } देखो परिहा=परि+धा।

परिहीअमाण देखो परिहा=परि+हा।

परिहीण वि [परिहीन] १ कम, न्यून; (औप)। २ क्षीण, विनष्ट; (सुज्ज १)। ३ रहित, वर्जित; (उव)। ४ न. ह्रास, अपचय; (राय)।

परिहुत्त वि [परिभुक्त] जिसका भोग किया गया हो वह; (से १, ६४; दे ४, ३६)।

परिहूअ वि [परिभूत] पराजित, अभिभूत; (गा १३४; पउम ३, ६; स २८)।

परिहेरग न [दे परिहार्यक] आभूषण-विशेष; (औप)।

परिहो सक [परि+भू] पराभव करना। परिहोइ; (भवि)।

परिहोअ देखो परिभोग; (गउड)।

परिहुलस (अप) अक [परि+ह्रस्] कम होना। परिहुलसइ; (पिंग)।

परी सक [परि+इ] जाना, गमन करना। परिंति; (पि ४९३)। वकृ—**परिंत;** (पि ४९३)।

परी सक [क्षिप्] फेंकना। परीइ; (हे ४, १४३)। परीसि; (कुमा)।

परी सक [भ्रम्] भ्रमण करना, घूमना। परीइ; (हे ४, १६१)। परेंति; (पण्ह १, ३—पत्र ४६)।

परीघाय पुं [परिघात] निर्घातन, विनाश; (पव ६४)।

परीणम देखो परिणम=परि+णम्; "संसग्गओ पयणवणा-गुणाओ लोगुत्तरत्ते परीणमंति" (उपपं ३५)।

परीभोग देखो परिभोग; (सुपा ४६७; श्रावक २८४; पंचा ८, ६)।

परीमाण देखो परिमाण; (जीवस १२३; १३२; पव १५६)।

परीय देखो परित्त; (राज)।

परीयल्ल पुं [दे परिवर्त] वेष्टन; "तिपरीयल्लमविलद्ध रयहरणं धारए एगं" (ओघ ७०६)।

परीरंभ पुं [परीरम्भ] आलिंगन; (कुमा)।

परीवज्ज वि [परिवर्ज्य] वर्जनीय; (कम्म ६, ६ टी)।

परीवाय देखो परिवाय=परिवाद; (पउम १०१, ३; पव २३७)।

परीवार देखो परिवार=परिवार; (कुमा; चेइय ४८८)।

परीसण न [परिवेषण] परोसना; (दे २, १४)।

परीसम देखो परिस्सम; (भवि)।

परीसह पुं [परीषह] भूख आदि से होने वाली पीड़ा; (आचा; औप; उव)।

परुइय वि [प्ररुदित] जो रोने लगा हो वह; (स ७५५)।

परुक्ख देखो परोक्ख; (विसे १४०३ टी; सुपा १३३; श्रा १; कुप्र २५)।

परुण्ण }
परुन्न } देखो परुइय; (से १, ३५; १०, ६४; गा ३५४; ८३८; महा; स २०४)।

परुप्पर देखो परोप्पर; (कुप्र ५)।

परुब्भासिद (शौ) वि [प्रोद्भासित] प्रकाशित; (प्रयौ २०)।

परुस वि [परुष] कठोर; (गा ३४४)।

परूढ वि [प्ररूढ] १ उत्पन्न; (धर्मवि १२१)। २ बढ़ा हुआ; (औप; पि ४०२)।

परूव सक [प्र+रूपय्] प्रतिपादन करना। परूवेइ, परूवेंति; (औप; कप्प; भग)। संकृ—**परूवइत्ता;** (ठा ३, १)।

परूवग वि [प्ररूपक] प्रतिपादक; (उव; कुप्र १८१)।

परूवण न [प्ररूपण] प्रतिपादन; (अणु)।

परूवणा स्त्री [प्ररूपणा] ऊपर देखो; (आचू १)।

परूविअ वि [प्ररूपित] १ प्रतिपादित, विरूपित; (पण्ह २, १)। २ प्रकाशित; "उत्तमकंचणरयणपरूविअभासुर-भूसणभासुरिअंगा" (अजि २३)।

परेअ पुं [दे] पिशाच; (दे ६, १२; पाअ; षड्)।

परेण अ [परेण] बाद, अनन्तर; (महा)।

परेयम्मण देखो परिकम्मण; (कप्प)।

परेवय न [दे] पाद-पतन; (दे ६, १६)।

परेव्व वि [परेद्युस्तन] परसों का, परसों होने वाला; (पिंड २४१)।

परो° अ [पर] उत्कृष्ट; "परोसंतेहिं तवेहिं" (उवा)।

परोइय देखो परुइय; (उप ७६८ टी)।

परोक्ख न [**परोक्ष**] १ प्रत्यक्ष-भिन्न प्रमाण; "पच्चक्ख-परोक्खाइं दुन्नेव जओ पमाणाइं" (सुर १२, ६० ; संबि)। २ वि. परोक्ष-प्रमाण का विषय, अ-प्रत्यक्ष; (सुपा ६४७; हे ४, ४१८)। ३ न. पीछे, आँखों की ओट में; "मम परोक्खे किं तए अणुभूयं ?" (महा)।

परोट्ट देखो **पलोट्ट**=पर्यस्त; (षड्)।

परोप्पर } वि [**परस्पर**] आपस में; (हे १, ६२;
परोप्फर } कुमा; कप्पू; षड्)।

परोवआर पुं [**परोपकार**] दूसरे की भलाई; (नाट—मृच्छ १६८)।

परोवयारि वि [**परोपकारिन्**] दूसरे की भलाई करने वाला; (पउम ५०, १)।

परोवर देखो **परोप्पर**; (प्राकृ २६; ३०)।

परोविय देखो **परुइय**; (उप ७२८ टी; स ४८०)।

परोह अक [**प्र+रुह्**] १ उत्पन्न होना। २ बढ़ना। परोहदि (शौ); (नाट)।

परोह पुं [**प्ररोह**] १ उत्पत्ति; (कुमा)। २ वृद्धि; ३ अंकुर, बीजोद्‌भेद; (हे १, ४४), "पुन्नलयाण परोहे रेहइ आवालपंतिव्व" (धर्मवि १६८)।

परोहड न [**दे**] घर का पिछला आँगन, घर के पीछे का भाग; (ओघ ४१७; पाअ; गा ६८५ अ; वज्जा १०६; १०८)।

पल अक [**पल्**] १ जीना। २ खाना। पलइ; (षड्)। देखो **बल**=बल्।

पल (अप) अक [**पत्**] पड़ना, गिरना। पलइ; (पिंग)। वकृ—**पलंत**; (पिंग)।

पल (अप) सक [**प्र+कटय्**] प्रकट करना। पल; (पिंग)।

पल अक [**परा+अय्**] भागना।

"चोराण कामुयाण य पामरपहियाण कुक्कुडो रडइ ।
रे पलह रमह वाहयह, वहह तणुइज्जए रयणी" (वज्जा १३४)।

पल न [**दे**] स्वेद, पसीना; (दे ६, १)।

पल न [**पल**] १ एक बहुत छोटी तोल, चार तोला; (ठा ३, १; सुपा ४३७; वज्जा ६८; कुप्र ४१६)। २ मांस; (कुप्र १८६)।

पलंघ सक [**प्र+लङ्घ्**] अतिक्रमण करना। पलंघज्जा (औप)।

पलंघण न [**प्रलङ्घन**] उल्लंघन ; (औप)।

पलंड पुं [**पलगण्ड**] राज, चूना पोतने का काम करने वाला कारीगर; "पलबंडे पलंडो" (प्राकृ ३०)।

पलंडु पुं [**पलाण्डु**] प्याज; (उत्त ३६, ६८)।

पलंब अक [**प्र+लम्ब्**] लटकना। पलंबए; (पि ४५७)। वकृ—**पलंबमाण**; (औप; महा)।

पलंब वि [**प्रलम्ब**] १ लटकने वाला, लटकता; (पण्ह १, ४; राय)। २ लम्बा, दीर्घ; (से १२, ५६; कुमा)। ३ पुं. ग्रह-विशेष, एक महाग्रह; (ठा २, ३)। ४ मुहूर्त-विशेष, अहोरात्र का आठवाँ मुहूर्त; (सम ५१)। ५ पुंन. आभरण-विशेष; (औप)। ६ एक तरह का धान का कोठा; (बृह २)। ७ मूल; (कस; बृह १)। ८ रुचक पर्वत का एक शिखर; (ठा ८—पत्र ४३६)। ९ न. फल; (बृह १; ठा ४, १—पत्र १८५)। १० देव-विमान-विशेष; (सम ३८)।

पलंबिअ वि [**प्रलम्बित**] लटका हुआ; (कप्प; भवि; स्वप्न १०)।

पलंबिर वि [**प्रलम्बितृ**] लटकने वाला, लटकता; (सुपा ११; सुर १, २४८)।

पलक्क वि [**दे**] लम्पट; "इय विसयपलक्कमो" (कुप्र ४२७; नाट)।

पलक्ख पुं [**प्लक्ष**] बड़ का पेड़; (कुमा; पि १३२)।

पलज्जण वि [**प्ररञ्जन**] रागी, अनुराग वाला; "अधम्म-पलज्जण—" (णाया १, १८; औप)।

पलट्ट अक [**परि+अस्**] १ पलटना, बदलना। २ सक. पलटाना, बदलाना। पलट्टइ; (पिंग)। "कोहाइकारणेवि हु जो वयणसिरिं पलट्टंति" (संबोध १८)। संकृ—पलट्टि (अप); (पिंग)। देखो **पल्लट्ट**।

पलत्त वि [**प्रलपित**] १ कथित, उक्त, प्रलाप-युक्त; (सुपा ११४; से ११, ७६)। २ न. प्रलाप, कथन; (औप)।

पलय पुं [**प्रलय**] १ युगान्त, कल्पान्त-काल; २ जगत् का अपने कारण में लय; (से २, २; पउम ७२, ३१)। ३ विनाश; "जायवजाइपलए" (ती ३)। ४ चेष्टा-क्षय; ५ छिपना; (हे १, १८७)। °क्क पुं [°र्क] प्रलय-काल का सूर्य; (पउम ७२, ३१)। °घण पुं [°घन] प्रलय का मेघ; (सण)। °लण पुं [°नल] प्रलय काल की आग; (सण)।

पलल न [**पलल**] १ तिल-चूर्ण, तिल-खोद; (पण्ह २, ५; पिंड १६५)। २ मांस; (कुप्र १८७)।

पललिअ न [**प्रललित**] १ प्रक्रीडित; (याया १, १—पत्त ६१)। २ अंग-विन्यास; (पराह २, ४)।
पलव सक [**प्र+लप्**] प्रलाप करना, बकवाद करना। पलवदि (शौ); (नाट—वेणी १७)। वकृ—**पलवंत, पलवमाण**; (काल; सुर २, १२५; सुपा २५०; ६४१)।
पलवण न [**प्लवन**] उछलना, उच्छलन; "संपाइमवाउवहो पलवण आउणयाओ य" (ओघ ३४८)।
पलविअ } **पलवित** } वि [**प्रलपित**] १ अनर्थक कहा हुआ; २ न. अनर्थक भाषण; (चंड; पराह १, २)।
पलविर वि [**प्रलपितृ**] बकवादी; (दे ७, ५६)।
पलस न [**दे**] १ कर्पास-फल; २ स्वेद, पसीना; (दे ६, ७०)।
पलस (अप) न [**पलाश**] पत्त, पत्ती; (भवि)।
पलसु स्त्री [**दे**] सेवा, पूजा, भक्ति; (दे ६, ३)।
पलहि पुंस्त्री [**दे**] कपास; (दे ६, ४; पाअ; वज्जा १८६; हे २, १७४)।
पलहिअ वि [**दे**] १ विषम, असम; २ पुंन. आवृत जमीन का वास्तु; (दे ६, १५)।
पलहिअअ वि [**दे. उपलहृदय**] मूर्ख, पाषाण-हृदय; (षड्)।
पलहुअ वि [**प्रलघुक**] १ स्वल्प, थोड़ा; २ छोटा; (से ११, ३३; गउड)।
पला देखो **पलाय**=परा+अय्। "जं जं भणामि अहयं सयलं पि बहिं पलाइ तं तुज्झ" (आत्मानु २३), पलासि, पलामि ; (पि ५६७)।
पलाअंत } **पलाइअ** } देखो **पलाय**=परा+अय्।
पलाइअ } **पलाण** } वि [**पलायित**] १ भागा हुआ, नष्ट; "पलाइए हलिए" (गा ३६०), "रिउणो सिन्नं जह पलाणं" (धर्मवि ५६; ५१; पउम ५३, ८४; ओघ ४६७; उप १३६ टी; सुपा २२; ५०३; ती १५; सण; महा)। २ न. पलायन; (दस ४, ३)।
पलाण न [**पलायन**] भागना; (सुपा ४६४)।
पलाणिअ वि [**पलायित**] जिसने पलायन किया हो वह, भागा हुआ; "तेणवि आगच्छंतो विन्नाओ तो पलाणिओ दूरं" (सुपा ४६४)।
पलात वि [**प्रलात**] गृहीत ; (चंड)।
पलाय अक [**परा+अय्**] भाग जाना, नासना। पलायइ, पलायसि; (महा; पि ५६७)। भवि—पलाइस्सं; (पि ५६७)। वकृ—**पलाअंत, पलायमाण**; (गा २६१; याया १, १८; आक १८; उप पृ ३६)। संकृ—**पलाइअ**; (नाट; पि ५६७)। हेकृ—**पलाइउं**; (आक १६; सुपा ४६४)। कृ—**पलाइअव्व**; (पि ५६७)।
पलाय पुं [**दे**] चोर, तस्कर; (दे ६, ८)।
पलाय देखो **पलाइअ**=पलायित; (याया १, ३; स १३१; उप पृ २५७; भग ४८)।
पलायण न [**पलायन**] भागना; (ओघ १६; सुर २, १४)।
पलायणया स्त्री. ऊपर देखो; (चेइय ४४६)।
पलायमाण देखो **पलाय**=परा+अय्।
पलाल न [**पलाल**] तृण-विशेष, पुआल; (पराह २, ३; पाअ; आचा)। °**पीढय** न [°**पीठक**] पलाल का आसन; (निचू १२)।
पलाव सक [**नाशय्**] भगाना, नष्ट करना। पलावइ; (हे ४, ३१)।
पलाव पुं [**प्लाव**] पानी की बाढ़; (तंदु ५० टी)।
पलाव पुं [**प्रलाप**] अनर्थक भाषण, बकवाद; (महा)।
पलावण न [**नाशन**] नष्ट करना, भगाना; (कुमा)।
पलावि वि [**प्रलापिन्**] बकवादी; "असंबद्धपलाविणी एसा" (कुप्र २२२; संबोध ४७; अभि ४६)।
पलाविअ वि [**प्लावित**] डुबोया हुआ, भिगाया हुआ; (सुर १३, २०४; कुप्र ६०; ६७; सण)।
पलाविअ वि [**प्रलापित**] अनर्थक घोषित करवाया हुआ; "मंछुड्डु किं दुच्चरिउ पलाविउ सज्जणजणहो नाउं लज्जाविउ" (भवि)।
पलाविर वि [**प्रलपितृ**] बकवाद करने वाला; "अइह असंबद्धपलाविरस्स बहुयस्स पेच्छ मह पुरओ" (सुपा २०१), "दिव्वनाणीव जंपेइ, एसो एवं पलाविरो" (सुपा २७७)।
पलास पुं [**पलाश**] १ वृक्ष-विशेष, किंशुक वृक्ष, ढाँक; (वज्जा १५२; गा ३११)। २ राक्षस; (वज्जा १३०; गा ३११)। ३ पुंन. पत्र, पत्ता; (पाअ; वज्जा १५२)। ४ भद्रशाल वन का एक दिग्हस्ती कूट; (ठा ८—पत्र ४३६; इक)।
पलासि स्त्री [**दे**] भल्ली, छोटा भाला, शस्त्र-विशेष; (दे ६, १४)।
पलासिया स्त्री [**दे. पलाशिका**] त्वक्काष्ठिका, छाल की बनी हुई लकड़ी; (सूअ १, ४, २, ७)।
पलाह देखो **पलास**; (संक्षि १६; पि २६२)।

पलि देखो **परि**; (सूअ १, ६, ११; २, ७, ३६; उत्त २६, ३४; पि २५७)।

पलिअ न [**पलित**] १ वृद्ध अवस्था के कारण बालों का पकना, केशों की श्वेतता; २ बदन की झुर्रियाँ; (हे १, २१२)। ३ कर्म, कर्म-पुद्गल; "जे केइ सत्ता पलियं चयंति" (आचा १, ४, ३, १)। ४ घृणित अनुष्ठान; "से आकुट्टे वा हए वा लुंचिए वा पलियं पकंथे" (आचा १, ६, २, २)। ५ कर्म, काम; (आचा १, ६, २, २)। ६ ताप; ७ पंक, कादा; ८ वि. शिथिल; ९ वृद्ध, बूढा; (हे १, २१२)। १० पका हुआ, पक्व; (धर्म २; निचू १५)। ११ जरा-ग्रस्त; "न हि दिज्जइ आहरणं पलियत्तयकण्णहत्थस्स" (राज)। °**ट्ठाण**, °**ठाण** न [°**स्थान**] कर्म-स्थान, कारखाना; (आचा १, ६, २, २)।

पलिअ न [**पल**] चार कर्ष या तीन सौ बीस गुञ्जा का नाप; (तंदु २६)।

पलिअ देखो **पल्ल**=पल्य; (पव १५८; भग; जी ३६; नव ६; दं २७)।

पलिअ (अप) देखो **पडिअ**; (पिंग)।

पलिअंक पुं [**पर्यङ्क**] पलँग, खाट; (हे २, ६८; सम ३५; औप)। °**आसण** न [°**आसन**] आसन-विशेष; (सुपा ६५५)।

पलिअंका स्त्री [**पर्यङ्का**] पद्मासन, आसन-विशेष; (ठा ५, १—पत्र ३००)।

पलिउंच सक [**परि+कुञ्च्**] १ अपलाप करना। २ ठगना। ३ छिपाना, गोपन करना। पलिउंचंति, पलिउंचयंति; (उत्त २७, १३; सूअ १, १३, ४)। संकृ—**पलिउंचिय**; (आचा २, १, ११, १)। वकृ—**पलिउंचमाण**; (आचा १, ७, ४, १; २, ५, २, १)।

पलिउंचण न [**परिकुञ्चन**] माया, कपट; (सूअ १, ६, ११)।

पलिउंचणा स्त्री [**परिकुञ्चना**] १ सच्ची बात को छिपाना; २ माया; (ठा ४, १ टी—पत्र २००)। ३ प्रायश्चित्त-विशेष; (ठा ४, १)।

पलिउंचि वि [**परिकुञ्चिन्**] मायावी, कपटी; (वव १)।

पलिउंचिय वि [**परिकुञ्चित**] १ वञ्चित; २ न. माया, कुटिलता, (वव १)। ३ गुरु-वन्दन का एक दोष, पूरा वन्दन न करके ही गुरु के साथ बातें करने लग जाना; (पव २)।

पलिउंजिय देखो **परिउंजिअ**; (भग)।

पलिउच्छन्न देखो **पलिओच्छन्न**; (आचा १, ५, १, ३)।

पलिउच्छूढ देखो **पलिओच्छूढ**; (औप—पृ ३० टि)।

पलिउंजिय वि [**परियोगिक**] परिज्ञानी, जानकार; (भग २, ५)।

पलिउल देखो **पडिउल**; (नाट—विक १८)।

पलिओच्छन्न वि [**पलितावच्छन्न**] कर्माच्छन्न, कुकर्मी; (आचा १, ५, १, ३)।

पलिओच्छिन्न वि [**पर्यवच्छिन्न**] ऊपर देखो; (आचा; पि २५७)।

पलिओच्छूढ वि [**पर्यवक्षिप्त**] प्रसारित; (औप)।

पलिओवम पुंन [**पल्योपम**] समय-मान विशेष, काल का एक दीर्घ परिमाण; (ठा २, ४; भग; महा)।

पलिंणा (शौ) देखो **पडिण्णा**; (पि २७६)।

पलिकुंचणया देखो **पलिउंचणा**; (सम ७१)।

पलिक्खीण वि [**परिक्षीण**] क्षय-प्राप्त; (सूअ २, ७, ११; औप)।

पलिगोव पुं [**परिगोप**] १ पङ्क, कादा; २ आसक्ति; (सूअ १, २, २, ११)।

पलिच्छण्ण } वि [**परिच्छन्न**] १ समन्तात् व्याप्त; (आचा
पलिच्छन्न } १, २—पत्र ७८; १, ४)। २ निरुद्ध, रोका हुआ; "णेत्तेहिं पलिच्छन्नेहिं" (आचा १, ४, ४, २)।

पलिच्छाअ सक [**परि+छादय्**] ढकना, आच्छादन करना। पलिच्छाएइ; (आचा २, १, १०, ६)।

पलिच्छिंद सक [**परि+छिद्**] छेदन करना, काटना। संकृ—**पलिच्छिंदिय**, **पलिच्छिंदियाणं**; (आचा १, ४, ४, ३; १, ३, २, १)।

पलिच्छिन्न वि [**परिच्छिन्न**] विच्छिन्न, काटा हुआ; (सूअ १, १६, ५; उप ५८५; सुर ६, २०६)।

पलित्त वि [**प्रदीप्त**] ज्वलित; (कुप्र ११६; सं ७७; अभ)।

पलिपाग देखो **परिपाग**; (सूअ २, ३, २१; आचा)।

पलिप्प अक [**प्र+दीप्**] जलना। पलिप्पइ; (वज्जा; प्राकृ १२)। वकृ—**पलिप्पमाण**; (पि २४४)।

पलिबाहर } वि [**परिबाह्य**] हमेशा बाहर होने वाला;
पलिबाहिर } (आचा)।

पलिभाग पुं [**परिभाग**, **प्रतिभाग**] १ निर्विभागी अंश; (कम्म ४, ८२)। २ प्रतिनियत अंश; (जीवस १५७)। ३ सादृश्य, समानता; (राज)।

पलिभिंद सक [**परि+भिद्**] १ जानना। २ बोलना। ३

भेदन करना, तोड़ना। संकृ—पलिभिंदियाणं; (सूअ १, ४, १, २)।
पलिभेय पुं [परिभेद] चूरना; (निचू ५)।
पलिमंथ सक [परि+मन्थ्] बाँधना। पलिमंथए; (उत्त ६, २२)।
पलिमंथ पुं [परिमन्थ] १ विनाश; (सूअ २, ७, २६; विसे १४५७)। २ स्वाध्याय-व्याघात; (उत्त २६, ३४; धर्मसं १०१७)। ३ विघ्न, बाधा; (सूअ १, २, २, ११ टी)। ४ मुधा व्यापार, व्यर्थ क्रिया; (श्रावक १०६; ११२)।
पलिमंथग पुं [परिमन्थक] १ धान्य-विशेष, काला चना; (सूअ २, २, ६३)। २ गोल चना; ३ विलंब; (राज)।
पलिमंथु वि [परिमन्थु] सर्वथा घातक; (ठा ६—पत्र ३७१; कस)।
पलिमद्द देखो **परिमद्द**। परिमद्देज्जा; (पि २५७)।
पलिमद्द वि [परिमर्द] मालिश करने वाला; (निचू ६)।
पलिमोक्ख देखो **परिमोक्ख**; (आचा)।
पलिरंखण न [पर्यङ्खन] परिभ्रमण; (सुर ७, २४३)। देखो **परिरंखण**।
पलियंत पुं [पर्यन्त] १ अन्त भाग; (सूअ १, ३, १, १५)। २ वि. अवसान वाला, अन्त वाला; "पलियंतं मणुयाण जीवियं" (सूअ १, २, १, १०)।
पलियंत न [पल्यान्तर्] पल्योपम के भीतर; (सूअ १, २, १, १०)।
पलियस्स न [परिपार्श्व] समीप, पास, निकट; (भग ६, ५—पत्र २६८)।
पलिल देखो **पलिअ**=पलित; (हे १, २१२)।
पलिव देखो **पलीव**। पलिवेइ; (पि २४४)।
पलिवग देखो **पलीवग**; (राज)।
पलिविअ वि [प्रदीपित] जलाया हुआ; (षड्; हे १, १०१)।
पलिस्सय } सक [परि+स्वञ्ज्] आलिंगन करना, स्पर्श
पलिस्सय } करना, छूना। पलिस्सएज्जा; (बृह ४)। वकृ—**पलिस्सयमाणे** गुज्झा दो लहुगा आणमाईया" (बृह ४)। हेकृ—**पलिस्सइउं**; (बृह ४)।
पलिह देखो **परिह**=परिघ; (राज)।
पलिहत्थ वि [दे] मूर्ख, बेवकूफ; (दे ६, २०)।
पलिहद स्त्री [दे] खेत, खेत; "नियपलिहईइ दोहिवि किसिकम्मं कारंमाणं" (सुर १५, २०१)।

पलिहस्स न [दे] ऊर्ध्व दारु, काष्ठ-विशेष; (दे ६, १६)।
पलिहाय पुं [दे] ऊपर देखो; (दे ६, १६)।
पली सक [परि+इ] पर्यटन करना, भ्रमण करना। **पलेइ**; (सूअ १, १३, ६), पलिंति; (सूअ १, १, ४, ६)।
पली अक [प्र+ली] लीन होना, आसक्ति करना। पलिंति; (सूअ १, २, २, २२)। वकृ—**पलेमाण**; (आचा १, ४, १, ३)।
पलीण वि [प्रलीन] १ अति लीन; (भग २५, ७)। २ संबद्ध; (सूअ १, १, ४, २)। ३ प्रलय-प्राप्त, नष्ट; (सुर ४, १५४)। ४ छिपा हुआ, निलीन; (सुर ६, २८)।
पलीमंथ देखो **पलिमंथ**; (सूअ १, ६, १२)।
पलीव अक [प्र+दीप्] जलना। पलीवइ; (हे ४, १५२; षड्)।
पलीव सक [प्र+दीपय्] जलाना, सुलगाना। पलीवइ, पलीवेइ; (महा; हे १, २२१)। संकृ—**पलीविऊण**, **पलीविअ**; (कुप्र १६०; गा ३३)।
पलीव पुं [प्रदीप] दीपक, दिया; (प्राकृ १२; षड्)।
पलीवग वि [प्रदीपक] आग लगाने वाला; (पण्ह १, १)।
पलीवण न [प्रदीपन] आग लगाना; (श्रा २८; कुप्र २६)।
पलीवणया स्त्री. ऊपर देखो; (निचू १६)।
पलीविअ देखो **पलीव**=प्र+दीपय्।
पलीविअ वि [प्रदीप्त] प्रज्वलित; (पाअ)।
पलीविअ वि [प्रदीपित] जलाया हुआ; (उव)।
पलुंपण न [प्रलोपन] प्रलोप; (औप)।
पलुट्ट वि [प्रलुठित] लेटा हुआ; (दे १, ११६)।
पलुट्ट देखो **पलोट्ट**= पर्यस्त; (हे ४, ४२२)।
पलुट्टिअ देखो **पलोट्टिअ**=पर्यस्त; (कुमा ४, ७५)।
पलुट्ठ वि [प्लुष्ट] दग्ध, जला हुआ; (सुर ६, २०६; सुपा ४)।
पलेमाण देखो **पली**=प्र+ली।
पलेव पुं [प्रलेप] एक जाति का पत्थर, पाषाण-विशेष; (जी ३)।
पलोअ सक [प्र+लोक्, लोकय्] देखना, निरीक्षण करना। पलोअइ, पलोअए, पलोएइ; (सण; महा)। कर्म—पलोइज्जइ; (कप्प)। वकृ—**पलोअंत**, **पलोअअंत**, **पलोएंत**, **पलोएमाण**, **पलोयमाण**; (रयण १४; नाट—मालती ३२; महा; पि १६३; सुपा ४४; ३५१)।

पलोअण न [प्रलोकन] अवलोकन; (से १४, ३५; गा ३२२)।
पलोअणा स्त्री [प्रलोकना] निरीक्षण; (ओघ ३)।
पलोइ वि [प्रलोकिन्] प्रेक्षक; (औप)।
पलोइअ वि [प्रलोकित] देखा हुआ; (गा ११८; महा)।
पलोइर वि [प्रलोकितृ] प्रेक्षक; (गा १८०; भवि)।
पलोएंत } देखो **पलोअ** ।
पलोपमाण }
पलोअर [दे] देखो **परोहड**; (गा ३१३ अ)।
पलोट्ट सक [प्रत्या + गम्] लौटना, वापिस आना। पलोट्टइ; (हे ४, १६६)।
पलोट्ट सक [प्र + अस्] १ फेंकना। २ मार गिराना। ३ अक. पलटना, विपरीत होना। ४ प्रवृत्ति करना। ५ गिरना। पलोट्टइ, पलोट्टेइ; (हे ४, २००; भग; कुमा)। वकृ— **पलोट्टंत**; (वज्जा ६६; गा २२२)।
पलोट्ट अक [प्र + लुट्] जमीन पर लोटना। वकृ— **पलोट्टंत**; (से ५, ५८)।
पलोट्ट वि [पर्यस्त] १ क्षिप्त, फेंका हुआ; २ हत; ३ विक्षिप्त; (हे ४, २५८)। ४ पतित, गिरा हुआ; (गा १७०)। ५ प्रवृत्त; " रेल्लंता वणभागा तओ पलोट्टा जवा जलप्पोघा" (कुमा)।
पलोट्टजीह वि [दे] रहस्य-भेदी, बात को प्रकट करने वाला; (दे ६, ३५)।
पलोट्टण न [प्रलोठन] ढुलकाना, गिराना; (उप पृ ११०)।
पलोट्टिअ देखो **पलोट्ट**=पर्यस्त; (कुमा)।
पलोभ सक [प्र + लोभय्] लुभाना, लालच देना। पलोभेदि (शौ); (नाट—मृच्छ ३१३)।
पलोभविअ वि [प्रलोभित] लुभाया हुआ; (धर्मवि ११२)।
पलोभि वि [प्रलोभिन्] विशेष लोभी; (धर्मवि ७)।
पलोभिअ देखो **पलोभविअ**; (सुपा ३४३)।
पलोव (अप) देखो **पलोअ**। पलोवइ; (भवि)।
पलोहर [दे] देखो **परोहड**; (गा ६८५ अ)।
पलोहिद (शौ) देखो **पलोभिअ**; (नाट)।
पल्ल पुंन [पल्य] १ गोल आकार का एक धान्य रखने का पात्र; (पव १५८; ठा ३, १)। २ काल-परिमाण विशेष, पल्योपम; (पउम २०, ६७; दं २७)। ३ संस्थान-विशेष, पल्यंक संस्थान; "पल्लासंठाणसंठिया" (सम ७७)।
पल्ल पुं [पल्ल] धान्य भरने का बड़ा कोठा; "बहवे पल्ला सालीणं पडिपुण्णा चिट्ठंति" (णाया १, ७—पत्र ११५)।

पल्लंक देखो **पलिअंक**; (हे २, ६८; षड्)।
पल्लंक पुं [पल्यङ्क] शाक-विशेष, कन्द-विशेष; (आ २०; जी ६; पव ४; संबोध ४४)।
पल्लंघण न [प्रलङ्घन] १ अतिक्रमण; (आ ७)। २ गमन, गति; (उत्त २४, ४)।
पल्लग देखो **पल्ल**=पल्य; (विसे ७०६)।
पल्लट्ट देखो **पलट्ट**=परि + अस्। पल्लट्टइ; (हे ४, २०० भवि)। संकृ—**पल्लट्टिउं**; (पंचा १३, १२)।
पल्लट्ट पुं [दे] पर्वत-विशेष; (पण्ह १, ४)।
पल्लट्ट पुं [दे, परिवर्त] काल-विशेष, अनन्त काल चक्रों का समय; (भवि ४७)।
पल्लट्ट } देखो **पलोट्ट**=पर्यस्त; (हे २, ४७; ६८)।
पल्लत्थ }
पल्लत्थि स्त्री [पर्यस्ति] आसन-विशेष;
"पायपसारणं पल्लत्थिबंधणं बिंबपट्ठिदाणं च।
उच्चासणसेवणया जिणपुरओ भन्नइ अवन्ना ॥"
(चेइय ६०)। देखो **पल्हत्थिया**।
पल्लल न [पल्वल] छोटा तलाव; (प्राकृ १७; णाया १, १; सुपा ६४६; स ४२०)।
पल्लव पुं [पल्लव] १ किशलय, अंकुर; (पाअ; औप)। २ पल, पत्ता; (से २, २६)। ३ देश-विशेष; (भवि)। ४ विस्तार; (कप्पू)।
पल्लव देखो **पज्जव**; (सम ११३)।
पल्लवाय न [दे] खेत, खेत; (दे ६, २६)।
पल्लविअ वि [दे] लाक्षा-रक्त; (दे ६, १६; पाअ)।
पल्लविअ वि [पल्लवित] १ पल्लवाकार; (दे ६, १६)। २ अंकुरित, प्रादुर्भूत, उत्पन्न; (दे १, २)। ३ पल्लव-युक्त; (रंभा)।
पल्लविल्ल वि [पल्लववत्] पल्लव-युक्त; (सुपा ६; भवि २४)।
पल्लविल्ल देखो **पल्लव**; (हे २, १६४)।
पल्लस्स देखो **पलोट्ट**=परि+अस्। पल्लस्सइ; (प्राकृ ७२)।
पल्लाण न [पर्याण] अश्व आदि का साज; "किं करिणो पल्लाणं उव्वोढुं रासभा तरइ" (प्रबि १७; प्राप्र)।
पल्लाण सक [पर्याणय्] अश्व आदि को सजाना। पल्लाणेइ; (स २२)।
पल्लाणिअ वि [पर्याणित] पर्याण-युक्त; (कुमा)।

पल्लि स्त्री [पल्लि] १ छोटा गाँव। २ चोरों के निवास का गहन स्थान; (उप ७२८ टी)। °**नाह** पुं [°नाथ] पल्ली का स्वामी; (सुपा ३५१; सुर २, ३३)। °**वइ** पुं [°पति] वही अर्थ; (सुर १, १६१; सुपा ३५१)।

पल्लिअ वि [दे] १ आक्रान्त; (निचू २)। २ ग्रस्त; (निचू १)। ३ प्रेरित; "पल्लट्टा पल्लिआरहट्टव्व" (धण ४७)।

पल्लित्त वि [दे] पर्यस्त; (षड्)।

पल्ली देखो **पल्लि**; (गउड; पंचा १०, ३६; सुर २, २०४)।

पल्लीण वि [प्रलीन] विशेष लीन; "गुत्तिंदिए अल्लीणे पल्लीणे चिट्ठइ" (भग २५, ७; कप्प)।

पल्लोट्टजीह [दे] देखो **पलोट्टजीह**; (षड्)।

पल्लत्थ देखो **पलोट्ट**+परि+अस्। पल्हत्थइ; (हे ४, २००)। वकृ—**पल्हत्थंत**; (से १०, १०; २, ५)। कवकृ—**पल्हत्थंत**; (से ८, ८३; ११, ६६)।

पल्हत्थ सक [वि+रेचय्] बाहर निकालना। पल्हत्थइ; (हे ४, २६)।

पल्हत्थ देखो **पलोट्ट**=पर्यस्त; "करतलपल्हत्थमुहे" (सूअ २, २, १६; हे ४, २५८)।

पल्हत्थण न [पर्यसन] फेंक देना, प्रक्षेपण; "अभदा भुवण-पल्हत्थणपवणो समुट्ठिदा दुट्ठपवणो" (मोह ६२)।

पल्हत्थरण देखो **पच्चत्थरण**; (से ११, १०८)।

पल्हत्थाविअ वि [विरेचित] बाहर निकलवाया हुआ; (कुमा)।

पल्हत्थिअ देखो **पलोट्ट**=पर्यस्त; (से ७, २०; गाया १, ४६—पत्र २१६; सुपा ७६)।

पल्हत्थिया स्त्री [पर्यस्तिका] आसन-विशेष;—१ दो जानू खड़ा कर पीठ के साथ चादर लपेट कर बैठना; (पव ३८), २ जंघा पर वस्त्र लपेट कर बैठना; ३ जंघा पर पाँव रख कर बैठना; (उत्त १, १६)। °**पट्ट** पुं [°पट्ट] योग-पट्ट; (राज)।

पल्हय } पुं [पह्लव] १ अनार्य देश-विशेष; (कस; कुप्र
पल्हव } ६७)। २ पुंस्त्री. पह्लव देश का निवासी; भग ३, २—पत्र १७०; अंत)। स्त्री—**वी, विया**; (पि ३३०; औप; गाया १, १—पत्र ३७; इक)।

पल्हवि पुंस्त्री [दे. पह्लवि] हाथी की पीठ पर बिछाया जाता एक तरह का कपड़ा ; "पल्हवि हत्थत्थरणं" (पव ८४)।

पल्हविया } देखो **पल्हव**।
पल्हवी }

पल्हाय सक [प्र+ह्लादय्] आनन्दित करना, खुश करना। पल्हायइ; (संबोध १२)। वकृ—**पल्हायंत**; (उव; सुर ३, १२१)। कृ—देखो **पल्हायणिज्ज**।

पल्हाय पुं [प्रह्लाद] १ आनन्द, खुशी; (कुमा)। २ हिरण्यकशिपु-नामक दैत्य का पुत्र; (हे २, ७६)। ३ आठवाँ प्रतिवासुदेव राजा; (पउम ५, १५६)। ४ एक विद्याधर नरेश; (पउम १५, ५)।

पल्हायण न [प्रह्लादन] १ चित्त-प्रसन्नता, खुशी; (उत्त २६, १७)। २ वि. आनन्द-दायक; (सुपा ५०७)। ३ पुं. रावण का एक सुभट; (पउम ५६, ३६)।

पल्हायणिज्ज वि [प्रह्लादनीय] आनन्द-जनक; (गाया १, १—पत्र १३)।

पल्हीय पुं. व. [प्रह्लीक] देश-विशेष; (पउम ६८, ६६)।

पव अक [प्लु] १ फरकना। २ सक. उछल कर जाना। ३ तैरना। पवेज्ज; (सूअ १, १, २, ८)। वकृ—**पवंत, पवमाण**; (से ५, ३७; आचा २, ३, २, ४)। हेकृ—**पविउं**; (सूअ १, १, ४, २)।

पव पुं [प्लव] १ पूर; (कुमा)। २ उच्छलन, कूदना; ३ तरण, तैरना; ४ भेक, मेंढक; ५ वानर, बन्दर; ६ चाण्डाल, डोम; ७ जल-काक; ८ पाकुड़ का पेड़; ६ कारण्डव पक्षी; १० शब्द, आवाज; ११ रिपु, दुश्मन; १२ मेष, मेंढा; १३ जल-कुक्कुट; १४ जल, पानी; १५ जलचर पक्षी; १६ नौका, नाव; (हे २, १०६)।

पवंग पुं [प्लवङ्ग] १ बानर; (से २, ४६; ४, ४७)। २ बानर-वंशीय मनुष्य। °**नाह** पुं [°नाथ] बानर-वंशीय राजा, बाली; (पउम ६, २६)। °**वइ** पुं [°पति] बानर-राज; (पि ३७६)।

पवंगम पुं [प्लवंगम] १ बानर; (पाअ; से ६, १६)। छन्द-विशेष; (पिंग)।

पवंच पुं [प्रपञ्च] १ विस्तार; (उप ५३० टी; औप)। २ संसार; (सूअ १, ७; उव)। ३ प्रतारण, ठगाई; (उव)।

पवंचण न [प्रपञ्चन] विप्रतारण, वञ्चना, ठगाई; (पराह १, १—पत्र १४)।

पवंचा स्त्री [प्रपञ्चा] मनुष्य की दश दशाओं में सातवीं दशा—६० से ७० वर्ष की अवस्था; (ठा १०; तंदु १६)।

पवंचिअ वि [**प्रपञ्चित**] विस्तारित; (श्रा १४; कुप्र ११८)।

पवंछ सक [**प्र+वाञ्छ्**] वाञ्छना, अभिलाषा करना। वकृ—**पवंछमाण**; (उप पृ १८०)।

पवंत देखो **पव**=प्लु।

पवंपुल पुंन [**दे**] मच्छी पकड़ने का जाल-विशेष; (विपा १, ८—पत्र ८५)।

पवक वि [**प्लवक**] १ उछल-कूद करने वाला; २ तैरने वाला; (पगह १, १ टी—पत्र २)। ३ पुं. पक्षी; ४ देव-जाति विशेष, सुपर्णकुमार-नामक देव-जाति; (पगह २, ४—पत्र १३०)।

पवक्खमाण देखो **पवय**=प्र+वच्।

पवग देखो **पवक**; (पगह २, ४; कप्प; औप)।

पवज्ज सक [**प्र+पद्**] स्वीकार करना। पवज्जइ, पवज्जिज्जा; (भवि; हित १०)। भवि—पवज्जिहिसि; (गा ६६१)। वकृ—**पवज्जंत**; (श्रा २७)। संकृ—**पवज्जिय**; (मोह १०)। कृ—**पवज्जियव्व**; (पंचा १६)।

पवज्जण न [**प्रपदन**] स्वीकार, अंगीकार; (स २७१; पंचा १४, ८; श्रावक १११)।

पवज्जा देखो **पव्वज्जा**; (महानि ४)।

पवज्जिय वि [**प्रपन्न**] स्वीकृत, अंगीकृत; (धर्मवि ५३; कुप्र २६५; सुपा ४०७)।

पवज्जिय वि [**प्रवादित**] जो बजने लगा हो; (स ७५६)।

पवज्जिय देखो **पवज्ज**।

पवट्ट अक [**प्र+वृत्**] प्रवृत्ति करना। पवट्टइ; (महा)।

पवट्ट वि [**प्रवृत्त**] जिसने प्रवृत्ति की हो वह; (षड्; हे २, २६ टि)।

पवट्टय वि [**प्रवर्तक**] प्रवृत्ति कराने वाला; (राज)।

पवट्टि स्त्री [**प्रवृत्ति**] प्रवर्तन; (हम्मीर १५)।

पवट्टिअ वि [**प्रवर्तित**] प्रवृत्त किया हुआ; (भवि; दे)।

पवट्ठ देखो **पउट्ठ**=प्रकोष्ठ; (हे १, १५६)।

पवड अक [**प्र+पत्**] पड़ना, गिरना। पवडइ, पवडिज्ज, पवडेज्ज; (भग; कप्प; आचा २, २, ३, ३)। वकृ—**पवडंत, पवडेमाण**; (णाया १, १; सिरि ६८६; आचा २, २, ३, ३)।

पवडण न [**प्रपतन**] अधःपात; (बृह ६)।

पवडणया } स्त्री [**प्रपतना**] ऊपर देखो; (ठा ४, ४—
पवडणा } पत्र २८०; राज)।

पवडेमाण देखो **पवड**।

पवड्ड अक [**दे**] पाढ़ना, सोना। "जाव राया पवड्डइ ताव कहेहि किंचि अक्खाणयं" (सुख ६, १)।

पवड्ड अक [**प्र+वृध्**] बढ़ना। पवड्डइ; (उव)। वकृ—**पवड्डमाण**; (कप्प; सुर १, १८१; श्रु १२४)।

पवड्ड वि [**प्रवृद्ध**] बढ़ा हुआ; (अज्झ ७०)।

पवड्डण न [**प्रवर्धन**] १ बढ़ाव, प्रवृद्धि; (संबोध ११)। २ वि. बढ़ाने वाला; "संसारस्स पवड्डणं" (सूअ १, १, २, २४)।

पवड्डिय वि [**प्रवर्धित**] बढ़ाया हुआ; (भवि)।

पवण वि [**प्रवण**] १ तत्पर; (कुप्र १३४)। २ तंदुरस्त, सुस्थ; "पडियग्गिओ तह, पवणो पुव्वं व जहा स संजाओ" (उप ५६७ टी; कुप्र ४१८)।

पवण न [**प्लवन**] १ उछल कर गमन; (जीव ३)। २ तरण; "तरिउकामस्स पवहणं(? वण)किच्चं" (णाया १, १४—पत्र १९१)। °**किच्च** पुं [°**कृत्य**] नौका, नाव, डोंगी; (णाया १, १४)।

पवण पुं [**पवन**] १ पवन, वायु; (पाअ; प्रासू १०२)। २ देव-जाति विशेष, भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति, पवनकुमार; (औप; पगह १, ४)। ३ हनुमान का पिता; (से १, ४८)। °**गइ** पुं [°**गति**] हनूमान का पिता; (पउम १५, ३७), वानरद्वीप के राजा मन्दर का पुत्र; (पउम ६, ६८)। °**चंड** पुं [°**चण्ड**] व्यक्ति-वाचक नाम; (महा)। °**तणअ** पुं [°**तनय**] हनूमान; (से १, ४८)। °**नंदण** पुं [°**नन्दन**] हनूमान; (पउम १६, २७; सम्मत्त १२३)। °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] हनूमान; (पउम ५२, १८)। °**वेग** पुं [°**वेग**] १ हनूमान का पिता; (पउम १५, ६५)। २ एक जैन मुनि; (पउम २०, १६०)। °**सुअ** पुं [°**सुत**] हनूमान; (पउम ४६, १३; से ४, १३; ७, ४६)। °**णंद** पुं [°**नन्द**] हनूमान्; (पउम ५२, १)।

पवणंजअ पुं [**पवनञ्जय**] १ हनूमान का पिता; (पउम १५, ६)। २ एक श्रेष्ठि-पुत्र; (कुप्र ३७७)।

पवणिय वि [**प्रवणित**] सुस्थ किया हुआ, तंदुरस्त किया हुआ; (उप ७६८ टी)।

पवण्ण देखो **पवन्न**; (सण)।

पवत्त देखो **पवट्ट**=प्र+वृत्। पवत्तइ, पवत्तए; (पव २४७; उव)।

पवत्त सक [प्र+वर्तय्] प्रवृत्त करना। पवत्तेइ, पवत्तेहि; (वव १; कप्प)।

पवत्त देखो **पवट्ट**=प्रवृत्त; (पउम ३२, ७०; स ३७६; गभा)।

पवत्तग वि [प्रवर्तक] प्रवृत्ति कराने वाला; (उप ३३६ टी; धर्मवि १३२)।

पवत्तण न [प्रवर्तन] १ प्रवृत्ति; (हे २, ३०; उत्त ३१, २)। २ वि. प्रवृत्ति कराने वाला; (उत्त ३१, ३; पण्ह १, ५)।

पवत्तय वि [प्रवर्तक] १ प्रवृत्ति करने वाला; (हे २, ३०)। वि. प्रवृत्त कराने वाला; "तित्थवरप्पवत्तयं" (अजि १८; गच्छ १, १०)।

पवत्ति स्त्री [प्रवृत्ति] प्रवर्तन। °**वाउय** वि [°व्यापृत] प्रवृत्ति में लगा हुआ; (औप)।

पवत्ति वि [प्रवर्तिन्] प्रवृत्ति कराने वाला; (ठा ३, ३; कस; कप्प)।

पवत्तिणी स्त्री [प्रवर्तिनी] साध्वीओं की अध्यक्षा, मुख्य जैन साध्वी; (सुर १, ४१; महा)।

पवत्तिय देखो **पवट्टिअ**; (काल)।

पवत्तिया स्त्री [दे] संन्यासी का एक उपकरण; (कुप्र ३७२)।

पवद देखो **पवय**=प्र+वद्। वकृ. **पवदमाण**; (आचा)।

पवदि स्त्री [प्रवृति] ढकना, आच्छादन; (संचि ६)।

पवद्ध देखो **पवड्ढ**=प्र+वृध्। वकृ— **पवद्धमाण**; (चेइय ६१६)।

पवद्ध पुं [दे] घन, हथौड़ा; (दे ६, ११)।

पवद्धिय देखो **पवड्ढिय**; (महा)।

पवन्न वि [प्रपन्न] १ स्वीकृत, अंगीकृत; (चेइय ११२; प्रासु २१)। २ प्राप्त; "गुरुयणागुरुविणयपवन्नमाणसो" (महा)।

पवमाण देखो **पव**=प्लु।

पवमाण पुं [पवमान] पवन, वायु; (कुप्र ४४४; सुपा ८६)।

पवय सक [प्र+वद्] १ बकवाद करना। २ वाद-विवाद करना। वकृ —**पवयमाण**; (आचा १, ५, १, ३; आचा)।

पवय सक [प्र+वच्] बोलना, कहना। भवि—कवकृ— **पवक्खमाण**; (धर्मसं ६१)। कर्म—पवुच्चइ, पवुच्चई, पवुच्चति; (कप्प; पि ५४४; भग)।

पवय देखो **पवक**=प्लवक; (उप पृ २१०)।

पवय पुं [प्लवग] वानर, कपि; (पउम ६५, ५०; हे ४, २२०; पाअ; से २, ३७; १५, १७)। °**वइ** पुं [°पति] वानरों का राजा, सुग्रीव; (से २, ३६)। °**ाहिव** पुं [°ाधिप] वही पर्वोक्त अर्थ; (से २, ४०; १२, ७०)।

पवयण पुं [प्राजन] कोड़ा, चाबुक; (दे २, ६७)।

पवयण न [प्रवचन] १ जिनदेव-प्रणीत सिद्धान्त, जैन शास्त्र; (भग २०, ८; प्रासु १८१)। २ जैन संघ; "गुणसमुदाओ संघो पवयण तित्थं ति होइ एगट्ठा" (पंचा ८, ३६; विसे १११२; उप ४२३ टी; औप)। ३ आगम-ज्ञान; (विसे १११२)। °**माया** स्त्री [°माता] पाँच समिति और तीन गुप्ति रूप धर्म; (सम १३)।

पवर वि [प्रवर] श्रेष्ठ, उत्तम; (उवा; सुपा ३१६; ३४१; प्रासु १२६; १५४)।

पवरंग न [दे. प्रवराङ्ग] सिर, मस्तक; (दे ६, २८)।

पवरा स्त्री [प्रवरा] भगवान् वासुपूज्य की शासन-देवी; (पव २७)।

पवरिस सक [+वृष्] बरसना, वृष्टि करना। पवरिसइ; (भवि)।

पवल देखो **पबल**; (कप्पू ; कुप्र २४७)।

पवस अक [प्र+वस्] प्रयाण करना, विदेश जाना। वकृ—**पवसंत**; (से १, २४; गा ६४)।

पवसण न [प्रवसन] प्रवास, विदेश-यात्रा, मुसाफिरी; (स १६६; उप १०३१ टी)।

पवसिअ वि [प्रोषित] प्रवास में गया हुआ; (गा ४५; ८४०; सुर ५, २११; सुपा ४७३)।

पवह अक [प्र+वह्] १ बहना। २ सक. टपकना, झरना। पवहइ; (भवि; पिंग)। वकृ—**पवहंत**; (सुर २, ७५)। संकृ— **पवहित्ता**; (सम ८४)।

पवह सक [प्र+हन्] मार डालना। वकृ—"पिच्छउ **पवहंतं** मज्झ करयलं कलियकरवालं" (सुपा ५७२)।

पवह वि [प्रवह] १ बहने वाला; २ टपकने वाला, चूने वाला; "अह सालीओ अब्भंतरप्पवहाओ" (विपा १, १— पत्र १६)।

पवह पुं [प्रवाह] १ स्रोत, बहाव, जल-धारा; (गा ३६६; ५४१; कुमा)। २ प्रवृत्ति; ३ व्यवहार; ४ उत्तम अश्व; (हे १, ६८)। ५ प्रभाव; (राज)।

पवहण पुंन [प्रवहण] १ नौका, जहाज; (णाया १, ३; पि ३५७)। २ गाड़ी आदि वाहन; "जुग्गगया गिल्लिगया थिल्लिगया पवहणगया" (औप; वसु; चारु ७०)।

पवहाइअ वि [दे] प्रवृत्त; (दे ६, ३४)।
पवहाविय वि [**प्रवाहित**] बहाया हुआ; (भवि)।
पवा स्त्री [**प्रपा**] जलदान-स्थान, पानी-शाला, प्याऊ; (औप; पण्ह १, ३; महा)।
पवाइ वि [**प्रवादिन्**] १ वाद करने वाला, वादी; २ दार्शनिक; (सूअ १, १, १; चउ ४७)।
पवाइअ वि [**प्रवात**] बहा हुआ (वायु); "पवाइया कलंबवाया" (स ६८६; पउम ५७, २७; गाया १, ८; स ३६)।
पवाइअ वि [**प्रवादित**] बजाया हुआ; (कप्प; औप)।
पवाण (अप) देखो **पमाण**=प्रमाण; (कुमा; पि २५१; भवि)।
पवाड सक [**प्र+पातय्**] गिराना। वकृ—**पवाडेमाण**; (भग १७, १—पत्र ७२०)।
पवादि देखो **पवाइ**; (धर्मसं १३३)।
पवाय अक [**प्र+वा**] १ सुख पाना। २ बहना (हवा का)। ३ सक. गमन करना। ४ हिंसा करना। पवाअइ; (प्राकृ ७६)। वकृ—**पवायंत**; (आचा)।
पवाय पुं [**प्रवाद**] १ किंवदन्ती, जन-श्रुति; (सुपा ३००; उप पृ २६)। २ परंपरा-प्राप्त उपदेश; ३ मत, दर्शन; "पवाएण पवायं जाणेज्जा" (आचा)।
पवाय पुं [**प्रपात**] १ गर्त, गढ़ा; (गाया १, १४—पत्र १६१; दे १, २२)। २ ऊँचे स्थान से गिरता जल-समूह; (सम ८४)। ३ तट-रहित निराधार पर्वत-स्थान; ४ गत में पड़ने वाली धाड़; (राज)। ५ पतन; (ठा २, ३)। °**द्दह** पुं [°**द्रह**] वह कुण्ड, जहां पर्वत पर से नदी गिरती हो; (ठा २, ३—पत्र ७३)।
पवाय पुं [**प्रवात**] १ प्रकृष्ट पवन ; (पण्ह २, ३)। २ वि. बहा हुआ (पवन); (संचि ७)। ३ पवन-रहित; (बृह १)।
पवायग वि [**प्रवाचक**] पाठक, अध्यापक; (विसे १०६२)।
पवायण न [**प्रवाचन**] प्रपठन, अध्ययन; (सम्मत्त ११७)।
पवायणा स्त्री [**प्रवाचना**] ऊपर देखो; (विसे २८३५)।
पवायय देखो **पवायग**; (विसे १०६२)।
पवाल पुंन [**प्रवाल**] १ नवांकुर, किसलय; (पाअ ३४१; गाया १, १; सुपा १२६)। २ मूँगा, विद्रुम; (पाअ; कप्प)। °**मंत**, °**वंत** वि [°**वत्**] प्रवाल वाला; (गाया १, १; औप)।
पवालिअ वि [**प्रपालित**] जो पालने लगा हो वह; (उप ७२८ टी)।
पवास पुं [**प्रवास**] विदेश-गमन, परदेश-यात्रा; (सुपा ६५७; हेका ३७; सिरि ३५६)।
पवासि } वि [**प्रवासिन्**] मुसाफिर; (गा ६८; षड्;
पवासु } पि ११८; हे ४, ३६५)।
पवाह सक [**प्र+वाहय्**] बहाना, चलाना। पवाहइ; (भवि)। भवि—पवाहेहिति; (विसे २४६ टी)।
पवाह देखो **पवह**=प्रवाह; (हे १, ६८; ८२; कुमा; गाया १, १४)।
पवाह पुं [**प्रबाध**] प्रकृष्ट पीड़ा; (विपा १, ६—पत्र ६०)।
पवाहण न [**प्रवाहन**] १ जल, पानी; (आवम)। २ बहाना, बहन कराना; (चेइय ५२३)।
पवि पुं [**पवि**] वज्र, इन्द्र का अस्त्र-विशेष; (उप २११ टी; सुपा ४६७; कुमा; धर्मवि ८०)।
पविअंभिअ वि [**प्रविजृम्भित**] प्रोल्लसित, समुत्पन्न; (गा ५३६ अ)।
पविआ स्त्री [दे] पक्षी का पान-पात्र; (दे ६, ४; ८, ३२; पाअ)।
पविइण्ण वि [**प्रवितीर्ण**] दिया हुआ; (औप)।
पविइण्ण } वि [**प्रविकीर्ण**] १ व्याप्त; (औप; गाया
पविइन्न } १, १ टी—पत्र ३)। २ विक्षिप्त, निरस्त; (गाया १, १)।
पविकत्थ सक [**प्रवि + कत्थ्**] आत्म-श्लाघा करना। पविकत्थई; (सम ५१)।
पविकसिय वि [**प्रविकसित**] प्रकर्ष से विकसित; (राज)।
पविकिर सक [**प्रवि + कॄ**] फेंकना। वकृ—**पविकिरमाण**; (ठा ८)।
पविक्खिअ वि [**प्रवीक्षित**] निरीक्षित, अवलोकित; (स ७४६)।
पविक्खिर देखो **पविकिर**। "नाविभजणे य भंडं पविक्खिरंते समुद्दम्मि" (सुर १३, २०६)।
पविग्ग वि [दे] विस्मृत; (षड्)।
पविचरिय वि [**प्रविचरित**] गमन-द्वारा सर्वत्र व्याप्त;(राय)।
पविज्जल वि [**प्रविज्वल**] १ प्रज्वलित; (सूअ १, ५, २, ५)। २ रुधिरादि से पिच्छिल—व्याप्त; (सूअ १, ५, २, १६; २१)।
पविट्ठ वि [**प्रविष्ट**] घुसा हुआ; (उवा; सुर ३, १३६)।
पविणी सक [**प्रवि + णी**] दूर करना। पविणेति; (भग)।
पवित्त पुं [**पवित्र**] १ दर्भ, तृण-विशेष; (दे ६, १४)।

२ वि. निर्दोष, निष्कलङ्क, शुद्ध, स्वच्छ; (कुमा; भग; उत्त ४५)।

पवित्त देखो **पवट्ट**=प्रवृत्त; (से ६, ५७)।

पवित्त सक [**पवित्रय्**] पवित्र करना। वकृ—**पवित्तयंत**; (सुपा ८५)। कृ—**पवित्तियव्व**; (सुपा ५८४)।

पवित्तय न [**पवित्रक**] अंगूठी, अंगुलीयक; (णाया १, ५; औप)।

पवित्ताविय वि [**प्रवर्तित**] प्रवृत्त किया हुआ; (भवि)।

पवित्ति देखो **पवत्ति**=प्रवृत्ति; (सुपा २; ओघ ६३; औप)।

पवित्तिणी देखो **पवत्तिणी**; (कस)।

पवित्थर अक [**प्रवि + स्तृ**] फैलाना। वकृ—**पवित्थरमाण**; (पव २५५)।

पवित्थर पुं [**प्रविस्तार**] विस्तार; (उवा; सुअ २, २, ६२)।

पवित्थरिअ वि [**प्रविस्तृत**] विस्तीर्ण; (स ७५२)।

पवित्थरिल्ल वि [**प्रविस्तरिन्**] विस्तार वाला; (राज—पण्ह १, ५)। देखो **पविरल्लिय**।

पवित्थारि वि [**प्रविस्तारिन्**] फैलने वाला; (गउड)।

पविद्ध देखो **पव्विद्ध**; (पव २)।

पविद्धत्थ वि [**प्रविध्वस्त**] विनष्ट; (जीव ३)।

पविभत्ति स्त्री [**प्रविभक्ति**] पृथग् २ विभाग; (उत्त २, १)।

पविभाग पुं [**प्रविभाग**] ऊपर देखो; (विसे १६४२)।

पविमुक्क वि [**प्रविमुक्त**] परित्यक्त; (सुर ३, १३६)।

पविमोयण न [**प्रविमोचन**] परित्याग; (औप)।

पविय वि [**प्राप्त**] प्राप्त; "भुवि उवहासं पविया दुक्खाइं हुंति ते थिलया" (आरा ४४)।

पवियंभिर वि [**प्रविजृम्भितृ**] १ उल्लसित होने वाला; २ उत्पन्न होने वाला; (सण)।

पवियक्किय न [**प्रवितर्कित**] विकल्प, वितर्क; (उत्त २३, १४)।

पवियक्खण वि [**प्रविचक्षण**] विशेष प्रवीण; (उत्त ६, ६३)।

पवियार पुं [**प्रवीचार**] १ काया और वचन की चेष्टा-विशेष; (उप ६०२)। २ काम-क्रीडा, मैथुन; (देवेन्द्र ३४७; पव २६६)।

पवियारण न [**प्रविचारण**] संचार; "वाउपवियारणट्ठा छब्भायं ऊणयं कुज्जा" (पिंड ६५०)।

पवियारणा स्त्री [**प्रविचारणा**] काम-क्रीडा, मैथुन; (देवेन्द्र ३४७)।

पवियास सक [**प्रवि+काशय्**] फाड़ना, खोलना; "पवियासइ नियवयणं" (धर्मवि १२४)।

पवियासिय वि [**प्रविकासित**] विकसित किया हुआ; "पवियासियकमलवणं खणं निहालेइ दिणनाहं" (सुपा ३४)।

पविरइअ वि [**दे**] त्वरित, शीघ्रता-युक्त; (दे ६, २८)।

पविरंज सक [**भञ्ज्**] भाँगना, तोड़ना। पविरंजइ; (हे ४, १०६)।

पविरंजव वि [**दे**] स्निग्ध, स्नेह-युक्त; (षड्)।

पविरंजिअ वि [**भग्न**] भाँगा हुआ; (कुमा; दे ६, ७४)।

पविरंजिअ वि [**दे**] १ स्निग्ध, स्नेह-युक्त; २ कृत-निषेध, निवारित; (दे ६, ७४)।

पविरल वि [**प्रविरल**] १ अ-निबिड; २ विच्छिन्न; (गउड)। ३ अत्यन्त थोड़ा, बहुत ही कम; "परकज्जकरणरसिया दीसंति महीए पविरलनरिंदा" (सुपा २४०)।

पविरल्लिय वि [**दे**] विस्तार वाला; (पण्ह १, ५—पत्र ६१)। देखो **पवित्थरिल्ल**।

पविरिक्क वि [**प्रविरिक्त**] एकदम शून्य, बिलकुल खाली; (गउड ६८५)।

पविरेल्लिय [**दे**] देखो **पविरल्लिय**; (पण्ह १, ५ टी—पत्र ६२)।

पविलुंप सक [**प्रवि + लुप्**] बिलकुल नष्ट करना। कवकृ—**पविलुप्पमाण**; (महा)।

पविलुत्त वि [**प्रविलुप्त**] बिलकुल नष्ट; (उप ५६७ टी)।

पविलुप्पमाण देखो **पविलुंप**।

पविस सक [**प्र + विश्**] प्रवेश करना, घुसना। पविसइ; (उव; महा)। भवि—पविसिस्सामि, पविसिहिइ; (पि ५२६)। वकृ—**पविसंत, पविसमाण**; (पउम ७६, १६; सुपा ४४८; विपा १, ५; कप्प)। संकृ—**पविसित्ता, पविसित्तु, पविसिअ, पविसिऊण**; (कप्प; महा; अभि ११६; काल)। हेकृ—**पविसित्तए, पवेट्ठुं**; (कस; कप्प; पि ३०३)। कृ—**पविसिअव्व**; (ओघ ६१; सुपा ३८१)।

पविसण न [**प्रवेशन**] प्रवेश, पैठ; (पिंड ३१७)।

पविसु सक [**प्रवि+सू**] उत्पन्न करना। संकृ—**पविसुइत्ता**; (सुअ २, २, ६५)।

पविस्स देखो **पविस**। पविस्सइ; (महा)। वकृ—**पविस्समाण**; (भवि)।
पविहर सक [प्रवि+हृ] विहार करना, विचरना। पविहरंति; (उव)।
पविहस अक [प्रवि+हस्] हसना, हास्य करना। वकृ—**पविहसंत**; (पउम ५६, १७)।
पवीइय वि [प्रवीजित] हवा के लिए चलाया हुआ; (औप)।
पवीण वि [प्रवीण] निपुण, दक्ष; (उप ९८६ टी)।
पवीणी देखो **पविणी**। पवीणेइ; (औप)।
पवील सक [प्र+पीडय्] पीड़ना, दमन करना। पवीलए; (आचा १, ४, ४, १)।
पवुच्च° देखो **पवय**=प्र+वच्।
पवुट्ठ वि [प्रवृष्ट] १ खूब बरसा हुआ, जिसने प्रभूत वृष्टि की हो वह; (आचा २, ४, १, १३)। २ न. प्रभूत वृष्टि, वर्षण; "काले पवुट्ठं विअ अहिणंदिद देवस्स सासणं" (अभि २२०)।
पवुड्ढ वि [प्रवृद्ध] बढ़ा हुआ, विशेष वृद्ध; (दे १, ६)।
पवुड्ढि स्त्री [प्रवृद्धि] बढ़ाव; (पंच ५, ३३)।
पवुत्त वि [प्रोक्त] १ जो कहने लगा हो, जिसने बोलना आरम्भ किया हो वह; (पउम २७, १६; ६४, २१)। २ उक्त, कथित; (धर्मवि ८२)।
पवुत्थ [दे] देखो **पउत्थ**; "वुड्ढयं पुत्तं घेत्तुं गामे पवुत्था" (आक २३; २५)।
पवुद वि [प्रवृत] प्रकर्ष से आच्छादित; (प्राकृ १२)।
पवूढ वि [प्रव्यूढ] १ धारण किया हुआ; (स ५११)। २ निर्गत; (राज)।
पवेइय वि [प्रवेदित] १ निवेदित, प्रतिपादित; "तमेव सच्चं नीसंकं जं जिणेहिं पवेइयं" (उप ३७४ टी; भग)। २ विज्ञात, विदित; (राज)। ३ भेंट किया हुआ; (उत्त १३, १३; सुख १३, १३)।
पवेइय वि [प्रवेपित] कम्पित; (पउम ५, ७८)।
पवेज्ज सक [प्र+वेदय्] १ विदित करना। २ भेंट करना। ३ अनुभव करना। पवेज्जए; (सूअ १, ८, २४)।
पवेढिय वि [प्रवेष्टित] वेढ़ा हुआ; (सुर १२, १०४)।
पवेय देखो **पवेज्ज**। पवेयंति; (आचा १, ६, २, १२)। हेकृ—**पवेइत्तए**; (कस)।
पवेयण न [प्रवेदन] १ प्ररूपण, प्रतिपादन; २ ज्ञान, निर्णय; ३ अनुभावन; (राज)।
पवेविय वि [प्रवेपित] प्रकम्पित; (गाया १, १—पत्र ४७; उत्त २२, ३६)।
पवेविर वि [प्रवेपितृ] काँपने वाला; (पउम ८०, ६४)।
पवेस सक [प्र+वेशय्] घुसाना। पवेसेइ; (महा)। पवेसआमि; (पि ४९०)।
पवेस पुं [प्रवेश] १ पैठ, घुसना; (कुमा; गउड; प्रासू २२)। २ नाटक का एक हिस्सा; (कप्पू)।
पवेस पुं [प्रद्वेष] अधिक द्वेष; (भवि)।
पवेसण, **पवेसणग**, **पवेसणय** पुंन [प्रवेशन, °क] १ प्रवेश, पैठ; (पण्ह १, १; प्रासू ३८; द्रव्य ३२)। २ विजातीय जन्मान्तर में उत्पत्ति, विजातीय योनि में प्रवेश; (भग ६, ३२)।
पवेसि वि [प्रवेशिन्] प्रवेश करने वाला; (औप)।
पवेसिय वि [प्रवेशित] घुसाया हुआ; (सण)।
पवोत्त पुं [प्रपौत्र] पौत्र का पुत्र; (आक ८)।
पव्व पुंन [पर्वन्] १ ग्रन्थि, गाँठ; (ओघ ४८६; जी १२; सुपा ५०७)। २ उत्सव, त्यौहार; (सुपा ५०७; श्रा २८)। ३ पूर्णिमा और अमावास्या तिथि; ४ पूर्णिमा और अमावास्या वाला पक्ष; (ठा ६—पत्र ३७०; सुज्ज १०)। ५ अष्टमी, चतुर्दशी, पूर्णिमा और अमावास्या का दिन;
"अट्ठमी चउद्दसी पुण्णिमा य तहमावसा हवइ पव्वं।
मासम्मि पव्वछक्कं तिन्नि य पव्वाइं पक्खम्मि" (धर्म २)।
६ मेखला, गिरिमेखला; ७ दंष्ट्रा-पर्वत; (सूअ १, ६, १२)। ८ संख्या-विशेष; (इक)। °**बीय** पुं [°**बीज**] इक्षु-आदि वृक्ष, जिसका पर्व—ग्रन्थि—ही उत्पत्ति का कारण होता है; (राज)। **राहु** पुं [°**राहु**] ग्रह-विशेष, जो पूर्णिमा और अमावास्या में क्रमशः चन्द्र और सूर्य का ग्रहण करता है; (सुज्ज १६)।
पव्वइ न [पर्वतिन्] १ गोत्र-विशेष, काश्यप गोत्र की एक शाखा; २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न; (राज)। देखो **पव्वपेच्छइ**।
पव्वइ देखो **पव्वई**; (गा ४५५)।
पव्वइअ वि [प्रव्रजित] १ दीक्षित, संन्यस्त; (औप; दसनि २—गाथा १६४)। २ गत, प्राप्त; "अगाराओ अणगारियं पव्वइया" (औप; सम; कप्प)। ३ न. दीक्षा, संन्यास; (वव १)।
पव्वइंद पुं [पर्वतेन्द्र] मेरु पर्वत, (सुज्ज ५ टी)।

पव्वइग देखो **पव्वइअ**; (उप पृ ३३५)। स्त्री—°**गा**; (उप पृ ५४)।

पव्वइसेल्ल न [**दे**] बाल-मय कंडक —तावीज; (दे ६, ३१)।

पव्वई स्त्री [**पार्वती**] गौरी, शिव-पत्नी; (पाअ)।

पव्वंग पुंन [**पर्वाङ्ग**] संख्या-विशेष; (इक)।

पव्वक } पुंन [**पर्वक**] १ वाद्य-विशेष; (पराह २, ५—पत्र **पव्वग** } १४६)। २ ईख जैसी ग्रन्थि वाली वनस्पति; (पराण १)। ३ तृण-विशेष; (निचू १)।

पव्वज्ज पुं [**दे**] १ नख; २ शर, बाण; ३ बाल-मृग; (दे ६, ६६)।

पव्वज्जा स्त्री [**प्रव्रज्या**] १ गमन, गति; २ दीक्षा, संन्यास; (ठा ३, २; ४, ४; प्रासू १६७)।

पव्वणी स्त्री [**पर्वणी**] कार्तिकी आदि पर्व-तिथि; (गाथा १, १—पत्र ५३)।

पव्वपेच्छइ न [**पर्वप्रेक्षकिन्**] देखो **पव्वइ**; (ठा ७—पत्र ३६०)।

पव्वय सक [**प्र+व्रज्**] १ जाना, गति करना। २ दीक्षा लेना, संन्यास लेना। पव्वयइ; (महा)। भवि— पव्वइस्सामो, **पव्वइहिति**; (औप)। वकृ—**पव्वयंत, पव्वयमाण**; (सुर १, १२३; ठा ३, १)। हेकृ—**पव्वइत्तए, पव्वइउं**; (औप; भग; सुपा २०६)।

पव्वय देखो **पव्वग**; (पराण १—पत्र ३३)।

पव्वय देखो **पव्वइअ**; "अगारमावसंतावि अरगणा वावि पव्वया" (सुअ १, १, १, १६)।

पव्वय } पुंन [**पर्वत, °क**] १ गिरि, पहाड़; (ठा ३, ४; **पव्वयय** } प्रासू १५४; उवा), "पव्वयाणि वणाणि य" (दस ७, २६; ३०)। २ पुं. द्वितीय वासुदेव का पूर्व-भवीय नाम; (सम १५३; पउम २०, १७१)। ३ एक ब्राह्मण-पुत्र का नाम; (पउम ११, ९)। ४ एक राजा; (भवि)। ५ एक राज-कुमार; (उप ९३७)। °**राय** पुं [°**राज**] मेरु पर्वत; (सुज्ज ५)। °**विदुग्ग** पुन [°**विदुर्ग**] पर्वतीय देश, पहाड़ वाला प्रदेश; (भग)।

पव्वह सक [**प्र+व्यथ्**] पीड़ना, दुःख देना। पव्वहेज्जा; (सुअ १, १, ४, ६)। कवकृ—**पव्वहिज्जमाण**; (गाथा १, १६—पत्र १९९)।

पव्वहणा स्त्री [**प्रव्यथना**] व्यथा, पीडा; (औप)।

पव्वहिय वि [**प्रव्यथित**] अति दुःखित; (आचा १, २, ६, १)।

पव्वा स्त्री [**पर्वा**] लोकपालों की एक बाह्य परिषद्; (ठा ३, २—पत्र १२७)।

पव्वाअंत देखो **पव्वाय**=म्लै।

पव्वाइअ वि [**प्रव्राजित**] १ जिसको दीक्षा दी गई हो वह; (सुपा ५६६)। २ न. दीक्षा देना; (राज)।

पव्वाइअ वि [**म्लान**] विच्छाय, शुष्क; (कुमा ६, १२)।

पव्वाइआ स्त्री [**प्रव्राजिका**] परिव्राजिका, संन्यासिनी; (महा)।

पव्वाडिअ देखो **पव्वालिअ**=प्लावित; (से ५, ४१)।

पव्वाण वि [**म्लान**] शुष्क, सूखा; (ओघ ४८८)।

पव्वाय देखो **पवाय**=प्र+वा। पव्वाअइ; (प्राकृ ७६)।

पव्वाय सक [**प्र+व्राजय्**] दीक्षित करना; (सुपा ५६६)।

पव्वाय अक [**म्लै**] सूखना। पव्वायइ; (हे ४, १८)। वकृ—**पव्वाअंत**; (से ७, ६७)।

पव्वाय वि [**म्लान, प्रवाण**] शुष्क, सूखा हुआ; (पाअ; ओघ ३६३; स २०३; से ३, ४८; ९, ६३; पिंड ४४)।

पव्वाय पुं [**प्रवात**] प्रकृष्ट पवन; (गा ६२३)।

पव्वाल सक [**छादय्**] ढकना, आच्छादन करना। पव्वालइ; (हे ४, २१)।

पव्वाल सक [**प्लावय्**] खूब भिजाना, तरबोर करना। पव्वालइ; (हे ४, ४१)।

पव्वालण न [**प्लावन**] तरबोर करना; (से ६, १५)।

पव्वालिअ वि [**प्लावित**] जल-व्याप्त, तरबोर किया हुआ; (पाअ; कुमा; से ९, १०)।

पव्वालिअ वि [**छादित**] ढका हुआ; (कुमा)।

पव्वाव सक [**प्र+व्राजय्**] दीक्षित करना, संन्यास देना। पव्वावेइ; (भग)। संकृ **पव्वावेऊण**; (पंचव २)। हेकृ—**पव्वावित्तए, पव्वावेत्तए, पव्वावेउं**; (ठा २, १; कस; पंचभा)।

पव्वावण न [**प्रव्राजन**] दीक्षा देना; (उव; ओघ ४४२ टी)।

पव्वावण न [**दे**] प्रयोजन; (पिंड ५१)।

पव्वावणा स्त्री [**प्रव्राजना**] दीक्षा देना; (ओघ ४४३; पव २५; सुअनि १२७)।

पव्वाविय वि [**प्रव्राजित**] दीक्षित, साधु बनाया हुआ; (गाथा १, १—पत्र ६०)।

पव्वाह सक [**प्र+वाहय्**] बहाना, प्रवाह में डालना। वकृ—**पव्वाहमाण**; (भग ५, ४)।

पव्विद्ध वि [**दे**] प्रेरित; (दे ६, ११)।

पव्विद्ध वि [**प्रवृद्ध**] महान्, बड़ा; (से १४, ५१)।
पव्विद्ध न [**प्रविद्ध**] गुरु-वन्दन का एक दोष, वन्दन को बिना ही समाप्त किये भागना; (पव २)।
पव्वीसग न [**दे. पव्वीसग**] वाद्य-विशेष; (पण्ह १, ४ — पत्र ६८)।
पसइ स्त्री [**प्रसृति**] १ नाप-विशेष, दो असृति का एक परिमाण; (तंदु २६)। २ पूर्ण अञ्जलि, दो हस्त-तल मिला कर भरी हुई चीज; (कुप्र ३७४)।
पसंग पुंन [**प्रसङ्ग**] १ परिचय, उपलक्ष; (स३०५)। २ संगति, संबन्ध; "लोए पलीवणं पिव पलालपूलप्पसंगेण" (ठा ४, ४; कुप्र २६),
"वरं दिट्ठिविसो सप्पो वरं हालाहलं विसं।
हीणायारागीयत्थवयणपसंगं खु णो भद्द" (संबोध ३६)।
३ आपत्ति, अनिष्ट-प्राप्ति; (स १७४)। ४ मैथुन, काम-क्रीडा; (पण्ह १, ४)। ५ आसक्ति; ६ प्रस्ताव, अधिकार; (गउड; भवि; पंचा ६, २६)।
पसंगि वि [**प्रसङ्गिन्**] प्रसंग करने वाला, आसक्त; "जूयप्पसंगी" (महा; णाया १, २)।
पसंज अक [**प्र+सञ्ज्**] १ आसक्ति करना। २ आपत्ति होना, अनिष्ट-प्राप्ति होना। पसज्जइ; (उव)। "अणिच्चे जीवलोगम्मि किं हिंसाए पसज्जसि" (उत्त १८, ११; १२)। पसज्जेज्जा; (विसे २६६)।
पसंडि न [**दे**] कनक, सुवर्ण; (दे ६, १०)।
पसंत वि [**प्रशान्त**] १ प्रकृष्ट शान्त, शम-प्राप्त; (कप्प; स ४०३; कुमा)। २ साहित्यशास्त्र-प्रसिद्ध रस-विशेष, शान्त रस; (अणु)।
पसंति स्त्री [**प्रशान्ति**] नाश, विनाश; "सव्वदुक्खप्पसंतीणं" (अजि ३)।
पसंधण न [**प्रसन्धान**] सतत प्रवर्तन; (पिंड ४६०)।
पसंस सक [**प्रशंस्**] श्लाघा करना। पसंसइ; (महा; भवि)। वकृ—**पसंसंत, पसंसमाण**; (पउम २८, १५; २२, ६८)। कवकृ—**पसंसिज्जमाण**; (वसु)। संकृ—**पसंसिऊण**; (महा)। कृ—**पसंसणिज्ज, पसस्स, पसंसियव्व**; (सुपा ४७; ६४५; सुर १, २१६; पउम ७५, ८), देखो **पसंस**।
पसंस वि [**प्रशस्य**] १ प्रशंसा-योग्य; २ पुं. लोभ; (सूअ १, २, २, २६)।
पसंसण न [**प्रशंसन**] प्रशंसा, श्लाघा; (उप १४२ टी; सुपा २०६; उप पं १७)।
पसंसय वि [**प्रशंसक**] प्रशंसा करने वाला; (श्रा ६; भवि)।
पसंसा स्त्री [**प्रशंसा**] श्लाघा, स्तुति, वर्णन; (प्रासू १६७; कुमा)।
पसंसिअ वि [**प्रशंसित**] श्लाघित; (उत्त १४, ३८)।
पसज्ज देखो **पसंज**।
पसज्झ } अ [**प्रसह्य**] १ खुले तौर से, प्रकट रीति से;
पसज्झं } (सूअ १, २, २, १६)। २ हठात, बलात्कार से; (स ३१)।
पसढ वि [**प्रशठ**] अत्यन्त शठ; (सूअ २, ४, ३)।
पसढं देखो **पसज्झ**; (दस ५, १, ७२)।
पसढिल वि [**प्रशिथिल**] विशेष ढीला; (हे १, ८६)।
पसण्ण वि [**प्रसन्न**] १ खुश, स्वस्थ; (से ५, ४१; गा ४६५)। २ स्वच्छ, निर्मल; (औप; ओघ ३४५)। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] भगवान् महावीर के समय का एक राजर्षि; (उव; पडि)।
पसण्णा स्त्री [**प्रसन्ना**] मदिरा, दारू; (णाया १, १६; विपा १, २)।
पसत्त वि [**प्रसक्त**] १ चिपका हुआ; (गउड ५१)। २ आसक्त; (गउड ५३१; उव)। ३ आपत्ति-ग्रस्त, अनिष्ट-प्राप्ति के दोष से युक्त; (विसे १८५६)।
पसत्ति स्त्री [**प्रसक्ति**] १ आसक्ति, अभिष्वङ्ग; (उप १३१)। २ आपत्ति-दोष; (अज्झ ११६)।
पसत्थ वि [**प्रशस्त**] १ प्रशंसनीय, श्लाघनीय; २ श्रेष्ठ, अच्छा; (हे २, ४५; कुमा)।
पसत्थि स्त्री [**प्रशस्ति**] वंशोत्कीर्तन, वंश-वर्णन; (गउड; सम्मत्त ८३)।
पसत्थु पुं [**प्रशास्तृ**] १ लेखाचार्य, गणित का अध्यापक; (ठा ३, १)। २ धर्म-शास्त्र का पाठक; (ठा ३, १; औप)। ३ मन्त्री, अमात्य; (सूअ २, १, १३)।
पसन्न देखो **पसण्ण**; (महा; भवि; सुपा ६१४)।
पसन्ना देखो **पसण्णा**; (पाअ; पउम १०२, १२२; सुख २, २६)।
पसप्प पुं [**प्रसर्प**] विस्तार, फैलाव; (द्रव्य १०)।
पसप्पग वि [**प्रसर्पक**] १ प्रकर्ष से जाने वाला, मुसाफिरी करने वाला; २ विस्तार को प्राप्त करने वाला; (ठा ४, ४—पत्र २६४)।

पसम अक [**प्र+शम्**] अच्छी तरह शान्त होना। पसमंति; (प्राक १६)।

पसम पुं [**प्रशम**] १ प्रशान्ति, शान्ति; (कुमा)। २ लगा तार दो उपवास; (संबोध ५८)।

पसम पुं [**प्रश्रम**] विशेष मेहनत—खेद; (आव ४)।

पसमण न [**प्रशमन**] १ प्रकृष्ट शमन; (पिंड ६६३; सुर १, २४६)। २ वि. प्रशान्त करने वाला; (स ६६५)। स्त्री—°णी; (कुमा)।

पसमाविअ वि [**प्रशमित**] प्रशान्त किया हुआ; (स ६२)।

पसमिक्ख सक [**प्रसम्+ईक्ष्**] प्रकर्ष से देखना। संकृ — **पसमिक्ख**; (उत्त १४, ११)।

पसमिण वि [**प्रशमिन्**] प्रशान्त करने वाला, नाश करने वाला; " पावंति, पावपसमिण पासजिण तुह प्पभावेण " (धम्मि १७)।

पसम्म देखो **पसम**=प्र+शम्। पसम्मइ; (गउड)। वकृ— **पसम्मंत**; (से १०, २२; गउड)।

पसय पुं [**दे**] १ मृग-विशेष; (दे ६, ४; पगह १, १; भवि; सण; महा)। २ मृग-शिशु; (विपा १, ४)।

पसय वि [**प्रसृत**] फैला हुआ; " पसयच्छि ! " (वज्जा ११२; १४४)। देखो **पसिअ**=प्रसृत।

पसर अक [**प्र+सृ**] फैलना। पसरइ; (पि ४७७; भवि)। वकृ—**पसरंत**; (सुर १, ८६; भवि)।

पसर पुं [**प्रसर**] विस्तार, फैलाव; (हे ४, १५७; कुमा)।

पसरण न [**प्रसरण**] ऊपर देखो; (कप्पू)।

पसरिअ वि [**प्रसृत**] फैला हुआ, विस्तृत; (औप; गा ४; भवि; गाया १, १)।

पसरेह पुं [**दे**] किंजल्क; (दे ६, १३)।

पसल्लिअ वि [**दे**] प्रेरित; (षड्)।

पसव सक [**प्र+सू**] जन्म देना, उत्पन्न करना। पसवइ; (हे ४, २३३)। पसवंति; (उव)। वकृ—**पसवमाण**; (सुपा ४३४)।

पसव (अप) सक [**प्र+विश्**] प्रवेश करना। पसवइ; (प्राकृ ११९)।

पसव पुं [**प्रसव**] १ जन्म, उत्पत्ति; (कुमा)। २ न. पुष्प, फूल; "कुसुमं पसवं पसूअं च " (पाअ), " पुप्फाणि अ कुसुमाणि अ फुल्लाणि तहेव होंति पसवाणि " (दसनि १, ३६)।

पसव [**दे**] देखो **पसय**। " पसवा हवंति एए " (पउम ११, ७७)। °**नाह** पुं [°**नाथ**] मृगराज, सिंह; (स ६५७)। °**राय** पुं [°**राज**] सिंह; (स ६५७)।

पसवडक्क न [**दे**] विलोकन; (दे ६, ३०)।

पसवण न [**प्रसवन**] प्रसूति, जन्म-दान; (भग; उप ७४४; सुर ६, २४८)।

पसवि वि [**प्रसविन्**] जन्म देने वाला; (नाट—शकु ७४)।

पसविय वि [**प्रसूत**] जो जन्म देने लगा हो, जिसने जन्म दिया हो वह; "सयमेव पसविया हं महाकिलेसेण नरनाह" (सुर १०, २३०; सुपा ३६)। देखो **पसूअ**=प्रसूत।

पसविर वि [**प्रसवितृ**] जन्म देने वाला; (नाट)।

पसस्स देखो **पसंस**।

पसस्स वि [**प्रशस्य**] प्रभूत शस्य वाला; (सुपा ६४५)।

पसाइअ वि [**प्रसादित**] १ प्रसन्न किया हुआ; (स ३८६; ५७६)। २ प्रसन्न होने के कारण दिया हुआ; "अंगविलग्गमसेसं पसाइयं कडयवत्थाइं" (सुर १, १६३)।

पसाइआ स्त्री [**दे**] भिल्ल के सिर पर का पर्ण-पुट, भिल्लों की पगडी; (दे ६, २)।

पसाइयव्व देखो **पसाय**=प्र+सादय्।

पसाम वि [**प्रशाम्**] शान्त होने वाला; (षड्)।

पसाय सक [**प्र+सादय्**] प्रसन्न करना, खुश करना। पसाअंति, पसाएसि; (गा ६१; सिक्खा ६१)। वकृ— **पसाअमाण**; (गा ७४५)। हेकृ —**पसाइउं, पसाएउं**; (महा; गा ५२४)। कृ—**पसाइयव्व**; (सुपा ३६५)।

पसाय पुं [**प्रसाद**] १ प्रसत्ति, प्रसन्नता, खुशी; "जणमणपसायजणणो " (वसु)। २ कृपा, महरबानी; (कुमा)। ३ प्रणय; (गा ७१)।

पसायण न [**प्रसादन**] प्रसन्न करना; "देवपसायणपहाणमणो" (कुप्र ५; सुपा ७; महा)।

पसार सक [**प्र+सारय्**] पसारना, फैलाना। पसारेइ; (महा)। वकृ—**पसारेमाण**; (णाया १, १; आचा)। संकृ—**पसारिअ**; (नाट—मृच्छ २५५)।

पसार पुं [**प्रसार**] विस्तार, फैलाव; (कप्पू)।

पसारण न [**प्रसारण**] ऊपर देखो; (सुपा ५८३)।

पसारिअ वि [**प्रसारित**] १ फैलाया हुआ; (सण; नाट—वेणी २३)। २ न. प्रसारण; (सम्मत्त १३३; दस ४, ३)।

पसास सक [प्र+शासय्] १ शासन करना, हकूमत करना। २ शिक्षा देना। ३ पालन करना। वकृ— "रज्जं **पसासेमाणे** विहरइ" (णाया १, १ टी—पत्न ६; १, १४—पत्न १८६; औप; महा)।

पसाह सक [प्र+साधय्] १ वश में करना। २ सिद्ध करना। पसाहेइ; (नाट; भवि)। वकृ—**पसाहेमाण**; (औप)।

पसाहग वि [**प्रसाधक**] साधक, सिद्ध करने वाला; (धर्मसं १६)। °**तम** वि [°**तम**] १ उत्कृष्ट साधक; २ न. व्याकरण-प्रसिद्ध कारक-विशेष; करण-कारक; (विसे २११२)। देखो **पसाहय**।

पसाहण न [**प्रसाधन**] १ सिद्ध करना, साधना; "विज्जा-पसाहणुज्जयविज्जाहरसंनिरुद्धएगंतो" (सुर ३, १२)। २ उत्कृष्ट साधन; "सव्वुत्तमं माणुसत्तं दुल्लहं भवसमुद्दे पसाहणं नेव्वाणस्स न निउंजेंति धम्मे" (स ७४४)। ३ अलंकार, भूषण; (णाया १, ३; से ३, ४४)। ४ भूषण आदि की सजावट; "भूसणपसाहणाडंबरेहिं" (वज्जा ११४; सुपा ६६)।

पसाहय देखो **पसाहग**; (काल)। २ सजाने वाला; (भग ११, ११)।

पसाहा स्त्री [**प्रशाखा**] शाखा की शाखा, छोटी शाखा; (णाया १, १; औप महा)।

पसाहाविय वि [**प्रसाधित**] विभूषित कराया गया, सजवाया हुआ; (भवि)।

पसाहि वि [**प्रसाधिन्**] सिद्ध करने वाला; "अब्भुदयपसा-हिणी" (संबोध ८; ५४)।

पसाहिअ वि [**प्रसाधित**] अलंकृत किया हुआ, सजाया हुआ; (से ४, ६१; पाअ)।

पसाहिल्ल वि [**प्रशाखिन्**] प्रशाखा-युक्त; (सुर ८, १०८)।

पसिअ अक [**प्र+सद्**] प्रसन्न होना। पसिअ; (गा ३८४; ४६६; हे १, १०१)। पसियइ; (सण)। संकृ— **पसिऊण, पसिऊणं**; (सण; सुपा ७)।

पसिअ वि [**प्रसृत**] फैला हुआ, विस्तीर्ण; "पसिअच्छि!" (गा ६२०; ६२३)।

पसिअ न [**दे**] पूग-फल, सुपारी; (दे ६, ६)।

पसिंच सक [**प्र+सिच्**] सेचन करना। वकृ—**पसिंच-माण**; (सुर १२, १७२)।

पसिंढि (दे) देखो **पसंढि**; (पाअ)।

पसिक्खअ वि [**प्रशिक्षक**] सीखने वाला; (गा ६२६ अ)।

पसिज्जण न [**प्रसदन**] प्रसन्न होना; "अत्थक्करूसणं खणपसिज्जणं अलिअवअणणिब्बंधो" (गा ६७५)।

पसिढिल देखो **पसढिल**; (हे १, ८९; गा १३३; गउड)।

पसिण पुंन [**प्रश्न**] १ पृच्छा, प्रश्न; (सुपा ११; ४५३)। २ दर्पण आदि में देवता का आह्वान, मन्त्रविद्या-विशेष; (सम १२३; बृह १)। °**विज्जा** स्त्री [°**विद्या**] मन्त्रविद्या-विशेष; (ठा १०)। °**पसिण** न [°**प्रश्न**] मन्त्रविद्या के बल से स्वप्न आदि में देवता के आह्वान द्वारा जाना हुआ शुभाशुभ फल का कथन; (पव २; बृह १)।

पसिणिय वि [**प्रश्नित**] पूछा हुआ; (सुपा १६; ६२५)।

पसिद्ध वि [**प्रसिद्ध**] १ विख्यात, विश्रुत; (महा)। २ प्रकर्ष से मुक्ति को प्राप्त, मुक्त; (सिरि ५६५)।

पसिद्धि स्त्री [**प्रसिद्धि**] १ ख्याति; (हे १, ४४)। २ शंका का समाधान, आक्षेप का परिहार; (अणु; चेइय ४९)।

पसिस्स देखो **पसीस**; (विसे १४)।

पसीअ देखो **पसिअ**=प्र+सद्। पसीअइ, पसीयउ; (कुप्र १)। संकृ—**पसीऊण**; (सण)।

पसीस पुं [**प्रशिष्य**] शिष्य का शिष्य; (पउम ४, ८६)।

पसु पुं [**पशु**] १ जन्तु-विशेष, सींग पूँछ वाला प्राणी, चतुष्पाद प्राणि-मात्र; (कुमा; औप)। २ अज, बकरा; (अणु)। °**भूय** वि [°**भूत**] पशु-तुल्य; (सूअ १, ४, २)। °**मेह** पुं [°**मेध**] जिसमें पशु का भोग दिया जाता हो वह यज्ञ; (पउम ११, १२)। °**वइ** पुं [°**पति**] महादेव, शिव; (गा १; सुपा ३१)।

पसुत्त वि [**प्रसुप्त**] सोया हुआ; (हे १, ४४; प्राप्र; णाया १, १६);।

पसुत्ति स्त्री [**प्रसुप्ति**] कुष्ठ रोग विशेष, नखादि-विदारण होने पर भी अचेतनता; (राज)। देखो **पसूइ**।

पसुव (अप) देखो **पसु**; (भवि)।

पसुहत्त पुं [**दे**] वृक्ष, पेड़; (दे ६, २९)।

पसू सक [**प्र+सू**] जन्म देना, प्रसव करना। वकृ—**पसू-अमाण**; (गा १२३)। संकृ—**पसूइत्ता**; (राज)।

पसू वि [**प्रसू**] प्रसव-कर्ता, जन्म-दाता; (मोह २६)।

पसूअ न [**दे**] पुष्प, फूल; (दे ६, ९; पाअ; भवि)।

पसूअ वि [**प्रसूत**] १ उत्पन्न, जो पैदा हुआ हो; (णाया १, ७; उव; प्रासू १५९)। २ देखो **पसविय**; (महा)।

पसूअण न [**प्रसवन**] जन्म-दान; (सुपा ४०३)।

पसूइ स्त्री [**प्रसूति**] १ प्रसव, जन्म, उत्पत्ति; (पउम २१,

३४; प्रासू १२८)। २ एक जात का कुष्ठ रोग, नखादि से विदारण करने पर भी दुःख का अ-संवेदन, चमड़ी का मर जाना; (पिंड ६००)। °रोग पुं [°रोग] रोग-विशेष; (सम्मत ५८)।

पसूइय पुं [**प्रसूतिक**] वातरोग-विशेष; (सिरि ११७)।

पसूण न [**प्रसून**] फूल, पुष्प; (कुमा; सण)।

पसेअ पुं [**प्रस्वेद**] पसीना; (दे ६, १)।

पसेढि स्त्री [**प्रश्रेणि**] अवान्तर श्रेणि—पंक्ति; (पि ६६; राय)।

पसेण पुं [**प्रसेन**] भगवान् पार्श्वनाथ के प्रथम श्रावक का नाम; (विचार ३७८)।

पसेणइ पुं [**प्रसेनजित्**] १ कुलकर-पुरुष-विशेष; (पउम ३, ५५; सम १५०)। २ यदुवंश के राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र; (अंत ३)।

पसेणि स्त्री [**प्रश्रेणि**] अवान्तर जाति; "अट्ठारससेणिप्पसेणीओ सद्दावेइ" (णाया १, १—पत्र ३७)।

पसेयग देखो **पसेवय**; (राज)।

पसेव सक [**प्र+सेव्**] विशेष सेवा करना। वकृ—**पसेवमाण**; (श्रु ५५)।

पसेवय पुं [**प्रसेवक**] कोथला, थैला; "गहावियपसेवओ व्व उरंसि लंबंति दोवि तस्स थणया" (उवा)।

पसेविआ स्त्री [**प्रसेविका**] थैली, कोथली; (दे ५, २५)।

पस्स सक [**दृश्**] देखना। पस्सइ; (षड्; प्राकृ ७१)। वकृ—**पस्समाण**; (आचा; औप; वसु; विपा १, १)। कृ—**पस्स**; (ठा ४, ३)।

पस्स (शौ) देखो **पास**=पार्श्व; (अभि १८६; अवि २६; स्वप्न ३६)।

पस्स देखो **पस्स**=दृश्।

पस्सओहर वि [**पश्यतोहर**] देखते हुए चोरी करने वाला; "नणु एसो पस्सओहरो तेणो" (उप ७२८ टी)।

पस्सि वि [**दर्शिन्**] देखने वाला; (पण्ण ३०)।

पस्सेय देखो **पसेअ**; (सुख २, ८)।

पह वि [**प्रह्व**] १ नम्र; २ विनीत; ३ आसक्त; (प्राकृ २४)।

पह पुं [**पथिन्**] मार्ग, रास्ता; (हे १, ८८; पाअ; कुमा; श्रा २८; विसे १०५२; कप्प; औप)। °**देसय** वि [°**देशक**] मार्ग-दर्शक; (पउम ६८, १७)।

पहएल्ल पुं [**दे**] पूप, पूआ, खाद्य-विशेष; (दे ६, १८)।

पहंकर देखो **पभंकर**; (उत्त २३, ७६; सुख २३, ७६; इक)।

पहंकरा देखो **पभंकरा**; (इक)।

पहंजण पुं [**प्रभञ्जन**] १ वायु, पवन; (पाअ)। २ देव-जाति-विशेष, भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति; (सुपा ४०)। ३ एक राजा; (भवि)।

पहकर [**दे**] देखो **पहयर**; (णाया १, १; कप्प; औप; उप पृ ४७; विपा १, १; राय; भग ६, ३३)।

पहट्ठ वि [**दे**] १ दृप्त, उद्धत; (दे ६, ६; षड्)। २ अचि-रतर दृष्ट, थोड़े ही समय के पूर्व देखा हुआ; (षड्)।

पहट्ठ वि [**प्रहृष्ट**] आनन्दित, हर्ष-प्राप्त; (औप; भग)।

पहण सक [**प्र+हन्**] मार डालना। पहणइ, पहणे; (महा; उत्त १८, ४६)। कर्म—पहणिज्जइ; (महा)। वकृ—**पहणंत**; (पउम १०५, ६५)। कवकृ—**पहम्मंत, पहम्ममाण**; (पि ५४०; सुर २, १४)। हेकृ—**पहणिउं, पहणेउं**; (कुप्र २५; महा)।

पहण न [**दे**] कुल, वंश; (दे ६, ५)।

पहणि स्त्री [**दे**] संमुखागत का निरोध; सामने आए हुए का अटकाव; (दे ६, ५)।

पहणिय देखो **पहय**=प्रहत; (सुपा ४)।

पहत्थ पुं [**प्रहस्त**] रावण का मामा; (से १२, ५५)।

पहद वि [**दे**] सदा दृष्ट; (दे ६, १०)।

पहम्म सक [**प्र+हम्म्**] प्रकर्ष से गति करना। **पहम्मइ**; (हे ४, १६२)।

पहम्म न [**दे**] १ सुर-खात, देव-कुण्ड; (दे ६, ११)। २ खात-जल, कुण्ड; ३ विवर, छिद्र; (से ६, ४३)।

पहम्मंत } देखो **पहण**=प्र+हन्।
पहम्ममाण }

पहय वि [**प्रहत**] १ घृष्ट, घिसा हुआ; (से १, ५८; बृह १)। २ मार डाला गया, निहत; (महा)।

पहय वि [**प्रहृत**] जिस पर प्रहार किया गया हो वह; "पहया अहिमंतियजलेण" (महा)।

पहयर पुं [**दे**] निकर, समूह, यूथ; (दे ६, १५; जय १३; पाअ)।

पहर सक [**प्र+हृ**] प्रहार करना। पहरइ; (उव)। वकृ—**पहरंत**; (महा)। संकृ—**पहरिऊण**; (महा)। हेकृ—**पहरिउं**; (महा)।

पहर पुं [**प्रहार**] १ मार, प्रहार; (हे १, ६८; षड्; प्राप्र; संक्षि २)। २ जहां पर प्रहार किया गया हो वह स्थान; (से २, ४)।

पहर पुं [**प्रहर**] तीन घंटे का समय; (गा २८; ३१; पाअ)।

पहरण न [**प्रहरण**] १ अस्त्र, आयुध; (आचा; औप; विपा १, १; गउड)। २ प्रहार-क्रिया; (से ३, ३८)।

पहराइया देखो **पहाराइया**; (पण्ण १—पत्र ६४)।

पहराय पुं [**प्रभराज**] भरतक्षेत्र का छठवाँ प्रतिवासुदेव; (सम १५४)।

पहरिअ वि [**प्रहृत**] १ प्रहार करने के लिए उद्यत; (सुर ६, १२६)। २ जिस पर प्रहार किया गया हो वह; (भवि)।

पहरिस पुं [**प्रहर्ष**] आनन्द, खुशी; "आमोओ पहरिसो तोसो" (पाअ; सुर ३, ४०)।

पहलादिद (शौ) वि [**प्रह्लादित**] आनन्दित; (स्वप्न १०६)।

पहल्ल अक [**घूर्ण्**] घूमना, काँपना, डोलना, हिलना। पहल्लइ; (हे ४, ११७; षड्)। वकृ—**पहल्लंत**; (सुर १, ६६)।

पहल्लिर वि [**प्रघूर्णितृ**] घूमने वाला, डोलता; (कुमा; सुपा २०४)।

पहव अक [**प्र+भू**] १ उत्पन्न होना। २ समर्थ होना। पहवइ; (पंचा १०, १०; गा ७०; संक्षि ३६)। भवि—पहविस्सं; (पि ५२१)। वकृ—**पहवंत**; (नाट—मालवि ७२)।

पहव पुं [**प्रभव**] उत्पत्ति-स्थान; (अभि ४१)।

पहव देखो **पहाव**=प्रभाव; (स ६३७)।

पहव देखो **पह**=प्रह; (विसे ३००८)।

पहव पुं [**प्रभव**] एक जैन महर्षि; (कुमा)।

पहविय वि [**प्रभूत**] जो समर्थ हुआ हो; "मणिकुंडलाणुभावा सत्थं नो पहवियं नरिंदस्स" (सुपा ६१५)।

पहस अक [**प्र+हस्**] १ हसना। २ उपहास करना। पहसइ; (भवि; सण)। वकृ—**पहसंत**; (सण)।

पहसण न [**प्रहसन**] १ उपहास, परिहास; २ नाटक का एक भेद, रूपक-विशेष; "पहसणप्पायं कामसत्थवयणं" (स ७१३; १७७; हास्य ११६)।

पहसिय वि [**प्रहसित**] १ जो हसने लगा हो; (भग)। २ जिसका उपहास किया गया हो वह; (भवि)। ३ न. हास्य; (बृह १)। ४ पुं. पवनञ्जय का एक विद्याधर-मित्र; (पउम १५, ५६)।

पहा सक [**प्र+हा**] १ त्याग करना। २ अक. कम होना, क्षीण होना। "पहेज्ज लोहं" (उत्त ४, १२; पि ५६६)। वकृ—**पहिज्जमाण, पहेज्जमाण**; (भग; राज)। संकृ—**पहाय, पहिऊण**; (आचा १, ६, १, १; वव ३)।

पहा स्त्री [**प्रथा**] १ रीति, व्यवहार; २ ख्याति, प्रसिद्धि; (षड्)।

पहा स्त्री [**प्रभा**] कान्ति, तेज, आलोक, दीप्ति; (औप; पाअ; सुर २, २३५; कुमा; चेइय ५१४)। **°मंडल** देखो **भामंडल**; (पउम ३०, ३२)। **°यर** पुं [**°कर**] १ सूर्य, रवि; २ रामचन्द्र के भाई भरत के साथ दीक्षा लेने वाला एक राजर्षि; (पउम ८५, ५)। **°वई** स्त्री [**°वती**] आठवें वासुदेव की पटरानी; (पउम २०, १८७)।

पहाड सक [**प्र+घाटय्**] इधर उधर भमाना, घुमाना। पहाडेति; (सूअनि ७० टी)।

पहाण वि [**प्रधान**] १ नायक, मुखिया, मुख्य; " अवगन्नइ सव्वेवि हु पुरप्पहाणेवि " (सुपा ३०८), "तत्थत्थि वणिप्पहाणो सेट्ठी वेसमणनामओ " (सुपा ६१७)। २ उत्तम, प्रशस्त, श्रेष्ठ, शोभन; (सुर १, ४८; महा; कुमा; पंचा ६, १२)। ३ स्त्रीन. प्रकृति- सत्त्व, रज और तमोगुण की साम्यावस्था; " ईसरेण कडे लोए पहाणाइ तहावरे " (सूअ १, १, ३, ६)। ४ पुं. सचिव, मन्त्री; (भवि)।

पहाण न [**प्रहाण**] अपगम, विनाश; (धर्मसं ८७५)।

पहाणि स्त्री [**प्रहाणि**] ऊपर देखो; (उत्त ३, ७; उप ६८६ टी)।

पहाम सक [**प्र+भ्रमय्**] फिराना, घुमाना। कवकृ—**पहामिज्जंत**; (से ७, ६६)।

पहाय देखो **पहा**=प्र+हा।

पहाय न [**प्रभात**] १ प्रातःकाल, सवेरा; (गउड; सुपा ३६; ६०२)। २ वि. प्रभा-युक्त; (से ६, ४४)।

पहाय देखो **पहाव**=प्रभाव; (हे ४, ३४१; हास्य १३२; भवि)।

पहाया देखो **वाहाया**; (अनु)।

पहार सक [**प्र+धारय्**] १ चिन्तन करना, विचार करना। २ निश्चय करना। भूका—पहारेत्थ, पहारेत्था, पहारिंसु; (सूअ २, ७, ३६; औप; पि ५१७; सूअ २, १, २०)। वकृ—**पहारेमाण**; (सूअ २, ६, ४)।

पहार देखो **पहर**=प्रहार; (पाअ; हे १, ६८)।

पहाराइया स्त्री [**प्रहारातिगा**] लिपि-विशेष; (सम ३५)।

पहारि वि [**प्रहारिन्**] प्रहार करने वाला; (सुपा २१५; प्रासू ६८)।

पहारिय वि [**प्रहारित**] जिस पर प्रहार किया गया हो वह; (स ५६८)।

पहारिय वि [**प्रधारित**] विकल्पित, चिन्तित; (राज)।

पहारेत्तु वि [**प्रधारयितृ**] चिन्तन करने वाला; " अहाकम्मं अणवज्जेति मणं पहारेत्ता भवति " (भग ५, ६)।

पहाव सक [**प्र+भावय्**] प्रभाव-युक्त करना, गौरवित करना। पहावइ; (सण)। संकृ—**पहाविऊण**; (सण)।

पहाव (अप) अक [**प्र+भू**] समर्थ होना। पहावइ; (भवि)।

पहाव पुं [**प्रभाव**] १ शक्ति, सामर्थ्य; "तुमं च तेतलिपुत्तस्स पहावेण" (गाथा १, १४; अभि ३८)। २ कोप और दण्ड का तेज; ३ माहात्म्य; "तायपहावओ चेव मे अविग्घं भविस्सइ त्ति" (स २६०; गउड)।

पहावणा देखो **पभावणा**; (कुप्र २८४)।

पहाविअ वि [**प्रधावित**] दौड़ा हुआ; (स ५८४; गा ५३५; गउड)।

पहाविर वि [**प्रधावितृ**] दौड़ने वाला; (वज्जा ६२; गा २०२)।

पहास सक [**प्र+भाष्**] बोलना। पहासई; (सुख ४, ६), "नाऊण चुन्नियं तं पहिट्ठहियया पहासई पावा" (महा)।

पहास अक [**प्र+भास्**] चमकना, प्रकाशना। वकृ—**पहासंत**; (सार्ध ५६)।

पहासा स्त्री [**प्रहासा**] देवी-विशेष; (महा)।

पहिअ वि [**पान्थ, पथिक**] मुसाफिर; (हे २, १५२; कुमा; षड्; उव; गउड)। °**साला** स्त्री [°**शाला**] मुसाफिर-खाना, धर्मशाला; (धर्मवि ७०; महा)।

पहिअ वि [**प्रथित**] १ विस्तृत; २ प्रसिद्ध, विख्यात; (ओप)। ३ राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५, २६२)।

पहिअ वि [**प्रहित**] भेजा हुआ, प्रेषित; (उप पृ ४५; ७६८ टी; धम्म ६ टी)।

पहिअ वि [**दे**] मथित, विलोडित; (दे ६, ६)।

पहिऊण देखो **पहा**=प्र+हा।

पहिंसय वि [**प्रहिंसक**] हिंसा करने वाला; (ओघ ५५३)।

पहिज्जमाण देखो **पहा**=प्र+हा।

पहिट्ठ देखो **पहट्ठ**=प्रहृष्ट; (ओप; सुर ३, १४८; सुपा ६३; ४३७)।

पहिर सक [**परि+धा**] पहिरना, पहनना। पहिरइ, पहिरंति; (भवि; धर्मवि ७)। कर्म—पहिरिज्जइ; (संबोध १४)। वकृ—**पहिरंत**; (सिरि ६८)। संकृ—**पहिरिउं**; (धर्मवि १५)। प्रयो—संकृ—**पहिरावेऊण, पहिराविऊण**; (सिरि ४५६; ७७०)।

पहिरावण न [**परिधापन**] १ पहिराना; २ पहिरावन, भेंट में—इनाम में—दिया जाता वस्त्रादि; गुजराती में—'पहिरामणी' (श्रा २८)।

पहिराविय वि [**परिधापित**] पहिराया हुआ; (महा; भवि)।

पहिरिय वि [**परिहित**] पहिरा हुआ, पहना हुआ; (सम्मत्त २१८)।

पहिल वि [**दे**] पहला, प्रथम; (संक्षि ४७; भवि; पि ४४६)। स्त्री—°**ली**; (पि ४४६)।

पहिल्ल अक [**दे**] पहल करना, आगे करना। पहिल्लइ; (पिंग)। संकृ—**पहिल्लिअ**; (पिंग)।

पहिल्लिर वि [**प्रघूर्णितृ**] खूब हिलने वाला, अत्यन्त हिलता; (सम्मत्त १८७)।

पहिवी देखो **पुहवी**=पृथिवी; (नाट)।

पहीण वि [**प्रहीण**] १ परिक्षीण; (पिंड ६३१; भग)। २ भ्रष्ट, स्खलित; (सूअ २, १, ६)।

पहु पुं [**प्रभु**] १ परमेश्वर, परमात्मा; (कुमा)। २ एक राज-पुत्र, जयपुर के विन्ध्यराज का एक पुत्र; (वसु)। ३ स्वामी, मालिक; (सुर ८, १५६)। ४ वि. समर्थ, शक्तिमान; " दाणं दरिद्दस्स पहुस्स खंती " (प्रासू ४८)। ५ अधि-पति, मुखिया, नायक; (हे ३, ३८)।

°**पहुइ** देखो °**पभिइ**; (कप्पू)।

पहुई देखो **पुहुवी**; (षड्)।

पहुंक पुं [**पृथुक**] खाद्य पदार्थ-विशेष, चिउड़ा; (दे ६, ४४)।

पहुच्च अक [**प्र+भू**] पहुँचना। पहुचइ; (हे ४, ३६०)। वकृ—**पहुच्चमाण**; (ओघ ५०५)।

पहुट्ट देखो **पप्फुट्ट**। पहुट्टइ; (कप्पू)।

पहुडि देखो **पभिइ**; (हे १, १३१; ती १०; षड्)।

पहुण पुं [**प्राघुण**] अतिथि, मेहमान; (उप ६०२)।

पहुणाइय न [**प्राघुण्य**] आतिथ्य, अतिथि-सत्कार; "न्हाण-भोयणवत्थाहरणदाणाइप्पहुणाडि(? इ)यं संपाडेइ " (रंभा)।

पहुत्त वि [**प्रभूत**] १ पर्याप्त, काफी; " पज्जत्तं च पहुत्तं" (पाअ; गउड; गा २७७) । २ समर्थ; (से २, ६)। ३ पहुँचा हुआ; (ती १५) ।

पहुदि देखो **पभिइ**; (संक्षि ४; प्राकृ १२) ।

पहुप्प } अक [**प्र + भू**] १ समर्थ होना, सकना । २ पहुँचना । **पहुव** } पहुप्पइ; (हे ४, ६३; प्राकृ ६२), "एयाओ बालियाओ नियनियगेहेसु जह पहुप्पंति तह कुणह" (सुपा २५०), पहुप्पामो; (काल), पहुप्पिरे; (हे ३, १४२) । वकृ— " किं सहइ कोवि कस्सवि पाअपहारं **पहुप्पंतो**", **पहुप्पमाण**; (गा ७; ओघ ५०५; किरात १६) । कवकृ— **पहुव्वंत**; (से १४. २५; वव १०) । हेकृ—**पहुविउं**; (महा) ।

पहुवी स्त्री [**पृथिवी**] भूमि, धरती; (नाट—मालती ७२) । °**पहु** पुं [°**प्रभु**] राजा; (हम्मीर १७) । °**वइ** पुं [°**पति**] वही अर्थ; (हम्मीर १६) ।

पहुव्वंत देखो **पहुव** ।

पहूअ वि [**प्रभूत**] १ बहुत, प्रचुर; (स ४५६) । २ उद्गत; ३ भूत; ४ उन्नत; (प्राकृ ६२) ।

पहेज्जमाण देखो **पहा**=प्र + हा ।

पहेण } न [**दे**] १ भोजनोपायन, खाद्य वस्तु की भेंट; **पहेणग** } (आचा; सूअ २, १, ५६; गा ३२८; ६०३; **पहेणय** } पिंड ३३५; पाअ; दे ६, ७३) । २ उन्मद; (दे ६, ७३) ।

पहेरक न [**प्रहेरक**] आभरण-विशेष; (पराह २, ५—पत्र १४६) ।

पहेलिया स्त्री [**प्रहेलिका**] गूढ़ आशय वाली कविता; (सुपा १५५; औप) ।

पहोअ सक [**प्र + धाव्**] प्रक्षालन करना, धोना । पहोएज्ज; (आचा २, २, १, ११) ।

पहोइअ वि [**दे**] १ प्रवर्तित; २ प्रभुत्व; (दे ६, २६) ।

पहोड सक [**वि + लुल्**] हिलाना, अन्दोलना । पहोडइ; (धात्वा १४४) ।

पहोलिर वि [**प्रघूर्णितृ**] हिलने वाला, डोलता; (गा ५८; ६६६; से ३, ४६; पाअ) ।

पहोव देखो **पधोव** । पहोवाहि; (आचा २, ३, ६, ३) ।

पा सक [**पा**] पीना, पान करना । भवि—पाहिसि, पाहामि, पाहामो; (कप्प; पि ३१५; कस) । कर्म—पिज्जइ; (उव), पीअंति; (पि ५३६), कवकृ—**पिज्जंत**; (गउड; कुप्र १२०), **पीअमाण**; (स ३८२), **पेंत** (अप); (सण) । संकृ—**पाऊण, पाऊणं**; (नाट—मुद्रा ३६; गउड; कुप्र ६२)। हेकृ—**पाउं, पायए**; (आचा) । कृ—**पायव्व, पिज्ज**; (सुपा ४३८; पणह १, २; कुमा २, ६), **पेअ, पेयव्व**; (कुमा; रयण ६०), **पेज्ज**; (णाया १, १; १७; उवा) ।

पा सक [**पा**] रक्षण करना । पाइ, पाअइ; (विसे ३०२५; हे ४, २४०), पाउ; (पिंग) ।

पा सक [**घ्रा**] सूँघना, गन्ध लेना । पाइ, पाअइ; (प्राप्र ८, २०) ।

पाइ वि [**पातिन्**] गिरने वाला; (पंचा ५, २०) ।

पाइ वि [**पायिन्**] पीने वाला; (गा ५६७; हि ६) ।

पाइअ न [**दे**] वदन-विस्तर, मुँह का फैलाव; (दे ६, ३६) ।

पाइअ देखो **पागय**=प्राकृत; (दे १, ४; प्राकृ ८; प्रासू १; वज्जा ८; पाअ; पि ५३), "अह पाइआओ भासाओ" (कुमा १, १) ।

पाइअ वि [**पायित**] पिलाया हुआ, पान कराया हुआ; (कुप्र ७६; सुपा १३०; स ४५४) ।

पाइंत देखो **पाय**=पायय् ।

पाइक्क पुं [**पदाति**] प्यादा, पैर से चलने वाला सैनिक; (हे २, १३८; कुमा) ।

पाइण देखो **पाईण**; (पि २१५ टि) ।

पाइत्ता (अप) स्त्री [**पवित्रा**] छन्द-विशेष; (पिंग) ।

पाइद [**शौ**] वि [**पाचित**] पकवाया हुआ; (नाट—चैत १२६) ।

पाइभ न [**प्रातिभ**] प्रतिभा, बुद्धि-विशेष; (कुप्र १५५) ।

पाइम वि [**पाक्य**] १ पकाने योग्य; २ काल-प्राप्त, मृत; (दस ७, २२) ।

पाइम वि [**पात्य**] गिराने योग्य; (आचा २, ४, २, ७) ।

पाई स्त्री [**पात्री**] १ भाजन-विशेष; (णाया १, १ टी) । २ छोटा पात्र; (सूअ २, २, ७०) ।

पाईण वि [**प्राचीन**] १ पूर्वदिशा-संबन्धी; "ववहार-पाइणाई(? ईणाइ) " (पिंड ३६; कप्प; सम १०४) । २ न. गोत्र-विशेष; ३ पुं स्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न; "थेरे अज्ज-भद्दबाहू पाईणसगोत्ते" (कप्प) ।

पाईणा स्त्री [**प्राचीना**] पूर्व दिशा; (सुअ २, २, ५८; ठा ६—पत्र ३५६)।

पाउ देखो **पाउं**=प्रादुस्; (सुअ २, ६, ११; उवा)।

पाउ पुं [**पायु**] गुदा, गाँड; (ठा ६—पत्र ४५०; सण)।

पाउ पुंस्त्री [**दे**] १ भक्त, भात, भोजन; २ इक्षु, ऊख; (दे ६, ७५)।

पाउअ न [**दे**] १ हिम, अवश्याय; (दे ६, ३८)। २ भक्त; ३ इक्षु; (दे ६, ७५)।

पाउअ देखो **पाउड**=प्रावृत; (गा ५२०; स ३५०; औप; सुर ६, ८; पाअ; हे १, १३१)।

पाउअ देखो **पागय**; (गा २; ६६८; प्राप्र; कप्पू; पिंग)।

पाउआ स्त्री [**पादुका**] १ खड़ाऊँ, काष्ठ का जूता; (भग; सुअ २, २६; पिंड ५७२)। २ जूता, पगरखी; (सुपा २५४; औप)।

पाउं देखो **पा**=पा।

पाउं अ [**प्रादुस्**] प्रकट, व्यक्त; "संतिं असंतिं करिस्सामि पाउं" (सुअ १, १, ३, १)।

पाउंछण) न [**पादप्रोञ्छन, °क**] जैन मुनि का एक
पाउंछणग) उपकरण, रजोहरण; (पव ११२ टी; ओघ ६३०; पंचा १७, १२)।

पाउकर सक [**प्रादुस्+कृ**] प्रकट करना। भवि—पाउकरिस्सामि; (उत ११, १)।

पाउकर वि [**प्रादुष्कर**] प्रादुर्भावक; (सुअ १, १५, २५)।

पाउकरण न [**प्रादुष्करण**] १ प्रादुर्भाव; २ वि. जो प्रकाशित किया जाय वह; ३ जैन मुनि के लिए एक भिक्षा-दोष, प्रकाश कर दी हुई भिक्षा; "पकिरणपाउकरणपामिच्चं" (पणह २, ५ -पत्र १४८)।

पाउकाम वि [**पातुकाम**] पीने की इच्छा वाला; "तं जो णं पाविआए माउया एदुद्धं पाउकामे से णं निग्गच्छउ" (णाया १, १८)।

पाउक्क वि [**दे**] मार्गीकृत, मार्गित; (दे ६, ४१)।

पाउक्करण देखो **पाउकरण**; (राज)।

पाउक्खालय न [**दे. पायुक्षालक**] १ पाखाना, टट्टी, मलोत्सर्ग-स्थान; "ठाइ चेव एसो पाउक्खालयम्मि रयणीए" (स २०५; भत्त ११२)। २ मलोत्सर्ग-क्रिया; "रयणीए पाउक्खालयनिमित्तमुट्ठिओ" (स २०५)।

पाउग्ग वि [**दे**] सभ्य, सभासद; (दे ६, ४१; सण)।

पाउग्ग वि [**प्रायोग्य**] उचित, लायक; (सुर १५, २३३)।

पाउग्गिअ वि [**दे**] १ जूआ खेलाने वाला; २ सोढ, सहन किया हुआ; (दे ६, ४२; पाअ)।

पाउड देखो **पागय**; (प्राकृ १२; मुद्रा १२०)।

पाउड वि [**प्रावृत**] १ आच्छादित, ढका हुआ; (सुअ १, २, २, २२)। २ न. वस्त्र, कपड़ा; (ठा ५, १)।

पाउण सक [**प्रा+वृ**] आच्छादित करना, पहिरना। पाउणइ; (पिंड ३१)। संकृ—"पडं **पाउणिऊण** रत्तिं णिग्गओ" (महा)।

पाउण सक [**प्र+आप्**] प्राप्त करना। पाउणइ; (भग)। पाउणंति; (औप; सुअ १, ११, २१)। पाउणेज्जा; (आचा २, ३, १, ११)। भवि· पाउणिस्सामि, पाउणिहिइ; (पि ५३१; उवा)। संकृ—**पाउणित्ता**; (औप; णाया १, १; विपा २, १; कप्प; उवा)। हेकृ—**पाउणित्तए**; (आचा २, ३, २, ११)।

पाउण (अप) देखो **पावण**=पावन; (पिंग)।

पाउत्त देखो **पउत्त**=प्रयुक्त; (औप)।

पाउप्पभाय वि [**प्रादुष्प्रभात**] प्रभा-युक्त, प्रकाश-युक्त; "कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए" (णाया १, १; भग)।

पाउब्भव अक [**प्रादुस्+भू**] प्रकट होना। पाउब्भवइ; (पव ४०)। भूका—पाउब्भवित्था; (उवा)। वकृ—**पाउब्भवंत, पाउब्भवमाण**; (सुपा ६; कुप्र २६; णाया १, ५)। संकृ—**पाउब्भवित्ताणं**; (उवा; औप)। हेकृ—**पाउब्भवित्तए**; (पि ५७८)।

पाउब्भव वि [**पापोद्भव**] पाप से उत्पन्न; (उप ७६८ टी)।

पाउब्भवणा स्त्री [**प्रादुर्भवन**] प्रादुर्भाव; (भग ३, १)।

पाउब्भुअ (अप) नीचे देखो; (सण)।

पाउब्भूअ वि [**प्रादुर्भूत**] १ उत्पन्न, संजात; २ प्रकटित; (औप; भग; उवा; विपा १, १)।

पाउरण न [**प्रावरण**] वस्त्र, कपड़ा; (सुअनि ८६; हे १, १७५; पंचा ५, १०; पव ४; षड्)।

पाउरण न [**दे**] कवच, वर्म; (षड्)।

पाउरणी स्त्री [**दे**] कवच, वर्म; (दे ६, ६३)।

पाउरिअ देखो **पाउड**=प्रावृत; (कुप्र ४५२)।

पाउल वि [**पापकुल**] हलके कुल का, जघन्य कुल में उत्पन्न; "दवाविय पाउलाण दविणजायं" (स ६२६), "कलसद्दपउस्पाउलमंगलसंगीयपवरपेक्खणयं" (सुर १०, ५)।

पाउल्ल न. देखो **पाउआ**; "पाउल्लाइं संकमद्वाए" (सुअ १, ४, २, १५)।

पाउव न [**पादोद**] पाद-प्रक्षालन-जल; "पाउवदाइं च गहाणुवदाइं च" (गाया १, ७—पत्र ११७)।

पाउस पुं [**प्रावृष्**] वर्षा ऋतु; (हे १, १६; प्राप्र; महा)। °**कीड** पुं [°**कीट**] वर्षा ऋतु में उत्पन्न होने वाला कीट-विशेष; (दे)। °**गम** पुं [°**गम**] वर्षा-प्रारम्भ; (पाअ)।

पाउसिअ वि [**प्रावृषिक**] वर्षा-संबन्धी; (राज)।

पाउसिअ वि [**प्रोषित, प्रवासिन्**] प्रवास में गया हुआ; "तह महागमसंसियआगमणाणं पईण मुद्धाओ। मग्गमवलोयमाणीउ नियइ पाउसियदइयाओ॥" (सुपा ७०)।

पाउसिआ स्त्री [**प्राद्वेषिकी**] द्वेष—मत्सर—से होने वाला कर्म-बन्ध; (सम १०; ठा २, १; भग; नव १७)।

पाउहारी स्त्री [**दे. पाकहारी**] भक्त को लाने वाली, भात-पानी ले आने वाली; (गा ६६४ अ)।

पाए अ [**दे**] प्रभृति, (वहां से) शुरू करके; (ओघ १६६; बृह १)।

पाए सक [**पायय्**] पिलाना। पाएइ; (हे ३, १४६)। पाएज्जाह; (महा)। वकृ—**पाइंत, पाययंत**; (सुर १३, १३४; १२, १७१)। संकृ—**पाएत्ता**; (आक ३०)।

पाए सक [**पादय्**] गति कराना। पाएइ; (हे ३, १४६)।

पाए सक [**पाचय्**] पकवाना। पाएइ; (हे ३, १४६)। कर्म—**पाइज्जइ**; (श्रावक २००)।

पाएण } अ [**प्रायेण**] बहुत करके, प्रायः; (विसे
पाएणं } ११६६; काल; कप्प; प्रासू ४३)।

पाओ अ [**प्रायस्**] ऊपर देखो; (श्रा २७)।

पाओ अ [**प्रातस्**] प्रातःकाल, प्रभात; (सुज्ज १, ६; कप्प)।

पाओकरण देखो **पाउकरण**; (पिंड २९८)।

पाओग देखो **पाउग्ग**; (सूअनि ६५)।

पाओगिअ वि [**प्रायोगिक**] प्रयत्न-जनित, अ-स्वाभाविक; (चेइय ३५३)।

पाओग्ग देखो **पाउग्ग**; (भास १०; धर्मसं ११८०)।

पाओपगम न [**पादपोपगम**] देखो **पाओवगमण**; (वव १०)।

पाओयर पुं [**प्रादुष्कार**] देखो **पाउकरण**; (ठा ३, ४; पंचा १३, ५)।

पाओवगमण न [**पादपोपगमन**] अनशन-विशेष, मरण-विशेष; (सम ३३; औप; कप्प; भग)।

पाओवगय वि [**पादपोपगत**] अनशन-विशेष से मृत; (औप; कप्प; अंत)।

पाओस पुं [**दे. प्रद्वेष**] मत्सर, द्वेष; (ठा ४, ४—पत्र २८०)।

पाओसिय देखो **पादोसिय**; (ओघ ६६२)।

पाओसिया देखो **पाउसिआ**; (धर्म ३)।

पांडविअ वि [**दे**] जलार्द्र, पानी से गीला; (दे ६, २०)।

पांडु देखो **पंडु**; (पत्र २४७)। °**सुअ** पुं [°**सुत**] अभिनय का एक भेद; (ठा ४, ४—पत्र २८५)।

पाक देखो **पाग**; (कप्प)।

पाकम्म न [**प्राकाम्य**] योग की आठ सिद्धियों में एक सिद्धि; "पाकम्मगुणेण मुणी भुवि व्व नीरे जलि व्व भुवि चरइ" (कुप्र २७७)।

पाकार पुं [**प्राकार**] किला, दुर्ग; (उप पृ ८४)।

पाकिद (शौ) देखो **पागय**; (प्रयौ २४; नाट—वेणी ३८; पि ५३; ८२)।

पाखंड देखो **पासंड**; (पि २६५)।

पाग पुं [**पाक**] १ पचन-क्रिया; (औप; उवा; सुपा ३७४)। २ दैत्य-विशेष; (गउड)। ३ विपाक, परिणाम; (धर्मसं ६६५)। ४ बलवान् दुश्मन; (आवम)। °**सासण** पुं [°**शासन**] इन्द्र, देव-पति; (हे ४, २६५; गउड; पि २०२)। °**सासणी** स्त्री [°**शासनी**] इन्द्रजाल-विद्या; (सूअ २, २, २७)।

पागइअ वि [**प्राकृतिक**] १ स्वाभाविक; २ पुं. साधारण मनुष्य, प्राकृत लोक; (पव ६१)।

पागड सक [**प्र+कटय्**] प्रकट करना, खुला करना, व्यक्त करना। वकृ—**पागडेमाण**; (ठा ३, ४—पत्र १७१)।

पागड वि [**प्रकट**] व्यक्त, खुला; (उत्त ३६, ४२; औप; उव)।

पागडण न [**प्रकटन**] १ प्रकट करना। २ वि. प्रकट करने वाला; (धर्मसं ८२६)।

पागडिअ वि [**प्रकटित**] व्यक्त किया हुआ; (उव; औप)।

पागड्ढि } वि [**प्राकर्षिन्, °क**] १ अग्रगामी; "पागड्ढी
पागड्ढिक } (? ड्ढी) पहवए जुहवई" (गाया १, १)। २ प्रवर्तक, प्रवृत्ति कराने वाला; (पगह १, ३—पत्र ४५)।

पागब्भ न [**प्रागल्भ्य**] धृष्टता, धिठाई; (सूअ १, ५, १, ५)।

पागब्भि } वि [**प्रागल्भिन्**, °**क**] धृष्टता वाला, धृष्ट;
पागब्भिय } (सूअ १, ५, १, ५; २, १, १८)।

पागय वि [**प्राकृत**] १ स्वाभाविक, स्वभाव-सिद्ध; २ आर्यावर्त की प्राचीन लोक-भाषा; "सक्कया पागया चेव" (ठा ७—पत्र ३६३; विसे १४६६ टी; रयण ६४; सुपा १)। ३ पुं. साधारण बुद्धि वाला मनुष्य, सामान्य लोग; "जेसिं गामा-गोसं न पागता पण्णवेहिंति" (सुज्ज १६), "किंतु महामइ-गम्मो दुरवगम्मो पागयजणस्स" (चेइय २५६; सुर २, १३०)। °**भासा** स्त्री [°**भाषा**] प्राकृत भाषा; (श्रा २३)। °**वागरण** न [°**व्याकरण**] प्राकृत भाषा का व्याकरण; (विसे ३४५५)।

पागार पुं [**प्राकार**] किला, दुर्ग; (उप; सुर ३, ११४)।

पाजावच्च पुं [**प्राजापत्य**] १ वनस्पति का अधिष्ठाता देव; २ वनस्पति; (ठा ५, १—पत्र २६२)।

पाटप [**चूपै**] देखो **वाडव**; (षड्)।

पाठीण देखो **पाढीण**; (पगह १, १—पत्र ७)।

पाड देखो **फाड=**पाटय्। "असिपत्तअणूहि पाडंति" (सूअनि ७६)।

पाड सक [**पातय्**] गिराना। पाडेइ; (उव)। संकृ—**पाडिअ, पाडिऊण**; (काप्र १६६; कुप्र ४६)। कवकृ—**पाडिज्जंत**; (उप ३२० टी)।

पाड देखो **पाडय=**पाटक; "तो सो दिट्ठाओ सयं गओ वेसपाडम्मि" (सुपा ५३०)।

पाडच्चर वि [**दे**] आसक्त चित्त वाला; (दे ६, ३४)।

पाडच्चर पुं [**पाटच्चर**] चोर, तस्कर; (पाअ; दे ६, ३४)।

पाडण न [**पाटन**] विदारण; (आव ६)।

पाडण न [**पातन**] १ गिराना, पाड़ना; (सूअनि ७२)। २ परिभ्रमण, इधर-उधर घूमना; "लहुजढरपिढरपडियारपाडण-साण कयकीलो" (कुमा २, ३७)।

पाडणा स्त्री [**पातना**] ऊपर देखो; (विपा १, १—पत्र १६)।

पाडय पुं [**पाटक**] महल्ला, रथ्या; "चंडालपाडए गंतु" (धर्मवि १३८; विपा १, ८; महा)।

पाडय वि [**पातक**] गिराने वाला। स्त्री—°**डिआ**; (मृच्छ २४५)।

पाडल पुं [**पाटल**] १ वर्ण-विशेष, श्वेत और रक्त वर्ण, गुलाबी रंग; २ वि. श्वेत-रक्त वर्ण वाला; (पाअ)। ३ न. पाटलिका-पुष्प, गुलाब का फूल; (गा ४६६; सुर ३, ५२; कुमा)। ४ पाटला वृक्ष का पुष्प, पाढल का फूल; (गा ३०)।

पाडल पुं [**दे**] १ हंस, पक्षि-विशेष; २ वृषभ बैल; ३ कमल; (दे ६, ७६)।

पाडलसउण पुं [**दे**] हंस, पक्षि-विशेष; (दे ६, ४६)।

पाडला स्त्री [**पाटला**] वृक्ष-विशेष, पाढल का पेड़, पाडरि; (गा ४५६; सुर ३, ५२; सम १५२), "चंपा य पाडलरुक्खा जया य वसुपुज्जपत्थिवा होइ" (पउम २०, ३८)।

पाडलि स्त्री [**पाटलि**] ऊपर देखो; (गा ४६८)। °**उत्त**, °**पुत्त** न [°**पुत्र**] नगर-विशेष, पटना, जो आजकल विहार प्रदेश का प्रधान नगर है; (हे २, १५०; महा; पि २६२; चारु ३६)। °**पुत्त** वि [°**पुत्र**] पाटलिपुत्र-संबन्धी, पटना का; (पव १११)। °**संड** न [°**षण्ड**] नगर-विशेष; (विपा १, ७; सुपा ८३)। देखो **पाडली**।

पाडलिय वि [**पाटलित**] श्वेत-रक्त वर्ण वाला किया हुआ; (गउड)।

पाडली देखो **पाडलि**; (उप पृ ३६०)। °**पुर** न [°**पुर**] पटना नगर; (धर्मवि ४२)। °**वुत्त** न [°**पुत्र**] पटना नगर; (षड्)।

पाडव न [**पाटव**] पटुता, निपुणता; (धम्म १० टी)।

पाडवण न [**दे**] पाद-पतन, पैर में गिरना, प्रणाम-विशेष; (दे ६, १८)।

पाडहिग } वि [**पाटहिक**] ढोल बजाने वाला, ढोली; (स
पाडहिय } २१६)।

पाडहुक वि [**दे**] प्रतिभू, मनौतिया, जामिनदार; (षड्)।

पाडिअ वि [**पाटित**] फाड़ा हुआ, विदारित; (स ६६६)।

पाडिअ वि [**पातित**] गिराया हुआ; (पाअ; प्रासू २; भवि)।

पाडिअग्ग पुं [**दे**] विश्राम; (दे ६, ४४)।

पाडिअज्झ पुं [**दे**] पिता के घर से वधू को पति के घर ले जाने वाला; (दे ६, ४३)।

पाडिआ देखो **पाडय=**पातक।

पाडिएक्क } न [**प्रत्येक**] हर एक; (हे २, २१०; कप्प;
पाडिक } पाअ; गाया १, १६; २, १; सूअनि १२१ टी; कुमा), "एगे जीवे पाडिक्कएणं सरीरएणं" (ठा १—पत्र १६)।

पाडिच्चरण न [**प्रतिचरण**] सेवा, उपासना; (उप पृ ३४६)।

पाडिच्छय वि [**प्रतीप्सक**] ग्रहण करने वाला; (सुख २, १३)।

पाडिज्जंत देखो **पाड**=पातय्।

पाडिपह न [**प्रतिपथ**] अभिमुख, सामने; (सूअ २, २, ३१)।

पाडिपहिअ देखो **पडिपहिअ**; (सूअ २, २, ३१)।

पाडिपिद्धि स्त्री [**दे**] प्रतिस्पर्धा; (षड्)।

पाडिप्पवग पुं [**पारिप्लवक**] पक्षि-विशेष; (पउम १४, १८)।

पाडिप्फद्धि वि [**प्रतिस्पर्धिन्**] स्पर्धा करने वाला; (हे १, ४४; २०६)।

पाडियंतिय न [**प्रात्यन्तिक**] अभिनय-विशेष; (राज)।

पाडियक देखो **पाडिएक**; (औप)।

पाडिवय वि [**प्रातिपद**] १ प्रतिपत्-संबन्धी, पडवा तिथि का; " जह चंदो पाडिवओ पडिपुन्नो सुक्कपक्खम्मि " (उवर ६०)। २ पुं. एक भावी जैन आचार्य; (विचार ५०६)।

पाडिवया स्त्री [**प्रतिपत्**] तिथि-विशेष, पक्ष की पहली तिथि, पडवा; (सम २६; गाया १, १०; हे १, १५; ४४)।

पाडिवेसिय वि [**प्रातिवेश्मिक**] पड़ोसी। स्त्री—°**या**; (सुपा ३६४)।

पाडिसार पुं [**दे**] १ पटुता, निपुणता; २ वि. पटु, निपुण; (दे ६, १६)।

पाडिसिद्धि देखो **पडिसिद्धि**=प्रतिसिद्धि; (हे १, ४४; प्राप्र)।

पाडिसिद्धि स्त्री [**दे**] १ स्पर्धा; (दे ६, ७७; कप्पू; कुप्र ४६)। २ समुदाचार; ३ वि. सदृश, तुल्य; (दे ६, ७७)।

पाडिसिरा स्त्री [**दे**] खलीन-युक्ता; (दे ६, ४२)।

पाडिस्सुइय न [**प्रातिश्रुतिक**] अभिनय का एक भेद; (राज)।

पाडिहच्छी } स्त्री [**दे**] शिरो-माल्य, मस्तक-स्थित पुष्प-
पाडिहत्थी } माला; (दे ६, ४२; राज)।

पाडिहारिय वि [**प्रातिहारिक**] वापिस देने योग्य वस्तु; (विसे ३०५७; औप; उवा)।

पाडिहेर न [**प्रातिहार्य**] १ देवता-कृत प्रतीहार-कर्म, देव-कृत पूजा-विशेष; (औप; पव ३६), " इय मामइए भावा इहइंपि नागदत्तनरनाहो। जाओ सपाडिहेरो " (सुपा ५४४)। २ देव-सान्निध्य; (भत्त ६६), "बहूणं सुरेहिं कयं पाडिहेरं " (श्रु ६४; महा)।

पाडी स्त्री [**दे**] भैंस की बछिया, गुजराती में ' पाडी '; (गा ६५)।

पाडुंकी स्त्री [**दे**] ऋषी—जलम वाले—की पालकी; (दे ६, ३६)।

पाडुंगोरि वि [**दे**] १ विगुण, गुण-रहित; २ मद्य में आसक्त; ३ स्त्री. मजबूत वेष्टन वाला बाड़; " पाडुंगोरी च वृतिर्दीर्घ यस्या विग्रष्टनं परितः" (दे ६, ७८)।

पाडुक्क पुं [**दे**] समालम्भन, चन्दन आदि का शरीर में उपलेप; २ वि. पटु, निपुण; (दे ६, ७६)।

पाडुच्चिय वि [**प्रातीतिक**] किसी के आश्रय से होने वाला, आपेक्षिक। स्त्री- °**या**; (ठा २, १; नव १८)।

पाडुच्चा स्त्री [**दे**] तुरग-मण्डन, घोड़े का सिंगार; (दे ६, ३६; पाअ)।

पाडुहुअ वि [**दे**] प्रतिभू, मनौतिया, जामिनदार; (दे ६, ४२)।

पाडेक्क देखो **पाडिक्क**; (सम्म ५५)।

पाडोसिअ वि [**दे**] पड़ोसी; (सिरि ३१२; श्रा २७; सुपा ५५२)।

पाढ सक [**पाठय्**] पढ़ाना, अध्ययन कराना। पाढइ, पाढेइ; (प्राकृ ६०; प्राप्र)। कर्म —पाढिज्जइ; (प्राप्र)। संकृ— **पाढिऊण, पाढेऊण**; (प्राकृ ६१)। हेकृ—**पाढिउं, पाढेउं**; (प्राकृ ६१)। कृ—**पाढणिज्ज, पाढिअव्व, पाढेअव्व**; (प्राकृ ६१)।

पाढ पुं [**पाठ**] १ अध्ययन, पठन; (ओघभा ७१; विसे १३८४; सम्मत्त १४०)। २ शास्त्र, आगम; ३ शास्त्र का उल्लेख; " पाढो त्ति वा सत्थं ति वा एगट्ठा " (आचू १)। ४ अध्यापन, शिक्षा; (उप पृ ३०८; विसे १३८४)।

पाढ देखो **पाढय**=पाठक; (श्रा ६३ टी)।

पाढंतर न [**पाठान्तर**] भिन्न पाठ; (श्रावक ३११)।

पाढग वि [**पाठक**] १ उच्चारण करने वाला; " पढियं मंगल-पाढगेहिं " (कुप्र ३२)। २ अभ्यासी, अध्ययन करने वाला; ३ अध्यापन करने वाला, अध्यापक; "वत्थुपाढगा ", "सुमिण-पाढगाणं ", लक्खणसुमिणपाढगाणं " (धर्मवि ३३; गाया १, १; कप्प)।

पाढण न [**पाठन**] अध्यापन; (उप पृ १२८; प्राकृ ६१; सम्मत्त १४२)।

पाढणया स्त्री [**पाठना**] ऊपर देखो; (पंचभा ४)

पाढय देखो **पाढग**; (कप्प; स ७; गाया १, १—पत्र २०; (महा) ।

पाढव त्रि [**पार्थिव**] पृथिवी का विकार, पृथिवी का; "पाढवं सरीरं हिच्चा" (उत्त ३, १३) ।

पाढा स्त्री [**पाठा**] वनस्पति-विशेष, पाट, पाट का गाछ; (पण्ण १७) ।

पाढाव सक [**पाठय्**] पढ़ाना, अध्यापन करना। पाढावेइ; (प्राप्र)। संकृ—**पाढाविऊण, पाढावेऊण**; (प्राकृ ६१)। हेकृ—**पाढाविउं, पाढावेउं**; (प्राकृ ६१)। कृ—**पाढावणिज्ज, पाढाविअव्व**; (प्राकृ ६१) ।

पाढावअ वि [**पाठक**] अध्यापक; (प्राकृ ६०) ।

पाढावण न [**पाठन**] अध्यापन; (प्राकृ ६१) ।

पाढाविअ त्रि [**पाठित**] अध्यापित; (प्राकृ ६१) ।

पाढाविअवंत वि [**पाठितवत्**] जिसने पढ़ाया हो वह; (प्राकृ ६१) ।

पाढाविउ) वि [**पाठयितृ**] पढ़ाने वाला; (प्राकृ ६१; **पाढाविर**) ६०) ।

पाढिअ वि [**पाठित**] पढ़ाया हुआ, अध्यापित; (प्राप्र) ।

पाढिअवंत देखो **पाढाविअवंत**; (प्राकृ ६१) ।

पाढिआ स्त्री [**पाठिका**] पढ़ने वाली स्त्री; (कप्पू) ।

पाढिउ) वि [**पाठयितृ**] अध्यापक, पढ़ाने वाला; (प्राकृ **पाढिर**) ६१) ।

पाढीण पुं [**पाठीन**] मत्स्य-विशेष, मत्स्य की एक जाति; (गा ४१४; विक्र ३२) ।

पाण सक [**प्र+आनय्**] जिलाना। वकृ - **पाणअंत**; (नाट—मालती ५) ।

पाण पुं स्त्री [**दे**] श्वपच, चाण्डाल; (दे ६, ३८; उप पृ १५४; महा; पाअ; ठा ८, ४; वव १)। स्त्री - **°णी**; (सुख ६, १; महा) । **°उडी** स्त्री [**°कुटी**] चाण्डाल की झोंपड़ी; (गा २२७) । **°विलया** स्त्री [**°वनिता**] चाण्डाली; (उप ७६८ टी) । **°डंबर** पुं [**°डम्बर**] यक्ष-विशेष; (वव ७) । **°हिवइ** पुं [**°धिपति**] चाण्डाल-नायक; (महा) ।

पाण न [**पान**] १ पीना, पीने की क्रिया; (सुर ३, १०) । २ पीने की चीज, पानी आदि; (सुज्ज २० टी; पडि; महा; आचा) । ३ पुं. गुच्छ-विशेष; "सणपाणकासमद्दगअग्घाडगसामसिंदुवारे य" (पण्ण १) । **°पत्त** न [**°पात्र**] पीने का भोजन, प्याला; (दे) । **°गार** न [**°गार**] मद्य-गृह; (गाया १, २; महा) । **°हार** पुं [**°हार**] एकाशन तप; (संबोध ५८) ।

पाण पुंन [**प्राण**] १ जीवन के आधार-भूत ये दश पदार्थ;—पाँच इन्द्रियाँ, मन, वचन और शरीर का बल, उच्छ्वास तथा निःश्वास; (जी २६; पण्ण १; महा; ठा १; ६) । २ समय-परिमाण विशेष, उच्छ्वास-निःश्वास-परिमित काल; (इक;अणु)। ३ जन्तु, प्राणी, जीव; "पाणाणि चेवं विणिहंति मंदा" (सूअ १, ७, १६; ठा ६; आचा; कप्प) । ४ जीवित, जीवन; (सुपा २६३; ५६३; कप्पू) । **°इत्त** वि [**°वत्**] प्राण वाला, प्राणी; (पि ६००) । **°च्चय** पुं [**°त्यय**] प्राण-नाश; (सुपा २६८; ६१६) । **°च्चाय** पुं [**°त्याग**] मरण, मौत; (सुर ४, १७०) । **°जाइय** वि [**°जातिक**] प्राणी, जीव, जन्तु; (आचा १, ६, १, १) । **°नाह** पुं [**°नाथ**] प्राणनाथ, पति, स्वामी; (रंभा) । **°प्पिया** स्त्री [**°प्रिया**] स्त्री, पत्नी; (सुर १, १०८) । **°वह** पुं [**°वध**] हिंसा; (पण्ह १, १) । **°वित्ति** स्त्री [**°वृत्ति**] जीवन-निर्वाह; (महा) । **°सम** पुं [**°सम**] पति, स्वामी; (पाअ) । **°सुहुम** न [**°सूक्ष्म**] सूक्ष्म जन्तु; (कप्प) । **°हिय** वि [**°हृत्**] प्राण-नाशक; (रंभा) । **°इंत** वि [**°वत्**] प्राण वाला, प्राणी; (प्राप्र) । **°इवाइया** स्त्री [**°तिपातिकी**] क्रिया-विशेष, हिंसा से होने वाला कर्म-बन्ध; (नव १७) । **°इवाय** पुं [**°तिपात**] हिंसा; (उवा) । **°उ** पुं न [**°युस्**] ग्रन्थांश-विशेष, बारहवाँ पूर्व; (सम २५; २६) । **°पाण**, **°पाणु** पुंन [**°पान**] उच्छ्वास और निःश्वास; (धर्मसं १०८; ६८) । **°याम** पुं [**°याम**] योगाङ्ग-विशेष - रेचक, कुम्भक और पूरक-नामक प्राणों को दमने का उपाय; (गउड) ।

पाणंतकर वि [**प्राणान्तकर**] प्राण-नाशक; (सुपा ६१४) ।

पाणंतिय वि [**प्राणान्तिक**] प्राण-नाश वाला; "पाणंतिया-वई पहु !" (सुपा ४५२) ।

पाणग पुंन [**पानक**] १ पेय-द्रव्य-विशेष; (पंचभा १; सुज्ज २० टी; कप्प) । २ वि. पान करने वाला (?) "ण पाणगो जं तती अगणो" (धर्मसं ८२; ७८) ।

पाणद्धि स्त्री [**दे**] रथ्या, मुहल्ला; (दे ६, ३६) ।

पाणम अक [**प्र+अण्**] निःश्वास लेना, नीचे साँसना। पाणमंति; (सम २; भग) ।

पाणय न [**पानक**] देखो **पाण**=पान; (विसे २५७८) ।

पाणय पुं [**प्राणत**] स्वर्ग-विशेष, दशवाँ देव-लोक; (सम ३७; भग; कप्प) । २ विमानेन्द्रक, देव-विमान विशेष; (देवेन्द्र १३५) । ३ प्राणत स्वर्ग का इन्द्र; (ठा ४, ४)। ४ प्राणत देवलोक में रहने वाला देव; (अणु) ।

पाणहा स्त्री [**उपानह्**] जूता; "पाणहाओ य छत्तं च णालीयं बालवीयणं" (सूअ १, ६, १८) ।

पाणाअअ पुं [**दे**] श्वपच, चाण्डाल; (दे ६, ३८) ।

पाणाम पुं [**प्राण**] निःश्वास; (भग) ।

पाणामा स्त्री [**प्राणामी**] दीक्षा-विशेष; (भग ३, १) ।

पाणाली स्त्री [**दे**] दो हाथों का प्रहार; (दे ६, ४०) ।

पाणि पुं [**प्राणिन्**] जीव, आत्मा, चेतन; (आचा; प्रासू १३६; १४४) ।

पाणि पुं [**पाणि**] हस्त, हाथ; (कुमा; स्वप्न ५३; प्रासू ६०) । °**गहण** देखो °**ग्गहण**; (भवि) । °**ग्गह** पुं [°**ग्रह**] विवाह; (सुपा ३७३; धर्मवि १२३) । °**ग्गहण** न [°**ग्रहण**] विवाह, सादी; (विपा १, ६; स्वप्न ६३; भवि)।

पाणिअ न [**पानीय**] पानी, जल; (हे १, १०१; प्राप्र; पराह १, ३; कुमा) । °**धरिया** स्त्री [°**धरिका**] पनिहारी; "जिणसत्तुस्स रगणो पाणियघ(? ध)रियं महादेवि" (णाया १, १२—पत्र १७५) । °**हारी** स्त्री [°**हारी**] पनिहारी; (दे ६, ५६; भवि) । देखो **पाणीअ** ।

पाणिणि पुं [**पाणिनि**] एक प्रसिद्ध व्याकरण-कार ऋषि; (हे २, १४७) ।

पाणिणीअ वि [**पाणिनीय**] पाणिनि-संबन्धी, पाणिनि का; (हे २, १४७) ।

पाणी देखो **पाण**=(दे) ।

पाणी स्त्री [**पानी**] वल्ली-विशेष; "पाणी सामावल्ली गुंजावल्ली य वत्थाणी" (पराण १ पत्र ३३) ।

पाणीअ देखो **पाणिअ**; (हे १, १०१; प्रासू १०५) । °**धरी** स्त्री [°**धरी**] पनिहारी; (णाया १, १ टी—पत्र ४३) ।

पाणु पुंन [**प्राण**] १ प्राण वायु; २ श्वासोच्छ्वास; (कम्म ५, ४०; औप; कप्प) । ३ समय-परिमाण-विशेष; "एगे ऊसासनीसासे एस पाणुत्ति वुच्चइ । सत्त पाणूणि से थोवे" (तंदु ३२) ।

पात } देखो **पाय**=पात्र; (सूअ १, ४, २; पराह २, ५—
पात् } पत्र १४८) । °**बंधण** न [°**बन्धन**] पात्र बाँधने का वस्त्र-खण्ड, जैन मुनि का एक उपकरण; (पराह २, ५) ।

पाद देखो **पाय**=पाद; (विपा १, ३) । °**सम** वि [°**सम**] गेय-विशेष; (ठा ७—पत्र ३६४)। °**दुपय** न [°**द्युपद**] दृष्टिवाद-नामक बारहवें जैन आगम-ग्रन्थ का एक प्रतिपाद्य विषय; (सम १२८) ।

पादु देखो **पाउ**=प्रादुस् ' पादुरेसए; (पि ३४१) । पादुरकासि; (सूअ १, २, २, ७) ।

पादो देखो **पाओ**=प्रातस्; (सुज्ज १, ६) ।

पादोसिय वि [**प्रादोषिक**] प्रदोष-काल का, प्रदोष-संबन्धी; (ओघ ६५८) ।

पादव देखो **पायव**; (गा ५३७ अ) ।

पाधन्न देखो **पाहन्न**; (धर्मसं ७८६)।

पाधार सक [**स्था+गम्, पाद+धारय्**] पधारना । "पाधारह निअगेहे" (श्रा १६) ।

पाबद्ध वि [**प्राबद्ध**] विशेष बँधा हुआ, पाशित; (निचू १६)।

पाभाइय } वि [**प्राभातिक**] प्रभात-संबन्धी; (ओघभा
पाभातिय } ३११; अनु ६; धर्मवि ५८) ।

पाम सक [**प्र+आप्**] प्राप्त करना; गुजराती में 'पामवुं' । "कारावइ पडिमं जिणाण जिअरागदोसमोहाणं । सो अन्नभवे पामइ भवमहणं धम्मवररयणं ॥" (रयण१२)। कर्म—पामिज्जइ; (सम्मत्त १४२) ।

पामण्ण न [**प्रामाण्य**] प्रमाणता, प्रमाणपन; (धर्मसं ७५)।

पामद्दा स्त्री [**दे**] दोनों पैर से धान्य-मर्दन; (दे ६, ४०)।

पामन्न देखो **पामण्ण**; (विसे १४६६; चेइय १२४) ।

पामर पुं [**पामर**] कृषीबल, कर्षक, खेती का काम करने वाला गृहस्थ; "पामरगहवइसंप्राणकामया दाणया हलिया" (पाअ; वज्जा १३४; गउड; दे ६, ४१; सुर १६, ५३) । २ हलकी जाति का मनुष्य; (कप्पू ; गा २३८) । ३ मूर्ख, बेवकूफ, अज्ञानी; (गा १६४), "को नाम पामरं मुत्तुं वयइ दुद्दमकद्दमे " (श्रा १२) ।

पामा स्त्री [**पामा**] रोग-विशेष, खुजली, खाज; (सुपा २२७) ।

पामाड पु [**प्रपुन्नाट**] पमाड़, पमार, पवाड़, चकवड़, वृक्ष-विशेष; (पाअ) ।

पामिच्च न [**दे. अपमित्य**] १ उधार लेना, वापिस देने का वादा कर ग्रहण करना; २ वि. जो उधार लिया जाय वह; (पिंड ९२, ३१६; आचा; ठा ३, ४; ६; औप; पराह २, ५; पव १२५; पंचा १३, ५; सुपा ६४३) ।

पामुक्क वि [**प्रमुक्त**] परित्यक्त; (पाअ; स ६५७) ।

पामूल न [**पादमूल**] पैर का मूल भाग, पाँव का अग्र भाग; (पउम ३, ६; सुर ८, १६६; पिंड ३२८)। देखो **पाय-मूल**=पादमूल।

पामोक्ख देखो **पमुह**=प्रमुख, (गाया १, ५; ८; महा)।

पामोक्ख पुं [**प्रमोक्ष**] मुक्ति, छुटकारा; (उप ६४८ टी)।

पाय पुं [**दे**] १ रथ-चक्र, रथ का पहिया; (दे ६, ३७)। २ फणी, साँप; (षड्)।

पाय पुं [**पाक**] १ पचन-क्रिया; २ रसोई; (प्राकृ १६; उप ७२८ टी)।

पाय देखो **पाव**; (चंड)।

पाय पुं [**पात**] १ पतन; (पंचा २, २५; से १, १६)। २ संबन्ध; " पुणो पुणो तरलदिट्ठिपाएहिं " (सुर ३, १३८)।

पाय पुं [**पाय**] पान, पीने की क्रिया; (श्रा २३)।

पाय पुं [**पाद**] १ गमन, गति; (श्रा २३)। २ पैर, चरण, पाँव; " चलणा कमा य पाया " (पाअ; गाया १, १)। ३ पद्य का चौथा हिस्सा; (हे ३, १३४; पिंग)। ४ किरण, " अंसू रस्सी पाया" (पाअ; अजि २८)। ५ सानु, पर्वत का कटक; (पाअ)। ६ एकाशन तप; (संबोध ५८)। ७ छः अंगुलों का एक नाप; (इक)। °**कंच-णिया** स्त्री [°**काञ्चनिका**] पैर प्रक्षालन का एक सुवर्ण-पात्र; (राज)। °**कंबल** पुंन [°**कम्बल**] पैर पोंछने का वस्त्र-खण्ड; (उत्त १७, ७)। °**कुक्कुड** पुं [°**कुक्कुट**] कुक्कुट-विशेष; (गाया १, १७ टी—पत्र २३०)। °**घाय** पुं [°**घात**] चरण-प्रहार; (पिंग)। °**चार** पुं [°**चार**] पैर से गमन; (गाया १, १)। °**चारि** वि [°**चारिन्**] पैर से यातायात करने वाला, पाद-विहारी; (पउम ६१, १६)। °**जाल**, °**जालग** न [°**जाल**, °**क**] पैर का आभूषण-विशेष; (औप; अजि ३१; पण्ह २, ५)। °**त्ताण** न [°**त्राण**] जूता, पगरखी; (दे १, ३३)। °**पलंब** पुं [°**प्रलम्ब**] पैर तक लटकने वाला एक आभूषण; (गाया १, १—पत्र ५३)। **पीढ** देखो °**वीढ**; (गाया १, १; महा)। °**पुंछण** न [°**प्रोञ्छन**] रजोहरण, जैन साधु का एक उपकरण; (आचा; ओघ ५११; ७०१, भग; उवा)। °**पडण** न [°**पतन**] पैर में गिरना, प्रणाम-विशेष; (पउम ६३, १८)। °**मूल** न [°**मूल**] १ देखो **पामूल**;(कस)। २ मनुष्यों की एक साधारण जाति, नर्तकों की एक जाति; "समागयाइं पायमूलाइं", " पुलइज्जमाणो पायमूलेहिं पत्तो रहस्समीवे " " पणामियाइं पायमूलाइं ", " सद्दावियाइं पायमूलाइं ", " पणच्चंतेहिं पायमूलेहिं " (स ७२१; ७२२; ७३४)। °**लेहणिआ** स्त्री [°**लेखनिका**] पैर पोंछने का जैन साधु का एक काष्ठ-मय उपकरण; (ओघ ३६)। °**वंदय** त्रि [°**वन्दक**] पैर पर गिर कर प्रणाम करने वाला; (गाया १, १३)। °**वडण** न [°**पतन**] पैर में गिरना, प्रणाम-विशेष; (हे १, २७०; कुमा; सुर २, १०६)। °**वडिया** स्त्री [°**वृत्ति**] पाद-पतन, पैर छूना, प्रणाम-विशेष; "पायवडियाए खेमकुसलं पुच्छंति " (गाया १, २; सुपा २५)। °**विहार** पुं [°**विहार**] पैर से गति; (भग)। °**वीढ** न [°**पीठ**] पैर रखने का आसन; (हे १, २७०; कुमा; सुपा ६८)। °**सीसग** न [°**शीर्षक**] पैर के ऊपर का भाग; (राय)। °**उलअ** न [°**कुलक**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

पाय देखो **पत्त**=पात्र; (आचा; औप; ओघभा ३६; १७४)। °**केसरिआ** स्त्री [°**केसरिका**] जैन साधुओं का एक उपकरण, पात्र-प्रमार्जन का कपड़ा; (ओघ ६६८; विसे २५५२ टी)। °**ट्ठवण**, °**ठवण** न [°**स्थापन**] जैन मुनिओं का एक उपकरण, पात्र रखने का वस्त्र-खण्ड; (विसे २५५२ टी; ओघ ६६८)। °**णिज्जोग**, °**निज्जोग** पुं [°**निर्योग**] जैन साधु का यह उपकरण-समूह;—पात्र पात्रबन्ध, पात्रस्थापन, पात्र-केशरिका, पटल, रजस्त्राण और गुच्छक; (पिंड २६; बृह ३; विसे २५५२ टी)। **पडिमा** स्त्री [**प्रतिमा**] पात्र-संबन्धी अभिग्रह- प्रतिज्ञा-विशेष; (ठा ४, ३)। देखो **पाद**=पात्र।

पाय (अप) देखो **पत्त**=प्राप्त; (पिंग)।

पाय अ [**प्रायस्**] प्रायः, बहुत करके; "पायप्पाणं वणेइ त्ति " (पिंड ४४३)।

पाय पुं.ब. [**पाद**] पूज्य; " संथुआ अजिअसंतिपायया" (अजि ३४)।

पायए देखो **पा**=पा।

पायं देखो **पाय**; (स ७६१; सुपा २८; ५६६; श्रावक ७३)।

पायं अ [**प्रातस्**] प्रभात; (सूअ १, ७, १४)।

पायंगुट्ठ पुं [**पादाङ्गुष्ठ**] पैर का अंगूठा; (गाया १, ८)।

पायंदुय पुं [**पादान्दुक**] पैर बाँधने का काष्ठमय उपकरण; (विपा १, ६—पत्र ६६)।

पायक्क देखो **पाइक्क**, (सम्मत्त १७६)।

पायक्खिणण न [**प्रादक्षिण्य**] प्रदक्षिणा; (पउम ३२, ६२)।

पायग न [**पातक**] पाप; (श्रावक २४८)।

पायच्छित्त पुंन [**प्रायश्चित्त**] पाप-नाशन कर्म, पाप-क्षय करने वाला कर्म; "पारंचिओ नाम पायच्छित्तो संवुत्तो" (सम्मत १४४; उवा; औप; नव २६)।

पायड देखो **पागड**=प्र+कटय्। पायडइ; (भवि)। वकृ---**पायडंत**; (सुपा २५६)। कवकृ -**पायडिज्जंत**; (गा ६८५)। हेकृ -**पायडिउं**; (कुप्र १)।

पायड न [**दे**] अंगण, आँगन; (दे ६, ४०)।

पायड देखो **पागड**=प्रकट; (हे १, ४४; प्राप्र; प्राप ७३; जी १२; प्रासू ६४)।

पायड देखो **पागड**=प्राकृत; " अहंपि दाव दिअसे णाअरं परिब्भमिअ अलद्धभोआ पाअडगणिआ विअ गत्तिं पस्सदो सइद् आअच्छामि " (अवि २६)।

पायड वि [**प्रावृत**] आच्छादित; (विसे २५७६ टी)।

पायडिअ वि [**प्रकटित**] व्यक्त किया हुआ; (कुप्र ४; से १, ५३; गा १६६; २६०; गउड; स ४६८)।

पायडिल्ल वि [**प्रकट**] खुला; (वज्जा १०८)।

पायण न [**पायन**] पिलाना, पान कराना; (णाया १, ७)।

पायत्त न [**पादात**] पदाति-समूह, प्यादों का लश्कर; (उत्त १८, २; औप; कप्प)। °**णिय** न [°**नीक**] पदाति-सैन्य; (पि ८०)।

पायप्पहण पुं [**दे**] कुक्कुट, मुर्गा; (दे ६, ४५)।

पायय न [**पातक**] पाप; (अच्चु ४३)।

पायय देखो **पाव**=पाप; (पाअ)।

पायय देखो **पागड**; (हे १, ६७)।

पायय देखो **पायव**; (से ६, ७)।

पायय देखो [illegible]=पावक; (अभि १२५)।

पायय [illegible]=पाद; (कप्प)।

पायरास पुं [**प्रातराश**] प्रातःकाल का भोजन, जल-पान, जलखवा; (आचा; णाया १, ८)।

पायल न [**दे**] चक्षु, आँख; (दे ६, ३८)।

पायव पुं [**पादप**] वृक्ष, पेड़; (पाअ)।

पायव्व देखो **पा**=पा।

पायस पुंन [**पायस**] दूध का मिष्टान्न, खीर; "पायसा खीरी" (पाअ; सुपा ४३८)।

पायसो अ [**प्रायशस्**] प्रायः, बहुत कर; (उप ४४६; पंचा ३, २७)।

पायार पुं [**प्राकार**] किला, कोट, दुर्ग; (पाअ; हे १, २६८; कुमा)।

पायाल न [**पाताल**] रसा-तल, अधो भुवन; (हे १, १८०; पाअ)। °**कलस** पुं [°**कलश**] समुद्र के मध्य में स्थित कलशाकार वस्तु; (अणु)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष; (पउम ४५, ३६)। °**मंदिर** न [°**मन्दिर**] पाताल-स्थित गृह; (महा)। °**हर** न [°**गृह**] वही अर्थ; (महा)।

पायालंकारपुर न [**पातालल‌ङ्कापुर**] पाताल-लंका, रावण की राजधानी; " पायालंकारपुरं सिग्घं पत्ता भउव्विग्गा " (पउम ६, २०१)।

पायावच्च न [**प्राजापत्य**] अहोरात्र का चौदहवाँ मुहूर्त; (सम ५१)।

पायाविय वि [**पायित**] पिलाया हुआ; (पउम ११, ४१)।

पायाहिण न [**प्रादक्षिण्य**] १ वेष्टन; (पव ६१)। २ दक्षिण की ओर; " पायाहिणेण तिहिं पंतिआहिं भ्माएइ लद्धिपए " (सिरि १६६)।

पायाहिणा देखो **पयाहिणा**; " पायाहिणं करिंतो " (उत्त ६, ५६; सुख ६, ५६)।

पार अक [**शक्**] सकना, करने में समर्थ होना। पारइ, पारेइ; (हे ४, ८६; पाअ)। वकृ -**पारंत**; (कुमा)।

पार सक [**पारय्**] पार पहुँचना, पूर्ण करना। पारेइ; (हे ४, ८६; पाअ)। हेकृ -**पारित्तए**; (भग १२, १)।

पार पुंन [**पार**] १ तट, किनारा; (आचा)। २ पर्ला किनारा; " परतीरं पारं " (पाअ), " किह म्ह होही भवजलहिपारं " (सिरि ५)। ३ परलोक, आगामी जन्म; ४ मनुष्य-लोक-भिन्न नरक आदि; (सूअ १, ६, २८)। ५ मोक्ष, मुक्ति, निर्वाण; " पारं पुणणुत्तरं बुहा विंति " (बृह ४)। °**ग** वि [°**ग**] पार जाने वाला; (औप; सुपा २५४)। °**गय** वि [**गत**] १ पार-प्राप्त; (भग; औप)। २ पुं. जिन-देव, भगवान् अर्हन् ; (उप १३२ टी)। °**गामि** वि [°**गामिन्**] पार पहुँचने वाला; (आचा; कप्प; औप)। °**पाणग** न [°**पानक**] पेय द्रव्य-विशेष; (णाया १, १७)। °**विउ** वि [°**विद्**] पार को जानने वाला; (सूअ १, १, ६०)। °**भोय** वि [°**भोग**] पार-प्रापक; (कप्प)।

पार देखो **पायार**; (हे १, २६८; कुमा)।

पारंक न [**दे**] मदिरा नापने का पात्र; (दे ६, ४१)।

पारंगम वि [**पारगम**] १ पार जाने वाला; २ पार-गमन; (आचा)।

पारंगय वि [**पारंगत**] पार-प्राप्त; (कुप्र ११)।

पारंचि वि [**पाराञ्चि**] सर्वोत्कृष्ट—दशम—प्रायश्चित्त करने वाला; "पारंचीणं दोण्हवि" (बृह ४)।

पारंचिय न [**पाराञ्चिक**] १ सर्वोत्कृष्ट प्रायश्चित्त, तप-विशेष से अतिचारों की पार-प्राप्ति; (ठा ३, ४—पत्र १६२; औप)। २ वि. सर्वोत्कृष्ट प्रायश्चित्त करने वाला; (ठा ३, ४)।

पारंचिय [**पाराञ्चित**] ऊपर देखो; (कस; बृह ४)।

पारंपज्ज न [**पारम्पर्य**] परम्परा; (रंभा १५)।

पारंपर पुं [**दे**] राक्षस; (दे ६, ४४)।

पारंपर } न [**पारम्पर्य**] परम्परा; (पउम २१, ८०; **पारंपरिय** } आरा १६; धर्मसं १११८; १३१७), "आयरियपारंपर्ये (? रिए) ण आगयं" (सुअनि १२७—पृष्ठ ४८७)।

पारंपरिय वि [**पारम्परिक**] परंपरा से चला आता; (उप ७२८ टी)।

पारंभ सक [**प्र + रभ्**] १ आरम्भ करना, शुरू करना। २ हिंसा करना, मारना। ३ पीड़ा करना। पारंभेमि; (कुप्र ७०)। कवकृ—"तगहाए **पारज्झमाणा**" (औप)।

पारंभ पुं [**प्रारम्भ**] शुरू, उपक्रम; (विसे १०२०; पव १६६)।

पारंभिय वि [**प्रारब्ध**] आरब्ध, उपक्रान्त; (धर्मवि १४४; सुर २, ७७; १२, १५६; सुपा ५५)।

पारकेर } वि [**परकीय**] पर का, अन्यदीय; (हे १, ४४; **पारक्क** } २, १४८; कुमा)।

पारज्झमाण देखो **पारंभ**=प्र+रभ्।

पारण } न [**पारण, °क**] व्रत के दूसरे दिन का भोजन, **पारणग** } तप की समाप्ति के अनन्तर का भोजन; (सण; उवा; **पारणय** } महा)।

पारणा स्त्री [**पारणा**] ऊपर देखो। **°इत्त** वि [**°वत्**] पारण वाला; (पंचा १२, ३५)।

पारतंत न [**पारतन्त्र्य**] परतन्त्रता, पराधीनता; (उप २५२; पंचा ६, ४१; ११, ७)।

पारत्त अ [**परत्र**] परलोक में, आगामी जन्म में; "पारत्त बिइज्जओ धम्मो" (पउम ५, १६३)।

पारत्त वि [**पारत्र, पारत्रिक**] पारलौकिक, आगामी जन्म से संबन्ध रखने वाला; "इत्तो पारत्तहियं ता कीरउ देव ! वंकचूलिस्स" (धर्मवि ६०; ओघ ६२; स २४६)।

पारत्ति स्त्री [**दे**] कुसुम-विशेष; (गउड; कुमा)।

पारत्तिय वि [**पारत्रिक**] देखो **पारत्त**=पारत्र; (स ७०७)।

पारदारिय वि [**पारदारिक**] परस्त्री-लम्पट; (णाया १, १८—पत्र २३६)।

पारद्ध वि [**प्रारब्ध**] १ जिसका प्रारम्भ किया गया हो वह; "पारद्धा य विवाहनिमित्तं सयला सामग्गी" (महा)। २ जो प्रारम्भ करने लगा हो वह; "तओ अवरण्हसमए पारद्धो नच्चिउं" (महा)।

पारद्ध न [**दे**] पूर्व-कृत कर्म का परिणाम, प्रारब्ध; २ वि. आखेटक, शिकारी; ३ पीड़ित; (दे ६, ७७)।

पारद्धि स्त्री [**पापर्द्धि**] शिकार, मृगया; (हे १, २३५; कुमा; उप पृ २५७; सुपा २१६)।

पारद्धिअ वि [**पापर्द्धिक**] शिकारी, शिकार करने वाला; गुजराती में 'पारधी'; "मयगमहापारद्धियनिसायबाणावलीविद्धा" (सुपा ७१; मोह ७६)।

पारमिया स्त्री [**पारमिता**] बौद्ध-शास्त्र-परिभाषित प्राणातिपात-विरमणादि शिक्षा-व्रत, अहिंसा आदि व्रत; (धर्मसं ६८८)।

पारम्म न [**पारम्य**] परमता, उत्कृष्टता; (अज्झ ११४)।

पारय पुं [**पारद**] धातु-विशेष, पारा, रस-धातु। **°मद्दण** न [**°मर्दन**] आयुर्वेद-विहित रीति से पारा का मारण, रसायण-विशेष; "अंग-कडिणत्थाहेउं च संवंति पारयमद्दणं" (स २८६)। २ वि. पार-प्रापक; (श्रु १०६)।

पारय न [**दे**] सुरा-भाण्ड, दारू रखने का पात्र; (दे ६, ३८)।

पारय देखो **पार-ग**; (कप्प; भग; अंत)।

पारय पुं [**प्रावारक**] १ पट, वस्त्र; २ वि. आच्छादक; (हे १, २७१; कुमा)।

पारलोइअ वि [**पारलौकिक**] परलोक-संबन्धी, आगामी जन्म से संबन्ध रखने वाला; (पगह १, ३; ४; सुअ २, ७, २३; कुप्र ३८१; सुपा ४६१)।

पारवस्स न [**पारवश्य**] परवशता, पराधीनता; (रयण ८१)।

पारस पुं [**पारस**] १ अनार्य देश-विशेष, फारस देश, ईरान; (इक)। २ मणि-विशेष, जिसके स्पर्श से लोहा सुवर्ण हो जाता है; (संबोध ५३)। ३ पारस देश में रहने वाली मनुष्य-जाति; (पगह १, १)। **°उल** न [**°कुल**] १ ईरान देश; "भरिऊण भंडस्स वहणाइं पत्तो पारसउलं", "इओ य सो अयलो पारसउले विढविय बहुयं दव्वं" (महा)। २ वि. पारस देश का, ईरान का निवासी; "मागहयपारसउला

कालिंगा सीहला य तहा " (पउम ६६, ५५)। °कूल न [°कूल] ईरान का किनारा, ईरान देशकी सीमा; (आवम)।
पारसिय वि [**पारसिक**] फारस देश का; "सहसा पारसिय-सुओ समागओ रायपयमूले", "पारसियकीरमिहुणं " (सुपा २६७; ३६०)।
पारसी स्त्री [**पारसी**] १ पारस देश की स्त्री; (औप; णाया १, १—पत्र ३७; इक)। २ लिपि-विशेष, फारसी लिपि; (विसे ४६४ टी)।
पारसीअ वि [**पारसीक**] फारस देश का निवासी; (गउड)।
पाराई स्त्री [**दे**] लोह-कुशी-विशेष, लोहे की दंडाकार छोटी वस्तु; "चडवेलावज्झपट्टपाराइं(? ई)छिवकलयवरत्तनेत्तप्पहारसयतालियंगमंगा" (पण्ह २, ३)।
पाराय देखो **पारावय**; (प्राप्र)।
पारायण न [**पारायण**] १ पार-प्राप्ति; (विसे ५६५)। २ पुराण-पाठ-विशेष; "अधीउ(? य)समत्तपारायणा साखापारओ जाओ" (सुख २, १३)।
पारावय देखो **पारेवय**; (पाअ; प्राप्र; गा ६४; कप्प ५६ टि)।
पारावर पुं [**दे**] गवाक्ष, वातायन; (दे ६, ४३)।
पारावार पुं [**पारावार**] समुद्र, सागर; (पाअ; कुप्र ३७०)।
पाराविअ वि [**पारित**] जिसको पारणा कराया गया हो वह; (कुप्र २१२)।
पारासर पुं [**पाराशर**] १ ऋषि-विशेष; (सूअ १, ३, ४, ३)। २ न. गोत्र-विशेष, जो वशिष्ठ गोत्र की एक शाखा है; ३ वि. उस गोत्र में उत्पन्न; (ठा ७—पत्र ३६०)। ४ पुं. भिक्षुक; ५ कर्म-त्यागी संन्यासी; 'अंतेवि पारासरा अत्थि" (सुत्र २, ३१)।
पारिओसिय वि [**पारितोषिक**] तुष्टि-जनक दान, प्रसन्नता-सूचक दान, पुरस्कार; (सम्मत्त १२२; स १६३; सुर १६, १८२; विचार १७१)।
पारिच्छा देखो **परिच्छा**; "वयपरिणामे चिंता गिहं समप्पेमि तासि पारिच्छा" (उप १७३; उप पृ २७५)।
पारिच्छेज्ज देखो **परिच्छेज्ज**; (णाया १, ८—पत्र १३२)।
पारिजाय देखो **पारिय**=पारिजात; (कुमा)।
पारिट्ठावणिआ स्त्री [**पारिष्ठापनिकी**] समिति-विशेष, मल आदि के उत्सर्ग में सम्यक् प्रवृत्ति; (सम १०; औप; कप्प)।
पारिडि स्त्री [**प्रावृति**] प्रावरण, वस्त्र, कपड़ा; " विक्किणइ माहमासम्मि पामरो पारिडिं बइल्लेण" (गा २३८)।
पारिणामिअ देखो **परिणामिअ**= पारिणामिक; (अणु; कम्म ४, ६६)।
पारिणामिआ } देखो **परिणामिआ**; (आव १; णाया १,
पारिणामिगी } १—पत्र ११)।
पारितावणिया स्त्री [**पारितापनिकी**] दूसरे को परिताप—दुःख—उपजाने से होने वाला कर्म-बन्ध; (सम १०)।
पारितावणी स्त्री [**पारितापनी**] ऊपर देखो; (नव १७)।
पारितोसिअ देखो **पारिओसिय**; (नाट; सुपा २७; प्रामा)।
पारित्त देखो **पारत्त**=परत्र; " पारित्त बिइज्जओ धम्मो " (तंदु ५६)।
पारिप्पव पुं [**पारिप्लव**] पक्षि-विशेष; (पण्ह १, १—पत्र ८)।
पारिभद्द पुं [**पारिभद्र**] वृक्ष-विशेष, फरहद का पेड़; (कप्पू)।
पारिय वि [**पारित**] पूर्ण किया हुआ; (रयण १६)।
पारिय पुं [**पारिजात**] १ देव-वृक्ष विशेष, कल्प-तरु विशेष; २ फरहद का पेड़, "कप्पूरपारियाण य अहिअयरो मालईगंधो" (कुमा ५, १३)। ३ न. पुष्प-विशेष, फरहद का फूल जो रक्त वर्ण का और अत्यन्त शोभायमान होता है; " सुहिए य विढप्पइ पारियच्छि सुंडीरहं खंडइ वसइ लच्छि " (भवि)।
पारियत्त पुं [**पारियात्र**] देश-विशेष; " परिब्भमंतो पत्तो पारियत्तविसयं " (कुप्र ३६६)।
पारियाय देखो **पारिय**=पारिजात; (सुपा ७६; से ६, १८; महा; स ७५६)।
पारियावणिया देखो **पारितावणिया**; (ठा २, १—पत्र ३६)।
पारियावणिया देखो **परियावणिया**; (स ५५१)।
पारियासिय वि [**परिवासित**] वासी रखा हुआ; (कस)।
पारिव्वज्ज न [**पारिव्राज्य**] संन्यासिपन, संन्यास; (पउम ८२, २४)।
पारिव्वाई स्त्री [**पारिव्राजी, परिव्राजिका**] संन्यासिनी; (उप पृ २७६)।
पारिव्वाय वि [**पारिव्राज**] संन्यासि-संबन्धी; (राज)।
पारिसज्ज वि [**पारिषद्य**] सभ्य, सभासद; (धर्मवि ६)।
पारिसाडणिया स्त्री [**पारिशाटनिकी**] परिशाटन—परित्याग—से होने वाला कर्म-बन्ध; (आव ४)।
पारिहच्छी स्त्री [**दे**] माला; (दे ६, ४२)।
पारिहट्टी स्त्री [**दे**] १ प्रतिहारी; २ आकृष्टि, आकर्षण; ३ चिर-प्रसूता महिषी, बहुत देर से व्यायी हुई भैंस; (दे ६, ७२)।

पारिहत्थिय वि [**पारिहस्तिक**] स्वभाव से निपुण; (ठा ६—पत्र ४५१) ।

पारिहारिय वि [**पारिहारिक**] तपस्वी विशेष, परिहार-नामक व्रत करने वाला; (कप्प) ।

पारिहासग पुं [**पारिहासक**] कुल-विशेष, जैन मुनिओं के एक कुल का नाम; (कप्प) ।

पारी स्त्री [**दे**] दोहन-भाण्ड, जिस में दोहन किया जाता है वह पात्र-विशेष; (दे ६, ३७; गउड ५७७) ।

पारीण वि [**पारीण**] पार-प्राप्त; "धीवरगन्थाण पारीणो" (धर्मवि १३; सिरि ४८६; सम्मत ७५) ।

पारुअग्ग पुं [**दे**] विश्राम; (दे ६, ४४) ।

पारुअल्ल पुं [**दे**] पृथुक, चिउड़ा; (दे ६, ४४) ।

पारुसिय देखो **फारुसिय**; (आचा १, ६, ४, १ टि) ।

पारुहल्ल वि [**दे**] मालीकृत, श्रेणी रूप से स्थापित; "पाली-वंधं च पारुहल्लम्मि" (दे ६, ४५) ।

पारेवई स्त्री [**पारापती**] कबूतरी, कबूतर की मादा; (विपा १, ३) ।

पारेवय पुं [**पारापत**] १ पक्षि-विशेष, कबूतर; (हे १, ८०; कुमा; सुपा ३२८) । २ वृक्ष-विशेष; ३ न. फल-विशेष; (पगण १७) ।

पारोक्ख वि [**पारोक्ष**] परोक्ष-विषयक, परोक्ष-संबन्धी; (धर्मसं ५०२) ।

पारोह देखो **परोह**; (हे १, ४४; गा ५५५; गउड) ।

पारोहि वि [**प्ररोहिन्**] प्ररोह वाला, अंकुर वाला; (गउड) ।

पाल सक [**पालय्**] पालन करना, रक्षण करना । पालेइ; (भग; महा) । वकृ—**पालयंत, पालंत, पालिंत, पाले-माण**; (सुर २, ७१; से ४६; महा; औप; कप्प) । संकृ—**पालइत्ता, पालित्ता, पालेऊण**; (कप्प; महा), **पालेवि** (अप); (हे ४, ४४१) । कृ—**पालियव्व, पालेयव्व**; (सुपा ४३५; ३७६; महा) ।

पाल देखो **पार**=पारय् । संकृ **पालइत्ता** ; (कप्प) ।

पाल पुं [**दे**] १ कलवार, शराब बेचने वाला; २ वि. जीर्ण, फटा-टूटा; (दे ६, ७५) ।

पाल पुंन [**पाल**] आभूषण-विशेष; "मुरविं वा पालं वा तिसरयं वा कडिसुत्तगं वा" (औप) । २ वि. पालक, पालन-कर्ता; "जो सयलसिंधुसायरहो पालु" (भवि) । स्त्री—**°ला**; (वव ४) ।

पालंक न [**पालङ्क्य**] तरकारी-विशेष, पालक का शाक; (बृह १) ।

पालंगा स्त्री [**पालङ्क्या**] ऊपर देखो; (उत्ता) ।

पालंत देखो **पाल**=पालय् ।

पालंब पुं [**प्रालम्ब**] १ अवलम्बन, सहारा; "इइ तड-विडविपालंबं" (सुपा ६३५) । २ गले का आभूषण-विशेष; (औप; कप्प) । ३ दीर्घ, लम्बा; (जो) । ४ पुंन. ध्वजा के नीचे लटकता वस्त्राञ्चल; "आऊलं पालंबं" (पाअ) ।

पालक्का स्त्री [**पालक्या**] देखो **पालंगा**; "वत्थुलपोरग-मज्जारपोइवल्ली य पालक्का" (पगण १ —पत्र ३४) ।

पालग देखो **पालय**; (कप्प; औप; विसे २८५६; संति १; सुर ११, १०८) ।

पालण न [**पालन**] १ रक्षण; (महा; प्रासू ३) । २ वि. रक्षण-कर्ता; "धम्मस्स पालणो चेव" (संबोध १६; से ६७) ।

पालद्दुह पुं [**दे**] वृक्ष-विशेष; (उप १०३१ टी) ।

पालप्प पुं [**दे**] १ प्रतिसार; २ वि. विप्लुत; (दे ६, ७६) ।

पालय वि [**पालक**] १ रक्षक, रक्षण-कर्ता; (सुपा २७६; सार्ध १०) । २ पुं. सौधर्मेन्द्र का एक आभियोगिक देव; (ठा ८) । ३ श्रीकृष्ण का एक पुत्र; (पव २) । ४ भगवान् महावीर के निर्वाण के दिन अभिषिक्त अवंती (उज्जैन) का एक राजा; (विचार ४९२) । ५ देव-विमान विशेष; (राय २) ।

पालास पुं [**पालाश**] पलाश-संबन्धी; २ न. पलाश वृक्ष का फल, किंशुक-फल; (गउड) ।

पालि स्त्री [**पालि**] १ तालाव आदि का बन्ध; (सुर १३, ३२; अंत १२; महा) । २ प्रान्त भाग; (गा ६४६) । देखो **पाली**=पाली ।

पालि स्त्री [**दे**] १ धान्य मापने का नाप; २ पल्योपम, समय का सुदीर्घ परिमाण-विशेष; (उत्त १८, २८; सुख १८, २८) ।

पालिआ स्त्री [**दे**] खड्ग-मुष्टि, तलवार की मूठ; (पाअ) ।

पालिआ देखो **पाली**=पाली; "उज्जाणपालियाहिं कवित्तीहिं व बहुरसड्ढाहिं" (धर्मवि १३) ।

पालित्त पुं [**पादलिप्त**] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य; (पिंड ४९८; कुप्र १७८) ।

पालित्ताण न [**पादलिप्तीय**] सौराष्ट्र देश का एक प्राचीन नगर, जो आजकल भी 'पालिताणा' नाम से प्रसिद्ध है; (कुप्र १७६)।

पालित्तिअ स्त्री [**दे**] १ राजधानी; २ मूल-नीवी, ३ भाण्डार, निधि, ४ भंगी, प्रकार; (कप्पू)।

पालिय वि [**पालित**] रक्षित; (ठा १०; महा)।

पाली स्त्री [**पाली**] पंक्ति, श्रेणि; (गउड)। देखो **पालि**।

पाली स्त्री [**दे**] दिशा; (दे ६, ३७)।

पालीबंध पुं [**दे**] तालाव, सरोवर; (दे ६, ४५)।

पालीहम्म न [**दे**] वृति, वाड; (दे ६, ४५)।

पालेव पुं [**पादलेप**] पैर में किया हुआ लेप; (पिंड ५०३)।

पाव सक [**प्र+आप्**] प्राप्त करना। पावइ; (हे ४, २३६)। भवि—पाविहिमि; (पि ५३१)। कर्म—पाविज्जइ; (उव)। वकृ—पावंत, **पावन**; (पिंग; पउम १४, ३२)। कवकृ—**पाविज्जंत, पावेज्जमाण**; (पण्ह १, १; अंत २०)। संकृ—**पाविऊण**; (पि ५८६)। हेकृ—**पत्तुं, पावेउं**; (हास्य ११६; महा)। कृ—**पावणिज्ज, पाविअव्व**; (सुर ६, १४२; स ६८६)।

पाव देखो **पव्वाल**=प्लावय्। पावेइ; (हे ४, ४१)।

पाव पुंन [**पाप**] १ अशुभ कर्म-पुद्‌गल, कुकर्म; (आचा; कुमा; ठा १; प्रासु २५), "जम्मंतरकए पावे पाणी मुहुत्तेण निद्दहे" (गच्छ १, ६)। २ पापी, अधर्मी, कुकर्मी; (पण्ह १, १; कुमा ५, ६)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] अशुभ कर्म; (आचा)। °**कम्मि** वि [°**कर्मिन्**] कुकर्म करने वाला; (ठा ७)। °**दंड** पुं [°**दण्ड**] नरकावास-विशेष; (देवेन्द्र २६)। °**पगइ** स्त्री [°**प्रकृति**] अशुभ कर्म-प्रकृति; (राज)। °**यारि** वि [°**कारिन्**] दुराचारी; (पउम ६३, ४३; महा)। °**समण** पुं [°**श्रमण**] दुष्ट साधु; (उत्त १७, ३; ४)। °**सुमिण** पुंन [°**स्वप्न**] दुष्ट स्वप्न; (कप्प)। °**सुय** न [°**श्रुत**] दुष्ट शास्त्र; (ठा ६)।

पाव पुं [**दे**] सर्प, साँप; (दे ६, ३८)।

पाव (अप) देखो **पत्त**=प्राप्त; (पिंग)।

पावंस वि [**पापीयस्**] पापी, कुकर्मी; (ठा ४, ४ — पत्र २६५)।

पावक्खालय न [**दे, पापक्षालक**] देखो **पाउक्खालय**; (स ७४१)।

पावग वि [**पावक**] १ पवित्र करने वाला; (राज)। पुं. अग्नि, वह्नि; (सुपा १६२)।

पावग वि [**प्रापक**] पहुँचाने वाला; (सुपा ५००)।

पावग देखो **पाव**=पाप; (आचा; धर्मसं ५४३)।

पावज्जा (अप) देखो **पव्वज्जा**; (भवि)।

पावडण देखो **पाय-वडण**=पाद पतन; (प्राप्र; कुमा)।

पावड्ढि देखो **पारद्धि**; (सिरि ११०८; १११०)।

पावण वि [**पावन**] पवित्र करने वाला; (अच्चु ४७; समु १५०)।

पावण न [**प्लावन**] १ पानी का प्रवाह; २ सराबोर करना; (पिंड २४)।

पावण न [**प्रापण**] १ प्राप्ति, लाभ; (सुर ४, १११; उपपं ७)। २ योग की एक सिद्धि; 'पावणसत्तीए छिवइ मेरुसिहरमंगुलीए मुणी" (कुप्र २७७)।

पावद्धि देखो **पारद्धि**; (धर्मवि १४८)।

पावय देखो **पाव**=पाप; (प्रासू ७५)।

पावय वि [**प्रावृत**] आच्छादित, ढका हुआ; (सूअ २, ७, ३)।

पावय पुंन [**दे**] वाद्य-विशेष, गुजराती में ' पावो '; (पउम ५७, २३)।

पावय देखो **पावग**=पावक; (उप ७२८ टी; कुप्र २८३; सुपा ४; पाअ)।

पावयण देखो **पवयण**; (हे १, ४४; उवा; णाया १, १३)।

पावयणि वि [**प्रवचनिन्**] सिद्धान्त का जानकार, सैद्धान्तिक; (चेइय १२८)।

पावयणिय वि [**प्रावचनिक**] ऊपर देखो; (सम ६०)।

पावरअ देखो **पावारय**; (स्वप्न १०४)।

पावरण न [**प्रावरण**] वस्त्र, कपड़ा; (हे १, १७५)।

पावरिय वि [**प्रावृत**] आच्छादित; (कुप्र ३८)।

पावस्स देखो **पाउस्स**; (कुप्र ११७)।

पावा स्त्री [**पापा**] नगरी-विशेष, जो आजकल भी बिहार के पास पावापुरी के नाम से प्रसिद्ध है; (कप्प; ती ३; पंचा १६, १७; पव ३७; विचार ४६)।

पावाइ वि [**प्रवादिन्**] वाचाट, दार्शनिक; (सूअ २, ६, ११)।

पावाइअ वि [**प्राव्राजिक**] संन्यासी; (स्वप्न २२)।

पावाइअ वि [**प्रावादिक**] देखो **पावाइ**; (आचा)।

पावाइअ }
पावादुय } वि [**प्रावादुक**] वाचाट, दार्शनिक; (सूअ १, १, ३, १३; २, २, ८०; पि २६५)।

पावार पुं [**प्रावार**] १ रूँछा वाला कपड़ा; २ मोटा कम्बल; (पव ८४)।

पावारय देखो **पारय**=प्रावारक; (हे १, २७१; कुमा)।

पावालिआ स्त्री [**प्रपापालिका**] प्रपा पर नियुक्त स्त्री; (गा १६१)।

पावासु } वि [**प्रवासिन्, °क**] प्रवास करने वाला; (पि **पावासुअ** } १०५; हे १, ९५; कुमा)।

पाविअ वि [**प्राप्त**] लब्ध, मिला हुआ; (सुर ३, १६; स ६८६)।

पाविअ वि [**प्रापित**] प्राप्त कराया हुआ; (सण; नाट—मृच्छ २७)।

पाविअ वि [**प्लावित**] सराबोर किया हुआ, खूब भिजाया हुआ; (कुमा)।

पाविट्ठ वि [**पापिष्ठ**] अत्यन्त पापी; (उव ७२८ टी; सुर १, २१३; २, २०५; सुपा १६६; श्रा १४)।

पावीढ देखो **पाय-वीढ**; (पउम ३, १; हे १, २७०; कुमा)।

पावीयंस देखो **पावंस**; (पि ४०६; ४१४)।

पावुअ वि [**प्रावृत**] आच्छादित; (संक्षि ४)।

पावेज्जमाण देखो **पाव**=प्र + आप्।

पावेस वि [**प्रावेश्य**] प्रवेशोचित, प्रवेश के लायक; (औप)।

पावेस पुं [**प्रावेश**] वस्त्र के दोनों तरफ लटकता रूँछा; (णाया १, १)।

पास सक [**दृश्**] १ देखना। २ जानना। पासइ, पासेइ; (कप्प)। पासिमं='पश्य'; (आचा १, ३, ३, ५)। कर्म—पासिज्जइ; (पि ७०)। वकृ—**पासंत, पासमाण**; (स ७५; कप्प)। संकृ—**पासिउं, पासित्ता, पासित्ताणं, पासिया**; (पि ४६५; कप्प; पि ५८३; महा)। हेकृ—**पासित्तए, पासिउं**; (पि ५७८; ५७७)। कृ—**पासियव्व**; (कप्प)।

पास पुं [**पार्श्व**] १ वर्तमान अवसर्पिणी-काल के तेईसवें जिन-देव; (सम १३; ४३)। २ भगवान् पार्श्वनाथ का अधिष्ठायक यक्ष; (संति ८)। ३ न. कन्धा के नीचे का भाग, पाँजर; (णाया १, १६)। ४ समीप, निकट; (सुर ४, १७६)। **°वच्चिज्ज** वि [**°पत्यीय**] भगवान् पार्श्वनाथ की परम्परा में संजात; (भग)।

पास पुं [**पाश**] फाँसा, बन्धन-रज्जु; (सुर ४, ३३७; औप; कुमा)।

पास न [**दे**] १ आँख; २ दाँत; ३ कुन्त, प्रास; ४ वि. विशोभ, कुडौल, शोभा-हीन; (दे ६, ७५)। ५ अन्य वस्तु का अल्प-मिश्रण; "निच्चुन्नो तंबोलो पासेण विणा न होइ जह रंगो" (भाव २)।

°पास वि [**°पाश**] अपसद, निकृष्ट, जघन्य, कुत्सित; "एस पासंडियपासो किं करिस्सइ" (सम्मत्त १०२)।

पासंगिअ वि [**प्रासङ्गिक**] प्रसंग-संबन्धी, आनुषंगिक; (कुम्मा २७)।

पासंड न [**पाषण्ड**] १ पाखण्ड, असत्य धर्म, धर्म का ढोंग; (ठा १०; णाया १, ८; उवा; भाव ६)। २ व्रत; (अणु)।

पासंडि } वि [**पाषण्डिन्, °क**] १ पाखंडी, लोक में **पासंडिय** } पूजा पाने के लिए धर्म का ढोंग रचने वाला; (महानि ४; कुप्र २७६; सुपा ९६; १०६; १६२)। २ पुं. व्रती, साधु, मुनि; "पव्वइए अणगारे पासंडे (? डी) चरग तावसे भिक्खू। परिवाइए य समणे" (दसनि २—गाथा १६४)।

पासंदण न [**प्रस्यन्दन**] झरन, टपकना; (बृह १)।

पासग वि [**दर्शक**] देखने वाला; (आचा)।

पासग पुं [**पाशक**] १ फाँसा, बन्धन-रज्जु; (उप पृ १३; सुर ४, २५०)। २ पासा, जुआ खेलने का उपकरण-विशेष; (जं ३)।

पासग न [**प्राशक**] कला-विशेष; (औप)।

पासण न [**दर्शन**] अवलोकन, निरीक्षण; (पिंड ४७५; उप ६७७; ओघ ५४; सुपा ३७)।

पासणया स्त्री. ऊपर देखो; (ओघ ६३; उप १४८; णाया १, १)।

पासणिअ वि [**दे**] साक्षी; (दे ६, ४१)।

पासणिअ वि [**प्राश्निक**] प्रश्न-कर्ता; (सूअ १, २, २, २८; आचा)।

पासत्थ वि [**पार्श्वस्थ**] १ पार्श्व में स्थित, निकट-स्थित; (पउम ९८, १८; स २६७; सूअ १, १, २, ५)। २ शिथिलाचारी साधु; (उप ८३३ टी; गाहा १, ५; ६;—पव २०६; सार्ध ८८)।

पासत्थ वि [**पाशस्थ**] पाश में फँसा हुआ, पाशित; (सूअ १, १, २, ५)।

पासल्ल न [**दे**] १ द्वार; (दे ६, ७६)। २ वि. तिर्यक्, वक्र; (दे ६, ७६; से ६, ६२; गउड)।

पासल्ल देखो **पास**=पार्श्व; (से ६, ३८; गउड)।

पासल्ल अक [**तिर्यञ्च्, पार्श्वाय्**] १ वक्र होना। २ पार्श्व घुमाना। "पासल्लंति महिहरा" (से ६, ४५)। वकृ—**पासल्लंत**; (से ६, ४१)।
पासल्लइअ देखो **पासल्लिअ**; (से ६, ७७)।
पासल्लि वि [**पार्श्विन्**] पार्श्व-शयित; "उत्ताणगपासल्ली नेसज्जी वावि ठाण ठाइत्ता" (पव ६७; पंचा १८, १५)।
पासल्लिअ वि [**पार्श्वित, तिर्यक्त**] १ पार्श्व में किया हुआ; २ टेढ़ा किया हुआ; (गउड; पि ५९५)।
पासवण न [**प्रस्रवण**] मूत्र, पेशाव; (सम १०; कस; कप्प; उवा; सुपा ६२०)।
पासाईय देखो **पासादीय**; (सम १३७; उवा)।
पासाकुसुम न [**पाशाकुसुम**] पुष्प-विशेष; "छप्पअ गम्मसु सिसिरं पासाकुसुमेहिं ताव, मा मरसु" (गा ८१६)।
पासाण पुं [**पाषाण**] पत्थर; (हे १, २६२; कुमा)।
पासाणिअ वि [**दे**] साक्षी; (दे ६, ४१)।
पासाद देखो **पासाय**; (औप; स्वप्न ५६)।
पासादिय वि [**प्रसादित**] १ प्रसन्न किया हुआ। २ न. प्रसन्न करना; (णाया १, ६—पत्र १६५)।
पासादीय वि [**प्रासादीय**] प्रसन्नता-जनक; (उवा; औप)।
पासादीय वि [**प्रासादित**] महल वाला, प्रासाद-युक्त; (सूअ २, ७, १ टी)।
पासाय पुंन [**प्रासाद**] महल, हर्म्य; (पाअ; पउम ८०, ४)। °**वडिंसय** पुं [°**ावतंसक**] श्रेष्ठ महल; (भग; औप)।
पासासा स्त्री [**दे**] भल्ली, छोटा भाला; (दे ६, १४)।
पासाव, **पासावय** पुं [**दे**] गवाक्ष, वातायन; (षड्; दे ६, ४३)।
पासि वि [**पार्श्विन्**] पार्श्वस्थ, शिथिलाचारी साधु; "पासि-सारिच्छो" (संबोध ३५)।
पासिद्धि देखो **पसिद्धि**; (हे १, ४४)।
पासिम वि [**दृश्य**] दर्शनीय, ज्ञेय; (आचा)।
पासिमं देखो **पास**=दृश्।
पासिय वि [**पाशिक**] फाँसे में फँसाने वाला; (पण्ह १, २)।
पासिय वि [**स्पृष्ट**] छुआ हुआ; (आचा—पासिम)।
पासिय वि [**पाशित**] पाश-युक्त; (राज)।
पासिया स्त्री [**पाशिका**] छोटा पाश; (महा)।
पासिया देखो **पास**=दृश्।

पासिल्ल वि [**पार्श्विक**] १ पास में रहने वाला; २ पार्श्व-शायी; (पव ५४; तंदु १३; भग)।
पासी स्त्री [**दे**] चूडा, चोटी; (दे ६, ३७)।
पासु देखो **पंसु**; (हे १, २६; ७०)।
पासुत्त देखो **पसुत्त**; (गा ३२४; सुर २, ८२; ६, १६८; हे १, ४४; कुप्र २५०)।
पासेइय वि [**प्रस्वेदित**] प्रस्वेद-युक्त; (भवि)।
पासेल्लिय वि [**पार्श्ववत्**] पार्श्व-शायी; (राज)।
पासोअल्ल देखो **पासल्ल**=तिर्यञ्च्। वकृ—**पासोअल्लंत**; (से ६, ४७)।
पाह (अप) सक [**प्र+अर्थय्**] प्रार्थना करना। पाहसि; (पि ३५६)।
पाहंड देखो **पासंड**; (पि २६५)।
पाहण देखो **पाहाण**; "महंतं पाहणं तयं" (श्रा १२), "चउकोणा समतीरा पाहणबद्धा य निम्मविया" (धर्मवि ३३; महा; भवि)।
पाहणा देखो **पाणहा**; "तेगिच्छं पाहणा पाए" (दस ३, ४)।
पाहण्ण, **पाहन्न** न [**प्राधान्य**] प्रधानता, प्रधानपन; (प्रासू ३२; श्रोघ ७७२)।
पाहर सक [**प्रा+हृ**] प्रकर्ष से लाना, ले आना। पाहराहि; (सूअ, ४, २, ६)।
पाहरिय वि [**प्राहरिक**] पहेरेदार; (स ५२५; सुपा ३१२; ४५५)।
पाहाउय देखो **पाभाइय**; (सुपा ३५; ५५६)।
पाहाण पुं [**पाषाण**] पत्थर; (हे १, २६२; महा)।
पाहिज्ज देखो **पाहेज्ज**; (पाअ)।
पाहुड न [**प्राभृत**] १ उपहार, भेंट; (हे १, १३१; २०६; विपा १, ३; कर्पूर २७; कप्पू; महा; कुमा)। २ जैन ग्रन्थांश-विशेष, परिच्छेद, अध्ययन; (सुज्ज १; २; ३)। ३ प्राभृत का ज्ञान; (कम्म १, ७)। °**पाहुड** न [°**प्राभृत**] १ ग्रन्थांश-विशेष, प्राभृत का भी एक अंश; (सुज्ज १, १; २)। २ प्राभृतप्राभृत का ज्ञान; (कम्म १, ७)। °**पाहुडसमास** पुंन [°**प्राभृतसमास**] अनेक प्राभृतप्राभृतों का ज्ञान; (कम्म १, ७)। °**समास** पुंन [°**समास**] अनेक प्राभृतों का ज्ञान; (कम्म १, ७)।
पाहुडिआ स्त्री [**प्राभृतिका**] १ भेंट, उपहार; (पव ६७)। २ जैन मुनि की भिक्षा का एक दोष, विवक्षित समय से पहले—

मन में संकल्पित भिक्षा, उपहार रूप से दी जाती भिक्षा; (पंचा १३, ५; पव ६७; ठा ३, ४--पत्र १५६)।

पाहुण वि [**दे**] विक्रेय, बेचने की वस्तु; (दे ६, ४०)।

पाहुण, **पाहुणग**, **पाहुणय** पुं [**प्राघुण, °क**] अतिथि, महमान; (ओघभा ५३; सुर ३, ८५; महा; सुपा १३; कुप्र ४२; औप; काल)।

पाहुणिअ पुं [**प्राघुणिक**] अतिथि, महमान; (काप्र २२४)।

पाहुणिअ पुं [**प्राघुनिक**] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष; (ठा २, ३)।

पाहुणिज्ज वि [**प्राहवनीय**] प्रकृष्ट संप्रदान, जिसको दान दिया जाय वह; (गाया १, १ टी--पत्र ४)।

पाहुण्ण, **पाहुण्णग**, **पाहुण्णय** न [**प्राघुण्य, °क**] आतिथ्य, अतिथि का सत्कार; "कयं मं जरीए पाहुण(ण्ण)गं" (कुप्र ४२; उप १०३१ टी)।

पाहेअ न [**पाथेय**] रास्ते में व्यय करने की सामग्री, मुसाफिरी में खाने का भोजन; (उत्त १६, १८; महा; अभि ७६; स ६८; सुपा ४२४)।

पाहेज्ज न [**दे. पाथेय**] ऊपर देखो; (दे ६, २४);

पाहेणग (दे) देखो **पहेणग**; (पिंड २८८)।

पि देखो **अवि**; (हे २, २१८; स्वप्न ३७; कुमा; भवि)।

पिअ सक [**पा**] पीना। पिअइ; (हे ४, १०; ४१९; गा १६१)। भूका अपिइत्थ; (आचा)। वकृ **पिअंत, पियाण** (गा १३ अ; २४६; से २, ४; विपा १, १)। संकृ **पिच्चा, पेच्चा, पिएऊण**; (कप्प; उत्त १७, ३; धर्मवि २५), **पिएविणु** (अप); (सण)। प्रयो — पियावए; (दस १०, २)।

पिअ पुं [**प्रिय**] १ पति, कान्त, स्वामी; (कुमा)। २ इष्ट, प्रीति-जनक; (कुमा)। **°अम** पुं [**°तम**] पति, कान्त; (गा १६; कुमा)। **°अमा** स्त्री [**°तमा**] पत्नी, भार्या; (कुमा)। **°अर** वि [**°कर**] प्रीति-जनक; (नाट—पिंग)। **°कारिणी** स्त्री [**°कारिणी**] भगवान् महावीर की माता का नाम, त्रिशला देवी; (कप्प)। **°गंथ** पुं [**°ग्रन्थ**] एक प्राचीन जैन मुनि, आचार्य सुस्थित और सुप्रतिबद्ध का एक शिष्य; (कप्प)। **°जाअ** वि [**°जाय**] जिसको पत्नी प्रिय हो वह; (गा ५१८)। **°जाआ** स्त्री [**°जाया**] प्रेम-पात्र पत्नी; (गा १६६)। **°दंसण** वि [**°दर्शन**] १ जिसका दर्शन प्रिय—प्रीतिकर—हो वह; (गाया १, १ पत्र १६; औप)। २ पुं. देव-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७६)। **°दंसणा** स्त्री [**°दर्शना**] भगवान् महावीर की पुत्री का नाम; (आवम)। **°धम्म** वि [**°धर्मन्**] १ धर्म की श्रद्धा वाला; (गाया १, ८)। २ पुं. श्री रामचन्द्र के साथ जैन दीक्षा लेने वाला एक राजा; (पउम ८५, ५)। **°भाउग** पुं [**°भ्रातृ**] पति का भाई; (उप ६४८ टी)। **°भासि** वि [**°भासिन्**] प्रिय-वक्ता; (महा ५८)। **°मित्त** पुं [**°मित्र**] १ एक जैन मुनि, जो अपने पीछले भव में पाँचवाँ वासुदेव हुआ था; (पउम २०, १७१)। **°मेलय** वि [**°मेलक**] १ प्रिय का मेल—संयोग—करने वाला; २ न. एक तीर्थ; (स ५५१)। **°।उय** वि [**°।युष्क**] जीवित-प्रिय; (आचा)। **°।यग** वि [**°।यत, °।त्मक**] आत्म-प्रिय; (आचा)।

पिअ देखो **पीअ**; "पीआपीअं पिआपिअं" (प्राप्र; सण; भवि)।

पिअ देखो **पिउ**; (प्रासू ७६; १०८)। **°हर** न [**°गृह**] पिता का घर, पीहर; (पउम १७, ७)।

पिअआ देखो **पिआ**; (श्रा १६)।

पिअइउ (अप) वि [**प्रीणयितृ**] प्रीति उपजाने वाला, खुश करने वाला; (भवि)।

पिअउल्लिय (अप) देखो **पिआ**; (भवि)।

पिअंकर वि [**प्रियंकर**] १ अभीष्ट-कर्ता, इष्ट-जनक; (उत्त ११, १४)। २ पुं. एक चक्रवर्ती राजा; (उप ६७२)। ३ रामचन्द्र के पुत्र लव का पूर्व जन्म का नाम; (पउम १०४, २६)।

पिअंगु पुं [**प्रियङ्गु**] १ वृक्ष-विशेष, प्रियंगु, ककूंदनी का पेड़; (पाअ; औप; सम १५२)। २ कंगु, मालकाँगनी का पेड़; "पियंगुणो कंगू " (पाअ)। ३ स्त्री. एक स्त्री का नाम; (विपा १, १०)। **°लइया** स्त्री [**°लतिका**] एक स्त्री का नाम; (महा)।

पिअंवय वि [**प्रियंवद**] मधुर-भाषी; (सुर १, ६५; ४, ११८; महा)।

पिअंवाइ वि [**प्रियवादिन्**] ऊपर देखो; (उत्त ११, १४; सुख ११, १४)।

पिअण न [**दे**] दुग्ध, दूध; (दे ६, ४८)।

पिअण न [**पान**] पीना; "तुहत्थन्नपिअणनिरयं" (धर्मवि १२५; सुख ३, १; उप १३६ टी; स २६३; सुपा २४५; चेइय ४७०)।

पिअणा स्त्री [**पृतना**] सेना-विशेष, जिसमें २४३ हाथी, २४३ रथ, ७२९ घोड़े और १२१५ प्यादें हो वह लश्कर; (पउम ५६, ६)।

पिअमा स्त्री [**दे**] प्रियंगु वृक्ष; (दे ६, ४६; पाअ)।

पिअमाहवी स्त्री [**दे**] कोकिला, पिकी; (दे ६, ५१; पाअ)।

पिअय पुं [**प्रियक**] वृक्ष-विशेष, विजयसार का पेड़; (औप)।

पिअर पुंन [**पितृ**] १ माता-पिता, माँ-बाप; "सुयंतु निगयय-मिमं पियरा", "पियराइं हयंताइं"(धर्मवि १२२)। २ पुं. पिता, बाप; (प्राप्र)।

पिअरंज सक [**भञ्ज्**] भाँगना, तोड़ना। पिअरंजइ; (प्राकृ ७४)।

पिअल (अप) देखो **पिअ**=प्रिय; (पिंग)।

पिआ स्त्री [**प्रिया**] पत्नी, कान्ता, भार्या; (कुमा; हेका ६६)।

पिआमह पुं [**पितामह**] १ ब्रह्मा, चतुरानन; (से १, १७; पाअ; उप ५६७ टी; स २३१)। २ पिता का पिता; (उव)। °**तणअ** पुं [°**तनय**] जाम्बवान्, वानर-विशेष; (से ४, ३७)। °**त्थ** न [°**ास्त्र**] अस्त्र-विशेष, ब्रह्मास्त्र; (से १५, ३७)।

पिआमही स्त्री [**पितामही**] पिता की माता; (सुपा ४७२)।

पिआर (अप) वि [**प्रियतर**] प्यारा; (कुप्र ३२; भवि)।

पिआरी (अप) स्त्री [**प्रियतरा**] प्यारी, प्रिया, पत्नी; (पिंग)।

पिआल पुं [**प्रियाल**] वृक्ष-विशेष, पियाल, चिरौंजी का पेड़; (कुमा; पाअ; दे ३, २१; पराण १)।

पिआलु पुं [**प्रियालु**] वृक्ष-विशेष, खिन्नी, खिरनी का गाछ; (उर २, १३)।

पिइ देखो **पीइ**; "तगां पिइए सिद्धं" (पउम ११, १४)।

पिइ पुं [**पितृ**] १ पिता, बाप; (उप ७२८ टी)। २ मघा-नक्षत्र का अधिष्ठायक देव; (सुज्ज १०, १२; पि ३६१)। °**मेह** पुं [°**मेध**] यज्ञ-विशेष, जिसमें बाप का होम किया जाय वह यज्ञ; (पउम ११, ४२)। °**वण** न [°**वन**] श्मशान; (सुपा ३५६)। °**हर** न [°**गृह**] पिता का घर, पीहर; (पउम १८, ७; सुर ६, २३६)। देखो **पिउ**।

पिइज्ज पुं [**पितृव्य**] चाचा, बाप का भाई; "सुपासो वीर-जिणपिइज्जो (? ज्जो)" (विचार ४७८)।

पिइय वि [**पैतृक**] पिता का, पितृ-संबन्धी; (भग)।

पिउ } पुं [**पितृ**] १ बाप, पिता; (सुर १, १७६; **पिउअ** } औप; उव; हे १, १३१)। २ पुंन. माँबाप, माता-पिता; "अन्नया मह पिऊणि गामं पत्ताइं" (धर्मवि १४७; सुपा ३१६)। °**कम** पुं [°**क्रम**] पितृ-वंश, पितृ-कुल; (कुमा)। °**कुल** न [°**कुल**] पिता का वंश; (षड्)। °**घर** न [°**गृह**] पिता का घर, पीहर; (सुपा ६०१)। °**च्छा**, °**च्छी** स्त्री [°**ष्वसृ**] पिता की बहिन; (गा ११०; हे २, १४२; पाअ; गाया १, १६), "कोंतिं पिउत्थिं (? च्छिं) सक्कारेइ" (णाया १, १६—पत्र २१६)। °**पिंड** पुं [°**पिण्ड**] मृतक-भोजन, श्राद्ध में दिया जाता भोजन; (आचा २, १, २)। °**भगिणी** स्त्री [°**भगिनी**] फूफा, पिता की बहिन; (सुर ३, ८२)। °**वइ** पुं [°**पति**] यम, यमराज; (हे १, १३४)। °**वण** न [°**वन**] श्मशान; (पउम १०५, ५१; पाअ; हे १, १३४)। °**सिआ** स्त्री [°**ष्वसृ**] फूफा; (हे २, १४२; कुमा)। °**सेण-कण्हा** स्त्री [°**सेनकृष्णा**] राजा श्रेणिक की एक पत्नी; (अंत २५)। °**स्सिया** देखो °**सिआ**; (विपा १, ३—पत्र ४१)। °**हर** देखो °**घर**; (सुर १०, १६; भवि)।

पिउअ देखो **पिइय**; (राज)।

पिउच्छा स्त्री [**दे. पितृष्वसृ**] फूफा, पिता की बहिन; (षड्)।

पिउच्चा } स्त्री [**दे**] सखी, वयस्या; (षड् १७५; **पिउच्छा** } २१०)।

पिउली स्त्री [**दे**] १ कर्पास, कपास; २ तूल-लतिका, रुई की पूनी; (दे ६, ७८)।

पिउल्ल देखो **पिउ**; (हे २, १६४)।

पिंकार पुं [**अपिकार**] १ 'अपि' शब्द; २ अपि शब्द की व्याख्या; (ठा १०—पत्र ४६५)।

पिंखा स्त्री [**प्रेङ्खा**] हिंडोला, डोला; (पाअ)।

पिंखोल सक [**प्रेङ्खोलय्**] झूलना। वकृ—**पिंखोलमाण**; (राज)।

पिंग देखो **पंग**=ग्रह्; (कुमा ७, ४६)।

पिंग पुं [**पिङ्ग**] १ कपिश वर्ण, पीत वर्ण; २ वि. पीला, पीत रँग का; (पाअ; कुमा; सामि १४)। ३ पुंस्त्री. कपिंजल पक्षी। स्त्री — °**गा**; (सुअ १, ३, ४, १२)।

पिंगंग पुं [**दे**] मर्कट, बन्दर; (दे ६, ४८)।

पिंगल पुं [**पिङ्गल**] १ नील-पीत वर्ण; २ वि. नील-मिश्रित पीत वर्ण वाला; (कुमा; ठा ४, २; औप)। ३ पुं. ग्रह-विशेष; (ठा २, ३)। ४ एक यक्ष; (सिरि ६६६)। ५ चक्रवर्ती का एक निधि, आभूषणों की पूर्ति करने वाला एक निधान; (ठा ६; उप ६८६ टी)। ६ कृष्ण पुद्गल-विशेष; (सुज्ज २०)। ७ प्राकृत-पिंगल का कर्ता एक कवि; (पिंग)। ८ एक जैन उपासक; (भग)। ६ न. प्राकृत का एक छन्द-ग्रन्थ; (पिंग)।

°कुमार पुं [°कुमार] एक राजकुमार, जिसने भगवान् सुपार्श्वनाथ के समीप दीक्षा ली थी; (सुपा ६६)। °क्ख वि [°ाक्ष] १ नीली-पीली आँख वाला; (ठा ४, २—पत्र २०८)। २ पुं. पक्षि-विशेष; (पराह १, १; औप)।

पिंगलायण न [पिङ्गलायन] १ गोत्र-विशेष, जो कौत्स गोत्र की एक शाखा है; २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न; (ठा ७)।

पिंगलिअ वि [पिङ्गलित] नीला-पीला किया हुआ; (से ४, १८; गउड; सुपा ८०)।

पिंगलिअ वि [पैङ्गलिक] पिंगल-संबन्धी; (पिंग)।

पिंगा देखो **पिंग**।

पिंगायण न [पिङ्गायन] मघा-नक्षत्र का गोत्र; (इक)।

पिंगिअ वि [गृहीत] ग्रहण किया हुआ; (कुमा)।

पिंगिम पुंस्त्री [पिङ्गिमन्] पिंगता, पीलापन; (गउड)।

पिंगीकय वि [पिङ्गीकृत] पीला किया हुआ; " घणथणघुसिणिक्कुप्पंकपिंगीकय व्व " (लहुअ ७)।

पिंगुल पुं [पिङ्गुल] पक्षि-विशेष; (पराह १, १—पत्र ८)।

पिंचु पुंस्त्री [दे] पक्व करीर, पका करील; (दे ६, ४६)।

पिंछ } देखो **पिच्छ**; (आचा; गउड; सुपा ६४१)।
पिंछड }

पिंछी स्त्री [पिच्छी] साधु का एक उपकरण; " नवि लेइ जिणा पिंछीं (? छिं)" (विचार १२८)।

पिंछोली स्त्री [दे] मुँह के पवन से बजाया जाता तृण-मय वाद्य-विशेष; (दे ६, ४७)।

पिंज सक [पिञ्ज्] पीजना, रूई का धुनना। वकृ—**पिंजंत**; (पिंड ५७४; ओघ ४६८)।

पिंजण न [पिञ्जन] पीजना; (पिंड ६०३; दे ७, ६३)।

पिंजर पुं [पिञ्जर] १ पीत-रक्त वर्ण, रक्त-पीत मिश्रित रंग; २ वि. रक्त-पीत वर्ण वाला; (गउड; कुप्र ३०७)।

पिंजर सक [पिञ्जरय्] रक्त-मिश्रित पीत-वर्ण-युक्त करना। वकृ—**पिंजरयंत**; (पउम ६२, ६)।

पिंजरण न [पिञ्जरण] रक्त-मिश्रित पीत वर्ण वाला करना; (सण)।

पिंजरिअ वि [पिञ्जरित] पिञ्जर वर्ण वाला किया हुआ: (हम्मीर १२; गउड; सुपा ५१४)।

पिंजरुड पुं [दे] पक्षि-विशेष, भारुण्ड पक्षी, जिसके दो मुँह होते हैं; (दे ६, ५०)।

पिंजिअ वि [पिञ्जित] पीजा हुआ; (दे ७, ६४)।

पिंजिअ वि [दे] विधुत; (दे ६, ४९)।

पिंड सक [पिण्डय्] १ एकत्रित करना, संश्लिष्ट करना। २ अक. एकत्रित होना, मिलना। पिंडइ, पिंडयए; (उव; पिंड ६६)। संकृ—**पिण्डिऊण**; (कुमा)।

पिंड पुं [पिण्ड] १ कठिन द्रव्यों का संश्लेष; (पिण्डभा २)। २ समूह, संघात; (ओघ ४०७; विसे ६००)। ३ गुड़ वगैरः की बनी हुई गोल वस्तु, वर्तुलाकार पदार्थ; (पराह २, ५)। ४ भिक्षा में मिलता आहार, भिक्षा; (उव; ठा ७)। ५ देह का एक देश; ६ देह, शरीर; ७ घर का एक देश; ८ अन्न का गोला जो पितरों के उद्देश से दिया जाता है; ९ गन्ध-द्रव्य विशेष, सिह्लक; १० जपा-पुष्प; ११ कवल, ग्रास; १२ गज-कुम्भ; १३ मदनक वृक्ष, दमनक का पेड़; १४ न. आजीविका; १५ लोहा; १६ श्राद्ध, पितरों को दिया जाता दान; १७ वि. संहत; १८ घन, निबिड; (हे १, ८५)। °कप्पिअ वि [°कल्पिक] सर्वथा निर्दोष भिक्षा लेने वाला; (वव ३)। °गुला स्त्री [°गुला] गुड़-विशेष, इक्षु-रस का विकार-विशेष, सक्कर बनने के पहले की अवस्था-विशेष; (पिंड २८३)। °घर न [°गृह] कर्दम से बना हुआ घर; (वव ४)। °त्थ पुं [°स्थ] जिन भगवान् की अवस्था-विशेष; " न पिंडत्थपयत्थावत्थंतरभावणा सम्मं " (संबोध २)। °त्थ पुं [°ार्थ] समुदायार्थ; (राज)। °दाण न [°दान] पिण्ड देने की क्रिया, श्राद्ध; (धर्मवि २६)। °पयडि स्त्री [°प्रकृति] अवान्तर भेद वाली प्रकृति; (कम्म १, २५)। °वद्धण [°वर्धन] आहार-वृद्धि, कवल-वृद्धि, अन्न-प्राशन; (अंत)। °वद्धावण न [°वर्धन] आहार बढ़ाना; (औप)। °वाय पुं [°पात] भिक्षा-लाभ, आहार-प्राप्ति; (ठा ५, १; कस)। °वास पुं [°वास] सुहृज्जन; (भवि)। °विसुद्धि, °विसोहि स्त्री [°विशुद्धि] भिक्षा की निर्दोषता; (अंत; ओघभा ३)।

पिंडग पुं [पिण्डक] ऊपर देखो; (कस)।

पिंडण न [पिण्डन] १ द्रव्यों का एकत्र संश्लेष; (पिंडभा १)। २ ज्ञानावरणीयादि कर्म; (पिंड ६६)।

पिंडणा स्त्री [पिण्डना] १ समूह; (ओघ ४०७)। २ द्रव्यों का परस्पर संयोजन; (पिंड २)।

पिंडय देखो **पिंड**; (ओघभा ३३)।

पिंडरय न [दे] दाडिम, अनार; (दे ६, ४८)।

पिंडलइय वि [दे] पिण्डीकृत, पिण्डाकार किया हुआ; (दे ६, ५४; पाअ)।

पिंडलग न [दे] पटलक पुष्प का भाजन; (ठा ७)।

पिंडवाइअ वि [**पिण्डपातिक, पैण्डपातिक**] भक्त-लाभ वाला, जिसको भिक्षा में आहार की प्राप्ति हो वह; (ठा ५, १; कस; औप; प्राकृ ६) ।

पिंडार पुं [**पिण्डार**] गोप, ग्वाला; (गा ७३१) ।

पिंडालु पुं [**पिण्डालु**] कन्द-विशेष; (श्रा २०) ।

पिंडि° देखो **पिंडी**; (भग; णाया १, १ टी—पत्र ५) ।

पिंडिम वि [**पिण्डिम**] १ पिण्ड से बना हुआ, बहल; (पण्ह २, ५—पत्र १५०) । २ पुद्गल-समूहरूप, संघाताकार; (णाया १, १ टी—पत्र ५; औप) ।

पिंडिय वि [**पिण्डित**] १ एकत्रित, इकट्ठा किया हुआ; (सुअनि १४०; पंचा १४, ७; महा) । २ गुणित; (औप)।

पिंडिया स्त्री [**पिण्डिका**] १ पिण्डी, पिंडली, जानू के नीचे का मांसल अवयव; (महा) । २ वर्तुलाकार वस्तु; (औप) । देखो **पिंडी** ।

पिंडी स्त्री [**पिण्डी**] १ लुम्बी, गुच्छा; (औप; भग; णाया १, १; उप पृ ३६) । २ घर का आधार-भूत काष्ठ-विशेष, पीढ़ा; "विघडियपिंडीबंधसंधिपरिलंबिवालग्गिम्मोआ" (गउड) । ३ वर्तुलाकार वस्तु, गोला; " पिन्नागपिंडी " (सूअ २, ६, २६) । ४ खर्जूर-विशेष; (नाट—शकु ३५) । देखो **पिंडिया** ।

पिंडी स्त्री [**दे**] मञ्जरी; (दे ६, ४७) ।

पिंडीर न [**दे. पिण्डीर**] दाडिम, अनार; (दे ६, ४८) ।

पिंडेसणा स्त्री [**पिण्डैषणा**] भिक्षा ग्रहण करने की रीति; (ठा ७) ।

पिंडेसिय वि [**पिण्डैषिक**] भिक्षा की खोज करने वाला; (भग ६, ३३) ।

पिंडोलग, **पिंडोलगय**, **पिंडोलय** वि [**पिण्डावलगक**] भिक्षा से निर्वाह करने वाला, भिक्षा का प्रार्थी, भिक्षु; (आचा; उत्त ५, २२; सुख ५, २२; सूअ १, ३, १, १०)।

पिंध (अप) सक [**पि+धा**] ढकना । पिंधउ; (पिंग) । संकृ—**पिंधउ**; (पिंग) ।

पिंधण (अप) न [**पिधान**] ढकना; (पिंग) ।

पिंसुली स्त्री [**दे**] मुँह से पवन भर कर बजाया जाता एक प्रकार का तृण-वाद्य; (दे ६, ४७) ।

पिक पुंस्त्री [**पिक**] कोकिल पक्षी; (पिंग) । स्त्री—**°की**; (दे ६, ५१) ।

पिक्क देखो **पक्क**=पक्व; (हे १, ४७; पाअ; गा ५६५) ।

पिक्ख सक [**प्र+ईक्ष्**] देखना । पिक्खइ; (भवि) । वकृ—**पिक्खंत**; (भवि) । कृ—**पिक्खेयव्व**; (सुर ११, १२३) ।

पिक्खग वि [**प्रेक्षक**] निरीक्षक, द्रष्टा; (ती १०; धर्मवि १५) ।

पिक्खण न [**प्रेक्षण**] निरीक्षण; (राज) ।

पिक्खिय वि [**प्रेक्षित**] दृष्ट; (पि ३६०) ।

पिग देखो **पिक**; (कुमा) ।

पिचु पुं [**पिचु**] कर्पास, रुई; (दे ६, ७८) । **°लया** स्त्री [**°लता**] पूनी, रुई की पूनी; (दे ६, ५६) ।

पिचुमंद पुं [**पिचुमन्द**] निम्ब वृक्ष, नीम का पेड़; (मोह १०३) ।

पिच्च, **पिच्चा** अ [**प्रेत्य**] पर-लोक, आगामी जन्म; (श्रा १४; सुपा ५०६; सूअ १, १, १, ११) । देखो **पेच्च** ।

पिच्चा देखो **पिअ**=पा ।

पिच्चिय वि [**दे. पिच्चित**] कूटी हुई छाल; (ठा ५, ३—पत्र ३३८) ।

पिच्छ सक [**दृश्, प्र+ईक्ष्**] देखना । पिच्छइ, पिच्छंति, पिच्छ; (कप्प; प्रासू १६०; ३३) । वकृ—**पिच्छंत, पिच्छमाण**; (सुपा ३४६; भवि) । कवकृ—**पिच्छिज्जमाण**; (सुपा ६२) । संकृ—**पिच्छिउं, पिच्छिऊण**; (प्रासू ६१; भवि) । कृ—**पिच्छणिज्ज**; (कप्प; सुर १३, २२३; रयण ११) ।

पिच्छ न [**पिच्छ**] १ पक्ष का अवयव, पंख का हिस्सा; (उवा; पाअ) । २ मयूर-पिच्छ, शिखण्ड; (णाया १, ३) । ३ पक्ष, पाँख; (उप ७६८ टी; गउड) । ४ पूँछ, लांगूल; (गउड) ।

पिच्छण न [**प्रेक्षण**] १ दर्शन, अवलोकन; (श्रा १४; सुपा ५५) ।

पिच्छण, **पिच्छणय** न [**प्रेक्षण, °क**] तमाशा, खेल, नाटक; " पारद्धं पिच्छणयं तहिं ताव " (सुपा ४८५)। " ता जवणियछिड्डेहिं पिच्छइ अंतेउरंपि पिच्छणयं " (सुपा २००) ।

पिच्छल वि [**पिच्छल**] १ स्निग्ध, स्नेह-युक्त; २ मसृण; (सण) ।

पिच्छा स्त्री [**प्रेक्षा**] निरीक्षण । **°भूमि** स्त्री [**°भूमि**] रंग-मण्डप; (पाअ) ।

पिच्छि वि [**पिच्छिन्**] पिच्छ वाला; (औप) ।
पिच्छिर वि [**प्रेक्षित्**] प्रेक्षक, द्रष्टा; (सुपा ७८; कुमा) ।
पिच्छिल वि [**पिच्छिल**] १ स्नेह-युक्त, स्निग्ध; २ मसृण, चिकना; (गउड; हास्य १४०; दे ६, ४६) ।
पिच्छिली स्त्री [**दे**] लज्जा, शरम; (दे ६, ४७) ।
पिच्छी स्त्री [**दे**] चूडा, चोटी; (दे ६, ३७) ।
पिच्छी स्त्री [**पिच्छिका**] पीछी; (गा ५७२) ।
पिच्छी स्त्री [**पृथ्वी**] १ पृथ्वी, धरित्री, धरनी; (कुमा) । २ बड़ी इलायची; ३ पुनर्नवा; ४ कृष्ण जीरक; ५ हिंगुपत्री; (हे १, १२८) ।
पिज्ज सक [**पा**] पीना । पिज्जइ; (हे ४, १०) । कृ— **पिज्जणिज्ज**; (कुमा) ।
पिज्ज पुंन [**प्रेमन्**] प्रेम, अनुराग; (सुअ १, १६, २; कप्प) ।
पिज्ज } देखो **पा**=पा ।
पिज्जंत }
पिज्जा स्त्री [**पेया**] यवागू; (पिंड ६२४) ।
पिज्जाविअ वि [**पायित**] जिसको पान कराया गया हो वह; (सुख २, १७) ।
पिट्ट सक [**पीडय्**] पीडा करना । पिट्टंति; (सूअ २, २, ५५) ।
पिट्ट अक [**भ्रंश्**] नीचे गिरना । पिट्टइ; (षड्) ।
पिट्ट सक [**पिट्टय्**] पीटना, ताडन करना । पिट्टइ, पिट्टेइ; (आचा; पिंग; गा १७१; सिरि ६५५) । वकृ— **पिट्टंत**; (पिंग) ।
पिट्ट न [**दे**] पेट, उदर; (पंचा ३, १६; धर्मवि ६६; चेइय २३८; कप्प २६; सुपा ५६३; सं २१) ।
पिट्टण न [**पिट्टन**] ताडन, आघात; (सूअ २, २, ६२; पिंड ३४; पराह १, १; ओघ ५६६; उप ५०६) ।
पिट्टण न [**पीडन**] पीड़ा, क्लेश; (सूअ २, २, ५५) ।
पिट्टणा स्त्री [**पिट्टना**] ताडन; (ओघ ३५७) ।
पिट्टावणया स्त्री [**पिट्टना**] ताडन कराना; (भग ३, ३—पत्र १८२) ।
पिट्टिय वि [**पिट्टित**] पीटा हुआ, ताडित; (सुख २, १५) ।
पिट्ठ न [**पिष्ट**] तण्डुल आदि का आटा, चूर्ण; (गाया १, १; ३; दे १, ७८; गा ३८८) ।
पिट्ठ न [**पृष्ठ**] पीठ, शरीर के पीछे का हिस्सा; (औप; उवा) । °**ओ** अ [°**तस्**] पीछे से, पृष्ठ भाग से; (उवा; विपा १, १; औप) । °**करंडग** न [°**करण्डक**] पृष्ठ-वंश, पीठ की बड़ी हड्डी; (तंदु ३५) । °**चर** वि [°**चर**] पृष्ठ-गामी, अनुयायी; (कुमा) । देखो **पिट्ठि** ।
पिट्ठ वि [**स्पृष्ट**] १ छुआ हुआ । २ न. स्पर्श; (पव १५७) ।
पिट्ठ वि [**पृष्ट**] १ पूछा हुआ; २ न. प्रश्न, पृच्छा; "जंपसि विणअं ण जंपसे पिट्ठं" (गा ६४३) ।
पिट्ठंत न [**दे. पृष्ठान्त**] गुदा, गाँड; (दे ६, ४६) ।
पिट्ठखउरा स्त्री [**दे**] पङ्क-सुरा, कलुष मदिरा; (दे ६, ५०) ।
पिट्ठखउरिआ स्त्री [**दे**] मदिरा, दारू; (पाअ) ।
पिट्ठव्व वि [**प्रष्टव्य**] पूछने योग्य; "नियकरकोडीवि किंकरी किं पिट्ठि(?ट्ठ) व्वा" (रंभा) ।
पिट्ठायय पुंन [**पिष्टातक**] केसर आदि गन्ध-द्रव्य; (गउड; स ७३४) ।
पिट्ठि स्त्री [**पृष्ठ**] पीठ, शरीर के पीछे का भाग; (हे १, १२६; गाया १, ६; रंभा; कुमा; षड्) । °**ग** वि [°**ग**] पीछे चलने वाला; (श्रा १२) । °**चम्पा** स्त्री [°**चम्पा**] चम्पा नगरी के पास की एक नगरी; (कप्प) । °**मंस** न [°**मांस**] परोक्ष में अन्य के दोष का कीर्तन; "पिट्ठिमंसं न खाइज्जा" (दस ८, ४७) । °**मंसिय** वि [°**मांसिक**] परोक्ष में दोष बोलने वाला, पीछे निन्दा करने वाला; (सम ३७) । °**माइया** स्त्री [°**मातृका**] एक अनुत्तर-गामिनी स्त्री; "चंदिमा पिट्ठिमाइया" (अनु २) । देखो **पिट्ठ**=पृष्ठ ।
पिट्ठी स्त्री [**पैष्टी**] आटा की बनी हुई मदिरा; (बृह २) ।
पिड पुं [**पिट**] १ वंश-पत्र आदि का बना हुआ पात्र-विशेष; २ कब्जा, अधीनता; "जा ताव तेण भणियं रे रे रे बाल मह पिडे पडिओ" (सुपा १७६) ।
पिडग देखो **पिडय**=पिटक; (औप; उवा; सुज्ज १६) ।
पिडच्छा स्त्री [**दे**] सखी; (दे ६, ४६) ।
पिडय न [**पिटक**] १ वंशमय पात्र-विशेष; "भोयणपिं-(? पि)डयं करेंति" (गाया १, २—पत्र ८६) । २ दो चन्द्र और दो सूर्यों का समूह; (सुज्ज १६) ।
पिडय वि [**दे**] आविग्न; (षड्) ।
पिडव सक [**अर्ज्**] पैदा करना, उपार्जन करना । पिडवइ; (षड्) ।
पिडिआ स्त्री [**पिटिका**] १ वंश-मय भाजन-विशेष; (दे ४, ७; ६, १) । २ छोटी मन्जूषा, पेटी, पिटारी; (उप ५८७; ५६७ टी) ।

पिड्ड सक [**पीडय्**] पीड़ना। पिड्डइ; (आचा; पि २७६)।
पिड्ड अक [**भ्रंश्**] नीचे गिरना। पिड्डइ; (षड्)।
पिड्डइअ वि [**दे**] प्रशान्त; (षड्)।
पिढं अ [**पृथक्**] अलग, जुदा; (षड्)।
पिढर पुंन [**पिठर**] १ भाजन-विशेष, स्थाली; (पाअ; आचा; कुमा)। २ गृह-विशेष; ३ मुस्ता, मोथा; ४ मन्थान-दण्ड, मथनिया; (हे १, २०१; षड्)।
पिणद्ध सक [**पि + नह्, पिनि + धा**] १ ढकना। २ पहिनना। ३ पहिराना। ४ बाँधना। पिणद्धइ, पिणद्धेइ; (पि ४४६)। हेकृ—**पिणद्धुं, पिणद्धित्तए**; (अभि १८५; राज)।
पिणद्ध वि [**पिनद्ध**] १ पहना हुआ; (पाअ; औप; गा ३२८)। २ बद्ध, यन्त्रित; (राय)। ३ पहनाया हुआ; "नियमउडोवि पिणद्धो तस्स सिरे रयणचिंचइओ" (सुपा १२५)।
पिणद्धाविद (शौ) वि [**पिनिधापित**] पहनाया हुआ; (नाट—शकु ६८)।
पिणाइ पुं [**पिनाकिन्**] महादेव, शिव; (पाअ; गउड)।
पिणाई स्त्री [**दे**] आज्ञा, आदेश; (दे ६, ४८)।
पिणाग पुंन [**पिनाक**] १ शिव-धनुष; २ महादेव का शूलास्त्र; (धर्मवि ३१)।
पिणागि देखो **पिणाइ**; (धर्मवि ३१)।
पिणाय देखो **पिणाग**; (गउड)।
पिणाय पुं [**दे**] बलात्कार; (दे ६, ४६)।
पिणिद्ध वि [**पिनद्ध, पिनिहित**] देखो **पिणद्ध**=पिनद्ध; (पण्ह २, ४—पत्र १३०; कप्प; औप)।
पिणिधा सक [**पिनि + धा**] देखो **पिणद्ध**=पि + नह्। हेकृ —**पिणिधत्तए**; (औप; पि ५७८)।
पिण्णाग देखो **पिन्नाग**; (राज)।
पिण्ही स्त्री [**दे**] क्षामा, कृश स्त्री; (दे ६, ४६)।
पित्त पुंन [**पित्त**] शरीर-स्थित धातु-विशेष, तिक्त धातु; (भग; उव)। °**ज्जर** पुं [°**ज्वर**] पित्त से होता बुखार; (णाया १, १)। °**मुच्छा** स्त्री [°**मूर्च्छा**] पित्त की प्रबलता से होने वाली बेहोशी; (पडि)।
पित्तल न [**पित्तल**] धातु-विशेष, पीतल; (कुप्र १४४)।
पित्तिज्ज } पुं [**पितृव्य**] चाचा, पिता का भाई; (कप्प;
पित्तिय } सम्मत्त १७२; सिरि २६३; धर्मवि १२७; स ४६५; सुपा ३३४)।
पित्तिय वि [**पैत्तिक**] पित्त का, पित्त-संबन्धी; (तंदु १६; णाया १, १; औप)।
पिधं अ [**पृथक्**] अलग, जुदा; (हे १, १८८; कुमा)।
पिधाण देखो **पिहाण**; (नाट—विक्र १०३)।
पिन्नाग } पुं [**पिण्याक**] खली, तिल आदि का तेल निकाल
पिन्नाय } लेने पर जा उसका भाग बचता है वह; (सूअ २, ६, २६; २, १, १६; २, ६, २८)।
पिपीलिअ पुं [**पिपीलक**] कीट-विशेष, चींऊँटा; (कप्प)।
पिपीलिआ } स्त्री [**पिपीलिका**] चींटी; (पण्ह १, १;
पिपीलिका } जी १६; णाया १, १६)।
पिप्पड सक [**दे**] बड़बड़ाना, जो मन में आवे सो बकना। पिप्पडइ; (दे ६, ५० टी)।
पिप्पडा स्त्री [**दे**] ऊर्णा-पिपीलिका; (दे ६, ४८)।
पिप्पडिअ वि [**दे**] १ जो बबड़ाया हो। २ न. **बड़बड़ाना**, निरर्थक उल्लाप, बकवाद; (दे ६, ५०)।
पिप्पय पुं [**दे**] १ मशक; (दे ६, ७८)। २ पिशाच, भूत; (पाअ)। ३ वि. उन्मत्त; (दे ६, ७८)।
पिप्पर पुं [**दे**] १ हंस; २ वृषभ; (दे ६, ७६)।
पिप्परी स्त्री [**पिप्पली**] पीपर का गाछ; (पण्ण १)।
पिप्पल पुंन [**पिप्पल**] १ पीपल वृक्ष, अश्वत्थ; (उप १०३१ टी; पाअ; हि १०)। २ छुरा, क्षुरक; (विपा १, ६—पत्र ६६; ओघ ३५६)।
पिप्पलि } स्त्री [**पिप्पलि,** °**ली**] ओषधि-विशेष, पीपर;
पिप्पली } "महुपिप्पलिसुंठाई अणेगहा साइमं होइ" (पंचा ५, ३०; पण्ण १७)।
पिप्पिडिअ देखो **पिप्पडिअ**; (षड्)।
पिप्पिया स्त्री [**दे**] दाँत का मैल; (वांदि)।
पिव देखो **पिअ**=पा। पिवामो; (पि ४८३)। संकृ—**पिवित्ता**; (आचा)।
पिव्व न [**दे**] जल, पानी; (दे ६, ४६)।
पिम्म पुंन [**प्रेमन्**] प्रेम, प्रीति, अनुराग; (पाअ; सुर २, १७२; रंभा)।
पियास (अप) स्त्री [**पिपासा**] प्यास; (भवि)।
पिरिडी स्त्री [**दे**] शकुनिका, चिड़िया; (दे ६, ४७)।
पिरिपिरिया देखो **परिपिरिया**; (राज)।
पिरिली स्त्री [**पिरिली**] १ गुच्छ-विशेष, वनस्पति-विशेष; (पण्ण १)। २ वाद्य-विशेष; (राज)।
पिल देखो **पील**। कर्म—पिलिज्जइ; (नाट)।

पिलंखु } पुं [**प्लक्ष**] १ वृक्ष-विशेष, पिलखन, पाकड़
पिलक्खु } का पेड़; (सम १५२; औप २६; पि ७४)। २ एक तरह का पीपल वृक्ष; "पिलक्खू पिप्पलभेदो" (निचू ३)।

पिलण न [**दे**] पिच्छिल देश, चिकनी जगह; (दे ६, ४६)।

पिला देखो **पीला**; (पि २२६)।

पिलाग न [**पिटक**] फोड़ा, फुनसी; (सूम १, ३, ४, १०)।

पिलिंखु देखो **पिलंखु**; (विचार १४८)।

पिलिहा स्त्री [**प्लीहा**] रोग-विशेष, पिलही, ताप-तिल्ली; (तंदु ३६)।

पिलुअ न [**दे**] चुत, छींक; (षड्)।

पिलुंक } देखो **पिलंखु**; (पि ७४; पराग १—पत्र
पिलुक्ख } ३१)।

पिलुट्ठ वि [**प्लुष्ट**] दग्ध; (हे २, १०६)।

पिलोस पुं [**प्लोष**] दाह, दहन; (हे २, १०६)।

पिल्ल देखो **पेल्ल**=क्षिप्। पिल्लइ; (भवि)।

पिल्लण न [**प्रेरण**] प्रेरणा; (जं ३)।

पिल्लणा स्त्री [**प्रेरणा**] प्रेरणा; (कप्प)।

पिल्लि स्त्री [**दे**] यान-विशेष; (दसा ६)।

पिल्लिअ वि [**क्षिप्त**] फेंका हुआ; (पाअ; भवि; कुमा)।

पिल्लिअ वि [**प्रेरित**] जिसको प्रेरणा की गई हो वह; (सुपा ३६१)।

पिल्लिरी स्त्री [**दे**] १ तृण-विशेष, गण्डूत तृण; २ चीरी, कीट-विशेष; ३ घम, पसीना; (दे ६, ७६)।

पिल्लुग (दे) देखो **पिलुअ**; (वव २)।

पिल्ह न [**दे**] छोटा पक्षी; (दे ६, ४६)।

पिव देखो **इव**; (हे २, १८२; कुमा; महा)।

पिव सक [**पा**] पीना। पिवइ; (पिंग)। भूका—अपिवित्था; (आचा)। कर्म—पिवीअंति; (पि ५३६)। संकृ—**पिविअ, पिवइत्ता, पिवित्ता**; (नाट; ठा ३, २; महा)। हेकृ—**पिविउं, पिवित्तए**; (आक ४२; औप)।

पिवण देखो **पिअण**=(दे); (भवि)।

पिवासय वि [**पिपासक**] पीने की इच्छा वाला; (भग—०मत्थ°)।

पिवासा स्त्री [**पिपासा**] प्यास, पीने की इच्छा; (भग; पाअ)।

पिवासिय वि [**पिपासित**] तृषित; (उवा; वे)

पिवीलिआ देखो **पिपीलिआ**; (उव; स ४२०, आ ४६)।

पिव्व देखो **पिअ**; (षड्)।

पिस सक [**पिष्**] पीसना। पिसइ; (षड्)।

पिसंग पुं [**पिशङ्ग**]१ पिंगल वर्ण, मटियारा रँग; २ वि. पिंगल वर्ण वाला; (पाअ; कुप्र १०५; ३०६)।

पिसंडि [**दे**] देखो **पसंडि**; (सुपा ६०७; कुप्र ६२; १४५)।

पिसल्ल पुं [**पिशाच**] पिशाच, व्यन्तर-योनिक देवों की एक जाति; (हे १, १९३; कुमा; पाअ; उप २६४टी; ७६८ टी)।

पिसाजि वि [**पिशाचिन्**] भूताविष्ट; (हे १, १७७; कुमा; षड्; चंड)।

पिसाय देखो **पिसल्ल**; (हे १, १९३; पराह १, ४; महा; इक)।

पिसिअ न [**पिशित**] मांस; (पाअ; महा)।

पिसुअ पुंस्त्री [**पिशुक**] क्षुद्र कीट-विशेष। स्त्री—°या; (राज)।

पिसुण सक[**कथय्**]कहना। पिसुणइ, पिसुणेइ, पिसुणंति,पिसुणेंति, पिसुणमु; (हे ४, २; गा ६८५; सुर ६, १९३; गा ५५६;कुमा)।

पिसुण पुं [**पिशुन**] खल, दुर्जन, पर-निन्दक, चुगलीखोर; (सुर १, १६; प्रासू १८; गा ३७७; पाअ)।

पिसुणिअ वि [**कथित**] १ कहा हुआ; २ सूचित; (सुपा १२; पाअ; कुप्र २७८)।

पिसुमय (पै) पुं [**विस्मय**] आश्चर्य; (प्राकृ १२४)।

पिह सक [**स्पृह**] इच्छा करना, चाहना। पिहाइ; (भग ३, २—पत्र १७३)। संकृ—**पिहाइत्ता**; (भग ३, २)।

पिह वि [**पृथक्**] भिन्न, जुदा; "पिहप्पिहाणं" (विसे ८४८)।

पिहं अ [**पृथक्**] अलग; (हे १, १३७; षड्)।

पिहंड पुं [**दे**] १ वाद्य-विशेष; २ वि. विवर्ण; (दे ६, ७६)।

पिहड देखो **पिढर**; (हे १, २०१; कुमा; उवा)।

पिहण न [**पिधान**] १ ढकन; (सुर १६, १६५)। २ ढकना, आच्छादन; (पंचा १, ३२; संबोध ४६; सुपा १२१)।

पिहणया स्त्री [**पिधान**] आच्छादन, ढकना; (स ५१)।

पिहय देखो **पिह**=पृथक्; (कुमा)।

पिहा सक [**पि+धा**] १ ढकना। २ बँद करना। पिहाइ; (भग ३, २)। संकृ—**पिहाइत्ता, पिहिऊण**; (भग ३, २; महा)।

पिहाण देखो **पिहण**; (ठा ४, ४; रत्न २५; कप्प)।

पिहाणिआ स्त्री [**पिधानिका**] ढकनी; (पाअ)।

पिहाणी स्त्री [**पिधानी**] ऊपर देखो; (दे)।

पिहिअ वि [**पिहित**] १ ढका हुआ; २ बँद किया हुआ; (पाअ; कस; ठा २, ४—पत्र ६६; सुपा ६३०)। °**स्सव** वि [°**स्रव**] १ जिसने आस्रव को रोका हो; (दस ४)। २ पुं. एक जैन मुनि का नाम; (पउम २०, १८)।

पिहिण देखो **पिहण,** "आयावणे पेसवणे पिहिणे ववएस मच्छरे चेव" (श्रा ३०; पडि)।

पिहिमि° (अप) स्त्री [**पृथिवी**] भूमि, धरती। °**पाल** पुं [°**पाल**] राजा; (भवि)।

पिहीकय वि [**पृथक्कृत**] अलग किया हुआ; (पिंड ३६१)।

पिहु वि [**पृथु**] १ विस्तीर्ण; (कुमा)। २ पुं. एक राजा का नाम; (पउम ६८, ३४)। °**रोम** पुं [°**रोम**] मीन, मत्स्य; (दे ६, ५० टी)।

पिहु देखो **पिह**=पृथक्; (सुर १३, ३६; सण)।

पिहु° देखो **पिहुय;** "पिहुखज्ज त्ति नो वए" (दस ७, ३४)।

पिहुंड न [**पिहुण्ड**] नगर-विशेष; (उत्त २१, २)।

पिहुण [**दे**] देखो **पेहुण;** (आचा २, १, ७, ६)। °**हत्थ** पुं [°**हस्त**] मयूर-पिच्छ का किया हुआ पँखा; (आचा २, १, ७, ६)।

पिहुत्त देखो **पुहुत्त;** (तंदु ४)।

पिहुय पुंन [**पृथुक**] खाद्य-विशेष, चिऊड़ा; (आचा २, १, १, ३; ४)।

पिहुल वि [**पृथुल**] विस्तीर्ण; (पगह १, ४; औप; दे ६, १४३; कुमा)।

पिहुल न [**दे**] मुँह के वायु से बजाया जाता तृण-वाद्य; (दे ६, ४७)।

पिहे देखो **पिहा**। पिहेइ, पिहे; (उत्त २४, ११; सूअ १, २, २, १३)। संकृ—**पिहेऊण;** (पि ५८६)।

पिहो अ [**पृथक्**] अलग, भिन्न; (विसे १०)।

पिहोअर वि [**दे**] तनु, कृश, दुर्बल; (दे ६, ५०)।

पी सक [**पी**] पान करना। वकृ—"तम्मुहसमंकसंतिपीऊस-पूरं **पीयमाणी**" (रयण ५१)।

पीअ पुं [**पीत**] १ पीत वर्ण, पीला रँग; २ वि. पीत वर्ण वाला, पीला; (हे १, १७३; कुमा; प्राप्र)। ३ जिसका पान किया गया हो वह; (से १, ४०; दे ६, १४४)। ४ जिसने पान किया हो वह; (प्राप्र)।

पीअ वि [**प्रीत**] प्रीति-युक्त, संतुष्ट; (औप)।

पीअर (अप) नीचे देखो; (पिंग)।

पीअल देखो **पीअ**=पीत, (हे २, १७३; प्राप्र)।

पीअसी स्त्री [**प्रेयसी**] प्रेम-पात्र स्त्री; (कुमा)।

पीइ पुं [**दे**] अश्व, घोड़ा; (दे ६, ५१)।

पीइ } स्त्री [**प्रीति**] १ प्रेम, अनुराग; (कप्प; महा)। **पीई°** } २ रावण की एक पत्नी का नाम; (पउम ७४, ११)। °**कर** पुंन [°**कर**] एक विमानावास, आठवाँ ग्रैवेयक-विमान; (देवेन्द्र १३७; पव १६४)। °**गम** न [°**गम**] महाशुक्र देवेन्द्र का एक यान-विमान; (इक; औप)। °**दाण** न [°**दान**] हर्ष होने के कारण दिया जाता दान, पारितोषिक; (औप; सुर ४, ६१)। °**धम्मिय** न [°**धर्मिक**] जैन मुनिओं का एक कुल; (कप्प)। °**मण** वि [°**मनस्**] १ प्रीति-युक्त चित्त वाला; (भग)। २ पुं महाशुक्र देवलोक का एक यान-विमान; (ठा ८—पत्र ४३७)। °**वद्धण** पुं [°**वर्धन**] कार्तिक मास का लोकोत्तर नाम; (सुज्ज १०, १६; कप्प)।

पीईय पुं [**दे**] वृक्ष-विशेष, गुल्म का एक भेद; "पीईयपाण-कणइरकुज्जय तह सिन्दुवारे य" (पगण १)।

पीऊस न [**पीयूष**] अमृत, सुधा; (पाअ)।

पीड सक [**पीडय्**] १ हैरान करना। २ दबाना। पीडइ,पीडंतु; (पिंग; हे ४, ३८५)। कर्म—पीडिज्जइ; (पिंग)। कवकृ—**पीडिज्जंत, पीडिज्जमाण;** (से ११, १०२; गा ५४१; सण)।

पीड° देखो **पीडा**। °**यर** वि [°**कर**] पीडा-कारक; (पउम १०३, १४३)।

पीडरइ स्त्री [**दे**] चोर की स्त्री; (दे ६, ५१)।

पीडा स्त्री [**पीडा**] पीडन, हैरानी, वेदना; (पाअ)। °**कर** वि [°**कर**] पीडा-कारक;

"अलिअं न भासियव्वं अत्थि हु सच्चंपि जं न वत्तव्वं।
सच्चंपि तं न सच्चं जं परपीडाकरं वयणं"
(श्रा ११; प्रासू १५०)।

पीडिअ वि [**पीडित**] १ पीड़ा से अभिभूत, दुःखित; २ दबाया गया; (हे १, २०३; महा; पाअ)।

पीढ पुंन [**पीठ**] १ आसन, पीढ़ा; "पीढं विट्ठरं आसणं" (पाअ; रयण ६३)। २ आसन-विशेष, व्रती का आसन; (चंड; हे १, १०६; उवा; औप)। ३ नल; "चत्तूण नेडपीढं" (कुमा)। ४ पुं. एक जैन महर्षि; (मदि ८१ टी)। °**बंध** पुं [°**बन्ध**] ग्रन्थ की अवतरणिका, भूमिका; "नय पीढबन्ध-रहियं कहिज्जमाणंपि देइ भावत्थं" (पउम ३, १६)। °**मद्द,** °**मद्दअ** पुंस्त्री [°**मर्दक**] काम-पुरुषार्थ में सहायक नायक-समीप-वर्ती पुरुष, राजा आदि का वयस्य-विशेष;

(णाया १, १—पत्र १६; कप्प)। स्त्री—°मद्दिआ; (मा १६)। °सप्पि वि [°सर्पिन्] पंगु-विशेष; (आचा)।

पीढ न [दे] १ ईख पीलने का यन्त्र; (दे ६, ५१)। २ समूह, यूथ; "उट्ठियं वणगइंदपीढं, पणट्ठा दिसो दिसो (?सिं) कप्पडिया" (स २३३)। ३ पाठ, शरीर के पीछे का भाग; "हत्थिपीढसमारूढो" (वि ६६)।

पीढग } न [पीठक] देखो पीढ=पीठ; (कस; गच्छ १, १०; दस ७, २८)।
पीढय }

पीढरखंड न [पीठरखण्ड] नर्मदा-तीर पर स्थित एक प्राचीन जैन तीर्थ; (पउम ७७, ६४)।

पीढाणिय न [पीठानीक] अश्व-सेना; (ठा ५, १—पत्र ३०२)।

पीढिआ स्त्री [पीठिका] आसन-विशेष, मञ्च; "आसंदी पीढिआ" (पाअ)। देखो पेढिया।

पीढी स्त्री [दे. पीठिका] काष्ठ-विशेष, घर का एक आधार-काष्ठ; गुजराती में "पीढिउं";
"तत्तो नियत्तिऊणं सत्तह पयाइं जाव पहरेइ।
ता उवरिपीढिखलिओ खग्गेण खडक्कियं तत्थ" (धर्मवि ५६)।

पीण सक [प्रीणय्] खुश करना। कृ—देखो पीणणिज्ज।

पीण वि [दे] चतुरस्र, चतुष्कोण; (दे ६, ५१)।

पीण वि [पीन] पुष्ट, मांसल, उपचित; (हे २, १५४; पाअ; कुमा)।

पीणण न [प्रीणन] खुश करना; (धर्मवि १४८)।

पीणणिज्ज वि [प्रीणनीय] प्रीति-जनक; (औप; कप्प; पणण ११)।

पीणाइय वि [दे. पैनायिक] गर्व से निर्वृत्त, गर्व से किया हुआ; "पीणाइयविरसरडियसद्देणं फाडयंते व अंबरतलं" (णाया १, १—पत्र ६३)।

पीणाया स्त्री [दे. पीनाया] गर्व, अहंकार; (णाया १, १)।

पीणिअ वि [प्रीणित] १ तोषित; (सण)। २ उपचित, परिवृद्ध; (दस ७, २३)। ३ पुं. ज्योतिष-प्रसिद्ध योग-विशेष, जो पहले सूर्य या चन्द्र का किसी ग्रह या नक्षत्र के साथ होकर बाद में दूसरे सूर्य आदि के साथ उपचय को प्राप्त हुआ हो वह योग; (सुज्ज १२)।

पीणिम पुंस्त्री [पीनता] पुष्टता, मांसलता; (हे २, १५४)।

पीयमाण देखो पा=पा।

पीयमाण देखो पी=पी।

पील सक [पीडय्] १ पीलना, दबाना। २ पीड़ा करना, हैरान करना। पीलइ, पीलेइ; (धात्वा १४५; पि २४०)। कवकृ—पीलिज्जंत; (श्रा ६)।

पीलण न [पीलन] दबाव, पीड़न, पीलना; "माणंसिणीण माणो पीलणभीअ व्व हिअआहि" (काप्र १६६), "जंतपीलणकम्मं" (उत्त)।

पीला देखो पीडा; (उप ४३६; सुपा ३५८)।

पीलावय त्रि [पीडक] १ पीलने वाला; २ पुं. तेली, यंत्र से तेल निकालने वाला; (वज्जा ११०)।

पीलिअ वि [पीडित] पीला हुआ; (औप; ठा ५, ३; उत्त)।

पीलु पुं [पीलु] १ वृक्ष-विशेष, पीलु का पेड़; (पणण १; वज्जा ४६)। २ हाथी; (पाअ; स ७३५)। ३ न. दूध; "एगट्ठं बहुनामं दुद्ध पआ पीलु खीरं च" (पिंड १३१)।

पीलुअ पुं [दे. पीलुक] शावक, बच्चा; "तडसंठिअणीडक्कंत-पीलुआरक्खणेक्कदिण्णमणा" (गा १०२)।

पीलुट्ट वि [दे. प्लुष्ट] देखो पिलुट्ट; (दे ६, ५१)।

पीवर वि [पीवर] उपचित, पुष्ट; (णाया १, १; पाअ; सुपा २६१)। °गब्भा स्त्री [°गर्भा] जो निकट भविष्य में ही प्रसव करने वाली हो वह स्त्री; (ओघभा ८३)।

पीवल देखो पीअ=पीत; (हे १, २१३; २, १७३; कुमा)।

पीस सक [पिष्] पीसना। पीसइ; (पि ७६)। वकृ—पीसंत; (पिंड ५७४; णाया १, ७)। संकृ—पीसिऊण; (कुप्र ४५)।

पीसण न [पेषण] १ पीसना, दलना; (पण्ह १, १; उप पृ १४०; रयण १८)। २ वि. पीसने वाला; (सुअ १, २, १, १२)।

पीसय वि [पेषक] पीसने वाला; (सुपा ६३)।

पीह सक [स्पृह्, प्र+ईह्] अभिलाषा करना, चाहना। पीहंति, पीहिज्जा; (औप; ठा ३, ३—पत्र १४४)।

पीहग पुं [पीठक] नवजात शिशु को पीलाइ जाती एक वस्तु; (उप ३११)।

°**पु** स्त्री [पुर्] शरीर; (विसे २०६५)।

पुअ न [प्लुत] १ तिर्यग् गति; २ काँपना, कम्प-गति; "जुज्झामो पु(? पु)अणाहिं" (विसे १४३६ टी)। °जुद्ध न [°युद्ध] अधम युद्ध का एक प्रकार; (विसे १४७७)।

पुअंड पुं [दे] तरुण, युवा; (दे ६, ५३; पाअ)।

पुआइ पुं [दे] १ तरुण, युवा; (दे ६, ८०)। २ उन्मत्त; (दे ६, ८०; षड्)। ३ पिशाच; (दे ६, ८०; पाअ; षड्)।

पुआइणी स्त्री [**दे**] १ पिशाच-गृहीत स्त्री, भूताविष्ट महिला; २ उन्मत्त स्त्री; ३ कुलटा, व्यभिचारिणी; (दे ६, ५४)।
पुआव सक [**प्लावय्**] ले जाना। संकृ—**पुयावइत्ता**; (ठा ३, २)।
पुं° पुं [**पुंस्**] पुरुष, मर्द; (पि ४१२; धम्म १२ टी)। देखो **पुंगव, पुंनाग, पुंवउ** आदि।
पुंख पुं [**पुङ्ख**] १ बाण का अग्र भाग; "तस्स य सरस्स पुंखं विद्धइ अन्नेण तिक्खबाणेण" (धर्मवि ६७; उप पृ ३६५)। २ न. देव-विमान विशेष; (सम २२)।
पुंखणग न [**दे. प्रोङ्खणक**] चुमाना, विवाह की एक रीति, गुजराती में 'पोंखणुं'; (सुपा ६५)।
पुंखिअ वि [**पुङ्खित**] पुंख-युक्त किया हुआ; "धणुहे निक्खो सरो पुंखिओ" (कप्पू)।
पुंगल पुं [**दे**] श्रेष्ठ, उत्तम; (भवि)।
पुंगव वि [**पुङ्गव**] श्रेष्ठ, उत्तम; (सुपा ५; ८०; श्रु ४१; गउड)।
पुंछ सक [**प्र+उञ्छ्**] पोंछना, सफा करना। पुंछइ; (प्राकृ ६७; हे ४, १०५)। कृ—**पुंछणीअ**; (पि १८२)।
पुंछ पुंन [**पुच्छ**] पूँछ, लांगूल; (प्राकृ १२; हे १, २६)।
पुंछण न [**प्रोञ्छन**] १ मार्जन; (कप्प; उवा; सुपा २६०)। २ रजोहरण, जैन मुनि का एक उपकरण; (बृह १)।
पुंछणी स्त्री [**प्रोञ्छनी**] पोंछने का एक छोटा तृणमय उपकरण; (राय)।
पुंछिअ वि [**प्रोञ्छित**] पोंछा हुआ, मृष्ट; (पाअ; कुमा; भवि)।
पुंज सक [**पुञ्ज्, पुञ्जय्**] १ इकट्ठा करना। २ फैलाना, विस्तार करना। पुंजइ; (हे ४, १०२; भवि)। कर्म—पुंजिज्जइ; (कप्पू)। कवकृ—**पुंजइज्जमाण**; (से १२, ८६)।
पुंज पुंन [**पुञ्ज**] ढग, राशि; (कप्प; कस; कुमा), "खारिक्कपुंजयाइं ठावइ" (सिरि ११९६)।
पुंजइअ वि [**पुञ्जित**] १ एकत्रित; (से ६, ६३; पउम ८, २६१)। २ व्याप्त, भरपूर; (पउम ८, २६१)।
पुंजइज्जमाण देखो **पुंज**=पुञ्ज्।
पुंजक } वि [**पुञ्जक**] १ राशि रूप से स्थित; "न उणं
पुंजय } पुंजकपुंजक्कं" (पिंड ८२)। २ देखो **पुंज**=पुञ्ज।
पुंजय पुंन [**दे**] कतवार; गुजराती में 'पूंजो';
"कात्रोवि नहिं पुंजयपुंज्यच्छउमेण नियय‍पावरयं।
अवखिंतीओ इव सारविंति जिणमंदिरंगणयं" (सुपा २६०)।
पुंजाय वि [**दे**] पिण्डाकार किया हुआ; "पुंजायं पिंडइअं" (पाअ)।
पुंजाविय वि [**पुञ्जित**] एकत्रित कराया हुआ; (काल)।
पुंजिअ वि [**पुञ्जित**] एकत्रित; (से ५, ७२; कुमा; कप्पू)।
पुंड पुं [**पुण्ड्र**] १ देश-विशेष, विन्ध्याचल के समीप का भू-भाग; (स २२५; भग १५)। २ इक्षु-विशेष; (पउम ४२, ११; गा ७४०)। ३ वि. पुण्ड्र-देशीय; (पउम ६६, ५५)। ४ धवल, श्वेत, सफेद; (गाया १, १७ टी—पत्र २३१)। ५ तिलक; (स ६; पिंडभा ४३; कुप्र २८४)। ६ देव-विमान-विशेष; (सम २२)। °**वद्धण** न [°**वर्धन**] नगर-विशेष; (स २२५)। देखो **पोंड**।
पुंडइअ वि [**दे**] पिण्डीकृत, पिण्डाकार किया हुआ; (दे ६, ५४)।
पुंडरिक देखो **पुंडरीअ**; (सूअ २, १, १)।
पुंडरिकि वि [**पुण्डरीकिन्**] पुण्डरीक वाला; (सूअ २, १, १)।
पुंडरिगिणी स्त्री [**पुण्डरीकिणी**] पुष्कलावती विजय की एक नगरी; (णाया १, १६; इक; कुप्र २६५)।
पुंडरिय देखो **पुंडरीअ**=पुण्डरीक, पौण्डरीक; (उव; काल; पि ३५४)।
पुंडरीअ पुं [**पुण्डरीक**] १ ग्यारह रुद्र पुरुषों में सातवाँ रुद्र; (विचार ४७३)। २ एक राजा, महापद्म राजा का एक पुत्र; (कुप्र २६५; णाया १, १६)। ३ व्याघ्र, शार्दूल; (पाअ)। ४ पुंन. तप-विशेष; (पव २७१)। ५ श्वेत पद्म, सफेद कमल; (सूअनि १४५)। ६ कमल, पद्म; "अंबुरुहं सयवत्तं सरोरुहं पुंडरीअमरविंदं" (पाअ; सम १; कप्प)। ६ देव-विमान विशेष; (सम ३५)। ७ वि. श्वेत, सफेद; (संग १३२)। °**गुम्म** न [°**गुल्म**] देव-विमान-विशेष; (सम ३५)। °**द्दह**, °**दह** पुं [°**द्रह**] शिखरी पर्वत पर का एक महा-ह्रद; (ठा २, ३; सम १०४)।
पुंडरीअ वि [**पौण्डरीक**] १ श्वेत पद्म का, श्वेत-पद्म-संबन्धी; (सूअनि १४५)। २ प्रधान, मुख्य; ३ कान्त, श्रेष्ठ, उत्तम; (सूअनि १४७; १४८)। ४ न. सूत्रकृतांग सूत्र के द्वितीय श्रुतस्कन्ध का पहला अध्ययन, (सूअनि १४०)। देखो **पोंडरीग**।
पुंडरीया स्त्री [**पुण्डरीका**] देखो **पोंडरी**; (राज)।
पुंडे अ [**दे**] जाओ; (दे ६, ५२)।
पुंढ देखो **पुंड**; (उप ९६५)।
पुंढ पुं [**दे**] गर्त, गड्ढा; (दे ६, ५२)।

पुंनाग पुं [**पुन्नाग**] १ वृक्ष-विशेष, पुष्प-प्रधान एक वृक्ष-जाति, पुन्नाग, पुलाक, सुलतान चम्पक, पाटल का गाछ; (उप पृ १८; ७६८ टी; सम्मत्त १७५)। २ श्रेष्ठ पुरुष, उत्तम मर्द; (धम्म १२ टी; सम्मत्त १७५)। देखो **पुन्नाम**।

पुंपुअ पुं [**दे**] संगम; (दे ६, ५२)।

पुंभ पुंन [**दे**] नीरस, दाड़िम का छिलका (?), "मग्गइ अलत्तयं जा निपीलियं पुंभमप्पए ताव" (धर्मवि ६७)। ["अलत्तए मग्गिए नीरसं पणामेइ" (महा: ५६)]।

पुंवड पुंन [**पुंवचस्**] व्याकरणोक्त संस्कार-युक्त शब्द-विशेष, पुंलिंग शब्द; (पराण ११—पत्र ३६३)।

पुंवेय पुं [**पुंवेद**] १ पुरुष को स्त्री-स्पर्श का अभिलाष; २ उसका कारण-भूत कर्म; (पि ४१२)।

पुंस सक [**पुंस्, मृज्**] मार्जन करना, पोंछना। पुंसइ; (हे ४, १०५)।

पुंस° देखो **पुं°**। °**कोइल**, °**कोइलग** पुं [°**कोकिल**] मरदाना कोयल, पिक; (ठा १०—पत्र ४६६; पि ४१२)।

पुंसण न [**पुंसन**] मार्जन; (कुमा)।

पुंसद्द पुं [**पुंशब्द**] 'पुरुष' ऐसा नाम; (कुमा)।

पुंसली स्त्री [**पुंश्चली**] कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री; (वज्जा ९८; धर्मवि १३७)।

पुंसिअ वि [**पुंसित**] पोंछा हुआ; (दे १, ६६)।

पुक्क } सक [**पूत्+कृ**] पुकारना, डाँकना, आह्वान **पुक्कर** } करना। पुक्करेइ; (धम्म ११ टी)। वकृ—**पुक्कंत, पुक्करंत**; (पण्ह १, ३—पत्र ४५; श्रा १२)। देखो **पोक्क**।

पुक्करिय वि [**पूत्कृत**] पुकारा हुआ; (सुपा ३८१)।

पुक्कल देखो **पुक्खल**; (पण्ह २, ५—पत्र १५१)।

पुक्का स्त्री. देखो **पुक्कार**=पूत्कार; (पाअ; सुपा ५१७)।

पुक्कार देखो **पुक्कर**। पुक्कारेंति; (गय)। वकृ **पुक्कारंत, पुक्कारिंत, पुक्कारेमाण**; (सुपा ४१५; ३८१; २४८; णाया १, १८)।

पुक्कार पुं [**पूत्कार**] पुकार, डाँक, आह्वान; (सुपा ५१७; महा; सण)।

पुक्खर देखो **पोक्खर**=पुष्कर; (कप्प; महा; पि १२५)। °**कण्णिया** स्त्री [°**कर्णिका**] पद्म का बीज-कोश, कमल का मध्य भाग; (औप)। °**क्ख** पु [**ाक्ष**] १ विष्णु, श्रीकृष्ण। २ कश्मीर के एक राजा का नाम; (मुद्रा २४२)। °**गय** न [°**गत**] वाद्य-विशेष का ज्ञान, कला-विशेष; (औप)। °**ड्ढ** न [°**ार्ध**] पुष्करवर-नामक द्वीप का आधा हिस्सा; (सुज्ज १६)। °**वर** पुं [°**वर**] द्वीप-विशेष; (ठा २, ३; पडि)। °**संवट्टग** देखो **पुक्खल-संवट्टय**; (राज)। °**ावत्त** देखो **पुक्खलावट्टय**; (राज)।

पुक्खरिणी देखो **पोक्खरिणी**; (सूअ २, १, २, ३; औप; पाअ)।

पुक्खरोअ } पुं [**पुष्करोद**] समुद्र-विशेष; (इक; ठा ३, **पुक्खरोद** } १; ७; सुज्ज १६)।

पुक्खल पुं [**पुष्कर**] १ एक विजय, प्रान्त-विशेष, जिसकी मुख्य नगरी का नाम ओषधि है; (इक)। २ पद्म, कमल; "भिसभिसमुणालपुक्खलत्ताए" (सूअ २, ३, १८)। ३ पद्म-केसर; (आचा २, १, ८—सूत्र ४७)। °**विभंग** न [°**विभङ्ग**] पद्म-कन्द; (आचा २, १, ८—सूत्र ४७)। °**संवट्ट, संवट्टय** पुं [**संवर्त, °क**] मेघ-विशेष, जिसके बरसने से दस हजार वर्ष तक पृथिवी वासित रहती है; (उर २, ६; ठा ४, ४—पत्र २७०)। देखो **पुक्खर**।

पुक्खल पुं [**पुष्कल**] १ एक विजय, प्रदेश-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ८०)। २ अनार्य देश-विशेष; ३ पुंस्त्री. उस देश में उत्पन्न, उसमें रहने वाला; "सिंघलीहिं पुलिंदीहिं पुक्खलीहिं (?)" (भग ९, ३३—पत्र ४५७)। ["सिंहलीहिं पुलिंदीहिं पक्कणीहिं (?)" (भग ९, ३३ टी—पत्र ४६०)]। ४ अत्यन्त, प्रभूत; (कुप्र ४१०)। ५ संपूर्ण, परिपूर्ण; (सूअ २, १, १)।

पुक्खलच्छिभग } पुंन [**दे**] जलरुह-विशेष, जल में होने **पुक्खलच्छिभय** } वाली वनस्पति-विशेष; (सूअ २, ३, १८; १९)। देखो **पोक्खलच्छिलय**।

पुक्खलावई स्त्री [**पुष्करावती, पुष्कलावती**] महाविदेह वर्ष का विजय—प्रान्त-विशेष; (ठा २, ३; इक; महा)। °**कूड** पुंन [°**कूट**] एकशैल पर्वत का एक शिखर; (इक)।

पुक्खलावट्टय पुं [**पुष्करावर्तक, पुष्कलावर्तक**] मेघ-विशेष; "पुक्खल(?ला)वट्टए णं महामेहे एगेणं वासेणं दस वाससहस्साइं भावेति" (ठा ४, ४)।

पुक्खलावत्त पुं [**पुष्करावर्त, पुष्कलावर्त**] महाविदेह वर्ष का एक विजय—प्रान्त; (जं ४)। °**कूड** पुं [°**कूट**] एकशैल पर्वत का एक शिखर; (इक)।

पुग्ग पुंन [**दे**] वाद्य-विशेष; "सो पुरम्मि पुग्गाइं वाएइ" (कुप्र ४०३)।

पुग्गल देखो **पोग्गल**; (सिक्खा १५; नव ४२; पि १२५)। °**परट्ट**, °**परावत्त** पुं [°**परावर्त**] देखो **पोग्गल-परिअट्ट**; (कम्म ५, ८६; वै ५०; सिक्खा ८)।

पुच्चड देखो **पोच्चड**; "संयमलपुच्च(?च)डम्मी" (तंदु ४०)।

पुच्छ सक [**प्रच्छ्**] पूछना, प्रश्न करना। पुच्छइ; (हे ४, ६७)। भूका—पुच्छिंसु, पुच्छीअ, पुच्छे; (पि ५१६; कुमा; भग)। कर्म—पुच्छिज्जइ; (भवि)। वकृ—**पुच्छंत**; (गा ४७; ३५७; कुमा)। कवकृ—**पुच्छिज्जंत**; (गा ३४७; सुर ३, १५१)। संकृ **पुच्छित्ता**; (भग)। हेकृ—**पुच्छिउं**, **पुच्छित्तए**; (पि ५७३; भग)। कृ—**पुच्छणिज्ज**, **पुच्छणीअ**, **पुच्छियव्व**, **पुच्छेयव्व**; (श्रा १४; पि ५७१; उप ८६४; कप्प)।

पुच्छ देखो **पुंछ**=प्र+उञ्छ्। पुच्छइ; (षड्)।

पुच्छ देखो **पुंछ**=पुच्छ; (कप्प)।

पुच्छअ } वि [**प्रच्छक**] पूछने वाला, प्रश्न-कर्ता; (श्रोघभा **पुच्छग** } २८; सुर १०, ६५)। स्त्री—°**च्छिआ**; (अभि १२५)।

पुच्छण न [**प्रच्छन**, **प्रश्न**] पृच्छा; (सुअनि १६३; धर्मवि ८; श्रावक ६३ टी)।

पुच्छणया } स्त्री [**प्रच्छना**] ऊपर देखो; (उप ४६६; **पुच्छणा** } श्रौप)।

पुच्छणी स्त्री [**प्रच्छनी**] प्रश्न की भाषा; (ठा ४, १—पत्र १८२)।

पुच्छल (अप) देखो **पुट्ठ**=पृष्ठ; (पिंग)।

पुच्छा स्त्री [**प्रच्छा**] प्रश्न; (उवा; सुर ३, ३५)।

पुच्छिअ वि [**प्रष्ट**] पूछा हुआ; (श्रौप; कुमा; भग; कप्प; सुर २, १६८)।

पुच्छिर वि [**प्रष्टृ**] प्रश्न-कर्ता; (गा ५६८)।

पुछल देखो **पुच्छल**; (पिंग)।

पुज्ज सक [**पूजय्**] पूजना, आदर करना। पुज्जइ; (कुप्र ४२३; भवि)। कर्म—पुज्जिज्जइ; (भवि)। वकृ—**पुज्जंत**; (कुप्र १२१)। कवकृ—**पुज्जिज्जंत**; (भवि)। संकृ—**पुज्जिउं**, **पुज्जिऊण**; (कुप्र १०२; भवि)। कृ—**पुज्जिअव्व**; (ती ७)। प्रयो—पुज्जावइ; (भवि)।

पुज्ज देखो **पूज**=पूजय्।

पुज्जंत देखो **पुज्ज**=पूजय्।

पुज्जंत देखो **पूर**=पूरय्।

पुज्जण न [**पूजन**] पूजा, अर्चा; (कुप्र १२१)।

पुज्जमाण देखो **पूर**=पूरय्।

पुज्जा स्त्री [**पूजा**] पूजा, अर्चा; (उप पृ २४२)।

पुज्जिय वि [**पूजित**] सेवित, अर्चित; (भवि)।

पुट्ट सक [**प्र+उञ्छ्**] पोंछना। पुट्टइ; (प्राकृ ६७)।

पुट्ट न [**दे**] पेट, उदर; (श्रा २८; माह ४१; पव १३५; सम्मत्त २२६; सिरि २४२; सण)।

पुट्टल } पुंन [**दे**] गठड़ी, गाँठ; गुजराती में 'पोटलुं'; **पुट्टलय** } "संबलपुट्टलयं च गहिय" (सम्मत्त ६१)।

पुट्टलिया स्त्री [**दे**] छोटी गठड़ी; (सुपा ४३; ३४४)।

पुट्टिल पुं [**पोट्टिल**] १ भगवान् महावीर का एक शिष्य, जो भविष्य में तीर्थंकर होने वाला है; (विचार ४७८)। २ एक अनुत्तर-देवलोक-गामी जैन महर्षि; (अनु २)।

पुट्ठ वि [**स्पृष्ट**] १ छुआ हुआ; (भग; श्रौप; हे १, १३१)। २ न. स्पर्श; (ठा २, १, नव १८)।

पुट्ठ वि [**पृष्ट**] १ पूछा हुआ; (श्रौप; सण; हे २, ३४)। २ न. प्रश्न; (ठा २, १)। °**लाभिय** वि [°**लाभिक**] अभिग्रह-विशेष वाला (मुनि); (श्रौप; पण्ह २, १)। °**सेणियापरिकम्म** पुंन [°**श्रेणिकापरिकर्मन्**] दृष्टिवाद का एक प्रतिपाद्य विषय; (सम १२८)।

पुट्ठ वि [**पुष्ट**] उपचित; (गाया १, ३; स ४१६)।

पुट्ठ देखो **पिट्ठ**=पृष्ठ; (प्राप्र; संक्षि १६)।

पुट्ठव वि [**स्पृष्टवत्**] जिसने स्पर्श किया हो वह; (आचा १, ७, ८, ८)।

पुट्ठवई देखो **पोट्ठवई**; (सुज्ज १०, ६)।

पुट्ठवया स्त्री [**प्रोष्ठपदा**] नक्षत्र-विशेष; (सुज्ज १०, ५)।

पुट्ठि स्त्री [**पुष्टि**] पोषण, उपचय; (विसे २२१; चेइय ८)। २ अहिंसा, दया; (पण्ह २, १—पत्र ६६)। °**म** वि [°**मत्**] १ पुष्टि वाला। २ पुं. भगवान् महावीर का एक शिष्य; (अनु)।

पुट्ठि देखो **पिट्ठि**=पृष्ठ; "पाअपडिअस्स पइणो पुट्ठिं पुत्ते समारुहंतम्मि" (गा ११; ३३; ८७; प्राप्र; संक्षि १६)।

पुट्ठि स्त्री [**पृष्टि**] पृच्छा, प्रश्न। °**य** वि [°**ज**] प्रश्न-जनित; (ठा २, १—पत्र ४०)।

पुट्ठि स्त्री [**स्पृष्टि**] स्पर्श। °**य** वि [°**ज**] स्पर्श-जनित; (ठा २, १)।

पुट्ठिया स्त्री [**पृष्टिका**] प्रश्न से होने वाली क्रिया—कर्म-बन्ध; (ठा २, १)।

पुट्ठिया स्त्री [स्पृष्टिका] स्पर्श से होने वाली क्रिया—कर्म-बन्ध; (ठा २, १)।

पुट्ठिल देखो **पोट्टिल**; (अनु २)।

पुट्ठीया स्त्री [स्पृष्टीया] देखो **पुट्ठिया**=स्पृष्टिका; (नव १८)।

पुट्ठीया स्त्री [पृष्टीया] पृच्छा से होने वाली क्रिया—कर्म-बन्ध; (नव १८)।

पुड पुंन [पुट] १ मिथः संबन्ध, परस्पर जोड़ान, मिलाव, मिलान; "अंजलिपुड ", "ताहे करयलपुडेण नीओ सो" (औप; महा)। २ खाल, ढोल आदि का चमड़ा; "हुरुब्भपुडसंठाणसंठिया" (उवा ६४ टी; गउड १११६७; कुमा)। ३ संबद्ध दल-द्वय, मिला हुआ दो दल; "सिप्पपुडसंठिया" (उवा; गउड ५७६)। ४ ओषधि पकाने का पात्र-विशेष; (गाया १, १३)। ५ पत्रादि-रचित पात्र, दोना; (रंभा)। ६ आच्छादन, ढक्कन; (उवा; गउड)। ७ कमल, पद्म; "पुडइणो" (विक्र २३)। °**भेयण** न [°**भेदन**] नगर, शहर; (कस)। °**वाय** पुं [°**पाक**] १ पुट-पात्रों से ओषधि का पाक-विशेष; २ पाक-निष्पन्न ओषध-विशेष; "पुड(? ड)-वाएहि" (णाया १, १३—पत्र १८१)।

पुड (शौ) देखो **पुत्त**=पुत्र; (पि २६२; प्राप्र)।

पुडइअ वि [दे] पिण्डीकृत, एकत्रित; (दे ६, ५४)।

पुडइणी स्त्री [दे. पुटकिनी] नलिनी, कमलिनी; (दे ६, ५५; विक्र २३)।

पुडग पुंन [पुटक] देखो **पुट**= पुट; (उवा)।

पुडपुडी स्त्री [दे] मुँह से सीटी बजाना, एक प्रकार की अव्यक्त आवाज; (पव ३८)।

पुडम देखो **पुढम**; (प्रति ७१; पि १०४)।

पुडय देखो **पुडग**; (उवा; सुपा ६५६)।

पुडिंग न [दे] मुँह, वदन; २ बिन्दु; (दे ६, ८०)।

पुडिया स्त्री [पुटिका] पुड़ी, पुड़िया; (दे ५, १२)।

पुडु (शौ) देखो **पुत्त**=पुत्र; (प्राप्र)।

पुढं देखो **पिहं**; (षड्)।

पुढम वि [प्रथम] पहला; (हे १, ५५; कुमा; स्वप्न २३१)।

पुढवि° देखो **पुढवी**; (आचानि १, १, २; भग १६, ३; पि ६७)। °**काइय**, °**क्काइय** वि [°**कायिक**] पृथिवी शरीर वाला (जीव); (पण्ण १; भग १६, ३; ठा १; आचानि १, १, २)। °**क्काय** देखो **पुढवी-काय**; (आचानि १, १, २)।

पुढवी स्त्री [पृथिवी] १ पृथिवी, धरती, भूमि; (हे १, ८८; १३१; ठा ३, ४)। २ काठिन्यादि गुण वाला पदार्थ, द्रव्य-विशेष—मृत्तिका, पाषाण, धातु आदि; (पण्ण १)। ३ पृथिवीकाय का जीव; (जी २)। ४ ईशानेन्द्र के एक लोकपाल की अग्र-महिषी; (ठा ४, १—पत्र २०४)। ५ एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८—पत्र ४३६)। ६ भगवान सुपार्श्वनाथ की माता का नाम; (राज)। °**काइय** देखो **पुढवि-काइय**; (राज)। °**काय** वि [°**काय**] पृथिवी शरीर वाला (जीव); (आचानि १, १, २)। °**वइ** पुं [°**पति**] राजा; (ठा ७)। °**सत्थ** न [°**शस्त्र**] १ पृथिवी रूप शस्त्र; २ पृथिवी का शस्त्र, हल, कुद्दाल आदि; (आचा)। देखो **पुहई, पुहवी**।

पुढीभूय वि [पृथग्भूत] जो अलग हुआ हो; (सुपा २३६)।

पुढुम वि [प्रथम] पहला, आद्य; (हे १, ५५; कुमा)।

पुढो अ [पृथग्] अलग, भिन्न; (सुपा ३६२; रयण ३०; श्रावक ४०; आचा)। °**छंद** वि [°**छन्द**] विभिन्न अभिप्राय वाला; (आचा; पि ७८)। °**जण** पुं [°**जन**] प्राकृत मनुष्य, साधारण लोक; (सूअ १, ३, १, ६) °**जिय** पुं [°**जीव**] विभिन्न प्राणी; (सूअ १, १, २, ३)। °**विमाय**, °**वेमाय** वि [°**विमात्र**] अनेक प्रकार का, बहुविध; (राज; ठा ४,४—पत्र २८०)।

पुढोजग वि [दे. पृथग्जक] पृथग्भूत, भिन्न व्यवस्थित; "जमिणं जगती पुढोजगा" (सूअ १, २, १, ४)।

पुढोवम वि [पृथिव्युपम] पृथिवी की तरह सब सहन करने वाला; (सूअ १, ६, २६)।

पुढोसिय वि [पृथवीश्रित] पृथिवी के आश्रय में रहा हुआ; (सूअ १, १२, १३; आचा)।

पुण सक [पू] १ पवित्र करना। २ धान्य आदि को तुष-रहित करना, साफ करना। पुणइ; (हे ४, २४१)। पुणंति; (गाया १, ७)। कर्म—पुणिज्जइ, पुव्वइ; (हे ४, २४२)।

पुण अ [पुनर्] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ भेद, विशेष; (विसे ८११)। २ अवधारण, निश्चय; ३ अधिकार, प्रस्ताव; ४ द्वितीय वार, वारान्तर; ५ पक्षान्तर; ६ समुच्चय; (पण्ह २, ३; गउड; कुमा; औप; जी ३७; प्रासू ६; ५२; १६८; स्वप्न ७२; पिंग)। ७ पादपूर्ति में भी इसका प्रयोग होता है; (निचू १)। °**करण** न

[°करण] फिर से बनाना; २ वि. जिसकी फिर से बनावट की जाय वह; "भिन्नं संखं न होइ पुणकरणं" (उव)। °ण्णव वि [°नव] फिर से नया बना हुआ, ताजा; (उप ७६८ टी; कप्पू)। °पुण अ [°पुनर्] फिर फिर, बारंबार। °पुणक-रण न [°पुनःकरण] फिर फिर बनाना, बारंबार निर्माण; (दे १, ३२)। °ब्भव पुं [°भव] फिर से उत्पत्ति, फिर से जन्म-ग्रहण; (चेइय ३५७; ओप)। °ब्भू स्त्री [°भू] फिर से विवाहित स्त्री, जिसका पुनर्लग्न हुआ हो वह महिला; "अत्थि पुणब्भूकप्पा त्ति विवाहिया पच्छन्नं" (कुप्र २०८; २०६)। °रवि, °रावि अ [°अपि] फिर भी; (उवा; उत्त १०, १६; १६)। °रावित्ति स्त्री [°आवृत्ति] पुनः आवर्तन; (पडि)। °रुत्त वि [°उक्त] फिर से कहा हुआ; २ न. पुनरुक्ति; (चेइय ५३८)। °वि अ [°अपि] फिर भी; (संक्षि १६; प्राकृ ८७)। °व्वसु पुं [°वसु] १ नक्षत्र-विशेष; (सम १०; ६६)। २ आठवें वासुदेव के पूर्व जन्म का नाम; (सम १५३; पउम २०, १७२)।

पुण (अप) देखो **पुण्ण**=पुण्य। °मंत वि [°मत्] पुण्यशाली; (पिंग)।

पुणअ सक [दृश्] देखना। पुणअइ; (धात्वा १४५)।

पुणइ पुं [दे] श्वपच, चाण्डाल; (दे ६, ३८)।

पुणण त्रि [पवन] पवित्र करने वाला। स्त्री — **णी**; (कुमा)।

पुणरुत्त } अ. कृत-करण, बारंबार, फिर फिर; "अइ सुप्पइ
पुणरुत्तं } पंसुलि णीसहेहिँ अंगेहिँ पुणरुत्तं" (हे १, १७६; कुमा), "ण वि तह छेअरआइँवि हरंति पुणरुत्तराअरसिआइं" (गा २७४)।

पुणा } अ. देखो **पुण**=पुनर्; (पि ३४३; हे १, ६५;
पुणाइ } कुमा; पउम ६, ६७; उवा)।
पुणाइं }

पुणु (अप) देखो **पुण**=पुनर्; (कुमा; पि ३४२)।

पुणो देखो **पुण**=पुनर्; (ओप; कुमा; प्राकृ ८७)।

पुणोत्त देखो **पुण-रुत्त, पुणरुत्त**; (प्राकृ ३०)।

पुणोल्ल सक [प्र+नोदय्] १ प्रेरणा करना। २ अत्यन्त दूर करना। पुणोल्लयामो; (उत्त १२, ४०)।

पुण्ण पुंन [पुण्य] १ शुभ कर्म, सुकृत; (ओप; महा; प्रासू ७५; पाअ)। २ दो उपवास, बेला; "भद्दं पुणं (? ण्ण) सुही (?हि)यं छट्ठभत्तस्स एगट्ठा" (संबोध ५८)। ३ वि. पवित्र; "थणुप्पियाजलपुण्णं" (कुमा)। **कलसा** स्त्री [°कलशा] लाट देश के एक गाँव का नाम; (राज)। °घण पुं [°घन] विद्याधरों का एक स्वनाम-ख्यात राजा; (पउम ५, ६५)। °मंत, °मत्त वि [°वत्] पुण्य वाला, भाग्यवान्; (हे २, १५६; चंड)। देखो **पुन्न**=पुण्य।

पुण्ण त्रि [पूर्ण] १ संपूर्ण, भरपूर, पूरा; (ओप; भग; उवा)। २ पुं. द्वीपकुमार देवों का दाक्षिणात्य इन्द्र; (इक)। ३ इक्षुवर समुद्र का अधिष्ठायक देव; (राज)। ४ तिथि-विशेष, पक्ष की पाँचवीं, दसवीं और पनरहवीं तिथि; (सुज्ज १०, १५)। ५ पुंन. शिखर-विशेष; (इक)। °कलस पुं [°कलश] संपूर्ण घट; (जं ०)। °घोस पुं [°घोष] ऐरवत वर्ष का एक भावी जिन-देव; (सम १५४)। °चंद पुं [°चन्द्र] १ संपूर्ण चन्द्रमा। २ विद्याधर वंश के एक राजा का नाम; (पउम ५, ४४)। °प्पभ पुं [°प्रभ] इक्षुवर द्वीप का अधिपति देव; (राज)। °भद्द पुं [°भद्र] १ स्वनाम-ख्यात एक गृह-पति, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ले मुक्ति पाई थी; (अंत)। २ यक्ष-निकाय का एक इन्द्र; (ठा ४, १)। ३ पुंन. अनेक कूट —शिखरों का नाम; (इक)। ४ यक्ष का चैत्य-विशेष; (ओप; विपा १, १; उवा)। °मासी स्त्री [°मासी] पूर्णिमा तिथि; (दे)। °सेण पुं [°सेन] राजा श्रेणिक का पुत्र, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी; (अनु)। देखो **पुन्न**=पूर्ण।

पुण्णमासिणी स्त्री [पौर्णमासी] तिथि-विशेष, पूर्णिमा; (ओप; भग)।

पुण्णवत्त न [दे] आनन्द से हृत वस्त्र; (दे ६, ५३; पाअ)।

पुण्णा स्त्री [पूर्णा] १ तिथि-विशेष, पक्ष की ५, १० और १५ वीं तिथि; (संबोध ५४; सुज्ज १०, १५)। २ पूर्णभद्र और माणिभद्र इन्द्र की एक महादेवी—अग्र-महिषी; (इक; णाया २), "पुण्णभद्दस्स णं जक्खिंदस्स जक्खरन्नो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तं जहा—पुन्ना(? ण्णा) बहुपुत्तिआ उत्तमा तारगा, एवं माणिभद्दस्सवि" (ठा ४, १—पत्र २०४)।

पुण्णाग } देखो **पुन्नाग**; (पउम ४३, ३६; से ६, ५६;
पुण्णाम } हे १, १६०; पि २३१)।

पुण्णाली स्त्री [दे] असती, कुलटा, पुंश्चली; (दे ६, ५३; षड्)।

पुण्णाह पुंन [पुण्याह] १ पुण्य दिन, शुभ दिवस; (गा १६५; गउड)। २ वाद्य-विशेष; "पुण्णाहतूरेण" (स ४०१; ७३४)।

पुण्णिमसी स्त्री [पूर्णमासी] पूर्णिमा; (संबोध ३६)।

पुण्णिमा स्त्री [**पूर्णिमा**] तिथि-विशेष, पूर्णमासी; (काप्र १६४)। °**यंद** पुं [°**चन्द्र**] पूर्णिमा का चन्द्र; (महा; हेका ४८)।

पुण्णिमासिणी देखो **पुण्णमासिणी**; (सम ६६; श्रा २६; सुज्ज १०, ६)।

पुत्त पुं [**पुत्र**] लड़का; (ठा १०; कुमा; सुपा ६६; ३३४; प्रासू २७; ७७; गाया १, २)। °**वई** स्त्री [°**वती**] लड़का वाली स्त्री; (सुपा २८१)।

पुत्तंजीवय पुं [**पुत्रंजीवक**] वृक्ष-विशेष, पुतजीया, जियापोता का पेड़; "पुत्तंजीवयरिट्ठ"(पराण १—पत्र ३१)। २ न. जियापोता का बीज; "पुत्तंजीवयमालालंकिएयं" (स ३३७)।

पुत्तय पुं [**पुत्रक**] देखो **पुत्त**; (महा)।

पुत्तरे पुंस्त्री [**दे**] योनि, उत्पत्ति-स्थान; "पुत्तरं योनौ" (संक्षि ४७)।

पुत्तलय पुं [**पुत्रक**] पुतला; (सिरि ८६१; ६२; ६४)।

पुत्तलिया } स्त्री [**पुत्रिका**] शालभञ्जिका, पुतली; (पाअ; **पुत्तली** } कुम्मा ६; प्रवि १३; सुपा २६६; सिरि ८१५)।

पुत्तह देखो **पुत्त**; (प्राकृ ३५)।

पुत्ताणुपुत्तिय वि [**पौत्रानुपुत्रिक**] पुत्र-पौत्रादि के योग्य; "पुत्ताणुपुत्तियं वित्तिं कप्पेति" (णाया १, १—पत्र ३७)।

पुत्तिआ स्त्री [**पुत्रिका**] १ पुत्री, लड़की; (अभि १७८)। २ पुतली; (दे ६, ६२; कुमा)।

पुत्तिल्ल देखो **पुत्त**; (प्राकृ ३५)।

पुत्ती स्त्री [**पुत्री**] लड़की; (कप्पू)।

पुत्ती स्त्री [**पोती**] १ वस्त्र-खण्ड, मुख-वस्त्रिका; (पव ६०; संबोध ५४)। २ साड़ी, कटी-वस्त्र; (धर्मवि १७)। देखो **पोत्ती**।

पुत्तुल्ल पुं [**पुत्र**] पुत्र, लड़का; (प्राकृ ३५)।

पुत्थ वि [**दे**] मृदु, कोमल; (दे ६, ५२)।

पुत्थ } पुंन [**पुस्त**, °**क**] १ लेप्यादि कर्म; (श्रा १)। **पुत्थय** } २ पुस्तक, पोथी, किताब; "पुत्थए लिहावेइ" (कुप्र ३४८), "अवहरिओ पुत्थओ सहसा" (सम्मत्त ११८)। देखो **पोत्थ**।

पुथवी देखो **पुढवी**; (चंड)।

पुथुणी } (पै) देखो **पुढवी**; (प्राकृ १२४; पि १६०)। **पुथुवी** } °**नाथ** (पै) पुं [°**नाथ**] राजा; (प्राकृ १२४)।

पुध देखो **पिह**=पृथक्; (ठा १०)।

पुधं देखो **पिधं**; (हे १, १८८)।

पुधम } (पै) देखो **पुढम**, **पुढुम**; (पि १०४; हे ४, **पुधुम** } ३१६)।

पुन्न देखो **पुण्ण**=पुन्य; "कह मह इत्तियपुन्ना जं सो दीसिज्ज पच्चक्खं" (सुर १२, ११८; उप ७६८ टी; कुमा)। °**कंखिअ** वि [°**काङ्क्षित**, °**काङ्क्षिन्**] पुण्य की चाह वाला; (भग)। °**कलस** पुं [°**कलश**] एक राजा का नाम; (उप ७६८ टी)। °**जसा** स्त्री [°**यशस्**] एक स्त्री का नाम; (उप ७२८ टी)। °**पत्तिया** स्त्री [°**प्रत्यया**] एक जैन मुनि-शाखा; (कप्प)। °**पिवासय** वि [°**पिपासक**] पुण्य का प्यासा, पुण्य की चाह वाला; (भग)। °**भागि** वि [°**भागिन्**] पुण्य का भागी, पुण्य-शाली; (सुपा ६४१)। °**सम्म** पुं [°**शर्मन्**] एक ब्राह्मण का नाम; (उप ७२८ टी)। °**सार** पुं [°**सार**] एक स्वनाम-ख्यात श्रेष्ठी; (उप ७२८ टी)।

पुन्न देखो **पुण्ण**=पूर्ण; (सुर २, ६७; उप ७६८ टी; ठा २, ३; अनु २)। °**तल्ल** पुं [°**तल**] एक जैन मुनि-गच्छ; (कुप्र ६)। °**पाय** वि [°**प्राय**] करीब-करीब संपूर्ण, कुछ-कम पूर्ण; (उप ७२८ टी)। °**भद्द** पुं [°**भद्र**] १ यक्ष-विशेष; (सिरि ६६६)। २ यक्ष-निकाय का एक इन्द्र; (ठा २, ३)। ३ एक अन्तकृद् मुनि; (अंत १८)। ४ एक जैन मुनि, आर्य श्रीसंभूतविजय का एक शिष्य; (कप्प)।

पुन्नयण पुं [**पुण्यजन**] यक्ष, एक देव-जाति; (पाअ)।

पुन्नाग } देखो **पुंनाग**; (कप्प; कुमा; पउम २१, ४६; **पुन्नाम** } पाअ)। ३ पुन्नाग का फूल; (कुमा; हे १, **पुन्नाय** } १६०)।

पुन्नालिया } [**दे**] देखो **पुण्णाली**; (सुपा ५६६; **पुन्नाली** } ५६७)।

पुन्निमा देखो **पुण्णिमा**; (रंभा)।

पुप्पुअ वि [**दे**] पीन, पुष्ट, उपचित; (दे ६, ५२)।

पुप्फ न [**पुष्प**] १ फूल, कुसुम; (गाया १, १; कप्प; सुर ३, ६५; कुमा)। २ एक विमानावास, देव-विमान विशेष; (देवेन्द्र १३५; सम ३८)। ३ स्त्री का रज; ४ विकास; ५ आँख का एक रोग; ६ कुबेर का विमान; (हे १, २३६; २, ५३; ६०; १५४)। °**इरि** पुं [°**गिरि**] एक पर्वत का नाम; (पउम ७६, १०)। °**कंत** न [°**कान्त**] ए

देव-विमान; "पुप्फकंतं" (सम ३८)। °करंडय पुं [°करण्डक] हस्तिशीर्ष नगर का एक उद्यान; "पुप्फकरंडए उज्जाणे" (विपा २, १)। °केउ पुं [°केतु] १ एरवत क्षेत्र का सातवाँ भावी तीर्थंकर—जिनदेव; (सम १५४)। २ ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष; (ठा २, ३)। °ग न [°क] १ मूल भाग; "भायस्स पुप्फगं तो इमेहिं कज्जेहिं पडिलेहे" (ओघ २८६)। २ पुष्प, फूल; (कप्प)। ३ देखो नीचे °य; (औप)। °चूला स्त्री [°चूला] १ भगवान् पार्श्वनाथ की मुख्य शिष्या का नाम; (सम १५२; कप्प)। २ एक महासती, अन्निकाचार्य की सुयोग्य शिष्या; (पडि)। ३ सुबाहुकुमार की मुख्य पत्नी का नाम; (विपा २, १)। °चूलिया स्त्री [°चूलिका] एक जैन ग्रन्थ; (निर १, ४)। °च्चणिया स्त्री [°र्चनिका] पुष्पों से पूजा; (णाया १, २)। °च्चिणिया स्त्री [°चायिनी] फूल बिनने वाली स्त्री; (पाअ)। °छज्जिया स्त्री [°छादिका] पुष्प-पात्र विशेष; (राज)। °ज्झय न [°ध्वज] एक देव-विमान; (सम ३८)। °णंदि पुं [°नन्दिन्] एक राजा का नाम; (ठा १०)। °णालिया देखो °नालिया; (तंदु)। °दंत पुं [°दन्त] १ नववाँ जिनदेव, श्री सुविधिनाथ; (सम ६३; ठा २, ४)। २ ईशानेन्द्र के हस्ति-सैन्य का अधिपति देव; (ठा ५, १; इक)। ३ देव-विशेष; (सिरि ६६७)। °दंती स्त्री [°दन्ती] दमयन्ती की माता का नाम, एक रानी; (कुप्र ४८)। °नालिया स्त्री [°नालिका] पुष्प का बेंट; (तंदु ४)। °निज्जास पुं [°निर्यास] पुष्प-रस; (जीव ३)। °पुर न [°पुर] पाटलिपुत्र, पटना शहर; (राज)। °पूरय पुं [°पूरक] पुष्प की रचना-विशेष; (णाया १, १६)। °प्पभ न [°प्रभ] एक देव-विमान; (सम ३८)। °बलि पुं [°बलि] उपचार, पुष्प-पूजा; (पाअ)। °बाण पुं [°बाण] कामदेव; (रंभा)। °भद्द न [°भद्र] नगर-विशेष, पटना शहर; (राज)। °मंत वि [°वत्] पुष्प वाला; (णाया १, १)। °माल न [°माल] वैताढ्य की उत्तर श्रेणि का एक नगर; (इक)। °माला स्त्री [°माला] ऊर्ध्व लोक में रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८—पत्र ४३७)। °य पुं [°क] १ फेन, डिण्डीर; (पाअ)। २ न. ईशानेन्द्र का एक पारियानिक विमान, देव-विमान-विशेष; (ठा ८; इक; पउम ७२, १८; औप)। ३ पुष्प, फूल; (कप्प)। ४ ललाट का एक पुष्पाकार आभूषण; (जं २)। देखो ऊपर °ग। °लाई, °लावी स्त्री [°लावी] फूल बिनने वाली स्त्री; (पाअ; दे १, ६)। °लेस न [°लेश्य] एक देव विमान; (सम ३८)। °वई स्त्री [°वती] १ ऋतुमती स्त्री; (दे ६, ६४; गा ४८०)। २ सत्पुरुष-नामक किंपुरुषेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ४, १; णाया २)। ३ बीसवें जिनदेव की प्रवर्तिनी—प्रमुख साध्वी—का नाम; (सम १५२; पत्र ६)। ४ चैत्य-विशेष; (भग)। °वण्ण न [°वर्ण] एक देव-विमान; (सम ३८)। °सिंग न [°शृङ्ग] एक देव-विमान; (सम ३८)। °सिद्ध न [°सिद्ध] देव-विमान विशेष; (सम ३८)। °सुय पुं [°शुक] व्यक्ति-वाचक नाम; (उत्त)। °ावत्त न [°ावर्त] एक देव विमान; (सम ३८)।

पुप्फस न [दे] फफड़ा, शरीर का एक भीतरी अंग; (पउम १०५, ५५)।

पुप्फा स्त्री [दे] फूफी, पिता की बहिन; (दे ६, ५२)।

पुप्फिअ वि [पुष्पित] कुसुमित, संजात-पुष्प; (धर्मवि १४८; कुमा; णाया १, ११; सुपा ५८)।

पुप्फिआ [दे] देखो पुप्फा; (पाअ)।

पुप्फिआ स्त्री [पुष्पिता] एक जैन आगम-ग्रन्थ; (निर १, ३)।

पुप्फिम पुंस्त्री [पुष्पत्व] पुष्पपन; (हे २, १५४)।

पुप्फी [दे] देखो पुप्फा; (षड्)।

पुप्फुआ स्त्री [दे] करीष का अग्नि; "सुव्वइ हेमंतम्मि दुग्गआ पुप्फुआसुअंधेया" (गा ३२६)।

पुप्फुत्तर न [पुष्पोत्तर] एक विमान; (कप्प)। °वडिंसग न [°ावतंसक] एक देव-विमान; (सम ३८)।

पुप्फुत्तरा } स्त्री [पुष्पोत्तरा] शक्कर की एक जाति; (णाया
पुप्फोत्तरा } १, १७—पत्र २२६; पण्ण १७—पत्र ५३३)।

पुप्फोदय न [पुष्पोदक] पुष्प-रस से मिश्रित जल; (णाया १,१—पत्र १६)।

पुप्फोवय } वि [पुष्पोपग] पुष्प प्राप्त करने वाला, फूलने
पुप्फोवा° } वाला (वृक्ष); (ठा ३, १—पत्र ११३)।

पुम पुं [पुंस्] १ पुरुष, नर; "थीअपुमाणं विसुज्झंता" (पव ५, ७२), "पुमत्तमागम्म कुमार दोवि" (उत्त १४, ३; ठा ८; औप)। २ पुरुष-वेद; (कम्म ५, ६०)। °आणमणी स्त्री [°आज्ञापनी] पुरुष को आज्ञा देने वाली भाषा, भाषा-विशेष; (पण्ण ११)। °पन्नवणी स्त्री [°प्रज्ञापनी] भाषा विशेष, पुरुष के लक्षणों का प्रतिपादन करने वाली भाषा; (पण्ण ११—पत्र ३६४)। °वयण न [°वचन] पुंलिंग शब्द का उच्चारण; (पण्ण ११—पत्र ३७०)।

पुम्म (अप) सक [**दृश्**] देखना। पुम्मइ; (प्राकृ ११६)।
पुयावइत्ता देखो **पुआव**।
पुर (अप) देखो **पूर**=पूरय्। पुरइ; (पिंग)।
पुर न [**पुर**] १ नगर, शहर; (कुमा; कुप्र ४३८)। २ शरीर, देह; (कुप्र ४३८)। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] विद्याधर वंश का एक राजा; (पउम ५, ४४)। °**भेयण** वि [°**भेदन**] नगर का भेदन करने वाला। स्त्री—°**णी**; (उत्त २०, १८)। °**वइ** पुं [°**पति**] नगर का अधिपति; (भवि)। °**वर** न [°**वर**] श्रेष्ठ नगर; (उवा; पराह १, ४)। °**वरी** स्त्री [°**वरा**] श्रेष्ठ नगरी; (गाया १, ६; उवा; सुर २, १५२)। °**वाल** पुं [°**पाल**] नगर-रक्षक, राजा; (भवि)।
पुर देखो **पुरं**; "पुरकम्मम्मि य पुच्छा" (बृह १)।
पुरएअ } देखो **पुरदेव**; (भवि)।
पुरएव }
पुरओ अ [**पुरतस्**] १ अग्रतः, आगे; (सम १५१; ठा ४, २; गा ३५०; कुमा; औप)। २ पहले, पूर्व में; "पुरत्रो कयं जं तु तं पुरेकम्मं" (ओघ ४८६)।
पुरं अ [**पुरस्**] १ पहले, पूर्व में; २ समक्ष; "नए गं से दरिद्दे समुक्किट्ठे समाणे पच्छा पुरं च गं विउलभोगसमितिसमन्नागते यावि विहरिज्जा" (ठा २, १--पत्र ११७)। ३ अग्रे, आगे। °**गम** वि [°**गम**] अग्र-गामी, पुरो-वर्ती; (सूअ १, ३, ३, ६)। देखो **पुरे, पुरो**।
पुरंजय पुं [**पुरञ्जय**] एक विद्याधर राजा। °**पुर** न [°**पुर**] एक विद्याधर-नगर; (इक)।
पुरंदर पुं [**पुरन्दर**] १ इन्द्र, देवराज; २ गन्ध-द्रव्य विशेष; (हे १, १७७)। ३ वृक्ष-विशेष, चव्य का पेड़; "पुरंदरकुसुमदामसुविणेण सूइया जाया" (उप ६८६ टी)। ४ एक राजर्षि; (पउम २१, ८०)। ५ मन्दरकुञ्ज नगर का एक विद्याधर राजा; (पउम ६, १७०)। °**जसा** स्त्री [°**यशस्**] एक राज-कन्या का नाम; (उप ६७३)। °**दिसि** स्त्री [°**दिश्**] पूर्व दिशा; (उप १४२ टी)।
पुरंधि } स्त्री [**पुरन्ध्री**] १ बहु कुटुम्ब वाली स्त्री; २ पति
पुरंधी } और पुत्र वाली स्त्री; (कुमा; कुप्र १०७; सुपा २६; पाअ)। ३ अनेक काल पहले ब्याही हुई स्त्री; (कप्पू)।
पुरकड देखो **पुरक्खड**; (सूअ १, २, १८)।
पुरकार पुं [**पुरस्कार**] १ आगे करना, अग्रतः स्थापन; (आचा)। २ सम्मान, आदर; (राम ६०)।

पुरक्खड वि [**पुरस्कृत**] १ आगे किया हुआ; (आ ६)। २ पुरो-वर्ती, आगामी; "गहणसमयपुरक्खडे पोग्गले उदीरेंति" (भग १, १)।
पुरच्छा देखो **पुरत्था**; (राज)।
पुरच्छिम देखो **पुरत्थिम**; (ठा २, ३ —पत्र ६७; सुज्ज २०—पत्र २८७; पि ६५५)। °**दाहिणा** स्त्री [°**दक्षिणा**] पूर्व-दक्षिण दिशा, अग्निकोण; (ठा १० —पत्र ४७८)।
पुरच्छिमा देखो **पुरत्थिमा**; (ठा १०—पत्र ४७८)।
पुरच्छिमिल्ल देखो **पुरत्थिमिल्ल**; (सम ६६)।
पुरत्थ वि [**पुरःस्थ**] आगे रहा हुआ; अग्र-वर्ती, पुरस्सर; "पुरत्थं होइ सहायं रणे ममं तेण" (उप १०३१ टी), "जेण गहिएणऽत्था इत्थ परत्थावि हु पुरत्था" (आ १४)।
पुरत्थ } अ [**पुरस्तात्**] १ पहले, काल या देश की अपेक्षा
पुरत्थओ } से आगे; "तप्पुरपुरत्थभाए" (सुपा ३६०), "मोस-
पुरत्था } स्स पच्छा य पुरत्थओ य" (उत्त ३२, ३१), "आदीणियं दुक्कडियं पुरत्था" (सूअ १, ५, १, २)। २ पूर्वदिशा; "पुरत्थाभिमुहे" (कप्प; औप; भग; गाया १, १—पत्र १६)।
पुरत्थिम वि [**पौरस्त्य, पूर्व**] १ पूर्व की तरफ का; "उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए" (कप्प; औप)। २ न. पूर्व दिशा; "पुरतो पुरत्थिमेणं" (गाया १, १—पत्र ५४; उवा)।
पुरत्थिमा स्त्री [**पूर्वा**] पूर्व दिशा; "पुरत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ" (आचा; मुच्छ १५८ टि)।
पुरत्थिमिल्ल त्रि [**पौरस्त्य**] पूर्व दिशा का, पूर्व दिशा में स्थित; (विपा १, ७, पि ५६५)।
पुरदेव पुं [**पुरादेव**] भगवान् आदिनाथ; "पुरदेवजिणस्स निव्वाणं" (पउम ४, ८७)।
पुरव देखो **पुव्व**; (गउड; हे ४, २७०; ३२३)।
पुरस्सर वि [**पुरस्सर**] अग्र-गामी; (कप्पू)।
पुरा स्त्री [**पुर्**] नगरी, शहर; (हे १, १६)।
पुरा देखो **पुरिल्ला**=पुरा; (सूअ १, १, २, २४; विपा १, १)। °**इय**, °**कय** वि [°**कृत**] पूर्व काल में किया हुआ; (भवि; कुप्र ३१६)। °**भव** पु [°**भव**] पूर्व जन्म; (कुप्र ४०६)।
पुराअण वि [**पुरातन**] पुराना, प्राचीन। स्त्री—°**णी**; (नाट—चैत १३१)।
पुराकर सक [**पुरा+कृ**] आगे करना। पुराकरंति; (सूअ १, ५, २, ५)।

पुराण वि [**पुराण**] १ पुराना, पुरातन; (गउड; उत्त ८, १२)। २ न व्यासादि-मुनि-प्रणीत ग्रन्थ-विशेष, पुरातन इतिहास के द्वारा जिसमें धर्म-तत्त्व निरूपित किया जाता हो वह शास्त्र; (धर्मवि ३८; भवि)। °**पुरिस** पुं [°**पुरुष**] श्रीकृष्ण; (वज्जा १२२)।

पुरिकोबेर पुं. ब. [**पुरीकौबेर**] देश-विशेष; (पउम ९८, ६७)।

पुरित्थिमा देखो **पुरत्थिमा**; (सूअ २, १, ९)।

पुरिम देखो **पुव्व**=पूर्व; (हे २, १३५; प्राकृ २८; भग; कुमा), "पंचवत्रो खलु धम्मो पुरिमस्स य पच्छिमस्स य जिणस्स" (पव ७४; पंचा १७, १)। °**ड्ढ** पुंन [°**र्ध**] १ पूर्वार्ध; २ प्रत्याख्यान-विशेष; (पंचा ५; पडि)। ३ तप-विशेष, निर्विकृतिक तप; (संबोध ५७)। °**ड्ढिय** वि [°**र्धिक**] 'पुरिमड्ढ' प्रत्याख्यान करने वाला; (पगह २, १, ठा ५, १)।

पुरिम वि [**पौरस्त्य**] अग्र-भव, अग्रेतन, आगे का; "इय पुव्वुत्तचउक्के झाणेसु पढमदुगि खु मिच्छत्तं। पुरिमदुगे सम्मत्तं" (संबोध ५२)।

पुरिम पुं [**दे**] प्रस्फोटन, प्रतिलेखन की क्रिया-विशेष; "छ प्पुरिमा नव खोडा" (ओघ २६५)।

पुरिमताल न [**पुरिमताल**] नगर-विशेष, (विपा १, ३; औप)।

पुरिमिल्ल वि [**पूर्वीय**] पहले का, पुरातन, प्राचीन; "आसि नगा पुरिमिल्ला, ता किं अम्हेहिं नट्ट होमो" (चेइय ११५)।

पुरिल पुं [**दे**] दैत्य, दानव; (षड्)।

पुरिल्ल वि [**पुरातन**] पुरा-भव, पहले का, पूर्ववर्ती; (विसे १३२६; हे २, १६३)।

पुरिल्ल वि [**पौरस्त्य**] पुरो-भव, पुरो-वर्ती, अग्र-गामी; (से १३, २; हे २, १६३; प्राप्र; षड्)।

पुरिल्ल वि [**पौर**] पुर-भव, नागरिक; (प्राकृ ३५; हे २, १६३)।

पुरिल्ल वि [**दे**] प्रवर, श्रेष्ठ; (दे ६, ५३)।

पुरिल्ल देखो **पुरिल्ला**=पुरा, पुरस्; "पुरिल्लो" (हे २, १६४ टि; षड्)।

पुरिल्लदेव पुं [**दे**] असुर, दानव; (दे ६, ५५)।

पुरिल्लपहाणा स्त्री [**दे**] साँप की दाढ़; (दे ६, ५६)।

पुरिल्ला अ [**पुरा**] १ निरन्तर क्रिया-करण, विच्छेद-रहित क्रिया करना; २ प्राचीन, पुराना; ३ पुराने समय में; ४ भावी; ५ निकट, सन्निहित; ६ इतिहास, पुरावृत्त; (हे २, १६४)।

पुरिल्ला अ [**पुरस्**] आगे, अग्रतः; (हे २, १६४)।

पुरिस पुंन [**पुरुष**] १ पुमान्, नर, मर्द; (हे १, १२४; भग; कुमा; प्रासू १२६), "इत्थीणि वा पुरिसाणि वा" (आचा २, ११, १८)। २ जीव, जीवात्मा; (विसे २०६०; सूअ २, १, २६)। ३ ईश्वर; (सूअ २, १, २६)। ४ शङ्कु, छाया नापने का काष्ठादि-निर्मित कीलक; ५ पुरुष-शरीर; (णंदि)। °**कार**, °**क्कार**, °**गार** पुं [°**कार**] १ पौरुष, पुरुषपन, पुरुष-चेष्टा, पुरुष-प्रयत्न; (प्रासू ४३; उवा; सुर २, ३५; उवर ४७)। २ पुरुषत्व का अभिमान; (औप)। °**जाय** पुं [°**जात**] १ पुरुष; २ पुरुष-जातीय; (सूअ २, १, ९; ७; ठा ३, १; २; ४, १)। °**जुग** न [°**युग**] क्रम-स्थित पुरुष; (सम ६८)। °**जेट्ठ** पुं [°**ज्येष्ठ**] प्रशस्त पुरुष; (पंचा १७, १०)। °**त्त**, °**त्तण** न [°**त्व**] पौरुष, पुरुषपन; "नहि नियजुवइसलहिया पुरिमा पुरिसत्तणमुविंति" (सुर २, २४; महा; सुपा ८४)। °**त्थ** पुं [°**ार्थ**] धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूप पुरुष-प्रयोजन; "सयलपुरिसत्थकारणमइदुलहो माणुसो भवो एसो" (धर्मवि ८२; कुमा; सुपा १२६)। °**पुंडरीअ** पुं [°**पुण्डरीक**] इस अवसर्पिणी काल में उत्पन्न षष्ठ वासुदेव; (पव २१०)। °**प्पणीय** वि [°**प्रणीत**] १ ईश्वर-निर्मित; २ जीव-रचित; (सूअ २, १, २६)। °**मेह** पुं [°**मेध**] यज्ञ-विशेष, जिसमें पुरुष का होम किया जाय वह यज्ञ; (राज)। °**यार** देखो °**कार**; (गउड; सुर २, १६; सुपा २७१)। °**लक्खण** न [°**लक्षण**] कला-विशेष, पुरुष के शुभाशुभ चिह्न पहचानने की एक सामुद्रिक कला; (जं २)। °**लिंग** न [°**लिङ्ग**] पुरुष-चिह्न। °**लिंगसिद्ध** पुं [°**लिङ्गसिद्ध**] पुरुष-शरीर से जो मुक्त हुआ हो वह; (णंदि)। °**वयण** न [°**वचन**] पुंलिंग शब्द; (आचा २, ४, १, ३)। °**वर** पुं [°**वर**] श्रेष्ठ पुरुष; (औप)। °**वरगंधहत्थि** पुं [°**वरगन्धहस्तिन्**] १ पुरुषों में श्रेष्ठ गन्धहस्ती के तुल्य; २ जिन-देव; (भग; पडि)। °**वरपुंडरीय** पुं [°**वरपुण्डरीक**] १ पुरुषों में श्रेष्ठ पद्म के समान; २ जिन-देव, अर्हन्; (भग; पडि)। °**विजय** पुं [°**विचय**, °**विजय**] ज्ञान-विशेष; (सूअ २, २, २७)। °**वेय** पुं [°**वेद**] १ कर्म-विशेष, जिसके उदय से पुरुष को स्त्री-संभोग की इच्छा होती है वह कर्म; २ पुरुष को स्त्री-भोग की अभिलाषा; (पण्ण २३; राम १५०)। °**सिंह**, °**सीह** पुं [°**सिंह**] १ पुरुषों में सिंह के समान, श्रेष्ठ पुरुष; २ पुं. जिनदेव, जिन भगवान्; (भग; पडि)। ३ भगवान् धर्मनाथ के प्रथम श्रावक का नाम;

(विचार ३७८)। ४ इस अवसर्पिणी काल में उत्पन्न पाँचवाँ वासुदेव; (सम १०५; पउम ५, १५५; पव २१०)। °**सेण** पुं [°**सेन**] १ भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा ले कर मोक्ष जाने वाला एक अन्तकृद् महर्षि, जो वसुदेव के अन्यतम पुत्र थे; (अंत १४)। २ भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर विमान में उत्पन्न होने वाले एक मुनि, जो राजा श्रेणिक के पुत्र थे; (अनु १)। °**दाणिअ**, °**दाणीय** पुं [°**दा-नीय**] उपादेय पुरुष, आप्त पुरुष; (सम १३; कप्प)।

पुरिसाअ अक [**पुरुषाय्**] विपरीत मैथुन करना। वकृ— **पुरिसाअंत**; (गा १९६; ३६१)।

पुरिसाइअ न [**पुरुषायित**] विपरीत मैथुन; (दे १, ४२)।

पुरिसाइर वि [**पुरुषायितृ**] विपरीत रत करने वाला; "दर-पुरिसाइरि विसमिरि जाणसु पुरिसाण जं दुक्खं" (गा ५२; ४४६)।

पुरिसुत्तम } पुं [**पुरुषोत्तम**] १ उत्तम पुरुष, श्रेष्ठ पुमान्;
पुरिसोत्तम } २ जिन-देव, अर्हन्; (सम १; भग; पडि)। ३ चौथा त्रिखण्डाधिपति, चतुर्थ वासुदेव; (सम ७०; पउम ५, १५५)। ४ भगवान् अनन्तनाथ का प्रथम श्रावक; (विचार ३७८)। ५ श्रीकृष्ण; (सम्मत्त २२६)।

पुरी स्त्री [**पुरी**] नगरी, शहर; (कुमा)। °**नाह** पुं [°**नाथ**] नगरी का अधिपति, राजा; (उप ७२८ टी)।

पुरीस पुंन [**पुरीष**] विष्ठा; (णाया १, ८; उप १३६ टी; ३२० टी; पाअ), "मुत्तपुरीसं य विक्खंति" (धर्मवि १६)।

पुरु पुं [**पुरु**] १ स्व-नाम-ख्यात एक राजा; (अभि १७६)। २ वि. प्रचुर, प्रभूत। स्त्री °**ई**; (प्राकृ २८)।

पुरुपुरिआ स्त्री [**दे**] उत्कण्ठा, उत्सुकता; (दे ६, ५)।

पुरुमिल्ल देखो **पुरिमिल्ल**; (गउड)।

पुरुव } देखो **पुव्व**=पूर्व; "ण ईरिसो दिट्ठपुरुवो" (स्वप्न ५५)।
पुरुव्व } "अमंदमाणंदगुंदलपुरुव्वं" (सुपा २२; नाट मृच्छ १२१; पि १२५)।

पुरुस (शौ) देखो **पुरिस**; (प्राकृ ८३; स्वप्न २६; अभि ८५; प्रयौ ६६)।

पुरुसोत्तम (शौ) देखो **पुरिसोत्तम**; (पि १२४)।

पुरुहूअ पुं [**दे**] घूक, उल्लू; (दे ६, ५५)।

पुरुहूअ पुं [**पुरुहूत**] इन्द्र, देव-राज; (गउड)।

पुरूरव पुं [**पुरूरवस्**] एक चंद्र-वंशीय राजा; (पि ४०८; ४०९)।

पुरे देखो **पुरं**; "जस्स नत्थि पुरं पच्छा मज्झे तस्स कुओ सिया" (आचा)। °**कड** वि [°**कृत**] आगे किया हुआ, पूर्व में किया हुआ; (औप; सूअ १, ५, २, १; उत्त १०, ३)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] पहले करने का काम, पूर्व में की जाती क्रिया; "पुरओ कयं जं तु तं पुरेकम्मं" (ओघ ४८६; हे १, ५७)। °**क्कार** पुं [°**कार**] सम्मान, आदर; (उत्त २६, ७; सुख २६, ७)। °**क्खड** देखो °**कड**; (पण्ण ३६—पत्र ७९६; पण्ह १, १)। °**वाय** पुं [°**वात**] १ सस्नेह वायु; २ पूर्व दिशा का पवन; (णाया १, ११—पत्र १७१)। °**संखडि** स्त्री [**दे. संस्कृति**] पहले ही किया जाता जिमनवार—भोजनोत्सव; (आचा २, १, २, ६; २, १, ४, १)। °**संथुय** वि [°**संस्तुत**] १ पूर्व-परिचित; २ स्व-पक्ष का सगा; (आचा २, १, ४, ५)।

पुरेस पुं [**पुरेश**] नगर-स्वामी; (भवि)।

पुरो देखो **पुरं**; (मोह ४६; कुमा)। °**अ**, °**ग** वि [°**ग**] अग्रगामी, अग्रेसर; (प्रति ४०; विसे २५४८)। °**गम** वि [°**गम**] वही अर्थ; (उप पृ ३५१)। °**भाइ** वि [°**भागिन्**] दोष को छोड़ कर गुण-मात्र को ग्रहण करने वाला; (नाट—विक्र ६७)।

पुरोकर सक [**पुरस्+कृ**] १ आगे करना। २ स्वीकार करना। ३ सम्मान करना। संकृ—**पुरोकरिअ, पुरोकाउं**; (मा १६; सूअ १, १, ३, १५)।

पुरोत्तमपुर न [**पुरोत्तमपुर**] एक विद्याधर-नगर का नाम; (इक)।

पुरोवग पुं [**पुरोपक**] वृक्ष-विशेष; (औप)।

पुरोह पुं [**पुरोधस्**] पुरोहित; (उप ७२८ टी; धर्मवि १४६)।

पुरोहड वि [**दे**] १ विषम, असम; २ पच्छोकड (?); (दे ६, १५)। ३ पुंन. आक्रान्त भूमि का वास्तु; (दे ६, १५)। ४ अग्रद्वार, दरवाजा का अग्रभाग; (ओघ ६२२)। ५ बाडा, वाटक; "संझासमए पत्ते मज्झ वलद्दा पुरोहडस्संतो। मह दिट्ठीए दंसिवि ठाएयव्वा" (सुपा ५४५; बृह २)।

पुरोहिअ पुं [**पुरोहित**] पुरोधा, याजक, होम आदि से शान्ति-कर्म करने वाला ब्राह्मण; (कुमा; काल)।

पुल पुं [**दे. पुल**] छोटा फोड़ा, फुनसी; "ते पुला भिज्जंति" (ठा १०—पत्र ५२१)।

पुल वि [**पुल**] समुच्छ्रित, उन्नत; "पुलनिप्पुलाए" (दस १०, १६)।

पुल ⎫ सक [**दृश्**] देखना। पुलइ, पुलअइ; (प्राकृ
पुलअ ⎭ ७१; हे ४, १८१; प्राप्र ८, ६६)। पुलएइ; (गउड १०६३), पुलएमि; (गा ५३१)। वकृ—**पुलंत, पुलअंत, पुलएंत**; (कप्पू; नाट—मालवि ६; पउम ३, ७७; ८, १६०; सुर ११, १२०; १२, २०४; ७, २१२)। संकृ—**पुलइअ**; (स ६८६)।

पुलअ पुं [**पुलक**] १ रोमाञ्च; (कुमा)। २ रत्न-विशेष, मणि की एक जाति; (पण्ण १; उत्त ३६, ७७; कप्प)। ३ जलचर जन्तु-विशेष, ग्राह का एक भेद; "सीमागारपुलु(? ल)-यसुंसुमार—" (पण्ह १, १—पत्र ७)। °**कंड** पुंन [°**काण्ड**] रत्नप्रभा नरक-पृथिवी का एक काण्ड; (ठा १०)।

पुलअण वि [**दर्शन**] देखने वाला, प्रेक्षक; (कुमा)।

पुलअण न [**पुलकन**] पुलकित होना; (कप्प)।

पुलआअ अक [**उत्+लस्**] उल्लसित होना, उल्लास पाना। पुलआअइ; (हे ४, २०२)। वकृ—**पुलआअमाण**; (कुमा)।

पुलइअ वि [**दृष्ट**] देखा हुआ; (गा ११८; सुर १४, ११; पाअ)।

पुलइअ वि [**पुलकित**] रोमाञ्चित; (पाअ; कुमा ४, १६; कप्प; महा; गा २०)।

पुलइज्ज अक [**पुलकाय्**] रोमाञ्चित होना। वकृ—**पुलइज्जंत**; (सण)।

पुलइल्ल वि [**पुलकिन्**] रोमाञ्च-युक्त, रोमाञ्चित; (वज्जा १६४)।

पुलएंत देखो **पुलअ**=दृश्।

पुलंधअ पुं [**दे**] भ्रमर, भमरा; (षड्)।

पुलंपुल न [**दे**] अनवरत, निरन्तर; (पण्ह १, ३—पत्र ४५; औप)।

पुलक ⎫ देखो **पुलअ**=पुलक; (पि २०३ टि; णाया १,
पुलग ⎭ १; सम १०४; कप्प)।

पुलाग ⎫ पुंन [**पुलाक**] १ असार अन्न; "धन्नमसारं भन्नइ
पुलाय ⎭ पुलायसद्देण" (संबोध २८; पव ६३), "निस्सारए होइ जहा पुलाए" (सूअ १, ७, २६)। २ चना आदि शुष्क अन्न; (उत्त ८, १२; सुख ८, १२)। ३ लहसुन आदि दुर्गन्ध द्रव्य; ४ दुष्ट रस वाला द्रव्य; "तिविहं होइ पुलागं धण्णे गंधे य रसपुलाए य" (बृह ५)। ५ पुं. अपने संयम को निस्सार बनाने वाला मुनि, शिथिलाचारी साधुओं का एक भेद; (ठा ३, २; ५, ३; संबोध २८; पव ६३)।

पुलासिअ पुं [**दे**] अग्नि-कण; (दे ६, ५५)।

पुलिंद पुं [**पुलिन्द**] १ अनार्य देश-विशेष; (इक)। २ पुंस्त्री. उस देश में रहने वाला मनुष्य; (पण्ह १, १; औप; कप्पू; उव)। स्त्री—°**दी**; (णाया १, १; औप)।

पुलिण न [**पुलिन**] तट, किनारा; "ओइण्णो नइपुलिणाओ" (पउम १०, ५४)। २ लगातार बाईस दिनों का उपवास; (संबोध ५८)।

पुलिय न [**पुलित**] गति-विशेष; (औप)।

पुलुट्ठ वि [**प्लुष्ट**] दग्ध; (पाअ)।

पुलोअ सक [**दृश्, प्र+लोक्**] देखना। पुलोएइ; (हे ४, १८१; सुर १, ८६)। वकृ—**पुलोअंत, पुलोएंत**; (पि १०४; सुर ३, ११८)।

पुलोअण न [**दर्शन, प्रलोकन**] विलोकन; (दे ६, ३०; गा ३२२)।

पुलोइअ वि [**दृष्ट, प्रलोकित**] १ देखा हुआ; (सुर ३, १६४)। २ न. अवलोकन; (से ७, ५६)।

पुलोएंत देखो **पुलोअ**।

पुलोम पुं [**पुलोमन्**] दैत्य-विशेष। °**तणया** स्त्री [°**तनया**] शची, इन्द्राणी; (पाअ)।

पुलोमी स्त्री [**पौलोमी**] इन्द्राणी; (प्राकृ १०; हे १, १६०)।

पुलोव देखो **पुलोअ**। पुलोवदि (शौ); (पि १०४)।

पुलोस पुं [**प्लोष**] दाह, दहन; (गउड)।

पुल्ल [**दे**] देखो **पोल्ल**; (सुख ६, १)।

पुल्लि पुंस्त्री [**दे**] १ व्याघ्र, शेर; (दे ६, ७६; पाअ)। २ सिंह, पञ्चानन, मृगेन्द्र; (दे ६, ७६)। स्त्री—को पियइ पयं च पुल्लीए" (सुपा ३१२)।

पुव ⎫ सक [**प्लु**] गति करना, चलना। पुवंति; (पि
पुव्व ⎭ ४७३), पुव्वंति; (भग १५—पत्र ६७०; टी—पत्र ६७३)।

पुव्व° देखो **पुण**=पू।

पुव्व वि [**पूर्व**] १ दिशा, देश और काल की अपेक्षा से पहले का, आद्य, प्रथम; (ठा ४, ४; जी १; प्रासू १२२)। २ समस्त, सकल; ३ ज्येष्ठ भ्राता; (हे २, १३५; षड्)। ४ पुंन. काल-मान-विशेष, चौरासी लाख को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो उतने वर्ष; (ठा २, ४; सम ७४; जी ३७; इक)। ५ जैन ग्रन्थांश-विशेष, बारहवें अंग-ग्रन्थ का एक विशाल विभाग, अध्ययन, परिच्छेद; "चोद्दसपुव्वी" (विपा १, १)। ६ द्वन्द्व, वधू-वर आदि युग्म; "पुव्वद्दा-

णाणि'' (आचा २, ११, १३)। ७ पूर्व-ग्रन्थ का ज्ञान; (कम्म १, ७)। ८ कारण, हेतु; (गांदि)। °कालिय वि [°कालिक] पूर्व काल का, पूर्व काल से संबन्ध रखने वाला; (पगह १, २ - पत्र २८)। °गय न [°गत] जैन शास्त्रांश-विशेष, बारहवें अंग का विभाग-विशेष; (ठा १० — —पत्र ४९१)। °ण्ह पुं [°ह्ण] १ दिन का पूर्व भाग, सुबह से दो पहर तक का समय; (हे १, ६७)। २ तप-विशेष, 'पुरिमड्ढ' तप; (संबोध ५८)। °तव पुंन [°तपस्] वीतराग अवस्था के पहले का—सराग अवस्था का—तप; (भग)। °दारिअ वि [°द्वारिक] पूर्व दिशा में गमन करने में कल्याण-कारी (नक्षत्र); (सम १२)। °द्ध पुंन [°र्ध] पहला आधा; (नाट)। °धर वि [°धर] पूर्व-ग्रन्थ का ज्ञान वाला; (पगह २, १)। °पय न [°पद] उत्सर्ग-स्थान; (निचू १)। °पुट्ठवया स्त्री [°प्रोष्ठपदा] नक्षत्र-विशेष; (सुज्ज १०, ५)। °पुरिस पुं [°पुरुष] पूर्वज, पुरखा; (सुर २, १९४)। °प्पओग पुं [°प्रयोग] पहले की क्रिया, पूर्व काल का प्रयत्न; (भग ८, ९)। °फग्गुणी स्त्री [°फाल्गुनी] नक्षत्र-विशेष; (राज)। °भद्दवया स्त्री [°भाद्रपदा] नक्षत्र-विशेष; (राज)। °भव पुं [°भव] गत जन्म, अतीत जन्म; (गाया १, १)। °भविय वि [°भविक] पूर्वजन्म-संबन्धी; (भवि)। °य पुं [°ज] पूर्व पुरुष, पुरखा; (सुपा २३२)। °रत्त पुं [°रात्र] रात्रि का पूर्व भाग; (भग; महा)। °व न [°वत्] अनुमान प्रमाण का एक भेद; (अणु)। °विदेह पुं [°विदेह] महाविदेह वर्ष का पूर्वीय हिस्सा; (ठा २, ३; इक)। °समास पुंन [°समास] एक से ज्यादः पूर्व-शास्त्रों का ज्ञान; (कम्म १, ७)। °सुय न [°श्रुत] पूर्व का ज्ञान; (राज)। °सूरि पुं [°सूरि] पूर्वाचार्य, प्राचीन आचार्य; (जीव १)। °हर देखो °धर; (पउम ११८, १२१)। °णुपुव्वी स्त्री [°ानुपूर्वी] क्रम, परिपाटी; (भग; विपा १, १; औप; महा)। °ाह देखो °ण्ह; (हे १, ६७; षड्)। °ाफग्गुणी देखो °फग्गुणी; (सम ७; इक)। °ाभद्दवया देखो °भद्दवया; (सम ७)। °ासाढा स्त्री [°ाषाढा] नक्षत्र-विशेष; (सम ९)।

पुव्वंग पुंन [**पूर्वाङ्ग**] १ समय-परिमाण-विशेष, चौरासी लाख वर्ष; (ठा २, ४; इक)। २ पक्ष के पहले दिन का नाम, प्रतिपत्; (सुज्ज १०, १४)।

पुव्वंग वि [**दे**] मुण्डित; (षड्)।

पुव्वा स्त्री [**पूर्वा**] पूर्व दिशा; (कुमा)।

पुव्वाड वि [**दे**] पीन, मांसल, पुष्ट; (दे ६, ५२)।

पुव्वामेव अ [**पूर्वमेव**] पहले ही; (कस)।

पुव्वावईणय न [**पूर्वावकीर्णक**] नगर-विशेष; (इक)।

पुव्वि वि [**पूर्विन्**] पूर्व-शास्त्र का जानकार; (विपा १, १; राज)।

पुव्विं } किवि [**पूर्वम्**] पहिले, पूर्व में; (सण; उवा; सुर
पुव्विं } १, १९४; ४, १११; औप)। °संथव पुं [°संस्तव] पूर्व में की जाती श्लाघा, जैन मुनि की भिक्षा का एक दोष, भिक्षा-प्राप्ति के पहले दायक की स्तुति करना; (ठा ३, ४)।

पुव्विम पुंस्त्री [**पूर्वत्व**] पहिलापन, प्रथमता; (षड्)।

पुव्विल्ल वि [**पूर्व, पूर्वीय**] पहिले का, पूर्व का; "पुव्विल्ल-समं कम्मं" (चेइय ८८९), "पुव्विल्लए किंचिवि दुट्ठकम्मे" (निसा ४; सुपा ३४६; सण)।

पुव्वुत्त वि [**पूर्वोक्त**] पहले कहा हुआ, पूर्व में उक्त; (सुर २, २४८)।

पुव्वुत्तरा स्त्री [**पूर्वोत्तरा**] ईशान कोण; (राज)।

पुस सक [**प्र + उञ्छ्, मृज्**] साफ करना, शुद्ध करना, पोंछना। पुसइ; (प्राकृ ६६; हे ४, १०५; गा ४३३)। कवकृ — **पुसिज्जंत**; (गा २०६)।

पुस देखो **पुस्स**; (प्राकृ २६; प्राप्र)।

पुस पुं [**पौष**] मास-विशेष, पौष मास; "पुसो" (प्राकृ १०)।

पुसिअ वि [**प्रोञ्छित, मृष्ट**] पोंछा हुआ; (गउड; से १०, ४२; गा ५४)।

पुसिअ पुं [**पृषत**] मृग-विशेष; (गा ६२९)।

पुस्स पुं [**पुष्य**] १ नक्षत्र-विशेष, कृत्तिका से आठवाँ नक्षत्र; (प्राकृ २६; प्राप्र; सम ८; १७; ठा २, ३)। २ रेवती नक्षत्र का अधिपति देव; (सुज्ज १०, १२)। ३ ऋषि-विशेष; (राज)। °माणअ, °माणव पुं [°मानव] मागध, स्तुति-पाठक, भाट-चारण आदि; (गाया १, ८— पत्र १३३; टी —पत्र १३६)। देखो **पूस=पुष्य**।

पुस्सायण न [**पुष्यायण**] गोत्र-विशेष; (सुज्ज १०, १६)।

पुह } देखो **पिह=पृथक्**; (हे १, १८८)। °ब्भूय वि
पुहं } [°भूत] अलग, जो जुदा हुआ हो; (अज्झ ६०)।

पुहई } स्त्री [**पृथिवी**] १ तृतीय वासुदेव की माता का
पुहई } नाम; (पउम २०, १८४)। २ एक नगरी का नाम; (पउम २०, १८८)। ३ भगवान् सुपार्श्वनाथ की

माता का नाम; (सुपा ३६)। ४ —देखो **पुढवी, पुहवी**; (कुमा; हे १, ८८; १३१)। **°धर** पुं [**°धर**] राजा; (पउम ८५, ४)। **°नाह** पुं [**°नाथ**] राजा; (सुपा १२२)। **°पहु** पुं [**°प्रभु**] राजा; (उप ७२८ टी)। **°पाल** पुं [**°पाल**] राजा; (सुर १, २४३)। **°राय** पुं [**°राज**] विक्रम की बारहवीं शताब्दी का शाकम्भरी देश का एक राजा; "पुहईराएण सयंभरीनरिंदेण" (मुणि १०६०१)। **°वइ** पुं [**°पति**] राजा; (सुपा २०१; २४८; ५१६)। **°वाल** देखो **°पाल**; (उप ६४८ टी)।

पुहईसर पुं [**पृथिवीश्वर**] राजा; (सुपा १०७; २४१)।

पुहत्त न [**पृथक्त्व**] १ भेद, पार्थक्य; (अणु)। २ विस्तार; (राज)। ३ बहुत्व; (भग १, २; ठा १०)। ४ वि. भिन्न, अलग; "अत्थपुहत्तस्स" (विसे १०६६)। **°वियक्क** न [**°वितर्क**] शुक्ल ध्यान का एक भेद; (संबोध ५१)। देखो **पुहुत्त, पोहत्त**।

पुहत्तिय देखो **पोहत्तिय**; (भग)।

पुहय देखो **पिह**=पृथक्; "पुहय देवीणं" (कुमा)।

पुहवि° } देखो **पुढवी, पुहई**; (पि ३८६; श्रा १४; प्राप्र; **पुहवी** } प्रासू ५; ११३; सम १५१; स १५२)। ६ भगवान् श्रेयांसनाथ की दीक्षा-शिबिका; (विचार १२६)। १० एक छन्द का नाम; (पिंग)। **°चंद** पुं [**°चन्द्र**] एक राजा, (यति ५०)। **°पाल** पुं [**°पाल**] १ एक राज-कुमार; (उप ६८६ टी)। २ देखो **पुहई-पाल**; (सिरि ४५)। **°पुर** न [**°पुर**] एक नगर का नाम; (उप ८४४)।

पुहवीस पुं [**पृथिवीश**] राजा; (हे १, ६)।

पुहु वि [**पृथु**] विशाल, विस्तीर्ण। स्त्री—**°ई**; (प्राकृ २८)।

पुहुत्त न [**पृथक्त्व**] १ दो से नव तक की संख्या; (सम ४४; जी ३०; भग)। २ —देखो **पुहत्त**; (ठा १०—पत्र ४७१; ४६५)।

पुहुवी देखो **पुहु-ई**; (हे २, ११३)।

पू° देखो **पुं**। **°सुअ** पुं [**°शुक**] तोता, मर्द पिक-पक्षी; (गा ५६३ अ)।

पूअ सक [**पूजय्**] पूजा करना। पूएइ; (महा)। कर्म—पूइज्जसि; (गउड)। वकृ—**पूयंत**; (सुपा २२४)। कवकृ —**पूइज्जंत**; (पउम ३२, ६)। कृ—**पूअणीअ, पूएअव्व, पूअणिज्ज**; (नाट—मृच्छ १६५; उवर १६६; औप; णाया १, १ टी; पंचा २, ८; उप ३२० टी)। संकृ —**पूइऊण**; (महा)।

पूअ न [**दे**] दधि, दही; (दे ६, ५६)।

पूअ पुं [**पूग**] १ वृक्ष-विशेष, सुपारी का गाछ; (गउड)। २ न. फल-विशेष, सुपारी; (स ३४५)। देखो **पूग**। **°प्फली, °फली** स्त्री [**°फली**] सुपारी का पेड़; (पउम ५३, ७६; पण्ण १)।

पूअ न [**पूर्त**] तालाव, कुआँ आदि खुदवाना, अन्न-दान करना, देव-मन्दिर बनाना आदि जन-समूह के हित का कार्य; "गरहियाणि इट्टपूयाणि" (स ७१३)।

पूअ वि [**पूत**] १ पवित्र, शुद्ध; (णाया १, ५; औप)। २ न. लगातार छः दिनों का उपवास; (संबोध ५८)। ३ वि. सूर्प आदि से साफ—तुष-रहित किया हुआ; (णाया १, ७ —पत्र ११६)।

पूअ न [**पूय**] पीब, दुर्गन्ध रक्त, व्रण से निकला हुआ गंदा सफेद बिगड़ा हुआ खून; (पण्ह १, १; णाया १, ८)।

पूअण न [**पूजन**] पूजा, सेवा; (कुमा; औप; सुपा ५८४; महा)।

पूअणा स्त्री [**पूजना**] १ ऊपर देखो; (पण्ह २, १; स ७६३; संबोध ६)। २ काम-विभूषा; (सूअ १, ३, ४, १७)।

पूअणा } स्त्री [**पूतना**] १ दुष्ट व्यन्तरी, डाइन, डाकिनी; **पूअणी** } (सूअ १, ३, ४, १३; पिंडभा ४१; सुपा २६; पण्ह १, ४)। २ गाडर, भेड़ी, मेषी; (सूअ १, ३, ४, १३)।

पूअय वि [**पूजक**] पूजा करने वाला; (सुर १३, १४३)।

पूअर देखो **पोर**=पूतर; (श्रा १४; जी १५)।

पूअल पुं [**पूप**] अपूप, पूआ, खाद्य-विशेष; (दे ६, १८)।

पूअलिया स्त्री [**पूपिका**] ऊपर देखो; (पव ४)।

पूआ स्त्री [**दे**] पिशाच-गृहीता, भूताविष्ट स्त्री; (दे ६, ५४)।

पूआ स्त्री [**पूजा**] पूजन, अर्चा, सेवा; (कुमा)। **°भत्त** न [**°भक्त**] पूज्य के लिए निष्पादित भोजन; (बृह २)। **°मह** पुं [**°मह**] पूजोत्सव; (कुप्र ८५)। **°रह** [**°रथ**] राक्षस-वंश में उत्पन्न एक राजा का नाम, एक लंका-पति; (पउम ५, २५६)। **°रिह, °रुह** वि [**°र्ह**] पूजा-योग्य; (सुपा ४६१; अभि ११८)।

पूइ वि [**पूति**] १ दुर्गन्धी, दुर्गन्ध वाला; (पउम ४४, ५५; उप ७२८ टी; तंदु ४१)। २ अपवित्र; (पंचा १३, ५)। ३ स्त्री. दुर्गन्ध; ४ अपवित्रता; (तंदु ३८)। ५ भिक्षा का एक दोष, पूति-कर्म; (पिंड २६८)। ६ रोग-विशेष, एक नासिका-रोग, नासा-कोथ; (विसे २०८)। ७ पूय, पीब; "गलंतपूइनिवहं" (महा), "पूइवसरुहिरपुन्नं" (सुर १४, ४६), "जहा सुणी पूइकण्णी" (उत्त १, ४)। ८ वृक्ष-विशेष, एकास्थिक वृक्ष की एक जाति; "पूई य निंबकरए" (पराण १—पत्र ३१)। °**कम्म** पुंन [°**कर्मन्**] मुनि-भिक्षा का एक दोष, पवित्र वस्तु में अपवित्र वस्तु को मिला कर दो जाती भिक्षा का ग्रहण; (ठा ३, ४ टी; औप; पंचा १३ ५)। °**म** वि [°**मत्**] १ दुर्गन्धी; २ अपवित्र; (तंदु ३८)।

पूइआलुग न [**दे. पूत्यालुक**] जल में होने वाली वनस्पति-विशेष; (आचा २, १, ८—सूत्र ४७)।

पूइज्जंत देखो **पूअ**=पूजय्।

पूय वि [**पूजित**] अर्चित, सेवित; (औप; उव)।

पूइय वि [**पूतिक**] १ अपवित्र, अशुद्ध, दूषित; (पराह २, ५; उप पृ २१०)। २ दुर्गन्धी, दुष्ट गन्ध वाला; (गाया १, ८; तंदु ४१)। ३ पूति-नामक भिक्षा-दोष से युक्त; (पिंड २६८)।

पूइय देखो **पोइअ**=(दे); "बलो गम्भो पूइयावणं" (सुत्त २, २६; उप)।

पूएअव्व देखो **पूअ**=पूजय्।

पूंडरिअ न [**दे**] कार्य, काम, काज, प्रयोजन; (दे ६, ५७)।

पूग पुं [**पूग**] १ समूह, संघात; (मोह २८)। २ देखो **पूअ**=पूग; (स ७०; ७१)।

पूगी स्त्री [**पूगी**] सुपारी का पेड़। °**फल** न [°**फल**] सुपारी; (रयण ५५)।

पूज देखो **पूअ**=पूजय्। कर्म—पुज्जए; (उव)। वकृ—**पूजयंत**; (विसे २८८८)। कृ—**पूज्ज, पूज**; (पउम ११, ६७; सुपा १८०; सुर १, १७; उवर १६६; उव; उप ५६८)।

पूजग देखो **पूअय**; (पंचा ४, ४४)।

पूजण देखो **पूअण**; (पंचा ६, ३८)।

पूजा देखो **पूआ**=पूजा; (उप १०१६)।

पूजिय देखो **पूइय**=पूजित; (औप)।

पूण पुं [**दे**] हस्ती, हाथी; (दे ६, ५६)।

पूणिआ } स्त्री [**दे**] पूणी, रुई की पहल; (दे ६, ७८; **पूणी** } ६, ५६)।

पूप देखो **पूअल**; (पिंड ५५७)।

पूयंत देखो **पूअ**=पूजय्।

पूयावणा स्त्री [**पूजना**] पूजा कराना; (संबोध १५)।

पूर सक [**पूरय्**] पूर्ति करना, भरना। पूरइ, पूरए; (हे ४, १६९; औप; भग; महा; पि ४६२) । वकृ—**पूरंत, पूरयंत**; (कुमा; कप्प; औप)। कवकृ—**पुज्जंत, पुज्जमाण, पूरिज्जंत, पूरंत, पूरमाण**; (उप पृ १५४; सुपा ६८; उप १३६ टी; भवि; गा ११६; से ११, ६३; ६, ६७)। संकृ—**पूरित्ता**; (भग), **पूरि** (अप); (पिंग)। हेकृ—**पूरइत्तए**; (पि ५७८)। कृ—**पूरिअव्व**; (से ११, ४४)।

पूर पुं [**पूर**] १ जल-समूह, जल-प्रवाह, जल-धारा; (कुमा)। २ खाद्य-विशेष; "कप्पूरपूरमहिए तंबोले" (सुर २, ६०)। ३ वि. पूरा, पूर्ण; "पूराणि य से सम्मं पसाइमणोरहेहिं अज्जेव सत्त राइंदियाइं, भविस्सइ य सुए सामिणो विज्जासिद्धी" (स ३६३)।

पूरइत्तअ (शौ) वि [**पूरयितृ**] पूर्ण करने वाला; (मा ४३)।

पूरंतिया स्त्री [**पूरयन्तिका**] राजा की एक परिषत्—परिवार; (राज)।

पूरग वि [**पूरक**] पूर्ति करने वाला; (कप्प; औप; रयण ७७)।

पूरण न [**पूरण**] शूर्प, सूप, सिरकी का बना एक पात्र जिससे अन्न पछारा जाता है; (दे ६, ५६)।

पूरण न [**पूरण**] १ पूर्ति; "समस्सापूरणं" (सिरि ८६८)। २ पालन; (आचू ५)। ३ पुं. यदुवंश के राजा अन्धक-वृष्णि का एक पुत्र; (अंत ३)। ४ एक गृह-पति का नाम; (उवा)। ५ त्रि. पूर्ति करने वाला; (राज)।

पूरमाण देखो **पूर**=पूरय्।

पूरय देखो **पूरग**; "बत्तीसं किर कवला आहारो कुच्छिपूरओ भणिओ" (पिंड ६४२)।

पूरयंत } देखो **पूर**=पूरय्।
पूरिअव्व }

पूरिगा स्त्री [**पूरिका**] मोटा कपड़ा; (राज)।

पूरिम वि [**पूरिम**] पूरने से—भरने से—होने वाला; (णाया १, १३; पराह २, ५; औप)।

पूरिमा स्त्री [**पूरिमा**] गान्धार ग्राम की एक मूर्च्छना; (ठा ७—पत्र ३६३)।

पूरिय वि [**पूरित**] भरा हुआ; (गउड; सण; भवि)।
पूरी स्त्री [**पूरी**] तन्तुवाय का एक उपकरण; (दे ६, ५६)।
पूरेंत देखो **पूर**=पूरय्।
पूरोट्टी स्त्री [**दे**] अवकर, कतवार, कूड़ा; (दे ६, ५७)।
पूल पुंन [**पूल**] पूला, घास की अंटिया; (उप ३२० टी; कुप्र २१५)।
पूव } **पूवल** } देखो **पूअल**; (कस; दे ६, ११७; निचू १)।
पूवलिआ } **पूविगा** } देखो **पूअलिया**; (बृह १; निचू १६)।
पूस अक [**पुष्**] पुष्ट होना। पूसइ; (हे ४, २३६; प्राकृ ६८)।
पूस देखो **पुस्स**=पुष्य; (गाया १, ८; हे १, ४३)। °**गिरि** पुं [°**गिरि**] एक जैन मुनि; (कप्प)। °**फली** स्त्री [°**फली**] वल्ली-विशेष; (पगण १)। °**माण**, °**माणग** पुं [°**माण**, °**मानव**] मागध, मङ्गल-पाठक; "—वद्धमाणपूसमाणघंटियगणेहिं" (कप्प; औप)। °**माणग** पुं [°**मानक**] ज्योतिर्देवता-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष; (ठा २, ३)। °**माणय** देखो °**माण**; (औप)। °**मित्त** पुं [°**मित्र**] १ स्वनाम-प्रसिद्ध जैन मुनि-त्रय—१ घृतपुष्यमित्र; २ वस्त्रपुष्यमित्र; ३ दुर्बलिकापुष्यमित्र, जो आर्य रक्षितसूरि के शिष्य थे; (विसे २५१०; २२८६)। २ एक राजा; (विचार ४६३)। °**मित्तिय** न [°**मित्रीय**] एक जैन मुनि-कुल; (कप्प)।
पूस पुं [**दे**] १ राजा सातवाहन; (दे ६, ८०)। २ शुक, तोता; (दे ६, ८०; गा २६३; वज्जा १३४; पाअ)।
पूस पुं [**पूषन्**] १ सूर्य, रवि; (हे ३, ५६)। २ मणि-विशेष; (पउम ६, ३९)।
पूसा स्त्री [**पुष्या**] व्यक्ति-वाचक नाम, कुण्डकोलिक श्रावक की पत्नी; (उवा)।
पूसाण देखो **पूस**=पूषन्; (हे ३, ५६)।
°**पूह** पुं [**अपोह**] विचार, मीमांसा; "ईहापूहमग्गणगवेसणं करेमाणस्स" (औप; पि १४२; २८६)। देखो **अपोह**=अपोह।
पृथुम (पै) देखो **पढम**; "पृथुमसिनेहो" (प्राकृ १२४)।
पेअ पुं [**प्रेत**] १ व्यन्तर-भेद, एक देव-जाति; (सुपा ४६१; ४६२; जय २६)। २ मृतक; (पउम ५, ६०)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] अन्त्येष्टि क्रिया, मृत का दाहादि कार्य; (पउम १३, २४)। **करणिज्ज** न [°**करणीय**] अन्त्येष्टि क्रिया; (पउम ७५, १)। °**काइय** वि [°**कायिक**] प्रेत-योनि में उत्पन्न, व्यन्तर-विशेष; (भग ३,७)। °**देवयकाइय** वि [°**देवताकायिक**] प्रेत देवता का, प्रेत-सम्बन्धी; (भग ३, ७)। °**नाह** पुं [°**नाथ**] यमराज, जम; (स ३१६)। °**भूमि**, °**भूमी** स्त्री [°**भूमि**, °**मी**] श्मशान; (सुपा २६५)। °**लोय** पुं [°**लोक**] श्मशान; (पउम ८६, ४३)। °**वइ** पुं [°**पति**] यम; (उप ७२८ टी)। °**वण** न [°**वन**] श्मशान; (पाअ; सुर १६, २०४; वज्जा २; सुपा ५१२)। °**ाहिव** पुं [°**ाधिप**] यम, जमराज; (पाअ)।
पेअ वि [**प्रेयस्**] अतिशय प्रिय। स्त्री—°**सी**; (सम्मत्त १७५)।
पेअ } **पेअव्व** } देखो **पा**=पा।
पेआ स्त्री [**पेया**] यवागू, पीने की वस्तु-विशेष; (हे १, २४८)।
पेआल न [**दे**] १ प्रमाण; (दे ६, ५७; विसे १६६ टी; णंदि; उव)। २ विचार; (विसे १३६१)। ३ सार, रहस्य; (ठा ४, ४ टी—पत्र २८३; उप पृ २०७)। ४ प्रधान, मुख्य; (उवा)।
पेआलणा स्त्री [**दे**] प्रमाण-करण; "पज्जव-पेयालणा पिंडो" (पिंड ६५)।
पेआलुय वि [**दे**] विचारित; (विसे १४८२)।
पेइअ वि [**पैतृक**] १ पिता से आया हुआ, पितृ-क्रम-प्राप्त; "पेइओ धम्मो" (पउम ८२, ३३; सिरि ३४८; स ५६६)। २ न. स्त्री के पिता का घर, पीहर, नैहर, मैका; "ता जा कुले कलंकं नो पयडइ ताव पेइए एयं पेसेमि", "विमलेण तओ भणियं गच्छ पिए पेइयमियाणिं" (सुपा ६००)।
पेईहर न [**पितृगृह**, **पैतृकगृह**] पीहर, स्त्री के पिता का घर; "इय चिंतिऊण सिग्घं धणसिरिपेईहरम्मि संचलिओ" (सुपा ६०३)।
पेऊस न [**पीयूष**] अमृत, सुधा; (हे १, १०५; गा ६५; कप्पू)। °**ासण** पुं [°**ाशन**] देव, सुर; (कुमा)।
पेंखिअ वि [**प्रेङ्खित**] कम्पित; (कप्पू)।
पेंखोल अक [**प्रेङ्खोलय्**] झूलना, हिलना। वकृ—**पेंखोलमाण**; (गाया १, १—पत्र ३१)।
पेंड देखो **पिंड**=पिण्ड; (हे १, ८५; प्राकृ ५; प्राप्र; कुमा)।
पेंड न [**दे**] १ खण्ड, टुकड़ा; २ वलय; (दे ६, ८१)।
पेंडधव पुं [**दे**] खड्ग, तलवार; (दे ६, ५६)।

पेंडवाल वि [दे] देखो **पेंडलिअ**; (दे ६, ५४)।

पेंडय पुं [दे] १ तरुण, युवा; २ षण्ढ, नपुंसक; (दे ६, ५३)।

पेंडल पुं [दे] रस; (दे ६, ५८)।

पेंडलिअ वि [दे] पिण्डीकृत, पिण्डाकार किया हुआ; (दे ६, ५४)।

पेंडव सक [प्र+स्थापय्] १ रखना, स्थापन करना। २ प्रस्थान कराना। पेंडवइ; (हे ४, ३७)।

पेंडविर वि [प्रस्थापयितृ] प्रस्थापन करने वाला; (कुमा)।

पेंडार पुं [दे] १ गोप, गो-पाल; २ महिषी-पाल; (दे ६, ५८)।

पेंडोली स्त्री [दे] क्रीड़ा; (दे ६, ५६)।

पेंढा स्त्री [दे] कलुष सुरा, पंक वाली मदिरा; (दे ६, ५०)।

पेंत देखो **पा**=पा।

पेक्ख सक [प्र+ईक्ष्] देखना, अवलोकन करना। पेक्खइ, पेक्खए; (सण; पिंग)। वकृ—**पेक्खंत**; (पि ३६७)। कवकृ—**पेक्खिज्जंत**; (से १५, ६३)। संकृ—**पेक्खिअ, पेक्खिऊण**; (अभि ४२; काप्र १५८)। कृ—**पेक्खणिज्ज**; (नाट—वेणी ७३)।

पेक्खअ } वि [प्रेक्षक] देखने वाला, निरीक्षक, द्रष्टा; (सुर
पेक्खग } ७, ८०; स ३७६; महा)।

पेक्खण न [प्रेक्षण] निरीक्षण, अवलोकन; (सुपा १६६; अभि ५३)।

पेक्खणग } न [प्रेक्षणक] खेल, तमाशा, नाटक; (सुर ७,
पेक्खणय } १८२; कुप्र ३०)।

पेक्खणा स्त्री [प्रेक्षणा] निरीक्षण, अवलोकन; (ओघ ३)।

पेक्खा स्त्री [प्रेक्षा] ऊपर देखो; (पउम ७२, २६)। देखो **पेच्छा**।

पेक्खिय देखो **पेच्छिअ**; (राज)।

पेखिल (अप) वि [प्रेक्षित] दृष्ट; (रंभा)।

पेच्च } अ [प्रेत्य] परलोक, आगामी जन्म; (भग; औप)।
पेच्चा } "संबोही खलु पेच्च दुल्लहा" (वै ७३)। °**भव** पुं [°भव] आगामी जन्म, पर लोक; (औप)। °**भाविअ** वि [°भाविक] जन्मान्तर-संबन्धी; (पण्ह २, २)।

पेच्चा देखो **पिअ**=पा।

पेच्छ सक [दृश्, प्र+ईक्ष्] देखना। पेच्छइ, पेच्छए; (हे ४, १८१, उव; महा; पि ४५७)। भवि—पेच्छिहिसि; (पि ५२५)। वकृ—**पेच्छंत**; (गा ३७३; महा)। संकृ—**पेच्छिऊण**; (पि ५८५)। हेकृ—**पेच्छिउं, पेच्छित्तए**; (उप ७२८ टी; औप)। कृ—**पेच्छणिज्ज, पेच्छिअव्व**; (गा ६६; औप; पण्ह १, ४; से ३, ३३)।

पेच्छ वि [प्रेक्ष] द्रष्टा, दर्शक; "अपरमत्थपेच्छो" (स ७१५)।

पेच्छग देखो **पेक्खग**; (भास ४७; धर्मसं ७४३)।

पेच्छण देखो **पेक्खण**; (सुपा ३७)।

पेच्छणग } देखो **पेक्खणग**; (पंचा ६, ११; महा)।
पेच्छणय }

पेच्छय वि [प्रेक्षक] द्रष्टा, निरीक्षक; (पउम ८६, ७१; स ३६१; गा ४६८)।

पेच्छय वि [दे] जो देखे उसीको चाहने वाला, दृष्ट-मात्र का अभिलाषी; (दे ६, ५८)।

पेच्छा स्त्री [प्रेक्षा] प्रेक्षणक, तमाशा, खेल, नाटक; "पेच्छा-छणा सिणाणविलोअणाण जहा सुचोक्खंवि न किंचिदंव" (उपपं ३७; सुर १३, ३७; औप)। देखो **पेक्खा**। °**घर** न [°गृह] देखो °**हर**; (ठा ४, २)। °**मंडव** पुं [°मण्डप] नाट्य-गृह, खेल आदि में प्रेक्षकों को बैठने का स्थान; (पव २६६)। °**हर** न [°गृह] नाटक-गृह, खेल-तमाशा का स्थान; (पउम ८०, ५)।

पेच्छि वि [प्रेक्षिन्] प्रेक्षक, द्रष्टा; (चेइय १०६; गा २१४)।

पेच्छिअ वि [प्रेक्षित] १ निरीक्षित, अवलोकित; (कुमा)। २ न. निरीक्षण, अवलोकन; (सुर १२, १८३; गा २२५)।

पेच्छिर वि [प्रेक्षितृ] निरीक्षक, द्रष्टा; (गा १७४; ३७१)।

पेज्ज देखो **पा**=पा।

पेज्ज पुंन [प्रेमन्] प्रेम अनुराग; (सूअ २, ५, २२; आचा; भग; ठा १; चेइय ६३४)। °**दंसि** वि [°दर्शिन्] अनुरागी; (आचा)।

पेज्ज वि [प्रेयस्] अत्यन्त प्रिय; (औप)।

पेज्ज वि [प्रेज्य] पूज्य, पूजनीय; (राज)।

पेज्ज देखो **पेर**=प्र + ईरय्।

पेज्जल न [दे] प्रमाण; (दे ६, ५७)।

पेज्जलिअ वि [दे] संघटित; (षड्)।

पेज्जा देखो **पेआ**; (ओघ १४६; हे १, २४८)।

पेज्जाल वि [दे] विपुल, विशाल; (दे ६, ६)।

पेट } न [दे] पेट, उदर; (पिंग; पव १)।
पेट्ट }

पेट्ठ देखो **पिट्ठ**=पिष्ट (संक्षि ३; प्राकृ ५; प्राप्र)।

पेड देखो **पेडय**; "नडपेडनिहा" (संबोध १८)।

पेडइअ पुं [**दे**] धान्य आदि बेचने वाला वणिक्; (दे ६, ५६)।

पेडक } न [**पेटक**] समूह, यूथ; "नडपेडकसंनिहा जाग"
पेडय } (संबोध १५; सुपा ५४६; सिरि १६३; महा)।

पेडा स्त्री [**पेटा**] १ मञ्जूषा, पेटी; (दे ५, ३८; महा)। २ पेटाकार चतुष्कोण गृह-पंक्ति में भिक्षार्थ-भ्रमण; (उत्त ३०, १६)।

पेडाल पुं [**दे. पेटाल**] बड़ी मञ्जूषा, बड़ी पेटी; (मुद्रा ११०)।

पेडावइ पुं [**पेटकपति**] यूथ का नायक; (सुपा ५४६)।

पेडिआ स्त्री [**पेटिका**] मञ्जूषा; (मुद्रा २४०)।

पेडु पुं [**दे**] महिष, भैंसा; (दे ६, ८०)।

पेडुा स्त्री [**दे**] १ भित्ति, भींत; २ द्वार, दरवाजा; ३ महिषी, भैंस; (दे ६, ८०)।

पेढ देखो **पीढ**=पीठ; (हे १, १०६; कुमा), "काऊण पेढं ठविया तत्थ एसा पडिमा" (कुप ११२)।

पेढाल वि [**दे**] १ विपुल; (दे ६, ६; गउड)। २ वर्तुल, गोलाकार; (दे ६, ६; गउड; पाअ)।

पेढाल वि [**पीठवत्**] पीठ-युक्त; (गउड)।

पेढाल पुं [**पेढाल**] १ भारत वर्ष का आठवाँ भावी जिन-देव; "पेढालं अट्ठमयं आणंदजियं नमंसामि" (पव ४६)। २ ग्यारह रुद्र पुरुषों में दसवाँ; (विचार ४७३)। ३ एक ग्राम, जहाँ भगवान् महावीर का विचरण हुआ था; "पेढालग्गाम-मागओ भयवं" (आवम)। ४ न. एक उद्यान; "तओ सामी दढभूमिं गओ, तीसे बाहिं पेढालं नाम उज्जाणं" (आव १)। °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] १ भारतवर्ष का आठवाँ भावी जिन-देव; "उदए पेढालपुत्ते य" (सम १५३)। २ भगवान पार्श्वनाथ के संतान में उत्पन्न एक जैन मुनि; "अहे णं उदए पेढालपुत्ते भगवं पासावच्चिजे नियंठे मेयज्जे गोत्तेणं" (सूअ २, ७, ५; ८; ६)। ३ भगवान् महावीर के पास दीक्षा ले कर अनुत्तर विमान में उत्पन्न एक जैन मुनि; (अनु २)।

पेढिया देखो **पीढिआ**; "चत्तारि मणिपेढियाओ" (ठा ४, २—पत्र २३०), २ ग्रन्थ की भूमिका, प्रस्तावना; (वसु)।

पेढी देखो **पीढी**; (जीव ३)।

पेणी स्त्री [**प्रैणी**] हरिणी का एक भेद, (पगह १, ४—पत्र ६८)।

पेदंड वि [**दे**] लुप्त-दण्डक, जूए में जो हार गया हो वह, जिसका दाव चला गया हो वह; (मृच्छ ४६)।

पेम पुंन [**प्रेमन्**] प्रेम, अनुराग, प्रीति, स्नेह; (उवा; औप; सं ५; सुपा २०४; रयण ४२)।

पेमालुअ वि [**प्रेमिन्**] प्रेमी, अनुरागी; (उप ६८६ टी)।

पेम्म देखो **पेम**; (हे २, ६८; ३, २५; कुमा; गा १२६; प्रासू ११६)।

पेम्मा स्त्री [**प्रेमा**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

पेर सक [**प्र + ईरय्**] १ पठाना, भेजना, प्रेरणा करना। २ धक्का लगाना, आघात करना। ३ आदेश करना। ४ किसी कार्य में जोड़ना लगाना। ५ पूर्वपक्ष करना, प्रश्न करना, सिद्धान्त का विरोध करना। ६ गिराना। पेरइ; (धर्मसं ५६०; भवि)। वकृ—**पेरंत**; (कुप्र ७०; पिंग)। कवकृ—**पेरिज्जंत**; (सुपा २५१; महा)। कृ—**पेज्ज**; (राज)।

पेरंत देखो **पज्जंत**; (हे १, ५८; २, ६३; प्राप्र; औप; गउड)। °**चक्कवाल** न [°**चक्रवाल**] बाह्य परिधि, बाहर का घेराव; (पगह १, ३)। °**वच्च** न [°**वर्चस्**] मगडप, तृणादि-निर्मित गृह; (राज)।

पेरग वि [**प्रेरक**] प्रेरणा करने वाला, पर्वपक्षी; (धर्मसं ५८७)।

पेरण न [**दे**] १ ऊर्ध्व स्थान; (दे ६, ५६)। २ खेल, तमाशा; (स ७२३; ७२५)।

पेरण न [**प्रेरण**] प्रेरणा; (कुप्र ७०)।

पेरणा स्त्री [**प्रेरणा**] ऊपर देखो; (सम्मत्त १५७)।

पेरिअ वि [**प्रेरित**] जिसको प्रेरणा की गई हो वह; (से ८, १२; भवि)।

पेरिज्ज न [**दे**] साहाय्य, सहायता, मदद; (दे ६, ५८)।

पेरिज्जंत देखो **पेर**=प्र + ईरय्।

पेरुल्लि वि [**दे**] पिण्डीकृत, पिण्डाकार किया हुआ; (दे ६, ५६)।

पेलव वि [**पेलव**] १ कोमल, सुकुमार, मृदु; (पाअ; से २, २९; अभि २६; औप)। २ पतला, कृश; ३ सूक्ष्म, लघु; (गाया १,१—पत्र २५; हे १, २३८)।

पेलु स्त्री [**पेलु**] पूणी, रुई की पहल; "कंतामि ताव पेलुं" (पिंडभा ३५)। °**करण** न [°**करण**] पूणी बनाने का उपकरण, शलाका आदि; (विसे ३३०५)।

पेल्ल सक [**क्षिप्**] फेंकना। पेल्लइ; (हे ४, १४३)। कर्म— पेल्लिज्जइ; (उव)। वकृ—**पेल्लंत**: (कुमा)। संकृ— **पेल्लिऊण**; (महा)।

पेल्ल देखो **पेर**=प्र+ईरय्। पेल्लेइ; (प्राकृ ६०)। कवकृ—**पेल्लिज्जंत**; (से ६, २५)। संकृ—**पेल्लि** (अप), **पेल्लिअ**; (पिंग)। कृ—**पेल्लेयव्व**; (ओघभा १८ टी)।

पेल्ल सक [**पीडय्**] पीलना, दबाना, पोड़ना। पेल्लेसि, पेल्लिसि; (स ५७४ टि)।

पेल्ल सक [**पूरय्**] पूरना, भरना। कवकृ—**पेल्लिज्जंत**; (से ६, २५)।

पेल्ल } पुंन [**दे**] बच्चा, शिशु, बालक; (उप २१६),
पेल्लग } "बीयम्मि पेल्लगाइं" (उप २२० टी)।

पेल्लग देखो **पेरग**; (निचू १६)।

पेल्लण देखो **पेरण**; (पराह १,३; गउड)।

पेल्लण न [**क्षेपण**] फेंकना; (धर्म २)।

पेल्लय [**दे**] देखो **पेल्ल**=(दे); (विपा १,२—पत्र २६)। "संपेल्लियं सियालि" (सुख २, २३)।

पेल्लय देखो **पेरग**; (बृह १)।

पेल्लय पुं [**पेल्लक**] भगवान् महावीर के पास दिक्षा लेकर अनुत्तर विमान में उत्पन्न एक जैन मुनि; (अनु २)।

पेल्लव } देखो **पेर**। पल्लवइ, पेल्लावइ; (प्राकृ ६०)।
पेल्लाव }

पेल्लिअ वि [**दे**. **पीडित**] पीडित; (दे ६, ५७), "थालय-दाइयपेल्लिअमां" (महा)।

पेल्लिअ देखो **पेरिअ**; (गा २२५; विपा १, १)।

पेल्लेयव्व देखो **पेल्ल**=प्र+ईरय्।

पेल्वे अ. आमन्त्रण-सूचक अव्यय; (षड्)।

पेस सक [**प्र**+**एषय्**] भेजना, पठाना। पेसइ, पेसइ; (भवि; महा)। वकृ—**पेसअंत**; (पिं ४५०; रंभा)। संकृ—**पेसिअ**, **पेसिउं**: (मा ६०, महा)। कृ—**पेसइयव्व**, **पेसिअव्व**; **पेसेयव्व**: (सुपा ३००; ३५८; ६३०; उप १३६ टी)।

पेस देखो **पीस**। वकृ—**पेसयंत**: (गउड)।

पेस पुस्त्री [**प्रेष्य**] १ कर्मकर, नौकर, दास, चाकर; (पराह १, ५; सूअ १, ४, २, २; उवा)। २ वि भेजने योग्य; (हे २, ६२);

पेस पुं [**दे**. **पेश**] [illegible] देश में होने वाला पशु, पशु-जाति [illegible]

पेस वि [**दे**. **पेश**] पेश-नामक जानवर के चमड़े का बना हुआ (वस्त्र); (आचा २, ५, १, ८)।

पेसण न [**दे**] कार्य, काज, प्रयोजन; (दे ६, ५७; भवि; गाया १, ७—पत्र ११७; पउम १०३, २६)।

पेसण न [**प्रेषण**] १ पठाना, भेजना; २ नियोजन, व्यापारण; (कुमा; गउड)। ३ आज्ञा, आदेश; (से ३, ५४)।

पेसणआरी } स्त्री [**दे**] दूती, दूत-कर्म करने वाली स्त्री;
पेसणआली } (दे ६, ५६; षड्)।

पेसणा स्त्री [**पेषण**] पीसना, पेषण; "सिलाए जवगोहूमंपसणाए हेऊए" (उप ५६७ टी)।

पेसल वि [**पेशल**] १ सुन्दर, मनोज्ञ; (आचा; गउड)। २ मधुर, मञ्जु; (पाअ)। ३ कोमल; (गउड)।

पेसल } न [**दे**] सिन्धु देश के पेश-नामक पशु के चर्म के
पेसलेस } सूक्ष्म पक्ष्म से निष्पन्न वस्त्र; "पेसाणि वा पेसलाणि वा" (२ आचा २, ५, १—सूत्र १४५), "पेसाणि वा पेसलेसाणि वा" (२ आचा २, ५, १, ५; गाज)।

पेसव सक [**प्र**+**एषय्**] भेजवाना। कृ—**पेसवेयव्व**: (उप १३६ टी)।

पेसवण न [**प्रेषण**] भेजवाना, दूसरे के द्वारा प्रेषण; (उप, पडि)।

पेसविअ वि [**प्रेषित**] भेजवाया हुआ; प्रस्थापित; (पाअ, उप पृ ५८)।

पेसाय वि [**पैशाच**] पिशाच-सम्बन्धी; (बृह २)।

पेसि स्त्री [**पेशि**] देखो **पेसी**; (सुपा ४८१)।

पेसिअ वि [**प्रेषित**] १ भेजा हुआ, प्रहित; (गा ११२, भवि; काल)। २ पेषण; (पउम ८, ३५)।

पेसिआ स्त्री [**पेशिका**] खगड, टुकड़ा, "अंबपेसिया ति वा अंबालगपेसिया ति वा" (अनु ६; आचा २, १, ८, ६)।

पेसिआर पुं [**प्रेषितकार**] नौकर, भृत्य, कर्मकर; (पउम ८, ३५)।

पेसिइवंत (शौ) वि [**प्रेषितवत्**] जिसने भेजा हो वह; (पि ५६०)।

पेसी स्त्री [**पेशी**] मांस-खगड, मांस-पिगड; (तंदु ७)। देखो **पेसिआ**।

पेसुण्ण } न [**पैशुन्य**] पराक्ष में दोष-कीर्तन, चुगली;
पेसुन्न } (औप; सूअ १, १, २; गाया १, १; आचा; सुपा ४२१)।

पेमेयव्व देखो **पेस**=प्र + इष्य्।
पेम्मिदवंत देखो **पेम्मिदवंत**; (पि ५६९)।
पेह सक [**प्र + ईक्ष्**] १ देखना, निरीक्षण करना, ध्यान-पूर्वक देखना। २ चिन्तन करना। पेहइ, पेहए; (पि ३२३; उवा), पेहति; (कुप्र १९२)। भवि —पेहिस्सामि; (पि ५३०)। वकृ—**पेहंत, पेहमाण**; (उपपृ १५६; चेइय २५०; पि ३२३)। संकृ —**पेहाए, पेहिया**; (कस; पि ३२३)।
पेहण न [**प्रेक्षण**] निरीक्षण; (पंचा ८, ११)।
पेहा स्त्री [**प्रेक्षण**] १ निरीक्षण; (उवः सम ३२)। २ कायोत्सर्ग का एक दोष, कायोत्सर्ग में बन्दर की तरह ओष्ठ-पुट को हिलाते रहना; (पव ५)। ३ पर्यालोचन, चिन्तन; (आव ४)। ४ बुद्धि, मति; (स्त १, २)।
पेहाविय वि [**प्रेक्षित**] दर्शित, दिखलाया हुआ; (उप पृ ३८८)।
पेहि वि [**प्रेक्षिन्**] निरीक्षक; (आचा, उव)। स्त्री **णी**; (पि ३२३)।
पेहिय वि [**प्रेक्षित**] निरीक्षित; (महा)।
पेहुण न [**दे**] १ पिच्छ, पँख; (दे ६, ५८; पाअ; गा १७३; ५६५; वज्जा ४४; भत्त १४१; गउड)। २ मयूर-पिच्छ, मयूर-पंख, शिखण्ड; (पगह १, १; २, ५; जं १; गाया १, ३)। देखो **पिहुण**।
पोअ सक [**प्र + वे**] पिरोना, गूँथना। पोअंति; (गच्छ ३, १८; सूअनि ७४)। वकृ —**पोयमाण**; (स ५१२)। संकृ —**पोइऊण**; (धर्मवि ६१)।
पोअ वि [**प्रोत**] पिरोया हुआ; (दे १, ४५)।
पोअ पुं [**पोत**] १ जहाज, प्रवहण, नौका; (पाअ; सुपा ८८; ३६६)। २ बालक, शिशु, बच्चा; (दे ६, ८१; पाअ; सुपा ३६६)। ३ न. वस्त्र, कपड़ा; (ठा ३, १ — पव ११४)।
पोअ पुं [**दे**] १ लघु वृक्ष, आम, भौं का पेड़; २ छोटा साँप; (दे ६, ८१)।
पोअइआ स्त्री [**दे**] निद्राकरी लता, लता-विशेष; (दे ६, ६३; पाअ)।
पोअंड वि [**दे**] १ भय-रहित, निडर; २ षगढ, नामर्द; (दे ६, ६१)।
पोअंत पुं [**दे**] शपथ, सौगन; (दे ६, ६२)।
पोअण न [**प्रवयन, प्रोतन**] पिरोना, गुम्फन; (आवम)।
पोअणपुर न [**पोतनपुर**] नगर-विशेष; (सुपा ३०१; मनि)।
पोअणा स्त्री [**प्रवयना, प्रोतना**] पिरोना; (उप ३८६)।
पोअय वि [**पोतज**] पोत से उत्पन्न होने वाला प्राणी—हस्ती आदि; (ठा ३, १)।
पोअय पुं [**पोतक**] देखो **पोअ**=पोत; (उवा; औप)।
पोअलय पुं [**दे**] १ आश्विन मास का एक उत्सव, जिसमें पत्नी के हाथ से ले कर पति अपूप को खाता है; २ एक प्रकार का अपूप—खाद्य-विशेष, पूआ; ३ बाल वसन्त; (दे ६, ८१)।
पोआई स्त्री [**पोताकी**] १ शकुनि को उत्पन्न करने वाली विद्या-विशेष; २ शकुनिका, पक्षि-विशेष; (विसे २४५३)।
पोआउय वि [**पोतायुज, पोतज**] देखो **पोअय**; (पउम १०२, ९९)।
पोआय पुं [**दे**] ग्राम-प्रधान, गाव का मुखिया; (दे ६, ६०)।
पोआल पुं [**दे**] वृषभ, बलीवर्द; (दे ६, ६२)।
पोआल [**दे, पोतक**] बच्चा; शिशु, बालक; (ओघ ४४७)।
पोइअ पुं [**दे**] १ हलवाई, मिठाई बेचने वाला; २ खद्योत; (दे ६; ६३)। ३ निमग्न, डूबा हुआ; (ओघ १३६)। ४ स्पन्दित; (बृह १)।
पोइअ वि [**प्रोत**] पिरोया हुआ; (दे १, ४४; उप पृ १०९; पाअ)।
पोइअल्लय देखो **पोइअ**=प्रोत; (ओघ ५३९ टी)।
पोइआ } स्त्री [**दे**] निद्राकरी लता, वल्ली-विशेष; (दे ६,
पोई } ६३; पराग १—पत्र ३४)।
पोउआ स्त्री [**दे**] करीष का अग्नि; (दे ६, ६१)।
पोंग पुं [**दे**] पाक, पकना; (स १८०)।
पोंगिल्ल वि [**दे**] पका हुआ, परिपक्व, परिपाक-युक्त; कच्छी भाषा में 'पोंगल';

"अन्नेवि सइंमहियलनिसीयणुप्पन्नकिणियपोंगिल्ला।
मलिणजरकप्पडोच्छइयविग्गहा कहवि हिंडंति॥"
(स १८०)।

पोंड देखो **पुंड**। °**वद्धण** न [°**वर्धन**] नगर-विशेष; (महा)। °**वद्धणिया** स्त्री [°**वर्धनिका**] जैन मुनि-गण की एक शाखा; (कप्प)।

पोंड } पुं [दे] १ यूथ का अधिपति; (दे ६, ६०)।
पोंडय } २ फल; (पगह १, ४ पत्र ७८)। ३ अ-विकसित अवस्था वाला कमल; (विसे १४२५)। ४ कपास का सूता; "दव्वं नु पोंडयादी भावे सुत्तमिह सूयगं नाणं" (सूअनि ३)।

पोंडरिगिणी देखो **पुंडरिगिणी**; (ठा २, ३)।

पोंडरिय देखो **पुंडरीअ**=पुण्डरीक; (स ४३६)।

पोंडरी स्त्री [**पौण्ड्री, पुण्डरीका**] जम्बूद्वीप के मेरु के उत्तर रुचक पर रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८)।

पोंडरीअ देखो **पुंडरीअ**=पुण्डरीक; (औप; गाया १, ५; १६; सम ३३; देवेन्द्र ३१८; सूअनि १४६)।

पोंडरीअ } न [**पौण्डरीक**] १ गणित-विशेष, रज्जु-गणित;
पोंडरीग } (सूअनि १५४)। २ देखो **पुंडरीअ**=पौण्ड-रीक; (सूअ २, १, १; सूअनि १४६; १५१)।

पोक्क सक [**व्या+हृ, पूत्+कृ**] पुकारना, आह्वान करना। पोक्कइ; (हे ४, ७६)।

पोक्क वि [दे] आगे स्थूल और उन्नत तथा बीच में निम्न (नासिका); "पोक्कनासं" (उत्त १२, ६)।

पोक्कण पुं [**पोक्कण**] १ अनार्य देश-विशेष; २ उस देश में बसने वाली म्लेच्छ जाति; (पगह १, १)।

पोक्कण न [**व्याहरण, पूत्करण**] १ पुकार, आह्वान; २ वि. पुकारने वाला; (कुमा)।

पोक्कर देखो **पुक्कर**। पोक्करंति; (महा)। वकृ—**पोक्करंत**; (सुपा ३८०)।

पोक्करिय वि [**पूत्कृत**] १ पुकारा हुआ; (सुर ६, १६४)। २ न. पुकार; (दंस ३)।

पोक्कार देखो **पुक्कार**=पूत्कार; (उप पृ १८५)।

पोक्किअ देखो **पोक्करिय**; (उप १०३१ टी)।

पोक्खर न [**पुष्कर**] १ जल, पानी; २ पद्म, कमल; ३ पद्म-कोष; ४ एक तीर्थ, अजमेर-नगर के पास का एक जलाशय—तीर्थ; ५ हाथी की सूँढ का अग्र भाग; ६ वाद्य-भाण्ड; ७ आपण, दुकान; ८ असि-कोष, तलवार की म्यान; ९ मुख, मुँह; १० कुष्ठ रोग की औषधि; ११ द्वीप-विशेष; १२ युद्ध, लड़ाई; १३ शर, बाण; १४ आकाश; "पोक्खरं" (हे १, ११६; २, ४; संक्षि ४)। १५ पुं. नाग-विशेष; १६ रोग-विशेष; १७ सारस पक्षी; १८ एक राजा का नाम; १९ पर्वत-विशेष; २० वरुण-पुत्र; "पोक्खरो" (प्राप्र)। देखो **पुक्खर**।

पोक्खर वि [**पौष्कर**] १ पुष्कर-संबन्धी। २ पद्माकार रचना वाला; "पोक्खरं पवहणं" (चारु ७०)।

पोक्खरिणी स्त्री [**पुष्करिणी**] १ जलाशय-विशेष, वर्तुल वापी; (णाया १, १—पत्र ६३)। २ पद्मिनी, कमलिनी, पद्म-लता; "जलेण वा पोक्खरिणीपलासं" (उत्त ३२, ६०)। ३ वापी; (कुमा)। ४ पद्म-समूह; ५ पुष्कर-मूल; (हे २, ४)। ६ चौकोना जलाशय वापी; (पगह १, १; हे २, ४)।

पोक्खल देखो **पुक्खल**; (पराग १—पत्र ३५; आचा २, १, ८, ११)।

पोक्खलच्छिलय } देखो **पुक्खलच्छिभय**; (पगग १—
पोक्खलच्छिल्लय } पत्र ३५; राज)।

पोक्खलि पुंन [**पुष्कलिन्**] एक जैन उपासक, जिसका दूसरा नाम शतक था; (राज)।

पोग्गर } पुंन [**पुद्गल**] १ रूपादि-विशिष्ट द्रव्य, मूर्त
पोग्गल } द्रव्य, रूप वाला पदार्थ; "पोग्गला" (भग ८, १; ठा २, ४; ४, ४; ५, ३; ८), "पोग्गलाइं" (सुज्ज ६; पंच ३, ४६)। २ न. मांस; (पव २६८; हे १, ११६)। °त्थिकाय पुं [°**स्तिकाय**] पुद्गल-स्कन्ध, पुद्गल-राशि; (भग; ठा ५, ३)। °परट्ट, °परियट्ट पुं [°**परिवर्त**] १ समस्त पुद्गल-द्रव्यों के साथ एक २ परमाणु का संयोग-वियोग; २ समय का उत्कृष्टतम परिमाण-विशेष, अनन्त कालचक्र-परिमित समय; (कम्म५, ८६; भग १२, ४; ठा३, ४)।

पोग्गलि वि [**पुद्गलिन्**] वाला, पुद्गल-युक्त; (भग ८, १०—पत्र ४२३)।

पोग्गलिय वि [**पौद्गलिक**] पुद्गल-मय, पुद्गल-संबन्धी, पुद्गल का; (पिंडभा ३२४)।

पोच्च वि [दे] सुकुमार, कोमल; गुजराती में 'पोचुं'; (दे ६, ६०)।

पोच्चड वि [दे] १ असार, निस्सार; (णाया १, ३—पत्र ६४)। २ अतिनिबिड; (पगह १, १ पत्र १४)। ३ मलिन; (निचू ११)।

पोच्छल अक [**प्रोत्+शल्**] उछलना, ऊँचा जाना। वकृ—**पोच्छलंत**; (सुर १३, ४१)।

पोच्छाहण न [**प्रोत्साहन**] उत्तेजन; (वेणी १०५)।

पोच्छाहिअ वि [**प्रोत्साहित**] विशेष उत्साहित किया हुआ, उत्तेजित; (सुर १३, २६)।

पोट्ट न [दे] पेट, उदर; मराठी में 'पोट'; (दे ६, ६०; गाया १, १—पत्र ६१; ओघभा ७६; गा ८३; १७१;

१८५; स ११६; ७३८; उवा; सुख २, १५; सुपा ५४३; प्राकृ ३७; पव १३५; जं २)। °साल पुं [°शाल] एक परिव्राजक का नाम; (विसे २४५२; ५५)। °सारणी स्त्री [°सारणी] अतीसार रोग; (आव ४)।

पोट्ट } न [दे] पोटला, गट्ठर, गठरी; "कामिणिनियंबबिंब
पोट्टल } कंदप्पविलासरायहाणित्ति। न मुणइ अमेज्झपोट्ट" (सुपा ३५५; दे २, २४; स १००)।

पोट्टलिगा स्त्री [दे] पोटली, गठरी; (सुख २, १७)।

पोट्टलिय वि [दे] पोटली उठाने वाला, गठरी-वाहक; (निचू १६)।

पोट्टलिया [दे] देखो **पोट्टलिगा**; (उप पृ ३८७; सुर १२, ११; सुख २, १७)।

पोट्टि स्त्री [दे] उदर-पेशी; (मृच्छ २००)।

पोट्टिल पुं [पोट्टिल] १ भारतवर्ष का भावी नववाँ तीर्थङ्कर—जिन-देव; (सम १५३)। २ भारतवर्ष के चौथे भावी जिन-देव का पूर्वभवीय नाम; (सम १५४)। ३ भगवान् महावीर का व्युत्क्रम से छठवें भव का नाम; (सम १०५)। ४ एक जैन मुनि, जिसने भगवान् महावीर के समय में तीर्थकर-नामकर्म बँधा था; (ठा ६)। ५ एक जैन मुनि; (पउम २०, २१)। ६ देव-विशेष; (णाया १, १४)। ७ देखो **पोट्ठिल**; (राज)।

पोट्टिला स्त्री [पोट्टिला] व्यक्ति-वाचक नाम, एक स्त्री का नाम; (णाया १, १४)।

पोट्टिस पुं [पोट्टिस] एक कवि का नाम; (कप्पू)।

पोट्ठवई स्त्री [प्रौष्ठपदी] १ भाद्रपद मास की पूर्णिमा; २ भादों की अमावस्या; (सुज्ज १०, ६)।

पोट्ठिल पुं [पुष्ठिल] भगवान् महावीर के पास दीक्षा ले कर अनुत्तर-विमान में उत्पन्न एक जैन मुनि; (अनु)।

पोडइल न [दे] तृण-विशेष; (पण्ण १—पत्र ३३)।

पोढ वि [प्रौढ] १ समर्थ; (पाअ)। २ निपुण, चतुर; ३ प्रगल्भ; ४ प्रवृद्ध, यौवन के बाद की अवस्था वाला; (उप पृ ८६; सुपा २२४; रंभा; नाट—मालती १३६)। °वाय पुं [°वाद] प्रतिज्ञा-पूर्वक प्रत्याख्यान; (गा ५२२)।

पोढा स्त्री [प्रौढा] १ तीस से पचपन वर्ष तक की स्त्री; (कुप्र १८५)। २ नायिका का एक भेद; (प्राकृ १०)।

पोढिम पुंस्त्री [प्रौढिमन्] प्रौढता, प्रौढपन; (मोह २)।

पोढी स्त्री [प्रौढी] ऊपर देखो; (कुप्र ४०७)।

पोणिअ वि [दे] पूर्ण; (दे ६, ५८)।

पोणिआ स्त्री [दे] सूते से भरा हुआ तकुआ; (दे ६, ६१)।

पोत देखो **पोअ**=पोत; (औप; बृह १; णाया १, ८)।

पोतणया देखो **पोअणा**; (उप पृ ४१२)।

पोत्त पुं [पौत्र] पुत्र का पुत्र, पोता; (दे २, ७२; श्रा १४)।

पोत्त न [पोत्र] प्रवहण, नौका; "वेलाउलम्मि ओयारियाणि सव्वाणि तेण पोत्ताणि" (उप ५६७ टी)।

पोत्त } न [पोत] १ वस्त्र, कापड़; (श्रा १२; ओघ
पोत्तग } १६८; कप्पू; ग ३३२)। २ धोती, कटी-वस्त्र; (गच्छ ३, १८; कस; वव ८४; श्रावक ६३ टी; महा)। ३ वस्त्र-खण्ड; (पिंड ३०८)।

पोत्तय पुं [दे] पोता, वृषण, अण्डकोश; (दे ६, ६२)।

पोत्तिअ न [पौतिक] वस्त्र, सूती कपड़ा; (ठा ५, ३—पत्र ३३८; कस २, २६ टि)।

पोत्तिअ वि [पोतिक] १ वस्त्र-धारी; २ पुं. वानप्रस्थों का एक भेद; (औप)।

पोत्तिआ स्त्री [पौत्रिका] पुत्र की लड़की; (रंभा)।

पोत्तिआ स्त्री [दे] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति; (उत्त ३६, १४७)।

पोत्तिआ } स्त्री [पोतिका, पोती] १ धोती, पहनने का
पोत्ती } वस्त्र, साड़ी; (विसे २६०१)। २ छोटा वस्त्र, वस्त्र-खण्ड, "चउप्फालयाए पोत्तीए मुहं बंधेत्ता" (णाया १, १—पत्र ५३; पिंडभा ६), "मुहपोत्तियाए" (विपा १, १)।

पोत्ती स्त्री [दे] काच, शीशा; (दे ६, ६०)।

पोत्तुल्लया देखो **पोत्तिआ**; (णाया १, १८—पत्र २३५)।

पोत्थ } पुंन [पुस्त, °क] १ वस्त्र, कपड़ा; (णाया १,
पोत्थग } १३—पत्र १७६)। २-३ देखो **पुत्थ**; "पोत्थ-
पोत्थय } कम्मजक्खा विव निच्चिट्ठा" (वसु; श्रा १२; सुपा २८६; विसे १४२५; बृह ३; प्राप्र; औप)।

पोत्था स्त्री [प्रोत्था] प्रोत्थान, मूलोत्पत्ति; (उत्त २०, १६)।

पोत्थार पुं [पुस्तकार] पोथी लिखने वाला, पोथी बनाने का काम करने वाला शिल्पी; (जीव ३)।

पोत्थिया स्त्री [पुस्तिका] पोथी, पुस्तक; "सरस्सइ व्व पोत्थियावलग्गहत्था" (काल)।

पोप्पय पुंन [दे] हस्त-परिमर्षण, हाथ फिराना; (उप पृ ३५३)।

पोप्फल न [**पूगफल**] सुपारी; (हे १, १७०; कुमा)।

पोप्फली स्त्री [**पूगफली**] सुपारी का पेड़; (हे १, १७०; कुमा)।

पोम देखो **पउम**; "जहा पोमं जले जायं" (उत्त २५, २७; सुख २५, २७; पउम ५३, ७८)।

पोमर न [**दे**] कुसुम्भ-रक्त वस्त्र; (दे ६, ६३)।

पोमाड पुं [**दे, पद्माट**] पमाड, पमार, चकवड़ का पेड़; (स १४४)। देखो **पउमाड**।

पोमावई स्त्री [**पद्मावती**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

पोमिणी देखो **पउमिणी**; (सुपा ६,८६; सम्मत्त १७१)।

पोम्म देखो **पउम**; (हे १, ६१; २, ११२; गा ७५; कुमा; प्राकृ २८; कप्पू; पि १६६)।

पोम्मा देखो **पउमा**; (प्राकृ २८; गा ४७१; पि १६६)।

पोम्ह देखो **पम्ह**=पक्ष्मन्; "जह उ किर णालिणाए भणियं मिदुक्कयपोम्हभरियाए" (धर्मसं ६८०)।

पोर पुं [**पूतर**] जल में होने वाला क्षुद्र जन्तु; (हे १, १७०; कुमा)।

पोर वि [**पौर**] पुर में — नगर में — उत्पन्न, नागरिक; (प्राकृ ३५)।

पोर देखो **पुर**=पुरस्। °**कव्व** न [°**काव्य**] शीघ्रकवित्व; (राज)।

पोर पुंन [**दे, पर्वन्**] ग्रन्थि, गाँठ; (ठा ४, १; अनु)। °**बीय** वि [°**बीज**] पर्व-बीज से उगने वाली वनस्पति, इक्षु आदि; (ठा ४, १)।

पोरग पुंन [**पर्वक**] वनस्पति का एक भेद, पर्व वाली वनस्पति; (पणण १ — पत्र ३३)।

पोरच्छ पुं [**दे**] दुर्जन, खल; (दे ६, ६२; पाअ)।

पोरच्छिम देखो **पुरच्छिम**; (सुपा ४१)।

पोरत्थ वि [**दे**] मत्सरी, ईर्ष्यालु, द्वेषी; (षड्)।

पोरय न [**दे**] खेत; (दे ६, २६)।

पोरव पुं [**पौरव**] राजा पुरु की संतान; (अभि ६५)।

पोरवाड पुं [**पौरवाट**] एक जैन श्रावक-कुल; (ती २)।

पोराण देखो **पुराण**; (पणण २८; औप; भग; हे ४, २८७; उव; गा ३४०)।

पोराण वि [**पौराण**] १ पुराण-संबन्धी; (राय)। २ पुराण शास्त्र का ज्ञाता; (राज)।

पोराणिय वि [**पौराणिक**] पुराण-शास्त्र-संबन्धी; (स ३४४)।

पोरिस न [**पौरुष**] १ पुरुषत्व, पुरुषार्थ; (प्रासू १७)। २ पराक्रम; (कुमा)।

पोरिस वि [**पौरुषेय**] पुरुष-जन्य, पुरुष-प्रणीत; (धर्मसं ८६२ टी)।

पोरिसिय देखो **पोरिसीय**; "अत्थाहमतारमपोरिसियंसि उदगंसि अप्पाणं मुयति" (णाया १, १४ — पत्र १९०)।

पोरिसी स्त्री [**पौरुषी**] १ पुरुष-शरीर-प्रमाण छाया; २ जो समय में पुरुष-परिमाण छाया हो वह काल, प्रहर; (उवा; विपा २, १; आचा; कप्प; पव ४)। ३ प्रथम प्रहर तक भोजन आदि का त्याग, प्रत्याख्यान-विशेष, तप-विशेष; (पव ४; संबोध ५७)।

पोरिसीय वि [**पौरुषिक**] पुरुष-प्रमाण, पुरुष-परिमित; "कुंभी महंताहियपोरिसीया" (सूत्र १, ५, १, २४)।

पोरुस पुं [**पुरुष**] अत्यन्त वृद्ध पुरुष; (सूत्र १, ७, १०)।

पोरुस देखो **पोरिस**; (स २०४; उप ७२८ टी; महा)।

पोरेकच्च न [**पौरस्कृत्य**] पुरस्कार, कला-विशेष;
पोरेगच्च (औप; राय; औप १०७ टि)।

पोरेवच्च न [**पौरोवृत्य**] पुरोवर्तित्व, अग्रेसरता; (औप; सम ८६; विपा १, १; कप्प)।

पोलंड सक [**प्रोत् + लङ्घ्**] विशेष उल्लंघन करना। पोलंडइ; (णाया १, १ — पत्र ६१)।

पोलच्चा स्त्री [**दे**] खेटित भूमि, कृष्ट जमीन; (दे ६, ६३)।

पोलास न [**पोलास**] १ नगर-विशेष, पोलासपुर; (उवा)। २ उद्यान-विशेष; (राज)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष; (उवा; अंत)।

पोलासाढ न [**पोलाषाढ**] श्वेतविका नगरी का एक चैत्य; (विसे २३५७)।

पोलिअ पुं [**दे**] सौनिक, कसाई; (दे ६, ६२)।

पोलिआ स्त्री [**दे, पौलिका**] खाद्य-विशेष, पूरी(?); "सुणओ इव पोलियासत्तो" (उप ७२८ टी; राज)।

पोली देखो **पओली**; "बद्धेसु पोलिदारेसु, गवसंतो अ भुत्तयं" (श्रा १२; उप पृ ८४; धर्मवि ७७)।

पोल्ल वि [**दे**] पोला, शुषिर, खाली, रिक्त; "पोल्लो व्व मुट्ठी जह से असारे" (उत्त २०, ४२; णाया १, १ — पत्र ६३; पव ८१), "वंका कीडक्खइया चित्तलया पोल्लया य दड्ढा य" (महा)।

पोल्लड वि [**दे**] ऊपर देखो; "वंका कीडक्खइया चिम्तलया पोल्लडा य दड्ढा य" (ओघ ७३५; विचार ३३६)।
पोल्लर न [**दे**] तप-विशेष, निर्विकृतिक तप; (संबोध ५८)।
पोस अक [**पुष्**] पुष्ट होना। पोसइ; (धात्वा १४५; भवि)।
पोस सक [**पोषय्**] १ पुष्ट करना। २ पालन करना। पोसेइ; (पंचा १०, १४)। "मायरं पियरं पोस" (सूअ १, ३, २, ४), पोसाहि; (सूअ १, २, १, १९)। कवकृ— **पोसिज्जंत**; (गा १३५)।
पोस वि [**पोष**] १ पोषक, पुष्टि-कारक, "अभिक्खणं पोसवत्थं परिहिंति" (सूअ १. ४, १, ३)। २ पुं. पोषण; पुष्टि; (संबोध ३९)।
पोस पुं [**पोस**] १ अपान-देश, गुदा; (पराह १, ४—पत्र ७८; ओघ ५५६; औप)। २ योनि; (निचू ६)। ३ लिंग, उपस्थ; "णवसोतपरिस्सवा बोंदी पगणत्ता, तं जहा; दो सोत्ता, दो णेत्ता, दो घाणा, मुहं, पोसे, पाऊ" (ठा ९—पत्र ४५०)।
पोस पुं [**पौष**] पौष मास; (सम ३५)।
पोसग वि [**पोषक**] १ पुष्टि-कारक; २ पालन-कर्ता; (पराह १, २)।
पोसण न [**पोषण**] १ पुष्टि; (पराह १, २)। २ पालन; ३ वि. पोषण-कर्ता; "लोग परं पि जहासि पोसणो" (सूअ १, २, १, १८)।
पोसण न [**पोसन**] अपान, गुदा; (ओघ)।
पोसणया स्त्री [**पोषणा**] १ पोषण, पुष्टि; २ भरण, पालन, (उवा)।
पोसय देखो **पोस**=पोस; "पोसए ति" (ठा ९ टी—पत्र ४५०; बृह ४)।
पोसय देखो **पोसग**; (राज)।
पोसह पुं [**पोषध, पौषध**] १ अष्टमी, चतुर्दशी आदि पर्व-तिथि में करने योग्य जैन श्रावक का व्रत-विशेष, आहार-आदि के त्याग-पूर्वक किया जाता अनुष्ठान-विशेष; (सम ११; उवा; औप; महा; सुपा ६१९; ६२०)। २ पर्व-दिवस—अष्टमी, चतुर्दशी आदि पर्व-तिथि; "पोसहसद्दो रूढीए एत्थ पव्वाणुवायओ भणिओ" (सुपा ६१९)। °**पडिमा** स्त्री [°**प्रतिमा**] जैन श्रावक को करने योग्य अनुष्ठान-विशेष, व्रत-विशेष; (पंचा १०, ३)। °**वय** न [°**व्रत**] वही पूर्वोक्त अर्थ, (पडि)। °**साला** स्त्री [°**शाला**] पौषध-व्रत करने का स्थान; (णाया १, १—पत्र ३१; अंत; महा)। °**ववास** पुं [°**पवास**] पर्वदिन में उपवास-पूर्वक किया जाता जैन श्रावक का अनुष्ठान-विशेष, जैन श्रावक का ग्यारहवाँ व्रत; (औप; सुपा ६१९)।
पोसहिय वि [**पौषधिक**] जिसने पोषध-व्रत किया हो वह, पौषध करने वाला; (णाया १, १—पत्र ३०; सुपा ६१९; धर्मवि २७)।
पोसिअ वि [**दे**] दुःस्थ, दरिद्र, दुःखी; (दे ६, ६१)।
पोसिअ वि [**पुष्ट**] पोषण-युक्त; (भवि)।
पोसिअ वि [**पोषित**] १ पुष्ट किया हुआ; २ पालित; (उत्त २७, १४)।
पोसिद (शौ) वि [**प्रोषित**] प्रवास में गया हुआ। °**भत्तुआ** स्त्री [°**भर्तृका**] जिसका पति प्रवास में गया हो वह स्त्री; (स्वप्न १३४)।
पोसी स्त्री [**पौषी**] १ पौष मास की पूर्णिमा; २ पौष मास की अमावस; (सुज्ज १०, ६; इक)।
पोह पुं [**दे**] बैल आदि की विष्ठा का ढग; कच्छी भाषा में 'पोह'; (पिंड २४५)।
पोह पुं [**प्रोथ**] अश्व के मुख का प्रान्त भाग; (गउड)।
पोहण पुं [**दे**] छोटी मछली; (दे ६, ६२)।
पोहत्त न [**पृथुत्व**] चौड़ाई; (भग)।
पोहत्त देखो **पुहत्त**; (पि ७८)।
पोहत्तिय वि [**पार्थक्त्विक**] पृथक्त्व-संबन्धी; (पराण २२—पत्र ६३९; ६४०; २३—पत्र ६६४)।
पोहल देखो **पोप्फल**; (पड्)।
°**प्प** देखो **प**=प्र; "विप्पमहिपत्ताणं" (गांत २; गउड)।
°**प्पआस** देखो **पयास**=प्रयास; (अभि ११५)।
°**प्पउत्त** देखो **पउत्त**=प्रवृत्त; (मा ३)।
°**प्पच्चअ** देखो **पच्चय**; (अभि १९६)।
°**प्पडव** (मा) अक [**प्र+नम्**] नम्र होना। प्पडवदि; (पि २१९)।
°**प्पडिआर** देखो **पडिआर**=प्रतिकार; (मा ४३)।
°**प्पडिहा** देखो **पडिहा**=प्रतिभा; (कुमा)।
°**प्पणइ** देखो **पणइ**=प्रणयिन् ; (कुमा)।
°**प्पणाम** देखो **पणाम**=प्रणाम; (हे ३, १०५)।
°**प्पणास** देखो **पणास**=प्रणाश; (सुपा ३५७)।
°**प्पण्णा** देखो **पण्णा**=प्रज्ञा; (कुमा)।
°**प्पत्थाण** देखो **पत्थाण**; (अभि ८१)।
°**प्पदेस** देखो **पदेस**, (नाट—विक्र ४)।

°प्फुरिद (शौ) देखो **पप्फुरिअ**; (नाट—मालती ५४)।
°प्पबंध देखो **पबंध**; (रंभा)।
°प्पभिदि देखो **°पभिइ**; (रंभा)।
°प्पभूद (शौ) देखो **पभूय**; (नाट—वेणी ३६)।
°प्पमत्त देखो **पमत्त**; (अभि १८५)।
°प्पमाण देखो **पमाण**; (पि ३६६ ए)।
°प्पमुक्क देखो **पमुक्क**; (नाट—उत्तर ५६)।
°प्पमुह देखो **पमुह**; (गउड)।
°प्पयर देखो **पयर**; (कुमा)।
°प्पयाव देखो **पयाव**; (कुमा)।
°प्पयास देखो **पयास**=प्रकाश; (सुपा ६५७)।
°प्पलावि देखो **पलावि**; (अभि ४६)।
°प्पवत्तण देखो **पवत्तण**; "अजिअजिअ सुहप्पवत्तण" (अजि ४)।
°प्पवह देखो **पवह**; (कुमा)।
°प्पवेस देखो **पवेस**; (रंभा)।
°प्पवेसि देखो **पवेसि**; (अभि १७५)।
°प्पसर देखो **पसर**=प्र+सृ। वकृ—**°प्पसरंत**; (रंभा)।
°प्पसर देखो **पसर**=प्रसर।
°प्पसव देखो **पसव**; (नाट—मालवि ३७)।
°प्पसाय देखो **पसाय**=प्रसाद; (रंभा)।
°प्पसुत्त देखो **पसुत्त**; (रंभा)।
°प्पसूद (शौ) देखो **पसूअ**=प्रसूत; (अभि १४०)।
°प्पहर देखो **पहर**=प्रहार; (से २, ४; पि ३६७ ए)।
°प्पहा देखो **पहा**; (कुमा)।
°प्पहाण देखो **पहाण**; (रंभा)।
°प्पहाव देखो **पहाव**=प्रभाव; "प्पहाउ" (रंभा)।
°प्पहार देखो **पहार**; (रंभा)।
°प्पहाव देखो **पहाव**; (अभि ११६)।
°प्पहु देखो **पहु**; (रंभा)।
°प्पारंभ देखो **पारंभ**; (रंभा)।
°प्पिअ देखो **पिअ**=प्रिय; (अभि ११८; मा १८)।
°प्पिआ देखो **पिआ**; (कुमा)।
प्पिव देखो **इव**; (प्राकृ २६)।
°प्पेम देखो **पेम**; (पि ४०४)।
°प्पेम्म देखो **पेम्म**; (कुमा)।
°प्पोढ देखो **पोढ**; (रंभा)।
°प्फंस देखो **फंस**=स्पर्श; (काप्र ७४३; गा ४६२; ५५६)।
°प्फणा देखो **फणा**; (सुपा ५३५)।
°प्फद्दा देखो **फद्दा**; (कुमा)।
°प्फल देखो **फल**; (पि २००)।
°प्फाल सक [**स्फालय्**] १ आघात करना। २ पछाड़ना। प्फालउ; (पिंग)।
°प्फालण न [**स्फालन**] आघात; (गउड; गा ५४६)।
°प्फुड देखो **फुड**; (कुमा; रंभा)।
°प्फोडण देखो **फोडण**; (गा ३८१)।
प्रस्स (अप) देखो **पस्स**=दृश्। प्रस्सदि; (हे ४, ३६३)।
प्राइम्व / **प्राइव** / **प्राउ** } (अप) देखो **पाव**=प्रायस्; (हे ४, ४१४; कुमा)।
प्रिय (अप) देखो **पिअ**=प्रिय; (हे ४, ३६८; कुमा)।
प्रेक्किअ न [**दे**] वृष रटित, बैल की चिल्लाहट; (षड्)।
प्रेयंड वि [**दे**] धूर्त, ठग; (दे १, ४)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि पआराइसद्दसंकलणो
सत्तावीसइमो तरंगो परिसमत्तो।

फ

फ पुं [फ] ओष्ठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष; (प्राप्र)।

फंद अक [स्पन्द्] थोड़ा हिलना, फरकना। फंदइ, फंदंति; (हे ४, १२७; उत्त १४, ४५)। वकृ—**फंदंत, फंदमाण**; (सूत्र १, ४, १, ६; ठा ७—पत्र ३८३; कप्प)।

फंद पुं [स्पन्द] किञ्चित् चलन; (षड्; सण)।

फंदण न [स्पन्दन] ऊपर देखो; (विसे १८४७; हे २, ५३; प्राप्र)।

फंदणा स्त्री [स्पन्दना] ऊपर देखो; (सुमनि ८ टी)।

फंदिअ वि [स्पन्दित] १ कुछ हिला हुआ, फरका हुआ; (पाअ)। २ हिलाया हुआ, ईषत् चालित; (जीव ३)।

फंफ (अप) अक [उद् + गम्] उछलना। फंफाइ; (पिंग १८४, ५)।

फंफसय पुं [दे] लता-भेद, वल्ली-विशेष; (दे ६, ८३)।

फंफाइ (अप) वि [कम्पायित, कम्पित] काँपाया हुआ, कम्प-प्राप्त; (पिंग)।

फंस अक [विसम् + वद्] असत्य प्रमाणित होना, प्रमाण-विरुद्ध होना, अप्रमाण साबित होना। फंसइ; (हे ४, १२६)। प्रयो, भूका—फंसाविही; (कुमा)।

फंस सक [स्पृश्] छूना। फंसइ, फंसेइ; (हे ४, १८२; प्राकृ २७)। कर्म —फंसिज्जइ; (कुमा)।

फंस पुं [स्पर्श] स्पर्श, छुआवट; (पाअ; प्राप्र; प्राकृ २७; गा २६६)।

फंसण न [स्पर्शन] छूना, स्पर्श करना; (उप ५३० टी; धर्मवि ४३; मोह २६)।

फंसण वि [पांसन] अपशद, अधम; "कुलफंसणा" (सुर २, ६; स १६८; भवि)।

फंसण वि [दे] १ युक्त, मंमन; २ मलिन, मैला; (दे ६, ८७)।

फंसुल वि [दे] मुक्त, त्यक्त; (दे ६, ८२)।

फंसुली स्त्री [दे] नवमालिका, पुष्प-प्रधान वृक्ष-विशेष; (दे ६, ८२)।

फक्किया स्त्री [फक्किका] ग्रन्थ का विषम स्थान, कठिन स्थान; (सुर १६, २४७)।

फग्गु वि [फल्गु] १ असार, निरर्थक, तुच्छ; (सुर ८, ३; संबोध १६; गा ३६६ अ)। २ स्त्री. भगवान् अजितनाथ की प्रथम शिष्या; (सम १५२)। °मित्त पुं [°मित्र] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि; (कप्प)। °रक्खिय पुं [°रक्षित] एक जैन मुनि; (आव १)। °सिरी स्त्री [°श्री] इस अवसर्पिणी काल के पंचम आरे में होने वाली अन्तिम जैन साध्वी; (विचार ५३४)।

फग्गु पुं [दे. फल्गु] वसन्त का उत्सव; (दे ६, ८२)।

फग्गुण पुं [फाल्गुन] १ मास-विशेष, फागुन का महिना; (पाअ; कप्प)। २ अर्जुन, मध्यम पाण्डु-पुत्र; (कुमा १३०)।

फग्गुणी स्त्री [फाल्गुनी] १ फागुन मास की पूर्णिमा; (सुज्ज १०, ६)। २ फागुन मास की अमावस्या; (सुज्ज १०, ६)। ३ एक गृहपति की स्त्री; (उवा)।

फग्गुणी स्त्री [फल्गुनी] नक्षत्र-विशेष; (ठा २, ३)।

फट्ट अक [स्फट] फटना, टूटना। फट्टइ; (भवि)।

फड सक [स्फट्] १ खोदना। २ शोधना। वकृ—"गतं फडमाणीओ" (सुपा ६१३)। हेकृ—**फडिउं**; (सुपा ६१३)।

फड न [दे] साँप का सर्व शरीर; (दे ६, ८६)।

फड पुंन [दे. फट] साँप की फणा; (दे ६, ८६; सुपा ४७२)

फडही [दे] देखो **फलही**; (गा ५५० अ)।

फडा स्त्री [फटा] साँप की फन, सर्प-फणा; (णाया १, ६; पउम ५२, ५; पाअ; औप)। °ल वि [°वत्] फन वाला; (हे २, १५६; चंड)।

फडिअ वि [स्फटित] खोदा हुआ; "तो थीवेसधरेहिं नरेहिं फडिया झडत्ति सा गत्ता" (सुपा ६१३)।

फडिअ, **फडिग** } देखो **फलिह=स्फटिक**; (नाट—रत्ना ८३), "फडिगपाहाणनिभा" (निवू ७)।

फडिल्ल देखो **फडा-ल**; (चंड)।

फडिह पुं [परिघ] १ अर्गला, आगल; (से १३, ३८)। २ कुठार; (से ५, ५४)।

फडिहा देखो **फलिहा=परिखा**; (से १२, ७५)।

फड्ड, **फड्डग**, **फड्डु**, **फड्डुग** } पुंन [दे. स्पर्ध, °क] १ अंश, भाग, हिस्सा; गुजराती में 'फाडिउं'; "कम्मियफड्डमिस्सा चुल्ली उक्खा य फड्डगजुया उ" (पिंड २५३)। २ संपूर्ण गण के अधिष्ठाता के वशवर्ती गण का एक लघुतर हिस्सा, समुदाय का एक अति छोटा विभाग जो संपूर्ण

समुदाय के अध्यक्ष के अधीन हो; "गच्छागच्छिं गुम्मागुम्मिं फड्डाफड्डिं" (औप; बृह १)। ३ द्वार आदि का छोटा छिद्र, विवर; ४ अवधिज्ञान का निर्गम-स्थान; "फड्डा य असंखेज्जा", "फड्डा य आणुगामी" (विसे ७३८; ७३९)। ५ समुदाय; "तत्थ पत्तेयगा फड्डगेहिं एंति" (आवम; आचू १)। ६ समुदाय-विशेष, वर्गणा-समुदाय; "नेहप्पच्चयफड्डगमेगं अविभागवग्गणा ग्रंता" (कम्मप २८; ४४; पंच ३, २८; ५, १८३; १८४; जीवस ७६), "तं इगिफड्डुं संते", "तासिं खलु फड्डुगाइं तु" (पंच ५, १७६; १७१)। °वइ पुं [°पति] गण के अवान्तर विभाग का नायक; (बृह १)।

फण पुं [**फण**] फन, साँप की फणा; (से ६. ५५; पात्र; गा २४०; सुपा १; प्रासू ५१)।

फणग पुं [**दे. फनक**] कंघा, केश सवाँरने का उपकरण; (उत्त २२, ३०)।

फणज्जुय पुं [**दे**] वनस्पति-विशेष; "तुलसी कण्ह-भोराले फणज्जुए अज्जए य भूयणए" (पराण १—पत्त ३४)।

फणस पुं [**पनस**] कटहर का पेड़; (पराण १; हे १, २३२; प्राप्र)।

फणा स्त्री [**फणा**] फन; (सुर २, २३६)।

फणि पुं [**फणिन्**] १ साँप, सर्प, नाग; (उप ३५७ टी; पात्र; सुपा ५५६; महा; कुमा)। २ दो कला या एक गुरु अक्षर की संज्ञा; (पिंग)। ३ प्राकृत-पिंगल का कर्ता, पिंगलाचार्य; (पिंग)। °**चिंध** पुं [°**चिह्न**] भगवान् पार्श्वनाथ; (कुमा)। °**पहु** पुं [°**प्रभु**] १ नागकुमार देवों का एक स्वामी, धरणेन्द्र; (ती ३)। २ शेष नाग; (धर्मवि ५७)। °**राय** पुं [°**राज**] १ शेष नाग; (कुप्र २७२)। २ पिंगल-कर्ता; (पिंग)। °**लआ** स्त्री [°**लता**] नाग-लता, वल्ली-विशेष; (कप्पू)। °**वइ** पुं [°**पति**] १ इन्द्र-विशेष, धरणेन्द्र; (सुपा ३१)। २ नाग-राज; (मोह २६)। ३ पिङ्गलकार; (पिंग)। °**सेहर** पुं [°**शेखर**] प्राकृत-पिङ्गल का कर्ता; (पिंग)।

फणिंद पुं [**फणीन्द्र**] १ नाग-राज, शेष नाग; (प्रासू ११३)। २ पिङ्गलकार; (पिंग)।

फणिल्ल सक [**चोरय्**] चोरी करना। फणिल्लइ; (धात्वा १४६)।

फणिह पुं [**दे. फणिह**] कंघा, केश सवाँरने का उपकरण; (सुअ १, ४, २, ११)।

फणीसर पुं [**फणीश्वर**] देखो **फणि-वइ**; (पिंग)।

फणुज्जय देखो **फणज्जुय**; (राज)।

फद्ध पुं [**स्पर्ध**] स्पर्धा, हिंसा; (कुमा)।

फद्धा स्त्री [**दे स्पर्धा**] ऊपर देखो; (दे ८, १३; कुमा ३, १८)।

फद्धि वि [**स्पर्धिन्**] स्पर्धा करने वाला; (प्राकृ २३)।

फर } पुं [**दे. फल, °क**] १ काष्ठ आदि का तख्ता;
फरअ } २ ढाल; (दे १, ७६; ६, ८२; कप्पू; सुर २, ३१)। देखो **फल**, **फलग**।

फरक पुंन [**दे. स्फरक**] अस्त्र-विशेष, "फरएहिं छाइऊण तेवि हु गिराहंति जीवंतं" (धर्मवि ८०)।

फरक्किकद वि [**दे**] फरका हुआ, हिला हुआ, कम्पित; (कप्पू)।

फरस देखो **फरिस**=स्पर्श; (रंभा; नाट)।

फरसु पुं [**परशु**] कुठार, कुल्हाड़ा; (भवि; पि २०४)। °**राम** पुं [°**राम**] ब्राह्मण-विशेष, ऋषि जमदग्नि का पुत्र; (भत्त १५३)।

फरहर अक [**फरफराय्**] फरफर आवाज करना। वकृ—**फरहरंत**; (भवि)।

फरित देखो **फलिह**=स्फटिक; (इक)।

फरिस सक [**स्पृश्**] छूना। फरिसइ; (षड्), फरिसइ; (प्राकृ २७)। कर्म—फरिसिज्जइ; (कुमा)। कवकृ—**फरिसिज्जंत**; (धर्मवि १३६)।

फरिस } पुंन [**स्पर्श, °क**] स्पर्श, छूना; (आचा; पण्ह
फरिसग } १, १; गा १३२; प्राप्र; पात्र; कप्प), "न य कीरइ तणुफरिसं" (गच्छ २, ४४)।

फरिसण न [**स्पर्शन**] इन्द्रिय-विशेष, त्वगिन्द्रिय; (कुप्र ४२४)।

फरिसिय वि [**स्पृष्ट**] छुआ हुआ; (कुप्र १६; ४१)।

फरिहा देखो **फलिहा**=परिखा; (गाया १, १२)।

फरुस वि [**परुष**] १ कर्कश, कठिन; (उवा; पात्र; हे १, २३२; प्राप्र)। २ न. कुवचन, निष्ठुर वाक्य; "गा यावि किंची फरुसं वदेज्जा" (सुअ १, १४, ७; २१)।

फरुस } पुं [**दे. परुष, °क**] कुम्भकार, कुंभार; "पोग्गल-
फरुसग } मायगफरुसगदंते" (बृह ४)। °**साला** स्त्री [**शाला**] कुंभकार-गृह; (बृह ३)।

फरुसिया स्त्री [**परुषता, पारुष्य**] कर्कशता, निष्ठुरता; (आचा)।

फल अक [फल्] फलना, फलान्वित होना । फलइ; (गा १७; ८६४), फलंति; (सिरि ११८८) । वकृ—**फलंत**; (सं ७, ४६) ।

फल पुंन [**फल**] १ वृक्षादि का शस्य; (आचा; कप्प; कुमा; ठा ६; जी १०) । २ लाभ; "पुच्छइ तं सुमिणाणं एएसिं किमिह मह फलो होइ" (उप ६८६ टी) । ३ कार्य; "हेउ-फलभावओ होंति" (पंचव १; धर्म १) । ४ इष्टानिष्ट-कृत कर्म का शुभ या अशुभ फल—परिणाम; (सम ७२; हे ४, ३३५) । ५ उद्देश्य; ६ प्रयोजन; ७ त्रिफला; ८ जायफल; ९ बाण का अग्र भाग; १० फाल; ११ दान; १२ मुष्क, अण्डकोष; १३ ढाल; १४ कक्कोल, गन्ध-द्रव्य-विशेष; (हे १, २३) । १५ अग्र भाग; "अदु वा मुट्ठिणा अदु कुंताइफलेणं" (आचा १, ६, ३, १०) । °**मंत**, °**व** वि [°**वत्**] फल वाला; (णाया १, ४; पंचा ४) । °**वद्धिय**, °**वद्धिय** न [°**वर्द्धिक**] १ नगर-विशेष, फलोधि-नामक मरुदेशीय नगर; २ वहाँ का एक जैन मन्दिर; (ती ५२) ।

फलअ } पुंन [**फलक**] १ काष्ठ आदि का तख्ता; (आचा;
फलग } गा ६५६; तंदु २६; सुर १०, १६१; औप) । २ जुए का एक उपकरण; (औप; धण ३२) । ३ ढाल; "भरिएहिं फलएहिं" (विपा १, ३; कुमा; सार्ध १०१)। ४ देखो **फल**; (आचा) । °**सज्जा** स्त्री [°**शय्या**] काष्ठ का तख्ता जिस पर सोया जाय; (भग) ।

फलण न [**फलन**] फलना; (सुपा ६) ।

फलह } पुं [**फलह**, °**क**] फलक, काठ आदि का तख्ता;
फलहग } "असंसंजए भिक्खुपडियाए पीढं वा फलहगं वा णिस्सेणिं वा उदूहलं वा आहट्टु उस्सविय दुरुहेज्जा" (आचा २, १, ७, १), "भूमिसेज्जा फलहसेज्जा" (औप), "घरफलहे" (दे १, ८; पि २०६), "पेक्खइ मन्दिराइँ फलहद्दुग्घाडिय-जालगवक्खाइ ", " अह फलहंतरेण दरिसियगुज्झंतग्देसइ " (भवि) ।

"पिहुपत्तासयमदलं गुणनियरनिबद्धफलहसंघायं ।
संजमियसयलजोगं बोहित्थं मुणिवरसरिच्छं"
(सुर १३, ३६) ।

फलहिआ } स्त्री [**फलहिका**, **फलही**] काठ आदि का
फलही } तख्ता; "सुरिए अत्थमिए फलहिअं घडउमाढवइ", "इत्थ पहाणफलही चिट्ठइ" (ती ११), "कलावईए रूवं सिग्घं आलिहसु चित्तफलहीए" (सुर १, १५१) ।

फलही स्त्री [**दे**] १ कर्पास, कपास; (दे ६, ८२; गा १६५; ३५६) । २ कपास की लता; "दरफुडिअबेंटभारोणआइ हसिअं व फलहीए" (गा ३६०) ।

फलाव सक [**फालय्**] फलवान् बनाना, सफल करना; "तओ-वि अ धणतमा निअयफलेण फलावेंति" (रत्न २६) ।

फलावह वि [**फलावह**] फलप्रद, फल को धारण करने वाला; (पउम १४, ४४) ।

फलासव पुं [**फलासव**] मद्य-विशेष; (पण्ण १७) ।

फलि पुं [**दे**] १ लिंग, चिह्न; २ वृषभ, बैल; (दे ६, ८६)।

फलिअ वि [**फलित**] १ विकसित; "फुडिअं फलिअं च दलि-अमुद्दरिअं" (पाअ) । २ फल-युक्त, जिसको फल हुआ हो वह; (णाया १, ११) ।

फलिअ न [**दे**] वायनक, भोजन आदि का बाँटा जाता उपहार; (ठा ३, ३ —पत्र १४७) ।

फलिआरी स्त्री [**दे**] दूर्वा, कुश तृण; (दे ६, ८३) ।

फलिणी स्त्री [**फलिनी**] प्रियंगु वृक्ष, (दे १, ३२; ६, ४६; पाअ; कुमा; गा ६६३) ।

फलिह पुं [**परिघ**] १ अर्गला, आगल; "अग्गला फलिहो" (पाअ; औप), "ऊसियफलिहा" (भग २, ५—पत्र १३५)। २ अस्त्र-विशेष, लोहे का मुद्गर आदि अस्त्र; ३ गृह, घर; ४ काच-घट; ५ ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध एक योग; (हे १, २३२; प्राप्र) ।

फलिह पुं [**स्फटिक**] १ मणि-विशेष, स्फटिक मणि; (जी ३; हे १, १९७; कप्पू) । २ एक विमानावास, देव-विमान-विशेष; (देवेन्द्र १३२; इक) । ३ रत्नप्रभा पृथिवी का एक स्फटिकमय काण्ड; (ठा १०) । ४ गन्धमादन पर्वत का एक कूट; (इक) । ५ कुण्डल पर्वत का एक कूट; ६ रुचक पर्वत का एक शिखर; (राज) । °**गिरि** पुं [°**गिरि**] कैलाश पर्वत; (पाअ) ।

फलिह पुं [**फलिह**] फलक, काठ आदि का तख्ता; "अंबसिणो फलिहा" (पाअ), "नाणावरगणभूयाणं कयलियाफलिहपुत्थि-याईणं" (आप ८)।

फलिहंस पुं [**फलिहंसक**] वृक्ष-विशेष; (दे ४, १२)।

फलिहा स्त्री [**परिखा**] खाई, किले या नगर के चारों ओर की नहर; (औप; हे १, २३२; कुमा) ।

फलिहि देखो **परिहि**; (प्राकृ १५) ।

फली स्त्री [**फली**] काठ आदि की छोटी तख्ती; "तओ चंदण-फलीउ वणियहट्टम्मि विक्किउं कहवि" (सुपा ३८५) ।

फलोवय } वि [**फलोपग**] फल-प्राप्त, फल-सहित; (ठा
फलोवा° } ३, १ पत्र—११३) ।

फल्ल न [**फल्य**] सूते का वस्त्र, सूती कपड़ा; (बृह १) ।

फव्वीह सक [**लभ्**] यथेष्ट लाभ प्राप्त करना; गुजराती में 'फावव'। फव्वीहामो; (बृह १) ।

फसल वि [**दे**] १ सार, चितकबरा; "फसलं सबलं सारं किरं चित्तल च बंगिम्मील्लं" (पाअ; दे ६, ८७) । २ स्थासक; (दे ६, ८७) ।

फसलाणिअ } वि [**दे**] कृत-विभूष, जिसने विभूषा की
फसलिअ } हो वह, शृङ्गारित; (दे ६, ८३), "फसलियाचि कुंकुमराएण" (स ३६०) ।

फसुल वि [**दे**] मुक्त; (दे ६, ८२) ।

फाइ स्त्री [**स्फाति**] वृद्धि; (ओघ ४७) ।

फाईकय वि [**स्फीतीकृत**] १ फैलाया हुआ; २ प्रसिद्ध किया हुआ; "वइसेसियं पयीयं फाईकयमणणमपदेहिं" (विसे २५०७) ।

फागुण देखो फग्गुण; (पि ६२) ।

फाड सक [**पाटय्, स्फाटय्**] फाड़ना । फाडेइ; (हे १, १६८; २३२) । वकृ—**फाडंत**; (कुमा) ।

फाडिय वि [**पाटित, स्फाटित**] विदारित; (भवि) ।

फाणिअ पुंन [**फाणित**] १ गुड़; "फाणिअं गुडो भण्णति" (निचू ४) । २ गुड़ का विकार-विशेष, आर्द्र गुड़, पानी से द्रावित गुड़; (ओप; कस; पिंड २३६; ६२५; पव ४) । ३ क्वाथ; (पएण १७—पत्र ५३०) ।

फाय वि [**स्फीत**] १ वृद्ध; २ विस्तीर्ण; ३ ख्यात; (विसे २५०७) ।

फार वि [**स्फार**] १ प्रचुर, बहुत; "फारफलभारभज्जिर-साहासयसंकुलो महासाही" (धर्मवि ५५) । २ विशाल, विपुल; ३ विस्तृत, फैला हुआ; (सुर २, २३६; काप्र १७०; सुपा १६४; कुप्र ५१) ।

फारक्क वि [**दे. स्फारक**] स्फरकास्त्र को धारण करने वाला; "तं नासंतं दट्ठुं फारक्का नमुइवयणमो ढुक्का" (धर्मवि ८०) ।

फारुसिय न [**पारुष्य**] परुषता, कर्कशता; "फारुसियं समाइयंति" (आचा) ।

फाल देखो °प्फाल ।

फाल देखो **फाड** । फालेइ; (हे १, १६८; २३२) । कवकृ—**फालिज्जंत, फालिज्जमाण**; (गा १५३; सम्मत्त १७४) । संकृ—**फालेऊण**; (गा ४८६) ।

फाल पुंन [**फाल**] १ लोहमय कुश, एक प्रकार की लोहे की लम्बी कील; (उवा) । २ फाल से की जाती एक प्रकार की दिव्य-परीक्षा, शपथ-विशेष; (सुपा १८६) । ३ फलाङ्ग, लाँफ; "दीवि व्व विहलफालो" (कुप्र १२) ।

फालण न [**पाटन, स्फाटन**] विदारण; "खोणी किं न सहेदि सीरमुहओ तं तारिसं फालणं" (रंभा; सम १२५) ।

फालण देखो °प्फालण ।

फाला स्त्री [**फाला**] फलाङ्ग, लाँफ; (कुप्र २७८; कुलक ३२) ।

फालि स्त्री [**दे. फालि**] १ फली, छीमी, फलियाँ; २ शाखा; "सिंबलिफालिव्व अग्गिणा दड्ढा" (संथा ८५) । ३ फाँक, टुकडा; "—नागवल्लीदलपूगीफलफालिपमुह—" (रयण ५५) ।

फालिअ वि [**पाटित, स्फाटित**] विदारित; (कुमा; पगह १, १—पत्र १८; पउम ८२, ३१; ओप) ।

फालिअ न [**दे. फालिक**] देश-विशेष में होता वस्त्र-विशेष; "अमिलाणि वा गज्जलाणि वा फालियाणि वा कायहाणि वा" (आचा २, ५, १, ७) ।

फालिअ } पुं [**स्फाटिक**] १ रत्न-विशेष; (कप्प) ।
फालिग } २ वि. स्फटिक-रत्न का; (पि २२६; उप ६८६;
फालिह } सुपा ८८) ।

फालिहद्द पुं [**पारिभद्र**] १ फरहद का पेड़; २ देवदारु का पेड़; ३ निम्ब का पेड़; (हे १, २३२) ।

फास सक [**स्पृश्, स्पर्शय्**] १ स्पर्श करना, छूना । २ पालन करना । फासइ, फासेइ; (हे ४, १८२; भग) । कर्म—फासिज्जइ; (कुमा) । वकृ—**फासंत, फासयंत**; (पंचा १०, ३५; पगह २, ३—पत्र १२३) । कवकृ—**फासाइज्जमाण**; (भग—अ°) । संकृ—**फासइत्ता, फासित्ता**; (उत्त २६, १; सुख २६, १; कप्प; भग) ।

फास पुंन [**स्पर्श**] १ स्पर्श, छूना; (भग; प्रासू १०४) । २ ग्रह-विशेष, ज्योतिष्क देव-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७८) । ३ दुःख-विशेष; "एयाइं फासाइं फुसंति बालं" (सूअ १, ५, २, २२) । ४ शब्द आदि विषय; (उत्त ४, ११) । ५ स्पर्श इन्द्रिय, त्वचा; (भग) । ६ रोग; ७ ग्रहण; ८ युद्ध, लडाई; ६ गुप्त चर, जासूस; १० वायु, पवन; ११ दान; १२ 'क' से ले कर 'म' तक के अक्षर; १३ वि. स्पर्श करने वाला; (हे २, ६२) । °कीव पुं [°क्लीब] क्लीब का एक

भेद; (निचू ४)। °णाम, °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, कर्कश आदि स्पर्श का कारण-भूत कर्म; (राज; सम ६७)। °मंत वि [°मत्] स्पर्श वाला; (ठा ५, ३; भग)। °मय वि [°मय] स्पर्श-मय; स्पर्श से निर्वृत्त; "फासमयाओ सोक्खाओ" (ठा १०)।

फासग वि [स्पर्शक] स्पर्श करने वाला; (अज्झ १०४)।

फासण न [स्पर्शन] १ स्पर्श-क्रिया; (श्रा १६)। २ स्पर्शेन्द्रिय, त्वचा; (पव ६७)।

फासणया, **फासणा** स्त्री [स्पर्शना] १ स्पर्श-क्रिया; (ठा ६; स १५६; जीवस १८१)। २ प्राप्ति; (राज)।

फासिअ वि [स्पृष्ट] १ छुआ हुआ; (नव ४१; विसे २७८३)। २ प्राप्त; "उचिए काले विहिणा पत्तं जं फासियं तयं भणियं" (पव ४)।

फासिअ वि [स्पर्शिक] स्पर्श करने वाला; (विसे १००१)।

फासिअ वि [स्पर्शित] १ स्पर्श-युक्त, स्पृष्ट; २ प्राप्त; (पव ४—गाथा २१२)।

फासिंदिय न [स्पर्शेन्द्रिय] त्वगिन्द्रिय; (भग; णाया १, १७)।

फासु, **फासुअ**, **फासुग** वि [प्रासु, °क] अ-चेतन, जीव-रहित, निर्जीव, अ-चित्त वस्तु; (भग; पंचा १०, ६; औप; उवा; णाया १, ५; पउम ८२, ५)।

फिक्कर अक [फित् + कृ] प्रेत—पिशाच का चिल्लाना। "तह फिक्करंति पेया" (सुपा ४६२)।

फिक्कि पुंस्त्री [दे] हर्ष, खुशी; (दे ६, ८३)।

फिज न [दे. स्फिच्] नितम्ब, चूतर, जंघा का उपरि-भाग; (सुख ८, १३)।

फिट्ट अक [भ्रंश्] १ नीचे गिरना। २ टूटना, भाँगना। ३ ध्वस्त होना। ४ पलायन करना, भागना। फिट्टइ; (हे ४, १७७; प्राकृ ७६; गा १८३; चेइय ५८७); फिट्टई; (उत्त २०, ३०), फिट्टंति; (सिरि १२६३)। भवि—फिट्टिहिइ, फिट्टिहिसि; (कुप्र १६५; गा ७६८)।

फिट्ट वि [भ्रष्ट] विनष्ट; "पाणिएण तण्ह व्विअ न फिट्टा" (गा ६३; भवि)।

फिट्टा स्त्री [दे] १ मार्ग, रास्ता; "ता फिट्टाए मिलियं कुडियनरपेडियं एगं" (सिरि ११६)। २ प्रणाम-विशेष, मार्ग में किया जाता प्रणाम; (गुभा १)। °मित्त पुंन [°मित्र] मार्ग में मिलने पर प्रणाम करने तक की अवधि वाली मित्रता वाला; (सुपा १८६)।

फिड देखो **फिट्ट**। फिडइ; (हे ४, १७७)।

फिडिअ वि [भ्रष्ट, स्फटित] १ भ्रंश-प्राप्त, नष्ट, च्युत; (ओघ ७; ११; ११२; से ४, ५४; ६४)। २ अतिक्रान्त, उल्लंघित; (ओघभा १७४; औप)।

फिडु वि [दे] वामन; (दे ६, ८४)।

फिप्प वि [दे] कृत्रिम, बनावटी; (दे ६, ८३)।

फिप्फिस न [दे] अन्त्र-स्थित मांस-विशेष, फेफड़ा; (सुअनि ७२; पगह १, १)।

फिर सक [गम्] फिरना, चलना। वकृ—**फिरंत**; (धर्मवि ८१)।

फिरक्क पुंन [दे] खाली गाड़ी, भार ढोने वाली खाली गाड़ी; "समचित्ता दुवि वसहा सगडं कड्ढंति उवलभारंपि। अह्वि विभिन्नचित्ता फिरक्कजुत्तावि तम्मंति" (सुपा ४२४)।

फिरिय वि [गत] गया हुआ;
"गाथणवालणहेउं पुरिसा इह केवि अग्गओ फिरिया।
जं सुम्मइ आगओ सुन्नेवि हु एस संखरवो।" (धर्मवि १३६)।

फिलिअ देखो **फिडिअ**; (से ८, ६८)।

फिल्लुस अक [दे] फिसलना, खिसकना, गिरना। वकृ—"सेवालियभूमितले **फिल्लुसमाणा** य थामथामम्मि" (सुर २, १०५)। देखो **फेल्लुस**।

फीअ देखो **फाय**; (सुअ २, ७, १)।

फीणिया स्त्री [दे] एक जात की मीठाई; गुजराती में 'फेणी'; (सम्मत्त ५७)।

फुंका स्त्री [दे] फूँक, मुँह से हवा निकालना; (मोह ६७)।

फुंकार पुं [फुङ्कार] फुफकार, कुपित सर्प आदि की आवाज; (सुर २, २३७)।

फुंटा स्त्री [दे] केश-बन्ध; (दे ६, ८४)।

फुंद देखो **फंद=स्पन्द**। फुंदइ; (से १५, ७७)।

फुंफमा, **फुंफुआ**, **फुंफुगा** स्त्री [दे] करीषाग्नि, गनकंडे की आग; (पाअ; दे ६, ८४; तंदु ४५; जीव ३; बृह १; कम्म १, २२)।

फुंफुमा स्त्री [दे] १ करीषाग्नि; "अहवा डज्झउ निहुयं निद्धूमं फुंफुम व्व चिम्मंतो" (उप ७२८ टी)। २ कचवर-वह्नि, कूड़ा-करकट की आग; (सुख १, ८)।

फुंफुल, **फुंफुल्ल** सक [दे] १ उत्पाटन करना। २ कहना। फुंफुल्लइ; (हे २, १७४)।

फुंस सक [मृज्, प्र+उञ्छ्] पोंछना, साफ करना। फुंसदि, (प्राकृ ६३)।

फुंसण देखो **फासण**; (उप पृ ३४)।

फुक्क अक [फूत् + कृ] १ फुत्कारना, फूँ फूँ आवाज करना। २ सक. मुँह से हवा निकालना, फूँकना। फुक्कइ; (पिंग)। वकृ—**फुक्कंत**; (गा १७६), **फुक्किज्जंत** (अप); (हे ४, ४२२)।

फुक्का स्त्री [दे] १ मिथ्या; (दे ६, ८३)। २ फूँक; (कुप्र १५०)।

फुक्कार पुं [फूत्कार] फुत्कार, फूँ फूँ का आवाज; (कुप्र ६८; सण)।

फुक्किय वि [फूत्कृत] फुत्कारा हुआ; (आव ४)।

फुक्की स्त्री [दे] रजकी, धोबिन; (दे ६, ८४)।

फुग्ग स्त्रीन [दे. स्फिच्] शरीर का अवयव-विशेष, कटि-प्रोथ; (सुअनि ७६)।

फुग्गफुग्ग वि [दे] विकीर्ण रोम वाला, परस्पर असंबद्ध केश वाला; "तस्स भुमगाओ फुग्गफुग्गाओ" (उवा)।

फुट } अक [स्फुट्, भ्रंश] १ विकसना, खीलना। २
फुट्ट } प्रकट होना। ३ फूटना, फटना, टूटना। ४ नष्ट होना। फुटइ, फुट्टइ, फुट्टेइ, फुट्टउ; (संक्षि ३६; प्राकृ ६६; हे ४, १७७; २३१; उव; भवि; पिंग; गा २२८)। भवि—"फुट्टिस्सइ वंहित्थं महिलाजणकहियमंतं वा" (धर्मवि १३), फुट्टिहिइ; (पि ५२६)। वकृ—**फुट्टंत, फुट्टमाण**; (पणह १, ३; गा २०४; सुर ४, १५१; णाया १, १—पत्र ३६)।

फुट्ट वि [स्फुटित, भ्रष्ट] १ फूटा हुआ, टूटा हुआ, विदीर्ण; (उप ७२८ टी; सम्मत्त १४५; सुर २, ६०; ३, २४३; १३, २१०)। २ भ्रष्ट, पतित; (कुमा)। ३ विनष्ट; "फुट्टडा-हडसीसं" (णाया १, १६; विपा १, १)।

फुट्टण न [स्फुटन] १ फूटना, टूटना, (कुप्र ४१७)। २ वि. फूटने वाला, विदीर्ण होने वाला; (हे ४, ४२२)।

फुट्टिअ वि [स्फुटित] विदारित; "फुट्टिअमांहो" (कुमा ७, ६४)।

फुट्टिर वि [स्फुटितृ] फूटने वाला; (सण)।

फुड देखो **फुड=स्पृष्ट**; (पि ३११)।

फुड देखो **फुट्ट=स्फुट्, भ्रंश्**। फुडइ; (हे ४, १७७; २३१; प्राकृ ६६), "फुडंति सव्वंगसंधीओ" (उप ७२८ टी)। वकृ—**फुडमाण**; (सुर ३, २४३)।

फुड देखो **फुड=स्पृष्ट**; (पण्ण ३६; ठा ७—पत्र ३८३; जीवस २००; भग)।

फुड वि [स्फुट] स्पष्ट, व्यक्त, विशद; (पाअ; हे ४, २५८; उवा)।

फुडण न [स्फुटन] टूटना, खण्डित होना; (पणह १, १—पत्र २३)।

फुडा स्त्री [स्फुटा] अतिकाय-नामक महोरगेन्द्र की एक पटरानी, इन्द्राणी-विशेष; (ठा ४, १; इक)।

फुडा स्त्री [फटा] साँप की फन; "उक्कडफुडकुडिलजडिल-कक्कसवियडफुडाडोवकरणदच्छं" (उवा)।

फुडिअ वि [स्फुटित] १ विकसित, खिला हुआ; (पाअ; गा ३६०)। २ फूटा हुआ, विदीर्ण; (स ३८१)। ३ विकृत; (पणह १, २—पत्र ४०)।

फुडिअ (अप) देखो **फुरिअ**; (भवि)।

फुडिआ स्त्री [स्फोटिका] छोटा फोड़ा, फुनसी; (सुपा १३८)।

फुडु देखो **फुट्ट**। फुडुइ; (षड्)।

फुन्न वि [दे. स्पृष्ट] छूआ हुआ; (पव १५८ टी; कम्म ५, ८५ टी)।

फुप्फुस न [दे] उदरवर्ती अन्त्र-विशेष, फेफड़ा; (सुअनि ७३; पउम २६, ५४)।

फुम सक [भ्रम्] भ्रमण करना। फुमइ; (हे ४, १६१)। प्रयो—फुमावइ; (कुमा)।

फुम सक [दे. फूत्+कृ] फूँक मारना, मुँह से हवा करना। फुमेज्जा; (दस ४, १०)। वकृ—**फुमंत**; (दस ४, १०)। प्रयो—फुमावेज्जा; (दस ४, १०)।

फुर अक [स्फुर्] १ फरकना, हिलना। २ तड़फड़ना। ३ विकसना, खीलना। ४ प्रकाशित होना, प्रकट होना। "फुरइ अ सीताइ तक्खणं वामच्छं" (से १५, ७६; पिंग)। वकृ—**फुरंत, फुरमाण**; (गा १६२; सुर २, २२१; महा; पिंग; से ६, २५; १२, २६)। संकृ—**फुरित्ता**; (ठा ७)।

फुर सक [अप + हृ] अपहरण करना, छीनना। प्रयो—फुरा-विंति; (वव ३)।

फुर पुं [स्फुर] शस्त्र-विशेष; "फुरफलगावरणगहिय—" (पणह १, ३—पत्र ४६)।

फुर (अप) देखो **फुड=स्फुट**; (पिंग)।

फुरण न [स्फुरण] १ फरकना, कुछ हिलना, ईषत् कम्पन; "जं पुण अच्छिप्फुरणं मह होही भारिया तेण" (सुर १३, १२७)। २ स्फूर्ति; (सुपा ६; वज्जा ३४; सम्मत्त १६१)।

फुरफुर अक [**पोस्फुराय्**] खूब काँपना, थरथराना, तड़फड़ाना। फुरफुरेज्जा; (महानि १)। वकृ—**फुरफुरंत, फुरफुरेंत**; (सुर १४, २३३; स ६६६; २४६)।

फुरिअ वि [**स्फुरित**] १ कम्पित, हिला हुआ, फरका हुआ, चलित; (दे ६, ८४; सुर ५, २२६; गा १३७)। २ दीप्त; (दे ६, ८४)।

फुरिअ वि [**दे**] निन्दित; (दे ६, ८४)।

फुरुफुर देखो **फुरफुर**। वकृ—**फुरुफुरंत; फुरुफुरेंत**; (पणह १, ३; पिंड ५६०; सुर ७, २३१; णाया १, ८—पत्र १३३)।

फुल देखो **फुड=स्फुट्**। फुलइ; (नाट)। फुले (अप); (पिंग)।

फुल (अप) देखो **फुर=स्फुर्**। फुला; (पिंग)।

फुल (अप) देखो **फुड=स्फुट**; (पिंग)।

फुल (अप) देखो **फुल्ल=फुल्ल**; (पिंग)।

फुलिअ देखो **फुडिअ=स्फुटित**; (से ५, ३०)।

फुलिअ (अप) देखो **फुल्लिअ**; (पिंग)।

फुलिंग पुं [**स्फुलिङ्ग**] अग्नि-कण; (णाया १, १; दे ६, १३५; महा)।

फुल्ल अक [**फुल्ल्**] फूलना, पुष्प-युक्त होना, विकसना। फुल्लइ, फुल्लए, फुल्लेइ; (रंभा; सम्मत्त १४०), फुल्लंति; (हे २, २६)। भवि—फुल्लिहिसि; (गा ८०२)।

फुल्ल देखो **कम=क्रम्**। फुल्लइ; (धात्वा १४६)।

फुल्ल न [**फुल्ल**] १ फूल, पुष्प; (कुमा; धर्मवि २०; सम्मत्त १४३; दसनि १)। २ फूला हुआ, पुष्पित; (भग; णाया १, १—पत्र १८; कुमा)। °**मालिया** स्त्री [°**मालिका**] फूल बेचने वाली, मालाकार की स्त्री; (सुर ३, ७४)। °**वल्लि** स्त्री [°**वल्लि**] पुष्प-प्रधान लता; (णाया १, १)।

फुल्लंधय पुं [**फुल्लन्धय, पुष्पन्धय**] भ्रमर, भमरा; (उप ६८६ टी)।

फुल्लंधुअ पुं [**दे**] भ्रमर, भमरा; (दे ६, ८५; पाअ; कुमा)।

फुल्लग न [**फुल्लक**] पुष्प की आकृति वाला ललाट का आभूषण; (औप)।

फुल्लण न [**फुल्लन**] विकास; (वज्जा १५२)।

फुल्लया स्त्री [**फुल्ला, पुष्पा**] वल्ली-विशेष, पुष्पाह्वा, शतपुष्पा, सोवा का गाछ; "इहफुल्लयकोमलिमा(? मा)गली य तह मक्कबोंदीया" (पणण १—पत्र ३३)।

फुल्लघड न [**दे**] पुष्प-विशेष, मदिरा-नामक फूल; (कुप्र ४५३)।

फुल्लविय } वि [**फुल्लित**] फुलाया हुआ; (सम्मत्त
फुल्लाविय } १४०; विक्र २३)।

फुल्लिअ वि [**फुल्लित**] पुष्पित, विकसित; (अंत १२; स ३०३; सम्मत्त १४०; २२७)।

फुल्लिम पुंस्त्री [**फुल्लता**] विकास, फूलन;

"अच्छउ ता फलकाले फुल्लिमसमए वि कालिमा वयणे।
इय कलिउं व पलासो चत्तो पत्तेहिं किंविणो व्व"
(सुर ३, ४४)।

फुल्लिर वि [**फुल्लितृ**] फूलने वाला, प्रफुल्ल; "हिययसंदणचंदणफुल्लिरफुल्लेहिं" (सम्मत्त २१४)।

फुस सक [**भ्रम्**] भ्रमण करना। फुसइ; (हे ४, १६१)।

फुस सक [**मृज्**] मार्जन करना, पोंछना, साफ करना। फुसइ; (हे ४, १०५; भवि)। कर्म —फुसिज्जइ, फुसिज्जउ; (कुमा; सुपा १२४)। वकृ—**फुसंत, फुसमाण**; (भवि; कुप्र २८५)। संकृ —**फुसिऊण**; (महा)।

फुस सक [**स्पृश्**] स्पर्श करना, छूना। फुसइ; (भग; औप; उत्त २, ६), फुसंति; (विसे २०२३), फुसंतु; (भग)। वकृ—**फुसंत, फुसमाण**; (ओघ ३८६; भग)। संकृ—**फुसिअ, फुसित्ता, फुसित्ताणं**; (पंच २, ३८; भग; औप; पि ५८३)। कृ - **फुस्स**; (ठा ३, २)।

फुसण न [**स्पर्शन**] स्पर्श-क्रिया; (भग; सुपा ५)।

फुसणा स्त्री [**स्पर्शना**] ऊपर देखो; (विसे ४३२; नव ३२)।

फुसिअ देखो **फुस=स्पृश्**।

फुसिअ वि [**स्पृष्ट**] छुआ हुआ; (जीवस १६६)।

फुसिअ वि [**मृष्ट**] पोंछा हुआ; (उप पृ ३४५; सुपा २११; कुप्र २३१)।

फुसिअ पुंन [**पृषत**] १ बिन्दु, बुन्द; (आचा; कप्प)। २ बिन्दु-पात; (नम १०)।

फुसिअ वि [**भ्रमित**] घुमाया हुआ; (कुमा ७, ४)।

फुसिआ स्त्री [**दे**] वल्ली-विशेष; "ससबिंदुगोत्तफुसिया" (पणण १ पत्र ३३)।

फुस्स देखो **फुस=स्पृश्**।

फूअ पुं [**दे**] लोहकार, लोहार; (दे ६, ८५)।

फूम देखो **फुम**। वकृ—**फूमंत**; (राज)।

फूमिय वि [फूत्कृत] फूँका हुआ; (उप पृ १४१)।
फूल देखो **फुल्ल=फुल्ल**; "फलफूलछल्लिकट्ठा मूलगपत्ताणि बीयाणि" (जी १३)।
फेक्कार पुं [फेत्कार] १ शृगाल का आवाज; (सुर ६, २०४)। २ आवाज, चिल्लाहट; (कप्पू)।
फेक्कारिय न [फेत्कारित] ऊपर देखो; (स ३७०)।
फेड सक [स्फेटय्] १ विनाश करना। २ दूर हटाना। ३ परित्याग करना। ४ उद्घाटन करना। फेडइ, फेडेइ; फेडंति; (उव; हे ४, ३५८; संबोध ५४; स ४१४)। कर्म—फेडिज्जइ; (भवि)।
फेडण न [स्फेटन] १ विनाश; २ अपनयन; (पव १३५)।
फेडणया स्त्री [स्फेटना] ऊपर देखो; (पिंड ३८७)।
फेडावणिय न [दे] विवाह-समय की एक रीति, वधू को प्रथम बार लज्जा-परिहार के वक्त दिया जाता उपहार; (स ७८)।
फेडिअ वि [स्फेटित] १ नष्ट किया हुआ, विनाशित; (पउम ३६, २२)। २ त्याजित; (सिरि ६५५)। ३ अपनीत; (ओघभा ४२)। ४ उद्घाटित; (स ७८)।
फेण पुं [फेण, फेन] फेन, झाग, जल-मल, पानी आदि के ऊपर का बुद्बुदाकार पदार्थ; (पाअ; णाया १, १—पत्र ६१; कप्प)। °**मालिणी** स्त्री [°मालिनी] नदी-विशेष; (ठा २, ३; इक)।
फेणबंध } **फेणवड** } पुं [दे] वरुण; (दे ६, ८५)।
फेणाय अक [फेणाय्, फेनाय्] फेन का वमन करना, झाग निकालना। वकृ—**फेणायमाण**; (प्रयौ ७४)।
फेप्फस } **फेफस** } न [दे] देखो **फिप्फिस**, **फुप्फुस**; (राज; तंदु ३६)।
फेरण न [दे] फेरना, घुमाना; "गुंफणफेरणसंकारएहिं" (सुर २, ८)।
फेल सक [क्षिप्] १ फेंकना। २ दूर करना। फेलदि (शौ); (नाट)। संकृ—**फेलिअ**; (नाट)।
फेला [दे] झूँठन-मौंठन, भोजन से बचा-खुचा, उच्छिष्ट;
"तस्स य अणुकंपाए देवी दासी य तम्मि कूरम्मि।
निच्चं खिवंति फेलं तीए सो जियइ सुणउव्व ॥"
"दुग्गंधकुलग्गामो गब्भो, जयणीइ चावियरमेहिं।
जं गब्भपोसणं पुण तं फेलाहारसंकासं ॥" (धर्मवि १४६)।
फेलाया स्त्री [दे] मातुलानी, मामी; (दे ६, ८५)।
फेल्ल पुं [दे] दरिद्र, निर्धन; (दे ६, ८५)।
फेल्लुस सक [दे] फिसलना, खिसकना, खिसक कर गिरना। फेल्लुसइ; (दे ६, ८६)। संकृ—**फेल्लुसिऊण**; (दे ६, ८६; स ३५५)।
फेल्लुसण न [दे] १ फिसलन, पतन, २ पिच्छिल जमीन, वह जगह जहाँ पाँव फिसल पड़े; (दे ६, ८६)।
फेस पुं [दे] १ त्रास, डर; २ सद्भाव; (दे ६, ८७)।
फोअ पुं [दे] उद्गम; (दे ६, ८६)।
फोइअय वि [दे] १ मुक्त; २ विस्तारित; (दे ६, ८७)।
फोंफा स्त्री [दे] डराने की आवाज, भयोत्पादक शब्द; (दे ६, ८६)।
फोड सक [स्फोटय्] १ फोड़ना, विदारण करना। २ राई आदि से शाक आदि को बघारना। फोडेज्ज; (कुप्र ६७)। वकृ—**फोडंत**, **फोडेमाण**; (सुपा २०१; ५६३; औप)।
फोड पुं [स्फोट] १ फोड़ा, व्रण-विशेष; (ठा १०—पत्र ५२०)। २ वर्ण-विशेष, शब्द-भेद; (राज)। ३ पिभक्षक; "बहुफोडो" (ओघभा १६१)।
फोडअ (शौ) पुं [स्फोटक] ऊपर देखो; (प्राकृ ८६)।
फोडण न [स्फोटन] १ विदारण; (पव ६ टी; गउड)। २ राई आदि से शाक आदि का बघारना; (पिंड २५०)। ३ राई आदि संस्कारक पदार्थ; (पिंड २५५)। ४ विफोड़ने वाला, विदारण करने वाला; "कायरजणहिययफोडणं" (णाया १, ८), "अम्हं मम्मणसराहअहिअअव्वणफोडणा गीआ" (गा ३८१)।
फोडव देखो **फोडअ**; (पउम ६३, २६)।
फोडाव सक [स्फोटय्] १ फोड़वाना, ताड़वाना। २ खुलवाना। संकृ—**फोडाविऊण**; (स ४६०)।
फोडाविय वि [स्फोटित] १ ताड़वाया हुआ; २ खुलवाया हुआ; "फोडाविया संपुडा" (स ४६०)।
फोडि स्त्री [स्फोटि] विदारण, भेदन; 'भाडीफोडीसु वज्जए कम्मं' (पडि)। °**कम्म** न [°कर्मन्] १ जमीन आदि का विदारण करने का काम, हल आदि से भूमि-दारण, कूप, तड़ाग आदि खोदने का काम; २ उक्त काम कर आजीविका चलाना; (पडि)।
फोडिअ वि [स्फोटित] १ फोड़ा हुआ, विदारित; (णाया १, ७; स ४७२)। २ राई आदि से बघारा हुआ; (वव १)।

फोडिअय वि [दे, स्फोटित, °क] राई से बघारा हुआ शाकादि; (दे ६, ८८)।

फोडिअय न [दे] रात के समय जंगल में सिंहादि से रक्षा का एक प्रकार; (दे ६, ८८)।

फोडिया स्त्री [स्फोटिका] छोटा फोड़ा; (उप ७६८ टी)।

फोडी स्त्री [स्फोटी, स्फौटी] देखो **फोडि**; (उवा; पव ६; पडि)।

फोप्फस न [दे] शरीर का अवयव-विशेष; "कालिज्जय-अंतपित्तजरहियपफोप्फसंफेफसपिलिहोदर—" (तंदु ३६)।

फोफल न [दे] गन्ध-द्रव्य विशेष, एक जात की औषधि; "महुरविरेयणमेसा कायव्वा फोफलाइदव्वेहिं" (भत्त ४२)।

फोफस देखो **फोप्फस**; (पण्ह १, १—पत्र ८)।

फोरण न [स्फोरण] निरन्तर प्रवर्तन; "विसयम्मि अपत्तेवि हु णियमसिप्फारणेण फलसिद्धी" (उवर ७४)।

फोरविअ वि [स्फोरित] निरन्तर प्रवृत्त किया हुआ; "तेहिंपि नियनियसत्ती फोरविया" (सम्मत्त २२७; हम्मीर १४)।

फोस देखो **फुस=स्पृश्**। "सव्वं फासंति जगं" (जीवस १६६)।

फोस पुं [दे] उद्गम; (दे ६, ८६)।

फोस पुं [दे, पोस] अपान-देश, गुदा; (तंदु २०)।

फोसणा स्त्री [स्पर्शना] स्पर्श-क्रिया; (जीवस १६६)।

इअ सिरि**पाइअसद्दमहण्णवे** फआराइसद्दसंकलणो अट्ठावीसइमो तरंगो समत्तो।

——:०:——

ब

ब पुं [ब] ओष्ठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष; (प्राप)।

बअर (शौ) न [बदर] १ फल-विशेष, बेर; २ कपास का बीज; (प्राकृ ८३)।

बइट्ठ (अप) वि [उपविष्ट] बैठा हुआ; (हे ४, ४४४; भवि)।

बइल्ल पुं [दे] बैल, बरध, वृषभ; (दे ६, ६१; गा २३८; प्राकृ ३८; हे २, १७४; धर्मवि ३; श्रावक २५८ टी; श्रु १५३; प्रासू ५५; कुप्र २७६; ती १५; वै ६; कप्पू)।

बइस (अप) अक [उप+विश्] बैठना; गुजराती में 'बेसवुं'। बइसइ; (भवि)।

बइसणय (अप) न [उपवेशनक] आसन; (ती ७)।

बइसार (अप) सक [उप+वेशय्] बैठाना। बइसारइ; (भवि)।

बइस्स देखो **वइस्स**; (पि ३००)।

बईस (अप) देखो **बइस**। बईसइ; (भवि)।

बईस (अप) न [उपवेश] बैठ, बैठन, बैठना; "तोवि गोट्ठडा कराविआ मुद्धए उट्ठ-बईस" (हे ४, ४२३)।

बउणी स्त्री [दे] कार्पासी, कर्पास-वल्ली; (दे ३, ५७)।

बउल पुं [बकुल] १ वृक्ष-विशेष, मौलसरी का पेड़; (सम १५२; पाअ; णाया १, ६)। २ बकुल का पुष्प; (दे १, ५६)। °**सिरी** स्त्री [°श्री] १ बकुल का पेड़; २ बकुल का पुष्प; (श्रा १२)।

बउस पुं [बकुश] १ अनार्य देश-विशेष; २ पुंस्त्री. उस देश का निवासी; (पण्ह १, १—पत्र १४)। स्त्री—°**सी**; (णाया १, १—पत्र ३७)। ३ वि. शबल, चितकबरा; ४ मलिन चारित्र वाला, शरीर के उपकरण और विभूषा आदि से संयम को मलिन करने वाला; (ठा ३, २; ५, ३; सुख ६, १), स्त्री —"तए णं सा सूमालिया अज्जा सरीरबउसा जाया यावि होत्था" (णाया १, १६)। ४ पुंन. मलिन संयम, शिथिल चारित्र-विशेष; (सुख ६, १)।

बउहारी स्त्री [दे] बुहारी, संमार्जनी, झाड़ू; (दे ६, ६७)।

बंग पुं [वङ्ग] १ भगवान् आदिनाथ के एक पुत्र का नाम; (ती १४)। २ देश-विशेष, बंगाल देश; (उप ७६५; ती १४)। ३ वंग देश का राजा; (पिंग)।

बंगल (अप) पुं [वङ्ग] वङ्ग देश का राजा; (पिंग)।

बंगाल पुं [वङ्गाल] बंगाल देश; "बंगालदेसवइणो तेणं तुह ससुरयस्स दिन्ना हं" (सुपा ३७७)।

बंभ देखो **वंभ**; (पि २६६)।

बंडि पुं [दे] देखो **बंदि=बन्दिन्**; (षड्)।

बंद न [दे] कैदी, कारा-बद्ध मनुष्य; "बंदंपि किंपि" (स ४२१), "बंदाइं गिन्हइ कयावि", "छलेण गिन्हंति बंदाइं" "बंदाणं मोयावणकए" (धर्मवि ३२), "एगत्थबंदग्गहियपहि-यकीरंतकरुणरुन्नगग" (धर्मवि ५२)। °**ग्गाह** पुं [°ग्राह] कैदी रूप से पकड़ना; "पंग्गाहवइवाडणबंदग्गहखत्तखणणपमुहाइं" (कुप्र ११३)।

बंदि स्त्री [बन्दि] देखो **बंदी**; (हे १, १४२; २, १७६)।

बंदि } पुं [**बन्दिन्**] स्तुति-पाठक, मंगल-पाठक, मागध;
बंदिण } "मंगलपाढयमागहचारणवेआलिआ बंदी" (पाअ; उप ७२८ टी; धर्मवि ३०), "उद्दामसद्दबंदिणवंद्दसमुग्घुट्ठ-नामाइं" (स ५७६)।

बंदिर न [**दे**] समुद्र-वाणिज्य-प्रधान नगर, बंदर; (सिरि ४३३)।

बंदी स्त्री [**बन्दी**] १ हठ-हृत स्त्री, बाँदी; (दे २, ८४; गउड १०५; ८४३)। २ कैद किया हुआ मनुष्य; (गउड ४२६; गा ११८)।

बंदीकय वि [**बन्दीकृत**] कैद किया हुआ, बाँध कर आनीत; (गउड)।

बंदुरा स्त्री [**बन्दुरा**] अश्व-शाला; "गच्छ निरुंवहि बंदुराओ, भूमिहि तुरए" (स ७२५)।

बंध सक [**बन्ध्**] १ बाँधना, नियन्त्रण करना। २ कर्मों का जीव-प्रदेशों के साथ संयोग करना। बंधइ; (भग; महा; उव; हे १, १८७)। भूका—बंधिंसु; (पि ५१६)। कर्म—बंधिज्जइ, बज्झइ; (हे ४, २४७), भवि—बंधिहिइ, बज्झिहिइ; (हे ४, २४७)। वकृ—**बंधंत**, **बंधमाण**; (कम्म २, ८; पण्ण २२)। संकृ—**बंधइत्ता**, **बंधिउं**, **बंधिऊण**, **बंधिऊणं**, **बंधित्ता**, **बंधित्तु**; (भग; पि ५१३; ५८५; ५८२)। हेकृ—**बंधेउं**; (हे १, १८१)। कृ—**बंधियव्व**; (पंच १, ३)। कवकृ—**बज्झंत**, **बज्झमाण**; (सुपा १६८; कम्म १, ३५; औप)।

बंध पुं [**दे**] भृत्य, नौकर; (दे ६, ८८)।

बंध पुं [**बन्ध**] १ कर्म-पुद्गलों का जीव-प्रदेशों के साथ दूध-पानी की तरह मिलना, जीव-कर्म-संयोग; (आचा; कम्म १, १५; ३२)। २ बन्धन, नियन्त्रण, संयमन; (श्रा १०; प्रासू १५३)। ३ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**सामि** त्रि [°**स्वामिन्**] कर्म-बन्ध करने वाला; (कम्म ३, १; २४)।

बंधई स्त्री [**बन्धकी**] पुंश्चली, असती स्त्री; (नाट—मालती १०६)।

बंधग वि [**बन्धक**] १ बाँधने वाला; २ कर्म-बन्ध करने वाला, आत्म-प्रदेश के साथ कर्म-पुद्गलों का संयोग करने वाला; (पंच ५, ८४; श्रावक ३०६; ३०७; पंचा १६, ४०; कम्म ६, ६)।

बंधण न [**बन्धन**] १ बाँधने का—संश्लेष का—साधन, जिससे बाँधा जाय वह स्निग्धतादि गुण; (भग ८, ९—पत्र ३९४)। २ जो बाँधा जाय वह; ३ कर्म, कर्म-पुद्गल; ४ कर्म-बन्ध का कारण; (सूअ १, १, १, १)। ५ संयमन, नियन्त्रण; (प्रासू ३)। ६ नियन्त्रण का साधन, रज्जु आदि; (उव)। ७ कर्म-विशेष, जिस कर्म के उदय से पूर्व-गृहीत कर्म-पुद्गलों के साथ गृह्यमाण कर्म-पुद्गलों का आपस में संबन्ध हो वह कर्म; (कम्म १, २४; ३१; ३५; ३६; ३७)।

बंधणया स्त्री [**बन्धन**] बन्धन; (भग)।

बंधणी स्त्री [**बन्धनी**] विद्या-विशेष; (पउम ७, १४१)।

बंधव पुं [**बान्धव**] १ भाई, भ्राता; २ मित्र, वयस्य, दोस्त; ३ नातीदार, नतैत; ४ माता; ५ पिता; ६ माता-पिता का संबन्धी मामा, चाचा आदि; (हे १, ३०; प्रासू ७६; उत्त १८, १४)।

बंधाव (अशो) सक [**बन्धय्**] बँधाना, बँधवाना। बंधापयति; (पि ७)।

बंधाविअ वि [**बन्धित**] बँधाया हुआ; (सुपा ३२५)।

बंधिअ देखो **बद्ध**; (सूअ १, २, १, १८; धर्मवि १३)।

बंधु पुं [**बन्धु**] १ भाई, भ्राता; २ माता; ३ पिता; ४ मित्र, दोस्त; ५ स्वजन, नातीदार, नतैत; (कुमा; महा; प्रासू १०८; सुपा १६८; २४१)। ६ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**जीव** पुं [°**जीव**] वृक्ष-विशेष, दुपहरिया का पेड़; (स्वप्न ६६; कुमा)। °**जीवग** पुं [°**जीवक**] वही अर्थ; (णाया १,१; कप्प; भग)। °**दत्त** पुं [°**दत्त**] १ एक श्रेष्ठी का नाम; (महा)। २ एक जैन मुनि का नाम; (राज)। °**मई**, °**वई** स्त्री [°**मती**] १ भगवान् मल्लिनाथ की मुख्य साध्वी का नाम; (णाया १, ८; पव ९; सम १५२)। २ स्वनाम-ख्यात स्त्री-विशेष; (महा; राज)। °**सिरि** स्त्री [°**श्री**] श्रीदाम राजा की पत्नी; (विपा १, ६)।

बंधुर वि [**बन्धुर**] १ सुन्दर, रम्य; (पाअ)। २ नम्र, अवनत; (गउड २०५)।

बंधुरिय वि [**बन्धुरित**] १ पिंडीकृत; (गउड ३८३)। २ मत्रीभूत, नमा हुआ; (गउड ५५६)। ३ मुकुटित, मुकुट-युक्त; ४ विभूषित; (गउड ५३३)।

बंधुल पुं [**बन्धुल**] वेश्या-पुत्र, असती-पुत्र; (मृच्छ २००)।

बंधूय पुं [**बन्धूक**] वृक्ष-विशेष, दुपहरिया का पेड़; (स ३१२)।

बंधोल्ल पुं [**दे**] मेलक, मेल, संगति; (दे ६, ८९; षड्)।

बंभ पुं [**ब्रह्मन्**] १ ब्रह्मा, विधाता; (उप १०३१ टी; दे ६, २२; कुप्र २०३)। २ भगवान् शान्तिनाथ का शासनाधिष्ठायक

यक्ष; (संति ७)। ३ अप्काय का अधिष्ठायक देव; (ठा ५, १—पत्र २६२)। ४ पाँचवें देवलोक का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८५)। ५ बारहवें चक्रवर्ती का पिता; (सम १५२)। ६ द्वितीय बलदेव और वासुदेव का पिता; (सम १५२; ठा ६—पत्र ४४७)। ७ ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध एक योग; (पउम १७, १०७)। ८ ब्राह्मण, विप्र; (कुलक ३१)। ९ चक्रवर्ती राजा का एक देव-कृत प्रासाद; (उत्त १३, १३)। १० दिन का नववाँ मुहूर्त; (सम ५१)। ११ छन्द-विशेष; (पिंग)। १२ ईषत्प्राग्भारा पृथिवी; (सम २२)। १३ एक जैन मुनि का नाम; (कप्प)। १४ पुंन. एक विमानावास, देव-विमान-विशेष; (देवेन्द्र १३१; १३४; सम १६)। १५ मोक्ष, अपवर्ग; (सूअ २, ६, २०)। १६ ब्रह्मचर्य; (सम १८; ओघभा २)। १७ सत्य अनुष्ठान; (सूअ २, ५, १)। १८ निर्विकल्प सुख; (आचा १, ३, १, २)। १९ योगशास्त्र-प्रसिद्ध दशम द्वार; (कुमा)। °कंत न [°कान्त] एक देव-विमान; (सम १६)। °कूड पुं [°कूट] १ महाविदेह वर्ष का एक वक्षस्कार पर्वत; (जं ४)। २ न. एक देव-विमान; (सम १६)। °चरण न [°चरण] ब्रह्मचर्य; (कुप्र ४६१)। °चारि वि [°चारिन्] १ ब्रह्मचर्य पालन करने वाला; (याया १, १; उवा) २ पुं. भगवान् पार्श्वनाथ का एक गणधर—प्रमुख मुनि; (ठा ८—पत्र ४२९)। °चेर, °च्चेर न [°चर्य] १ मैथुन-विरति; (आचा; पण्ह २, ४; हे २, ७४; कुमा; भग; सं ११; उप पृ ३४३) २ जिनेन्द्र-शासन, जिन-प्रवचन; (सूअ २, ५, १)। °ज्झय न [°ध्वज] एक देव-विमान. (सम १६)। °दत्त पुं [°दत्त] भारतवर्ष में उत्पन्न बारहवाँ चक्रवर्ती राजा; (ठा २, ४; सम १५२; उत्त)। °दीव पुं [°द्वीप] द्वीप-विशेष; (राज)। °दीविया स्त्री [°दीपिका] जैन-मुनि गण की एक शाखा; (कप्प)। °प्पभ न [°प्रभ] एक देव-विमान; (सम १६)। °भूइ पुं [°भूति] एक राजा, द्वितीय वासुदेव का पिता; (पउम २०, १८२)। °यारि देखो °चारि; (याया १, १; सम १३; कप्प; सुपा २७१; महा; राज), स्त्री —°णी; (याया १, १४)। °रुइ पुं [°रुचि] स्वनाम-प्रसिद्ध एक ब्राह्मण, नारद का पिता; (पउम ११, ५२)। °लेस न [°लेश्य] एक देव-विमान; (सम १६)। °लोअ, °लोग पुं [°लोक] एक स्वर्ग, पाँचवाँ देवलोक; (भग; अनु; सम १३)। °लोगवडिंसय न [°लोकावतंसक] एक देव-विमान; (सम १७)। °व, °वंत वि [°वत्] ब्रह्मचर्य वाला; (आचा)। °वडिंसय पुं [°ावतंसक] सिद्ध-शिला, ईषत्प्राग्भारा पृथिवी; (सम २२)। °वण्ण न [°वर्ण] एक देव-विमान; (सम १६)। °वय न [°व्रत] ब्रह्मचर्य; (याया १, १)। °वि वि [°विद्] ब्रह्म का जानकार; (आचा)। °व्वय देखो °वय; (सं ५६; प्रासू १५६)। °संति पुं [°शान्ति] भगवान् महावीर का शासन-यक्ष; (गण ११; ती १५)। °सिंग न [°शृङ्ग] एक देव-विमान; (सम १६)। °सिट्ठ न [°सृष्ट] एक देव-विमान; (सम १६)। °सुत्त न [°सूत्र] उपवीत, यज्ञोपवीत; (मोह ३०; सुख २, १३)। °हिअ पुं [°हित] एक विमानावास, देव-विमान-विशेष; (देवेन्द्र १३४)। °वत्त न [°ावर्त] एक देव-विमान; (सम १६)। देखो बंमाण, बम्ह।

बंभंड न [ब्रह्माण्ड] जगत, संसार; (गउड; कुप्र ४; सुपा ३६८; ५६३)।

बंभण पुं [ब्राह्मण] ब्राह्मण, विप्र; (स २६०; सुर २, १३०; सुपा १६८; हे ४, २८०, महा)।

बंभणिआ स्त्री [ब्राह्मणिका] पञ्चेन्द्रिय जन्तु-विशेष; (पुप्फ २६७)।

बंभणिआ, बंभणी स्त्री [दे. बंभणिका] हलाहल, जहर; (दे ६, ९०; पाअ; दे ८, ६३; ७५)।

बंभण्ण, बंभण्णय स्त्री [ब्रह्मण्य, ब्राह्मण्य, °क] १ ब्राह्मण का हित; २ ब्राह्मण-संबन्धी; ३ न. ब्राह्मण-समूह; ४ ब्राह्मण-धर्म; "बंभण्णकज्जेसु सज्जा" (सम्मत्त १४०; कप्प; औप; पि २५०)।

बंभलिज्ज न [ब्रह्मलीय] एक जैन मुनि-कुल; (कप्प)।

बंभहर न [दे] कमल, पद्म; (दे ६, ९१)।

बंभाण देखो बंभ; (पउम ५, १२२)। °गच्छ पुं [°गच्छ] एक जैन मुनि गच्छ; (ती २८)।

बंभि°, बंभी स्त्री [ब्राह्मी] १ भगवान् ऋषभदेव की एक पुत्री; (कप्प; पउम ५, ११०; ठा ५, २; सम ६०)। २ लिपि-विशेष; (सम ३५; भग)। ३ कला-विशेष; (सुपा ३२४)। ४ सरस्वती देवी; (सिरि ७६४)।

बंभुत्तर पुं [ब्रह्मोत्तर] एक विमानावास, देव-विमान-विशेष; (देवेन्द्र १३४)। °वडिंसक न [°ावतंसक] एक देव-विमान; (सम १६)।

बंहि पुं [**बर्हिन्**] मयूर, मोर; (उत्तर २६)।

बंहिण (अप) ऊपर देखो; (पि ४०६)।

बक देखो **बय**; (पराह १, १—पत्र ८)।

बक्कर न [**दे. बर्कर**] परिहास; (दे ६, ८६; कुप्र १६७; कप्पू)।

बक्कस न [**दे**] अन्न-विशेष; "'बक्कसं' मुद्गमाषादिनष्पिका-निष्पन्नमन्नं" (सुख ८, १२; उत्त ८, १२)।

बग देखो **बय**; (दे २, ६; कुप्र ६६)।

बगदादि पुं [**बगदादि**] देश-विशेष; बगदाद देश; "बगदादिविसयवसुहाहिवस्स खलीपनामधेयस्स" (हम्मीर ३४)।

बगी स्त्री [**बकी**] बगुली, बगुले की मादा; (विपा १, ३; मोह ३७)।

बग्गड पुं [**दे**] देश-विशेष; (ती १५)।

बज्झ वि [**बाह्य**] बाहर का, बहिरङ्ग; (पराह १, ३; प्रासू १७२)। °**ओ** अ [°**तस्**] बाह्य से, बहिरंग से; "किं ते जुज्झेण बज्झओ" (आचा)।

बज्झ न [**बन्ध**] बन्धन, बाँधने का वागुरा आदि साधन; "अह तं पवेज्ज बज्झं, अहे बज्झस्स वा वए" (सूअ १, १, २, ८)।

बज्झ वि [**बद्ध**] १ बन्धनाकार व्यवस्थित; "अह तं पवेज्ज बज्झं" (सूअ १, १, २, ८)। २ बँधा हुआ; (प्रति १५)।

बज्झंत } देखो **बन्ध=बन्ध्**।
बज्झमाण }

बढर पुं [**बठर**] मूर्ख छात्र; (कुप्र १६)।

बड (अप) वि [**दे**] बड़ा, महान्; (पिंग)। देखो **वड्ड**।

बडबड अक [**वि+लप्**] विलाप करना, बड़बड़ाना। बडबडइ; (षड्)।

बडहिला स्त्री [**दे**] धुरा के मूल में दी जाती कील, कीलक-विशेष; (सहि ११६)।

बडिस देखो **बलिस**; (हे १, २०२)।

बडु } पुं [**बटु**, °**क**] लड़का, छोकड़ा; (उप ७१३;
बडुअ } सुपा २००)।

बडुवास [**दे**] देखो **वडुवास**; (दे ७, ४७)।

बतीस } (अप) देखो **बत्तीस**; (पिंग)।
बत्तिस }

बत्तीस स्त्रीन [**द्वात्रिंशत्**] १ संख्या-विशेष, बत्तीस, ३२; २ जिनकी संख्या बत्तीस हों वे; "बत्तीसं जोगसंगहा पन्नत्ता" (सम ५७; औप; उव; पिंग)। स्त्री—°**सा**; (सम ५७)।

बत्तीसइ° स्त्री. ऊपर देखो; (सम ५७)। °**बद्धय** न [°**बद्धक**] १ बत्तीस प्रकार की रचनाओं से युक्त, २ बत्तीस पात्रों से निबद्ध (नाटक); "बत्तीसइबद्धएहिं नाडएहिं" (णाया १, १—पत्र ३६; विपा २, १ टी—पत्र १०४)। °**विह** वि [°**विध**] बत्तीस प्रकार का; (सम ५७)।

बत्तीसइम वि [**द्वात्रिंशत्तम**] १ बत्तीसवाँ, ३२ वाँ; (पउम ३२, ६७; पराग ३२)। २ न. पनरह दिनों का लगातार उपवास; (णाया १, १)।

बत्तीसा देखो **बत्तीस**।

बत्तीसिया स्त्री [**द्वात्रिंशिका**] १ बत्तीस पद्यों का निबन्ध—ग्रन्थ; (सम्मत्त १४४)। २ एक प्रकार का नाप; (अणु)।

बद्ध वि [**बद्ध**] १ बँधा हुआ, नियन्त्रित; "बद्धं संदाणिअं निअलिअं च" (पाअ)। २ संश्लिष्ट, संयुक्त; (भग; पाअ)। ३ निबद्ध, रचित; (आवम)। °**प्फल**, °**फल** पुं [°**फल**] १ करञ्ज का पेड़; (हे २, ६७)। २ वि. फल-युक्त, फल-संपन्न, (णाया १, ७—पत्र ११६)।

बद्धय पुं [**दे**] कान का एक आभूषण; (दे ६, ८६)।

बद्धेल्लग } देखो **बद्ध**; (अणु; महा)।
बद्धेल्लय }

बप्प पुं [**दे**] १ सुभट, योद्धा; (दे ६, ८८)। २ बाप, पिता; (दे ६, ८८; दस ७, १८; स ५८१; उप ३२० टी; सुर १, २२१; कुप्र ४३; जय; भवि; पिंग)।

बप्पहट्टि पुं [**बप्पभट्टि**] एक सुविख्यात जैन आचार्य; (विचार ५३३; ती ७)।

बप्पीह पुं [**दे**] पपीहा, चातक पक्षी; (दे ६, ६०; स ६८६; पाअ; हे ४, ३८३)।

बप्पुड वि [**दे**] बिचारा, दीन, अनुकम्पनीय; गुजराती में 'बापडु'; (हे ४, ३८७; पिंग)।

बप्फ पुंन [**बाष्प**] १ भाफ, ऊष्मा; "बप्फो" (हे २, ७०; षड्), "बप्फं" (प्राकृ २३; विसे १५३५)। २ नेत्र-जल, अश्रु; "बप्फं वाहो य नयणजलं" (पाअ), "बप्फपज्जाउल-लोअणाहिं" (स ५६१; स्वप्न ८५)।

बप्फाउल वि [**दे. बाष्पाकुल**] अतिशय उष्ण; (दे ६, ६१)।

बब्बर पुं [**बर्बर**] १ अनार्य देश-विशेष; (पउम ६८, ६५)। २ वि. बर्बर देश का निवासी; (पराह १, १; पउम

६६, ५५)। °कूल न [°कूल] बर्बर देश का किनारा; (सिरि ४३०)।

बब्बरी स्त्री [दे] केश-रचना; (दे ६, ६०)।

बब्बरी स्त्री [**बर्बरी**] बर्बर देश की स्त्री; (णाया १, १; औप; इक)।

बब्बूल पुं [**बब्बूल**] वृक्ष-विशेष, बबूल का पेड़; (उप ८३३ टी; महा)।

बब्भ पुं [**दे**] वर्ध्र, चर्म, चमड़े की रज्जु: 'बब्भो बद्धे' (दे ६, ८८), "वज्जो बद्धो=(? बब्भो वद्धो)" (पाअ)।

बब्भागम वि [**बहुवागम**] बहु-श्रुत, शास्त्रों का अच्छा जानकार; (कस)।

बब्भासा स्त्री [**दे**] नदी-भेद, वह नदी जिसके पूर से भावित पानी में धान्य आदि बोया जाता हो; (राज)।

बब्भिआयण न [**बाभ्रव्यायन**] गोत्र-विशेष; (इक)।

बमाल पुं [**दे**] कलकल, कोलाहल; (दे ६, ६०)।

बम्ह पुं [**ब्रह्मन्**] १ ज्योतिष्क देव-विशेष; (ठा २, ३— पत्र ७७)। २—देखो **बंभ**; (हे २, ७४; कुमा; गा ८१६; अच्चु १३; वज्जा २६; सम्मत्त ७७; हे १, ५६; २, ६३; ३, ५६)। °**चरिअ** देखो **बंभ-चेर**; (हे २, ६३; १०७)। °**तरु** पुं [°**तरु**] पलाश का पेड़; (कुमा)। °**धमणी** स्त्री [°**धमनी**] ब्रह्मनाडी; (अच्चु ८४)।

बम्हण्ण (शौ) देखो **बंभण्ण**; (प्राकृ ८७)।

बम्हण देखो **बंभण**; (अच्चु १७, प्रयौ ३७)।

बम्हण्णय देखो **बंभण्णय**; (भग)।

बम्हहर [**दे**] देखो **बंभहर**; (षड्)।

बम्हाल पुं [**दे**] अपस्मार, वायु-रोग विशेष, मृगी रोग; (षड्)।

बय पुं [**बक**] १ पक्षि-विशेष, बगुला; २ कुबेर; ३ महादेव; ४ पुष्प-वृक्ष विशेष, मल्लिका का गाछ; (श्रा २३)। ५ राक्षस-विशेष; (श्रा २३)। ६ असुर-विशेष, बकासुर, (वेणी १७७)।

बयाला देखो **बा-याला**; (पव १६)।

बरठ पुं [**दे**] धान्य-विशेष; (पव १५४ टी)।

बरह न [**बर्ह**] १ मयूर-पिच्छ; (स ५००)। २ पत्र; ३ परिवार; (प्राकृ २८)। देखो **बरिह**।

बरहि } पुं [**बर्हिन्**] मयूर, मोर; (पाअ; प्राकृ २८;
बरहिण } पउम २८, १२०; णाया १, १; पण्ह १, १; औप)।

बरिह देखो **बरह**; (हे २, १०४)। °**हर** पुं [°**धर**] मयूर; (षड्; प्राकृ २८)।

बरिहि } देखो **बरहि**; (कप्पू; हे ४, ४२२)।
बरिहिण }

बरुअ न [**दे**] तृण-विशेष, इक्षु-सदृश तृण; (दे ६, १६; ६, ६१; पाअ)।

बल अक [**बल्**] १ जीना। २ सक. खाना। **बलइ**; (हे ४, २५९)।

बल सक [**ग्रह्**] ग्रहण करना। **बलइ**; (षड्)। देखो **बल**=ग्रह्।

बल पुं [**बल**] १ बलदेव, हलधर, वासुदेव का बड़ा भाई; (पउम २०, ८४; पाअ) २ छन्द-विशेष; (पिंग)। ३ एक क्षत्रिय परिव्राजक; (औप)। ४ न. सामर्थ्य, पराक्रम; (जी ४१; स्वप्न ४२; प्रासू ६३)। ५ शारीरिक पराक्रम; "बलवीरियाणं जओ भेओ" (अज्झ ६५)। ६ सैन्य, सेना; (उत्त ६, ४; कुमा)। ७ खाद्य-विशेष; "आसाढाहिं बलेहिं भोच्चा कज्जं साधेंति" (सुज्ज १०, १७)। ८ अष्टम तप, लगातार तीन दिनों का उपवास; (संबोध ५८)। ९ पर्वत-विशेष का एक कूट—शिखर; (ठा ६)। °**च्छिउ** त्रि [°**च्छित्**] १ बल का नाशक; २ न. जहर, विष; (से २, ११)। °**ण्णु** देखो °**न्न**; (राज)। °**देव** पुं [°**देव**] हली, वासुदेव का बड़ा भाई, राम (सम ७१; औप)। °**न्न** वि [°**ज्ञ**] बल को जानने वाला; (आचा)। °**भद्द** पुं [°**भद्र**] १ भरतक्षेत्र का भावी सातवाँ वासुदेव; (सम १५४)। २ राजा भरत का एक प्रपौत्र; (पउम ५, ३)। ३ एक विमानावास, देव-विमान-विशेष; (देवेन्द्र १३३)। देखो °**हद्द**। °**भाणु** पुं [°**भानु**] राजा बलमित्र का भागिनेय; (काल)। °**महणी** स्त्री [°**मथनी**] विद्या-विशेष; (पउम ७, १४२)। °**मित्त** पुं [°**मित्र**] इस नाम का एक राजा; (विचार ४६४; काल)। °**व** वि [°**वत्**] १ बलवान्, बलिष्ठ; (विसे ७६८)। २ प्रभूत सैन्य वाला; (औप)। ३ पुं. अहोरात्र का आठवाँ मुहूर्त; (सुज्ज १०, १३)। °**वइ** पुं [°**पति**] सेनापति, सेनाध्यक्ष; (महा)। °**वंत**, °**वग** देखो °**व**; (णाया १, १; औप; णाया १, ५)। °**वत्त** न [°**वत्त्व**] बलिष्ठता; (आचभा ६)। °**वाउय** वि [°**व्यापृत**] सैन्य में लगाया हुआ; (औप)। °**हद्द** पुं [°**भद्र**] १ बलदेव; २ छन्द-विशेष; (पिंग)। देखो °**भद्द**।

बलकार } पुं [**बलात्कार**] जबरदस्ती; (पउम ४६,
बलक्कार } २६; दे ६, ४६; अभि २१७; स्वप्न ७६)।
बलक्कारिद (शौ) वि [**बलात्कारित**] जिस पर बलात्कार किया गया हो वह; (नाट—मालती ११३)।
बलद्द पुं [**दे**] बलध, बैल; (सुपा ५४५; नाट—मृच्छ ६०)।
बलमड्डा स्त्री [**दे**] बलात्कार, जबरदस्ती; (दे ६, ६२)।
बलमोडि देखो **बलामोडि**; "मग्गिअलद्धे बलमोडिचुंबिए अप्पणेअ उवणीदे" (गा ८२७)।
बलमोडिअ देखो **बलामोडिअ**; "केसेसु बलमोडिअ तेण समरम्मि जअस्सिरी गहिआ" (गा ६७७)।
बलय पुं [**दे**] बलध, बैल; (पउम ८०, १३)।
बलया देखो **बलाया**; (हे १, ६७)।
बलवट्टि स्त्री [**दे**] १ सखी; २ व्यायाम को सहन करने वाली स्त्री; (दे ६, ६१)।
बलहड्डुया स्त्री [**दे**] चने के रोटी; (वज्जा ११४)।
बला अ. स्त्री [**बलात्**] जबरदस्ती, बलात्कार; (से १०, ७८; ओघभा २०), "बलाए" (उप १०३१ टी)।
बला स्त्री [**बला**] १ मनुष्य की दश दशाओं में चौथी अवस्था, तीस से चालीस वर्ष तक की अवस्था; (तंदु १६)। २ दृष्टि-विशेष, योग की एक दृष्टि; ३ भगवान् कुन्थुनाथ की शासन-देवी, अच्युता; (राज)।
बलाका देखो **बलाया**; (पण्ह १, १—पत्र ८)।
बलाणय न [**दे**] १ उद्यान आदि में मनुष्य को बैठने के लिए बनाया जाता स्थान—बेंच आदि; (धर्मवि ३३; सिरि ५८६)। २ द्वार, दरवाजा; "पविसंतो चेव बलाणयम्मि कुज्जा निसीहिया तिन्नि" (चेइय १८८)।
बलामोडि स्त्री [**दे. बलामोटि**] बलात्कार; (दे ६, ६२)।
बलामोडिअ अ [**दे. बलादामोट्य**] बलात्कार से, जबरदस्ती से; "केसेसु बलामोडिअ तेण अ समरम्मि जयसिरी गहिआ" (काप्र १६७; उत्तर १०३; पि २३८)।
बलामोलि देखो **बलामोडि**; (से १०, ६४)।
बलाया स्त्री [**बलाका**] बक-विशेष, बिसकण्ठिका, बगुले की एक जाति; (हे १, ६७; उप १०३१ टी)।
बलाहग पुं [**बलाहक**] मेघ, जीमूत; "गलियजलबलाहगपंडुरं" (वसु)।
बलाहगा देखो **बलाहया**; (ठा ८)।
बलाहय देखो **बलाहग**; (णाया १, ५; कप्प; पाअ)।
बलाहया स्त्री [**बलाहका**] १ बक-विशेष, बलाका; (उप २६४)। २ देवी-विशेष, अनेक दिक्कुमारी देवियों का नाम; (इक—पत्र २३१; २३४)।
बलि पुं [**बलि**] १ असुरकुमारों का उत्तर दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३; १०; इक)। २ स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा; (गा ४०६)। ३ सातवाँ प्रतिवासुदेव; (पउम ५, १५६)। ४ एक दानव, दैत्य-विशेष; (कुमा)। ५ पुंजी, उपहार, भेंट; (पिंड १६५; दे १, ६६)। ६ पूजोपहार, देवता को धरा जाता नैवेद्य; "सुरहिविलेवणवरकुसुमदामबलिदीवएहिं च" (पव १ टी), "वंदणपूयणबलिढोयणेसु" (चेइय ५२; पव १३३; सुर ३, ७८; कुप्र १७४)। ७ भूत आदि को दिया जाता भोग, बलिदान; "भअबलिव्व" (वै ४६)। ८ पूजा, अर्चा, सपर्या; ९ राज-ग्राह्य भाग; १० चामर का दण्ड; ११ उपप्लव; (हे १, ३५)। १२ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**उट्ठ** पुं [°**पुष्ट**] काक, कौआ; (पाअ)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] १ पूजन, पूजा की क्रिया; २ देवता को उपहार—नैवेद्य—धरने की क्रिया; (भग; सूअ २, २, ५५; णाया १, १; ८; कप्प; औप)। °**चंचा** स्त्री [°**चञ्चा**] बलीन्द्र की राजधानी; (णाया २; इक)। °**मुह** पुं [°**मुख**] बन्दर, कपि; (पाअ)। °**यम्म** देखो °**कम्म**; (पउम ३७, ४६)।
बलि वि [**बलिन्**] १ बलवान्, बलिष्ठ; (सुपा ४५१; कुप्र २७७)। २ पुं. रामचन्द्र का एक सुभट; (पउम ५६, ३८)।
बलिअ वि [**दे**] १ पीन, मांसल, स्थूल, मोटा; (दे ६, ८८; उप १४२ टी; बृह ३)। २ क्रिवि. गाढ, बाढ, अतिशय, अत्यर्थ; "गाढं बाढं बलिअं घणिअं दढमइसएण अच्चत्थं" (पाअ; णाया १, १—पत्र ६४; भग ६, ३३)।
बलिअ वि [**बलिन्, बलिक**] १ बलवान्, सबल, पराक्रमी; "कत्थावि जीवो बलिओ कत्थवि कम्माइं हुंति बलियाइं" (प्रासू १३३), "एन अम्ह ताओ बलियदाइयपेल्लिओ इमं विसमं पल्लिं समस्सिओ" (महा; पउम ४८, ११७; सुपा २७५; औप)। २ प्राण वाला; (ठा ४, ३—पत्र २४६)।
बलिअ वि [**बलित**] जिसका बल उत्पन्न हुआ हो, सबल; (कुप्र २७७)। २ पुं. छन्द-विशेष; (पिंग)।
बलिअंक पुं [**बलिताङ्क**] छन्द-विशेष; (पिंग)।
बलिआ स्त्री [**दे. बलिका**] सूर्प, अन्न को तुषादि-रहित करने का एक उपकरण; (आवम)।

बलिट्ठ वि [**बलिष्ठ**] बलवान्, सबल; (प्रासू १६४)।

बलिद्द पुं [**दे. बलीवर्द**] बलध, वृषभ; "दो सारबलिद्दावि हु" (सुपा २३८)।

बलिमड्डा स्त्री [**दे**] बलात्कार; "अन्नह बलिमड्डाए गहिऊमयो सोम ! एकलियं" (उप ७२८ टी)।

बलिवद्द देखो **बलीवद्द**; (पउम ३३, ११६)।

बलिस न [**बडिश**] मछली पकड़ने का काँटा; (हे १, २०२)।

बलिस्सह पुं [**बलिस्सह**] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि, आर्य महागिरि का एक शिष्य; (कप्प)।

बलीअ वि [**बलीयस्**] अधिक बल वाला, बलिष्ठ; (अभि १०१)।

बलीवद्द पुं [**बलीवर्द**] बैल, वृषभ; (विपा १, २)।

बलुल्लड (अप) देखो **बल**=बल; (हे ४, ४३०)।

बले अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय:—१ निश्चय, निर्णय; २ निर्धारण; (हे २, १८५; कुमा)।

बल्ल न [**बाल्य**] बालत्व, बालकपन, शिशुता; (कुमा ३, ३५)। देखो **बाल**=बाल्य।

बव सक [**ब्रू**] बोलना, कहना। बवइ, बवए; (षड्)। देखो **बुव, बू**।

बव न [**बव**] ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध एक करण; (विसे ३३४८; सुज्ञनि ११; सुपा १०८)।

बव्वाड पुं [**दे**] दक्षिण हस्त; (दे ६, ८६)।

बहड वि [**बृहत्**] बड़ा, महान्। °**इच्च** न [°**आदित्य**] नगर-विशेष; (ती ३५)।

बहत्तरी देखो **बाहत्तरि**; (पव १०)।

बहप्पइ } देखो **बहस्सइ**; (हे १, १३८; २, ६६; १३७;
बहप्फइ } षड्; कुमा; सम्मत्त १३७)।

बहरिय देखो **बहिरिय**; "तालरवबहरियदियंतरं" (महा)।

बहल न [**दे**] पंक, कर्दम, कादा; (दे ६, ८६)। °**सुरा** स्त्री [°**सुरा**] पंक वाली मदिरा; (दे ५, २)।

बहल वि [**बहल**] १ निबिड, सान्द्र, निरंतर, गाढ; (गउड; हे २, १७७)। २ स्थूल, मोटा; (ठा ४, २; गउड)। ३ पुष्कल, अत्यन्त; (कप्पू)।

बहलिम पुंस्त्री [**बहलता**] १ स्थूलता, मोटाई; २ सातत्य, निरंतरता; (वज्जा ५२; गा ७५५)।

बहली स्त्री [**बहली**] १ देश-विशेष, भारतवर्ष का एक उत्तरीय देश; "तक्खसिलाइ पुरीए बहलीविसयावयंसभूयाए" (कुप्र २१२)। २ बहली देश की स्त्री; (णाया १, १—पत्र ३७; औप; इक)।

बहलीय वि [**बहलीक**] देश-विशेष में—बहली देश में—रहने वाला; (पण्ह १, १— पत्र १४)।

बहव देखो **बहु**; "काले समइक्कंते अइबहवे" (पउम ४१, ३६), "सोहग्गकप्पतरुवरपमुहतवे सा कुणइ बहवे" (सम्मत्त २१७), "आयंति बहवबेलगपल्लवुल्लासिणो भत्ति" (हि ५)।

बहस्सइ पुं [**बृहस्पति**] १ ज्योतिष्क देव-विशेष, एक महाग्रह; (ठा २, ३—पत्र ७७; सुज्ज २०—पत्र २६४)। २ सुराचार्य, देव-गुरु; (कुमा)। ३ पुष्य नक्षत्र का अधिष्ठाता देव; (सुज्ज १०, १२)। ४ राजनीति-प्रणेता एक ऋषि; ५ नास्तिक मत का प्रवर्तक एक विद्वान्; (हे २, १३७)। ६ एक ब्राह्मण, पुरोहित-पुत्र; ७ विपाकसूत्र का एक अध्ययन; (विपा १, १)। °**दत्त** पुं [°**दत्त**] देखो अंत के दो अर्थ; (विपा १, ५)।

बहि अ [**बहिस्**] बाहर; "अबहिलेसे परिव्वए" (आचा), "गामबहिम्मि य तं ठाविऊण गामंतरे पविट्ठो सो" (उप ६ टी)। °**हुत्त** वि [**दे**] बहिर्मुख; (गउड)।

बहिअ वि [**दे**] मथित, विलोडित; (षड्)।

बहिं देखो **बहि**; (आचा; उव)।

बहिणिआ } स्त्री [**भगिनी**] बहिन; (अभि १३७; कप्पू;
बहिणी } पाअ; पउम ६, ६; हे २, १२६; कुमा)। २ सखी, वयस्या; (संक्षि ४७)। °**तणअ** पुं [°**तनय**] भगिनी-पुत्र; (दे)। °**वइ** पुं [°**पति**] बहनोई; (दे)। देखो **भइणी**।

बहित्ता अ [**बहिस्तात्**] बाहर; (सुज्ज ६)।

बहिद्धा अ [**दे**] १ बाहर; २ मैथुन, स्त्री-संभोग; (हे २, १७४; ठा ४, १—पत्र २०१)।

बहिया अ [**बहिस्, बहिस्तात्**] बाहर; (विपा १,१; आचा; उवा; औप)।

बहिर वि [**बाह्य**] बहिर्भूत, बाहर का; (प्राकृ ३८)।

बहिर वि [**बधिर**] बहरा, जो सुन न सकता हो वह; (विपा १, १; हे १, १८७; प्रासू १४३)।

बहिरिय वि [**बधिरित**] बधिर किया हुआ; (सुर २, ७५)।

बहु वि [**बहु**] १ प्रचुर, प्रभूत, अनेक, अनल्प; (ठा ३, १; भग; प्रासू ४१; कुमा; श्रा २७)। स्त्री—°**हुई**; (षड्; प्राकृ २८)। २ क्रिवि. अत्यन्त, अतिशय; (कुमा ५, ६६;

काल) । °उदग पुं [°उदक] वानप्रस्थ का एक भेद; (औप) । °चूड पुं [°चूड] विद्याधर वंश का एक राजा; (पउम ५, ४६) । °जंपिर वि [°जल्पितृ] वाचाट, बकवादी; (पाअ) । °जण पुं [°जन] अनेक लोग; (भग)। २ न. आलोचना का एक प्रकार; (ठा १०) । °णड देखो °नड; (राज) । °णाय न [°नाद] नगर-विशेष; (पउम ५५, ५३) । °देसिअ वि [°देश्य] कुछ ज्यादः, थोड़ा बहुत; (आचा २, ५, १, २२) । °नड पुं [°नट] नट की तरह अनेक भेष को धारण करने वाला; (आचा) । °पडिपुण्ण, °पडिपुन्न वि [°परिपूर्ण] पूरा पूरा; (ठा ६; भग) । °पढिय वि [°पठित] अति शिक्षित, अतिशय शिक्षित; (णाया १, १४) । °पलावि वि [°प्रलापिन्] बकवादी; (उप पृ ३३६) । °पुत्तिअ न [°पुत्रिक] बहुपुत्रिका देवी का सिंहासन; (निर १, ३) । °पुत्तिआ स्त्री [°पुत्रिका] १ पूर्णभद्र-नामक यक्षेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ४, १; णाया २) । २ सौधर्म देवलोक की एक देवी; (निर १, ३) । °प्पएस वि [°प्रदेश] प्रचुर प्रदेश—कर्म-दल—वाला; (भग) । °फोड वि [°स्फोट] बहु-भक्षक; (ओघभा १६१) । °भंगिय न [°भङ्गिक] दृष्टिवाद का सूत्र-विशेष; (सम १२८) । °मय वि [°मत] १ अत्यन्त अभीष्ट; (जीव १) । २ अनुमोदित, संमत, अनुमत; (काप्र १७६; सुर ४, १८८) । °माइ वि [°मायिन्] अति कपटी; (आचा) । °माण पुं [°मान] अतिशय आदर; (आवम; पि ६००; नाट—विक्र ५) । °माय वि [°माय] अति कपटी; (आचा) । °मुल्ल, °मोल्ल वि [°मूल्य] मूल्यवान्, कीमती; (राज, षड्) । °रय वि [°रत] १ अत्यन्त आसक्त; (आचा) । २ जमालि का अनुयायी; ३ न. जमालि का चलाया हुआ एक मत—क्रिया की निष्पत्ति अनेक समयों में ही मानने वाला मत; (ठा १०; औप) । °रय न [°रजस्] खाद्य-विशेष, चिऊड़ा की तरह का एक प्रकार का खाद्य; (आचा २, १, १, ३) । °रव वि [°रव] १ प्रभूत यश वाला, यशस्वी; (सम ५१) । २ न. एक विद्याधर-नगर; (इक) । °रूवा स्त्री [°रूपा] सुरूप-नामक भूतेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ४, १; णाया २)। °लेव पुं [°लेप] चावल आदि के चिकने माँड़ का लेप; (पडि) । °वयण न [°वचन] बहुत्व-बोधक प्रत्यय; (आचा २, ४, १, ३) । °विह वि [°विध] अनेक प्रकार का, नानाविध; (कुमा; उव) । °विहीय वि [°विधिक] विविध, अनेक तरह का; (सुअनि ६४) । °संपत्त वि [°संप्राप्त] कुछ कम संप्राप्त; (भग) । °सच्च पुं [°सत्य] अहोरात्र का दशवाँ मुहूर्त; (सुज्ज १०, १३)। °सो अ [°शस्] अनेक वार; (उव; श्रा २७; प्रासू ४२; १५६; स्वप्न ५६) । °स्सुय वि [°श्रुत] शास्त्र-ज्ञ, शास्त्रों का अच्छा जानकार, पण्डित; (भग; सम ५१; ठा ६—पत्र ३५२; सुपा ६६४) । °हा अ [°धा] अनेकधा; (उव; भवि) ।

बहुअ } वि [बहु, °क] ऊपर देखो; (हे २, १६४;
बहुअय } कुमा; श्रा २७) ।

बहुई देखो बहु=ई ।

बहुग देखो बहुअ; (आचा) ।

बहुजाण पुं [दे] १ चोर, तस्कर; २ धूर्त, ठग; ३ जार, उपपति; (षड्) ।

बहुण पुं [दे] १ चोर, तस्कर; २ धूर्त; (दे ६, ६७) ।

बहुणाय वि [बाहुनाद] बहुनाद-नगर का; (पउम ५५, ५३) ।

बहुत्त वि [प्रभूत] बहुत, प्रचुर; (हे १, २३३) ।

बहुमुह पुं [दे. बहुमुख] दुर्जन, खल; (दे ६, ६२) ।

बहुराणा स्त्री [दे] खड्ग-धारा, तलवार की धार; (दे ६, ६१) ।

बहुरावा स्त्री [दे] शिवा, शृगाली; (दे ६, ६१) ।

बहुरिया स्त्री [दे] बुहारी, झाड़ू; (बृह १) ।

बहुल वि [बहुल] १ प्रचुर, प्रभूत, अनेक; (कुमा; श्रा २८)। २ बहुविध, अनेक प्रकार का; (आवम) । ३ व्याप्त; (सुपा ६३०) । ४ पुं. कृष्ण पक्ष; (पाअ) । ५ स्वनाम-ख्यात एक ब्राह्मण; (भग १५) ।

बहुला स्त्री [बहुला] १ गौ, गैया; (पाअ) । २ इस नाम की एक स्त्री; (उवा) । °वण न [°वन] मथुरा नगरी का एक प्राचीन वन; (ती ७) ।

बहुलि पुं [बहुलिन्] स्वनाम-ख्यात एक राज-पुत्र; (उप ६३७) ।

बहुली स्त्री [दे] माया, कपट, दम्भ; (सुपा ६३०) ।

बहुल्लिआ स्त्री [दे] बड़े भाई की स्त्री; (षड्) ।

बहुल्ली स्त्री [दे] कोड़ाचित शालभञ्जिका, खेलने की पुतली; (षड्) ।

बहुवी देखो बहुई; (हे २, ११३) ।

बहूअ वि [प्रभूत] बहुत, प्रचुर; (गउड) ।

बहेडय पुं [**बिभीतक**] १ बहेड़ा का पेड़; (हे १, ८८; १०५; २०६)। २ न. बहेड़ा का फल; (कुमा)।

बा° वि. ब. [**द्वा°, द्वि**] दो, दो की संख्या वाला । **°इस** (अप) देखो **°वीस**; (पिंग)। **°ईस** देखो **°वीस**; (पिंग)। **°णउइ** स्त्री [**°नवति**] बाणवे, ६२; (सम ६६; कम्म ६, २६) **°णउय** वि [**°नवत**] ६२ वाँ; (पउम ६२, २६)। **°णुवइ** देखो **°णउइ**; (रयण ७२)। **°याल, °यालीस** स्त्रीन [**°चत्वारिंशत्**] बेआलीस, चालीस और दो, ४२; (उव; नव २; भग; सम ६६; कप्प; औप), स्त्री—**°याला**; **°यालीसा**; (कम्म ६, ६; कप्प)। **°यालीसइम** वि [**°चत्वारिंशत्तम**] बेआलीसवाँ, ४२ वाँ; (पउम ४२, ३७)। **°र, °रस** त्रि. व. [**°दशन्**] बारह, १२; "बारभिक्खुपडिमधरो" (संबोध २२; कम्म ४, ५; १५; नव २०; त्रं ७; कप्प; जी १८; उवा)। **°रस** वि [**°दश**] बारहवाँ, १२ वाँ; (सुख २, १७)। **°रसंग** स्त्रीन [**°दशाङ्ग**] बारह जैन अंग-ग्रन्थ; (पि ४११). स्त्री—**°गी**; (राज)। **°रसम** वि [**°दश**] बारहवाँ; (सूअ २, २, २१; पव ४६; महा)। **°रसमासिय** वि [**°दशमासिक**] बारह मास का, बारह-मास-संबंधी; (कुप्र १४१)। **°रसय** न [**°दशक**] बारह का समूह; (आचा १५)। **°रसवरिसिय** वि [**°दशवार्षिक**] बारह वर्ष का; (मोह १०२; कुप्र ६०)। **°रसविह** वि [**°दशविध**] बारह प्रकार का; (नव ३०)। **°रसाह** न [**°दशाह, °दशाख्य**] १ बारहवाँ दिन; २ जन्म के बारहवें दिन किया जाता उत्सव; (णाया १, १; कप्प; औप; सुर ३, २५)। **°रसी** स्त्री [**°दशी**] बारहवीं तिथि, द्वादशी; (सम २६; पउम ११७, ३२; ती ७)। **°रसुत्तरसय** वि [**°दशोत्तरशत**] एक सौ बारहवाँ; (पउम ११२, २३)। **°रह** देखो **°रस=दशन्**; (हे १, २१६)। **°वट्ठि** स्त्री [**°षष्टि**] बासठ, ६२; (सम ७५; पंच ५, १८; सुर १३, २३८; देवेन्द्र १३७)। **°वण** (अप) देखो **°वन्न**; (पिंग)। **°वण्ण** देखो **°वन्न** ; (कुमा)। **°वत्तर** वि [**°सप्तत**] बहत्तरवाँ, ७२ वाँ; (पउम ७२, ३८)। **°वत्तरि** स्त्री [**°सप्तति**] बहत्तर, ७२; (सम ८३; भग; औप; प्रासू १२६)। **°वन्न** स्त्रीन [**°पञ्चाशत्**] बावन, पचास और दो, ५२; (सम ७१; महा), "बावन्नं होंति जिणभवणा" (सुख ६, १)। **°वन्न** वि [**°पञ्चाश**] बावनवाँ; (पउम ५२, ३०)। **°वीस** स्त्रीन [**°विंशति**] बाईस, २२; (भग; जी ३४), स्त्री—**°सा**; (पि ४४७)। **°वीस** वि [**°विंश**] बाईसवाँ, २२ वाँ; (पउम २०, ८२; पव ४६)। **°वीसइ** देखो **°वीस=विंशति**; (भग; पव १८६)। **°वीसइम** वि [**°विंशतितम**] १ बाईसवाँ, २२ वाँ; (पउम २२, ११०; अंत २६)। २ लगा तार दस दिन का उपवास; (णाया १, १—पत्र ७२)। **°वीसविह** वि [**°विंशतिविध**] बाईस प्रकार का; (सम ४०)। **°सट्ठ** वि [**°षष्ठ**] बासठवाँ, ६२ वाँ; (पउम ६२, ३७)। **°सट्ठि** स्त्री [**°षष्टि**] बासठ, ६२; (सम ७५; पिंग)। **°सी, °सीइ** स्त्री [**°अशीति**] बयासी, ८२; (नव २; सम ८६; कप्प; कम्म ५, १७)। **°सीइम** वि [**°अशीतितम**] बयासीवाँ; ८२ वाँ; (पउम ८२, १२२)। **°हत्तर** (अप) देखो **°हत्तरि**; (सण)। **°हत्तरि** स्त्री [**°सप्तति**] बहत्तर, ७२; (कप्प; कुमा; सुपा ३१६)।

बाअ पुं [**दे**] बाल, शिशु; (षड्)।

बाइया स्त्री [**दे**] मा, माता; गुजराती में 'बाई'; (कुप्र ८७)।

बाउल्लया, बाउल्लिआ, बाउल्ली स्त्री [**दे**] पञ्चालिका, पुतली; "आलिहिय-भित्तिबाउल्लयं व न हु भुंजिउं तरइ" (वज्जा ११८; कप्पू; दे ६, ६२)।

बाउस देखो **बउस**; (पिंड २४; ओघ ३४८)।

बाउसिय वि [**बाकुशिक**] 'बकुश' चारित्र वाला; (सुख ६, १)।

बाउसिया स्त्री [**बकुशिका**] 'बकुश' चारित्र वाली; (णाया १, १६—पत्र २०६)।

बाढ क्रिवि [**बाढ**] १ अतिशय, अत्यंत, घना; (उप ३२०; पाअ; महा)। **°क्कार** पुं [**°कार**] स्वीकार-सूचक उक्ति; (विसे ५६५)।

बाण पुं [**दे**] १ पनस वृक्ष, कटहर का पेड़; २ वि. सुभग; (दे ६, ६७)।

बाण पुंस्त्री [**बाण**] १ वृक्ष-विशेष, कटसरैया का गाछ; (पण्ण १७—पत्र ५२६; कुमा)। २ पुं. शर, बाण; (कुमा; गउड)। ३ पाँच की संख्या; (सुर १६, २४६)। **°वत्त** न [**°पात्र**] तूणीर, शरधि; (मे १, १८)।

बाध देखो **बाह=बाध्**। कवकृ—**बाधीअमाण**; (पि ५६३)।

बाधा स्त्री [**बाधा**] विरोध; (धर्मसं ११७)।

बाधिय वि [**बाधित**] विरोध वाला, प्रमाण-विरुद्ध ; (धर्मसं २५६)।

बाम्हण देखो **बम्हण**; (हे १, ६७; षड्)।

बाय न [**बाक**] बक-समूह ; (श्रा २३)।

बायर वि [**बादर**] १ स्थूल, मोटा, अ-सूक्ष्म ; (पगह १, १; पव १६२ ; दे ४४) २ नवाँ गुण-स्थानक ; (कम्म २, ३; ५ ; ७)। °**नाम** न [°**नामन्**] कर्म-विशेष, स्थूलता-हेतु कर्म; (सम ६७)।

बार न [**द्वार**] दरवाजा; (हे १, ७६)।

बारगा स्त्री [**द्वारका**] स्वनाम-प्रसिद्ध नगरी, जो आजकल भी काठियावाड़ में 'द्वारका' के ही नाम से प्रसिद्ध है; (उत्त २२, २२; २७)।

बारवई स्त्री [**द्वारवती**] १ ऊपर देखो; (सम १५१; णाया १, ५; उप ६४८ टी)। २ भगवान् नेमिनाथ की दीक्षा-शिबिका; (विचार १२६)।

बाल पुं [**बाल**] १ बाल, केश; (उप ८३४)। २ बालक, शिशु; (कुमा; प्रासू ११६)। ३ त्रि. मूर्ख, अज्ञानी; (पात्र)। ४ नया, नूतन; (कप्पू)। ५ पुं. स्वनाम-ख्यात एक विद्याधर राजा; (पउम १०, २१)। ६ वि. असंयत, संयम-रहित; (ठा ४, ३)। °**कइ** पुं [°**कवि**] तरुण कवि, नया कवि; (कप्पू)। °**क्क** पुं [°**र्क**] उदित होता सूर्य; (कुमा)। °**ग्गाह** पुं [°**ग्राह**] बालक की सार-सम्हाल करने वाला नौकर; (सुर १, १६२)। °**ग्गाहि** पुं [°**ग्राहिन्**] वही पूर्वोक्त अर्थ; (णाया १, २—पत्र ८४)। °**घाय** वि [°**घात**] बाल-हत्या करने वाला; (णाया १, २; १८)। °**तव** पुंन [°**तपस्**] १ अज्ञानी की तपश्चर्या; (भग; औप)। २ त्रि. अज्ञान-पूर्वक तप करने वाला, (कम्म १, ५६)। °**तवस्सि** वि [°**तपस्विन्**] अज्ञान-पूर्वक तप करने वाला, मूर्ख तपस्वी; (पि ४०५)। °**पंडिअ** वि [°**पण्डित**] आंशिक त्याग करने वाला, कुछ अंश में त्यागी और कुछ में अ-त्यागी; (भग)। °**बुद्धि** वि [°**बुद्धि**] अनभिज्ञ; (धण ५०)। °**मरण** न [°**मरण**] अ-विरत दशा का मरण, अ-संयमी की मौत; (भग; सुपा ३५७)। °**वियण** पुंस्त्री [°**व्यजन**] चामर; (णाया १, ३), स्त्री—"उवगाहाओ बालवी(? वि)अणी" (ठा ५.१—पत्र ३०३)। °**हार** पुं [°**धार**] बालक की सार-सम्हाल करने वाला नौकर; (सुपा ४५८)।

बाल देखो **बल**। °**पण**, °**न्न** वि [°**ज्ञ**] बल को जानने वाला; (आचा १, २, ५, ५; आचा)।

बाल न [**बाल्य**] बालत्व, बालपन, मूर्खता; (उत्त ७, ३०)। देखो **बल्ल**।

बालअ देखो **बाल**=बाल; (गा १२६)।

बालअ पुं [**दे**] वणिक्-पुत्र; (दे ६, ६२)।

बालग्गपोइआ स्त्री [**दे**] १ जल-मन्दिर, तलाव आदि में बनवाया जाता छोटा प्रासाद; २ वलभी, अट्टालिका; (उत्त ६, २४)।

बाला स्त्री [**बाला**] १ कुमारी, लड़की; (कुमा)। २ मनुष्य की दश अवस्थाओं में पहली दशा, दश वर्ष तक की अवस्था; (तंदु १६)। ३ छन्द-विशेष; (पिंग)

बालालुंची स्त्री [**दे**] तिरस्कार, अवहेलना; (सुपा १४०)।

बालि वि [**बालिन्**] बाल-प्रधान, सुन्दर केश वाला; (अणु; बृह १)।

बालिआ स्त्री [**बालिका**] बाला, कुमारी, लड़की; (प्रासू ५१; महा)।

बालिआ स्त्री [**बालता**] १ बालकपन, शिशुता; (भग)। २ मूर्खता, बेवकूफी; "बिइया मंदस्सा बालिया" (आचा)।

बालिस वि [**बालिश**] मूर्ख, बेवकूफ; (पात्र; धण २३)।

बाह सक [**बाध्**] १ विरोध करना। २ रोकना। ३ पीड़ा करना। ४ विनाश करना। बाहइ, बाहए; (पंचा ५, १५; हे १, १८७; उव), बाहंति; (कुप्र ६८)। कवकृ—**बाहिज्जंत**, **बाहीअमाण** ; (पउम १८, १६; सुपा ६४५; अभि २४४)। कृ—**बाहणिज्ज**; (कप्पू)।

बाह पुं [**बाष्प**] अश्रु, आँसू; (हे २, ७०; पात्र; कुमा)।

बाह पुं [**बाध**] विरोध; (भास ३४)।

बाह देखो **बाढ**; (प्रयौ ३७)।

बाह पुं [**बाहु**] हाथ, भुजा ; (संदि २)।

बाहग वि [**बाधक**] १ रोकने वाला; (पंचा १, ४६)। २ विरोधी; "अब्भुवगयबाहगा नियमा" (श्रावक १६२)।

बाहड पुं [**बाहड, वाग्भट**] राजा कुमारपाल का स्वनाम-प्रसिद्ध मन्त्री; (कुप्र ६)।

बाहण न [**बाधन**] १ बाधा, विरोध; (धर्मसं १२७६)। २ विराधन; (पंचा १६, ५)।

बाहणा स्त्री [**बाधना**] ऊपर देखो; (धर्मसं १११)।

बाहर देखो **बाहिर**; (आचा)।

बाहल पुं [**बाहल**] देश-विशेष; (आवम)।

बाहल्ल न [**बाहल्य**] स्थूलता, मोटाई; (सम ३५; ठा ८—पत्र ४४०; औप) ।
बाहा स्त्री [**बाधा**] १ हरकत, हरज; २ विरोध; (सुपा ११६) । ३ पीड़ा, परस्पर संश्लेष से होने वाली पीड़ा; (जं १; भग १४, ८) ।
बाहा स्त्री [**बाहु**] हाथ, भुजा; (हे १, ३६; कुमा; महा; उवा; औप) ।
बाहा स्त्री [**दे. बाहा**] नरकावास-श्रेणी; (देवेन्द्र ७७) ।
बाहि } अ [**बाहिस्**] बाहर; (सुज्ज १६—पत्र २७१;
बाहिं } महा; आचा; कुमा; हे २, १४०; पि ४८१) ।
बाहिज्ज न [**बाधिर्य**] बधिरता, बहरापन; (विसे २०८) ।
बाहिर अ [**बहिस्**] बाहर; (हे २, १४०; षाअ; आचा; उव) । °**ओ** अ [°**तस्**] बाहर से; (कप्प) ।
बाहिर वि [**बाह्य**] बाहर का; (आचा; ठा २, १—पत्र ५५; भग २, ८ टी) । °**उद्धि** पुं [°**ऊर्द्धिन्**] कायोत्सर्ग का एक दोष, दोनों पार्ष्णि मिला कर और पैर का फैला कर किया जाता कायोत्सर्ग; (चेइय ४८६) ।
बाहिरंग वि [**बहिरङ्ग**] बाहर का, बाह्य; (सूअ २, १, ४२) ।
बाहिरिय वि [**बाहिरिक, बाह्य**] बाहर का, बाहर से संबन्ध रखने वाला; (सम ८३; णाया १, १; पिंड ६३६; औप; कप्प) ।
बाहिरिया स्त्री [**बाहिरिका**] किले के बाहर की गृह-पङ्क्ति, नगर के बाहर का मुहल्ला; (सूअ २, ७, १; स ६६) ।
बाहिरिल्ल वि [**बाह्य**] बाहर का; (भग; पि ५६५) ।
बाहु पुंस्त्री [**बाहु**] १ हाथ, भुजा; (हे १, ३६; आचा; कुमा) । २ पुं. भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र, बाहुबलि; (कुप्र ३१०) । °**बलि** पुं [°**बलि**] १ भगवान् आदिनाथ का एक पुत्र, तक्षशिला का एक राजा; (सम ६०; पउम ४, ५१; उव) । २ बाहुबलि के प्रपौत्र का पुत्र; (पउम ५, ११) । °**मूल** न [°**मूल**] कक्षा, बगल; (कप्पू) ।
बाहुअ पुं [**बाहुक**] स्वनाम-ख्यात एक ऋषि; (सूअ १, ३, ४, २)।
बाहुडिअ वि [**दे**] लज्जित, शरमिंदा; (सुपा ४७४) ।
बाहुया स्त्री [**बाहुका**] त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष; (राज) ।
बाहुलग देखो **बाहु** ; (तंदु ३६) ।
बाहुलेय पुं [**बाहुलेय**] गो-वत्स, बैल, ऋषभ; (आवम) ।
बाहुल्ल न [**बाहुल्य**] बहुलता, प्रचुरता; (पिंड ५६; भग; सुपा २७; उप ६०७) ।
बाहुल्ल वि [**बाष्पवत्**] अश्रु वाला; (कुमा; सुपा ४६०)।
बि वि. ब. [**द्वि**] दो, २; "बिन्नि" (हे ४, ४१८; नव ४; ठा २, २; कम्म ४, ३, १०; सुख १, १४) । °**अडि** पुं [°**अटिन्**] एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष; (सुज्ज २०)। °**दल** न [°**दल**] चना आदि वह धान्य जिसके दो टुकड़े बराबर के होते हैं; "जइ बिदलं सुलीयं" (वि ३) । °**याल** देखो **बा-याल**; (कम्म ६, २८) । °**यालसय** पुंन [°**च-त्वारिंशच्छत**] एक सौ बेयालीस, १४२; (कम्म २, २६) । °**विह** वि [°**विध**] दो प्रकार का; (पिंग) । °**सट्ठि** स्त्री [°**षष्टि**] बासठ, ६२; (सुज्ज १०, ६ टी) । °**सत्तरि**, °**सयरि** स्त्री [°**सप्तति**] बहत्तर, ७२; (पव १६; जीवस २०६; कम्म ३, ५) ।
बि° } वि [**द्वितीय**] दूसरा; (कम्म ३, १६; पिंग) ।
बिअ } °**कसाय** पुं [°**कषाय**] अप्रत्याख्यानावरण-नामक कषाय; (कम्म ४, ५६) ।
बिअ न [**द्विक**] दो का समुदाय, युग्म, युगल; (भग; कम्म १, ३३; प्रासू १६) ।
बिआया स्त्री [**दे**] कीट-विशेष, संलग्न रहने वाला कीट-द्वय; (दे ६, ६३) ।
बिइअ देखो **बिइज्ज**; (हे १, ५; पव १६४) ।
बिइआ देखो **बीआ**; (राज) ।
बिइज्ज वि [**द्वितीय**] १ दूसरा; (हे १, २४८; प्रासू ५६)। २ सहाय, मदद करने वाला; (पाअ; सुर ३, १४) ।

"जे दुहियम्मि न दुहिया, आवइपत्त बिइज्जया नेव ।
पहुणो न ते उ भिच्चा, धुत्ता परमत्थओ नेया"
(सुर ७, १४५) ।

बिउण वि [**द्विगुण**] दुगुना; (हे १, ६४; २, ७६; गा २८६) । °**यर** वि [°**कारक**] दुगुना करने वाला; (भवि)।
बिउण सक [**द्विगुणय्**] दुगुना करना । बिउणेइ; (पि ५५६) ।
बिंट न [**वृन्त**] फलादि का बन्धन; "बंधणं बिंट" (पाअ) । °**सुरा** स्त्री [°**सुरा**] मदिरा, दारू; "बिंटसुरा पिट्ठखउरिया मइरा" (पाअ) ।
बिंत देखो **ब्रू**=**ब्रू** ।
बिंदिय वि [**द्वीन्द्रिय**] जिसको त्वचा और जीभ ये दो ही इन्द्रियाँ हों वह; (औप) ।
बिंदु पुंन [**बिन्दु**] १ अल्प अंश; २ बिन्दी, शून्य, अनुस्वार; ३ दोनों भ्रू का मध्य भाग; ४ रेखागणित का एक चिह्न; "बिंदुओ,

बिंदु'' (हे १, ३४; कप्प; उप १०२२; स्वप्न ३६; कम; कुमा)। °कला स्त्री [°कला] अनुस्वार, बिन्दी; (सिरि १६६)। °सार न [°सार] १ चौदहवाँ पूर्व, जैन ग्रन्थांश-विशेष; (सम २६; विसे ११२६)। २ पुं. मौर्य वंश का एक राजा, राजा चन्द्रगुप्त का पुत्र; (विसे ८६२)।

बिंदुइअ वि [बिन्दुकित] बिन्दु-युक्त, बिन्दु-विलिप्त; (पाअ; गउड)।

बिंदुइज्जंत वि [बिन्दूयमान] बिन्दुओं से व्याप्त होता; (से ११, १२५)।

बिंद्रावण न [वृन्दावन] मथुरा के पास का एक वैष्णव-तीर्थ; (प्राकृ १७)।

बिंब सक [बिम्बू] प्रतिबिम्बित करना। कर्म—बिंबिज्जइ; (सुक्त ४६)।

बिंब न [बिम्ब] १ प्रतिमा, मूर्त्ति; (कुमा)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)। ३ न. बिम्बीफल, कुन्दरून का फल; (णाया १, ८—पत्र १२६; पाअ, कुमा; दे २, ३६)। ४ प्रतिबिम्ब, प्रतिच्छाया; ५ अर्थ-शून्य आकार, ''अगयं जणं पस्सति बिंबभूयं'' (सूअ १, १३, ८)। ६ सूर्य तथा चन्द्र का मण्डल; (गउड; कप्पू)।

बिंबवय न [दे] फल-विशेष, भिलावाँ; ''बिंबयं भल्लायं'' (पाअ)।

बिंबिसार देखो भिंभिसार; (अंत)।

बिंबी स्त्री [बिम्बी] लता-विशेष, कुन्दरून का गाछ; (कुमा)। °फल न [°फल] कुन्दरुन का फल; (सुपा २६३)।

बिंबोवणय न [दे] १ डांभ; २ विकार; ३ ओसीसा, उच्छी-र्षक, (दे ६, ६८)।

बिंह सक [बृंह] पोषण करना। कृ—देखो बिंहणिज्ज।

बिंहणिज्ज वि [बृंहणीय] पुष्टि-जनक; (ठा ६—पत्र ३७५; णाया १, १—पत्र १६)।

बिंहिअ वि [बृंहित] पुष्ट, उपचित; (हे १, १२८)।

बिग्गाइआ } स्त्री [दे] कीट-विशेष, संलग्न रहता कीट-युग्म;
बिग्गाइ } गुजराती में 'बगाई'; (दे ६, ६३)।

बिज्जउर न [बीजपूर] फल-विशेष, एक तरह का नीबू; ''बि-ज्जउरबिब्भिंडाइं कुणइ पिहाणाइं मज्झत्थ'' (सुपा ६३०)।

बिज्जय (अप) देखो बिइज्ज, (भवि)।

बिट्ट पुं [दे] बेटा, लड़का, पुत्र; (चंड)

बिट्टी स्त्री [दे] बेटी, पुत्री, लड़की; (चंड; हे ४, ३३०)।

बिट्ठ वि [दे, विष्ट] बैठा हुआ, उपविष्ट; (ओघ ४७१)।

बिडाल पुं [बिडाल] मार्जार, बिल्ला; (पि २४१)।

बिडालिआ } स्त्री [बिडालिका, °ली] बिल्ली, मार्जारी;
बिडाली } (सम्मत्त १२२; पि २४१)। देखो बिरा-लिआ।

बिडिस देखो बडिस; (उप १४२ टी)।

बिदिय देखो बिइअ; (उप २७६)।

बिन्ना स्त्री [बेन्ना] भारत की एक नदी; (पिंड ५०३)।

बिब्बोअ पुं [बिब्बोक] १ स्त्री की शृंगार-चेष्टा-विशेष, इष्ट अर्थ की प्राप्ति होने पर गर्व से उत्पन्न अनादर-क्रिया; (पण्ह २, ४—पत्र १३१; णाया १, ८—पत्र१४२; भग १०६)। २ न. उपधान, ओसीसा; ''सयणीअं तूलिअं सबिब्बोअं'' (गच्छ ३, ८)।

बिब्बोइअ न [बिब्बोकित] स्त्री की शृंगार-चेष्टा का एक भेद; (पण्ह २, ४—पत्र १३१)।

बिब्बोयण न [दे] उपधान, ओसीसा; (णाया १, १—पत्र १३)।

बिभेलय देखो बहेडय; (पण्ण १—पत्र ३१)।

बिराड पुं [बिडाल] १ पिंगल-प्रसिद्ध मध्य-लघुक पाँच मात्रा वाला अक्षर-समूह; २ छन्द-विशेष; (पिंग)।

बिराल देखो बिडाल; (सुर १, १८)।

बिरालिआ } देखो बिडालिआ; (सम्मत्त १२२; पाअ)।
बिराली } २ भुजपरिसर्प-विशेष, हाथ से चलने वाला एक प्रकार का प्राणी; (सूअ २, ३, २५)।

बिरुद न [बिरुद] इल्काब, पदवी; (सम्मत्त १४१)।

बिल न [बिल] १ रन्ध्र,विवर, साँप आदि जन्तुओं के रहने का स्थान; (विपा १, ७; गउड)। २ कूप, कुआँ; (राय)। °कोलीकारक वि [दे, °कोलीकारक] दूसरे को व्यामुग्ध करने के लिए विस्वर वचन बोलने वाला; (पण्ह १, ३—पत्र ४४)। °पंतिया स्त्री [°पङ्क्तिका] खान की पद्धति; (पण्ह २,५ —पत्र १५०)।

बिलाड } देखो बिडाल; (भग; पि २४१)।
बिलाल }

बिलालिआ देखो बिरालिआ; (पि २४१)।

बिल्ल पुं [बिल्व] १ वृक्ष-विशेष, बेल का पेड़; (पण्ण १; उप १०३१ टी)। २ बेल का फल; (पाअ)।

बिल्लल पुं [बिल्वल] १ अनार्य देश-विशेष; २ उस देश में रहने वाली मनुष्य-जाति; (पण्ह १, १—पत्र १४)। देखो चिल्लल=चिल्वल।

बिस न [**बिस**] कमल आदि के नाल का तन्तु, मृणाल; (णाया १, १३; कुमा; पाअ)। °**कंठी** स्त्री [°**कण्ठी**] बलाका, बक पक्षी की एक जाति; (दे ६, ६३)। देखो **भिस=बिस**।

बिसि देखो **बिसी**; (दे १, ८३)।

बिसिणी स्त्री [**बिसिनी**] कमलिनी, कमल का गाछ; (पि २०६)।

बिसी स्त्री [**बृषी**] ऋषि का आसन; (दे १, ८३; पि २०६)।

बिह अक [**भी**] डरना। बिहेइ; (प्राकृ ६४; पि ५०१)।

बिह वि [**बृहत्**] बड़ा, महान्। °**पणर** पुं [°**नल**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

बिहप्पइ / **बिहप्फइ** / **बिहस्सइ** देखो **बहस्सइ**; (हे २, १३७; १,१३८; २, ६६; षड्; कुमा)।

बिहिअ देखो **विहिअ**; (प्राकृ ८)।

बिहेलग देखो **बिभेलय**; (वस ५, २, २४)।

बीअ देखो **बिइअ**; (हे १, ५; २, ७६; सुर १, ३८; सुपा ४८५)।

बीअ न [**बीज**] १ बीज, बीया; "वाउव्वबीअं इक्कं नासइ भारं गुडस्स जह सहसा" (प्रासू १५१; आचा; जी १३; औप)। २ मूल कारण; "सारीरमाणसाणेयदुक्खबीयभूयकम्मवणदहण-सहं" (महा)। ३ वीर्य, शरीरान्तर्गत सप्त धातुओं में से मुख्य धातु, शुक्र; (सुपा ३६०; वव ६)। ४ 'ह्रीं' अक्षर; (सिरि १९६)। °**बुद्धि** वि [°**बुद्धि**] मूल अर्थ को जानने से शेष अर्थों को निज बुद्धि से स्वयं जानने वाला; (औप)। °**मंत** वि [°**वत्**] बीज वाला; (णाया १, १)। °**रुइ** स्त्री [°**रुचि**] एक ही पद से अनेक पद और अर्थों के अनु-संधान द्वारा फैलने वाली रुचि; २ वि. उक्त रुचि वाला; (पराण १)। °**रुह** वि [°**रुह**] बीज से उत्पन्न होने वाली वनस्पति; (पराण १)। °**वाय** पुं [°**वाप**] क्षुद्र जन्तु-विशेष; (राज)। °**सुहुम** न [°**सूक्ष्म**] छिलके का अग्र भाग; (कप्प)।

बीअऊरय न [**बोजपूरक**] फल-विशेष, एक तरह का नीबू; (मा ३६)।

बीअजमण न [**दे**] बीज मलने का खल—खलिहान; (दे ६, ९३)।

बीअण पुं [**दे**] नीचे देखो; (दे ६, ९३ टी)।

बीअय पुंन [**दे. बीजक**] वृक्ष-विशेष, असन वृक्ष, विजयसार का गाछ; (दे ६, ९३; पाअ)।

बीआ स्त्री [**द्वितीया**] १ तिथि-विशेष, दूज; (सम २६; श्रा २६; रयण २; णाया १, १०; सुपा १७१)। २ द्वितीय विभक्ति; (चेइय ५०६)।

बीज देखो **बीअ=बीज**; (कुमा; पण्ह २, १—पत्र ९६)।

बीडग न [**वीटक**] बीड़ा, पान का बीड़ा, सज्जित ताम्बूल; (सुपा ३३६)।

बीडि / **बीडी** स्त्री [**बीटि, °टी**] ऊपर देखो; "बिल्लदलबीडीओ कीसेवि मुहम्मि पक्खिवइ" (धर्मवि १४०)।

बीभच्छ / **बीभत्थ** वि [**बीभत्स**] १ घृणोत्पादक, घृणा-जनक; २ भयंकर, भय-जनक; (उवा; तंदु ३८; णाया १, २; संबोध ४४)। ३ पुं. रावण का एक सुभट; (पउम ५६, २)।

बीयत्तिय वि [**दे. बीजयितृ**] बीज बोने वाला, वपन करने वाला; २ पुं. पिता; "बीयं बीयत्तियस्सेव" (सुपा ३६०; ३६१)।

बीलय पुं [**दे**] ताडंक, कर्णभूषण-विशेष, कान का एक गहना; (दे ६, ९३)।

बीह अक [**भी**] डरना। बीहइ, बीहेइ; (हे ४, ५३; महा; पि २१३)। वकृ—**बीहंत**; (ओघभा १६; उप ७६८ टी; कुमा)। कृ—**बीहियव्व**; (स ६८२)।

बीहच्छ देखो **बीभच्छ**; (पि ३२७)।

बीहण / **बीहणग** / **बीहणय** वि [**भीषण, °क**] भय-जनक, भयंकर; (पि २१३; पण्ह १, १; पउम ३५, ५४)।

बीहविय वि [**भीषित**] डराया हुआ; (सम्मत्त ११८)।

बीहिअ वि [**भीत**] १ डरा हुआ; (हे ४, ५३)। २ न. भय, डरना; "न य बीहिअं ममावि हु" (श्रा १४)।

बीहिर वि [**भेतृ**] डरने वाला; (कुमा ६, ३५)।

बुइअ वि [**उक्त**] कथित; (सूअ १, २, २, २४; १, १४, २५; पण्ह २, २)।

बुंदि पुंस्त्री [**दे**] १ चुम्बन; २ सूकर, सूअर; (दे ६, ९८)।

बुंदि स्त्री [**दे**] शरीर, देह; "इह बुंदिं चइत्ताणं तत्थ गंतूण सिज्झइ" (ठा १ टी—पत्र २४; सुज्ज २०; तंदु १३; सुपा ६५६; धम्म ६ टी; पाअ)। देखो **बोंदि**।

बुंदिणी स्त्री [**दे**] कुमारी-समूह; (दे ६, ९४)।

बुंदीर पुं [**दे**] १ महिष, भैंसा; २ वि. महान्, बड़ा; (दे ६, ९८)।

बुंध न [बुध्न] १ वृक्ष का मूल; २ कोई भी मूल, मूलमात्र; (हे १, २६; षड्)।

बुंबा स्त्री [दे] चिल्लाहट, पुकार; (सुपा ५६५)।

बुंबु पुं [दे] ऊपर देखो; (कप्प ३१)।

बुंबुअ न [दे] वृन्द, यूथ, समूह; (दे ६, ६४)।

बुक्क अक [गर्ज्, बुक्क्] गर्जन करना, गरजना। बुक्कइ; (हे ४, ६८)।

बुक्क अक [भष्, बुक्क्] श्वान का भूँकना। बुक्कइ; (षड्)।

बुक्क पुंन [दे] १ तुष, छिलका; (सुख १८, ३७)। २ वाद्य-विशेष; "बुक्कतबुक्कसंबुक्कसत्तु क्कडं" (सुपा ५०)।

बुक्कण पुं [दे] काक, कौआ; (दे ६, ६४; पाअ)।

बुक्कस देखो **बोक्कस**; (राज)।

बुक्का स्त्री [दे] १ मुष्टि; (दे ६, ६४; पाअ)। २ व्रीहि-मुष्टि; (दे ६, ६४)। ३ वाद्य-विशेष; "ठक्काडक्कहुडुक्कासं-बुक्काकरडिपमिईयं आउज्जायं" (सुपा १६५)।

बुक्का स्त्री [गर्जना] गर्जन, गर्जारव; (पउम ६, १०८; गउड)।

बुक्कार पुं [दे. बुक्कार] गर्जन, गर्जना; (पउम ७, १०५; गउड)।

बुक्कासार वि [दे] भीरु, डरपोक; (दे ६, ६५)।

बुक्किअ वि [गर्जित] जिसने गर्जना की हो वह; "अह बुक्किआ तुह भडा" (कुमा)।

बुज्झ सक [बुध्] १ जानना, ज्ञान करना, समझना। २ जागना। बुज्झइ; (उव)। भूका—बुज्झिंसु; (भग)। भवि—बुज्झिहिइ; (औप)। वकृ—बुज्झंत, बुज्झमाण; (पिंग; आचा)। संकृ—बुज्झा; (हे २, १५)। कृ—बुज्झ, बोद्धव्व, बोधव्व; (पिंग; कुमा; नव २३; भग; जी २१)।

बुज्झविय } वि [बोधित] १ जिसको ज्ञान कराया गया **बुज्झाविअ** } हो वह; २ जगाया गया; (कुप्र ६४; सुपा ४२५; प्राकृ ६८)।

बुज्झिअ वि [बुद्ध] ज्ञात, विदित; (पाअ)।

बुज्झिर वि [बोद्धृ] १ जानने वाला; २ जागने वाला; (प्राकृ ६८)।

बुडबुड अक [बुडबुडय्] बुडबुड आवाज करना; "सुरा जहा बुडबुडेइ अव्वत्त" (चेइय ४६२)।

बुड्ड अक [ब्रुड्, मस्ज्] डूबना। बुड्डइ; (हे ४, १०१; उव; कुमा; भवि)। भवि—बुड्डोसु (अप); (हे ४, ४२३)। वकृ—बुड्डंत, बुड्डमाण; (कुमा; उप १०३१ टी)। प्रयो, वकृ—बुड्डावंत; (संबोध १५)।

बुड्ड वि [ब्रुडित, मग्न] डूबा हुआ, निमग्न; (धम्म १२ टी; गा ३७; रंभा २३; सुर १०, १८६; भवि), "वयबुड्डमंड-गाई" (पव ४ टी)।

बुड्डण न [ब्रुडन] डूबना; (सं ३, २; कप्पू)।

बुड्डिर पुं [दे] महिष, भैंसा; (षड्)।

बुड्ढ वि [वृद्ध] बूढ़ा; (पिंग)। स्त्री—°ड्ढा, °ड्ढी; (काप्र १६७; सिरि १७३)।

बुण्ण वि [दे] १ भीत, डरा हुआ; २ उद्विग्न; (दे ७, ६४ टी)।

बुत्ती स्त्री [दे] ऋतुमती स्त्री; (दे ६, ६४)।

बुद्ध वि [बुद्ध] १ विद्वान्, पण्डित, ज्ञात-तत्त्व; (सम १; उप ६१२ टी; श्रा १२; कुप्र ४०; श्रु १)। २ जागा हुआ, जागृत; (सुर ६, २४३)। ३ भूत, भविष्य और वर्तमान का जानकार; (चेइय ७१३)। ४ विज्ञात, विदित; (ठा ३, ४)। ५ पुं. जिन-देव, अर्हन्, तीर्थंकर; (सम ६०)। ६ बुद्धदेव, भगवान् बुद्ध; (पाअ; दे ७, ५१; उर ३, ७; कुप्र ४४०; धर्मसं ६७२)। ७ आचार्य, सूरि; (उत्त १, १७)। °पुत्त पुं [°पुत्र] आचार्य-शिष्य; (उत्त १, ७)। °बोहिय वि [°बोधित] आचार्य-बोधित; (नव ४३)। °माणि वि [°मानिन्] निज को पण्डित मानने वाला; (सूअ १, ११, २५)। °लय पुंन [°लय] बुद्ध-मन्दिर; (कुप्र ४४२)।

बुद्ध वि [बौद्ध] १ बुद्ध-भक्त; २ बुद्ध-संबन्धी; (ती ७; सम्मत्त ११६)।

बुद्ध देखो **बुज्झ**।

बुद्ध देखो **बुंध**; (सुज्ज २०)।

बुद्धंत पुंन [बुध्नान्त] अधो-भाग, नीचे का हिस्सा; "ता राहू णं देवे चंदं वा सूरं वा गेण्हमाणे बुद्धंतेणं गिण्हित्ता बुद्धंतेणं मुयइ" (सुज्ज २०)।

बुद्धि स्त्री [बुद्धि] १ मति, मेधा, मनीषा, प्रज्ञा; (ठा ४, ४; जी ६; कुमा; कप्प; प्रासू ४७)। २ देव-प्रतिमा-विशेष; (णाया १, १ टी—पत्र ४३)। ३ महापुण्डरीक द्रह की अधिष्ठात्री देवी; (ठा २, ३—पत्र ७२; इक)। ४ छन्द-विशेष; (पिंग)। ५ तीर्थंकरी; ६ साध्वी; (राज)। ७ अहिंसा, दया; (पण्ह २, १)। ८ पुं. इस नाम का एक मन्त्री; (उप ८४४)। °कूड न [°कूट] पर्वत-विशेष

का शिखर; (राज)। °बोहिय वि [°बोधित] १ तीर्थंकरी—स्त्री-तीर्थंकर—से प्रतिबोधित; २ सामान्य साध्वी से बोधित; (राज)। °मंत वि [°मत्] बुद्धि वाला; (उप ३३६; सुपा ३७२; महा)। °ल पुं [°ल] १ एक स्वनाम-प्रसिद्ध श्रेष्ठी; (महा)। २ देखो °ल्ल; (राज)। °ल्ल वि [°ल] बुद्धू, मूर्ख, दूसरे की बुद्धि पर जीने वाला; "तस्स पंडियमाणि(? णि)स्स बुद्धिल्लस्स दुरप्पणो" (ओघभा २६ टी; २७)। °वंत देखो °मंत; (भवि)। °सागर, °सायर पुं [°सागर] विक्रम की ग्यारहवीं शताब्दी का एक सुप्रसिद्ध जैनाचार्य और ग्रन्थकार; (सुर १६, २४५; सार्ध ६६; सम्मत्त ७६)। °सिद्ध पुं [°सिद्ध] बुद्धि में सिद्धहस्त, संपूर्ण बुद्धि वाला; (आक्म)। °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] एक मन्त्रि-कन्या, (उप ७२८ टी)।

बुध देखो **बुह**; (पण्ह १, ५; सुज्ज २०)।

बुब्बुअ अक [बुबुय्] बु बु आवाज करना, छाग का बोलना। बुब्बुयइ; (कुप्र २४)। वकृ—**बुब्बुयंत**; (कुप्र २४)।

बुब्बुअ पुं [**बुद्बुद**] बुलबुला, पानी का बुलका; (दे ६, ६५; औप; पिंड १६; गाया १, १; वै ४५; प्रासू ६६; दं १३)।

बुभुक्खा स्त्री [**बुभुक्षा**] भूख, खाने की इच्छा: (अभि २०७)।

बुय वि [**ब्रुव**] बोलने वाला; (सूअ १, ७, १०)।

बुयाण देखो **बुव**।

बुल वि [**दे**] बोड, भदन्त, धर्मिष्ठ; (पिंग १६८)।

बुलंबुला स्त्री [**दे**] बुलबुला, बुद्बुद; (दे ६, ६५)।

बुलबुल पुं [**दे**] ऊपर देखो; (षड्)।

बुलल देखो **बोल्ल**। बुल्लइ; (कुप्र २६; श्रा १४), बुल्लंति; (प्रासू ४)। प्रयो—बुल्लावेइ, बुलावेमि, बुल्लावए; (कुप्र १२७; सिरि ४४०)।

बुव सक [**ब्रू**] बोलना। बुवइ; (षड्; कुमा)। वकृ—**बुवंत, बुयाण, बुवाण**; (उत्त २३, २१; सूअ १, ७, १०; उत्त २३, ३१)। देखो **बू**।

बुस न [**बुस**] १ भूसा, यव आदि का कडंगर, नाज का छिलका; (ठा ८—पत्र ४१७)। २ तुच्छ धान्य, फल-रहित धान्य; (गउड)।

बुसि स्त्री [**बृषि, °सि**] मुनि का आसन। °म, °मंत वि [°मत्] संयमी, व्रती, मुनि; (सूअ २, ६, १४; आचा)।

बुसिआ स्त्री [**बुसिका**] यव आदि का कडंगर, भूसा; (दे २, १०३)।

बुह पुं [**बुध**] १ ग्रह-विशेष, एक ज्योतिष्क देव; (सुर ३, ५३; धर्मवि २४)। २ वि. पण्डित, विद्वान्; (ठा ४, ४; सुर ३, ५३; धर्मवि २४; कुमा; पाअ)।

बुहप्पइ } देखो **बहस्सइ**; (हे २, ५३; १३७; षड्; कुमा)।
बुहप्फइ }
बुहस्सइ }

बुहुक्ख सक [**बुभुक्ष्**] खाने की इच्छा करना। **बुहुक्खइ**; (हे ४, ५; षड्)।

बुहुक्खा देखो **बुभुक्खा**; (राज)।

बुहुक्खिअ वि [**बुभुक्षित**] भूखा; (कुमा)।

बू सक [**ब्रू**] बोलना, कहना। बूम, बूया, बूहि; (उत्त २५, २६; सूअ १, १, ३, ६; १, १, १, २)। बिंति, बेंति, बेमि, बुआ; (कम्म ३, १२; महा; कप्प)। भूका—अब्बवी (उत्त २३, २१; २२; २५; ३१; ठा ३, २)। वकृ—**बिंत, बेंत**; (उप ७२८ टी; सुपा ३६०; विसे ११६)। संकृ—**बूइत्ता**; (ठा ३, २) देखो **बव, बुव**।

बूर पुं [**बूर**] वनस्पति-विशेष; (गाया १, १—पत्र ६; उत्त ३४, १६; कप्प; औप)। °णालिया, °नालिआ स्त्री [°नालिका] बूर से भरी हुई नली; (राज; भग)।

बूल वि [**दे**] मूक, वाचा-शक्ति से रहित; (पिंग १६८ टी)।

बूह सक [**बृंह्**] पुष्ट करना। बूहए; (सूअ २, ५, ३२)।

बे देखो **बि**; (वज्जा १०; हे ३, ११६; १२०; पिंग)। °आसी (अप) स्त्री [°अशीति] बयासी, ८२; (पिंग)। °इंदिय वि [°इन्द्रिय] त्वचा और जीभ ये दो ही इन्द्रिय वाला प्राणी; (ठा १; भग; स ८३; जी १५)। °हिय [**द्वयाहिक**] दो दिन का; (जीवस ११६)।

बेंट देखो **विंट**; (महा)।

बेंत देखो **बू**।

बेंदि देखो **बे-इंदिय**; (पंच ५, ५६)।

बेड्डु देखो **बिड्डु**; (ओघभा १७४)।

बेड } पुं [**दे**] नौका, जहाज; (दे ६, ६५; सुर १३,
बेडय } ५०)।

बेडा } स्त्री [**दे**] नौका, जहाज; (उप ७२८ टी; सिरि
बेडिया } ३८२; ४०७; श्रा १२; धम्म १२ टी), "पावी-
बेडी } हि जलं दारइ अरित्तदंडेहि बेडिव्व" (धर्मवि १३२)।

बेडा स्त्री [**दे**] श्मश्रु, दाढ़ी-मूँछ के बाल; (दे ६, ६५)।

बेद्रोणिय वि [द्विद्रोणिक] दो द्रोण का, द्रोण-द्वय-परिमित; "कप्पइ मे बेदोणियाए कंसपाईए हिरण्णभरियाए संववहरित्तए" (उवा)।

बेमासिय वि [द्विमासिक] दो मास का, दो महिने का संबन्ध रखने वाला; (पउम ११, २८)।

बेलि स्त्री [दे] स्थूणा, खूँटा; (दे ६, ६५; पाम)।

बेल्ल देखो **बिल्ल**; (प्राकृ ५)।

बेल्लग पुं [दे] बैल, बलीवर्द; (आवम)।

बेस अक [विश्, स्था] बैठना; "अंतंतं भोक्खामि त्ति बेसए भुंजए य तह चेव" (ओघ ५७१)।

बेसक्खिज्ज न [दे] द्वेष्यत्व, रिपुता, दुश्मनाई; (दे ७, ७६ टी)।

बेसण न [दे] वचनीय, लोकापवाद, लोक-निन्दा; (दे ६, ७५ टी)।

बेहिम वि [दे, द्वैधिक] दो टुकड़े करने योग्य, खण्डनीय; (दस ७, ३२)।

बोंगिल्ल वि [दे] १ भूषित, अलंकृत; २ पुं. आटोप, आडम्बर; (दे ६, ६६)।

बोंटण न [दे] चूचुक, स्तन का अग्र भाग; (दे ६, ६६)।

बोंड न [दे] १ चूचुक, स्तन-वृन्त; (दे ६, ६६)। २ फल-विशेष, कपास का फल; (औप; तंदु २०)। °य न [°ज] सूती वस्त्र, सूती कपड़ा; (सूअ २, २, ७३; औप)।

बोंद न [दे] मुख, मुँह; (दे ६, ६६)।

बोंदि स्त्री [दे] १ रूप; २ मुख, मुँह; (दे ६, ६६)। ३ शरीर, देह; (दे ६, ६६; पण्ह १, १; कप्प; औप; उत्त ३५, २०; स ७१२; विसे ३१६१; पव ५५; पंचा १०, ४)।

बोंदिया स्त्री [दे] शाखा; (सूअ २, २, ४६)।

बोक्कड } पुं [दे] छाग, बकरा; गुजराती में 'बोकडो'; **बोक्कड** } (ती ३; दे ६, ६६)। स्त्री—°डी; (दे ६, ६६ टी)।

बोक्कस पुं [बोक्कस] १ अनार्य देश-विशेष; (पव २७४)। २ वर्णसंकर जाति-विशेष, निषाद से अंबष्ठी की कुक्षि में उत्पन्न; (सुख ३, ४)।

बोक्कसालिय पुं [दे] तन्तुवाय, "कोट्ठागकुलाणि वा गामरक्खकुलाणि वा बोकसालियकुलाणि वा" (आचा २, १, २.३)।

बोक्कार देखो **बुक्कार**; (सुर १०, २२१)।

बोक्किय न [बूत्कृत] गर्जन, गर्जना; (पउम ५६, ५४)।

बोगिल्ल वि [दे] चितकबरा; "फसलं सबलं सारं किम्मीरं चित्तलं च बोगिल्लं" (पाम)।

बोट्ट सक [दे] उच्छिष्ट करना, जूठा करना। गुजराती में 'बोटवुं'। "रयणीए रयणियरा चरंति बोट्टंति अन्नमाईयं" (सुपा ४६१)।

बोड वि [दे] १ धार्मिक, धर्मिष्ठ; २ तरुण, युवा; (दे ६, ६६)। ३ मुण्डित-मस्तक; "एमेव अडइ बोडो" गुजराती में 'बोडो'; (पिंड २१७)।

बोडयेर न [दे] गुल्म-विशेष; (पाम)।

बोडिय पुं [बोटिक] १ दिगम्बर जैन संप्रदाय; २ वि. दिगम्बर जैन संप्रदाय का अनुयायी; "बोडियसिवभूईओ बोडियलिंगस्स होइ उप्पत्ती" (विसे १०४१; २५५२)।

बोडिय वि [दे] मुण्डित-मस्तक (?); "बोडियमसिए धुवं मरणं" (ओघभा ८३ टी)।

बोडुर न [दे] श्मश्रु, दाढी-मूँछ; (दे ६, ६५)।

बोड्डिआ स्त्री [दे] कपर्दिका, कौड़ी; "कसरि न लहइ बोड्डिअवि गय लक्खेहिं घेप्पंति" (हे ४, ३३५)।

बोद्दर वि [दे] पृथु, विशाल; (दे ६, ६६)।

बोद्दि देखो **बोंदि**; (औप)।

बोद्रह [दे] देखो **बोद्रह**; (पाम)।

बोद्ध वि [बौद्ध] बुद्ध-भक्त; (संबोध ३४)।

बोद्धव्व देखो **बुज्झ**।

बोद्रह वि [दे] तरुण, जवान, (दे ७, ८०)।

बोधण न [बोधन] बोध, शिक्षा, उपदेश; (सम ११६)।

बोधव्व देखो **बुज्झ**।

बोधि देखो **बोहि**; (ठा २, १—पत्र ४६)। °सत्त पुं [°सत्त्व] सम्यग् दर्शन को प्राप्त प्राणी, अर्हन् देव का भक्त जीव; (मोह ३)।

बोधिअ वि [बोधित] ज्ञापित, अवगमित; (धर्मसं ५०६)।

बोर न [बदर] फल-विशेष, बेर; (गा २००; हे १७०; षड्; कुमा)।

बोरी स्त्री [बदरी] बेर का गाछ; (प्राकृ ४; हे १, १७०; कुमा; हेका २५६)।

बोल सक [ब्रोडय्] डुबाना। "तंबोलो तं बोलइ जिणवसहिट्ठिएण जेण खद्धो" (सार्ध ११४), "बुड्डं तं बोलए अन्नं" (सूक ६६), बोलेइ, बोलए; (संबोध १३), "केसिं च बंधित्तु गले सिलाओ उदगंसि बोलंति महालयंसि" (सूअ

१, ५, १, १०), बोलेमि; (सिरि १३८), "गुरुलामेवं लोए बोलेइ बहू" (उवर १५२)।

बोल अक [व्यति+क्रम्] १ पसार होना, गुजरना । २ सक. उल्लंघन करना । "दूई य एइ, चंदोवि उग्गग्रो, जामिग्रीवि बोलेइ" (गा ८५४), "पुणो तं बंधणं न बोलइ कयाइ" (श्रावक ३३), बोलए; (चंड)। देखो **बोल**=गम् ।

बोल पुं [दे] १ कलकल, कोलाहल; (दे ६, ६०; भग; भवि; कप्पू; उप ५०६), "हासबोलबहुला" (ग्रौप)। २ समूह; "कमढासुरेण रइयम्मि भीसणे पलयतुल्लजलबोले" (भाव १; कुलक ३४)।

बोलग पुंन [दे. ब्रोड] १ मज्जन, डूबना; २ कर्षण, खींचाव; "उच्चूलं बोलगं पज्जंति" (विपा १, ६—पत्र ६८)।

बोलिअ वि [ब्रोडित] डुबाया हुआ; (वज्जा ६८)।

बोलिंदी स्त्री [दे] लिपि-विशेष, ब्राह्मी लिपि का एक भेद; "माहेसरीलिवी दामिलिवी बोलिंदिलीवी" (सम ३५)।

बोल्ल सक [कथय्] बोलना, कहना । बोल्लइ; (हे ४, २; प्राकृ ११६; सुर ८, १६७; भवि)। कर्म—बोल्लिग्रइ (ग्रप); (कुमा)। कृ—**बोल्लेवय** (ग्रप); (कुमा)। प्रयो—बोल्लावइ; (कुमा)।

बोल्लणअ वि [कथयितृ] बोलने का स्वभाव वाला; (हे ४, ४४३)।

बोल्ला स्त्री [कथा] वार्ता, बात; "नीयबोल्लाए" (उप १०१५)।

बोल्लाविय वि [कथित] बुलवाया हुआ; (स ४६१; ६६६)।

बोल्लिअ वि [कथित] १ उक्त; २ न. उक्ति; (भवि; हे ४, ३८३)।

बोव्व न [दे] खेत, खेत; (दे ६, ६६)।

बोह सक [बोधय्] १ समझाना, ज्ञान कराना। २ जगाना। बोहेइ; (उव)। कर्म—बोहिज्जइ; (उव)। वकृ—**बोहिंत, बोहेंत**; (सुर १५, २४६; महा)। कवकृ—**बोहिज्जंत**; (सुर २, १४५; ८, १६५)। हेकृ—**बोहेउं**; (ग्रज्झ १७६)।

बोह पुं [बोध] १ ज्ञान, समझ; (जी १)। २ जागरण; (कुमा)।

बोहग देखो **बोहय**; (दं १)।

बोहण देखो **बोधण**; (उप २०६; सुर १, ३७; उवर १)।

बोहय वि [बोधक] बोध देने वाला, ज्ञान-दाता; (सम १; णाया १, १; भग; कप्प)।

बोहहर पुं [दे] मागध, स्तुति-पाठक; (दे ६, ६७)।

बोहारी स्त्री [दे] बुहारी, संमार्जनी, झाडू; (दे ६, ६७)।

बोहि स्त्री [बोधि] १ शुद्ध धर्म का लाभ, सद्धर्म की प्राप्ति; "दुल्लहा बोही" (उत्त ३६, २५८), "बोही जिणेहि भणिया भवंतरे सुद्धधम्मसंपत्ती" (चेइय ३३२; संबोध १४; सम ११६; उप ४८१ टी)। २ अहिंसा, अनुकम्पा, दया; (पण्ह २, १)। देखो **बोधि** ।

बोहिअ वि [बोधित] १ ज्ञापित, समझाया हुआ; (भग)। २ विकासित, विबोधित; "रविकिरणतरुणबोहियसहस्सपत्त—" (कप्प)।

बोहिअ पुं [बोधिक] मनुष्य चुराने वाला चोर; (णिचू १; चेइअ ४४६)।

बोहिंत देखो **बोह**=बोधय् ।

बोहिग देखो **बोहिअ**=बोधिक; (राज)।

बोहित्थ पुंन [दे] प्रवहण, जहाज, यानपात्र, नौका; (दे ६, ६६; स २०६; चेइय २६४; कुप्र २२२; सिरि ३८३; सम्मत्त १५७; सुपा ६.४; भवि)।

बोहित्थिय वि [दे] प्रवहण-स्थित; (वज्जा १५८)।

°**ब्भंस** देखो **भंस**; (सुपा ५०६)।

°**ब्भमर** देखो **भमर**; (नाट—मुद्रा ३६)।

°**ब्भास** देखो **अब्भास**, "किंतु ग्रइदूरवा सा दिट्ठिब्भासेवि कुणइ न हु कोइ" (सुपा ५६७)।

°**ब्भि** वि [भिद्] भेदन करने वाला, नाश-कर्ता; "रागदब्भि" (ग्राचा १, ३, ४, १)।

ब्रो (ग्रप) देखो **बू** । ब्रोहि; (प्राकृ १२१)।

इग्र सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि बग्राराइसद्दसंकलणो एगूणतीसइमो तरंगो समत्तो ।

—:०:—

भ

भ पुं [**भ**] १ ओष्ठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष; (प्राप; प्रामा)। २ पिंगल-प्रसिद्ध आदि-गुरु और दो ह्रस्व अक्षरों की संज्ञा, भगण; (पिंग)। ३ न. नक्षत्र; (सुर १६, ४३)। °**आर** पुं [°**कार**] १ 'भ' अक्षर। २ भगण; (पिंग)। °**गण** पुं [°**गण**] भगण; (पिंग)।

भइ देखो **भव**=भू।

भइ स्त्री [**भृति**] वेतन, तनखाह; (णाया १, ८—पत्र १५०; विपा १, ४; उवा)। देखो **भूइ**।

भइअ वि [**भक्त**] १ विभक्त; (श्रावक १८५; सम ७६)। २ खण्डित; "अंगुलसंखासंखप्पएसभइयं पुढो पयरं" (पंच २, १२; औप)। ३ विकल्पित; (वव ६)।

भइअ } देखो **भय**=भज्।
भइअव्व }

भइणि° } स्त्री [**भगिनी**] बहिन, स्वसा; (सुपा १५;
भइणिआ } स्वप्न १५; १७; विपा १, ४; प्रासू ७८; कुल
भइणी } २३५; कुमा)। °**वइ** पुं [°**पति**] बहनोई; (सुपा १५; ५३२)। °**सुअ** पुं [°**सुत**] भागिनेय, भानजा; (सुपा १७)। देखो **बहिणी**।

भइरव वि [**भैरव**] १ भयंकर, भीषण, भय-जनक; (पाअ; सुपा १८२)। २ पुं. नाट्यादि-प्रसिद्ध एक रस, भयानक रस; ३ महादेव, शिव; ४ महादेव का एक अवतार; ५ राग-विशेष, भैरव राग; ६ नद-विशेष; (हे १, १५१; प्राप्र)। देखो **भेरव**।

भइरवी स्त्री [**भैरवी**] शिव-पत्नी, पार्वती; (गउड)।

भइरहि पुं [**भगीरथि**] सगर चक्रवर्ती का एक पुत्र, भगीरथ; (पउम ५, १७५)।

भइल वि [**दे**] भया, जात; (रंभा ११)।

भउहा (शौ) देखो **भमुहा**; (पि २५१)।

भउहा (अप) देखो **भमुहा**; (पिंग)।

भएयव्व देखो **भय**=भज्।

भंकार पुं [**भङ्कार**] भनकार, अव्यक्त आवाज विशेष; (उप पृ ८६)।

भंकारि वि [**भङ्कारिन्**] भनकार करने वाला; (मा)।

भंग पुं [**भङ्ग**] १ भाँगना, खण्ड, खण्डन; (ओघ ७८८; प्रासू १७०; जी १२; कुमा)। २ प्रकार, भेद, विकल्प; (भग; कम्म ३, ५)। ३ विनाश; (कुमा; प्रासू २१)। ४ रचना-विशेष; "तरंगरंगंतभंग—" (कप्प)। ५ पराजय; ६ पलायन; (पिंग)। °**रय** न [°**रत**] मैथुन-विशेष; (वज्जा १०८)।

भंग पुं [**भङ्ग**] आर्य देश-विशेष, जिसकी राजधानी प्राचीन काल में पावापुरी थी; (इक)।

भंग (अप) देखो **भग्ग**=भग्न; (पिंग)।

भंगरय पुं [**भृङ्गरज, भृङ्गारक**] १ पौधा विशेष, भृङ्गराज, भँगरा; २ न. भँगरा का फूल; (वज्जा १०८; सुपा ३२४)।

भंगा स्त्री [**भङ्गा**] १ वनस्पति-विशेष, अतसी, पाट, कुष्टा; "कप्पइ णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा पंच वत्थाइं धारित्तए वा परिहरेत्तए वा, तं जहा —जंगिए भंगिए साणए पोत्तिए तिरीडपट्टए णामं पंचमए" (ठा ५, ३—पत्र ३३८)। २ वाद्य-विशेष; "—पडहहुडुक्कुइ ढुक्काभेरीभंगापहुदिभूरिवज्जभंडतुमुल—" (विक ८७)।

भंगि स्त्री [**भङ्गि**] १ प्रकार, भेद; (हे ४, ३३६; ४११)। २ व्याज, छल, बहाना; "सहिभंगिभणिअसब्भाविआवराहाए" (गा ६१३)। ३ विच्छित्ति, विच्छेद; (राज)। ४ पुंस्त्री. देश-विशेष; "पावा भंगी य" (पव २७५; विचार ४६)।

भंगिअ न [**भङ्गिक, भाङ्गिक**] १ भङ्गा-मय, एक तरह का वस्त्र, पाट का बना हुआ कपड़ा; (ठा ३, ३; ५, ३—पत्र १३८; कस)। २ शास्त्र-विशेष; "जागतिगस्सवि भंगियसुत्ते किरिया जओ भणिया" (चेइय २४५)।

भंगिल्ल वि [**भङ्गवत्**] प्रकार वाला, भेद-पतित; "पढमभंगिल्ला" (संबोध ३२)।

भंगी स्त्री [**भङ्गी**] देखो **भंगि**; (हे ४, ३३६; गा ६१३; विचार ४६)।

भंगी स्त्री [**भृङ्गी**] वनस्पति-विशेष;—१ भाँग, विजया; २ अतिविषा, अतिस का गाछ; (पण्ण १—पत्र ३६; पण्ण १७—पत्र ५३१)।

भंगुर वि [**भङ्गुर**] १ स्वयं भाँगने वाला, विनश्वर, विनाश-शील; "तडिदंडाडंबरभंगुराइं ही विसयसोक्खाइं" (उप ६ टी; पण्ह १, ४; सुर १०, १८; स ११४; धर्मसं ११७१; विवे ११४)। २ कुटिल, वक्र; "कुडिलं वंकं भंगुरं" (पाअ)।

भंछा देखो **भत्था**; (राज)।

भंज सक [**भञ्ज्**] १ भाँगना, तोड़ना। २ पलायन कराना, भगाना। ३ पराजय करना। ४ विनाश करना। **भंजइ**,

भंजए; (हे ४, १०६; षड्; पि ५०६)। भवि—भंजिस्सइ; (पि ५३२)। कर्म—भज्जइ; (भग; महा)। वकृ—भंजंत; (गा १६७; सुपा ५६०)। कवकृ—भज्जंत, भज्जमाण; (से ६, ४४; सुर १०, २१७; स ६३)। संकृ—भंजिअ, भंजिउ, भंजिऊण, भंजिऊणं, भंजेऊण; (नाट; पि ५७६; महा; पि ५८५; महा); भज्जिउ (अप); (हे ४, ३६५)। हेकृ—भंजित्तए; (णाया १, ८), भंजणहं (अप); (हे ४, ४४१ टि)।

भंजअ } वि [भञ्जक] भाँगने वाला, भङ्ग करने वाला; **भंजग** } (गा ५५२; पण्ह १, ४)। २ पुं. वृक्ष, पेड़; "भंजगा इव संनिवेसं नो चयंति" (आचा)।

भंजण न [भञ्जन] १ भङ्ग, खण्डन; (पव ३८; सुर १०, ६१)। २ विनाश; (सुपा ३७६; पण्ह १, १)। ३ वि. भंजन करने वाला, तोड़ने वाला; विनाशक; "भवभंजण" (सिरि ५४६), "रिउसंगभंजणेण" (कुमा), स्त्री—°णी; (गा ७४५)।

भंजणा स्त्री [भञ्जना] ऊपर देखो; "विणओवयारम-(?र मा-)णस्स भंजणा पूयणा गुरुजणस्स" (विसे ३४६६; निचू १)।

भंजाविअ } वि [भञ्जित] १ भँगाया हुआ, तुड़वाया हुआ; **भंजिअ** } (स ५४०)। २ भगाया हुआ; (पिंग)। ३ आक्रान्त; (तंदु ३८)।

भंजिअ देखो **भग्ग**=भग्न; (कुमा ६, ७०; पिंग; भवि)।

भंड सक [भाण्डय्] भँडारा करना, संग्रह करना, इकट्ठा करना। भंडेइ; (सुख २, ४५)।

भंड सक [भण्ड्] भाँडना, भर्त्सना करना, गाली देना। भंडइ; (सण)। वकृ—**भंडंत**; (गा ३७६)। संकृ—**भंडिउं**; (वव १)।

भंड पुं [भण्ड] १ विट, भडुआ; (पव ३८)। २ भाँड, बहुरूपिया, मुख आदि के विकार से हँसाने का काम करने वाला, निर्लज्ज; (आव ६)।

भंड न [दे] १ वृन्ताक, बैंगण, भंटा; (दे ६, १००)। २ पुं. मागध, स्तुति-पाठक; ३ सखा, मित्र; ४ दौहित्र, पुत्री का पुत्र; (दे ६, १०६)। ५ पुंन. मण्डन, आभूषण, गहना; (दे ६, १०६; भग; औप)। ६ वि. छिन्न-मूर्धा, सिर-कटा; (दे ६, १०६)। ७ न. चुर, छुरा; ८ छुरे से मुण्डन; (राज)।

भंड } पुंन [भाण्ड] १ बर्तन, बासन, पात्र; "दुग्गइदुह-**भंडग** } भंडं घडइ अक्खंडं" (संवेग १४; दे ३, ११; आ २७; सुपा १६६)। २ क्रयाणक, पण्य, बेचने की वस्तु; (णाया १, १—पत्र ६०; औप; पण्ह १, १; उवा; कुमा)। ३ गृह, स्थान; (जीव ३)। ४ वस्त्र-पात्र आदि घर का उपकरण; (ठा ३, १; कप्प; ओघ ६६६; णाया १, ५)।

भंडण न [दे. भण्डन] १ कलह, वाक्-कलह, गाली-प्रदान; (दे ६, १०१; उव; महा; णाया १, १६—पत्र २१३; ओघ २१४; गा ६६६; उप ३३६; तंदु ५०)। २ क्रोध, गुस्सा; (सम ७१)।

भंडणा स्त्री [भण्डना] भाँडना, गाली-प्रदान; (उप ३३६)।

भंडय देखो **भंड**=भाण्ड; (हे ४, ४२२)।

भंडय देखो **भंडग**; "पायसभयदहियाणं भरिऊणं भंडए गरुए" (महा ८०, २४; उत्त २६, ८)।

भंडा स्त्री [दे] संबोधन-सूचक शब्द; (संक्षि ४७)।

भंडाआर } पुं [भाण्डागार] भंडार, कोठा, बखार; (सुपा **भंडागार** } १४१; स १७२; सुपा २२१; २६)।

भंडागारि } पुंस्त्री [भाण्डागारिन्, °क] भंडारी, **भंडागारिअ** } भंडार का अध्यक्ष; (णाया १, ८; कुप्र १०८)। स्त्री—°**रिणी**; (णाया १, ८)।

भंडार देखो **भंडागार**; (महा)।

भंडार पुं [भाण्डकार] बर्तन बनाने वाला शिल्पी; (राज)।

भंडारि } देखो **भंडागारि**; (स २०७; सुर ४, ६०)। **भंडारिअ** }

भंडिअ पुं [भाण्डिक] भंडारी, भंडार का अध्यक्ष; (सुख २, ४५)।

भंडिआ स्त्री [भाण्डिका] स्थाली, थलिया; (ठा ८—पत्र ४१७)।

भंडिआ } स्त्री [दे] १ गंत्री, गाड़ी; (बृह ३; दे ६, १०६; **भंडी** } आवम; निचू ३; वव ६)। २ शिरीष वृक्ष; ३ अटवी, जंगल; ४ असती, कुलटा; (दे ६, १०६)।

भंडीर पुं [भण्डीर] वृक्ष-विशेष, शिरीष वृक्ष; (कुमा)। °**वडिंसय**, °**वडेंसय** न [°ावतंसक] मथुरा नगरी का एक उद्यान; "महुराए णयरीए भंडि(?डीर)वडेंसए उज्जाणे" (राज; णाया २—पत्र २५३)। °**वण** न [°वन] १ मथुरा का एक वन; (ती ७)। २ मथुरा का एक चैत्य; (आवम)।

भंडु न [दे] मुण्डन; (दे ६, १००)।

भंडुल्ल देखो भंड=भाण्ड; (भवि)।

भंत वि [भ्रान्त] १ घुमा हुआ; "भंतो जसो मईयणी (ए)" (पउम ३०, ६८)। २ भ्रान्ति-युक्त, भ्रम वाला, भूला हुआ; (दे १, २१)। ३ अपेन, अनवस्थित; (विसे ३४४८)। ४ पुं. प्रथम नरक का तीसरा नरकेन्द्रक—नरकावास-विशेष; (देवेन्द्र ३)।

भंत वि [भगवत्] भगवान्, ऐश्वर्य-शाली; (ठा ३, १; भग; विसे ३४४८—३४५६)।

भंत वि [भदन्त] १ कल्याण-कारक; २ सुख-कारक; ३ पूज्य; (विसे ३४३६; कप्प; विपा १, १; कस; विसे ३४७४)।

भंत वि [भजत्] सेवा करता; (विसे ३४४६)।

भंत वि [भात्, भ्राजत्] चमकता, प्रकाशता; (विसे ३४४७)।

भंत वि [भवान्त] भव का—संसार का—अन्त करने वाला, मुक्ति का कारण; (विसे ३४४८)।

भंत वि [भयान्त] भय-नाशक; (विसे ३४४६)।

भंति स्त्री [भ्रान्ति] भ्रम, मिथ्या ज्ञान; (धर्मसं ७२१; ७२३; सुपा ३१२; भवि)।

भंति (अप) स्त्री [भक्ति] भक्ति, प्रकार; (पिंग)।

भंभल वि [दे] १ अप्रिय, अनिष्ट; (दे ६, ११०)। २ मूर्ख, अज्ञान, पागल, बेवकूफ; (दे ६, ११०; सुर ८, १६६)।

भंभसार पुं [भम्भसार] भगवान् महावीर के समकालीन और उनके परम भक्त एक मगधाधिपति, ये श्रेणिक और बिम्बिसार के नाम से भी प्रसिद्ध थे; (गाया १, १३; औप)। दखो भिंभसार, भिंभिसार।

भंभा स्त्री [दे. भम्भा] १ वाद्य-विशेष, भेरी; (दे ६ १००; गाया १, १७; विसे ७८ टी; सुर ३, ६६; सम्मत्त १०६; गय; भग ७, ६)। २ भाँ भाँ की आवाज; (भग ७, ६—पत्र ३०५)।

भंभी स्त्री [दे] १ असती, कुलटा; (दे ६, ६६)। २ नीति-विशेष; (राज)।

भंस अक [भ्रंश्] १ नीचे गिरना। २ नष्ट होना। ३ स्खलित होना। भंसइ; (हे ४, १७७)।

भंस पुं [भ्रंश] १ स्खलना; २ विनाश; (सुपा ११३; सुर ४, २३०), "संपाडइ संपयाभंसं" (कुप्र ४१)।

भंसण न [भ्रंशन] ऊपर देखो; "को णु उवाओ जिणधम्मभंसणे होज्ज एईए" (सुपा ११३; सुर ४, १५)।

भंसणा स्त्री [भ्रंशना] ऊपर देखो; (पण्ह २, ४; श्राक ६५)।

भक्ख सक [भक्षय्] भक्षण करना, खाना। भक्खेइ; (महा)। कर्म—भक्खिज्जइ; (कुमा)। वकृ—भक्खंत; (सं १०२)। हेकृ—भक्खिउं; (महा)। कृ—भक्ख, भक्खेय, भक्खणिज्ज; (पउम ८४, ४; सुपा ३७०; गाया १, १०; सुर १४, ३४; श्रा २७)।

भक्ख पुं [भक्ष] भक्षण, भोजन; "भो कीर खीरसक्करदक्खाभक्खं करहि ताव" (सुपा २६७)।

भक्ख देखो भक्ख=भक्षय्।

भक्ख पुंन [भक्ष्य] खंड-खाद्य, चीनी का बना हुआ खाद्य द्रव्य, मिठाई; (सुज्ज २० टी)।

भक्खग वि [भक्षक] भक्षण करने वाला; (कुप्र २६)।

भक्खण न [भक्षण] १ भोजन; (पगण २८)। २ वि. खाने वाला; "सव्वभक्खणो" (श्रा १८)।

भक्खणया स्त्री [भक्षणा] भक्षण, भोजन; (उवा)।

भक्खर पुं [भास्कर] १ सूर्य, रवि; (उत्त २३, ७८; लहुअ १०)। २ अग्नि, वह्नि; ३ अर्क-वृक्ष; (चंड)।

भक्खराभ न [भास्कराभ] १ गोत्र-विशेष जो गोतम गोत्र की शाखा है; २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न; (ठा ७—पत्र ३६०)।

भक्खावण न [भक्षण] खिलाना; (उप १५० टी)।

भक्खि वि [भक्षिन्] खाने वाला; (औप)।

भक्खिय वि [भक्षित] खाया हुआ; (भवि)।

भक्खेय देखो भक्ख=भक्षय्।

भग पुंन [भग] १ ऐश्वर्य; २ रूप; ३ श्री; ४ यश, कीर्ति; ५ धर्म; ६ प्रयत्न; "इस्सरियरूवसिरिजसधम्मपयत्ता मया भगाभिक्खा" (विसे १०४८; चेइय २८८)। ७ सूर्य, रवि; ८ माहात्म्य; ६ वैराग्य; १० मुक्ति, मोक्ष; ११ वीर्य; १२ इच्छा; (कप्प—टी)। १३ ज्ञान; (प्रामा)। १४ पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र; (अणु)। १५ पुं. योनि, उत्पत्ति-स्थान; (पण्ह १. ४—पत्र ६८; सुज्ज १०, ८)। १६ देव-विशेष, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र का अधिष्ठाता देव, ज्योतिष्क देव-विशेष; (ठा २, ३; सुज्ज १०, १२)। १७ गुदा और अण्डकोश के बीच का स्थान; (बृह ३)। °दत्त पुं [°दत्त] नृप-विशेष; (हे ४, २६६)। °व देखो °वंत; (भग; महा)। °वई स्त्री [°वती] १ ऐश्वर्यादि-संपन्ना, पूज्या; (पडि)। २ भगवती-सूत्र, पाँचवाँ जैन अंग-ग्रन्थ; (पंच

५, १२५) °वंत वि [°वत्] १ ऐश्वर्यादि-गुण-संपन्न; २ पुं. परमेश्वर, परमात्मा; (कप्प; विसे १०४८; प्रामा)।
भगंदर पुं [भगन्दर] रोग-विशेष; (णाया १, १३; विपा १, १)।
भगंदरि वि [भगन्दरिन्] भगन्दर रोग वाला; (श्रा १६; संबोध ४३)।
भगंदरिअ वि [भगन्दरिक] ऊपर देखो; (विपा १, ७)।
भगंदल देखो **भगंदर**; (राज)।
भगिणी देखो **बहिणी**; (णाया १, ८; कप्प; कुप्र २३६; महा)।
भगिरहि } पुं [भगीरथि] सगर चक्रवर्ती का एक पुत्र;
भगीरहि } (पउम ५, १७६; २१५)।
भग्ग वि [भग्न] १ खण्डित, भाँगा हुआ; (सुर २, १०२; दं ४६; उवा)। २ पराजित; ३ पलायित, भागा हुआ; "जइ भग्गा पारकडा" (हे ४, ३७६; ३५४; महा; वव २)। °इ पुं [°जित्] क्षत्रिय परिव्राजक-विशेष; (औप)।
भग्ग वि [दे] लिप्त, पोता हुआ; (दे ६, ६६)।
भग्ग न [भाग्य] नसीब, दैव; (सुर १३, १०५)।
भग्गव पुं [भार्गव] १ ग्रह-विशेष, शुक्र ग्रह; (पउम १७, १०८)। २ ऋषि-विशेष; (समु १८१)।
भग्गवेस न [भार्गवेश] गोत्र-विशेष; (सुज्ज १०, १६ टी; इक)।
भग्गिअ (अप) देखो **भग्ग=भग्न**; (पिंग)।
भच्च पुं [दे] भागिनेय, भानजा; (षड्)।
भच्छिअ वि [भर्त्सित] तिरस्कृत; (दे १, ८०; कुमा ३, ८६)।
भज देखो **भय=भज्**। वकृ—**भजंत, भजेंत, भजमाण, भजेमाण**; (षड्)।
भज्ज सक [भ्रस्ज्] पकाना, भुनना। भज्जंति, भज्जेंति; (सुअनि ८१; विपा १, ३)। वकृ—**भज्जंत, भज्जेंत**; (पिंड ५७४; विपा १, ३)।
भज्ज देखो **भंज**; (आचा २, १, १, २)।
भज्ज देखो **भय=भज्**।
भज्जंत देखो **भंज**।
भज्जण } [भ्रज्जन] १ भुनन, भुनना; (पण्ह १, १;
भज्जणय } मनु ५)। २ भुनने का पात्र; (सुअनि ८१; विपा १, ३)।
भज्जमाण देखो **भंज**।
भज्जा स्त्री [भार्या] पत्नी, स्त्री; (कुमा; प्रासू ११६)।
भज्जिअ देखो **भग्ग=भग्न**; "तरुणियं वा छिवाडिं अभिक्कंत-भज्जियं पेहाए" (आचा २, १, १, २)।
भज्जिअ वि [भृष्ट, भर्जित] भुना हुआ, पकाया हुआ; (गा ५५७; आचा २, १, १, ३; विपा १, २; उवा)।
भज्जिआ स्त्री [भर्जिका] भाजी, शाक-भेद, पत्राकार तरकारी; (पव २५६)।
भज्जिम वि [भ्रज्जिम] भुनने योग्य; (आचा २, ४, २, १५)।
भज्जिर वि [भङ्क्तृ] भाँगने वाला; "फारफलभारभज्जिर-साहासयसंकुलो महासाही" (धर्मवि ५५; सण)।
भज्जेंत देखो **भज्ज=भ्रस्ज्**।
भट्ट पुं [भट्ट] १ मनुष्य-जाति विशेष, स्तुति-पाठक की एक जाति, भाट; "जयजयसद्दकरंतसुभट्ट" (सिरि १५५; सुपा २७१; उप पृ १२०)। २ वेदाभिज्ञ पण्डित, ब्राह्मण, विप्र; (उप १०३१ टी)। ३ स्वामित्व, मालिकी; (प्रति ७)।
भट्टारग } पुं [भट्टारक] १ पूज्य, पूजनीय; (आव ३;
भट्टारय } महा)। २ नाटक की भाषा में राजा; (प्राकृ ९५)।
भट्टि देखो **भत्तु=भर्तृ**; (ठा ३, १; सम ८६; कप्प; स १४४; प्रति ३; स्वप्न १५)।
भट्टिअ पुं [दे] विष्णु, श्रीकृष्ण; (हे २, १७४; दे ६, १००)।
भट्टिणी स्त्री [भर्त्री] स्वामिनी, मालिकिन; (स १३४)।
भट्टिणी स्त्री [भट्टिनी] नाटक की भाषा में वह रानी जिसका अभिषेक न किया गया हो; (प्रति ७)।
भट्टुद (शौ) देखो **भट्टारय**; (प्राकृ ९५)।
भट्ठ वि [भ्रष्ट] १ नीचे गिरा हुआ; २ च्युत, स्खलित; (महा; द्र ४३)। ३ नष्ट; (सुर ४, २१५; णाया १, ९)।
भट्ठ पुंन [भ्राष्ट्र] भर्जन-पात्र, भुनने का बर्तन; (दे ५, २०), "भट्ठट्ठियचणगो विव सयणीए कीस तडफडसि" (सुर ३, १४८)।
भट्ठि } स्त्री [दे] धूलि-रहित मार्ग; (ओघ २३; २४ टी;
भट्ठी } भग ७, ६ टी—पत्र ३०७)।
भड पुं [भट] १ योद्धा, लड़ाका; (कुमा)। २ शूर, वीर; (से ३, ६; णाया १, १)। ३ म्लेच्छों की एक जाति; ४ वर्णसंकर जाति-विशेष, एक नीच मनुष्य-जाति; ५ राक्षस;

(हे १, १६५)। °खइआ स्त्री [°खादिता] दीक्षा-विशेष; (ठा ४, ४)।

भडक्क पुंस्त्री [दे] आडम्बर, ठाठमाठ; (सट्टि ४४ टी)। स्त्री—°क्का; (उव)।

भडग पुं [भटक] १ अनार्य देश-विशेष; २ उस देश में रहने वाली एक म्लेच्छ-जाति; (पराह १, १—पत्र १४; इक)। देखो **भड**।

भडारय (अप) देखो **भट्टारय**; (भवि)।

भडित्त न [भटित्र] शूल-पक्व मांसादि, कबाब; (स २६२; कुप्र ४३२)।

भडिल वि [दे] संबोधन-सूचक शब्द; (संक्षि ४७)।

भण सक [भण्] कहना, बोलना, प्रतिपादन करना। भणइ, भणेइ; (हे ४, २३६; कुमा)। कर्म—भगणइ, भगणए, भणिज्जइ; (पि ५४८, षड्; पिंग)। भूका—भणीअ; (कुमा)। भवि—भणिहि, भणिस्सं; (कुमा)। वकृ—**भणंत, भणमाण, भणेमाण**; (कुमा; महा; सुर १०, ११४)। कवकृ—**भण्णंत, भणिज्जंत, भणिज्जमाण, भणीअंत, भण्णमाण**; (कुमा; पि ५४८; गा १४५)। संकृ—**भणिअ, भणिउं, भणिऊण**; (कुमा; पि ३४६)। हेकृ—**भणिउ°, भणिउं**; (पउम ६४, १३; पि ५७६)। कृ—**भणिअव्व, भणेयव्व**; (अजि ३८; सुपा ६०८) कवकृ—**भन्नंत, भन्नमाण**; (सुर २, १६१; उप पृ २३; उप १०३१ टी)।

भणग त्रि [भण, °क] प्रतिपादन करने वाला; (णंदि)।

भणण न [भणन] कथन, उक्ति; (उप ५५३; सुपा २८३; संबोध ३)।

भणाविअ वि [भाणित] कहलाया हुआ; (सुपा ३५८)।

भणिअ वि [भणित] कथित; (भग)।

भणिइ स्त्री [भणिति] उक्ति, वचन; (सुर ६, १४५; सुपा २१४; धर्मवि ५८)।

भणिर वि [भणितृ] कहने वाला, वक्ता; (गा २६७; कुमा; सुर ११, २४४; श्रा १६)। स्त्री—°री; (कुमा)।

भणेमाण देखो **भण**।

भण्ण सक [भण्] कहना, बोलना। भगणइ; (धात्वा १४७)।

भण्णमाण देखो **भण=भण्**।

भत्त पुंन [भक्त] १ आहार, भोजन; २ अन्न, नाज; (विपा १, १; ठा २, ४; महा)। ३ ओदन, भात; (प्रामा)। ४ लगातार सात दिनों का उपवास; (संबोध ५८)। ५ वि. भक्ति-युक्त, भक्तिमान्; "सा सुलसा बालप्पभिदिं चेव हरिणेगमेसीभत्तया यावि होत्था" (अंत ७; उप पृ ६६; महा; पिंग)। °कहा स्त्री [°कथा] आहार-कथा, भोजन-संबन्धी वार्ता; (ठा ४, ४)। °च्छंद, °छंद पुं [°च्छन्द] रोग-विशेष, भोजन की अरुचि; "कच्छू जरो खासो सासो भत्तच्छंदो अक्खिदुक्खं" (महा; महा— टि)। °पच्चक्खाण न [°प्रत्याख्यान] आहार-त्याग-रूप अनशन, अनशन का एक भेद, मरण का एक प्रकार; (ठा २, ४—पत्र ६४; औप ३०, २)। °परिण्णा, °परिन्ना स्त्री [°परिज्ञा] १ वही पूर्वोक्त अर्थ; (भत्त १६६; १०; पव १५७)। २ ग्रन्थ-विशेष; (भत्त १)। °पाणय न [°पानक] आहार-पानी, खान-पान; (विपा १, १)। °वेला स्त्री [°वेला] भोजन-समय; (विपा १, १)।

भत्त वि [भूत] उत्पन्न, संजात; (हे ४, ६०)।

भत्ति देखो **भत्तु**; (पिंग)।

भत्ति स्त्री [भक्ति] १ सेवा, विनय, आदर; (गाया १, ८—पत्र १२२; उव; औप; प्रासू २६)। २ रचना; (विसे १६३१; औप; सुपा ५२)। ३ एकाग्र-वृत्ति-विशेष; (आव २)। ४ कल्पना, उपचार; (धर्मसं ७४२)। ५ प्रकार, भेद; (ठा ६)। ६ विच्छित्ति-विशेष; (औप)। ७ अनुराग; (धर्म १)। ८ विभाग; ६ अवयव; १० श्रद्धा; (हे २, १५६)। °मंत, °वंत वि [°मत्] भक्ति वाला, भक्त; (पउम ६२, २८; उव; सुपा १६०; हे २, १५६; भवि)।

भत्तिज्ज पुं [भ्रातृव्य] भतीजा, भाई का पुत्र; (सिरि ७१६; धर्मवि १२७)।

भत्ती नीचे देखो।

भत्तु पुं [भर्तृ] १ स्वामी, पति, भतार; (गाया १, १६—पत्र २०७), "णवबहू उवरतभत्तुया" (गाया १, ६; पात्र; स्वप्न ५६)। २ अधिपति, अध्यक्ष; ३ राजा, नरेश; ४ वि. पोषक, पोषण करने वाला; ५ धारण करने वाला; (हे ३, ४४; ४५)। स्त्री—**भत्ती**; (पिंग)।

भत्तोस न [भक्तोष] १ भुना हुआ अन्न; (पंचा ५, २६; प्रभा १५)। २ सुखादिका, खाद्य-विशेष; (पव ३८)।

भत्थ पुंस्त्री [दे] भाथा, तूणीर, तरकस; "अह आरोवियचावो पिट्ठे दढबन्धभत्थओ अभओ" (धर्मवि १४६)।

भत्था स्त्री [भस्त्रा] चमड़े की धौंकनी, भाथी; (उप ३२० टी; धर्मवि १३०)।

भत्थिअ वि [भर्त्सित] तिरस्कृत; (सम्मत्त १८६)।

भत्थी स्त्री [**भस्त्री**] भाथी, चमड़े की धौंकनी; "भत्थि व्व अनिलपुन्ना वियसियमुदरं" (कुप्र २६६)।

भद सक [**भद्**] १ सुख करना। २ कल्याण करना; (विसे ३४३६)। वकृ—**भदंत**; नीचे देखो।

भदंत वि [**भदन्त**] १ कल्याण-कारक; २ सुख-कारक; ३ पूज्य, पूजनीय; (विसे ३४३६; ३४७४)।

भद्द न [**दे**] आमलक, फल-विशेष; (दे ६, १००)।

भद्द, **भद्दअ** न [**भद्र**] १ मंगल, कल्याण; "भद्दं मिच्छादंसण-समूहमइअस्स अमयसारस्स जिणवयणस्स भगवओ" (सम्मत्त १६७; प्रासू १६)। २ सुवर्ण, सोना; ३ मुस्तक, मोथा, नागरमोथा; (हे २, ८०)। ४ दो उपवास; (संबोध ५८)। ५ देव-विमान विशेष; (सम ३२)। ६ शरासन, मूठ; (णाया १, १ टी—पत्र ४३)। ७ भद्रासन, आसन-विशेष; (आवम)। ८ वि. साधु, सरल, भला, सज्जन; ६ उत्तम, श्रेष्ठ; (भग; प्रासू १६; सुर ३, ४)। १० सुख-जनक, कल्याण-कारक; (णाया १, १)। ११ पुं. हाथी की एक उत्तम जाति; (ठा ४, २—पत्र २०८; महा)। १२ भारत-वर्ष का तीसरा भावी बलदेव; (सम १५४)। १३ अंग-विद्या का जानकार द्वितीय रुद्र पुरुष; (विचार ४७३)। १४ तिथि-विशेष—द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी तिथि; (सुज्ज १०, १५)। १५ छन्द-विशेष; (पिंग)। १६ स्वनाम-ख्यात एक जैन आचार्य; (महानि ६; कप्प)। १७ व्यक्ति-वाचक नाम; (निर १, ३; आव १; धम्म)। १८ भारत-वर्ष का चौवीसवाँ भावी जिनदेव; (पव ७)। °**गुत्त** पुं [°**गुप्त**] स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैनाचार्य; (णंदि; सार्ध २३)। °**गुत्तिय** न [°**गुप्तिक**] एक जैन मुनि-कुल; (कप्प)। °**जस** पुं [°**यशस्**] १ भगवान् पार्श्वनाथ का एक गणधर; (ठा ८—पत्र ४२६)। २ एक जैन मुनि; (कप्प)। °**जसिय** न [°**यशस्क**] एक जैन मुनि-कुल; (कप्प)। °**नंदि** पुं [°**नन्दिन्**] स्वनाम-ख्यात एक राज-कुमार; (विपा २, २)। °**बाहु** पुं [°**बाहु**] स्वनाम-प्रसिद्ध प्राचीन जैना-चार्य और ग्रन्थकार; (कप्प; णंदि)। °**मुत्था** स्त्री [°**मुस्ता**] वनस्पति-विशेष, भद्रमोथा; (पण्ण १)। °**वया** स्त्री [°**पदा**] नक्षत्र-विशेष; (सुर १०, २२४)। °**साल** न [°**शाल**] मेरु पर्वत का एक वन; (ठा २, ३; इक)। °**सेण** पुं [°**सेन**] १ धरणेन्द्र के पदाति-सैन्य का अधिपति देव; (ठा ५, १; इक)। २ एक श्रेष्ठी का नाम; (आव ४)। °**स्स** न [°**श्व**] नगर-विशेष; (इक)। °**सण** न [°**सन**] आसन-विशेष, सिंहासन; (णाया १, १; पण्ह १, ४; पाअ; औप)।

भद्दव°, **भद्दवय** पुं [**भाद्रपद**] मास-विशेष, भादों का महीना; (वज्जा ८२; सुर ३, १३८)।

भद्दसिरी स्त्री [**दे**] श्रीखण्ड, चन्दन; (दे ६, १०२)।

भद्दा स्त्री [**भद्रा**] १ रावण की एक पत्नी; (पउम ७४, ६)। २ प्रथम बलदेव की माता; (सम १५२)। ३ तीसरे चक्र-वर्ती की जननी; (सम १५२)। ४ द्वितीय चक्रवर्ती की स्त्री; (सम १५२)। ५ मेरु के पूर्व रुचक पर रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८)। ६ एक प्रतिमा, व्रत-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ६४)। ७ राजा श्रेणिक की एक पत्नी; (अंत २५)। ८ तिथि-विशेष—द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी तिथि; (संबोध ५४)। ६ छन्द-विशेष; (पिंग)। १० कामदेव श्रावक की भार्या का नाम; ११ चुलनीपिता-नामक उपासक की माता का नाम; (उवा)। १२ एक सार्थवाह-स्त्री का नाम; (विपा १, ४)। १३ गोशालक की माता का नाम; (भग १५)। १४ अहिंसा, दया; (पण्ह २, १)। १५ एक वापी; (दीव)। १६ एक नगरी; (आचू १)। १७ अनेक स्त्रियों का नाम; (णाया १, ८; १६; आवम)।

भद्दाकरि वि [**दे**] प्रलम्ब, अति लम्बा; (दे ६, १०२)।

भद्दिआ स्त्री [**भद्रिका**, **भद्रा**] १ शोभना, सुन्दर (स्त्री), (ओघभा १७)। २ नगरी-विशेष; (कप्प)।

भद्दिज्जिया स्त्री [**भद्रीया**, **भद्रीयिका**] एक जैन मुनि-शाखा; (कप्प)।

भद्दिलपुर न [**भद्दिलपुर**] भारतवर्ष का एक प्राचीन नगर; (अंत ४; कुप्र ८४; इक)।

भद्दुत्तरवडिंसग न [**भद्रोत्तरावतंसक**] एक देव-विमान; (सम ३२)।

भद्दुत्तर, **भद्दोत्तर°**, **भद्दोत्तरा** स्त्री [**भद्रोत्तरा**] प्रतिमा-विशेष, प्रतिज्ञा का एक भेद, एक तरह का व्रत; (औप; अंत ३०; पव २७१)।

भद्र देखो **भद्द**; (हे २, ८०, प्राकृ १७)।

भन्नंत, **भन्नमाण** देखो **भण**=भण्।

भप्प देखो **भस्स**=भस्मन्; (हे २, ५१; कुमा)।

भम सक [**भ्रम्**] भ्रमण करना, घूमना। **भमइ**; (हे ४, १६१; प्राकृ ६६)। वकृ—**भमंत**, **भममाण**; (गा

२०२; ३८७; कप्प; ओप)। संकृ—भमिआ, भमिऊण; (षड्; गा ७४६)। कृ—भमिअव्व; (सुपा ४३८)।

भम पुं [भ्रम] १ भ्रमण; (कुप्र ४)। २ भ्रान्ति, मोह, मिथ्या-ज्ञान; (से ३, ४८; कुमा)।

भमण न [भ्रमक] लगातार एकतीस दिनों का उपवास; (संबोध ५८)।

भमड देखो भम=भ्रम्। "भवम्मि भमडइ एगुच्चिय" (विवे १०८; हे ४, १६१)।

भमडिअ वि [भ्रान्त] १ घूमा हुआ, फिरा हुआ; (स ४७३)। २ भ्रान्ति-युक्त; (कुमा)। देखो भमिअ।

भमण न [भ्रमण] घूमना, चकराना; (दं ४६; कप्प)।

भमसुह पुं [दे] आवर्त; (दे ६, १०१)।

भमया स्त्री [भ्रू] भौं, नेत्र के ऊपर की केश-पङ्क्ति; (हे २, १६७; कुमा)।

भमर पुं [भ्रमर] १ मधुकर, भौंरा; (हे १, २४४; कुमा; जी १८; प्रासू ११३)। २ पुं. छन्द-विशेष; (पिंग)। ३ विट, रंडीबाज; (कप्पू)। °रुअ पुं [°रुच] अनार्य देश-विशेष; (पव २७४)। °ावलि स्त्री [°ावलि] १ छन्द-विशेष; (पिंग)। २ भ्रमर-पंक्ति; (राय)।

भमरटेंटा स्त्री [दे] १ भ्रमर की तरह अक्षि-गोलक वाली; २ भ्रमर की तरह अस्थिर आचरण वाली; ३ शुष्क व्रण के दाग वाली; (कप्प)।

भमरिया स्त्री [भ्रमरिका] जन्तु-विशेष, बर्रं; (जी १८)। देखो भमलिया।

भमरी स्त्री [भ्रमरी] स्त्री-भ्रमर, भौंरी; (दे)। नीचे देखो।

भमलिया, **भमली** स्त्री [भ्रमरीका, °री] १ पित्त के प्रकोप से होने वाला रोग-विशेष, चक्कर; "भमली पित्तु-दयाओ भमंतमहिदंसणं" (चेइय ४३५; पडि)। २ वाद्य-विशेष; (राय)।

भमस पुं [दे] तृण-विशेष, ईख की तरह का एक प्रकार का घास; (दे ६, १०१)।

भमाडअ वि [भ्रमित] घुमाया हुआ, फिराया हुआ; (से ३, ६१)।

भमाड सक [भ्रमय्] घुमाना, फिराना। भमाडइ; (हे ४, ३०), भमाडेसु; (सुपा ११४)। वकृ—भमाडेंत; (पउम १०६, ११)।

भमाड देखो भम=भ्रम्। भमाडइ; (हे ४, १६१; भवि)।

भमाड पुं [भ्रम] भ्रमण, घूमना, चक्कर; (ओपभा २६ टी; ८३ टी)।

भमाडण न [भ्रमण] घुमाना; (उप पृ २७८)।

भमाडिअ देखो भमडिअ; (कुमा)।

भमाडिअ वि [भ्रमित] घुमाया हुआ, फिराया हुआ; (पउम १६, २५)।

भमाव देखो भमाड=भ्रमय्। भमावइ, भमावेइ; (पि ५५३; हे ४, ३०)।

भमास [दे] देखो भमस; (दे ६, १०१; पाअ)।

भमि स्त्री [भ्रमि] १ आवर्त, पानी का चक्राकार भ्रमण; (अच्चु ६३)। २ चित्त-भ्रम करने की शक्ति; (विसे १६५३)। ३ रोग-विशेष, चक्कर; "भमिपरिभमियसरीरो" (हम्मीर २८)।

भमिअ देखो भमडिअ; (जी ४८; भवि)। ३ न. भ्रमण; "भमिअभमिअक्कंतदेहलीदेसं" (गा ५२५)।

भमिअ देखो भमाडअ; (पाअ)।

भमिअव्व, **भमिआ** देखो भम=भ्रम्।

भमिर वि [भ्रमितृ] भ्रमण करने वाला; (हे २, १४५; सुर १, ५५; ३, १८)।

भमुह न [भ्रू] नीचे देखो; "दीहाइं भमुहाइं" (आचा २, १३, १७)।

भमुहा स्त्री [भ्रू] भौं, आँख के ऊपर की रोम-राजी; (पउम ३७, ४०; औप; आचा; पाअ)।

भम्म, **भम्मड** देखो भम=भ्रम्। भम्मइ; (प्राकृ ६६), भम्मसु; (गा ४१५; ४४७)। भम्मडइ; (हे ४, १६१)। भम्मडइ; (कुमा)।

भम्मर (अप) देखो भमर; (पिंग)।

भय देखो भद। वकृ—देखो भयंत=भदंत।

भय सक [भज्] १ सेवा करना। २ विकल्प से करना। ३ विभाग करना। ४ ग्रहण करना। भयइ, भअइ; (सम्म १२४; कुमा), भए, भएज्जा; (बृह १), भयंति; (विसे १६६०)। "तम्हा भय जीव वेरग्गं" (श्रु ६१)। वकृ—भयंत, भयमाण; (विसे ३४४६; सूअ १, १, २, १७)। कवकृ—"सव्वतुभयमाणसुहेहिं" (कप्प)। संकृ—भइत्ता; (ठा ६)। कृ—भइअ, भइअव्व, भयव्व, भज्ज, भयणिज्ज; (विसे ६१८; २०४६; उत्त ३६, २३, २४; २५; कम्म ५, ११; विसे ६१५; उप ६०४; विसे ३२०२; ७४८; पव १८१; जीवस १४५; पंच ५, ८; विसे ६१६; जीवस १४७)।

भय न [भय] डर, त्रास, भीति; (आचा; गाया १, १; गा १०२; कुमा; प्रासू १६; १७३)। °**अर** वि [°कर] भय-जनक; (से ५, ४४; ११, ७५)। °**जणणी** स्त्री [°जननी] १ त्रास उत्पन्न करने वाली; (बृह १)। २ विद्या-विशेष; (पउम ७, १४१)। °**वाह** पुं [°वाह] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५, २६३)।

भय देखो **भग**; (उत्र; कुमा; सण; सुपा ४२०; गउड)।

भय देखो **भव**; (औप; पिंग)।

भयंकर वि [भयंकर] १ भय-जनक, भीषण; (हे ४, ३३१; सण; भवि)। २ प्राणि-वध, हिंसा; (पगह १,१)।

भयंत देखो भय=भज्।

भयंत देखो **भंत**=भगवत्; (सूम १, १६, ६)।

भयंत देखो **भदंत**; (ओघ ४८; उत्त २०, ११; औप)।

भयंत देखो **भंत**=भयान्त; (विसे ३४४६; ३४५३; ३४५४)।

भयंत देखो **भंत**=भवान्त; (विसे ३४५४; औप)।

भयंत वि [भयत्र] भय से रक्षा करने वाला; (औप; सूम १, १६, ६)।

भयंतु वि [भयत्रातृ] भय से रक्षा करने वाला; "धम्ममाइक्खणे भयंतारो" (सूम १, ४, १, २५)।

भयंतु वि [भक्तृ] सेवक, सेवा करने वाला; (औप)।

भयक } पुं [भृतक] १ नौकर, कर्मकर; (ठा ४, १; १)।
भयग } २ वि. पोषित; (पगह १, २; गाया १, २)।

भयण न [भजन] १ सेवा; (राज)। २ विभाग; (सम्म ११३)। ३ पुं. लोभ; (सूम १, ६, ११)।

भयण देखो **भवण**; (नाट—चैत ४०)।

भयणा स्त्री [भजना] १ सेवा; (निचू १)। २ विकल्प; (भग; सम्म १२४; दं ३१; उव)।

भयप्पइ } देखो **बहस्सइ**; (हे २, १३७; षड्)।
भयप्फइ }

भयवग्गाम पुं [दे] मोढेरक, गुजरात का एक गाँव; (दे ६, १०२)।

भयाणय वि [भयानक] भयंकर, भय-जनक; (स १२१)।

भयालि पुं [भयालि] भारतवर्ष के भावी अठारहवें जिनदेव का पूर्व-भवीय नाम; (सम १५४)। देखो **सयालि**।

भयालु वि [भीरु] भीरु, डरपोक; (दे ६, १०७; नाट)।

भयावण (अप) देखो **भयाणय**; (भवि)।

भयावह वि [भयावह] भय-जनक, भय-कारक; (सूम १, १३, २१)।

भर सक [भृ] १ भरना। २ धारण करना। ३ पोषण करना। भरइ; (भवि; पिंग), भरसु; (कम्म ४, ७६)। वकृ—**भरंत**; (भवि)। कवकृ—**भरंत, भरेंत, भरिज्जंत**; (से १, ५८; ४, ८; ९, ३७)। संकृ—**भरेऊणं**; (आक ६)। कृ—**भरणिज्ज, भरणीअ, भरिअव्व, भरेअव्व**; (प्राप्र; नाट; राज; से ६, ३)।

भर सक [स्मृ] स्मरण करना, याद करना। भरइ; (हे ४, ७४; प्राप्र)। वकृ—**भरंत**; (गा ३८१; भवि)। संकृ—**भरिअ, भरिऊणं**; (कुमा)। प्रयो, वकृ—**भरावंत**; (कुमा)।

भर पुन [भर] १ समूह, प्रकर, निकर; "जइभव्वं तह एगागिणावि भीमारिवुडभरं" (प्रवि १२; सुपा ७; पाम)। २ भार, बोझ; (से ३, ५; प्रासू २६; गा ६)। ३ गुरुतर कार्य; "भरणित्थरणसमत्था" (विसे १६६ टी; ठा ४, ४ टी पत्र २८३)। ४ प्रचुरता, अतिशय; ५ कर—राजदेय भाग—की प्रचुरता, कर की गुरुता; "करेहि य भरेहि य" (विपा १, १)। ६ पूर्णता, सम्पूर्णता; 'इय चिंताए निहं अलहंतो निसिभरम्मि नरनाहो" (कुप्र ६)। ७ मध्य भाग; ८ जमावट; "भरसुरयए कीलावसोए" (स ५३०)।

भरअ देखो **भरह**; (षड्)।

भरड पुं [भरट] व्रती विशेष, एक प्रकार का बावा; "सिवभत्ताहिगारिणा भरडएण" (सम्मत १४५)।

भरण न [स्मरण] स्मृति; (गा २२२; ३७७)।

भरण न [भरण] १ भरना, पूरना; (गउड)। २ पोषण; (गा ५२७)। ३ शिल्प-विशेष, वस्त्र में बेल-बूटा आदि आकार की रचना; 'सीवणं तुन्नणं भरणं" (गच्छ ३, ७)।

भरणी स्त्री [भरणी] नक्षत्र-विशेष; (सम ८; इक)।

भरध (शौ) देखो **भरह**; (प्राकृ ८५)।

भरह पुं [भरत] १ भगवान् आदिनाथ का ज्येष्ठ पुत्र और प्रथम चक्रवर्ती राजा; (सम ६०; कुमा; सुर २, १३३)। २ राजा रामचन्द्र का छोटा भाई; (पउम २५, १४)। ३ नाट्य-शास्त्र का कर्ता एक मुनि; (सिरि ५६)। ४ वर्ष-विशेष, भारत वर्ष; "इहेव जंबुद्दीवे दीवे सत्त वासा पन्नत्ता, तं जहा—भरहे हेमवए हरिवासे महाविदेहे रम्मए एरणवए एरवए" (सम १२; जं १; पडि)। ५ भारतवर्ष का प्रथम भावी चक्रवर्ती; (सम १५४)। ६ शबर; ७ तन्तुवाय; ८ नृप-विशेष, राजा दुष्यन्त का पुत्र; ९ भरत के वंशज राजा;

१० नट; (हे १. २१४; षड्)। ११ देव-विशेष; (जं ३)। १२ कूट-विशेष, पर्वत-विशेष का शिखर; (जं ४; ठा २, ३; ६)। °खित्त न [°क्षेत्र] भारतवर्ष; (सण)। °वास न [°वर्ष] भारतवर्ष, आर्यावर्त; (पगह १, ४)। °सत्थ न [°शास्त्र] भरतमुनि-प्रणीत नाट्य-शास्त्र; (सिरि ५६)। °ाहिव पुं [°धिप] १ संपूर्ण भारतवर्ष का राजा, चक्रवर्ती; २ भरत चक्रवर्ती; (सण)। °ाहिवइ पुं [°धिपति] वही अर्थ; (सण)।

भरहेसर पुं [**भरतेश्वर**] १ संपूर्ण भारतवर्ष का राजा, चक्रवर्ती; २ चक्रवर्ती भरत; (कुमा २, १७; पडि)।

भरिअ वि [**भृत, भरित**] भरा हुआ, पूर्ण, व्याप्त; (विपा १, ३; औप; धर्मवि १४४; काप्र १७४; हेका २७२; प्रासू १०)।

भरिअ वि [**स्मृत**] याद किया हुआ; 'भरिअं लुढिअं सुमरिअं" (पाअ; कुमा; भवि)।

भरिउल्लट्ट वि [**दे. भृतोल्लुठित**] भर कर खाली किया हुआ; (दे ७, ८१; पाअ)।

भरिम वि [**भरिम**] भर कर बनाया हुआ; (अणु)।

भरिया (अप) देखो **भारिया**; (कुमा)।

भरिली स्त्री [**भरिली**] चतुरिन्द्रिय जन्तु-विशेष; (राज)।

भरु पुं [**भरु**] १ एक अनार्य देश; २ एक अनार्य मनुष्य-जाति; (इक)।

भरुअच्छ पुं [**भृगुकच्छ**] गुजरात का एक प्रसिद्ध शहर जो आजकल 'भड़ौच' के नाम से प्रसिद्ध है; (काल; मुनि १०८६६; पडि)।

भरोच्छय न [**दे**] ताल का फल; (दे ६, १०२)।

भल देखो **भर**=स्मृ। भलइ; (हे ४, ७४)। प्रयो. वकृ— **भलावंत**; (कुमा)।

भल सक [**भल्**] सम्हालना। भलिज्जासु; (सुपा ५४६)। भवि—भलिस्सामि; (काल)। कृ—**भलेयव्व**; (ओघ ३८६ टी)। प्रयो, संकृ—**भलाविऊण**; (सिरि ३१२; ५६६)।

भलंत वि [**दे**] स्खलित होता, गिरता; (दे ६, १०१)।

भलाविअ वि [**भालित**] सौंपा हुआ, सम्हालने के लिये दिया हुआ; (श्रा १६)।

भलि पुंस्त्री [**दे**] कदाग्रह, हठ; "अमुलहमेच्छण जाहं भलि ते नवि दूर गणांति" (हे ४, ३५३; षड)।

भल्ल पुं [**भल्ल**] १ भालू, रीछ; (पराह १, १)। २ पुंन. अस्त्र-विशेष, भाला, वरछी; (गा ५०४; ५८५; ६६४)।

भलल } वि [**भद्र**] भला, उत्तम, श्रेष्ठ, अच्छा; (कुमा; **भल्लय** } हे ४, ३५१; भवि)। °त्तण, °प्पण न [°त्व] भलमनसी, भलाई; (कुमा)।

भल्लय [**भल्लक**] देखो **भल्ल**=भल्ल; (उप पृ ३०; सण; आवम)।

भल्लाअय } पुं [**भल्लात, °क**] १ वृक्ष-विशेष, भिलावा **भल्लातक** } का पेड़; (पराण १; दे १, २३)। २ भिलावा **भल्लाय** } का फल; (दे १, २३; ५, २६; पाअ)।

भल्लिल स्त्री [**भल्लिल**] देखो **भल्ली**; (कुमा)।

भल्लिम पुंस्त्री [**भद्रत्व**] भलाई, भद्रता; (सुपा १२३; कुप्र १०८)।

भल्ली स्त्री [**भल्ली**] भाला, वरछी, अस्त्र-विशेष; (सुर २, २८; कुप्र २७४; सुपा ५३०)।

भल्लु पुंस्त्री [**दे**] भालू, रीछ; (दे ६, ६६)।

भल्लुंकी स्त्री [**दे**] शिवा, शृगाली; (दे ६, १०१; सण), "भल्लुंकी रुढिया विकट्टंती" (संथा ६६)।

भल्लोड पुंन [**दे**] बाण का पुंख, शर का अग्र भाग, गुजराती में 'भालोडुं'; "कन्नायड्ढियधणुहपद्धदीसंतभल्लोडा" (सुर २, ७)।

भव अक [**भू**] १ होना। २ सक. प्राप्त करना। **भवइ, भवए**; (कप्प; महा), भए; (भग; ठा ३, १)। भूका—**भविंसु**; (भग)। भवि—भविस्सइ, भविस्सं; (कप्प; भग; पि ५२१)। वकृ—**भवंत**; (गउड ५८८), "भूयभाविभा(? भ)**वमाण**-भाविहिं" (कुप्र ४३७)। संकृ—**भविअ, भवित्ता, भवित्ताणं**; (अभि ५७; कप्प; भग; पि ५८३), **भइ** (अप); (पिंग)। कृ—**भवियव्व**; (गाथा १. १; सुर ४, २०७; उव; भग; सुपा १६४)। देखो **भव्व**।

भव पुं [**भव**] १ संसार; (ठा ३. १; उवा; भग; विपा २, १; कुमा; जी ४१)। २ संसार का कारण; (सम्म १)। ३ जन्म, उत्पत्ति; (ठा ४, ३)। ४ नरकादि योनि, जन्म-स्थान; (आचा; ठा २. ३; ४, ३)। ५ महादेव, शिव; (पाअ)। ६ वि. होने वाला, भावी; (ठा १)। ७ उत्पन्न; "कणयपुरं नामेणं नयरं भवो हं महाभाग !" (सुपा ५८४)। ८ न. देव-विमान-विशेष; (सम २)। °जिण वि [°जिन] रागादि को जीतने वाला; "सासणं जिणाणं भवजिणाणं" (सम्म १)। °ट्ठिइ स्त्री [°स्थिति] १ देव आदि योनि में उत्पत्ति

की काल-मर्यादा; (ठा २, ३)। २ संसार में अवस्थान; (पंचा १)। °त्थ वि [°स्थ] संसार में स्थित; (ठा २, १)। °त्थकेवलि वि [°स्थकेवलिन्] जीवन्मुक्त; (सम्म ८६)। °धारणिज्ज न [°धारणीय] जीवन-पर्यन्त संसार में धारण करने योग्य शरीर; (भग; इक)। °पच्चइय वि [प्रत्ययिक] १ नरकादि-योनि-हेतुक; २ न. अवधिज्ञान का एक भेद; (ठा २, १; सम १४५)। °भूइ पुं [°भूति] संस्कृत का एक प्रसिद्ध कवि; (गउड)। °सिद्धिय, °सिद्धीय वि [°सिद्धिक] उसी जन्म में या बाद के किसी जन्म में मुक्त होने वाला, मुक्ति-गामी; (सम २; पगण १८; भग; विसे १२३०; जीवस ७५; श्रावक ७३; ठा १; विसे १२२६)। °भिणंदि, °भिनंदि, °हिनंदि वि [°भिनन्दिन्] संसार को पसंद करने वाला, संसार को अच्छा मानने वाला; (राज; संबोध ८; ५३)। °वग्गाहि न [°पग्राहिन्] कर्म-विशेष; (धर्मसं १२६१)।

भव देखो **भव्व**; (कम्म ४, ६)।

भव } स [**भवत्**] तुम, आप; (कुमा; हे २, १७४)।
भवंत }

भवंत देखो **भव**=भू।

भवँ (अप) **भम**=भ्रम्। भवँइ; (सण)। वकृ—**भवँत**; (भवि)। संकृ—भविँतु; (सण)।

भवँण (अप) देखो **भमण**; (भवि)।

भवण न [**भवन**] १ उत्पत्ति, जन्म; (धर्मसं १७२)। २ गृह, मकान, बसति; (पाअ; कुमा)। ३ असुरकुमार आदि देवों का विमान; (पगण २)। ४ सत्ता; (विसे ६६)। °वइ पुं [°पति] एक देव-जाति; (भग)। °वासि पुं [°वासिन्] वही पूर्वोक्त अर्थ; (ठा १०; औप)। °वासिणी स्त्री [°वासिनी] देवी-विशेष; (पगण १७; महा ६८, १२)। °हिव पुं [°धिप] एक देव-जाति; (सुपा ६२०)।

भवमाण देखो **भव**=भू।

भवर देखो **भमर**; (चंड)।

भवाणी स्त्री [**भवानी**] शिव-पत्नी, पार्वती; (पाअ; समु १५७)। °कंत पुं [°कान्त] महादेव; (पिंग)।

भवारिस वि [**भवादृश**] तुम्हारे जैसा, आपके तुल्य; (हे १, १४२; चंड; सुपा २७६)।

भवि पुं [**भविन्**] भव्य जीव, मुक्ति-गामी प्राणी; (भवि)।

भविअ देखो **भव**=भू।

भविअ वि [**भव्य**] १ सुन्दर; (कुमा)। २ श्रेष्ठ, उत्तम; (संबोध १)। ३ मुक्ति-योग्य, मुक्ति-गामी; (पगण १; उत्त)। ४ भावी, होने वाला; (हे २, १०७; षड्)। देखो **भव्व**=भव्य।

भविअ वि [**भविक**] १ मुक्ति-योग्य, मुक्ति-गामी; २ संसारी, संसार में रहने वाला; (सुर ४, ८०)।

°**भविअ** वि [°**भविक**] भव-संबन्धी; (सण)।

भवित्ती स्त्री [**भवित्री**] होने वाली; (पिंग)।

भवियव्व देखो **भव**=भू।

भवियव्वया स्त्री [**भवितव्यता**] नियति, अवश्यंभाव; (महा)।

भविस (अप) देखो **भवीस**। °त्त, °यत्त पुं [°दत्त] एक कथा-नायक; (भवि)।

भविस्स पुं [**भविष्य**] १ भविष्य काल, आगामी समय; (पउम ३५, ५६; पि ५६०)। २ वि. भविष्य काल में होने वाला, भावी; (गाया १, १६—पत्र २१४; पउम ३५, ५६; सुर १, १३५; कप्पू)।

भवीस (अप) ऊपर देखो; (भवि)।

भव्व वि [**भव्य**] १ सुन्दर; "सव्वं भव्वं करिस्सामि" (सुपा ३३६)। २ उचित, योग्य; (विसे २८; ४४)। ३ श्रेष्ठ, उत्तम; (वज्जा १८)। ४ होता, वर्तमान; "एयं भूयं वा भव्वं वा भविस्सं वा" (गाया १, १६—पत्र २१४; कप्प; विसे १३४२)। ५ भावी, होने वाला; (विसे ५८; पंच २, ८)। ६ मुक्ति-योग्य, मुक्ति-गामी; (विसे १८२२; ३; ४; ५; दं १)। °सिद्धीय देखो **भव-सिद्धीय**; "पज्जत्तापज्जत्ता सुहुमा किंचहिया भव्वसिद्धीया" (पंच २, ७८)।

भव्व पुं [**दे**] भागिनेय, भानजा; (दे ६, १००)।

भस सक [**भष्**] भूँकना, श्वान का बोलना। भसइ; (हे ४, १८६; षड्—पत्र २२२), भसंति; (सिरि ६२२)।

भसग पुं [**भसक**] एक राज-कुमार, श्रीकृष्ण के बड़े भाई जरत्कुमार का एक पौत्र; (उत्त)।

भसण देखो **भिसण**। भसणेमि; (पि ५५६)।

भसण न [**भषण**] १ कुत्ते का शब्द; (श्रा २७)। २ पुं. श्वान, कुत्ता; (पाअ; सिरि ६२२)।

भसणउ (अप) वि [**भषितृ**] भूँकने वाला; "सुणउ भसणउ" (हे ४, ४४३)।

भसम पुं [**भस्मन्**] १ ग्रह-विशेष; "भसमग्गहपीडियं इमं तित्थं" (सट्ठि ४२ टी)। २ राख, भभूत; "भसमुद्धुलियगत्तो" (महा; सम्मत ७६)। देखो **भास**=भस्मन्।

भसल देखो **भमर**; (हे १, २४४; २५४; कुमा; सुपा ४; पिंग)।

भसुआ स्त्री [**दे**] शिवा, शृगाली; (दे ६, १०१; पाअ)।

भसुम देखो **भसम**; (प्राकृ ३७)।

भसेल्ल पुं [**दे**] धान्य आदि का तीक्ष्ण अग्र भाग; "सालि-भसेल्लसरिसा से केसा" (उवा)।

भसोल न [**दे, भसोल**] एक नाट्य-विधि; (राज)।

भस्थ (मा) देखो **भट्ट**; (षड्)।

भस्थालय (मा) देखो **भट्टारय**; (षड्)।

भस्स देखो **भंस**=भ्रंश्। भस्सइ; (प्राकृ ७६)। वकृ—**भस्संत**; (काल)।

भस्स पुं [**भस्मन्**] १ ग्रह-विशेष; २ राख; (हे २, ५१)।

भस्सिअ वि [**भस्मित**] जलाकर राख किया हुआ, भस्म किया हुआ; (कुमा)।

भा अक [**भा**] चमकना, दीपना, प्रकाशना। "भा भाजो वा दित्तीए" (विसे ३४४७)। भाइ; (कप्पू), भासि; (गउड)। वकृ—देखो **भंत**=भान्।

भा स्त्री [**भा**] दीप्ति, प्रभा, कान्ति, तेज; (कुमा)। °**मंडल** पुं [°**मण्डल**] राजा जनक का पुत्र; (पउम २६, ८७)। °**वलय** न [°**वलय**] जिन-देव का एक महाप्रातिहार्य, पीठ के पीछे रखा जाता दीप्ति-मंडल; (संबोध २; सिरि १७७)।

भा } अक [**भी**] डरना, भय करना। भाइ, भाअइ,
भाअ } भाआमि; (हे ४, ५३; षड्; महा; स्वप्न ८०), भादि (शौ); (प्राकृ ६३), भायइ; (सण)। भवि—भाइस्सदि, भाइस्सं (शौ); (पि ५३०)। वकृ—**भायंत**; (कुमा)। कृ—**भाइयव्व**; (पण्ह २, २; स ५६२; सुपा ४१)।

भाअ देखो **भा**=भा। भाअदि (शौ); (प्राकृ ६३)।

भाअ सक [**भायय्**] डराना। भाअइ, भाएइ; (प्राकृ ६४), भाएसि; (कर्पूर २४)। वकृ—**भायमाण**; (सुपा २४८)।

भाअ देखो **भाव**=भावय्। कृ—**भाएअव्व**; (नव २५)।

भाअ पुं [**भाग**] १ योग्य स्थान; २ एक देश; (से १३, ६)। ३ अंश, विभाग, हिस्सा; (पाअ; सुपा ४०७; पव—गाथा ३०; उवा)। ४ भाग्य, नसीब; (सार्ध ८०)। °**धेअ** °**हेअ** पुंन [°**धेय**] १ भाग्य, नसीब; (से ११, ८५; स्वप्न ५१; हम्मीर १४; अभि १६७)। २ कर, राज-देय; ३ दायाद, भागीदार; "भाअहेओ, भाअहेअं" (प्राकृ ८८; नाट—चैत ६०)। देखो **भाग**।

भाअ पुं [**दे**] ज्येष्ठ भगिनी का पति; (दे ६, १०२)।

भाअ देखो **भाव**; (भवि)।

भाआव देखो **भाअ**=भायय्। भाआवेइ; (प्राकृ ६४)।

भाइ देखो **भागि**; "सारिव्व बंधवहमरणभाइणो जिण ण हुंति तइ दिट्ठे" (धण ३२; उप ६८६ टी)।

भाइ } पुं [**भ्रातृ**] भाई, बन्धु; (उप ५१६; महा;
भाइअ } भावम)। °**बीया** स्त्री [°**द्वितीया**] पर्व-विशेष, कार्तिक शुक्ल द्वितीया तिथि; (ती १६)। °**सुअ** पुं [°**सुत**] भतीजा; (सुपा ४७०)। देखो **भाउ**।

भाइअ वि [**भाजित**] १ विभक्त किया हुआ, बाँटा हुआ; (पिंड २०८)। २ खण्डित; (पंच २, १०)।

भाइअ वि [**भीत**] १ डरा हुआ; २ न. डर, भय; (हे ४, ५३)।

भाइणिज्ज } पुंस्त्री [**भागिनेय**] भगिनी-पुत्र, बहिन का
भाइणेअ } लड़का, भानजा; (धम्म १२ टी; नाट—रत्ना
भाइणेज्ज } ८५; स २७०; णाया १, ८—पत्र १३२; पउम ६६, ३६; कुप्र ४४०; महा)। स्त्री—**ज्जी**; (पउम १७, ११२)।

भाइयव्व देखो **भा**=भी।

भाइर वि [**भीरु**] डरपोक; (दे ६, १०४)।

भाइल्ल पुं [**दे**] हालिक, कर्षक, कृषीबल; (दे ६, १०४)।

भाइल्ल वि [**भागिन्, °क**] भागीदार, साझेदार, अंश-ग्राही; (सूअ २, २, ६३; पण्ह १, २; ठा ३, १—पत्र ११३; णाया १, १४)। देखो **भागि**।

भाइहंड न [**दे, भ्रातृभाण्ड**] भाई, बहिन आदि स्वजन; गुजराती में 'भाँवड'; (कुप्र १५६)।

भाईरही स्त्री [**भागीरथी**] गंगा नदी; (गउड; हे ४, ३४७; नाट—विक २८)।

भाउ } पुं [**भ्रातृ**] भाई, बन्धु; (महा; सुर ३, ८८; पि
भाउअ } ५५; हे १, १३१; उत्त)। °**जाया**, °**ज्जाइया** स्त्री [°**जाया**] भोजाई, भाई की स्त्री; (दे ६, १०३; सुपा २६४)।

भाउअ देखो **भाअ**=(दे); (दे ६, १०२ टी)।

भाउअ न [**दे**] आषाढ मास में मनाया जाता गौरी—पार्वती—का एक उत्सव; (दे ६, १०३)।

भाउग देखो **भाउ**; (उप १४६ टी; महा)।

भाउज्जा स्त्री [**दे**] भोजाई, भाई की पत्नी; (दे ६, १०३)।

भाउराअण पुं [**भागुरायण**] व्यक्ति-वाचक नाम; (मुद्रा २२३)।

भाएअव्व देखो **भाअ**=भावय्।

भाग पुं [**भाग**] १ अंश, हिस्सा; (कुमा; जी २७; दे १, १६७)। २ अचिन्त्य शक्ति, प्रभाव, माहात्म्य; "भागोचिंता सत्ती स महाभागो महप्पभावो त्ति" (विसे १०५८)। ३ पूजा, भजन; (सूअ १, ८, २२)। ४ भाग्य, नसीब; "धन्ना कयपुन्ना हं महंतभागोदयंमि मह अत्थि" (सिरि ८२३)। ५ प्रकार, भङ्गी; (राज)। ६ अवकाश; (सुज्ज १०, ३—पत्र १०४)। °**धेअ**, °**धेज्ज**, °**हेअ** देखो **भाअ-हेअ**; (पउम ६, ५७; २८, ८६; स १२; सुर १४, ६; पाअ)। देखो **भाअ**=भाग।

भागवय वि [**भागवत**] १ भगवान् से संबन्ध रखने वाला; २ भगवान् का भक्त; (धर्मसं ३१२)। ३ न. ग्रन्थ-विशेष; (णंदि)।

भागि वि [**भागिन्**] १ भजने वाला, सेवन करने वाला; "भागस्स भागी" (उव), "किं पुण मरणंपि न मे संजायं मंदभग्गभागिस्स" (सुपा ५४७)। २ भागीदार, साझीदार, अंश-ग्राही; (प्रामा)।

भागिणेज्ज } देखो **भाइणेज्ज**; (महा; कुप्र ३७१)।
भागिणेय }

भागीरही देखो **भाईरही**; (पाअ)।

भाज अक [**भ्राज्**] चमकना। वकृ—**भाजंत**, **भंत**; (विसे ३४४७)।

भाड पुंन [**दे**] भाड, वह बड़ा चूल्हा जहां अन्न भुना जाता है, भट्टी; "जाया भाडसमाणा मग्गा उत्तत्तवालुया अहियं" (धर्मवि १०४; सण)।

भाडय न [**भाटक**] भाड़ा, किराया; (सुर ६, १५७)।

भाडिय वि [**भाटकित**] भाड़े पर लिया हुआ; "बोहित्थं भाडियं वियडं" (सुर १३, ३५)।

भाडिया } स्त्री [**भाटिका**, °**टी**] भाड़ा, शुल्क, किराया;
भाडी } "एक्काए देह भाडिं अन्नाहिं समं रमेइ रमणीए", "विलासिणीए दाऊणा इच्छियं भाडिं" (सुपा ३८२; ३८३; उवा)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] बैल, गाड़ी आदि भाड़े पर देने का काम—धन्धा; "भाडियकम्मं" (स ५०; श्रा २२; पडि)।

भाण देखो **भण**=भण्। संकृ—**भाणिऊण**, **भाणिऊणं**; (पिंड ६१५; उव)। कृ—**भाणियव्व**; (ठा ४, २; सम ८४; भग; उवा; कप्प; औप)।

भाण देखो **भायण**; (ओघ ६६५; हे १, २६७; कुमा)।

भाणिअ वि [**भाणित**] १ पढ़ाया हुआ, पाठित; "नाणासत्थाइं भाणिआ" (रयण ६८)। २ कहलाया हुआ; "ममंच-सिरिनामाए रन्नो भज्जाए भाणिओ मंती" (सुपा ५८७)।

भाणु पुं [**भानु**] १ सूर्य, रवि ; (पउम ४६, ३६; पुप्फ १६४; सिरि ३२)। २ किरण; (प्रामा)। ३ भगवान् धर्मनाथ का पिता, एक राजा; (सम १५१)। ४ स्त्री. एक इन्द्राणी, शक्र की एक अग्र-महिषी; (पउम १०२,१५६)। °**कण्ण** पुं [°**कर्ण**] रावण का एक अनुज; (पउम ७, ६७)। °**मई** स्त्री [°**मती**] रावण की एक पत्नी; (पउम ७४,१०)। °**मालिणी** [°**मालिनी**] विद्या-विशेष; (पउम ७, १३६)। °**मित्त** पुं [°**मित्र**] उज्जयिनी के राजा बलमित्र का छोटा भाई; (काल; विचार ४९४)। °**वेग** पुं [°**वेग**] एक विद्याधर का नाम; (महा; सण)। °**सिरी** स्त्री [°**श्री**] राजा बलमित्र की बहिन; (काल)।

भाम देखो **भमाड**=भ्रमय्। भामेइ; (हे ४, ३०)। वकृ—**भामिज्जंत**; (गा ४५७)। कृ—**भामेयव्व**; (ती ७)।

भामण न [**भ्रमण**] घुमाना, फिराना; (सम्मत्त १७४)।

भामर न [**भ्रामर**] १ मधु-विशेष, भ्रमरी का बनाया हुआ मधु; (पव ४)। २ पुं. दोधक छन्द का एक भेद; (पिंग)।

भामरी स्त्री [**भ्रामरी**] १ वीणा-विशेष; (वाया १, १७—पत्र २२६)। २ प्रदक्षिणा; (कप्पू; भवि)।

भामिअ वि [**भ्रमित**] १ घुमाया हुआ; (से २, ३२)। २ भ्रान्त किया हुआ, भ्रान्त-चित्त किया हुआ; "धत्तूरभामिओ इव" (मन २७; धर्मवि २३)।

भामिणी स्त्री [**भागिनी**] भाग्य वाली; (हे १, १९०; कुमा)।

भामिणी स्त्री [**भामिनी**] १ कोप-शीला स्त्री; २ स्त्री, महिला; (श्रा १२; सुर १, ७६; सुपा ४७५; सम्मत्त १६३)।

भाय देखो **भाउ**; (कुमा)।

भायंत देखो **भा**=भी।

भायण पुंन [**भाजन**] १ पात्र; २ आधार; ३ योग्य; "भायणा, भायणाइं" (हे १, ३३; २६७), 'ति जिणय धन्ना ते पुन्न-भायणा, ताण जीवियं सहलं" (सुपा ५६७; कुमा)।

भायणंग पुं [**भाजनाङ्ग**] कल्पवृक्ष की एक जाति, पात्र देने वाला कल्पवृक्ष; (पउम १०२, १२०)।

भायणिज्ज देखो **भाइणिज्ज**; (धर्मवि १२; काल)।

भायमाण देखो **भाअ**=भायय्।

भायर देखो **भाउ**; (कुमा)।

भायल पुं [**दे**] जात्य अश्व, उत्तम जाति का घोड़ा; (दे ६, १०४; पाअ) ।

भार पुं [**भार**] १ बोझा, गुरुत्व; (कुमा) । २ भार वाली वस्तु, बोझ वाली चीज; (श्रा ४०) । ३ काम संपादन करने का अधिकार; "भारक्खमंपि पुत्तं जो नियभारं ठवित्तु नियपुत्ते, न य साहेइ सकज्जं" (प्रासू २७) । ४ परिमाण-विशेष; "लाउअबीअं इक्कं नासइ भारं गुडस्स जह सहसा" (प्रासू १६१) । ५ परिग्रह, धन-धान्य आदि का संग्रह; (पण्ह १, ५) । °ग्गसो अ [°श्रस्] भार भार के परिमाण से; "दसद्धवण्णमल्लं कुम्भग्गसो य भारग्गसो य" (णाया १, ८—पत्र १२५) । °वह वि [°वह] बोझा ढोने वाला; (श्रा ४०) । °वह वि [°वह] वही अर्थ; (पउम ६७, २६) ।

भारई स्त्री [**भारती**] भाषा, वाणी, वाक्य, वचन; (पाअ) । देखो **भारही** ।

भारद्दाय } न [**भारद्वाज**] १ गोत्र-विशेष, जो गोतम गोत्र
भारद्दाय } की एक शाखा है; (कप्प; सुज्ज १०, १६) । २ पुं. भारद्वाज गोत्र में उत्पन्न; "जे गोयमा ते गग्गा ते भारद्दा (द्दाया), ते अंगिरसा" (ठा ७—पत्र ३६०) । ३ पक्षि-विशेष; (ओघभा ८४) । ४ मुनि-विशेष; (पि २३६; २६८; ३६२) ।

भारव देखो **भार**; (सुपा १४; ३८५) ।

भारह न [**भारत**] १ भारतवर्ष, भरत-क्षेत्र; (उवा) । "जहा निसंते तवणच्चिमाली पभासई केवलभारहं तु" (दस ६, १, १४) । २ पाण्डव और कौरवों का युद्ध, महाभारत; (पउम १०५, १६) । ३ ग्रन्थ-विशेष, जिसमें पाण्डव-कौरव युद्ध का वर्णन है, व्यास-मुनि-प्रणीत महाभारत; (कुमा; उर ३, ८) । ४ भरत मुनि-प्रणीत नाट्य-शास्त्र; (अणु) । ५ वि. भारतवर्ष-संबन्धी, भारत वर्ष का; (ठा २, ३—पत्र ६६), "तत्थ खलु इमे दुवे सूरिया पन्नत्ता, तं जहा—भारहे चेव सूरिए, एरवए चेव सूरिए" (सुज्ज १, ३) । °खेत्त न [°क्षेत्र] भारत वर्ष; (ठा २, ३ टी—पत्र ७१) ।

भारहिय वि [**भारतीय**] भारत-संबन्धी; "जा भारहियकहा इव भीमज्जुणनउलसउणिसोहिल्ला" (सुपा २६०) ।

भारही स्त्री [**भारती**] १ सरस्वती देवी; (पि २०७) । २ देखो **भारई**; (स ३१६) ।

भारिअ वि [**भारिक**] भारी, भार वाला, गुरु; (दे ४, ३; णाया १, ६—पत्र ११४) ।

भारिअ वि [**भारित**] १ भार वाला, भारी; (उप पृ १३४)। २ जिस पर भार लादा गया हो वह, भार-युक्त किया गया; (सुख २, १५) ।

भारिआ देखो **भज्जा**; (हे २, १०७; उवा; णाया २) ।

भारिल्ल वि [**भारवत्**] भारी, बोझ वाला; (धर्मवि १३७)।

भारुंड पुं [**भारुण्ड**] दो मुँह और एक शरीर वाला पक्षी, पक्षि-विशेष; (कप्प; औप; महा; दे ६, १०८) ।

भाल न [**भाल**] ललाट; (पाअ; कुमा) ।

भालुंकी [**दे**] देखो **भल्लुंकी**; (भत्त १६०) ।

भाल्ल पुंन [**दे**] मदन-वेदना, काम-पीड़ा; (संक्षि ४७) ।

भाव सक [**भावय्**] १ वासित करना, गुणाधान करना । २ चिन्तन करना । भावेइ; (विसे ६८), भाविंति; (पिंड १२६), "भावेज्ज भावणं" (हि १६), भावेसु; (महा) । कर्म—भाविज्जइ; (प्रासू ३७) । वकृ—**भावेंत, भावमाण, भावेमाण**; (सुर ८, १८५; सुपा २६५; उवा) । संकृ—**भावेत्ता, भाविऊण**; (उवा; महा) । कृ—**भावणिज्ज, भावियव्व, भावेयव्व**; (कप्पू; काल; सुर१४, ८४) ।

भाव अक [**भास्**] १ दिखाना, लगना, मालूम होना । २ पसंद होना, उचित मालूम होना ।

"सो चेव देवलोगो देवसहस्सोवसोहिओ रम्मो ।
तुह विरहियाइ इण्हिं भावइ नरओवमो मज्झ ॥"
(सुर ७, १६) ।

"तं चिय इमं विमाणं रम्मं मणिकणगरयणविच्छुरियं ।
तुमए मुक्कं भावइ घडियालयसच्छहं नाह ॥"
(सुर ७, १७) ।

"एम्वहिं राहपओहरहं जं भावइ तं होउ" (हे ४, ४२०)।

भाव पुं [**भाव**] १ पदार्थ, वस्तु; "भावो वत्थु पयत्थो" (पाअ; विसे ७०; १६६२)। २ अभिप्राय, आशय; (आचा; पंचा १, १; प्रासू ४२) । ३ चित्त-विकार, मानस विकृति; "हावभावपललियविक्खेवविलाससालिणीहिं" (पण्ह २, ४—पत्र १३२) । ४ जन्म, उत्पत्ति; "पिंडो कज्जं पइसमयभावाउ" (विसे ७१) । ५ पर्याय, धर्म, वस्तु का परिणाम, द्रव्य की पूर्वापर अवस्था; (पण्ह १, २; उत्त ३०, २३; विसे ६६; कम्म ४, १; ७०) । ६ धात्वर्थ-युक्त पदार्थ, विवक्षित क्रिया का अनुभव करने वाली वस्तु, पारमार्थिक पदार्थ; (विसे ४६) । ७ परमार्थ, वास्तविक सत्य; (विसे ४६) । ८ स्वभाव, स्वरूप; (अणु; णंदि) । ६ भवन, सत्ता; (विसे

६०; गउड ६७८)। १० ज्ञान, उपयोग; (आचू १; विसे ५०)। ११ चेष्टा; (गाया १, ८)। १२ क्रिया, धात्वर्थ; (अणु)। १३ विधि, कर्तव्योपदेश; "भावाभावमणंता" (भग ४१—पत्र ६७६)। १४ मन का परिणाम; (पंचा २, ३३; उव; कुमा ७, ५५)। १५ अन्तरङ्ग बहुमान, प्रेम, राग; (उव; कुमा ७, ८३; ८५)। १६ भावना, चिन्तन; (गउड १२०४; संबोध २४)। १७ नाटक की भाषा में विविध पदार्थों का चिन्तक पण्डित; (अभि १८२)। १८ आत्मा; (भग १७, ३)। १९ अवस्था, दशा; (कप्पू)। °केउ पुं [°केतु] ज्योतिष्क देव-विशेष, महाग्रह-विशेष; (ठा २, ३)। °त्थ पुं [°ार्थ] तात्पर्य, रहस्य; (स ६)। °न्न, °न्नुय वि [°ज्ञ] अभिप्राय को जानने वाला; (आचा; महा)। °पाण पुं [°प्राण] ज्ञान आदि आत्मा का अन्तरङ्ग गुण; (पण्ण १)। °संजय पुं [°संयत] सच्चा साधु; (उप ७३२)। °साहु पुं [°साधु] वही अर्थ; (भग)। °ासव पुं [°ास्रव] वह आत्म-परिणाम, जिससे कर्म का आगमन हो; "आसवदि जेण कम्मं परिणामेणप्पणो स विण्णेओ भावासवो" (द्रव्य २९)।

भावअ वि [**भावक**] होने वाला; (प्राकृ ७०)। देखो **भावग**।

भावइआ स्त्री [**दे**] धार्मिक-गृहिणी; (दे ६, १०८)।

भावग वि [**भावक**] वासक पदार्थ, गुणाधायक वस्तु; (आचू ३)। देखो **भावअ**।

भावड पुं [**भावक**] स्वनाम-ख्यात एक जैन गृहस्थ; (ती २)।

भावण पु [**भावन**] १ स्वनाम-ख्यात एक वणिक्; (पउम ५, ८२)। २ नीचे देखो; (संबोध २४; वि ६)।

भावणा स्त्री [**भावना**] १ वासना, गुणाधान, संस्कार-करण; (औप)। २ अनुप्रेक्षा, चिन्तन; ३ पर्यालोचन; (ओघभा ३; उव; प्रासू ३७)।

भावि वि [**भाविन्**] भविष्य में होने वाला; (कुमा; सण)।

भाविअ वि [**दे**] गृहीत, उपात्त; (दे ६, १०३)।

भाविअ न [**भाविक**] एक देव-विमान; (सम ३३)।

भाविअ वि [**भावित**] १ वासित; (पगह २, ५; उत्त १४, ५२; भग; प्रासू ३७)। २ भाव-युक्त; "जिणपवयणतिव्वभावियमइस्स" (उव)। ३ शुद्ध, निर्दोष; (बृह १)। °प्प वि [°ात्मन्] १ वासित अन्तःकरण वाला; (औप; गाया १, १)। २ पुं. मुहूर्त-विशेष, अहोरात्र का तेरहवाँ या अठारहवाँ मुहूर्त; (सुज्ज १०, १३; सम ५१)। °प्पा स्त्री [°ात्मा] भगवान् धर्मनाथ की मुख्य शिष्या; (सम १५२)।

भाविंदिअ न [**भावेन्द्रिय**] उपयोग, ज्ञान; (भग)।

भाविर वि [**भाविन्, भवितृ**] भविष्य में होने वाला, अवश्यंभावी; "अम्हं भाविरदीहरपवासदुहिया मिलाएइ" (सुपा ६), "एत्थंतरम्मि भाविरनियपिउगुरुविरहग्गिक्ष्सियमणेण" (सुपा ७५)।

भाविल्ल वि [**भाववत्**] भाव-युक्त; "पणवीसं भावणाइं भाविल्लो पंचमहव्वयाईणं" (संबोध २४)।

भाविस्स देखो **भविस्स**; "भाविस्सभूयपभवंतभावमालोयलोयणं विमलं" (सुपा ८६)।

भावुक वि [**दे**] वयस्य, मित्र; (संक्षि ४७)।

भावुग } वि [**भावुक**] अन्य के संसर्ग की जिस पर असर
भावुय } हो सकती हो वह वस्तु; (ओघ ७७३; संबोध ५४)।

भास सक [**भाष्**] कहना, बोलना। भासइ, भासंति; (भग; उव)। भवि—भासिस्सामि; (भग)। वकृ—**भासंत**, **भासमाण**; (औप; भग; विपा १, १)। कवकृ—**भासिज्जमाण**; (भग; सम ६०)। संकृ—**भासित्ता**; (भग)। कृ—**भासिअव्व**; (भग; महा)।

भास अक [**भास्**] १ शोभना। २ लगना, मालूम होना। ३ प्रकाशना, चमकना। भासइ; (हे ४, २०३), भासए, भासंति, भाससि; (मोह ३९; भत्त ११०; सुर ७, १६१)। वकृ—**भासंत**; (अच्चु ५८)।

भास सक [**भीषय्**] डराना। भासइ; (धात्वा १४७)।

भास पुं [**भास**] १ पक्षि-विशेष; (पगह १, १; दे २, ६२)। २ दीप्ति, प्रकाश; "नावरिज्जइ कयावि। उक्कोसावरणम्मिवि जलयच्छन्नक्कभासो व्व" (विसे ४९८; भवि)।

भास पुं [**भस्मन्**] १ ग्रह-विशेष, ज्योतिष्क देव-विशेष; (ठा २, ३; विचार ५०७)। २ भस्म, राख; (गाया १, १; पगह २, ५)। °रासि पुं [°राशि] ग्रह-विशेष; (ठा २, ३; कप्प)।

भास न [**भाष्य**] व्याख्या-विशेष, पद्य-बद्ध टीका; (चैत्य १; उप ३५७ टी; विचार ३५२; सम्यक्त्वो ११)।

भास देखो **भासा**; (कुमा)। °ण्णु वि [°ज्ञ] भाषा के गुण-दोष का जानकार; (धर्मसं ९३५)। °व वि [°वत्] वही अर्थ; (सुअ १, १३, १३)।

भासग वि [**भाषक**] बोलने वाला, वक्ता, प्रतिपादक; (विसे ४१०; पंचा १८, ६; ठा २, २—पत्र ५६)।

भासण न [**भासन**] चमक, दीप्ति, प्रकाश; "वरमल्लिभासणाणं" (औप)।

भासण न [**भाषण**] कथन, प्रतिपादन; (महा)।

भासणया } स्त्री [**भाषणा**] ऊपर देखो; (उप ५१६; **भासणा** } विसे १४७; उव)।

भासय देखो **भासग**; (विसे ३७४; पराण १८)।

भासय वि [**भासक**] प्रकाशक; (विसे ११०४)।

भासल वि [**दे**] दीप्त, प्रज्वलित; (दे ६, १०३)।

भासा स्त्री [**भाषा**] १ बोली; "अट्ठारसदेसीभासाविसारए" (औप १०६; कुमा)। २ वाक्य, वाणी, गिरा, वचन; (पाअ)। °**जड्ड** वि [°**जड**] बोलने की शक्ति से रहित, मूक; (आव ४)। °**पज्जत्ति** स्त्री [°**पर्याप्ति**] पुद्गलों को भाषा के रूप में परिणत करने की शक्ति; (भग ६, ४)। °**विजय** पुं [°**विचय**] १ भाषा का निर्णय; २ दृष्टिवाद, बारहवाँ जैन अंग-ग्रन्थ; (ठा १०—पत्र ४६१)। °**विजय** पुं [°**विजय**] दृष्टिवाद; (ठा १०)। °**समिअ** वि [°**समित**] वाणी का संयम वाला; (भग)। °**समिइ** स्त्री [°**समिति**] वाणी का संयम; (सम १०)। देखो **भास**।

भासा स्त्री [**भास्**] प्रकाश, आलोक, दीप्ति; (पाअ)।

भासि वि [**भाषिन्**] भाषक, वक्ता; (धर्मवि ५२; भवि)।

भासिअ वि [**भाषित**] १ उक्त, कथित, प्रतिपादित; (भग; आचा; सण; भवि)। २ न. भाषण, उक्ति; (आवम)।

भासिअ वि [**भाषिन्**, °**क**] वक्ता, बोलने वाला; (भवि)।

भासिअ वि [**दे**] दत्त, अर्पित; (दे ६, १०४)।

भासिअ वि [**भासित**] प्रकाश वाला, प्रकाश-युक्त; (निचू १३)।

भासिर वि [**भाषितृ**] वक्ता; (सुपा ५३८; सण)।

भासिर वि [**भास्वर**] दीप्र, देदीप्यमान; (कुमा)।

भासिल्ल वि [**भाषावत्**] भाषा-युक्त, वाणी-युक्त; (उत्त २७, ११)।

भासीकय वि [**भस्मीकृत**] जलाकर राख किया हुआ; (उप ६८६ टी)।

भासुंड सक [**दे**] बाहर निकलना। भासुंडइ; (दे ६, १०३ टी)।

भासुंडि स्त्री [**दे**] निःसरण, निर्गमन; (दे ६, १०३)।

भासुर वि [**भासुर**] १ भास्वर, दीप्तिमान, चमकता; (सुर ६, १८४; सुपा ३३; २७२; कुप्र ६०; धर्मसं १३२६ टी)। २ घोर, भीषण, भयंकर; "घोरा दारुणभासुरभइरवलल्लक्कभीमभीसणया" (पाअ)। ३ एक देव-विमान; (सम १३)। ४ छन्द-विशेष; (अजि ३०)।

भासुरिअ वि [**भासुरित**] देदीप्यमान किया हुआ; "भासुरभूसणभासुरिअंगा" (अजि २३)।

भि देखो °**भिम**; (आचा)।

भिअप्पइ }
भिअप्फइ } देखो **बहस्सइ**; (पि २१२; षड्)।
भिअस्सइ }

भिइ देखो **भइ**=भृति; (राज)।

भिउ पुं [**भृगु**] १ स्वनाम-ख्यात ऋषि-विशेष; २ पर्वत-सानु; ३ शुक्र-ग्रह; ४ महादेव, शिव; ५ जमदग्नि; ६ ऊँचा प्रदेश; ७ भृगु का वंशज; ८ रेखा, राजि; (हे १, १२८; षड्)। °**कच्छ** न [°**कच्छ**] नगर-विशेष, भडौंच; (राज)।

भिउड न [**दे**] अंग-विशेष, शरीर का अवयव-विशेष (?); "मुत्तूण तुरगभिउडे खग्गं पिट्ठम्मि उत्तरीयं च", "तो तस्सेव य खग्गं भिउडाओ गिण्हिऊण चाणक्को" (धर्मवि ४१)।

भिउडि स्त्री [**भृकुटि**] १ भौं-भंग, भौं का विकार; (विपा १, ३; ४)। २ पुं. भगवान् नमिनाथ का शासन-देव; (संति ८)।

भिउडिय वि [**भृकुटित**] जिसने भौं चढ़ाई हो वह; (गाथा १, ८)।

भिउडी देखो **भिउडि**; (कुमा)।

भिउर वि [**भिदुर**] विनश्वर; (आचा)।

भिउव्व पुं [**भार्गव**] भृगु मुनि का वंशज, परिव्राजक-विशेष; (औप)।

भिंग वि [**दे**] कृष्ण, काला; (दे ६, १०४)। २ नील, हरा; ३ स्वीकृत; (षड्)।

भिंग पुं [**भृङ्ग**] १ भ्रमर, मधुकर; (पउम ३३, १४८; पाअ)। २ पक्षि-विशेष; (पराण १७—पत्र ५२६)। ३ कीट-विशेष; ४ विदलित अंगार, कोयला; (णाया १, १—पत्र २४; औप)। ५ कल्पवृक्ष की एक जाति; (सम १७)। ६ छन्द-विशेष; (पिंग)। ७ जार, उपपति; ८ भँगरा का पेड़; ९ पात्र-विशेष, झारी; (हे १, १२८)। °**णिभा** स्त्री [°**निभा**] एक पुष्करिणी; (इक)। °**प्पभा** स्त्री [°**प्रभा**] पुष्करिणी-विशेष; (जं ४)।

भिंगा स्त्री [**भृङ्गा**] एक पुष्करिणी, वापी-विशेष; (इक)।

भिंगार } पुं [भृङ्गार, °क] १ भाजन-विशेष, झारी; **भिंगारक** } (पण्ह १, ४; औप)। २ पक्षि-विशेष, "भिंगार-**भिंगारग** } रवंतभेरवरवे" (णाया १, १—पत्र ६५), "भिंगारकदीणकंदियरवेसु" (णाया १, १—पत्र ६३; पण्ह १, १; औप)। ३ स्वर्ण-मय जल-पात्र; (हे १, १२८; जं २)।

भिंगारी स्त्री [दे. भृङ्गारी] १ कीट-विशेष, चिरी, झिल्ली (दे ६, १०५; पाअ; उत्त ३६, १४८)। २ मशक, डाँस;; (दे ६, १०५)।

भिंजा स्त्री [दे] अभ्यंग, मालिश; (सूअ १, ४, २, ८)।

भिंटिया स्त्री [दे. वृन्ताकी] भंटा का गाछ; (उप १०३१ टी)।

भिंडिमाल } पुं [भिन्दिपाल] शस्त्र-विशेष; (पण्ह १, १; **भिंडिवाल** } औप; पउम ८, १२०; स ३८४; कुमा; हे २, ३८; प्राप्र)।

भिंद सक [भिद्] १ भेदना, तोड़ना। २ विभाग करना। भिंदइ, भिंदए; (महा; षड्)। भवि—भेच्छं, भिंदिस्संति; (हे ३, १७१; कुमा; पि ५३२)। कर्म—भिज्जइ; (आचा; पि ५४६)। वकृ—**भिंदंत**, **भिंदमाण**; (ग १३६; पि ५०६)। कवकृ—**भिज्जंत**, **भिज्जमाण**; (से ५, ६५; ठा २, ३; श्रा ६; भग; उवा; णाया १, ६; विसे ३११)। संकृ—**भित्तूण**, **भित्तूणं**, **भिंदिअ**, **भिंदिऊण**, **भेत्तुआण**, **भेत्तण**; (रंभा; उत्त ६, २२; नाट—विक्र १७; पि ५८६; हे २, १४६; महा)। हेकृ—**भिंदित्तए**, **भित्तुं**, **भेत्तुं**; (पि ५७८; कप्प; पि ५७४)। कृ—**भिंदियव्व**; (पण्ह २, १), **भेअव्व**; (से १०, २६)।

भिंदण न [भेदन] खण्डन, विच्छेद; (सुर १६, ५६)।

भिंदणया स्त्री [भेदना] ऊपर देखो; (सुर १, ७२)।

भिंदिवाल (शौ) देखो **भिंडिवाल**; (प्राकृ ८७)।

भिंभल देखो **भिब्भल**; (सुपा ८३; ३६५; पि २०६)।

भिंभलिय वि [विह्वलित] विह्वल किया हुआ, "ता गज्जइ मायंगो विंभवणे य(? म)यपवाहभिंभलिओ" (धर्मवि ८०)।

भिंभसार पुं [भिम्भसार] देखो **भंभसार**; (औप)।

भिंभा स्त्री [भिम्भा] देखो **भंभा**; (राज)।

भिंभिसार पुं [भिम्भिसार] देखो **भंभसार**; (ठा ६—पत्र ४५८; पि २०६)।

भिंभी स्त्री [भिम्भी] वाद्य-विशेष, ढक्का; (ठा ६ टी—पत्र ४६१)।

भिक्ख सक [भिक्ष्] भीख माँगना, याचना करना। भिक्खइ; (संबोध ३१)। वकृ—**भिक्खमाण**; (उत्त १४, २६)।

भिक्ख न [भैक्ष] १ भिक्षा, भीख; २ भिक्षा-समूह; (ओघभा २१६; २१७)। "न कज्जं मम भिक्खेण" (उत्त २५, ४०)। °**जीविअ** वि [°जीविक] भीख से निर्वाह करने वाला, भिखमंगा; (प्राकृ ६; पि ८४)।

भिक्ख° देखो **भिक्खा**; (पि ६७; कुप्र १८३; धर्मवि ३८)।

भिक्खण न [भिक्षण] भीख माँगना, याचना; (धर्मसं १०००)।

भिक्खा स्त्री [भिक्षा] भीख, याचना; (उव; सुपा २७७; पिंग)। °**यर** त्रि [°चर] भिक्षुक; (कप्प)। °**यरिया** स्त्री [°चर्या] भिक्षा के लिये पर्यटन; (आचा; औप; ओघभा ७४; उवा)। °**लाभिय** पुं [°लाभिक] भिक्षुक-विशेष; (औप)।

भिक्खाग } वि [भिक्षाक] भिक्षा माँगने वाला, भिक्षा से **भिक्खाय** } शरीर-निर्वाह करने वाला; (ठा ४, १—पत्र १८५; आचा २, १, ११, १; उत्त ५, २८; कप्प)।

भिक्खु पुंस्त्री [भिक्षु] १ भीख से निर्वाह करने वाला, साधु, मुनि, संन्यासी, ऋषि; (आचा; सम २१; कुमा; सुपा ३८६; प्रासू १६६), "भिक्खणसीलो य तओ भिक्खु त्ति निदरिसिओ समए" (धर्मसं १०००)। २ बौद्ध संन्यासी; "कम्मं चयं न गच्छइ चउव्विहं भिक्खुसमयम्मि" (सूअनि ३१)। स्त्री—°**णी**; (आचा २, ५, १, १; गच्छ ३, ३१; कुप्र १८८)। °**पडिमा** स्त्री [°प्रतिमा] साधु का अभिग्रह-विशेष, मुनि का व्रत-विशेष; (भग; औप)। °**पडिया** स्त्री [°प्रतिज्ञा] साधु का उद्देश, साधु के निमित्त; "से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से जं पुण वत्थं जाणेज्जा असंजए भिक्खुपडियाए कीयं वा धोयं वा रत्तं वा" (आचा २, ५, १, ४)।

भिक्खुंड देखो **भिच्छुंड**; (राज)।

भिखारि (अप) वि [भिक्षाकारिन्] भिखारी, भीख माँगने वाला; (पिंग)।

भिगु देखो **भिउ**; (पउम ४, ८६; ओघ ३७४)।

भिगुडि देखो **भिउडि**; (पि १२४)।

भिच्च पुं [भृत्य] १ दास, सेवक, नौकर; (पाअ; सुर २, ६२; सुपा ३०७)। २ वि. अच्छी तरह पोषण करने वाला; (विपा १, ७—पत्र ७५)। ३ वि. भरणीय, पोषणीय; (पण्ह १, २—पत्र ४०)। °**भाव** पुं [°भाव] नौकरी; (सुर ४, १५६)।

भिच्छ° देखो **भिक्ख°**; (पि ६७)।
भिच्छा देखो **भिक्खा**; (गा १६२)।
भिच्छुंड वि [दे. भिक्षोण्ड] १ भिखारी, भिक्षा से निर्वाह करने वाला; २ पुं. बौद्ध साधु; (गाया १, १५—पत्र १६३)।
भिज्ज न [भेद्य] कर-विशेष, दण्ड-विशेष; (विपा १, १—पत्र ११)।
भिज्जा देखो **भिज्झा**; (ठा २, ३—पत्र ७१; सम ७१)।
भिज्जिअ देखो **भिज्झिअ**; (भग)।
भिज्झा स्त्री [अभिध्या] गृद्धि, लोभ; (कस)।
भिज्झिअ वि [अभिध्यित] लोभ का विषय, सुन्दर; (भग ६, ३—पत्र २५३)।
भिट्ट सक [दे] भेटना। कर्म—"बहुविहभिट्टणएहिं भिट्टिज्जइ लद्धमाणेहिं" (सिरि ६०१)।
भिट्टण न [दे] भेंट, उपहार; गुजराती में 'भटणुं'; (सिरि ७५६; ६०१)।
भिट्टा स्त्री [दे] ऊपर देखो; (सिरि ३६२)।
भिड सक [दे] भिडना—१ मिलना, सटना, सट जाना; २ लड़ना, मुठभेड करना। भिडइ; (भवि), भिडंति; (सिरि ४५०)। वकृ—**भिडंत**; (उप ३२० टी; भवि)।
भिडण न [दे] लड़ाई, मुठभेड; "सोंडीरसुहडभिडणिकलंपडं" (सुपा ५६६)।
भिडिय वि [दे] जिसने मुठभेड की हो वह, लड़ा हुआ; (महा; भवि)।
भिणासि पुं [दे] पक्षि-विशेष; (पण्ह १, १—पत्र ८)।
भिण्ण देखो **भिन्न**; (गउड; नाट—चैत ३४)। °**मरट्ठ** (अप) पुं [°महाराष्ट्र] छन्द का एक भेद; (पिंग)।
भित्त देखो **भिच्च**; (संक्षि ५)।
भित्तग } न [भित्तक] १ खण्ड, टुकड़ा; २ आधा हिस्सा;
भित्तय } (आचा २, ७, २, ८; ६; ७)।
भित्तर न [दे] १ द्वार, दरवाजा; (दे ६, १०५)। २ भीतर, अंदर; (पिंग)।
भित्ति स्त्री [भित्ति] भीत; (गउड; कुमा)। °**संध** न [°सन्ध] भीत का संधान; "जाएवि भित्तिसंधे खणियं खत्तं सुतिक्खसत्थेणं" (महा)।
भित्तिरूव वि [दे] टंक से छिन्न; (दे ६, १०५)।
भित्तिल न [भित्तिल] एक देव-विमान; (सम ३८)।
भित्तु वि [भेत्तृ] भेदन करने वाला; (पव २)।
भित्तुं } देखो **भिंद**।
भित्तूण }
भिद देखो **भिंद**। भिदंति; (आचा २, १, ६, ६)। भवि—भिदिस्संति; (आचा २, १, ६, ६; पि ५३२)।
भिन्न वि [भिन्न] १ विदारित, खण्डित; (णाया १, ८; उव; भग; पाअ; महा)। २ प्रस्फुटित, स्फोटित; (ठा ४, ४; पण्ह २,१)। ३ अन्य, विसदृश, विलक्षण; (ठा १०)। ४ परित्यक्त, उज्झित; "जीवजढं भावओ भिन्नं" (बृह १; आव ४)। ५ ऊन, कम, न्यून; (भग)। °**कहा** स्त्री [°कथा] मैथुन-संबद्ध बात, रहस्यालाप; (ओघ ६६)। °**पिंडवाइय** वि [°पिण्डपातिक] स्फोटित अन्न आदि लेने की प्रतिज्ञा वाला; (पण्ह २, १—पत्र १००)। °**मास** पुं [°मास] पचीस दिन का महीना; (जीत)। °**मुहुत्त** न [°मुहूर्त] अन्तर्मुहूर्त, न्यून मुहूर्त; (भग)।
भिप्फ पुं [भीष्म] १ स्वनाम-ख्यात एक कुरुवंशीय क्षत्रिय, गांगेय, भीष्म पितामह; २ साहित्य-प्रसिद्ध रस-विशेष, भयानक रस; ३ वि. भय-जनक, भयंकर; (हे २, ५४; प्राकृ ६५; कुमा)।
भिब्भल वि [विह्वल] व्याकुल; (हे २, ५८; ६०; प्राकृ २४; कुमा; वज्जा १५६)।
भिब्भलण न [विह्वलन] व्याकुल बनाना; (कुमा)।
भिब्भिस अक [भास् + यङ् = बाभास्य] अत्यन्त दीपना। वकृ **भिब्भसमाण**, **भिब्भिसमीण**; (णाया १, १—पत्र ३८; राय; पि ५५६)।
भिमोर पुं [दे. हिमोर] हिम का मध्य भाग(?); (हे २, १७४)।
भियग देखो **भयग**; (सण)।
भिलिंग सक [दे] अभ्यङ्ग करना, मालिश करना। भिलिंगेज्ज; (आचा २, १३, २; ४; ५; निचू १७)। वकृ—**भिलिंगंत**; (निचू १७)। प्रयो—भिलिंगावेज्ज; (निचू १७), वकृ—**भिलिंगात**; (निचू १७)।
भिलिंग } पुं [दे] धान्य-विशेष, मसूर; (कप्प; पंचा १०,
भिलिंगु } ७३)।
भिलिंज पुं [दे] अभ्यंग; (सूअ १, ४, २, ८ टी)।
भिलुगा स्त्री [दे] फटी हुई जमीन, भूमि की रेखा—फाट; (आचा २,१, ५, ५)।
भिल्ल पुं [भिल्ल] १ अनार्य देश-विशेष; (पव २७४)। २ एक अनार्य जाति; (सुर २, ४; ६, ३४; महा)।

भिल्लमाल पुं [**भिल्लमाल**] स्वनाम-ख्यात एक प्रसिद्ध क्षत्रिय-वंश; (विवे ११४)।
भिल्लायई स्त्री [**भल्लातकी**] भिलावाँ का पेड़; (उप १०३१ टी)।
भिल्लिअ वि [**भिलित**] खण्डित, तोड़ा हुआ; "पंचमहव्वय-तुंगो पायारो भिल्लिओ जेणं" (उव)।
भिस देखो **भास**=भास्। भिसइ; (हे ४, २०३; षड्)। वकृ—**भिसंत, भिसमाण, भिसमीण**; (पउम ३, १२७; ७५, ३७; णाया १, १; औप; कुमा; णाया १, १; पि ५६२)।
भिस सक [**प्लुष्**] जलाना; (प्राकृ ६५; धात्वा १४७)।
भिस सक [**भायय्**] डराना। भिसइ, भिंसइ; (प्राकृ ६४)।
भिस न [**भृश**] १ अत्यन्त, अतिशय; अतिशयित; "गलंत-भिसभिन्नदेहे अ" (पिंड ५८३; उप ३२० टी; सत्त ६१; भवि)।
भिस देखो **बिस**; (प्राकृ १५; पगण १; सुअ २, ३, १८)। °**कंदय** पुं [°**कन्दक**] एक प्रकार की खाने की मिष्ट वस्तु; (पगण १७—पत्र ५३३)। °**मुणाली** स्त्री [°**मृणाली**] कमलिनी; (पगण १)।
भिसअ पुं [**भिसज्**] १ वैद्य, चिकित्सक; (हे १, १८; कुमा)। २ भगवान् मल्लिनाथ का प्रथम गणधर; (पव ८)।
भिसंत देखो **भिस**=भास्।
भिसंत न [**दे**] अनर्थ; (दे ६, १०५)।
भिसग देखो **भिसअ**; (णाया १, १—पत्र १५४)।
भिसण सक [**दे**] फेंकना, डालना। भिसणेमि; (गा ३१२)।
भिसमाण देखो **भिस**=भास्।
भिसरा स्त्री [**दे**] मत्स्य पकड़ने का जाल-विशेष; (विपा १, ८—पत्र ८५)।
भिसाव सक [**भायय्**] डराना। भिसावेइ; (प्राकृ ६४)।
भिसिआ } स्त्री [**दे, बृषिका**] आसन-विशेष, ऋषि का
भिसिगा } आसन; (दे ६, १०५; भग; कुप्र ३७२; णाया १, ८; उप ६४८ टी; औप; सुअ २, २, ४८)।
भिसिण देखो **भिसण**। भिसणेमि; (गा ३१२ अ)।
भिसिणी स्त्री [**बिसिनी**] कमलिनी, पद्मिनी; (हे १, २३८; कुमा; गा ३०८; काप्र ३१; महा; पाअ)।
भिसी स्त्री [**बृषी**] देखो **भिसिआ**; (पाअ)।
भिसोल न [**दे**] नृत्य-विशेष; (ठा ४, ४—पत्र २८५)।
भिह } अक [**भी**] डरना। भिहइ; (षड्)। कृ—**भेअव्व**;
भी } (सुपा ५८४)।
भी स्त्री [**भी**] १ भय; "नो दंडभी दंडं समारभेज्जासि" (आचा)। २ वि. डरने वाला, भीरु; (आचा)।
भीअ वि [**भीत**] डरा हुआ; (हे २, १६३; ४, ५३; पाअ; कुमा; उवा)। °**भीय** वि [°**भीत**] अत्यन्त डरा हुआ; (सुर ३, १६५)।
भीइ स्त्री [**भीति**] डर, भय; (सुर २, २३७; सिरि ८३६; प्रासू २४)।
भीइअ वि [**भीत**] डरा हुआ; (उप ६४०)।
भीइर वि [**भेतृ**] डरने वाला; "ता मरणभीइरं विसज्जेह मं, पव्वइस्सं" (वसु)।
भीड [**दे**] देखो **भिड**। संकृ—**भीडिवि** (अप); (भवि)।
भीडिअ [**दे**] देखो **भिडिय**; (सुपा २६२)।
भीतर [**दे**] देखो **भित्तर**; (कुमा)।
भीम वि [**भीम**] १ भयंकर, भीषण; (पाअ; उव; पगह १, १; जी ४४; प्रासू १४४)। २ पुं. एक पाण्डव, भीमसेन; (गा ४४३)। ३ राक्षस-निकाय का दक्षिण दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८५)। ४ भारतवर्ष का भावी सातवाँ प्रतिवासुदेव; "अपराइए य भीमे महाभीमे य सुग्गीवे" (सम १५४)। ५ राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५, २६३)। ६ सगर चक्रवर्ती का एक पुत्र; (पउम ५, १७५)। ७ दमयंती का पिता; (कुप्र ४८)। ८ एक कुल-पुत्र; (कुप्र १२२)। ६ गुजरात का चौलुक्य-वंशीय एक राजा—भीमदेव; (कुप्र ४)। १० हस्तिनापुर नगर का एक कूटग्राह—राज-पुरुष; (विपा १, २)। °**एव** पुं [°**देव**] गुजरात का एक चौलुक्य राजा; (कुप्र ५)। °**कुमार** पुं [°**कुमार**] एक राज-पुत्र; (धम्म)। °**प्पभ** पुं [°**प्रभ**] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५, २५६)। °**रह** पुं [°**रथ**] एक राजा, दमयंती का पिता; (कुप्र ४८)। °**सेण** पुं [°**सेन**] १ एक पाण्डव, भीम; (णाया १, १६)। २ एक कुलकर पुरुष; (सम १५०)। °**ावलि** पुं [°**ावलि**] अंग-विद्या का जानकार पहला रुद्र पुरुष; (विचार ४७३)। °**ासुर** न [°**ासुर**] शास्त्र-विशेष; (अणु)।
भीरु } वि [**भीरु, °क**] डरपोक; (चेइअ ६६; गउड;
भीरुअ } उत्त २७, १०; अभि ८२)।

भीस सक [भीषय्] डराना। भीसइ; (धात्वा १४७), भीसेइ; (प्राकृ ६४)।

भीसण वि [भीषण] भयंकर, भय-जनक; (जी ४६; सण; पात्र)।

भीसय देखो **भेसम**; (राज)।

भीसाव देखो **भीस**। भीसावेइ; (धात्वा १४७)।

भीसिद (शौ) वि [भीषित] भय-भीत किया हुआ, डराया हुआ; (नाट—माल ५६)।

भीह अक [भी] डरना। भीहइ; (प्राकृ ६४)।

भुअ देखो **भुंज**। भुअइ, भुअए; (षड्)।

भुअ न [दे] भूर्ज-पत्र, वृक्ष-विशेष की छाल; (दे ६, १०६)। °**रुक्ख** पुं [°वृक्ष] वृक्ष-विशेष; भूर्जपत्र का पेड़; (पराण १—पत्र ३४)। °**वत्त** न [°पत्र] भोजपत्र; (गउड ६४१)।

भुअ पुंस्त्री [भुज] १ हाथ, कर; (कुमा)। २ गणित-प्रसिद्ध रेखा-विशेष; (हे १, ४)। स्त्री—°**आ**; (हे १, ४; पिंग; गउड; से १, ३)। °**परिसप्प** पुंस्त्री [°परिसर्प] हाथ से चलने वाला प्राणी, हाथ से चलने वाली सर्प-जाति; (जी २१; पराण १; जीव २)। स्त्री—°**प्पिणी**; (जीव २)। °**मूल** न [°मूल] कक्षा, काँख; (पात्र)। °**मोयग** पुं [°मोचक] रत्न की एक जाति; (भग; औप; उत्त ३६, ७६; तंदु २०)। °**सप्प** पुं [°सर्प] देखो °**परिसप्प**; (पव १५०)। °**ल** वि [°वत्] बलवान् हाथ वाला; (सिरि ७६६)।

भुअअ देखो **भुअग**; (गउड; पिंग; से ७, ३६; पात्र)।

भुअइंद पुं [भुजगेन्द्र] १ श्रेष्ठ सर्प; (गउड)। २ शेष नाग, वासुकि; (अच्चु २७)। °**वुरेस** पुं [°पुरेश] श्रीकृष्ण; (अच्चु २७)।

भुअईसर } पुं [भुजगेश्वर] ऊपर देखो; (पराह १, ४—पत्र ७८; अच्चु ३६)। **णअरणाह** पुं
भुअएसर }

[°नगरनाथ] श्रीकृष्ण; (अच्चु ३६)।

भुअंग पुं [भुजंग] १ सर्प, साँप; (से ५, ६०; गा ६४०; गउड; सुर २, २४५; उव; महा; पात्र)। २ विट, रंडीबाज, वेश्या-गामी; (कुमा; वज्जा ११६)। ३ जार, उपपति; (कप्पू)। ४ द्यूतकार, जुआड़ी; (उप पृ २४२)। ५ चोर, तस्कर; "देव सलोत्तम्मि चेव मायापओयकुसलो वाणिययवेसधारी गहिओ महाभुअंगो" (स ४३०)। ६ बदमाश, ठग; "तावसवेसधारिणो गहियनलियापओगक्खग्गा विसेयाकुमारसंतिया चत्तारि महाभुयंग त्ति" (स ५२४)। °**किंति** स्त्री [°कृत्ति] कंचुक; (गा ६४०)। °**पआत** (अप) देखो °**प्पजाय**; (पिंग)। °**प्पजाय** न [°प्रयात] १ सर्प-गति; २ छन्द-विशेष; (भवि)। °**राअ** पुं [°राज] शेष नाग; (लि ८२)। °**वइ** पुं [°पति] शेष नाग; (गउड)। °**पआअ** (अप) देखो °**प्पजाय**; (पिंग)।

भुअंगम पुं [भुजंगम] १ सर्प, साँप; (गउड १७८; पिंग)। २ स्वनाम-ख्यात एक चोर; (महा)।

भुअंगिणी } स्त्री [भुजङ्गी] १ विद्या-विशेष; (पउम ७,
भुअंगी } १४०)। २ नागिन; (सुपा १८१; भत्त ११७)।

भुअग पुं [भुजग] १ सर्प, साँप, (सुर २, २३६; महा; जी ३१)। २ एक देव-जाति, नाग-कुमार देव; (पराह १, ४)। ३ वानव्यंतर देवों की एक जाति, महोरग; (इक)। ४ रंडीबाज; "मं कुट्टणिव्व भुयगं तुमं पयारेसि अलियवयणेहिं" (कुप्र ३०६)। ५ वि भोगी, विलासी; (णाया १, १ टी—पत्र ४; औप)। °**परिरिंगिअ** न [°परिरिङ्गित] छन्द-विशेष; (अजि १६)। °**वई** स्त्री [°वती] एक इन्द्राणी, अतिकाय-नामक महोरगेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (इक; ठा ४, १; णाया २)। °**वर** पुं [°वर] द्वीप-विशेष; (राज)।

भुअग वि [भोजक] पूजक, सेवा-कारक; (णाया १, १ टी—पत्र ४; औप; अंत)।

भुअगा स्त्री [भुजगा] एक इन्द्राणी, अतिकाय-नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ४, १; णाया २; इक)।

भुअगीसर देखो **भुअईसर**; (तंदु २०)।

भुअण देखो **भुवण**; (चंड; हास्य १२२; पिंग; गउड)।

भुअप्पइ }
भुअप्फइ } देखो **बहस्सइ**; (पि २१२; षड्)।
भुअस्सइ }

भुआ देखो **भुअ**=भुज।

भुइ स्त्री [भृति] १ भरण; २ पोषण; ३ वेतन; ४ मूल्य; (हे १, १३१; षड्)।

भुउडि देखो **भिउडि**; (पि १२४)।

भुंगल न [दे] वाद्य-विशेष; (सिरि ४१२)।

भुंज सक [भुज्] १ भोजन करना। २ पालन करना। ३ भोग करना। ४ अनुभव करना। भुंजइ; (हे ४, ११०; कस; उवा)। भुंजेज्जा; (कप्प)। "**भिक्खुयं भुंजसु** सुहेणं" (सिरि १०४४)। भूका—भुंजित्था; (पि ५१७)।

भवि—भुंजिही, भोक्खसि, भोक्खामि, भोक्खसे, भोच्छं; (पि ५३२; कप्प; हे ३, १७१)। कर्म—भुज्जइ, भुंजिज्जइ; (हे ४, २४९)। वकृ—**भुंजंत, भुंजमाण, भुंजेमाण, भुंजाण**; (आचा; कुमा; विपा १, २; सम ३९; कप्प; पि ५०७; धर्मवि १२७)। कवकृ—**भुज्जंत**; (सुपा ३७५)। संकृ—**भुंजिअ, भुंजिआ, भुंजिऊण, भुंजिऊणं, भुंजित्ता, भुंजित्तु, भोच्चा, भोत्तुं, भोत्तूण**; (पि ५९१; सूअ १, ३, ४, २; सण; पि ५८५; उत्त ६, ३; पि ५०७; हे २, १५; कुमा; प्राकृ ३४)। हेकृ—**भुंजित्तए, भोत्तुं, भोत्तए**; (पि ५७८; हे ४, २१२; आचा), **भुंजण**; (अप); (कुमा)। कृ—**भुज्ज, भुंजियव्व, भुंजेयव्व, भोत्तव्व, भुत्तव्व, भोज्ज, भोग्ग**; (तंदु ३३; धर्मवि ४१; उप १३९ टी; श्रा१६; सुपा ४६५; पिंडभा ४५; सम्मत्त २१६; गाया १, १; पउम ६४, ६४; हे ४, २१२; सुपा ४६५; पउम ६८, २२; दे ७, ३१; ओघ २१४; उप पृ ७५; सुपा १६३; भवि)।

भुंजग वि [**भोजक**] भोजन करने वाला; (पिंड १२३)।

भुंजण देखो **भुंज=भुज्**।

भुंजण न [**भोजन**] भोजन; (पिंड ५२१)।

भुंजणा स्त्री. ऊपर देखो; (पव १०१)।

भुंजय देखो **भुंजग**; (सण)।

भुंजाव सक [**भोजय्**] १ भोजन कराना। २ पालन कराना। ३ भोग कराना। भुंजावेइ; (महा)। कवकृ—**भुंजाविज्जंत**; (पउम २, ५)। संकृ—**भुंजाविऊण, भुंजावित्ता**; (पि ५८२)। हेकृ—**भुंजावेउं**; (पंचा १०, ४८ टी)।

भुंजावय वि [**भोजक**] भोजन कराने वाला; (स २५१)।

भुंजाविअ वि [**भोजित**] जिसको भोजन कराया गया हो वह; (धर्मवि ३८; कुप्र १६८)।

भुंजिअ देखो **भुंज=भुज्**।

भुंजिअ देखो **भुत्त**; (भवि)।

भुंजिर वि [**भोक्तृ**] भोजन करने वाला; (सुपा ११)।

भुंड पुंस्त्री [**दे**] सूकर, वराह; गुजराती में 'भुंड'; (दे ६, १०६)। स्त्री—°**डी**, °**डिणी**; (दे ६, १०६ टी; भवि)।

भुंडीर [**दे**] ऊपर देखो; (दे ६, १०६)।

भुंभल न [**दे**] मद्य-पात्र; (कम्म १, ५१)।

भुंहडि (अप) देखो **भूमि**; (हे ४, ३९५)।

भुक्क अक [**बुक्क्**] भूँकना, श्वान का बोलना। भुक्कइ; (गा ६६४ अ)।

भुक्कण पुं [**दे**] १ श्वान, कुत्ता; २ मद्य आदि का मान; (दे ६, ११०)।

भुक्किअ न [**बुक्कित**] श्वान का शब्द; (पाअ; पि २०६)।

भुक्किर वि [**बुक्कितृ**] भूँकने वाला; (कुमा)।

भुक्खा स्त्री [**दे, बुभुक्षा**] भूख, क्षुधा; (दे ६, १०६; गाया १, १—पत्र १८; महा; उप ३७९; आरा ९६; सम्मत्त १५७)। °**लु** वि [°**वत्**] भूखा; (धर्मवि ६६)।

भुक्खिअ वि [**दे, बुभुक्षित**] भूखा, क्षुधातुर; (पाअ; कुप्र १२६; सुपा ५०१; उप ७२८ टी; स ५८३; वै २६)।

भुगुभुग अक [**भुगभुगाय्**] भुग भुग आवाज करना। वकृ—**भुगुभुगेंत**; (पउम १०५, ५६)।

भुग्ग वि [**भुग्न**] १ मोड़ा हुआ, वक्र, कुटिल; (गाया १, ८—पत्र १३३; उवा)। २ वि. भग्न, टूटा हुआ; (गाया १, ८)। ३ दग्ध, जला हुआ; "किं मज्झ जीविएणं एवं-विहपराभवग्गिभुग्गाए" (उप ७६८ टी)। ४ भूना हुआ; "चणउव्व भुग्गु" (कुप्र ४३२)।

भुज (अप) देखो **भुंज**। भुजइ; (सण)।

भुजंग देखो **भुअंग**; (भवि)।

भुजग देखो **भुअग=भुजग**; (धर्मवि १२४)।

भुज्ज देखो **भुंज**। भुज्जइ; (षड्)।

भुज्ज पुं [**भूर्ज**] १ वृक्ष-विशेष; २ न. वृक्ष-विशेष की छाल; (कप्पू; उप पृ १२७; सुपा २७०)। °**पत्त**, °**वत्त** न [°**पत्र**] वही अर्थ; (आवम; नाट—विक्र ३३)।

भुज्ज देखो **भुंज**।

भुज्ज वि [**भूयस्**] प्रभूत, अनल्प; (औप; पि ४१४)।

भुज्जिय वि [**दे, भुग्न**] १ भूना हुआ धान्य; २ पुं. धाना, भूना हुआ यव; (पण्ह २, ५—पत्र १४८)।

भुज्जो अक [**भूयस्**] फिर, पुनः; (उवा; सुपा २७२)।

भुण्ण पुं [**भ्रूण**] १ स्त्री का गर्भ; २ बालक, शिशु; (संक्षि १७)।

भुत्त वि [**भुक्त**] १ भक्षित; (गाया १, १; उवा; प्रासू ३८)। २ जिसने भोजन किया हो वह; "ते भायरो न भुत्ता" (सुख १, १५; कुप्र १२)। ३ सेवित; ४ अनुभूत; "अम्म ताय मए भोगा भुत्ता विसफलोवमा" (उत्त १६, ११; गाया १, १)। ५ न. भक्षण, भोजन; "हासभुत्तासियाणि य" (उत्त १६, १२)। ६ विष-विशेष; (ठा ६)।

थोड़ी कर्म-प्रकृति के बन्ध के बाद होने वाला अधिक-प्रकृति-बन्ध; (पंच ५, १२)।

भूओद पुं [**भूतोद**] समुद्र-विशेष; (सुज्ज १९)।

भूओवघाइय वि [**भूतोपघातिन्, °क**] जीवों की हिंसा करने वाला; (सम ३७; औप)।

भूंहडी (अप) देखो **भूमि**; (हे ४, ३९५ टि)।

भूण देखो **भुण्ण**; (संक्षि १७; सम्मत ८६)।

भूज देखो **भुज्ज**=भूर्ज; (प्राकृ २६)।

भूमआ देखो **भुमया**; (प्राप्र)।

भूमणया स्त्री [**दे**] स्थगन, आच्छादन; (वव १)।

भूमि स्त्री [**भूमि**] १ पृथिवी, धरती; (पउम ९९, ४८; गउड)। २ क्षेत्र; (कुमा)। ३ स्थल, जमीन, जगह, स्थान; (पाअ; उवा; कुमा)। ४ काल, समय; (कप्प)। ५ माल, मंजला, तला; "सत्तभूमियं पासायमवणं" (महा)। °**कंप** पुं [°**कम्प**] भू-कम्प; (पउम ९९, ४८)। °**गिह**, °**घर** न [°**गृह**] नीचे का घर, भोंयरा; (श्रा १६; महा)। °**गोयरिय** वि [°**गोचरिक**] स्थलचर, मनुष्य आदि; (पउम ५९, ५२)। स्त्री —°**री**; (पउम ७०, १२)। °**च्छत्त** न [°**च्छत्र**] वनस्पति-विशेष; (दे)। °**तल** न [°**तल**] धरा-पृष्ठ, भूतल; (सुर २, १०५)। °**देव** पुं [°**देव**] ब्राह्मण; (मोह १०७)। °**फोड** पुं [°**स्फोट**] वनस्पति-विशेष; (जी ९)। °**फोडी** स्त्री [°**स्फोटी**] एक जात का जहरीला जन्तु; "पासवणं कुणमाणो डक्को गुज्झम्मि भूमि-फोडीए" (सुपा ६२०)। °**भाग** पुं [°**भाग**] भूमि-प्रदेश; (महा)। °**रुह** पुंन [°**रुह**] भूमिस्फोट, वनस्पति-विशेष; (श्रा २०; पव ४)। °**वइ** पुं [°**पति**] राजा; (उप पृ १८८)। °**वाल** पुं [°**पाल**] राजा; (गउड)। °**सुअ** पुं [°**सुत**] मंगल-ग्रह; (मृच्छ १०६)। °**हर** देखो °**घर**; (महा)। देखो **भूमी**।

भूमिआ स्त्री [**भूमिका**] १ तला, मंजला, माल; (महा)। २ नाटक में पात्र का वेशान्तर-ग्रहण; (कप्पू)।

भूमिंद पुं [**भूमीन्द्र**] राजा, नरपति; (सम्मत २१७)।

भूमी देखो **भूमि**; (से १२, ८८; कप्पू; पिंड ४४८; पउम ६४, १०)। °**तुडयकूड** न [°**तुडगकूट**] एक विद्याधर-नगर; (इक)। °**भुयंग** पुं [°**भुजङ्ग**] राजा; (मोह ८८)।

भूमीस पुं [**भूमीश**] राजा; (श्रा १२)।

भूमीसर पुं [**भूमीश्वर**] राजा; (सुपा ५०७)।

भूयिट्ठ देखो **भूइट्ठ**; (हास्य १२३)।

भूरि वि [**भूरि**] १ प्रचुर, अत्यन्त, प्रभूत; (गउड; कुमा; सुर १, २४८; २, ११४)। २ न. स्वर्ण, सोना; ३ धन, दौलत; (सार्ध ८४)। °**स्सव** पुं [°**श्रवस्**] एक चन्द्रवंशीय राजा; (नाट —वेणी ३७)।

भूस सक [**भूषय्**] १ सजावट करना। २ शोभाना, अलंकृत करना। भूसेमि; (कुमा)। वकृ—**भूसयंत**; (रंभा)। कृ—**भूस**; (रंभा)।

भूसण न [**भूषण**] १ अलंकार, गहना; (पाअ; कुमा)। २ सजावट; ३ शोभा-करण; (पण्ह २, ४; सण)।

भूसा स्त्री [**भूषा**] ऊपर देखो; (दे ३, ८; कुमा)।

भूसिअ वि [**भूषित**] मण्डित, अलंकृत; (गा ५२०; कुमा; काल)।

भूहरी स्त्री [**दे**] तिलक-विशेष; (सिरि १०२२)।

भे अ [**भोस्**] आमन्त्रण-सूचक अव्यय; (औप)।

भेअ पुंन [**भेद**] १ प्रकार; "पुढविभेआइ इच्चाई" (जी ४; ५)। २ विशेष, पार्थक्य; (ठा २, १; गउड; कप्पू)। ३ एक राज-नीति, फूट; "दाणमाणोवयारेहिं साममेआइएहिं य" (प्रासू ६७), "सामदंडभेयउवप्पयाणणीइमुप्पउत्तणयविहिन्नू" (णाया १, १ —पत्र ११)। ४ घाव, आघात; "वड्ढेंति वम्महविसमसरप्पसारा ताणं पआसइ लहुं चिअ चित्तभेअं" (कप्पू)। ५ मण्डल का अपान्तराल, बीच का भाग; "पडिवत्तीओ उदए तह अत्थमणेसु य। भेयघा(? घा)ओ कणकला मुहुत्ताण गतीति य" (सुज्ज १, १)। ६ विच्छेद, पृथक्करण, विदारण; (औप; अणु)। °**कर** वि [°**कर**] विच्छेद-कर्ता; (औप)। °**घाय** पुं [°**घात**] मंडल के बीच में गमन; (सुज्ज १, १)। °**समावन्न** वि [°**समापन्न**] भेद-प्राप्त; (भग)।

भेअग वि [**भेदक**] भेद-कारक; (औप; भग)।

भेअण न [**भेदन**] १ विदारण, विच्छेदन; "कुंतग्ग सत्तया-यालभेयणं नूण सामत्थं" (चेइय ७४६; प्रासू १४०)। २ भेद, फूट करना; (पव १०६)। ३ विनाश; "कुलसयणमित्त-भेयणकारिकाओ" (तंदु ४६)।

भेअय देखो **भेअग**; (भग)।

भेअव्व देखो **भिंद**।

भेअव्व देखो **भी**=भी।

भेइल्ल वि [**भेदवत्**] भेद वाला; "सम्मत्तणाणचरणा पत्तेयं अट्ठअट्ठभेइल्ला" (संबोध २२; पंच ४, १)।

भेउर देखो **भिउर**; (आचा; ठा २, ३)।

भेंडी स्त्री [भिण्डा, °ण्डी] गुल्म-विशेष, एक जाति की वनस्पति; (पण्ह १—पत्र ३२)।

भेंभल देखो **भिंभल**; (से ६, ३७)।

भेंभलिद (शौ) देखो **भिंभलिअ**; (पि २०६)।

भेक देखो **भेग**; (दे १, १४७)।

भेक्खस पुं [दे] राक्षस-रिपु, राक्षस का प्रतिपक्षी; (कुप्र ११२)।

भेग पुं [भेक] मेंढक; (दे ४, ६; धर्मसं ५५७)।

भेच्छ° देखो **भिंद**।

भेज्ज देखो **भिज्ज**; (विपा १, १ टी—पत्र १२)।

भेज्ज, **भेज्जलय**, **भेज्जलल** वि [दे] भीरु, डरपोक; (दे ६, १०७; षड्)।

भेड वि [दे. भेर] भीरु, कातर; (हे १, २५१; दे ६, १०७; कुमा २, ६२)।

भेडक देखो **भेलय**; (मृच्छ १८०)।

भेत्तु वि [भेत्तृ] भेदन-कर्ता; (आचा)।

भेत्तुआण, **भेत्तुं**, **भेत्तूण** देखो **भिंद**।

भेद देखो **भिंद**। संकृ—**भेदिअ**; (मृच्छ १४३)।

भेद देखो **भेअ**; (भग)।

भेदअ देखो **भेअय**; (वेणी ११२)।

भेदणया देखो **भेअण**; (उप पृ ३२१)।

भेदिअ देखो **भेद=भिंद**।

भेदिअ वि [भेदित] भिन्न किया हुआ; (भग)।

भेरंड पुं [भेरण्ड] देश-विशेष; (राज)।

भेरव न [भैरव] १ भय, डर; (कप्प)। २ पुं. राक्षस आदि भयंकर प्राणी; (सुअ १, २, २, १४; १६)। ३ देखो **भइरव**; (पउम ६, १८३; चेइय १००; औप; महा; पि ६१)। °**णंद** पुं [°**नन्द**] एक योगी का नाम; (कप्पू)।

भेरि, **भेरी** स्त्री [भेरि, °री] वाद्य-विशेष, ढक्का; (कप्प; पिंग; औप; सण)।

भेरुंड पुं [भेरुण्ड] भारुंड पक्षी, दो मुँह और एक शरीर वाला पक्षि-विशेष; (दे ६, ५०)।

भेरुंड पुं [दे] १ चिलक, चित्ता, श्वापद पशु-विशेष; (दे ६, १०८)। २ निर्विष सर्प; "सविसो हम्मइ सप्पो भेरुंडो तत्थ मुच्चइ" (प्रासू १६)।

भेरुताल पुं [भेरुताल] वृक्ष-विशेष; (राज)।

भेल सक [मेलय्] मिश्रण करना, मिलाना। गुजराती में 'भेळववुं'। संकृ—**भेलइत्ता**; (पि २०६)।

भेलय पुं [दे. भेलक] बेडा, उडुप, नौका; (दे ६, ११०)।

भेलविय वि [भेलित] मिश्रित, युक्त; "सो भयभेलवियदिट्ठी जलं ति मन्नमाणो" (वसु)।

भेली स्त्री [दे] १ आज्ञा, हुकुम; २ बेडा, नौका; ३ चेटी, दासी; (दे ६, ११०)।

भेस सक [भेषय्] डराना। भेसइ, भेसेइ; (धात्वा १४८; प्राकृ ६४)। कर्म—भेसिज्जए; (धर्मवि ३)। वकृ—**भेसंत**, **भेसयंत**; (पउम ५३, ८६; श्रा १२)। कवकृ—**भेसिज्जंत**; (पउम ४६, ५४)। संकृ—**भेसेऊण**; (काल; पि ५८६)। हेकृ—**भेसेउं**; (कुप्र १११)।

भेसग पुं [भीष्मक] रुक्मिणी का पिता, कौण्डिन्य-नगर का एक राजा; (णाया १, १६; उप ६४८ टी)।

भेसज न [भैषज] औषध; (पउम १४, ५४; ५६)।

भेसज्ज न [भैषज्य] औषध, दवाई; (उवा; औप; रंभा)।

भेसण न [भीषण] डराना, त्रासन; (ओघ २०१)।

भेसणा स्त्री [भीषणा] ऊपर देखो; (पण्ह २, १—पत्र १००)।

भेसयंत देखो **भेस**।

भेसाव देखो **भेस**। भेसावइ; (धात्वा १४८)।

भेसाविय, **भेसिअ** वि [भीषित] डराया हुआ; (पउम ४६, ५३; से ७, ४५; सुर २, ११०; श्रावक ६३ टी)।

भो देखो **भुंज**। संकृ—**भोऊण**, **भोत्तूण**; (धात्वा १४८; संक्षि ३७)। हेकृ—**भोउं**; (धात्वा १४८; संक्षि ३७)। कृ—**भोत्तव्व**; (संक्षि ३७), **भोअव्व**; (धात्वा १४८)।

भो अ [भोस्] आमन्त्रण-द्योतक अव्यय; (प्राकृ ७६; उवा; औप; जी ५०)।

भो° स [भवत्] तुम, आप। स्त्री—**भोई**; (उत्त १४, ३३; स ११६)।

भोअ सक [भोजय्] खिलाना, भोजन कराना। भोयइ, भोयए; (सम्मत्त १२५; सुअ २, ६, २६) संकृ—**भोइत्ता**; (उत्त ६, ३८)।

भोअ पुं [दे. भोग] भाड़ा, किराया; (दे ६, १०८)।

भोअ देखो **भोग**; (स ६५८; पाअ; सुपा ४०४; रंभा ३१)।

भोअ पुं [भोज] उज्जयिनी नगरी का एक सुप्रसिद्ध राजा; (रंभा)। °**राय** पुं [°**राज**] वही अर्थ; (सम्मत्त ७५)।

भोअ वि [**भौत**] भस्म से उपलिप्त; (धर्मसं ४१)।

भोअग वि [**भोजक**] १ खाने वाला; (पिंड ११७)। २ पालन-कर्ता; (बृह १)।

भोअडा स्त्री [**दे**] कच्छ, लंगोट; "सेवत्थं भोयडादीयं" (निचू १)।

भोअण न [**भोजन**] १ भक्षण, खाना; २ भात आदि खाद्य वस्तु; (आचा; ठा ६; उत्ता; प्रासू १८०; स्वप्न ६२; सण)। ३ लगातार सतरह दिनों का उपवास; (संबोध ५८)। ४ उपभोग, "बिल्वल्वाइं कामभोगाइं समारंभंति भोयणाए" (सुअ २, १, १७)। °**रुक्ख** पुं [°**वृक्ष**] भोजन देने वाली एक कल्पवृक्ष-जाति; (पउम १०२, ११६)।

भोअल (अप) पुं [**दे. भोल**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

भोइ वि [**भोजिन्**] भोजन करने वाला; (आचा; पिंड १२०; उत्त)।

भोइ देखो **भोगि**; (सुपा ४०४; संबोध ५०; पिंग; रंभा)।

भोइ } पुं [**दे. भोगिन्**, °**क**] १ ग्रामाध्यक्ष, ग्राम का
भोइअ } मुखिया, गाँव का नायक; (वव ७; दे ६, १०८; उत्त १५, ६; बृह १; ओघभा ४३; पिंड ४३६; सुख १, ३; पव २६८; भवि; सुपा १६५; गा ५५६)। २ महेश; (षड्)।

भोइअ वि [**भोगिक**] १ भोग-युक्त, भोगासक्त, विलासी; (उत्त १५, ६; गा ५५६)। २ भोग-वंश में उत्पन्न; (उत्त १५, ६)।

भोइअ वि [**भोजित**] जिसको भोजन कराया गया हो वह; (सुर १, २१४)।

भोइणी स्त्री [**दे. भोगिनी**] ग्रामाध्यक्ष की पत्नी; (पिंड ४३६; गा ६०३; ७३७; ७७६; निचू १०)।

भोइया } स्त्री [**भोग्या**] १ भार्या, पत्नी, स्त्री; (बृह १;
भोई } पिंड ३६८)। २ वेश्या; (वव ७)।

भोई देखो **भो°**=भवत्।

भोंड देखो **भुंड**; (गा ४०२)।

भोक्ख° देखो **भुंज**।

भोग पुंन [**भोग**] १ स्पर्श, रस आदि विषय, उपभोग्य पदार्थ; "रूवी भंते भोगा अरूवी" (भग ७, ७—पत्र ३१०), "भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ" (विपा १, २)। २ विषय-सेवा; (भग १६, ३३; औप), "भुंजंता बहुविहाइं भोगाइं" (संथा २७)। ३ मदन-व्यापार, काम-चेष्टा; "कामभोगे यं खलु मए अप्पाहट्टु" (सुअ २, १, १२)। ४ विषयेच्छा, विषयाभिलाष; (आचा)। ५ विषय-सुख; "चइत्तु भोगाइं असासयाइं" (उत्त १३, २०), 'तुच्छा य कामभोगा" (प्रासू ६६), "अहिभोगे विय भोगे निहणंव धणं मलंव कमलंपि मन्नंता" (सुपा ८३)। ६ भोजन, आहार; (पंचा ५, ४; उप २०७)। ७ गुरु-स्थानीय जाति-विशेष, एक क्षत्रिय-कुल; (कप्प; सम १५१; ठा ३, १—पत्र ११३; ११४)। ८ अमात्य आदि गुरु-स्थानीय लोक, गुरु-वंश में उत्पन्न; (औप)। ९ शरीर, देह; (तंदु २०)। १० सर्प की फणा; (सुपा)। ११ सर्प का शरीर; (दे ६, ८६)। °**करा** देखो **भोगंकरा**; (इक)। °**कुल** न [°**कुल**] पूज्य-स्थानीय कुल-विशेष; (पि ३६७)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष; (आवम)। °**पुरिस** पुं [°**पुरुष**] भोग-तत्पर पुरुष; (ठा ३, १—पत्र ११३; ११४)। °**भागि** वि [°**भागिन्**] भोग-शाली; (पउम ५६, ८८)। °**भूम** वि [°**भूम**] भोग-भूमि में उत्पन्न; (पउम १०२, १६६)। °**भूमि** स्त्री [°**भूमि**] देवकुरु आदि अकर्म-भूमि; (इक)। °**भोग** पुंन [°**भोग**] भोगार्ह शब्दादि-विषय, मनोज्ञ शब्दादि; (भग ७, ७; विपा १, ६)। °**मालिणी** स्त्री [°**मालिनी**] अधोलोक में रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८; इक)। °**राय** पुं [°**राज**] भोग-कुल का राजा; (दस २, ८)। °**वइया** स्त्री [°**वतिका**] लिपि-विशेष; (पराग १—पत्र ६२), "भोगवयता(इया)" (सम ३५)। °**वई** स्त्री [°**वती**] १ अधोलोक में रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८; इक)। २ पक्ष की दूसरी, सातवीं और बारहवीं रात्रि-तिथि; (सुज्ज १०, १५)। °**विस** पुं [°**विष**] सर्प की एक जाति; (पराग १—पत्र ५०)।

भोगंकरा स्त्री [**भोगंकरा**] अधोलोक में रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८)।

भोगा स्त्री [**भोगा**] देवी-विशेष; (इक)।

भोगि पुं [**भोगिन्**] १ सर्प, साँप; (सुपा ३६६; कुप्र २६८)। २ पुंन. शरीर, देह; (भग २, ५; ७, ७)। ३ वि. भोग-युक्त, भोगासक्त, विलासी; (सुपा ३६६; कुप्र २६८)।

भोग्ग }
भोच्चा }
भोच्छ° } देखो **भुंज**।
भोज्ज }

भोट्टंत पुं [**भोटान्त**] १ देश-विशेष, नेपाल के समीप का एक भारतीय देश, भोटान; २ भोटान का रहने वाला; (पिंग)।

भोण देखो **भोअण**; (षड्)।

भोत्त देखो **भुत्त**; (षड्; सुख २, ६; सुपा ४६५)।
भोत्तए } देखो **भुंज**।
भोत्तव्व }
भोत्ता देखो **भू=भुव=भू**।
भोत्तु वि [**भोक्तृ**] भोगने वाला; (विसे १५६६; दे २, ४८)।
भोत्तुं } देखो **भुंज**।
भोत्तूण }
भोत्तूण देखो **भुत्तूण**; (दे ६, १०६)।
भोदूण देखो **भू=भुव=भू**।
भोम वि [**भौम**] १ भूमि-संबन्धी; (सूअ १, ६, १२)। २ भूमि में उत्पन्न; (ओघ २८; जी ५)। ३ भूमि का विकार; (ठा ८)। ४ पुं. मंगल-ग्रह; (पाअ)। ५ पुंन. नगराकार विशिष्ट स्थान; ६ नगर; (सम १५; ७८)। ७ निमित्त-शास्त्र विशेष, भूमि-कम्पादि से शुभाशुभ फल बतलाने वाला शास्त्र; (सम ४६)। ८ अहोरात्र का सत्ताईसवाँ मुहूर्त; "अग्गवं च भोम(? म)रिसहे" (सुज्ज १०, १३)। °**लिय** न [°**लीक**] भूमि-संबन्धी मृषावाद; (पराह १, २)।
भोमिज्ज देखो **भोमेज्ज**; (सम २; उत्त ३६, २०३)।
भोमिर देखो **भमिर**; "लब्भइ णाइअणंते संसारे सुभोमिरो जीवो" (संबोध ३२)।
भोमेज्ज } वि [**भौमेय**] १ भूमि का विकार, पार्थिव; (सम
भोमेयग } १००; सुपा ४८)। २ पुं. एक देव-जाति, भवनपति-नामक देव-जाति; (सम २)।
भोरुड पुं [**दे**] भारुंड पक्षी; (दे ६, १०८)।
भोल सक [**दे**] ठगना; (सुपा ५२२)।
भोल वि [**दे**] भद्र, सरल चित्त वाला; गुजराती में 'भोळुं'। स्त्री—°ला, °लिया; (महानि ६; सुपा ५१४)।
भोलग पुं [**भोलक**] यक्ष-विशेष; "भोलगनामा जक्खो अभिवंछियसिद्धिदा अत्थि" (धर्मसं १४१)।
भोलव सक [**दे**] ठगना; गुजराती में 'भोळववुं'। संकृ—**भोलविउं**; (सुपा २६४)।
भोलवण न [**दे**] वञ्चन, प्रतारण; (सम्मत्त २२६)।
भोलविअ } वि [**दे**] वञ्चित, ठगा हुआ; (कुप्र ४३५;
भोलिअ } सुपा ५२२)।
भोल्लय न [**दे**] पाथेय-विशेष, प्रबन्ध-प्रवृत्त पाथेय; (दे ६, १०८)।
भोवाल (अप) देखो **भू-वाल**; (भवि)।
भोहा (अप) देखो **भू=भ्रू**; (पिंग)।
भ्रंत्रि (अप) देखो **भंति=भ्रान्ति**; (हे ४, ३६०)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि भआराइसद्दसंकलणो तीसइमो तरंगो समत्तो।

---:०:---

म

म पुं [**म**] ओष्ठ-स्थानीय व्यञ्जन-वर्ण विशेष; (प्राप)।
म अ [**मा**] मत, नहीं; (हे ४, ४१८; कुमा; पि ६४; ११४; भवि)।
मअआ स्त्री [**मृगया**] शिकार; (अभि ५५)।
मइ स्त्री [**मृति**] मौत, मरण; (सुर २, १४३)।
मइ स्त्री [**मति**] १ बुद्धि, मेधा, मनीषा; "मेहा मई मणीसा" (पाअ; सुर २, ६५; कुमा; प्रासू ७१)। २ ज्ञान-विशेष, इन्द्रिय और मन से उत्पन्न होने वाला ज्ञान; (ठा ४, ४; णंदि; कम्म ३, १८; ४, ११; १४; विसे ६७)। °**अन्नाण** न [°**अज्ञान**] विपरीत मति-ज्ञान, मिथ्यादर्शन-युक्त मति-ज्ञान; (भग; विसे ११४; कम्म ४, ४१)। °**णाण**, °**ण्णाण**, °**नाण** न [°**ज्ञान**] ज्ञान-विशेष; (विसे १०७; ११४; ११७; कम्म १, ४)। °**नाणावरण** न [°**ज्ञानावरण**] मति-ज्ञान का आवारक कर्म; (विसे १०४)। °**नाणि** वि [°**ज्ञानिन्**] मति-ज्ञान वाला; (भग)। °**पत्तिया** स्त्री [°**पात्रिका**] एक जैन मुनि-शाखा; (कप्प)। °**भंस** पुं [°**भ्रंश**] बुद्धि-विनाश; (भग; सुपा १३४)। **म**, °**मंत**, °**वंत** वि [°**मत्**] बुद्धिमान; (ओघ ६३०; आचा; भवि)।
मइ° देखो **मई=मृगी**; (कुप्र ४४)।
मइअ वि [**मत्त**] मद-युक्त, उन्मत्त; (से ७, ६६; गा ४६८; ७०६; ७५१)।
मइअ देखो **मा=मा**।
मइअ वि [**दे. मतिक**] १ भर्त्सित, तिरस्कृत; (दे ६, ११४)। २ न. बोये हुए बीजों के आच्छादन के काम में लगनी एक काष्ठ-मय वस्तु, खेती का एक ओजार; "नंगले मइयं सिया" (दस ७, २८; पराह १, १—पत्र ८)।

°मइअ वि [**°मय**] व्याकरण-प्रसिद्ध एक तद्धित-प्रत्यय, निवृत्त, बना हुआ; "धम्ममइएहि अइसुंदरेहि" (उत्त), "जिण-पडिमं गोसीसचंदणमइयं" (महा) ।

मइआ स्त्री [**मृगया**] शिकार; (सिरि ११११) ।

मइंद पुं [**मैन्द**] राम का एक सैनिक, वानर-विशेष; (से ४, ७; १३, ८३) ।

मइंद पुं [**मृगेन्द्र**] १ सिंह, पंचानन; (प्राकृ ३०; सुर १६, २४१; गउड) । २ छन्द का एक भेद; (पिंग) ।

मइज्ज देखो **मईअ**=मदीय; (षड्) ।

मइत्तो अ [**मत्**] मुझसे; (प्राप्र) ।

मइमोहणी स्त्री [**दे. मतिमोहनी**] सुरा, मदिरा, दारू; (दे ६, ११३; षड्) ।

मइरा स्त्री [**मदिरा**] ऊपर देखो; (पाअ; से २, ११; गा २७०; दे ६, ११३) ।

मइरेय न [**मैरेय**] ऊपर देखो; (पाअ) ।

मइल वि [**मलिन**] मैला, मल-युक्त, अ-स्वच्छ; (हे २, ३८; पाअ; गा ३४; प्रासू ३१; भवि) ।

मइल पु [**दे**] कलकल, कोलाहल; (दे ६, १४२) ।

मइल वि [**दे. मलिन**] गत-तेजस्क, तेज-रहित, फीका; (दे ६, १४२; से ३, ४७) ।

मइल सक [**मलिनय्**] मैला करना, मलिन बनाना । मइलइ, मइलेइ, मइलिंति, मइलेंति; (भवि; उत्त; पि ५५६) । कर्म—**मइलिज्जइ**; (भवि; पि ५५६) । वकृ—**मइलेंत**; (पउम २, १००) । कृ—**मइलियव्व**; (स ३६६) ।

मइल अक [**दे. मलिनाय्**] तेज-रहित होना, फीका लगना । वकृ—**मइलंत**; (से ३, ४७; १०, २७) ।

मइलण न [**मलिनन**] मलिन करना; (गउड) ।

मइलणा स्त्री [**मलिनना**] १ ऊपर देखो; (ओघ ७८८) । २ मालिन्य, मलिनता; ३ कलंक; "लहइ कुलं मइलणा जेण" (सुर ६, १२०), "इमाए मइलणाए अमुगम्मि नयरुज्जाणमन्ने नग्गोहपायवे उब्बंधणेण अत्ताणयं परिच्चइउं ववसिओ चक्क-देवो" (स ६४) ।

मइलपुत्ती स्त्री [**दे**] पुष्पवती, रजस्वला स्त्री; (षड्) ।

मइलिअ वि [**मलिनित**] मलिन किया हुआ; (श्रावक ६५; पि ५५६; भवि) ।

मइल्ल वि [**मृत**] मरा हुआ । स्त्री—°**ल्लिया**; "एवं खलु सामी ! पउमावती देवी मइल्लियं दारियं पयाया । तए णं कणगरहे राया तीसे मइल्लियाए दारियाए नीहरणं करेति, बहूणि लोइयाइं मयकिच्चाइं" (णाया १, १४—पत्र १८६) ।

मइहर पुं [**दे**] ग्राम-प्रधान, गाँव का मुखिया; (दे ६,१२१)। देखो **मयहर** ।

मई स्त्री [**दे**] मदिरा, दारू; (दे ६, ११३) ।

मई स्त्री [**मृगी**] हरिणी, स्त्री हरिण; (गा २८७; से ६, ८०; दे ३, ४६; कुप्र १०) ।

मई° देखो **मइ**=मति । °**म**, °**व** वि [°**मत्**] बुद्धि वाला; (पि ७३; ३६६; उप १४२ टी) ।

मईअ वि [**मदीय**] मेरा, अपना; (षड्; कुमा; स ४७७; महा) ।

मउ पुं [**दे**] पर्वत, पहाड़; (दे ६, ११३) ।

मउ, **मउअ** वि [**मृदु**, °**क**] कोमल, सुकुमार; (हे १, १२७; षड्; सम ४१; सुर ३, ६७; कुमा) । स्त्री—**उई**; (प्राकृ २८; गउड) ।

मउअ वि [**दे**] दीन, गरीब; (दे ६, ११४) ।

मउइअ वि [**मृदुकित**] जो कोमल बना हो; (गउड) ।

मउई देखो **मउ**=मृदु ।

मउंद पुं [**मुकुन्द**] १ विष्णु, श्रीकृष्ण; (राय) । २ वाद्य-विशेष; "दुंदुहिमउंदमद्दलतिलिमापमुहेण तूरसद्देण" (सुर ३, ६८), "महामउंदसंठाणसंठिए" (भग) ।

मउक्क देखो **माउक्क**=मृदुत्व; (षड्) ।

मउड पुंन [**मुकुट**] शिरो-भूषण, किरीट, सिरपेंच; (पत्र ३८; हे १, १०७; प्राप्र; कुमा; पाअ; औप) ।

मउड, **मउडि** पुं [**दे**] धम्मिल्ल, कबरी, जूट; (पाअ; दे ६, ११७) ।

मउण देखो **मोण**; (हे १, १६२; चंड) ।

मउर पुंन [**मुकुर**] १ बाल-पुष्प, फूल की कली, बौर; (कुमा) । २ दर्पण, आइना, शीशा; ३ कुलाल-दण्ड; ४ बकुल का पेड़; ५ मल्लिका-वृक्ष; ६ कोली-वृक्ष; ७ ग्रन्थिपर्णा-वृक्ष, चोरक; (हे १, १०७; प्राकृ ७) ।

मउर, **मउरंद** पुं [**दे**] वृक्ष-विशेष, अपामार्ग, ओंगा, लटजीरा, चिरचिरा; (दे ६, ११८) ।

मउल देखो **मउड**=मुकुट; (से ४, ५१) ।

मउल पुंन [**मुकुल**] थोड़ी विकसित कलि, कलिका, बौर; (रंभा २६) । २ देह, शरीर; ३ आत्मा; "मउलं, मउलो" (हे १, १०७; प्राप्र) ।

मउल अक [**मुकुलय्**] सकुचना, संकुचित होना। "मउलेंति णअणाइं" (गा ५)। वकृ—**मउलंत, मउलिंत**; (से ११, ६२; पि ४६१)।

मउलण न [**मुकुलन**] संकोच; "जं चेम मउलणं लोअणाणं" (हे २, १८४; विसे ११०६; गउड)।

मउलाअ अक [**मुकुलय्**] १ सकुचना। २ सक. संकुचित करना। वकृ—**मउलाअंत**; (नाट—मालती ५४; पि १२३)।

मउलाइय वि [**मुकुलित**] सकुचाया हुआ, संकोचित; (वज्जा ११६)।

मउलाव देखो **मउलाअ**। कर्म—मउलाविज्जंति; (पि १२३)। वकृ—**मउलावेंत**; (पउम १५, ८३)।

मउलावअ वि [**मुकुलायक**] संकुचित करने वाला; "होमिविसेसा वियसावआ य मउलावआ य अच्छीणं" (गउड)।

मउलाविय देखो **मउलाइय**; (उप पृ ३२१; सुपा २००; भवि)।

मउलि पुंस्त्री [**दे**] हृदय-रस का उच्छलन; (दे ६, ११५)।

मउलि पुं [**मुकुलिन्**] सर्प-विशेष; (पगह १, १—पत्र ८; पगण १—पत्र ५०)।

मउलि पुंस्त्री [**मौलि**] १ किरीट, मुकुट, शिरो-भूषण; (पात्र)। २ मस्तक, सिर; (कुप्र ३८६; कुमा; अजि २२; अच्चु ३४)। ३ सिर-वेष्टन विशेष, एक तरह की पगड़ी; (पव ३८)। ४ चूड़ा, चोटी; ५ संयत केश; ६ पुं. अशोक वृक्ष; ७ स्त्री. भूमि, पृथिवी; (हे १, १६२; प्राकृ १०)।

मउलिअ वि [**मुकुलित**] १ संकुचित; (सुर ३, ४५; गा ३२३; से १, ६५)। २ संवेष्टित; "संवेल्लिअं मउलिअं" (पाअ)। ३ मुकुलाकार किया हुआ; (औप)। ४ एकत्र स्थित; (कुमा)। ५ मुकुल-युक्त, कलिका-सहित; (राय)।

मउवी देखो **मउई**; (हे २, ११३; कुमा)।

मऊर पुंस्त्री [**मयूर**] पक्षि-विशेष, मोर; (प्राप्र; हे १, १७१; षाया १, ३)। स्त्री—°**री**; (विपा १, ३)। °**माल** न [°**माल**] एक नगर; (पउम २७, ६)।

मऊरा स्त्री [**मयूरा**] एक रानी, महापद्म चक्रवर्ती की माता; (पउम २०, १४३)।

मऊह पुं [**मयूख**] १ किरण, रश्मि; (पात्र)। २ कान्ति, तेज; ३ शिखा; ४ शोभा; (हे १, १७१; प्राप्र)। ५ राक्षस वंश के एक राजा का नाम, एक लंका-पति; (पउम ५, २६५)।

मए सक [**मदय्**] मद-युक्त करना, उन्मत्त बनाना। वकृ—**मएंत**; (से २, १७)।

मएजारिस वि [**मादृश**] मेरे जैसा, मेरे तुल्य; "मएजारिसाणं पुरिसाहमाणं इमं चेरिचियं" (स ३३)।

मं (अप) देखो **म**=मा; (षड्; हे ४, ४१८; कुमा)। °**कार** पुं [°**कार**] 'मा' अव्यय; (ठा १०—पत्र ४६५)।

मंकड देखो **मक्कड**; (आचा)।

मंकण पुं [**मत्कुण**] खटमल, क्षुद्र कीट-विशेष; गुजराती में 'मांकण'; (जी १६)।

मंकण पुंस्त्री [**दे. मर्कट**] बन्दर, वानर। स्त्री—°**णी**; "सयमेव मंकणीए भणीए नं कंकणी बद्धा" (कुप्र १८५)।

मंकाइ पुं [**मङ्काति**] एक अन्तकृत् महर्षि; (अंत १८)।

मंकार पुं [**मकार**] 'म' अक्षर; (ठा १०—पत्र ४६५)।

मंकिअ न [**मङ्कित**] कूद कर जाना; (दे ८, १५)।

मंकुण देखो **मंकण**=मत्कुण; (दे; भवि)। °**हत्थि** पुं [°**हस्तिन्**] गाडोंर प्राणि विशेष, (पाण १—पत्र ४६)।

मंकुस [**दे**] देखो **मंगुस**; (गा ७८१)।

मंख देखो **मक्ख**=म्रक्ष्। वकृ **मंखंत**; (गउड)।

मंख पुं [**दे**] भाड, भाण; (दे ६, ११२)।

मंख पुं [**मङ्ख**] एक भिक्षुक-जाति जो चित्र-पट दिखाकर जीवन-निर्वाह करता है; (णाया १, १ टी; औप; पगह २, ४; पिंड ३०२; कप्प)। °**फलग** न [°**फलक**] १ मंख का तख्ता; २ निर्वाह-हेतुक चैत्य; (पंचा ६, ४५ टी)।

मंखण न [**म्रक्षण**] १ मक्खन; "मंखणं व सुकुमालकरचरणा" (उप ६४८ टी)। २ अभ्यंग, मालिश; (उप १२, ८)।

मंखलि पुं [**मङ्खलि**] एक मंख-भिक्षु, गोशालक का पिता। °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] गोशालक, आजीवक मत का प्रवर्तक एक भिक्षु जो पहले भगवान् महावीर का शिष्य था; (ठा १०; उवा)।

मंग सक [**मङ्ग्**] १ जाना। २ सजाना। ३ जानना। कर्म—मंगिज्जए; (विसे २२)।

मंग पुं [**मङ्ग**] १ धर्म; (विसे २२)। २ रञ्जन-द्रव्य विशेष, रंग के काम में आता एक द्रव्य; (सिरि १०५७)।

मंगइय देखो **मगइय**; (निर १, १)।

मंगरिया स्त्री [**दे**] वाद्य विशेष; (राय)।

मंगल पुं [**मङ्गल**] १ ग्रह-विशेष, अंगारक ग्रह; (इक)। २ न. कल्याण, शुभ, क्षेम, श्रेयः; (कुमा)। ३ विवाह-

सूत्र-बन्धन; (स्वप्न ४६)। ४ विघ्न-क्षय; (ठा ३, १)। ५ विघ्न-क्षय के लिए किया जाता इ-देष्टव-नमस्कार आदि शुभ कार्य; ६ विघ्न-क्षय का कारण, दुरित-नाश का निमित्त; (विसे १२; १३; २२; २३; २४; औप; कुमा)। ७ प्रशंसा-वाक्य, खुशामद; (सूत्र १, ७, २५)। ८ इष्टार्थ-सिद्धि, वाञ्छित-प्राप्ति; (कप्प)। ६ तप-विशेष, आयंबिल; (संबोध ५८)। १० लगातार आठ दिनों का उपवास; (संबोध ५८)। ११ वि. इष्टार्थ-साधक, मंगल-कारक; (आव ४)। °ज्झय पुं [°ध्वज] मांगलिक ध्वज; (भग)। °तूर न [°तूर्य] मंगल-वाद्य; (महा)। °दीव पुं [°दीप] मांगलिक दीप, देव-मन्दिर में आरती के बाद किया जाता दीपक; (धर्मवि १२३; पंचा ८, २३)। °पाढय पुं [°पाठक] मागध, चारण; (पाअ)। °पाढिया स्त्री [°पाठिका] वीणा-विशेष, देवता के आगे सुबह और सन्ध्या में बजाई जाती वीणा; (राज)।

मंगल वि [दे] १ सदृश, समान; (दे ६, ११८)। २ न. अग्नि, आग; ३ डोरा बुनने का एक साधन; ४ वन्दन-माला; (विसे २७)।

मंगलग पुंन [मङ्गलक] स्वस्तिक आदि आठ मांगलिक पदार्थ; (सुपा ७७)।

मंगलसज्झ न [दे] वह खेत जिसमें बीज बोना बाकी हो; (दे ६, १२६)।

मंगला स्त्री [मङ्गला] भगवान् श्रीसुमतिनाथ की माता का नाम; (सम १५१)।

मंगलालया स्त्री [मङ्गलालया] एक नगरी का नाम; (आचू १)।

मंगलावइ पुं [मङ्गलापातिन्] सौमनस-पर्वत का एक कूट; (इक; जं ४)।

मंगलावई स्त्री [मङ्गलावती] महाविदेह वर्ष का एक विजय, प्रान्त-विशेष; (ठा २, ३; इक)।

मंगलावत्त पुं [मङ्गलावर्त] १ महाविदेह वर्ष का एक विजय, प्रान्त-विशेष; (ठा २, ३; इक)। २ देव-विशेष; (जं ४)। ३ न. एक देव-विमान; (सम १७)। ४ पर्वत विशेष का एक शिखर; (इक)।

मंगलिअ, मंगलीअ वि [माङ्गलिक] १ मंगल-जनक; "सप्पल-जीवलोअमंगलिअजम्मलाहस्स" (उत्तर ६०; अच्चु ३६; सुपा ७८)। २ प्रशंसा-वाक्य बोलने वाला; "मुहमंगलीए" (सूत्र १, ७, २५)।

मंगल्ल वि [मङ्गल्य, माङ्गल्य] मंगल-कारी मंगल-जनक, मांगलिक; "पढमाणो जिणगुणगणनिबद्धमंगल्लगिताइं" (चेइय १६०; गाया १, १; सम १२२; कप्प; औप; सुर १, २३८; १५, १७३; सुपा ५५)।

मंगी स्त्री [मङ्गी] षड्ज ग्राम की एक मूर्च्छना; (ठा ७—पत्र ३६३)।

मंगु पुं [मङ्गु] एक सुप्रसिद्ध जैन आचार्य, आर्यमङ्गु; (णंदि; ती ७; आत्म २३)।

मंगुल न [दे] १ अनिष्ट; (दे ६, १४५; सुपा ३३८; सुक्त ८०)। २ पाप; (दे ६, १४५; वज्जा ८; गउड; सुक्त ८०)। ३ पुं. चोर, तस्कर; (दे ६, १४५)। ४ वि. असुन्दर, खराब; (पाअ, ठा ४, ४—पत्र २७१; स ७१३; दंस ३)। स्त्री —°ली; "मंगुली णं समणस्स भगवओ महा-वीरस्स धम्मपण्णत्ती" (उवा)।

मंगुस पुं [दे] नकुल, न्यौला, भुजपरिसर्प-विशेष; (दे ६, ११८; सूत्र २, ३, २५)।

मंच पुं [दे] बन्ध; (दे ६, १११)।

मंच पुं [मञ्च] १ मचान, उच्चासन; (कप्प; गउड)। २ गणितशास्त्र प्रसिद्ध दश योगों में तीसरा योग, जिसमें चन्द्रादि मंचाकार से रहते हैं; (सुज्ज १२ —पत्र २३३)। °इमंच पुं [°तिमञ्च] १ मचान के ऊपर का मञ्च, ऊपर ऊपर रखा हुआ मंच; (औप)। २ गणित-प्रसिद्ध एक योग जिस में चन्द्र, सूर्य आदि नक्षत्र एक दूसरे के ऊपर रक्खे हुए मंचों के आकार से अवस्थित होते हैं; (सुज्ज १२)।

मंची स्त्री [मञ्चा] खटिया, खाट; "ता आरुह मंचीए" (सुर १०, १६८; १६६)।

मंक्षुडु (अप) अ [मङ्क्षु] शीघ्र, जल्दी; (भवि)।

मंजर पुं [मार्जार] मंजार, बिलार, बिलाव; (हे २, १३२; कुमा)। देखो **मज्जर, मज्जार**।

मंजरि स्त्री [मञ्जरि] देखो **मंजरी**; (औप)।

मंजरिअ वि [मञ्जरित] मञ्जरी-युक्त; "मंजरिओ चूयनिकरो" (स ७१६)।

मंजरिआ, मंजरी स्त्री [मञ्जरिका, °री] नवोत्पन्न सुकुमार पल्लवाकार लता, बौर; (कुमा; गउड)। **गुंडी** स्त्री [°गुण्डी] वल्ली विशेष; 'तामरिगुंडी य मंजरीगुंडी" (पाअ)।

मंजार देखो **मंजर**; (हे १, २६)।

मंजिआ स्त्री [दे] तुलसी; (दे ६, ११६)।

मंजिट्ठ वि [**माञ्जिष्ठ**] मजीठ रंग वाला, लाल । स्त्री —°**ट्ठी**; (कप्पू) ।

मंजिट्ठा स्त्री [**मञ्जिष्ठा**] मजीठ, रंग-विशेष; (कप्पू ; हे ४, ४३८) ।

मंजीर न [**मञ्जीर**] १ नूपुर; "हंसयं नेउरं च मंजीरं" (पाअ; स ७०४; सुपा ६६) । २ छन्द-विशेष; (पिंग) ।

मंजीर न [**दे**] शृङ्खलक, साँकल; सिकरी; (दे ६, ११६)।

मंजु वि [**मञ्जु**] १ सुन्दर, मनोहर; (पाअ) । २ कोमल, सुकुमार; (ओप; कप्प) । ३ प्रिय, इष्ट; (राय; जं १) ।

मंजुआ स्त्री [**दे**] तुलसी; (दे ६, ११६; पाअ) ।

मंजुल वि [**मञ्जुल**] १ सुन्दर, रमणीय, मधुर; (सम १५२; कप्प; विपा १, ७; पाअ; पिंग) । २ कोमल; (णाया १, १) ।

मंजुसा, **मंजूसा** स्त्री [**मञ्जूषा**] १ विदेह वर्ष की एक नगरी; (ठा २, ३—पत्र ८०; इक) । २ पिटारी, छोटी संदूक; (सुपा ३२१; कप्पू) ।

मंठ वि [**दे**] १ शठ, लुच्चा, बदमाश; २ पुं. वन्ध; (दे ६, १११) ।

मंड सक [**मण्ड्**] भूषित करना, सजाना । मंडइ; (षड्), मंडंति; (पि ५५७) ।

मंड सक [**दे**] १ आगे धरना । २ प्रारम्भ करना, गुजराती में 'मांडवुं' । "जो मंडइ रणभरधुरहो खंधु" (भवि) ।

मंड पुंन [**मण्ड**] रस; "तयाणंतरं च णं घयविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ सारइएणं गोघयमंडेणं" (उवा) ।

मंडअ देखो **मंडव**=मण्डप; (नाट—शकु ६८) ।

मंडअ, **मंडग** पुं [**मण्डक**] खाद्य-विशेष, माँडा, एक प्रकार की रोटी; (उप पृ ११५; पव ४ टी; कुप्र ४३; धर्मवि ११६) ।

मंडग वि [**मण्डक**] विभूषक, शोभा बढ़ाने वाला; "ससिं च.........जोइसमुहमंडगं" (कप्प) ।

मंडण न [**मण्डन**] १ भूषण, भूषा; (गउड; प्रासू १३२) । २ त्रि. विभूषक, शोभा बढ़ाने वाला; (गउड; कुमा) । स्त्री—°**णी**; (प्रासू ६४) । °**धाई** स्त्री [°**धात्री**] आभूषण पहराने वाली दासी; (णाया १, १—पत्र ३७) ।

मंडल पुं [**दे**, **मण्डल**] श्वान, कुत्ता; (दे ६, ११४; पाअ; स ३६८; कुप्र २८०; सम्मत्त १६०) ।

मंडल न [**मण्डल**] १ समूह, यूथ; (कुमा; गउड; सम्मत्त १६०) । २ देश; (उप १४२ टी; कुप्र ४६; २८०) । ३ गोल, वृत्ताकार पदार्थ; (कुमा; गउड) । ४ गोल आकार से वेष्टन; (ठा ३, ४—पत्र १६६; गउड) । ५ चन्द्र-सूर्य आदि का चार-क्षेत्र; (सम ६६; गउड) । ६ संसार, जगत्; (उत्त ३१, ३; ४; ५; ६) । ७ एक प्रकार का कुष्ठ रोग; ८ एक प्रकार की वृत्ताकार दाद—दद्रु; (पिंड ६००) । ६ बिम्ब; "उज्झइ ससिमंडलकलसदिण्ण-कंठग्गहं मयणो" (गउड) । १० सुभटों का स्थान-विशेष; (राज) । ११ मण्डलाकार परिभ्रमण; (सुज्ज १, ७; स ३४६) । १२ इंगित चेष्टा; (ठा ७—पत्र ३६८) । १३ पुं. नरकावास-विशेष; (देवेन्द्र २६) । °**व** वि [°**वत्**] मण्डल में परिभ्रमण करने वाला; (सुज्ज १, ७) । °**हिव** पुं [°**धिप**] मण्डलाधीश; (भवि) । °**हिवइ** पुं [°**धिपति**] वही अर्थ; (भवि) ।

मंडलग्ग पुंन [**मण्डलाग्र**] तलवार, खड्ग; (हे १, ३४; भवि) ।

मंडलि पुं [**मण्डलिन्**] १ मण्डलाकार चलता वायु; (जो ७) । २ माण्डलिक राजा; "तेवीसं तित्थंकरा पुव्वभवे मंडलिरायाणो होत्था" (सम ४२) । ३ सर्प की एक जाति; (पण्ह १—पत्र ५१) । ४ न. गोत्र-विशेष, जो कौत्स गोत्र की एक शाखा है; ५ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न; (ठा ७—पत्र ३६०) । °**पुरी** स्त्री [°**पुरी**] नगर-विशेष, गुजरात का एक नगर, जो आजकल भी 'मांडल' नाम से प्रसिद्ध है; (सुपा ६५६) ।

मंडलिअ वि [**मण्डलित**] मण्डलाकार बना हुआ; "मंडलियचंडकोदंडमुक्ककंडालिखंडियसिरेहिं" (सुपा ४; वज्जा ६१; गउड) ।

मंडलिअ वि [**मण्डलिक**, **माण्डलिक**] १ मण्डलाकार वाला; २ पुं. मंडल रूप से स्थित पर्वत-विशेष; (ठा ३, ४—पत्र १६६; पण्ह २, ४) । ३ मण्डलाधीश, सामान्य राजा; (णाया १, १; पण्ह १, ४; कुमा; कुप्र १२०; महा)।

मंडली स्त्री [**मण्डली**] १ पङ्क्ति, श्रेणी, समूह; (से ५, ७६; गच्छ २, ५६) । २ अश्व की एक प्रकार की गति; (से १३, ६६; महा) । ३ वृत्ताकार मंडल—समूह; (संबोध १७; उव) ।

मंडलीअ देखो **मंडलिअ**=मण्डलिक; "तह तलवरसंखाहिय-कोसाहिवमंडलीयसामंत" (सुपा ७३; ठा ३, १—पत्र १२६)।

मंडव पुं [**मण्डप**] १ विश्राम-स्थान; २ बल्ली आदि से वेष्टित स्थान; (जीव ३; स्वप्न ३६; महा; कुमा) । ३

स्नान आदि करने का गृह; "न्हाणमंडवंसि", "भोयणमंडवंसि" (कप्प; औप)।

मंडव न [**माण्डव्य**] १ गोत्र-विशेष; २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न; (ठा ७—पत्र ३९०)।

मंडविआ स्त्री [**मण्डपिका**] छोटा मण्डप; (कुमा)।

मंडव्वायण न [**माण्डव्यायन**] गोत्र-विशेष; (सुज्ज १०, १६; इक)।

मंडावण न [**मण्डन**] सजाना, विभूषित कराना। °**धाई** स्त्री [°**धात्री**] सजाने वाली दासी; (आचा २, १५, ११)।

मंडावय वि [**मण्डक**] सजाने वाला; (निचू ६)।

मंडि° } वि [**मण्डित**] १ भूषित; (कप्प; कुमा)।
मंडिअ } २ पुं भगवान् महावीर के षष्ठ गणधर का नाम; (सम १६; विसे १८०२)। ३ एक चोर का नाम; (धर्मवि ७२; ७३)। °**कुच्छि** पुंन [°**कुक्षि**] चैत्य-विशेष; (उत्त २०, २)। °**पुत्त** पु [°**पुत्र**] भगवान् महावीर का छठवाँ गणधर; (कप्प)।

मंडिअ वि [**दे**] रचित, बनाया हुआ; २ विछाया हुआ;
"संसारे हयविहिणा महिलारूवेण मंडिए पासे।
बज्झंति जाणमाणा अयाणमाणावि बज्झंति॥"
(वज्जा ८)।
३ आगे धरा हुआ; "मइ मंडिउ रणभरधुरहो खंधु" (भवि)। ४ आरब्ध; "रणु मंडिउ कच्छाहिवेण ताम" (भवि; सण)।

मंडिल्ल पुं [**दे**] अपूप, पूआ, पक्वान्न-विशेष; (दे ६, ११७)।

मंडी स्त्री [**दे**] १ पिधानिका, ढकनी; (दे ६, १११; पाअ)। २ अन्न का अग्र रस, माँड, ३ माँडी, कलप, लेई; (आव ४)। °**पाहुडिया** स्त्री [°**प्राभृतिका**] एक भिक्षा-दोष, अन्न के माँड अथवा माँडी को दूसरे पात्र में रखकर दी जाती भिक्षा का ग्रहण; (आव ४)।

मंडुक } देखो **मंडूअ**; (श्रा २८; पगह १, १; हे २,
मंडुक्क } ९८; षड्; पाअ)।

मंडुकलिया } स्त्री [**मण्डूकिका**, °**की**] १ स्त्री-मेंडक, भेकी,
मंडुक्किया } दादुरी; (उप १४७ टी; १३७ टी)। २
मंडुक्की } शाक-विशेष, वनस्पति-विशेष; (उवा; पगण १—पत्र ३४)।

मंडुग } पुं [**मण्डूक**] १ मेंढक, दादुर; "मंडुगगइसरिसो
मंडूअ } खलु अहिगारो होइ सुत्तस्स" (वव ७; कुमा)। २
मंडूक } वृक्ष-विशेष, श्योनाक, सोनापाठा; ३ बन्ध-विशेष;
मंडूर } (संक्षि १७), "मंडूरो" (प्राप्र)। ४ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**प्पुअ** न [°**प्लुत**] भेक की चाल; २ पुं. ज्योतिष-प्रसिद्ध योग-विशेष, भेक की गति की तरह होने वाला योग; (सुज्ज १२—पत्र २३३)।

मंडोवर न [**मण्डोवर**] नगर-विशेष; (ती १५)।

मंत सक [**मन्त्रय्**] १ गुप्त परामर्श करना, मसलहत करना। २ आमंत्रण करना। मंतइ; (महा; भवि)। भवि—मंतही (अप); (पिंग)। वकृ- **मंतंत**, **मंतयंत**; (सुपा ५३५; ३०७; अभि १२०)। संकृ—**मंतिअ**, **मंतिऊण**, **मंतेऊण**; (अभि १२४; महा)।

मंत पुंन [**मन्त्र**] १ गुप्त बात, गुप्त आलोचना; "न कहिज्जइ एरिसम्मि मंतं" (सिरि ६२५), "फुट्टिस्सइ बोहित्थं महिलाजणकहियमंतं व" (धर्मवि १३; कुमा)। २ जप्य, जाप करने योग्य प्रणवादिक अक्षर-पद्धति; (गाया १, १४; ठा ३, ४ टी—पत्र १५१; कुमा; प्रासू १४)। °**जंभग** पुं [°**जृम्भक**] एक देव-जाति; (भग १४, ८ टी—पत्र ६५४)। °**देवया** स्त्री [°**देवता**] मन्त्राधिष्ठायक देव; (श्रा १)। °**न्नु** वि [°**ज्ञ**] मन्त्र का जानकार; (सुपा ६०३)। °**वाइ** वि [°**वादिन्**] मान्त्रिक, मन्त्र को ही श्रेष्ठ मानने वाला; (सुपा ५६७)। °**सिद्ध** वि [°**सिद्ध**] १ सब मन्त्र जिसके स्वाधीन हों वह; २ बहु-मन्त्र; ३ प्रधान मन्त्र वाला; "साहीणसव्वमंतो बहुमंतो वा पहाणमंतो वा, नेओ स मंतसिद्धो" (आवम)।

मंत देखो **मा**=मा।

मंतक्ख न [**दे**] १ लज्जा, शरम; २ दुःख; (दे ६, १४१)। ३ अपराध; "न लेइ गरुयंपि णाम-मंतक्खं" (गउड)।

मंतण न [**मन्त्रण**] १ गुप्त आलोचना, गुप्त मसलहत; (पउम ५, ६६; ८२, ४६)। २ मसलहत, परामर्श, सलाह; "मंतणत्थं हक्कारिओ अणेण जिणदत्तसेट्ठी" (कुप्र ११६)। ३ जाप; "पुणो पुणो मंतमंतणं कुणइ" (चेइय ७६३)।

मंतर देखो **वंतर**; (कप्प)।

मंता अ [**मत्वा**] जानकर; (सूअ १, १०, ६; आचा १, १, ५, १; १, ३, १, ३; पि ५८२)।

मंति पुं [**मन्त्रिन्**] १ मन्त्री, अमात्य, दीवान; (कप्प; औप; पाअ)। २ वि. मन्त्रों का जानकार; (गु १२)।

मंति पुं [**दे**] विवाह-गणक, जोशी, ज्योतिर्वित्; (दे ६, १११)।

मंतिअ वि [**मन्त्रित**] गुप्त रीति से आलोचित; (महा)।

मंतिअ देखो **मंत**=मन्त्रय्।

मंतिअ वि [**मान्त्रिक**] मंत्र का ज्ञाता; "मंतेण मंतियस्स व वाणीए ताडिओ तुज्झ" (धर्मवि ६; मन ११)।
मंतिण देखो **मंति=मन्त्रिन्**; "निगूहिआ मंतिणेहि कुसलेहिं" (पउम २१, ६०; ६५, ८; भवि)।
मंतु वि [**मन्तृ**] १ ज्ञाता, जानकार; २ पुं. जीव, प्राणी; (विसे ३५२५)।
मंतु देखो **मण्णु**; (हे २, ४४; षड्; निचू २)। °**म** वि [°**मत्**] क्रोध वाला, कोप-युक्त। स्त्री—°**मई**; (कुमा)।
मंतु पुंन [**मन्तु**] अपराध; "मंतुं विलियं विप्पियं" (पाअ)।
मंतुआ स्त्री [**दे**] लज्जा, शरम; (दे ६, ११६; भवि)।
मंतेल्लि स्त्री [**दे**] सारिका, मैना; (दे ६, ११९)।
मंथ सक [**मन्थ्**] १ विलोडन करना। २ मारना, हिंसा करना। ३ अक. क्लेश पाना। मंथइ; (हे ४, १२१; प्राकृ ३३; षड्)। कवकृ—**मंथिज्जंत, मंथिज्जमाण, मच्छंत**; (पउम ११३, ३३; सुपा २५१; १६५; पण्ह १, ३—पत्र ५३)। संकृ—**मंथित्तु**; (सम्मत्त २२६)।
मंथ पुं [**मन्थ**] १ दही विलाने का दण्ड, मथनी; (विसे ३८४)। २ केवलि-समुद्घात के समय मन्थाकार किया जाता जीव-प्रदेश-समूह; (ठा ६; औप)।
मंथ (अप) देखो **मत्थ=मस्त**; (पिंग)।
मंथण न [**मन्थन**] १ विलोडन, विलाने की क्रिया; "खीरोअमंथणुच्छलिअदुद्धसित्तो व्व महुमहणो" (गा ११७)। २ घर्षण; "मंथणजाए अग्गी" (संबोध १)। ३ पुंन. मथनी, दही आदि मथने की लकड़ी; (प्राकृ १४)।
मंथणिआ स्त्री [**मन्थनिका**] १ मंथनी, महानी, दही मथने की छोटी लकड़ी; (राज)। २ मथानी, दधि-कलशी, दही महने की हँडिया; (दे २, ६५)।
मंथणी स्त्री [**मन्थनी**] ऊपर देखो; (दे २, ५५)।
मंथर वि [**मन्थर**] १ मन्द, धीमा; (से १, ३८; गउड; पाअ; सुपा १)। २ विलम्ब से होने वाला; (पंचा ६, २२)। ३ पुं. मन्थन-दण्ड; "वोसाममंथरायमाणमेलवोच्छिण्णदूरवडणाओ" (गउड)।
मंथर वि [**दे. मन्थर**] १ कुटिल, वक्र, टेढ़ा; (दे ६, १४५; भवि)। २ स्त्रीन. कुसुम्भ, वृक्ष-विशेष, कसूम का पेड़; (दे ६, १४५)। स्त्री—°**रा**; "मंथरा कुसुंभी" (पाअ)।
मंथर वि [**दे**] बहु, प्रचुर, प्रभूत; (दे ६, १४५; भवि)।
मंथरिय वि [**मन्थरित**] मन्थर किया हुआ; (गउड)।

मंथाण पुं [**मन्थान**] १ विलोडन-दण्ड; "तत्तो विसुद्धपरिणाममेरुमंथाणमहियभवजलही" (धर्मवि १०७; दे ६, १४१; वज्जा ४; पाअ; समु १५०)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)।
मंथिअ वि [**मथित**] विलोडित; (दे २, ८८; पाअ)।
मंथु पुंन [**दे**] १ बदरादि-चूर्ण; (पण्ह २, ५; उत्त ८, १२; सुख ८, १२; दस ५, १, ६८; ५, २, २४; आचा)। २ चूर्ण, चुर, बुकनी; (आचा २, १, ८, ८)। ३ दूध का विकार-विशेष, मट्ठा और माखन के बीच की अवस्था वाला पदार्थ; (पिंड २८२)।
मंद पुं [**मन्द**] १ ग्रह-विशेष, शनिश्चर; (सुर १०, २२४)। २ हाथी की एक जाति; (ठा ४, २—पत्र २०८)। ३ वि. अलस, धीमा, मृदु; (पाअ; प्रासू १३२)। ४ अल्प, थोड़ा; (प्रासू ७१)। ५ मूर्ख, जड, अज्ञानी; (सूअ १, ४, १, ३१; पाअ)। ६ नीच, खल; "मुहमेव अहीयं तह य मंदस्स" (प्रासू १६)। ७ रोग-ग्रस्त, रोगी; (उत्त ८, ७)। °**उण्णिगा** स्त्री [°**पुण्यिका**] देवी-विशेष; (पंचा १६, २४)। °**भग्ग** वि [°**भाग्य**] कमनसीब; (सुपा ३७६; महा)। °**भाअ** वि [°**भाग, °भाग्य**] वही अर्थ; (स्वप्न २२; कुमा)। °**भाइ** वि [°**भागिन्**] वही अर्थ; (स ७५६; सुपा ३२९)। °**भाग** देखो °**भाअ**; (सुर १०, ३८)।
मंद न [**मान्द्य**] १ बीमारी, रोग; " न य मंदेणं मरई कोइ तिरिओ अहव मणुओ वा" (सुपा २२६)। २ मूर्खता, बेवकूफी; "बालस्स मंदयं बीयं" (सूअ १, ४, १, २९)।
मंदक्ख न [**मन्दाक्ष**] लज्जा, शरम; (राज)।
मंदग } न [**मन्दक**] गेय-विशेष; एक प्रकार का गान;
मंदय } (राज; ठा ४, ४—पत्र २८५)।
मंदर पुं [**मन्दर**] १ पर्वत-विशेष, मेरु पर्वत; (सुज्ज ५; सम १२; हे २, १७४; कप्प; सुपा ४७)। २ भगवान् विमलनाथ का प्रथम गणधर; (सम १५२)। ३ वानरद्वीप का एक राजा, मरुत्कुमार का पुत्र; (पउम ६, ६७)। ४ छन्द का एक भेद; (पिंग)। ५ मन्दर-पर्वत का अधिष्ठायक देव; (जं ४)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष; (इक)।
मंदा स्त्री [**मन्दा**] १ मन्द-स्त्री; (वज्जा १०६)। २ मनुष्य की दश अवस्थाओं में तीसरी अवस्था—२१ से ३० वर्ष तक की दशा; (तंदु १६)।

मंदाइणी स्त्री [**मन्दाकिनी**] १ गंगा नदी, भागीरथी; (पउम १०, ५०; पाअ)। २ रामचन्द्र के पुत्र लव की स्त्री का नाम; (पउम १०६, १२)।

मंदाय क्रिवि [**मन्द**] शनैः, धीमे से; "मंदायं मंदायं पव्वइयाए" (जीव ३)।

मंदाय न [**मन्दाय**] गेय-विशेष; (जं १)।

मंदार पुं [**मन्दार**] १ कल्पवृक्ष-विशेष; (सुपा १)। २ पारिभद्र वृक्ष। ३ न. मन्दार वृक्ष का फूल; "मंदारदामरमणिज्जभूयं" (कप्प; गउड)। ४ पारिभद्र वृक्ष का फूल; (वज्जा १०६)।

मंदिअ वि [**मान्दिक**] मन्दता वाला, मन्द; "बाले य मंदिए मूढे" (उत्त ८, ५)।

मंदिर न [**मन्दिर**] १ गृह, घर; (गउड; भवि)। २ नगर-विशेष; (इक; आवृ १)।

मंदिर वि [**मान्दिर**] मन्दिर-नगर का; "सीहपुरा सोहा वि य गीयपुरा मंदिरा य बहुणाग्रा" (पउम ५५, ५३)।

मंदीर न [**दे**] १ शृङ्खल, साँकल; २ मन्थान-दण्ड; (दे ६, १४१)।

मंदुय पुं [**दे. मन्दुक**] जलजन्तु-विशेष; (पगह १, १ — पत्र ७)।

मंदुरा स्त्री [**मन्दुरा**] अश्व-शाला; (सुपा ६७)।

मंदोदरी } स्त्री [**मन्दोदरी**] १ रावण-पत्नी; (से १३,
मंदोयरी } ६७)। २ एक वणिक्-पत्नी; (उप ५६७ टी)।

मंदोशण (मा) वि [**मन्दोष्ण**] अल्प गरम; (प्राकृ १०२)।

मंधाउ पुं [**मान्धातृ**] हरिवंश का एक राजा; (पउम २२, ६७)।

मंधादण पुं [**मन्धादन**] मेष, गाडर; "जहा मंधादए (?णे) नाम थिमिअं भुंजती दगं" (सूअ १, ३, ४, ११)।

मंधाय पुं [**दे**] आढ्य, श्रीमंत; (दे ६, ११६)।

मंभीस (अप) सक [**मा+भी**] डरने का निषेध करना, अभय देना। संकृ—**मंभीसिवि**; (भवि)।

मंभीसिय देखो **माभीसिअ**; (भवि)।

मंस पुंन [**मांस**] मांस, गोस्त, पिशित; "अयमाउसो मंसे अयं अट्ठी" (सूअ २, १, १६; आचा; ओघभा २४६; कुमा; हे १, २६)। °**इल्ल** वि [°**वत्**] मांस-लोलुप; (सुख १, १५)। °**खल** न [°**खल**] मांस सुखाने का स्थान; (आचा २, १, ४, १)। °**चक्खु** पुंन [°**चक्षुस्**] १ मांस-मय चक्षु; २ वि. मांस-मय चक्षु वाला, ज्ञान-चक्षु-रहित; "अद्दिस्से मंसचक्खुणा" (सम ६०)। °**ासण** वि [°**ाशन**] मांस-भक्षक; (कुमा)। °**ासि**, °**ासिण** वि [°**ाशिन्**] वही अर्थ; (पउम १०५, ४४; महा), "मंसासिणस्स" (पउम २६, ३७)।

मंसल वि [**मांसल**] पीन, पुष्ट, उपचित; (पाअ; हे १, २६; पगह १, ४)।

मंसी स्त्री [**मांसी**] गन्ध-द्रव्य-विशेष, जटामांसी; (पगह २, ५—पत्र १५०)।

मंसु पुंन [**श्मश्रु**] दाढ़ी-मूँछ — पुरुष के मुख पर का बाल; (सम ६०; औप; कुमा); "मंसू" (हे १, २६; प्राप्र), "मंसूइं" (उवा)।

मंसु देखो **मंस**; "मंसणि छिन्नपुव्वाइं" (आचा)।

मंसुंडग न [**दे. मांसोन्दुक**] मांस-खण्ड; (पिंड ५८६)।

मंसुल्ल वि [**मांसवत्**] मांस वाला; (हे २, १५६)।

मकंडेअ पुं [**मार्कण्डेय**] ऋषि-विशेष; (अभि २४३)।

मक्कड पुं [**मर्कट**] १ वानर, बन्दर; (गा १७१; उप पृ १८८; सुपा ६०६; ते २, ७२; कुप्र ६०; कुमा)। २ मकड़ा, जाल बनाने वाला कीड़ा; (आचा; कस; गा ६३; दे ६, ११६)। ३ छन्द का एक भेद; (पिंग)। °**बंध** पुं [°**बन्ध**] बन्ध-विशेष, नाराच-बन्ध; (कम्म १, ३६)। °**ासंताण** पुं [°**संतान**] मकड़ा का जाल; (पडि)।

मक्कडबंध न [**दे**] शृङ्खलाकार ग्रीवा-भूषण; (दे ६, १२७)।

मक्कडी स्त्री [**मर्कटी**] वानरी; (कुप्र ३०३)।

मक्कल (अप) देखो **मक्कड**; (पिंग)।

मक्कार पुं [**माकार**] १ 'मा' वर्ण; २ 'मा' के प्रयोग वाली दण्डनीति, निषेध-सूचक एक प्राचीन दण्ड-नीति; (ठा ७—पत्र ३६८)।

मक्कुण देखो **मंकुण**; (पव २६२; दे १, ६६)।

मक्कोड पुं [**दे**] १ यन्त्र-गुम्फनार्थ राशि, जन्तर गढ़ने के लिये बनाया जाता राशि; (दे ६, १४२)। २ पुंस्त्री. कीट-विशेष, चींटा, गुजराती में 'मकोडो', 'मंकोडा'; (निचू १; आवम; जी १६)। स्त्री—°**डा**; (दे ६, १४२)।

मक्ख सक [**म्रक्ष्**] १ चुपड़ना, स्नेहान्वित करना। २ घी, तेल आदि स्निग्ध द्रव्य से मालिश करना। मक्खइ; (षड्), मक्खंति; (उप १४७ टी), मक्खिज्जइ, मक्खेउज;

(आचा २, १३ २; ३)। हेकृ—**मक्खेत्तए**; (कस)। कृ—**मक्खियव्व**; (ओघ ३८५ टी)।

मक्खण न [**म्रक्षण**] १ मक्खन, नवनीत; (ग २४८; पभा २२)। २ मालिश, अभ्यंग; (निचू ३)।

मक्खर पुं [**मस्कर**] १ गति; २ ज्ञान; ३ वंश, बाँस; ४ छिद्र वाला बाँस; (संक्षि १५; पि ३०६)।

मक्खिअ वि [**म्रक्षित**] चुपड़ा हुआ; (पाअ; दे ८, ६२; ओघ ३८५ टी)।

मक्खिअ न [**माक्षिक**] मक्षिका-संचित मधु; (राज)।

मक्खिआ स्त्री [**मक्षिका**] मक्खी; (दे ६, १२३)।

मगइअ वि [**दे**] हस्त-पाशित, हाथ में बाँधा हुआ; (विपा १, ३—पत्र ४८; ४६)।

मगण पुं [**मगण**] छन्दःशास्त्र-प्रसिद्ध तीन गुरु अक्षरों की संज्ञा; (पिंग)।

मगदंतिआ स्त्री [**दे**] १ मालती का फूल; २ मोगरा का फूल; "कुसुमं वा मगदंतिअं" (दस ५, २, १४; १६)।

मगर पुं [**मकर**] १ मगर-मच्छ, जलजन्तु-विशेष; (पराह १, २; औप; उव; सुर १३, ४२; णाया १, ४)। २ राहु; (सुज्ज २०)। देखो **मयर**।

मगसिर स्त्रीन [**मृगशिरस्**] नक्षत्र-विशेष; "कत्तिय रोहिणी मगसिर अद्दा य" (ठा २, ३—पत्र ७७)। स्त्री °**रा**; "दो मगसिराओ" (ठा २, ३—पत्र ७७)।

मगह देखो **मागह**। °**तित्थ** न [°**तीर्थ**] तीर्थ-विशेष; (इक)।

मगह) पुं. ब. [**मगध**] देश-विशेष; (कुमा)। °**वरच्छ**
मगहग) [°**वराक्ष**] आभरण-विशेष; (औप पृ ४८ टि)। °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष; (महा)। देखो **मयह**।

मगा अ [**दे**] पश्चात्, पीछे; मराठी में 'मग'; (दे १, ४ टी)।

मग्ग सक [**मार्गय्**] १ माँगना। २ खोजना। मग्गइ, मग्गंति; (उव; षड्; हे १, ३४)। वकृ—**मग्गंत, मग्गमाण**; (गा २०२; उप ६४८ टी; महा; सुपा ३०८)। संकृ—**मग्गेविणु** (अप); (भवि)। हेकृ—**मग्गिउं**; (महा)। कृ—**मग्गिअव्व, मग्गेयव्व**; (से १४, २७; सुपा ५१८)।

मग्ग सक [**मग्**] गमन करना, चलना। मग्गइ; (हे ४, २३०)।

मग्ग पुं [**मार्ग**] १ रास्ता, पथ; (ओघ ३४; कुमा; प्रासू ५०; ११५; भग)। २ अन्वेषण, खोज; (विसे १३८१)। °**ओ** अ [°**तस्**] रास्ते से; (हे १, ३७)। °**ण्णु** वि [°**ज्ञ**] मार्ग का जानकार; (उप ६४४)। °**त्थ** वि [°**स्थ**] १ मार्ग में स्थित; २ सोलह से ज्यादः वर्ष की उम्र वाला; (सूअ २, १, ६)। °**दय** वि [°**दय**] मार्ग-दर्शक; (भग; पडि)। °**विउ** वि [°**वित्**] मार्ग का जानकार; (ओघ ८०२)। °**ह** वि [°**घ**] मार्ग-नाशक; (श्रु ७४)। °**णुसारि** वि [°**ानुसारिन्**] मार्ग का अनुयायी; (धर्म १)।

मग्ग) पुं [**दे**] पश्चात्, पीछे; (दे ६, १११; से १, **मग्गअ**) ५१; सुर २, ५६; पाअ; भग)।

मग्गअ वि [**मार्गक**] माँगने वाला; (पउम ६६, ७३)।

मग्गण पुं [**मार्गण**] १ याचक; (सुपा २४)। २ बाण, शर; (पाअ)। ३ न. अन्वेषण, खोज; (विसे १३८१)। ४ मार्गणा, विचारणा, पर्यालोचन; (औप; विसे १८०)।

मग्गण°) स्त्री [**मार्गणा**] १ अन्वेषण, खोज; (उप पृ
मग्गणया) २७६; उप ६६२; ओघ ३)। २ अन्वय-
मग्गणा) धर्म के पर्यालोचन द्वारा अन्वेषण, विचारणा, पर्यालोचना; (कम्म ४, १; २३; जीवस २)।

मग्गणिर वि [**दे**] अनुगमन करने की आदत वाला; (दे ६, १२४)।

मग्गसिर पुं [**मार्गशिर**] मास-विशेष, मगसिर मास, अगहन; (कप्प; हे ४, ३५७)।

मग्गसिरी स्त्री [**मार्गशिरी**] १ मगसिर मास की पूर्णिमा; २ मगसिर की अमावस; (सुज्ज १०, ६)।

मग्गिअ वि [**मार्गित**] १ अन्वेषित, गवेषित; (से ६, ३६)। २ माँगा हुआ, याचित; (महा)।

मग्गिर वि [**मार्गयितृ**] खोज करने वाला; (सुपा ५८)।

मग्गिल्ल वि [**दे**] पाश्चात्य, पीछे का; (विसे १३२६)।

मग्गु पुं [**मद्गु**] पक्षि-विशेष, जल-काक; (सूअ १, ७, १५; हे २, ७७)।

मघ पुं [**मघ**] मेघ; (भग ३, २; पराण २)।

मघमघ अक [**प्र+सृ**] फैलना, गन्ध का पसरना; गुजराती में 'मघमघवुं', मराठी में 'मघमघणें'। वकृ—**मघमघंत, मघमघिंत, मघमघेंत**; (सम १३७; कप्प; औप)।

मघव पुं [**मघवन्**] १ इन्द्र, देव-राज; (कप्प; कुमा ७, ६४)। २ तृतीय चक्रवर्ती राजा; (सम १५२; पउम २०, १११)।

मघवा स्त्री [**मघवा**] छठवीं नरक-भूमि; "मघव त्ति माघवत्ति य पुढवीणं नामधेयाइं" (जीवस १२)।

मघा स्त्री [**मघा**] १ ऊपर देखो; (ठा ७—पत्र ३८८; इक)। २ देखो **महा**=मघा; (राज)।

मघोण पुं [**दे. मघवन्**] देखो **मघव**; (षड्; पि ४०३)।

मच्च अक [**मद्**] गर्व करना। मच्चइ; (षड्; हे ४, २२५)।

मच्च (अप) देखो **मंच**; "मंकुणमच्चइ सुत्त वराई" (भवि)।

मच्च न [**दे**] मल, मैल; (दे ६, १११)।

मच्च } पुं [**मर्त्य**] मनुष्य, मानुष; (स २०८; रंभा; **मच्चिअ** } पाअ; सुअ १, ८, २; आचा)। °**लोअ** पुं [°**लोक**] मनुष्य-लोक; (कुप्र ४११)। °**लोईय** वि [°**लोकीय**] मनुष्य-लोक से संबन्ध रखने वाला; (सुपा ५१६)।

मच्चिअ वि [**दे**] मल-युक्त; (दे ६, १११ टी)।

मच्चिर वि [**मदितृ**] गर्व करने वाला; (कुमा)।

मच्चु पुं [**मृत्यु**] १ मौत, मरण; (आचा; सुर २, १३८; प्रासू १०६; महा)। २ यम, यमराज; (षड्)। ३ रावण का एक सैनिक; (पउम ५६, ३१)।

मच्छ पुं [**मत्स्य**] १ मछली; (णाया १, १; पाअ; जी २०; प्रासू ५०)। २ राहु; (सुज्ज २०)। ३ देश-विशेष; (इक; भवि)। ४ छन्द का एक भेद; (पिंग)। °**खल** न [°**खल**] मत्स्यों का सुखाने का स्थान; (आचा २, १, ४, १)। °**बंध** पुं [°**बन्ध**] मच्छीमार, धीवर; (पण्ह १, १; महा)।

मच्छंडिआ स्त्री [**मत्स्यण्डिका**] खण्डशर्करा, एक प्रकार की शक्कर; (पण्ह २, ४; णाया १, १७; पणण १७; पिंड २८३; मा ४३)।

मच्छंत देखो **मंथ**=मन्थ्।

मच्छंध देखो **मच्छ-बंध**; (विपा १, ८ -पत्र ८२)।

मच्छर पुं [**मत्सर**] १ ईर्ष्या, द्वेष, डाह, पर-संपत्ति की असहिष्णुता; (उव)। २ कोप, क्रोध; ३ वि. ईर्ष्यालु, द्वेषी; ४ क्रोधी; ५ कृपण; (हे २, २१)।

मच्छर न [**मात्सर्य**] ईर्ष्या, द्वेष; (से ३, १६)।

मच्छरि वि [**मत्सरिन्**] मत्सर वाला; (पण्ह २, ३; उवा; पाअ)। स्त्री—°**णी**; (गा ८४; महा)।

मच्छरिअ वि [**मत्सरित, मत्सरिक**] ऊपर देखो; (पउम ८, ४६; पंचा १, ३२; भवि)।

मच्छल देखो **मच्छर**=मत्सर; (हे २, २१; षड्)।

मच्छिअ देखो **मक्खिअ**=माक्षिक; (पव ४—गाथा २२०)।

मच्छिअ वि [**मात्स्यिक**] मच्छीमार; (श्रा १२; अभि १८७; विपा १, ६; ७; पिंड ६३१)।

मच्छिआ (मा) देखो **माउ**=मातृ; (प्राकृ १०२)।

मच्छिगा देखो **मच्छिया**; (पि ३२०)।

मच्छिया } स्त्री [**मक्षिका**] मक्खी; (णाया १, १६; **मच्छी** } जी १८; उत्त ३६, ६०; प्राप्र; सुपा २८१)।

मज्ज सक [**मद्**] अभिमान करना;। मज्जइ, मज्जई, मज्जेज्ज; (उव; सुअ १, २, २, १; धर्मसं ७८)।

मज्ज अक [**मस्ज्**] १ स्नान करना। २ डूबना। मज्जइ; (हे ४, १०१), मज्जामो; (महा ५७, ७; धर्मसं ८६४)। वकृ—**मज्जमाण**; (गा २४६; णाया १, १)। संकृ—**मज्जिऊण**; (महा)। प्रयो—संकृ—**मज्जावित्ता**; (ठा ३, १—पत्र ११७)।

मज्ज सक [**मृज्**] साफ करना, मार्जन करना। मज्जइ; (षड्; प्राकृ ६६; हे ४, १०५)।

मज्ज न [**मद्य**] दारू, मदिरा; (औप; उवा; हे २, २४; भवि)। °**इत्त** वि [°**वत्**] मदिरा-लोलुप; (सुख १, १५)। °**व** वि [°**प**] मद्य-पान करने वाला; (पाअ)। °**वीअ** वि [°**पीत**] जिसने मद्य-पान किया हो वह; (विपा १, ६—पत्र ६७)।

मज्जग वि [**माद्यक**] मद्य-संबन्धी; "अन्नं वा मज्जगं रसं" (दस ५, २, ३६)।

मज्जण न [**मज्जन**] १ स्नान; २ डूबना; (सुर ३, ७६; कप्पू; गउड; कुमा)। °**घर** न [°**गृह**] स्नान-गृह; (णाया १, १—पत्र १६)। °**धाई** स्त्री [°**धात्री**] स्नान कराने वाली दासी; (णाया १, १—पत्र ३७)। °**पाली** स्त्री [°**पाली**] वही अर्थ; (कप्प)।

मज्जण न [**मार्जन**] १ साफ करना, शुद्धि; (कप्प)। २ वि. मार्जन करने वाला; (कुमा)। °**घर** न [°**गृह**] शुद्धि-गृह; (कप्प; औप)।

मज्जर देखो **मंजर**; (प्राकृ ५)। स्त्री—°**री**; "को जुन्न-मज्जरिं कंजिएण पवियारिउं तरइ" (सुर ३, १३३)।

मज्जविअ वि [**मज्जित**] १ स्नपित; २ स्नात; "एत्थ सं रे पंथिअ गयवइबहुयाउ मज्जविया" (वज्जा ६०)।

मज्जा स्त्री [**दे. मर्या**] मर्यादा; (दे ६, ११३; भवि)।

मज्जा स्त्री [**मज्जा**] धातु-विशेष, चर्बी, हड्डी के भीतर का गूदा; (सण)।

मज्जाइल्ल वि [**मर्यादिन्**] मर्यादा वाला; (निच ४)।

मज्जाया स्त्री [**मर्यादा**] १ न्याय्य-पथ-स्थिति, व्यवस्था; "रयणायरस्स मज्जाया" (प्रासू ६८; आवम)। २ सीमा, हद, अवधि; ३ कूल, किनारा; (हे २, २४)।

मज्जार पुंस्त्री [**मार्जार**] १ बिल्ला, बिलाव; (कुमा; भवि)। २ वनस्पति-विशेष; "वत्थुलपोरगमज्जारपोइवल्ली य पालक्का" (पगण १—पत्र ३४)। स्त्री—°**रिआ**, °**री**; (कप्पू; पाम)।

मज्जाविअ वि [**मज्जित**] स्नपित; (महा)।

मज्जिअ वि [**दे**] १ अवलोकित, निरीक्षित; २ पीत; (दे ६, १४४)।

मज्जिअ वि [**मज्जित**] स्नात; (पिंड ४२३; महा; पाअ)।

मज्जिअ वि [**मार्जित**] साफ किया हुआ; (पउम २०, १२७; कप्प; औप)।

मज्जिआ स्त्री [**मार्जिता**] रसाला, भक्ष्य-विशेष—दही, शक्कर आदि का बना हुआ और सुगन्ध से वासित एक प्रकार का खाद्य; (पाअ; दे ७, २; पव २५६)।

मज्जिर वि [**मज्जितृ**] मज्जन करने की आदत वाला; (गा ४७३; सण)।

मज्जोक्क वि [**दे**] अभिनव, नूतन; (दे ६, ११८)।

मज्झ न [**मध्य**] १ अन्तराल, मझार, बीच; (पाअ; कुमा; दं ३६; प्रासू ५०; १६७)। २ शरीर का अवयव-विशेष; (कप्पू)। ३ संख्या-विशेष, अन्त्य और परार्ध्य के बीच की संख्या; (हे २, ९० ; प्राप्र)। ४ वि. मध्यवर्ती, बीच का; (प्रासू १२५)। °**एस** पुं [°**देश**] देश विशेष, गंगा और यमुना के बीच का प्रदेश, मध्य प्रान्त; (गउड)। °**गय** वि [°**गत**] १ बीच का, मध्य में स्थित; (आचा; कप्प)। २ पुं. अवधिज्ञान का एक भेद; (णंदि)। °**गेवेज्जय** न [°**ग्रैवेयक**] देवलोक-विशेष; (इक)। °**ट्ठिअ** वि [°**स्थित**] तटस्थ, मध्यस्थ; (रयण ४८)। °**ण्ण**, °**ण्ह** पुं [°**ाह्न**] दिन का मध्य भाग, दोपहर; (प्राप्र; प्राकृ १८; कुमा; अभि ५५; हे २, ८४; महा)। २ न. तप-विशेष, पूर्वार्ध तप; (संबोध ५८)। °**ण्हतरु** पुं [°**ाह्नतरु**] वृक्ष-विशेष, मध्याह्न समय में अत्यन्त फूलने वाले लाल रँग के फल वाला वृक्ष; (कुमा)। °**त्थ** वि [°**स्थ**] तटस्थ; (उव; उप ६४८ टी; सुर १६, ६५)। २ बीच में रहा हुआ; (सुपा २५७)। °**देस** देखो °**एस**; (सुर ३, १६)। °**न्न** देखो °**ण्ण**; (हे २, ८४; सण)। °**म** वि [°**म**] मध्य का, मझला, बीच का; (भग; नाट—विक्र ५)। °**रत्त** पुं [°**रात्र**] निशीथ; (उप १३६; ७२८ टी)। °**रयणि** स्त्री [°**रजनि**] मध्य रात्रि; (सु ६३६)। °**लोग** पुं [°**लोक**] मेरु पर्वत; (राज)। °**वत्ति** वि [°**वर्तिन्**] अन्तर्गत; (मोह ६४)। °**ावलिअ** वि [°**ावलित**] १ बीच में मुड़ा हुआ; २ चित्त में कुटिल; (वज्जा १२)

मज्झआर न [**दे**] मझार, मध्य, अन्तराल; (दे ६, १२१; विक्र २८; उत्र; गा ३; भिंग २६६१; सुर १, ४५; सुपा ४६; १०३; खा १), "असोगवरपायवाइ मज्झयारम्मि" (भाव ७)।

मज्झंतिअ न [**दे**] मध्यन्दिन, मध्याह्न; (दे ६, १२४)।

मज्झंदिण न [**मध्यन्दिन**] मध्याह्न; (दे ६, १२४)।

मज्झंमज्झ न [**मध्यमध्य**] ठीक बीच; (भग; विपा १, १; सुर १, २४४)।

मज्झगार देखो **मज्झआर**; (राज)।

मज्झण्हिय वि [**माध्याह्निक**] मध्याह्न-संबन्धी; (कम्मवि १०५)।

मज्झत्थ न [**माध्यस्थ्य**] तटस्थता, मध्यस्थता; (उप ६१५; संबोध ४५)।

मज्झिम वि [**मध्यम**] १ मध्य-वर्ती, बीच का; (हे १, ४८; सम ४३; उवा; कप्प; औप; कुमा)। २ स्वर-विशेष; (ठा ७—पत्र ३९३)। °**रत्त** पुं [°**रात्र**] निशीथ, मध्य-रात्रि; (उप ७२८ टी)।

मज्झिमगंड न [**दे**] उदर, पेट; (दे ६, १२५)।

मज्झिमा स्त्री [**मध्यमा**] १ बीच की उंगली; (आव ३९०)। २ एक जैन मुनि-शाखा; (कप्प)।

मज्झिमिल्ल वि [**मध्यम**] मध्य-वर्ती, बीच का; (अणु)।

मज्झिमिल्ला देखो **मज्झिमा**; (कप्प)।

मज्झिल्ल वि [**माध्यिक, मध्यम**] मझला, बीच का; (पव ३६; देवेन्द्र २३८)।

मट्ट वि [**दे**] श्रृङ्ग-रहित; (दे ६, ११२)।

मट्टिआ स्त्री [**मृत्तिका**] मट्टी, मिट्टी, माटी; (णाया १, १; औप; कुमा; महा)।

मट्टी स्त्री [**मृत्, मृत्तिका**] ऊपर देखो; (जी ४; पडि; दे)।

मट्टुहिअ न [दे] १ परिणीत स्त्री का कोप; २ वि. कलुष; ३ अशुचि, मैला; (दे ६, १४६)।

मट्ठ वि [दे] अलस, आलसी, मन्द, जड; (दे ६, ११२; पाअ)।

मट्ठ वि [मृष्ट] १ मार्जित, शुद्ध; (सुअ १, ६, १२; औप)। २ मसृण, चिकना; (सम १३७; दे ८, ७)। ३ घिसा हुआ; (औप; हे २, १७४)। ४ न. मिरच, मरिच; (हे १, १२८)।

मड वि [दे. मृत] १ मरा हुआ, निर्जीव; (दे ६, १४१), "मडाच्च अप्पाणं" (वज्जा १४८), "मडे" (मा); (प्राकृ १०३)। °**ाइ** वि [°ादिन्] निर्जीव वस्तु को खाने वाला; (भग)। °**ासय** पुं [°ाश्रय] श्मशान; (निचू ३)।

मड पुं [दे] कंठ, गला; (दे ६, १४१)।

मडंब पुंन [दे. मडम्ब] ग्राम-विशेष, जिसके चारों ओर एक योजन तक कोई गाँव न हो ऐसा गाँव; (णाया १, १; भग; कप्प; औप; पणह १, ३; भवि)।

मडक्क पुं [दे] १ गर्व, अभिमान; "न किउ वयणु संचलिय मडक्कइ" (भवि)। २ मटका, कलश, घड़ा; मराठी में 'मडकें'; (भवि)।

मडकिया स्त्री [दे] छोटा मटका, कलशी; (कुप्र ११६)।

मडप्प, °प्पर, मडप्फर पुं [दे] गर्व, अभिमान, अहंकार; "अज्जवि कंदप्पमडप्पखंडणे वहइ पंडिच्चं" (सुपा २६; कुप्र २२१; २८४; षड्; दे ६, १२०; पाअ; सुपा ६; प्रासू ८५; कुप्र २५५; सम्मत्त १८६; धम्म ८ टी; भवि; सण)।

मडभ वि [मडभ] कुब्ज, वामन; (राज)।

मडमड, मडमडमड १ अक [मडमडाय्] १ मड मड आवाज करना। २ सक. मड मड आवाज हो उस तरह मारना। मडमडमडंति; (पउम २६, ५३)। भवि—मडमडइश्शं, मडमडाइश्शं (मा); (पि ५२८; चारु ३५)।

मडमडाइअ वि [मडमडायित] मड मड आवाज हो उस तरह मारा हुआ; (उत्तर १०३)।

मडय न [मृतक] मुड़दा, मुर्दा, शव; (पाअ; हे १, २०६; सुपा २१६)। °**गिह** न [°गृह] कब्र; (निचू ३)। °**चेइअ** न [°चैत्य] मृतक के दाह होने पर या गाड़ने पर बनाया गया चैत्य—स्मारक-मन्दिर; (आचा २, १०, १६)। °**डाह** पुं [°दाह] चिता, जहां पर शव फूँक जाते हों; (आचा २, १०, १६)। °**थूभिया** स्त्री [°स्तूपिका] मृतक के स्थान पर बनाया गया छोटा स्तूप; (आचा २, १०, १६)।

मडय पुं [दे] आराम, बगीचा; (दे ६, ११५)।

मडवोज्झा स्त्री [दे] शिबिका, पालकी; (दे ६, १२२)।

मडह त्रि [दे] १ लघु, छोटा; (दे ६, ११७; पाअ; सण)। २ स्वल्प, थोड़ा; (गा १०५; स ८; गउड; वज्जा ४२)।

मडहर पुं [दे] गर्व, अभिमान; (दे ६, १२०)।

मडहिय वि [दे] अल्पीकृत, न्यून किया हुआ; (गउड)।

मडहुल्ल वि [दे] लघु, छोटा; "मडहुल्लियाए किं तुह इमीए किं वा दलेहिं तलिणेहिं" (वज्जा ४८)।

मडिआ स्त्री [दे] समाहत स्त्री, आहत महिला; (दे ६, ११४)।

मडुवइअ वि [दे] १ हत, विध्वस्त; २ तीक्ष्ण; (दे ६, १४६)।

मड्ड सक [मृद्] मर्दन करना। मड्डइ; (हे ४, १२६; प्राकृ ६८)।

मड्डा स्त्री [दे] १ बलात्कार, हठ, जबरदस्ती; (दे ६, १४०; पाअ; सुर ३, १३६; सुख २, १५)। २ आज्ञा, हुकुम; (दे ६, १४०; सुपा २७६)।

मड्डिअ त्रि [मर्दित] जिसका मर्दन किया गया हो वह; (हे २, ३६; षड्; पि २६१)।

मड्डुअ देखो **मद्दुअ**; (राज)।

मढ देखो **मड्ड**। मढइ; (हे ४, १२६)।

मढ पुंन [मठ] संन्यासिओं का आश्रय, व्रतिओं का निवास-स्थान; "मढो" (हे १, १९९; सुपा २३४; वज्जा ३४; भवि), "मढं" (प्राप्र)।

मढिअ देखो **मड्डिअ**; (कुमा)।

मढिअ वि [दे] १ खचित; गुजराती में 'मंढलु'; "एयाउ ओसहीओ तिधाउमढियाउ धारिज्जा" (सिरि ३७०)। २ परिवेष्टित; (दे २, ७५; पाअ)।

मढी स्त्री [मठिका] छोटा मठ; (सुपा ११३)।

मण सक [मन्] १ मानना। २ जानना। ३ चिन्तन करना। मणइ, मणसि; (षड्; कुमा)। कवकृ—**मणिज्जमाण**; (भग १३, ७; विसे ८१३)।

मण पुंन [मनस्] मन, अन्तःकरण, चित्त; (भग १३, ७; विसे ३५२५; स्वप्न ४५; दं २२; कुमा; प्रासू ४४; ४८;

१२१)। °अगुत्ति स्त्री [°अगुप्ति] मन का असंयम; (पि १५६)। °करण न [°करण] चिन्तन, पर्यालोचन; (श्रावक ३३७)। °गुत्त वि [°गुप्त] मन को संयम में रखने वाला; (भग)। °गुत्ति स्त्री [°गुप्ति] मन का संयम; (उत्त २४, २)। °जाणुअ वि [°ज्ञ] १ मन को जानने वाला, मन का जानकार; २ सुन्दर, मनोहर; (प्राकृ १८)। °जीविअ वि [°जीविक] मन को आत्मा मानने वाला; (पराह १, २—पत्र २८)। °जोअ पुं [°योग] मन की चेष्टा, मनो-व्यापार; (भग)। °ज्ज, °ण्णु, °ण्णुअ देखो °जाणुअ; (प्राकृ १८; षड्)। °थंभणी स्त्री [°स्तम्भनी] विद्या-विशेष, मन को स्तब्ध करने वाली दिव्य शक्ति; (पउम ७, १३७)। °नाण न [°ज्ञान] मन का साक्षात्कार करने वाला ज्ञान, मनःपर्यव ज्ञान; (कम्म ३, १८; ४, ११; १७; २१)। °नाणि वि [°ज्ञानिन्] मनःपर्यव-नामक ज्ञान वाला; (कम्म ४, ४०)। °पज्जत्ति स्त्री [°पर्याप्ति] पुद्गलों को मन के रूप में परिणत करने की शक्ति; (भग ६, ४)। °पज्जव पुं [°पर्यव] ज्ञान-विशेष, दूसरे के मन की अवस्था को जानने वाला ज्ञान; (भग; औप; विसे ८३)। °पज्जवि वि [°पर्यविन्] मनःपर्यव ज्ञान वाला; (पव २१)। °पसिणविज्जा स्त्री [°प्रश्नविद्या] मन के प्रश्नों के उत्तर देने वाली विद्या; (सम १२३)। °बलिअ वि [°बलिन्, °क] मनो-बल वाला, दृढ मन वाला; (पराह २, १; औप)। °मोहण वि [°मोहन] मन को मुग्ध करने वाला, चित्ताकर्षक; (गा १२८)। °योगि वि [°योगिन्] मन की चेष्टा वाला; (भग)। °वग्गणा स्त्री [°वर्गणा] मन के रूप में परिणत होने वाला पुद्गल-समूह; (राज)। °वज्ज न [°वज्र] एक विद्याधर-नगर; (इक)। °समिइ स्त्री [°समिति] मन का संयम; (ठा ८—पत्र ४२२)। °समिय वि [°समित] मन को संयम में रखने वाला; (भग)। °हंस पुं [°हंस] छन्द-विशेष; (पिंग)। °हर वि [°हर] मनोहर, सुन्दर, चित्ताकर्षक; (हे १, १५६; औप; कुमा)। °हरण पुंन [°हरण] पिंगल-प्रसिद्ध एक माला-पद्धति; (पिंग)। °भिराम, °भिराममेल्ल वि [अभिराम] मनोहर; (सम १४६; औप; उप पृ ३११; उप २२० टी)। °म वि [°आप] सुन्दर, मनोहर; (सम १४६; विपा १, १; औप; कप्प)। देखो मणो°।

मणं देखो मणयं; (प्राकृ ३८)।

मणंसि वि [मनस्विन्] प्रशस्त मन वाला; (हे १, २६)। स्त्री—°णी; (हे १, २६)।

मणंसिल° } स्त्री [मनःशिला] लाल वर्ण की एक उप
मणंसिला } धातु, मनशिल, मैनशिल; (कुमा; हे १, २६)।

मणग पुं [मनक] एक जैन बाल-मुनि, महर्षि शय्यंभवसूरि का पुत्र और शिष्य; (कप्प; धर्मवि ३८)। देखो मणय।

मणगुलिया स्त्री [दे] पीठिका; (राय)।

मणण न [मनन] १ ज्ञान, जानना; २ समझना; (विसे ३५२५)। ३ चिन्तन; (श्रावक ३३७)।

मणय पुं [मनक] द्वितीय नरक-भूमि का तीसरा नरकेन्द्रक—नरकावास-विशेष; (देवेन्द्र ६)। देखो मणग।

मणयं अ [मनाग्] अल्प, थोड़ा; (हे २, १६६; पाअ; षड्)।

मणस देखो मण=मनस्; "पसमसमणसो करिस्सामि" (पउम ६, ५६), "लाभो चेव तवस्सिस्स होइ अदीणमणसस्स" (आचा ५३७)।

मणसिल° } देखो मणंसिला; (कुमा; हे १, २६; जी ३;
मणसिला } स्वप्न ६४)।

मणसीकय वि [मनसिकृत] चिन्तित; (पराण ३४—पत्र ७८२; सुपा २४७)।

मणसीकर सक [मनसि+कृ] चिन्तन करना, मन में रखना। मणसीकरे; (उत्त २, २५)।

मणस्सि देखो मणंसि; (धर्मवि १४६)।

मणा देखो मणयं; (हे २, १६६; कुमा)।

मणाउ } (अप) ऊपर देखो; (कुमा; भवि; पि ११४; हे
मणाउं } ४, ४१८; ४२६)।

मणागं ऊपर देखो; (उप १३१; महा)।

मणाल देखो मुणाल; (राज)।

मणालिया स्त्री [मृणालिका] पद्म-कन्द का मूल; (तंदु २०)। देखो मुणालिआ।

मणासिला देखो मणंसिला; (हे १, २६; पि ६४)।

मणि पुंस्त्री [मणि] पत्थर-विशेष, मुक्ता आदि रत्न; (कप्प; औप; कुमा; जी ३; प्रासू ४)। °अंग पुं [°अङ्ग] कल्प-वृक्ष की एक जाति जो आभूषण देती है; (सम १७)। °आर पुं [°कार] जौहरी, रत्नों के गहनों का व्यापारी; (दे ७, ७७; सुपा ७६; णाया १, १३; धर्मवि ३६)। °कंचण न [°काञ्चन] रुक्मि-पर्वत का एक शिखर; (ठा २, ३—पत्र ७०)। °कूड न [°कूट] रुचक पर्वत का एक शिखर (दीव)। °खइअ वि [°खचित] रत्न-

जटित; (पि १६६)। °चइया स्त्री [°चयिता] नगरी-विशेष; (विपा २, ६)। °चूड पुं [°चूड] एक विद्याधर नृप; (महा)। °जाल न [°जाल] भूषण-विशेष, मणि-माला; (औप)। °तोरण न [°तोरण] नगर-विशेष; (महा)। °प देखो °व; (से ६, ४३)। °पेढिया स्त्री [°पीठिका] मणि-मय पीठिका; (महा)। °प्पभ पुं [°प्रभ] एक विद्याधर; (महा)। °भद्द पुं [°भद्र] एक जैन मुनि; (कप्प)। °भूमि स्त्री [°भूमि] मणि-खचित जमीन; (स्वप्न ५४)। °मइय, °मय वि [°मय] मणि-मय, रत्न निर्वृत; (सुपा ६२; महा)। °रह पुं [°रथ] एक राजा का नाम; (महा)। °व पुं [°प] १ यक्ष; २ सर्प, नाग; (से २, २३)। ३ समुद्र; (से ६, ५०)। °वई स्त्री [°मती] नगरी-विशेष; (विपा २, ६ —पत्र ११४ टि)। °वंध पुं [°बन्ध] हाथ और प्रकोष्ठ के बीच का अवयव; (सण)। °वालय पुं [°पालक, °वालक] समुद्र; (से २, २३)। °सलागा स्त्री [°शलाका] मद्य-विशेष; (राज)। °हियय पुं [°हृदय] देव-विशेष; (दीव)।

मणिअ न [मणित] संभोग-समय का स्त्री का अव्यक्त शब्द; (गा ३६२; रंभा)।

मणिअं देखो मणयं; (षड्; हे २, १६६; कुमा)।

मणिअड (अप) पुं [मणि] माला का सुमेरु; (हे ४, ४१४)।

मणिच्छिअ वि [मनईप्सित] मनोऽभीष्ट; (सुपा ३८४)।

मणिज्जमाण देखो मण=मन्।

मणिट्ठ वि [मनइष्ट] मन को प्रिय; (भवि)।

मणिणायहर न [दे. मनिणगागृह] समुद्र, सागर; (दे ६, १२८)।

मणिरइआ स्त्री [दे] कटीसूत्र; (दे ६, १२६)।

मणीसा स्त्री [मनीषा] बुद्धि, मेधा, प्रज्ञा; (पाअ)।

मणीसि वि [मनीषिन्] बुद्धिमान्, पण्डित; (कप्पू)।

मणीसिद वि [मनीषित] वाञ्छित; (नाट—मृच्छ ५२)।

मणु पुं [मनु] १ स्मृति-कर्ता मुनि-विशेष; (विसे १५०८; उप १५० टी)। २ प्रजापति-विशेष; "चोद्दहमणुचोद्दसमुणओ" (कुमा; राज)। ३ मनुज, मनुष्य; "देवत्ताओ मणुत्तं" (पउम २१, ६३; कम्म १, १६; २, १६)। ४ न. एक देव-विमान; (सम २)।

मणुअ पुं [मनुज] १ मनुष्य, मानव; (उवा; भग; हे १, ८; पाअ; कुमा; सं ८२; प्रासू ४५)। २ भगवान् श्रेयांसनाथ का शासन-यक्ष; (संति ७)। ३ वि. मनुष्य-संबन्धी; "तिरिया मणुया य दिव्वगा उवसग्गा तिविहाहियासिया" (सुअ १, २, २, १५)।

मणुइंद पुं [मनुजेन्द्र] राजा, नरपति; (पउम ८५, २२; सुर १, ३२)।

मणुएसर पुं [मनुजेश्वर] ऊपर देखो; (सुपा २०४)।

मणुज्ज, मणुण्ण वि [मनोज्ञ] सुन्दर, मनोहर; (पाअ; उप १४२ टी; सम १४६; भग)।

मणुस, मणुस्स पुंस्त्री [मनुष्य] १ मानव, मर्त्य; (आचा; पि ३००; आचा; ठा ४, २; भग; श्रा २८; सुपा २०३; जी १६; प्रासू २८)। स्त्री—°स्सी; (भग; पण्ण १८; पव २४१)। °खेत्त न [°क्षेत्र] मनुष्य-लोक; (जीव ३)। °सेणियापरिकम्म पुं [°श्रेणिकापरिकर्मन्] दृष्टिवाद का एक सूत्र; (सम १२८)।

मणुस्स वि [मानुष्य] मनुष्य-संबन्धी; "दिव्वं व मणुस्सं वा तेरिच्छं वा सरागहियएणं" (आप २१)।

मणुस्सिंद पुं [मनुष्येन्द्र] राजा, नर-पति; (उत्त १८, ३७; उप पृ १४२)।

मणूस देखो मणुस्स; (हे १, ४३; औप, उवर १२२; पि ६३)।

मणे अ [मन्ये] विमर्श-सूचक अव्यय; (हे २, २०७; षड्; प्राकृ २६; गा १११; कुमा)।

मणो° देखो मण=मनस्। °गम न [°गम] देवविमान-विशेष; "पालगपुप्फगसोमणससिरिवच्छनंदियावत्तकामगमपीतिगममणोगमविमलसव्वओभद्दनामधेज्जेहिं विमाणेहिं ओइण्णा" (औप)। °ज्ज वि [°ज्ञ] १ सुन्दर, मनोहर; (हे २, ८३; उप २६४ टी)। २ पुं. गुल्म-विशेष; "सरियए णोमालियकोरिंटयबंधुजीवगमणोज्जे" (पण्ण १—पत्र ३२)। °ण्ण, °न्न वि [°ज्ञ] सुन्दर, मनोहर; (हे २, ८३; पि २७६)। °भव पुं [°भव] कामदेव, कन्दर्प; (सुपा ६८; पिंग)। °भिरमणिज्ज वि [°भिरमणीय] सुन्दर, चित्ताकर्षक; (पउम ८, १४३)। °भू पुं [°भू] कामदेव, कन्दर्प; (कप्पू)। °मय वि [°मय] मानसिक; 'सारीरमणोमयाणि दुक्खाणि' (पण्ह १, ३—पत्र ५५)। °माणसिय वि [°मानसिक] मन में ही रहने वाला—वचन से अप्रकटित—मानसिक दुःख आदि; (णाया १, १—पत्र २६)।

°रम वि [°रम] १ सुन्दर, रमणीय; (पाअ)। २ पुं. एक विमानेन्द्रक, देवविमान-विशेष; (देवेन्द्र १३६)। ३ मेरु पर्वत; (सुज्ज ५)। ४ राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५, २६५)। ५ किन्नर-देवों की एक जाति; ६ रुचक द्वीप का अधिष्ठायक देव; (राज)। ७ तृतीय ग्रैवेयक-विमान; (पव १६४)। ८ आठवें देवलोक के इन्द्र का पारियानिक विमान; (इक)। ९ एक देव-विमान; (सम १७)। १० मिथिला का एक चैत्य; (उत्त ६, ८; ६)। ११ उपवन-विशेष; (उप ६८६ टी)। °रमा स्त्री [°रमा] १ चतुर्थ वासुदेव की पटरानी का नाम; (पउम २०, १८६)। २ भगवान् सुपार्श्वनाथ की दीक्षा-शिबिका; (सुपा ७५; विचार १२६)। ३ शक्र की अञ्जुका-नामक इन्द्राणी की एक राजधानी; (इक)। °रह पुं [°रथ] १ मन का अभिलाष; (औप; कुमा; हे ४, ४१४)। २ पक्ष का तृतीय दिवस; (सुज्ज १०, १४---पत्र १४७)। °हंस पुं [°हंस] छन्द-विशेष; (पिंग)। °हर पुं [°हर] १ पक्ष का तृतीय दिवस; (सुज्ज १०, १४)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)। ३ वि. रमणीय, सुन्दर; (हे १, १५६; षड्; स्वप्न ५२; कुमा)। °हरा स्त्री [°हरा] भगवान् पद्मप्रभ की दीक्षा-शिबिका; (विचार १२६)। °हव देखो °भव; (स ८१; कप्पू)। °हिराम वि [°भिराम] सुन्दर; (भवि)।

मणोसिला देखो **मणंसिला**; (हे १, २६; कुमा)।

मण्ण देखो **मण**=मन्। मण्णइ; (पि ४८८)। कर्म— मणिणज्जइ; (कुप्र १०६)। वकृ---**मण्णमाण**; (नाट— चैत १३३)।

मण्णण न [**मानन**] मानना, आदर; (उप १५४)।

मण्णा देखो **मन्ना**; (राज)।

मण्णिय देखो **मन्निय**; (राज)।

मण्णु देखो **मन्नु**; (गा ११; ५०८; दे ६, ७१; वणी १७)।

मण्णे देखो **मणे**; (कप्प)।

मत्त वि [**मत्त**] १ मद-युक्त, मतवाला; (उवा; प्रासू ६४; ६८; भवि)। २ न. मद्य, दारू; (ठा ७)। ३ मद, नशा; (पव १७१)। °जला स्त्री [°जला] नदी-विशेष; (ठा २, ३; इक)।

मत्त देखो **मेत्त**=मात्र; "वयणमत्तमिट्ठायां" (रंभा)।

मत्त न [**अमत्र, मात्र**] पात्र, भाजन; (आचा २, १, ६, ३; ओघ २५१)। देखो **मत्तय**।

मत्त (अप) देखो **मच्च**=मर्त्य; (भवि)।

मत्तंगय पुं [**मत्ताङ्गक, °द**] कल्पवृक्ष की एक जाति, मद्य देने वाला कल्पतरु; (सम १७; पव १७१)।

मत्तंड पुं [**मार्तण्ड**] सूर्य, रवि; (सम्मत्त १४५; सिरि १००८)।

मत्तग न [**दे**] पेशाब, मूत; (कुलक ६)।

मत्तग } पुंन [**अमत्र, मात्रक**] १ पात्र, भाजन; २ छोटा
मत्तय } पात्र; "बिइअओ मत्तओ होइ" (बृह ३; कप्प)।

मत्तय देखो **मत्तग**=दे; (कुलक १३)।

मत्तल्ली स्त्री [**दे**] बलात्कार; (दे ६, ११३)।

मत्तवारण पुंन [**मत्तवारण**] बरंडा, बरामदा, दालान; (दे ६, १२३; सुर ३, १००; भवि)।

मत्तवाल पुं [**दे**] मतवाला, मदोन्मत्त; (दे ६, १२२; षड्; सुख २, १७; सुपा ४८६)।

मत्ता स्त्री [**मात्रा**] १ परिमाण; (पिंड ६५१)। २ अंश, भाग, हिस्सा; (स ४८३)। ३ समय का सूक्ष्म नाप; ४ सूक्ष्म उच्चारण-काल वाला वर्णावयव; (पिंग)। ५ अल्प, लेश, लव; (पाअ)।

मत्ता अ [**मत्वा**] जानकर; (सूअ १, २, २, ३२)।

मत्तालंब पुं [**दे. मत्तालम्ब**] बरंडा, बरामदा; (दे ६, १२३; सुर १, ५७)।

मत्तिया स्त्री [**मृत्तिका**] मिट्टी; (पण्ण १—पत्र २५)। °वई स्त्री [°वती] नगरी-विशेष, दशार्णदेश की राजधानी; (पव २७५)।

मत्थ } पुंन [**मस्त, °क**] माथा, सिर; (स १, १; स
मत्थग } ३८५; औप)। °त्थ वि [°स्थ] सिर में
मत्थय } स्थित; (गउड)। °मणि पुं [°मणि] शिरोमणि, प्रधान, मुख्य; (उप ६४८ टी)।

मत्थयधोय वि [**दे. धौतमस्तक**] दासत्व से मुक्त, गुलामी से मुक्त किया हुआ; (णाया १, १—पत्र ३७)।

मत्थुलुंग } न [**मस्तुलुङ्ग**] १ मस्तक-स्नेह, सिर में से
मत्थुलुय } निकलता एक प्रकार का चिकना पदार्थ; (पण्ह १, १; तंदु १०)। २ मेद का फिप्फिस आदि; (ठा ३, ४—पत्र १७०; भग; तंदु १०)।

मथिय देखो **महिअ**=मथित; (पण्ह २, ४—पत्र १३०)।

मद देखो **मय**=मद; (कुमा; प्रयौ १६; पि २०२)।

मद (मा) देखो **मय**=मृत; (प्राकृ १०३)।

मदूण देखो **मयण**; (स्वप्न ६३; नाट—मृच्छ २३१)।

मदणसलाग(गा) देखो मयणसलागा; (पराह १—पत्र ६४)।

मदणा देखो मयणा=मदना; (पाया २—पत्र २५१)।

मदणिज्ज वि [मदनीय] कामोद्दीपक, मदन-वर्धक; (पाया १, १—पत्र १६; ओप)।

मदि देखो मइ=मति; (मा ३२; कुमा; पि १६२)।

मदीय देखो मईय; (स २३२)।

मदुवी देखो मउई; (चंड)।

मदोली स्त्री [दे] दूती, दूत-कर्म करने वाली स्त्री; (षड्)।

मद्द सक [मृद्] १ चूर्ण करना। २ मालिश करना, मसलना, मलना। मद्दहि; (कप्प)। कर्म—मद्दीअदि; (नाट—मृच्छ १३५)। हेकृ—मद्दिउं; (पि ५८५)।

मद्दण न [मर्दन] १ अंग-चप्पी, मालिश; (सुपा २४)। २ हिंसा करना; "तसथावरभूयमद्दणं विविहं" (उव)। ३ वि. मर्दन करने वाला; (ती ३)।

मद्दल पुं [मर्दल] वाद्य-विशेष, मुरज, मृदंग; (दे ६, ११६; सुर ३, ६८; सिरि १५७)।

मद्दलिअ वि [मार्दलिक] मृदंग बजाने वाला; (सुपा २६४; ५५३)।

मद्दव न [मार्दव] मृदुता, नम्रता, विनय, अहंकार-निग्रह; (ओप; कप्प)।

मद्दवि वि [मार्दविन्] नम्र, विनीत; "अज्जवियं मद्दवियं लाघवियं" (सूअ २, १, ५७; आचा)।

मद्दविअ वि [मार्दविक, °त] ऊपर देखो; (बृह ४; वव १)।

मद्दिअ देखो मड्डिअ; (पाअ)।

मद्दी स्त्री [माद्री] १ राजा शिशुपाल की मा का नाम; (सूअ १, ३, १, १ टी)। २ राजा पाण्डु की एक स्त्री का नाम; (वेणी १७१)।

मद्दुअ पुं [मद्दुक] भगवान् महावीर का राजगृह-निवासी एक उपासक; (भग १८, ७—पत्र ७५०)।

मद्दुग पुं [मद्गु, °क] पक्षि-विशेष, जल-वायस; (भग ७, ६—पत्र ३०८)। देखो मग्गु।

मद्दुग देखो मुद्दुग; (राज)।

मधु देखो महु; (षड्; रंभा; पिंग)।

मधुर देखो महुर; (निचू १; प्राकृ ८५)।

मधुलित्थ देखो महुलित्थ; (ठा ४, ४—पत्र २७१)।

मधूला स्त्री [दे. मधूला] पाद-गंड; (राज)।

मम अ [दे] निषेधार्थक अव्यय, मत, नहीं; (कुमा)।

ममुस्स देखो मणुस्स; (चंड; भग)।

मन्न देखो मण्ण। मन्नइ, मन्नसि; (आचा; महा), मन्नंति, मन्नेसि; (रंभा)। कर्म—मन्निज्जउ; (महा)। वकृ—मन्नंत, मन्नमाण; (सुर १४, १७१; आचा; महा; सुपा ३०७; सुर ३, १७४)।

मन्न देखो माण=मानय्। कृ—मन्न, मन्नाय, मन्नणिज्ज, मन्नियव्व, मन्निय; (उप १०३६; धर्मवि ७६; भवि; सुर १०, ३८; सुपा ३६८; ठा १ टी—पत्र २१; स ३५)।

मन्ना स्त्री [मनन] १ मति, बुद्धि; (ठा १—पत्र १६)। २ आलोचन, चिन्तन; (सूअ २, १, ४१; ठा १)।

मन्ना स्त्री [मान्या] अभ्युपगम, स्वीकार; (ठा १—पत्र १६)।

मन्नाय देखो मन्न=मानय्।

मन्नाविय वि [मानित] मनाया हुआ; (सुपा ११६)।

मन्निय वि [मत] माना हुआ; (सुपा ६०५; कुमा)।

मन्नु पुं [मन्यु] १ क्रोध, गुस्सा; (सुपा ६०४)। २ दैन्य, दीनता; "संयससुब्भूयगरुयमन्नुवसा" (सुर ११, १४४)। ३ अहंकार; ४ शोक, अफसोस; ५ क्रतु, यज्ञ; (हे २, २५; ४४)।

मन्नुइय वि [मन्युचित] मन्यु-युक्त, कुपित; (सुख ४, १)।

मन्नुलिय वि [दे] उद्विग्न; (स ५६६)।

मन्ने देखो मण्णे; (हे १, १७१; रंभा)।

मप्प न [दे] माप, बाँट; "तेण य सह वहणेणं आणेवि य तस्स हट्टमप्पाणि" (सुपा ३६२)।

मब्भीसडी } (अप) स्त्री [मा भैषीः] अभय-वचन; (हे
मब्भीसा } ४, ४२२)।

ममकार पुं [ममकार] ममत्व, मोह, प्रेम, स्नेह; (गच्छ १, ४२)।

ममक्खय वि [मदीय] मेरा; (सुख २, १५)।

ममत्त न [ममत्व] ममता, मोह, स्नेह; (सुपा २६)।

ममया स्त्री [ममता] ऊपर देखो; (पंचा १५, ३२)।

ममा सक [ममाय्] ममता करना। ममाइ, ममाअए; (सूअ १, १, ४२; उव)। वकृ—ममायमाण, ममायमीण; (आचा; सूअ १, ६, २१)।

ममाइ वि [**ममत्विन्**] ममता वाला; (सूअ १, १, १, ४) ।

ममाइय वि [**ममत्वित**] जिस पर ममता की गई हो वह; (आचा) ।

ममाय वि [**ममाय**] ममत्व करने वाला; (निचू १३) ।

ममि वि [**मामक**] मेरा, मदीय; "ममं वा ममिं वा" (सूअ २, २, ६) ।

ममूर सक [**चूर्णय्**] चूरना । ममूरइ; (धात्वा १४८) ।

मम्म पुंन [**मर्मन्**] १ जीवन-स्थान; २ सन्धि-स्थान; (गा ४४६; उप ६६१; हे १, ३२) । ३ मरण का कारण-भूत वचन आदि; (णाया १, ८) । ४ गुप्त बात; (प्रासू ११; सुपा ३०७) । ५ रहस्य, तात्पर्य; (श्रु २८) । °ग वि [°ग] मर्म-वाचक (शब्द); (उत्त १, २५; सुख १, २५) ।

मम्मक्क पुं [दे] गर्व, अहंकार; (षड्) ।

मम्मक्का स्त्री [दे] १ उत्कण्ठा; २ गर्व; (दे ६, १४३) ।

मम्मण न [**मन्मन**] १ अव्यक्त वचन; (हे २, ६१; दे ६, १४१; विपा १, ७; वा २६) । २ वि. अव्यक्त वचन बोलने वाला; (श्रा १२) ।

मम्मण पुं [दे] १ मदन, कन्दर्प; २ रोष, गुस्सा; (दे ६, १४१) ।

मम्मणिआ स्त्री [दे] नील मक्षिका; (दे ६, १२३) ।

मम्मर पुं [**मर्मर**] शुष्क पत्तों का आवाज; (गा ३६५) ।

मम्मह पुं [**मन्मथ**] कामदेव, कन्दर्प; (गा ४३०; अभि ६५) ।

मम्मी स्त्री [दे] मामी, मातुल-पत्नी; (दे ६, ११२) ।

मय न [**मत**] मनन, ज्ञान; (सूअ २, १, ५०) । २ अभिप्राय, आशय; (ओघनि १६०; सूअनि १२०) । ३ मसय, दर्शन, धर्म; "समओ मयं" (पाअ; सम्मत्त २२८) । ४ वि. माना हुआ; (कम्म ४, ४६) । ५ इष्ट, अभीष्ट; (सुपा ३७१) । °न्नु वि [°ज्ञ] दार्शनिक; (सुपा ५८२) ।

मय पुं [**मय**] १ उष्ट्र, ऊँट; (सुख ६, १) । २ अश्वतर, खच्चर; "मयमहिसखरहकेसरि—" (पउम ६, ५६) । ३ एक विद्याधर-नरेश; (पउम ८, १) । °हर पुं [°धर] ऊँट वाला; (सुख ६, १) ।

मय वि [**मृत**] मरा हुआ, जीव-रहित; (णाया १, १; उव; सुर २, १८; प्रासू १७; प्राप्र) । °किच्च न [°कृत्य] मरण के उपलक्ष में किया जाता श्राद्ध आदि कर्म; (विपा १, २) ।

मय पुंन [**मद**] १ गर्व, अभिमान; "एआइं मयाइं विगिंच धीरा" (सूअ १, १३, १६; सम १३; उप ७२८ टी; कुमा; कम्म २, २६) । २ हाथी के गण्ड-स्थल से भरता प्रवाही पदार्थ; (णाया १, १—पत्र ६५; कुमा) । ३ आमोद, हर्ष; ४ कस्तूरी; ५ मत्तता, नशा; ६ नद, बड़ी नदी; ७ वीर्य, शुक्र; (प्राप्र) । °करि पुं [°करिन्] मद झरता हाथी; (महा) । °गल वि [°कल] १ मद से उत्कट, मद में चूर; "मयगलकुंजरगमणी" (पिंग) । २ पुं. हाथी; (सुपा ६०; हे १, १८२; पाअ; दे ६, १३५) । ३ छन्द-विशेष; (पिंग) । °णासणी स्त्री [°नाशनी] विद्या-विशेष; (पउम ७, १४०) । °धम्म पुं [°धर्म] विद्याधर-वंश के एक राजा का नाम; (पउम ५, ४३) । °मंजरी स्त्री [°मञ्जरी] एक स्त्री का नाम; (महा) । °वारण पुं [°वारण] मद वाला हाथी; "मयवारणो उ मत्तो निवाडिया-लाणवरखंभो" (महा) ।

मय पुं [**मृग**] १ हरिण; (कुमा; उप ७१८ टी) । २ पशु, जानवर; ३ हाथी की एक जाति; ४ नक्षत्र-विशेष; ५ कस्तूरी; ६ मकर राशि; ७ अन्वेषण; ८ याचन, माँग; ९ यज्ञ-विशेष; (हे १, १२६) । °च्छी स्त्री [°ाक्षी] हरिण के नेत्रों के समान नेत्र वाली; (सुर ४, १६; सुपा ३६५; कुमा) । °णाह पुं [°नाथ] सिंह; (स १११) । °णाहि पुंस्त्री [°नाभि] कस्तूरी; (पाअ; सुपा २००; गउड) । °तण्हा स्त्री [°तृष्णा] धूप में जल-भ्रान्ति; (हे; से ६, ३५) । °तण्हिआ स्त्री [°तृष्णिका] वही अर्थ; (पि ३७५) । °तिण्हा देखो °तण्हा; (पि ५४) । °तिण्हिआ देखो °तण्हिआ; (पि ५४) । °धुत्त पुं [°धूर्त] शृगाल, सियार; (दे ६, १२५) । °नाभि देखो °णाहि; (कुमा) । °राय पुं [°राज] सिंह, केसरी; (पउम ३, १७; उप पृ ३०) । °लंछण पुं [°लाञ्छन] चन्द्रमा; (पाअ; कुमा; सुर १३, ५३) । °लोअणा स्त्री [°रोचना] गोरोचन, गोरोचना, पीत-वर्ण द्रव्य-विशेष; (अभि १२७) । °रि पुं [°रि] सिंह; (पाअ) । °रिदमण पुं [°रि-दमन] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५, २६२) । °हिव पुं [°धिप] सिंह, केसरी; (पाअ; स ६) । देखो मिअ, मिग—म्म ।

मयंक } देखो **मिअंक**; (हे १, १७७; १८०; कुमा; षड्;
मयंग } गा ३६६; रंभा)।
मयंग देखो **मायंग**=मातंग; "कुञ्जर वरुणो मिउडी गोमेहो वामण मयंगो" (पव २६)।
मयंग पुं [**मृदङ्ग**] वाद्य-विशेष; (प्राकृ ८)।
मयंगय पुं [**मतङ्गज**] हाथी, हस्ती; (पउम ८०, ६६; उप पृ २६०)।
मयंगा स्त्री [**मृतगङ्गा**] जहां पर गंगा का प्रवाह रुक गया हो वह स्थान; (णाया १, ४—पत्र ६६)।
मयंतर न [**मतान्तर**] भिन्न मत, अन्य मत; (भग)।
मयंद देखो **मइंद**=मृगेन्द्र; (सुपा ६२)।
मयंध वि [**मदान्ध**] मद में अन्ध बना हुआ, मदोन्मत्त; (सुर २, ६६)।
मयग वि [**मृतक**] १ मरा हुआ; २ न. मुर्दा; (णाया १, ११; कुप्र २६; औप)। °**किच्च** न [°**कृत्य**] श्राद्ध आदि कर्म; (णाया १, २)।
मयड पुं [**दे**] आराम, बगीचा; (दे ६, ११५)।
मयण पुं [**मदन**] १ कन्दर्प, कामदेव; (पाअ; धण २५; कुमा; रंभा)। २ लक्ष्मण का एक पुत्र; (पउम ६१, २०)। ३ एक वणिक्-पुत्र; (सुपा ६१७)। ४ छन्द का एक भेद; (पिंग)। ५ वि. मद-कारक, मादक; "मयणा दरनिव्वलिया निव्वलिया जह कोद्दवा तिविहा" (विसे ११२०)। ६ न. मीन, मोम; "मयणो मयणं विअ विलीणो" (धण २५; पाअ; सुर २, २४६)। °**घरिणी** स्त्री [°**गृहिणी**] काम-प्रिया, रति; (कुप्र १०६)। °**तालंक** पुं [°**तालङ्क**] छन्द-विशेष; (पिंग)। °**तेरसी** स्त्री [°**त्रयोदशी**] चैत्र मास की शुक्ल त्रयोदशी तिथि; (कुप्र ३७८)। °**दुम** पुं [°**द्रुम**] वृक्ष-विशेष; (से ७, ६६)। °**फल** न [°**फल**] फल-विशेष, मैनफल; "तओ तेगुप्पलं मयणफलेण भावियं मणुस्स-हत्थे दिन्नं, एयं वरस्स देज्जाहि" (सुख २, १७)। °**मंजरी** स्त्री [°**मञ्जरी**] १ राजा चण्डप्रद्योत की एक स्त्री का नाम; २ एक श्रेष्ठि-कन्या; (महा)। °**रेहा** स्त्री [°**रेखा**] एक युवराज की पत्नी; (महा)। °**वेय** पुं [°**वेग**] पुरुष-विशेष का नाम; (भवि)। °**सुंदरी** स्त्री [°**सुन्दरी**] राजा श्रीपाल की एक पत्नी; (सिरि ५३)। °**हरा** स्त्री [°**गृह**] छन्द-विशेष; (पिंग)। °**हल** देखो °**फल**; "मयणहल-रंधओ ता उव्वमिया चंदहासखुरा" (धर्मवि ६४)।
मयणंकुस पुं [**मदनाङ्कुश**] श्रीरामचन्द्र का एक पुत्र, कुश; (पउम ६७, ६)।
मयणसलागा } स्त्री [**दे. मदनशलाका**] मैना, सारिका;
मयणसलाया } (जीव १ टी—पत्र ४१; दे ६, ११६)।
मयणसाला स्त्री [**दे. मदनशाला**] सारिका-विशेष; (पण्ह १, १—पत्र ८)।
मयणा स्त्री [**दे. मदना**] मैना, सारिका; (उप १२६ टी; श्राव १)।
मयणा स्त्री [**मदना**] १ वैरोचन बलीन्द्र की एक पटरानी; (ठा ५, १—पत्र ३०२)। २ शक्र के लोकपाल की एक स्त्री; (ठा ४, १—पत्र २०४)।
मयणाय पुं [**मैनाक**] १ द्वीप-विशेष; २ पर्वत-विशेष; (भवि)।
मयणिज्ज देखो **मदणिज्ज**; (कप्प; पणण १७)।
मयणिवास पुं [**दे**] कन्दर्प, कामदेव; (दे ६, १२६)।
मयर पुं [**मकर**] १ जलजन्तु-विशेष, मगर-मच्छ; (औप; सुर १३, ४६)। २ राशि-विशेष, मकर राशि; (सुर १३, ४६; विचार १०६)। ३ रावण का एक सुभट; (पउम ५६, २६)। ४ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**केउ** पुं [°**केतु**] कामदेव, कन्दर्प; (कप्पू)। °**द्धय** पुं [°**ध्वज**] वही; (पाअ; कुमा; रंभा)। °**लंछण** पुं [°**लाञ्छन**] वही; (कप्पू; पि ५४)। °**हर** पुंन [°**गृह**] वही; (पाअ; से १, १८; ४, ४८; वज्जा १५४; भवि)।
मयरंद पुं [**दे. मकरन्द**] पुष्प-रज, पुष्प-पराग; (दे ६, १२३; पाअ; कुमा ३, ५४)।
मयरंद पुं [**मकरन्द**] पुष्प-रस, पुष्प-मधु; (दे ६, १२३; सुर ३, १०; प्रासू ११३; कुमा)।
मयल देखो **मइल**=मलिन; (सुपा २६२)।
मयलणा देखो **मइलणा**; (सुपा १२४; २०६)।
मयलपुत्ती [**दे**] देखो **मइलपुत्ती**; (दे ६, ११५)।
मयलिअ देखो **मलिणिअ**; (उप ७२८ टी)।
मयल्लिगा स्त्री [**मतल्लिका**] प्रधान, श्रेष्ठ; "कुडक्खरविओ-(?उ)मयल्लिगाओ" (रंभा १७)।
मयह देखो **मगह**। °**सामिय** पुं [°**स्वामिन्**] मगध देश का राजा; (पउम ६१, ११)। °**पुर** न [°**पुर**] राज-गृह नगर; (वसु)। °**हिवइ** पुं [°**धिपति**] मगध देश का राजा; (पउम २०, ४७)।

मयहर पुं [**दे**] १ ग्राम-प्रधान, ग्राम-प्रवर, गाँव का मुखिया; (पव २६८; महा; पउम ६३, १६)। २ वि. वडील, मुखिया, नायक; "सयलहत्थारोहपहाणमयहरेण" (स २८०; महानि ४; पउम ६३, १७)। स्त्री—°रिगा, °रिया, °री; (उप १०३१ टी; सुर १, ४१; महा; सुपा ७६; १२६)।

मयाई स्त्री [**दे**] शिरो-माला; (दे ६, ११५)।

मयार पुं [**मकार**] १ 'म' अक्षर; २ मकारादि अश्लील—अवाच्य—शब्द; "जत्थ जयारमयारं समणी जंपइ गिहत्थपच्चक्खं" (गच्छ ३, ४)।

मयाल (अप) देखो **मराल**; (पिंग)।

मयालि पुं [**मयालि**] जैन महर्षि-विशेष—१ एक अन्तकृद् मुनि; (अंत १४)। २ एक अनुत्तर-गामी मुनि; (अनु १)।

मयाली स्त्री [**दे**] लता-विशेष, निद्राकरी लता; (दे ६, ११६; पाअ)।

मर अक [**मृ**] मरना। मरइ, मरए; (हे ४, २३४; भग; उव; महा; षड्), मरं; (हे ३, १४१)। मरिज्जइ, मरिज्जउ; (भवि; पि ४७७)। भूका—मरही, मरीअ; (आचा; पि ४६६)। भवि—मरिस्ससि; (पि ५२२)। वकृ—**मरंत, मरमाण**; (गा ३७५; प्रासू ६४; सुपा ४०५; भग; सुपा ६५१; प्रासू ८३)। संकृ—**मरिऊण**; (पि ५८६)। हेकृ—**मरिउं, मरेउं**; (संक्षि ३४)। कृ—**मरियव्व**; (अंत २४; सुपा २१५; ५०१; प्रासू १०६), **मरिएव्वउं** (अप); (हे ४, ४३८)।

मर पुं [**दे**] १ मशक; २ उल्लु, घूक; (दे ६, १४०)।

मरअद, **मरगय** पुंन [**मरकत**] नील वर्ण वाला रत्न-विशेष, पन्ना; (संक्षि ६; हे १, १८२; औप; षड्; गा ७५; काप्र ३१), "परिकम्मिओवि बहुसो काओ किं मरगओ होइ" (कुप्र ४०३)।

मरजीवय पुं [**दे**, **मरजीवक**] समुद्र के भीतर उतर कर जो वस्तु निकालने का काम करता है वह; (सिरि ३८५)।

मरट्ट पुं [**दे**] गर्व, अहंकार; (दे ६, १२०; सुर ४, १५४; प्रासू ८५; ती ३; भवि; सण; हे ४, ४२२; सिरि ६६२), "अखिलमइ(?र)इकंदप्पमइणे लद्धजयपडायस्स" (धर्मवि ६७)।

मरट्टा स्त्री [**दे**] उत्कर्ष;
"एईइ अहरहरिआरुणिममरट्टाइं(? इ) लज्जमाणाइं।
बिंबफलाइं उव्बंधणं व वल्लीसु विरयंति ॥"
(कुप्र २६६)।

मरट्ठ (अप) देखो **मरहट्ठ**; (पिंग)।

मरढ देखो **मरहट्ट**। स्त्री—°ढी; (कप्पू)।

मरण पुंन [**मरण**] मौत, मृत्यु; (आचा; भग; पाअ; जी ४३; प्रासू १०७; ११६), "सेसा मरणा सव्वे तब्भवमरणेण णायव्वा" (पव १५७)।

मरल देखो **मराल**=मराल; (प्राकृ ५)।

मरह सक [**मृष्**] क्षमा करना। "खमंतु मरहंतु णं देवाणुप्पिया" (णाया १, ८—पत्र १३५)।

मरहट्ठ पुंन [**महाराष्ट्र**] १ बड़ा देश; २ देश-विशेष, महाराष्ट्र, मराठा; "मरहट्ठो मरहट्ठं" (हे १, ६६; प्राकृ ६; कुमा)। ३ सुराष्ट्र; (कुमा ३, ६०)। ४ पुं. महाराष्ट्र देश का निवासी, मराठा; (पण्ह १, १—पत्र १४; पिंग)। ५ छन्द-विशेष; (पिंग)।

मरहट्ठी स्त्री [**महाराष्ट्री**] १ महाराष्ट्र की रहने वाली स्त्री; २ प्राकृत भाषा का एक भेद; (पि ३५४)।

मराल वि [**दे**] अलस, मन्द, आलसी; (दे ६, ११२; पाअ)।

मराल पुं [**मराल**] १ हंस पक्षी; (पाअ)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)।

मराली स्त्री [**दे**] १ सारसी, सारस पक्षी की मादा; २ दूती; ३ सखी; (दे ६, १४२)।

मरिअ वि [**मृत**] मरा हुआ; (सम्मत्त १३६)।

मरिअ वि [**दे**] १ त्रुटित, टूटा हुआ; २ विस्तीर्ण; (षड्)।

मरिअ देखो **मिरिअ**; (प्रयौ १०५; भास ८ टी)।

मरिइ देखो **मरीइ**, "अह उप्पन्ने नाणे जिणस्स, मरिई तओ य निक्खंतो" (पउम ८२, २४)।

मरिस सक [**मृष्**] सहन करना, क्षमा करना। मरिसइ, मरिसेइ, मरिसेउ; (हे ४, २३५; महा; स ६७०)। कृ—**मरिसियव्व**; (स ६७०)।

मरिसावणा स्त्री [**मर्षणा**] क्षमा; (स ६७१)।

मरीइ पुं [**मरीचि**] १ भगवान् ऋषभदेव का एक पौत्र और भरत चक्रवर्ती का पुत्र, जो भगवान् महावीर का जीव था; (पउम ११, ६४)। २ पुंस्त्री. किरण; (पण्ह १, ४—पत्र ७२; धर्मसं ७२३)।

मरीइया स्त्री [**मरीचिका**] १ किरण-समूह; २ मृग-तृष्णा, किरण में जल-भ्रान्ति; (राज)।

मरीचि देखो **मरीइ**; (औप; सुज्ज १, ६) ।

मरीचिआ देखो **मरीइया**; (औप) ।

मरु पुं [**मरुत्**] १ पवन, वायु; २ देव, देवता; ३ सुगन्धी वृक्ष-विशेष, मरुआ, मरुवा; (षड्) । ४ हनूमान का पिता; (पउम ५३, ७६) । °**णंदण** पुं [°**नन्दन**] हनूमान; (पउम ५३, ७६) । °**सुय** पुं [°**सुत**] वही; (पउम १०१, १) । देखो **मरुअ**=मरुत् ।

मरु } पुं [**मरु, °क**] १ निर्जल देश; (णाया १,
मरुअ } १६—पत्र २०२; औप) । २ देश-विशेष, मारवाड़, (ती ५; सहा; इक; पण्ह १, ४—पत्र ६८) । ३ पर्वत, ऊँचा पहाड़; (निचू ११) । ४ वृक्ष-विशेष, मरुआ, मरुवा; (पण्ह १,५—पत्र १५०) । ५ ब्राह्मण, विप्र; (सुख २, १७) । ६ एक नृप-वंश; ७ मरु-वंशीय राजा; "तस्स य पुट्ठीए नंदो पणपन्नसयं च होइ वासाणं । मरुयाणं अट्ठसयं" (विचार ४६३) । ८ मरु देश का निवासी; (पण्ह १, १) । °**कंतार** न [°**कान्तार**] निर्जल जंगल; (अच्चु ८५) । °**त्थली** स्त्री [°**स्थली**] मरु-भूमि; (महा) । °**भू** स्त्री [°**भू**] वही; (श्रा २३) । °**य** वि [°**ज**] मरु देश में उत्पन्न; (पण्ह १, ४—पत्र ६८) ।

मरुअ देखो **मरु**=मरुत्; (पण्ह १, ४—पत्र ६८) । २ एक देव-जाति; (ठा २, २) । °**कुमार** पुं [°**कुमार**] वानरद्वीप के एक राजा का नाम; (पउम ६, ६७) । °**वसभ** पुं [°**वृषभ**] इन्द्र; (पण्ह १, ४—पत्र ६८) ।

मरुअअ } पुं [**मरुबक**] वृक्ष-विशेष, मरुआ, मरुवा; (गउड;
मरुअया } पण्ण १—पत्र ३४) ।

मरुआ स्त्री [**मरुता**] राजा श्रेणिक की एक पत्नी; (अंत) ।

मरुइणी स्त्री [**मरुकिणी**] ब्राह्मण-स्त्री, ब्राह्मणी; (विसे ६३८) ।

मरुंड देखो **मुरुंड**; (अंत; औप; णाया १, १—पत्र ३७) ।

मरुकुंद पुं [**दे. मरुकुन्द**] मरुआ, मरुवे का गाछ; (भवि) ।

मरुग देखो **मरुअ**=मरुक; (पण्ह १, १—पत्र १४; इक) ।

मरुदेव पुं [**मरुदेव**] १ ऐरवत क्षेत्र में उत्पन्न एक जिन-देव; (सम १५३) । २ एक कुलकर पुरुष का नाम; (सम १५०; पउम ३, ५५) ।

मरुदेवा } स्त्री [**मरुदेवा, °वी**] १ भगवान् ऋषभदेव की
मरुदेवी } माता का नाम; (उव; सम १५०; १५१) । २ राजा श्रेणिक की एक पत्नी, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ले कर मुक्ति पाई थी; (अंत) ।

मरुद्देवा स्त्री [**मरुद्देवा**] भगवान् महावीर के पास दीक्षा ले कर मुक्ति पाने वाली राजा श्रेणिक की एक पत्नी; (अंत २५) ।

मरुल पुं [**दे**] भूत, पिशाच; (दे ६, ११४) ।

मरुवय देखो **मरुअअ**; (गा ६७७; कुमा; विक्र ३६) ।

मरुस देखो **मरिस** । मरुसिज्ज; (भवि) ।

मल देखो **मद्द** । मलइ, मलेइ; (हे ४, १२६; प्राकृ ६८; भवि), मलेमि; (से ३, ६३), मलेंति; (सुर १, ६७) । कर्म—मलिज्जइ; (पंचा १६, १०) । वकृ—**मलेंत**; (से ४, ४२) । कवकृ—**मलिज्जंत**; (से ३, १३) । संकृ—**मलिऊण, मलिऊणं**; (कुमा; पि ५८५) । कृ—**मलेव्व**; (वै ६६; निसा ३) ।

मल पुं [**दे**] स्वेद, पसीना; (दे ६, १११) ।

मल पुंन [**मल**] १ मैल; (कुमा; प्रासू २५) । २ पाप; (कुमा) । ३ बँधा हुआ कर्म; (चेइय ६२२) ।

मलंपिअ वि [**दे**] गर्वी, अहंकारी; (दे ६, १२१) ।

मलण न [**मर्दन, मलन**] मर्दन, मलना; (सम १२५; गउड; दे ३, ३४; सुपा ४४०; पंचा १६, १०) ।

मलय पुं [**दे. मलक**] आस्तरण-विशेष; (णाया १, १—पत्र १३; १, १७—पत्र २२६) ।

मलय पुं [**दे. मलय**] १ पहाड़ का एक भाग; (दे ६, १४४) । २ उद्यान, बगीचा; (दे ६, १४४; पात्र) ।

मलय पुं [**मलय**] १ दक्षिण देश में स्थित एक पर्वत; (सुपा ४५६; कुमा; षड्) । २ मलय-पर्वत के निकट-वर्ती देश-विशेष; (पव २७५; पिंग) । ३ छन्द-विशेष; (पिंग) । ४ देवविमान-विशेष; (देवेन्द्र १४३) । ५ न. श्रीखण्ड, चन्दन; (जीव ३) । ६ पुंस्त्री. मलय देश का निवासी; (पण्ह १, १) । °**केउ** पुं [°**केतु**] एक राजा का नाम; (सुपा ६०७) । °**गिरि** पुं [°**गिरि**] एक सुप्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार; (इक; राज) । °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] एक जैन उपासक का नाम; (सुपा ६४५) । °**द्दि** पुं [°**द्रि**] पर्वत-विशेष; (सुपा ४७७) । °**भव** वि [°**भव**] १ मलय देश में उत्पन्न । २ न. चन्दन; (गउड) । °**मई** स्त्री [°**मती**] राजा मलयकेतु की स्त्री; (सुपा ६०७) । °**य** [°**ज**] देखो °भव; (राज) । °**रुह** पुं [°**रुह**] चन्दन का पेड़; (सुर १, १८) । २ न. चन्दन-काष्ठ; (पात्र) ।

°चल पुं [°चल] मलय पर्वत; (सुपा ४५६)। °निल पुं [°निल] मलयाचल से बहता शीतल पवन; (कुमा)। °यल देखो °चल; (रंभा)।
मलयय वि [मलयज] १ मलय देश में उत्पन्न; (अणु)। २ न. चन्दन; (भवि)।
मलवट्टी स्त्री [दे] तरुणी, युवति; (दे ६, १२४)।
मलहर पुं [दे] तुमुल-ध्वनि; (दे ६, १२०)।
मलि वि [मलिन्] मल वाला, मल-युक्त; (भवि)।
मलिअ वि [मृदित] जिसका मर्दन किया गया हो वह; (गा ११०; कुमा; हे ३, १३५; औप; णाया १, १)।
मलिअ न [दे] १ लघु क्षेत्र; २ कुडव; (दे ६, १४४)।
मलिअ वि [मलित] मल-युक्त, मलिन; "मलमलियदेहवत्था" (सुपा १६६; गउड)।
मलिज्जंत देखो मल=मृद्।
मलिण वि [मलिन] मैला, मल-युक्त; (कुमा; सुपा ६०१)।
मलिणिय वि [मलिनित] मलिन किया हुआ; (उव)।
मलीमस वि [मलीमस] मलिन, मैला; (पाअ)।
मलेंत देखो मल=मृद।
मलेच्छ देखो मिलिच्छ; (पि ८४; नाट—चैत १८)।
मल्ल पुं [मल्ल] १ पहलवान, कुश्ती लड़ने वाला, बाहु-योद्धा; (औप; कप्प; पराह २, ४; कुमा)। २ पात्र; "दीवसिहा-पडिपिल्लणमल्ले मिल्लंति नीसासे" (कुप्र १३१)। ३ भींत का अवष्टम्भन-स्तम्भ; ४ छप्पर का आधार-भूत काष्ठ; (भग ८, ६—पत्र ३७६)। °जुद्ध न [°युद्ध] कुश्ती; (कप्पू; हे ४, ३८२)। °दिन्न पुं [°दत्त] एक राज-कुमार; (णाया १, ८)। °वाइ पुं [°वादिन्] एक सुविख्यात प्राचीन जैन आचार्य और ग्रन्थकार; (सम्मत्त १२०)।
मल्ल न [माल्य] १ पुष्प, फूल; (ठा ४, ४)। २ फूल की गुँथी हुई माला; (पाअ; औप)। ३ मस्तक-स्थित पुष्प-माला; (हे २, ७६)। ४ एक देव-विमान; (सम ३६)।
मल्लइ पुं [मल्लकि, °किन्] नृप-विशेष; (भग; औप; पि ८६)।
मल्लग } न [दे. मल्लक] १ पात्र-विशेष, शराव; (विसे
मल्लय } २४७ टी; पिंड २१०; तंदु ४४; महा; कुलक १४; णाया १, ६; दे ६, १४५; प्रयौ ६७)। २ चषक, पान-पात्र; (दे ६, १४५)।
मल्लय न [दे] १ अपूप-भेद, एक तरह का पूआ; २ वि. कुसुम्भ से रक्त; (दे ६, १४५)।
मल्लाणी स्त्री [दे] मातुलानी, मामी; (दे ६, ११६; षड्; प्राकृ ३८)।
मल्लि वि [मालिन्] माल्य-युक्त, माला वाला; (औप)।
मल्लि स्त्री [मल्लि] १ उन्नीसवें जिन-देव का नाम; (सम ४३; णाया १, ८; मंगल १२; पडि)। २ वृक्ष-विशेष, मोतिया का गाछ; (दे २, १८)। °णाह, °नाह पुं [°नाथ] उन्नीसवें जिन-देव; (महा; कुप्र ६३)।
मल्लिअज्जुण पुं [मल्लिकार्जुन] एक राजा का नाम; (कुमा)।
मल्लिआ स्त्री [मल्लिका] १ पुष्पवृक्ष-विशेष; (णाया १, ६; कुप्र ४६)। २ पुष्प-विशेष; (कुमा)। ३ छन्द-विशेष; (पिंग)।
मल्ली देखो मल्लि; (णाया १, ८; पउम २०, ३५; सिरि १४८; कुमा)।
मल्ह अक [दे] मौज मानना, लीला करना। वकृ—मल्हंत; (दे ६, ११६ टी; भवि)।
मल्हण न [दे] लीला, मौज; (दे ६, ११६)।
मव सक [मापय्] मपना, माप करना, नापना। मवेंति; (सिरि ४२५)। कर्म—"आउयाइं मविज्जंति" (कम्म ५, ८५ टी)। कवकृ—मविज्जमाण; (विसे १४००)।
मविय वि [मापित] मापा हुआ; (तंदु ३१)।
मच्छली (मा) स्त्री [मत्स्य] मछली; (पि २३३)।
मस } पुं [मश, °क] १ शरीर पर का तिलाकार काला
मसअ } दाग, तिल; (पव २५७)। २ मच्छड़, क्षुद्र जन्तु-विशेष; (गा ५६०; चारु १०; वज्जा ४६)।
मसक्कसार न [मसक्कसार] इन्द्रों का एक स्वयं प्रामा-ण्य विमान; (देवेन्द्र २६३)।
मसग देखो मसअ; (भग; औप; पउम ३३, १०८; जी १८)।
मसण वि [मसृण] १ स्निग्ध, चिकना; २ सुकुमाल, कोमल, अ-कर्कश; ३ मन्द, धीमा; (हे १, १३०; कुमा)।
मसरक्क सक [दे] सकुचना, समेटना। संकृ—"दसवि करंगुलीउ मसरक्किवि (अप)" (भवि)।
मसाण न [श्मशान] मसान, मरघट; (गा ४०८; प्रासू; कुमा)।
मसार पुं [दे. मसार] मसृणता-संपादक पाषाण-विशेष, कसौटी का पत्थर; (णाया १, १—पत्र ६; औप)।
मसारगल्ल पुं [मसारगल्ल] एक रत्न-जाति; (णाया १, १—पत्र ३१; कप्प; उत्त ३६, ७६; इक)।

मसि स्त्री [**मसि**] १ काजल, कज्जल; (कप्पू)। २ स्याही, सियाही; (सुर २. ५)।
मसिहार पुं [**मसिहार**] क्षत्रिय परिव्राजक-विशेष; (औप)।
मसिण देखो **मसण**; (हे १, १३०; कुमा; औप; से १, ४५; ५, ६४)।
मसिण वि [**दे**] रम्य, सुन्दर; (दे ६, ११८)।
मसिणिअ वि [**मसृणित**] १ मृष्ट, शुद्ध किया हुआ, मार्जित; "रोसिसियिअं मसिणिअं" (पाअ)। २ स्निग्ध किया हुआ; (से ६, ६)। ३ विलुलित, विमर्दित; (से १, ५५)।
मसी देखो **मसि**; (उवा)।
मसूर / **मसूरग** / **मसूरय** पुंन [**मसूर**, °**क**] १ धान्य-विशेष, मसूरि; (ठा ४, ३; सम १४६; पिंड ६२३)। २ उच्छीर्षक, ओसीसा; (सुर २, ८३; कप्प)। ३ वस्त्र या चर्म का वृत्ताकार आसन; (पव ८४)।
मस्सु देखो **मंसु**; (संचि १२; पि ३१२)।
मस्सूरग देखो **मसूरग**; "मस्सूरए य भिंचुगे" (जीवस ५२)।
मह सक [**काङ्क्ष्**] चाहना, वाञ्छना। महइ; (हे ४, १६२; कुमा; सण)।
मह सक [**मथ्**] १ मथना, विलोड़न करना। २ मारना। महेज्जा; (उवा)।
मह सक [**मह्**] पूजना। महइ; (कुमा), महेह; (सिरि ५६६)। संकृ—**महिअ**; (कुमा)। कृ—**महणिज्ज**; (उप पृ १२६)।
मह पुंन [**मह**] उत्सव; (विपा १, १—पत्र ५; रंभा; पाअ; सण)।
मह पुं [**मख**] यज्ञ; (चंड; गउड)।
मह वि [**महत्**] १ बड़ा, वृद्ध; २ विपुल, विस्तीर्ण; ३ उत्तम, श्रेष्ठ; "इणं महं सत्तुस्सेहं" (णाया १, १—पत्र १३; काल; जी ७; हे १, ५)। स्त्री—°**ई**; (उव; महा)। °**एवी** स्त्री [°**देवी**] पटरानी; (भवि)। °**कंतजस** पुं [°**कान्तयशस्**] राक्षस वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५, २६५)। °**कमलंग** न [°**कमलाङ्ग**] संख्या-विशेष, ८४ लाख कमल की संख्या; (जो २) °**कव्व** न [°**काव्य**] सर्ग-बद्ध उत्तम काव्य-ग्रन्थ; (भवि)। °**काल** देखो **महा-काल**; (देवेन्द्र २४)। °**गइ** पुं [°**गति**] राक्षस वंश का एक राजा, एक लंकेश; (पउम ५, २६५)। °**ग्गह** देखो **महा-गह**; (सम ६३)। °**ग्घ** वि [°**अर्घ**] महा-मूल्य, कीमती; (सुर ३, १०३; सुपा ३७)। °**ग्घविअ** वि [°**अर्घित**] १ महँघा, दुर्लभ; (से १४, ३७)। २ विभूषित; "विमलंगोवंगगुण-महग्घविया" (सुपा १; ६०)। ३ सम्मानित; "अच्चिय-वंदियपूइयसक्कारियपणमिओ महग्घविओ" (उव)। °**ग्घिम** (अप) वि [°**अर्घित**] बहु-मूल्य, महँघा; (भवि)। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] १ राजकुमार-विशेष; (विपा २, ५; ६)। २ एक राजा; (विपा १, ४)। °**च्च** वि [°**अर्च**] १ बड़ा ऐश्वर्य वाला; २ बड़ी पूजा—सत्कार वाला; (ठा ३, १—पत्र ११७; भग)। °**च्च** वि [°**अर्च्य**] अति पूज्य; (ठा ३, १; भग)। °**च्छरिय** न [°**आश्चर्य**] बड़ा आश्चर्य; (सुर १०, ११८)। °**जक्ख** पुं [°**यक्ष**] भगवान् अजितनाथ का शासनाधिष्ठायक देव; (पव २६; संति ७)। °**जाला** स्त्री [°**ज्वाला**] विद्यादेवी-विशेष; (संति ६)। °**ज्जुइय** वि [°**द्युतिक**] महान् तेज वाला; (भग औप)। °**ड्ढि** स्त्री [°**ऋद्धि**] महान वैभव; (राय)। °**ड्ढिय**, °**ड्ढीअ** वि [°**ऋद्धिक**] विपुल वैभव वाला; (भग; ओघभा १०)। °**ण्णव** पुं [°**अर्णव**] महा-सागर; (सुपा ४१७; हे १, २६६)। °**ण्णवा** स्त्री [°**अर्णवा**] १ बड़ी नदी; २ समुद्र-गामिनी; (कस ४, २७ टि; बृह ४)। °**तुडियंग** न [°**त्रुटिताङ्ग**] ८४ लाख त्रुटित की संख्या; (जो २)। °**त्तण** न [°**त्व**] बड़ाई, महत्ता; (श्रा २७)। °**त्तर** वि [°**तर**] १ बहुत बड़ा; (स्वप्न २८)। २ मुखिया, नायक, प्रधान; (कप्प; औप; विपा १, ८)। ३ अन्तःपुर का रक्षक; (औप)। स्त्री—°**रिया**, °**री**; (ठा ४, १—पत्र १६८; इक)। °**त्थ** वि [°**अर्थ**] महान् अर्थ वाला; (णाया १, ८; श्रा २७)। °**त्थ** न [°**अस्त्र**] अस्त्र-विशेष, बड़ा हथियार; (पउम ७१, ६७)। °**त्थिम** पुंस्त्री [°**र्थत्व**] महार्थता; (भवि)। °**दलिल्ल** वि [°**दलिल**] बड़ा दल वाला; (प्रासू १२३)। °**द्दह** पुं [°**ह्रद**] बड़ा ह्रद; (णाया १, १—पत्र ६४; गा १८६ अ)। °**द्दि** स्त्री [°**अद्रि**] १ बड़ी याचना; २ परिग्रह; (पण्ह १, ५—पत्र ९२)। °**द्दुम** पुं [°**द्रुम**] १ महान् वृक्ष; (हे ४, ४४५)। २ वैरोचन इन्द्र के एक पदाति-सैन्य का अधिपति; (ठा ५, १—पत्र ३०२)। °**द्धि** वि [°**ऋद्धि**] बड़ी ऋद्धि वाला; (कुमा)। °**धूम** पुं [°**धूम**] बड़ा धुँआ; (महा)। °**न्नव** देखो °**ण्णव**; (श्रा २८)। °**पाण** न [°**प्राण**] ध्यान-विशेष; (सिरि १३३०)। °**पुंडरीअ** पुं [°**पुण्डरीक**] ग्रह-विशेष;

(हे २, १२०)। °प्प पुं [°आत्मन्] महान् आत्मा, महा-पुरुष; (पउम ११८, १२१)। °प्फल वि [°फल] महान् फल वाला; (सुपा ६२१)। °बाहु पुं [°बाहु] राक्षस वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५, २६५)। °बोह पुं [°अबोध] महा-सागर;

"इय वुत्तंतं सोउं रयणा निव्वासिया तहा सुगया।
महबोहे जंतूणं जह पुणरवि नागया तत्थ" (सम्मत्त १२०)।

°ब्बल पुं [°बल] १ एक राज-कुमार; (विपा २, ७; भग ११, ११; अंत)। २ वि. विपुल बल वाला; (भग; औप)। देखो महा-बल। °ब्भय वि [°भय] महाभय-जनक; (पराह १, १)। °ब्भूय न [°भूत] पृथिवी आदि पाँच द्रव्य; (सूअ २, १, २२)। °मरुय पुं [°मरुत] एक महर्षि, अन्तकृद् मुनि-विशेष; (अंत २५)। °मास पुं [°अश्व] महान् अश्व; (औप)। °यर देखो °त्तर; (णाया १, १—पत्र ३७)। °रव पुं [°रव] राक्षस वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५, २६६)। °रिसि पुं [°ऋषि] महर्षि, महा-मुनि; (उव; रयण ३७)। °रिह वि [°अर्ह] बड़े के योग्य, बहु-मूल्य, कीमती; (विपा १, ३; औप; पि १४०)। °वाय पुं [°वात] महान् पवन; (ओघ ३८७)। °व्वइय वि [°व्रतिक] महाव्रत वाला; (सुपा ४७४)। °व्वय पुंन [°व्रत] महान् व्रत; "महव्वया पंच हुंति इमे" (पउम ११, २३), "सेसा महव्वया ते उत्तरगुणमंजुयावि न हु सम्मं" (सिक्खा ४८; भग; उव)। °व्वय पुं [°व्यय] विपुल खर्च; (उप पृ १०८)। °सलागा स्त्री [°शलाका] पल्य-विशेष, एक प्रकार का नाप; (जीवस १३६)। °सिव पुं [°शिव] एक राजा, षष्ठ बलदेव और वासुदेव का पिता; (सम १५२)। °सुक्क देखो महा-सुक्क; (देवेन्द्र १३५)। °सेण पुं [°सेन] १ आठवें जिन-देव का पिता; (सम १५०)। २ एक राजा; (महा)। ३ एक यादव; (उप ६४८ टी)। ४ न. वन-विशेष; (विसे १४८४)। देखो महा-सेण। देखो महा°।

महअर पुं [दे] गह्वर-पति, निकुञ्ज का मालिक; (दे ६, १२३)।

महइ° अ [महाति] १ अति बड़ा; २ अत्यन्त विपुल। °जड वि [°जट] अति बड़ी जटा वाला; (पउम ५८, १२)। °महाइंदइ पुं [°महेन्द्रजित्] इक्ष्वाकु-वंश के एक राजा का नाम; (पउम ५, ६)। °महापुरिस पुं [°महापुरुष] १ सर्वोत्तम पुरुष, सर्व-श्रेष्ठ पुरुष; २ जिन-देव, जिन भगवान्; (पउम १, १८)। °महालय वि [°महत्] अत्यन्त बड़ा; "महइमहालयंसि संसारंसि" (उवा; सम ७२), स्त्री—°लिया; (भग; उवा)।

महई देखो मह=महत्।

महंग पुं [दे] उष्ट्र, ऊँट; (दे ६, ११७)।

महंत देखो मह=महत्; (आचा; औप; कुमा)।

महच्च न [माहत्म्य] १ महत्त्व, २ वि. महत्त्व वाला; (ठा ३, १—पत्र ११७)।

महण न [दे] पिता का घर; (दे ६, ११४)।

महण न [मथन] १ विलोडन; (से १, ४६; वज्जा ८)। २ घर्षण; (कुप्र १४८)। ३ वि. मारने वाला; "दरिलनागदप्पमहणा" (पराह १, ४)। ४ विनाश करने वाला; "नाणं च चरणं च भवमहणं" (संबोध ३५; सुर ७, २२५)। स्त्री—°णी; (श्रा ४६)।

महण पुं [महन] राक्षस वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५, २६२)।

महणिज्ज देखो मह=मह्।

महति° देखो महइ°; (ठा ३, ४; णाया १, १; औप)।

महत्थार न [दे] १ भाण्ड, भाजन; २ भोजन; (दे ६, १२५)।

महप्पुर पुं [दे] माहात्म्य, प्रभाव; "तुह मुहचंदपहाए करिसाण महप्पुरो एसो" (रंभा ४३)।

महमह देखो मघमघ। महमहइ; (हे ४, ७८; षड्; गा ४६७), महमहेइ; (उव)। वकृ—महमहंत; (काप्र ६१७)। संकृ—महमहिअ; (कुमा)।

महमहिअ वि [प्रसृत] १ फैला हुआ; (हे १, १४६; वज्जा १५०)। २ सुरभित; (रंभा)।

महम्मह देखो महमह; "जिमलोमसिरी महम्महइ" (गा ६०४)।

महया° देखो महा°; "महयाहिमवंतमहंतमलयमंदरमहिंदसारे" (णाया १, १ टी—पत्र ६; औप; विपा १, १; भग)।

महर वि [दे] अ-समर्थ, अ-शक्त; (दे ६, ११३)।

महलयपक्ख देखो महालवक्ख; (षड्—पृष्ठ १७६)।

महल्ल वि [दे. महत्] १ वृद्ध, बड़ा; (दे ६, १४३; उवा; गउड; सुर १, ५४; पंचा ५, १६; संबोध ४७; ओघ १३६; प्रासू १४६; जय १२; सुपा ११७)। २ पृथुल, विशाल,

विस्तीर्ण; (दे ६, १४३; प्रवि १०; स ६६२; भवि)। स्त्री—°ल्लिया; (औप; सुपा ११६; ५८७)।

महल्ल वि [दे] १ मुखर, वाचाट, बकवादी; (दे ६, १४३; षड्)। २ पुं. जलधि, समुद्र; (दे ६, १४३)। ३ समूह, निवह; (दे ६, १४३; सुर १, ५४)।

महल्लिर देखो **महल्ल**; "हरिनहकडियमहल्लिरपयनहरपरंपराए विकरालो" (सुपा ११)।

महव देखो **मघव**; (कुमा; भवि)।

महा स्त्री [**मघा**] नक्षत्र-विशेष; (सम १२; सुज्ज १०, ५; इक)।

महा° देखो **मह**=महत्; (उवा)। °**अडड** न [°**अटट**] संख्या-विशेष, ८४ लाख महाअटटांग की संख्या; (जो २)। °**अडडंग** न [°**अटटाङ्ग**] संख्या-विशेष, ८४ लाख अटट; (जो २)। °**आल** देखो °**काल**; (नाट—चैत ८२)। °**ऊह** न [°**ऊह**] संख्या-विशेष, ८४ लाख महाऊहांग की संख्या; (जो २)। °**कइ** पुं [°**कवि**] श्रेष्ठ कवि, समर्थ कवि; (गउड; चेइय ८४३; रंभा)। °**कंदिय** पुं [°**क्रन्दित**] व्यन्तर देवों की एक जाति; (पगह १, ४; औप; इक)। °**कच्छ** पुं [°**कच्छ**] १ महाविदेह वर्ष का एक विजय-क्षेत्र—प्रान्त; (ठा २, ३; इक)। २ देव-विशेष; (जं ४)। °**कच्छा** स्त्री [°**कच्छा**] अतिकाय-नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ४, १—पत्र २०४; णाया २; इक)। °**कण्ह** पुं [°**कृष्ण**] राजा श्रेणिक का एक पुत्र; (निर १, १)। °**कण्हा** स्त्री [°**कृष्णा**] राजा श्रेणिक की एक पत्नी; (अंत २५)। °**कप्प** पुं [°**कल्प**] १ जैन ग्रन्थ-विशेष; (णंदि)। २ काल का एक परिमाण; (भग १५)। °**कमल** न [°**कमल**] संख्या-विशेष, चौरासी लाख महाकमलांग की संख्या; (जो २)। °**कव्व** देखो °**मह-कव्व**; (सम्मत्त १४६)। °**काय** पुं [°**काय**] १ महोरग देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३; इक)। २ वि. महान् शरीर वाला; (उवा)। °**काल** पुं [°**काल**] १ महाग्रह-विशेष, एक ग्रह-देवता; (सुज्ज २०; ठा २, ३)। २ दक्षिण लवण-समुद्र के पाताल-कलश का अधिष्ठायक देव; (ठा ४, २—पत्र २२६)। ३ एक इन्द्र, पिशाच-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८५)। ४ परमाधार्मिक देवों की एक जाति; (सम २८)। ५ वायु-कुमार देवों का एक लोकपाल; (ठा ४, १—पत्र १९८)। ६ वेलम्ब इन्द्र का एक लोकपाल; (ठा ४, १—पत्र १९८)। ७ नव निधिओं में एक निधि, जो धातुओं की पूर्ति करता है; (उप ९८६ टी; ठा ९—पत्र ४४९)। ८ सातवीं नरक-भूमि का एक नरकावास; (ठा ५, ३—पत्र ३४१; सम ५८)। ९ पिशाच देवों की एक जाति; (राज)। १० उज्जयिनी नगरी का एक प्राचीन जैन मन्दिर; (कुप्र १७४)। ११ शिव, महादेव; (आव ६)। १२ उज्जयिनी का एक का श्मशान; (अंत)। १३ राजा श्रेणिक का एक पुत्र; (निर १, १)। १४ न. एक देव-विमान; (सम ३५)। °**काली** स्त्री [°**काली**] १ एक विद्या-देवी; (संति ५)। २ भगवान् सुमतिनाथ की शासन-देवी; (संति ९)। ३ राजा श्रेणिक की एक पत्नी; (अंत २५)। °**किण्हा** स्त्री [°**कृष्णा**] एक महा-नदी; (ठा ५, ३—पत्र ३५१)। °**कुमुद**, °**कुमुय** न [°**कुमुद**] १ एक देव-विमान; (सम ३३)। २ संख्या-विशेष, चौरासी लाख महाकुमुदांग की संख्या; (जो २)। °**कुमुयअंग** न [°**कुमुदाङ्ग**] संख्या-विशेष, कुमुद को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (जो २)। °**कुम्म** पुं [°**कूर्म**] कूर्मावतार; (गउड)। °**कुल** न [°**कुल**] १ श्रेष्ठ कुल; (निचू ८)। २ वि. प्रशस्त कुल में उत्पन्न; "निक्खंता जे महाकुला" (सूत्र १, ८, २४)। °**गंगा** स्त्री [°**गङ्गा**] परिमाण-विशेष; (भग १५)। °**गह** पुं [°**ग्रह**] १ सूर्य आदि ज्योतिष्क; (सार्ध ८७)। °**गह** वि [°**आग्रह**] आग्रही, हठी; (सार्ध ८७)। °**गिरि** पुं [°**गिरि**] १ एक जैन महर्षि; (उव; कप्प)। २ बड़ा पर्वत; (गउड)। °**गोव** पुं [°**गोप**] १ महान् रक्षक; २ जिन भगवान्; (उवा; विसे २९५९)। °**घोस** पुं [°**घोष**] १ ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिन-देव; (सम १५४)। २ एक इन्द्र, स्तनित कुमार देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८५)। ३ एक कुलकर पुरुष; (सम १५०)। ४ परमाधार्मिक देवों की एक जाति; (सम २९)। ५ न. देवविमान-विशेष; (सम १२; १७)। °**चंद** पुं [°**चन्द्र**] ऐरवत वर्ष के एक भावी तीर्थंकर; (सम १५४)। °**जणिअ** पुं [°**जनिक**] श्रेष्ठी, सार्थवाह आदि नगर के गण्य-मान्य लोक; (कुमा)। °**जलहि** पुं [°**जलधि**] महा-सागर; (सुपा ४७४)। °**जस** पुं [°**यशस्**] १ भरत चक्रवर्ती का एक पौत्र; (ठा ८—पत्र ४२९)। २ ऐरवत क्षेत्र के चतुर्थ भावी तीर्थंकर-देव;

(सम १५४)। ३ वि. महान् यशस्वी; (उत्त १२, २३)। **°जाइ** स्त्री [**°जाति**] गुल्म-विशेष; (पण्ण १)। **°जाण** न [**°यान**] १ बड़ा यान—वाहन; २ चारित्र, संयम; (आचा)। ३ एक विद्याधर-नगर का नाम; (इक)। ४ पुं. मोक्ष, मुक्ति; (आचा)। **°जुद्ध** न [**°युद्ध**] बड़ी लड़ाई; (जीव ३)। **°जुम्म** पुंन [**°युग्म**] महान् राशि; (भग ३५)। **°ण** देखो **°यण**; "गामदुआर-ब्भासे अगडसमीवे महाणमज्झे वा" (ओघ ६६)। **°णई** स्त्री [**°नदी**] बड़ी नदी; (गउड; पउम ४०, १३)। **°णंदियावत्त** पु [**°नन्द्यावर्त**] १ घोष-नामक इन्द्र का एक लोकपाल; (ठा ४, १—पत्र १९८)। २ न. एक देव-विमान; (सम ३२)। **°णगर** देखो **°नगर**; (राज)। **°णलिण** देखो **°नलिण**; (राज)। **°णील** न [**°नील**] १ रत्न-निशेष; २ वि. अति नील वर्ण वाला; (जीव ३; औप)। **°णीला** देखो **°नीला**; (राज)। **°णुभाअ**, **°णुभाग** वि [**°अनुभाग**] महानुभाव, महाशय; (नाट—मालती ३९; गच्छ १, ४; भग; सिरि १६)। **°णुभाव** वि [**°अनुभाव**] वही अर्थ; (सुर २, ३५; द ६६)। **°तमपहा** स्त्री [**°तमःप्रभा**] सप्तम नरक-पृथिवी; (पव १७२)। **°तमा** स्त्री [**°तमा**] वही; (चेइय ७५६)। **°तीरा** स्त्री [**°तीरा**] नदी-विशेष; (ठा ५, ३—पत्र ३५१)। **°तुडिय** न [**°त्रुटित**] महात्रुटितांग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह, संख्या-विशेष; (जो २)। **°दामड्ढि** पुं [**°दामास्थि**] ईशानेन्द्र के वृषभ-सैन्य का अधिपति; (इक)। **°दामड्ढि** पुं [**°दामर्द्धि**] वही; (ठा ५, १—पत्र ३०३)। **°दुम** देखो **मह-द्दुम**; (इक)। २ न. एक देव-विमान; (सम ३५)। **°दुमसेण** पुं [**°द्रुमसेन**] राजा श्रेणिक का एक पुत्र जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी; (अनु २)। **°देव** पुं [**°देव**] १ श्रेष्ठ देव, जिन-देव; (पउम १०९, १२)। २ शिव, गौरी-पति; (पउम १०९, १२; सम्मत्त ७६)। **°देवी** स्त्री [**°देवी**] पटरानी; (कप्पू)। **°धण** पुं [**°धन**] एक वणिक्; (पउम ५५, ३८)। **°धणु** पुं [**°धनुष्**] बलदेव का एक पुत्र; (निर १, ५)। **°नई** स्त्री [**°नदी**] बड़ी नदी; (सम २७; कस)। **°नंदिआवत्त** देखो **°णंदियावत्त**; (इक)। **°नगर** न [**°नगर**] बड़ा शहर; (पण्ह २, ४)। **°नय** पुं [**°नद**] ब्रह्म-पुत्रा आदि बड़ी नदी; (आवम)। **°नलिण** न [**°नलिन**] १ संख्या-विशेष, महानलिनांग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (जो २)। २ एक देव-विमान; (सम ३३)। **°नलिणंग** न [**°नलिनाङ्ग**] संख्या-विशेष, नलिन को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (जो २)। **°निज्जामय** पुं [**°निर्यामक**] श्रेष्ठ कर्णधार; (उवा)। **°निद्दा** स्त्री [**°निद्रा**] मृत्यु, मरण; (पउम ६, १९८)। **°निनाद**, **°निनाय** वि [**°निनाद**] प्रख्यात, प्रसिद्ध; (ओघ ८६; ८६ टी)। **°निसीह** न [**°निशीथ**] एक जैन आगम-ग्रन्थ; (गच्छ ३, २९)। **°नीला** स्त्री [**°नीला**] एक महानदी; (ठा ५, ३—पत्र ३५१)। **°पउम** पुं [**°पद्म**] १ भरतक्षेत्र का भावी प्रथम तीर्थंकर; (सम १५३)। २ पुंडरीकिणी नगरी का एक राजा और पीछे से राजर्षि; (णाया १, १९—पत्र २४३)। ३ भारतवर्ष में उत्पन्न नववाँ चक्रवर्ती राजा; (सम १५२; पउम २०, १४३)। ४ भरतक्षेत्र का भावी नववाँ चक्रवर्ती राजा; (सम १५४)। ५ एक राजा; (ठा ९)। ६ एक निधि; (ठा ९—पत्र ४४९)। ७ एक द्रह; (सम १०४; ठा २, ३—पत्र ७२)। ८ राजा श्रेणिक का एक पौत्र; (निर १, १)। ९ देव-विशेष; (दीव)। १० वृक्ष-विशेष; (ठा २, ३)। ११ न. संख्या-विशेष; महापद्मांग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (जो २)। १२ एक देव-विमान; (सम ३३)। **°पउमअंग** न [**°पद्माङ्ग**] संख्या-विशेष, पद्म को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (जो २)। **°पउमा** स्त्री [**°पद्मा**] राजा श्रेणिक की एक पुत्र-वधू; (निर १, १)। **°पंडिय** वि [**°पण्डित**] श्रेष्ठ विद्वान्; (रंभा)। **°पट्टण** न [**°पत्तन**] बड़ा शहर; (उवा)। **°पण्ण**, **°पन्न** वि [**°प्रज्ञ**] श्रेष्ठ बुद्धि वाला; (उप ७७३; पि २७६)। **°पभ** न [**°प्रभ**] एक देव-विमान; (सम १३)। **°पभा** स्त्री [**°प्रभा**] एक राज्ञी; (उप १०३१ टी)। **°पम्ह** पुं [**°पक्ष्म**] महाविदेह वर्ष का एक विजय—प्रान्त; (ठा २, ३)। **°परिण्णा**, **°परिन्ना** स्त्री [**°परिज्ञा**] आचा-रांग सूत्र के प्रथम श्रुतस्कन्ध का सातवाँ अध्ययन; (राज; आक)। **°पसु** पुं [**°पशु**] मनुष्य; (गउड)। **°पह** पुं [**°पथ**] बड़ा रास्ता, राज-मार्ग; (भग; पण्ह १, ३; औप)। **°पाण** न [**°प्राण**] ब्रह्मलोक-स्थित एक देव-विमान; (उत्त १८, २८)। **°पायाल** पुं [**°पाताल**]

बड़ा पाताल-कलश; (ठा ४, २—पत्र २२६; सम ७१)। °पालि स्त्री [°पालि] १ बड़ा पल्य; २ सागरोपम-परिमित भव-स्थिति—आयु;

"अहमासि महापाणे जुइमं वरिससओवमं ।
जा सा पालिमहापाली दिव्वा वरिससओवमा"
(उत्त १८, २८)।

°पिउ पुं [°पितृ] पिता का बड़ा भाई; (विपा १, ३—पत्र ४०)। °पीढ पुं [°पीठ] एक जैन महर्षि; (सट्टि ८१ टी)। °पुंख न [°पुङ्ख] एक देव-विमान; (सम २२)। °पुंड न [°पुण्ड्र] एक देव-विमान; (सम २२)। °पुंडरीय न [°पुण्डरीक] १ विशाल श्वेत कमल; (राय)। २ पुं. ग्रह-विशेष; (सम १०४)। ३ देव-विशेष; ४ देखो °पोंडरीअ; (राज)। °पुर न [°पुर] १ एक विद्याधर-नगर; (इक)। २ नगर-विशेष; (विपा २, ७)। °पुरा स्त्री [°पुरी] महापद्म-विजय की राजधानी; (ठा २, ३—पत्र ८०)। °पुरिस पुं [°पुरुष] १ श्रेष्ठ पुरुष; (पण्ह २, ४)। २ किंपुरुष-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८५)। °पुरी देखो °पुरा; (इक)। °पोंडरीअ न [°पुण्डरीक] एक देव-विमान; (स ३३)। देखो °पुंडरीय; (ठा २, ३—पत्र ७२)। °फल देखो मह-प्फल; (उवा)। °फलिह न [°स्फटिक] शिखरी पर्वत का एक उत्तर-दिशा-स्थित कूट; (राज)। °बल वि [°बल] १ महान् बल वाला; (भग)। २ पुं. ऐरवत क्षेत्र का एक भावी तीर्थंकर; (सम १५४)। ३ चक्रवर्ती भरत के वंश में उत्पन्न एक राजा; (पउम ५, ४; ठा ८—पत्र ४२६)। ४ सामवंशीय एक नर-पति; (पउम ५, १०)। ५ पाँचवें बलदेव का पूर्व-जन्मीय नाम; (पउम २०, १६०)। ६ भारतवर्ष का भावी छठवाँ वासुदेव; (सम १५४)। °बाहु पुं [°बाहु] १ भारत-वर्ष का भावी चतुर्थ वासुदेव; (सम १५४)। २ रावण का एक सुभट; (पउम ५६, ३०)। ३ अपर विदेह-वर्ष में उत्पन्न एक वासुदेव; (आव ४)। °भद्द न [°भद्र] तप-विशेष; (पव २७१)। °भद्दपडिमा स्त्री [°भद्रप्रतिमा] नीचे देखो; (औप)। °भद्दा स्त्री [°भद्रा] व्रत-विशेष, कायोत्सर्ग-ध्यान का एक व्रत; (ठा २, ३—पत्र ६४)। °भय देखो मह-ब्भय; (आचा)। °भाअ, °भाग वि [°भाग] महानुभाव, महाशय; (अभि १७४; महा; सुपा १६८; उप पृ ३)। °भीम पुं [°भीम] १ राक्षसों का उत्तर दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८५)। २ भारत-वर्ष का भावी आठवाँ प्रतिवासुदेव; (सम १५४)। ३ वि. बडा भयानक; (दंस ४)। °भीमसेण पुं [°भीमसेन] एक कुलकर पुरुष का नाम; (सम १५०)। °भुअ पुं [°भुज] वेत्र-विशेष; (दीव)। °भुअंग पुं [°भुजङ्ग] शेष नाग; (से ७, ५६)। °भोया स्त्री [°भोगा] एक महा-नदी; (ठा ५, ३—पत्र ३५१)। °मउंद पुंन [°मुकुन्द] वाद्य-विशेष; (भग)। °मंति पुं [°मन्त्रिन्] १ सर्वोच्च अमात्य, प्रधान मन्त्री; (औप; सुपा २२३; णाया १, १)। २ हस्ति-सैन्य का अध्यक्ष; (णाया १, १—पत्र १६)। °मंस न [°मांस] मनुष्य का मांस; (कप्पू)। °मच्च पुं [°अमात्य] प्रधान मन्त्री; (कुमा)। °मत्त पुं [°मात्र] हस्तिपक, हाथी का महावत;

"तत्तो नरसिंहनिवस्स कुंजरा सिंहभयविहुरहियया ।
अवगणियमहामत्ता मत्तावि पलाइया झत्ति" (कुप्र ३६४)।

°मरुया स्त्री [°मरुत्ता] राजा श्रेणिक की एक पत्नी; (अंत)। °मह पुं [°मह] महोत्सव; (आव ४)। °महंत वि [°महत्] अति बड़ा; (सुपा ५६४; स ६६३)। °माई (अप) स्त्री [°माया] छन्द-विशेष; (पिंग)। °माउया स्त्री [°मातृका] माता की बडी बहन; (विपा १, ३—पत्र ४०)। °माढर पुं [°माठर] ईशानेन्द्र के रथ-सैन्य का अधिपति; (ठा ५, १—पत्र ३०३; इक)। °माणसिआ स्त्री [°मानसिका] एक विद्या-देवी; (संति ६)। °माहण पुं [°ब्राह्मण] श्रेष्ठ ब्राह्मण; (उवा)। °मुणि पुं [°मुनि] श्रेष्ठ साधु; (कुमा)। °मेह पुं [°मेघ] बड़ा मेघ; (णाया १, १—पत्र ४; ठा ४, ४)। °मेह वि [°मेध] बुद्धिमान् ; (उप १४२ टी)। °मोक्ख वि [°मूर्ख] बड़ा बेवकूफ; (उप १०३१ टी)। °यण पुं [°जन] श्रेष्ठ लोक; (सुपा २६१)। °यस देखो °जस; (औप; कप्प)। °रक्खस पुं [°राक्षस] लंका नगरी का एक राजा जो घनवाहन का पुत्र था; (पउम ५, १३६)। °रह पुं [°रथ] १ बड़ा रथ; (पण्ह २, ४—पत्र १३०)। २ वि. बड़ा रथ वाला; ३ बड़ा योद्धा, दस हजार योद्धाओं के साथ अकेला भूझने वाला; (सूअ १, ३, १, १; गउड)। °रहि वि [°रथिन्] देखो पूर्व का २रा और ३रा अर्थ; (उप ७२८ टी)। °राय पुं [°राज] १ बड़ा राजा, राजाधिराज; (उप ७६८ टी; रंभा; महा)। २ सामानिक देव, इन्द्र-

समान ऋद्धि वाला देव; (सुर १५, ६) । ३ लोकपाल देव; (सम ८६)। °रिट्ठ पुं [°रिष्ट] बलि-नामक इन्द्र का एक सेना-पति; (इक)। °रिसि पुं [°ऋषि] बड़ा मुनि, श्रेष्ठ साधु; (उव)। °रिह, °रुह देखो मह-रिह; (पि १४०; अभि १८७) । °रोरु पुं [°रोरु] अप्रतिष्ठान नरकेन्द्रक की उत्तर दिशा में स्थित एक नरकावास; (देवेन्द्र २४) । °रोरुअ पुं [°रोरुक, °रौरव] सातवीं नरक-भूमि का एक नरकावास—नरक-स्थान; (सम ५८, ठा ५, ३—पत्र ३४१; इक) । °रोहिणी स्त्री [°रोहिणी] एक महा-विद्या; (राज)। °लंजर पुं [°अलञ्जर] बड़ा जल-कुम्भ; (ठा ४, २—पत्र २२६) । °लच्छी स्त्री [°लक्ष्मी] १ एक श्रेष्ठि-भार्या; (उप ७२८ टी) । २ छन्द-विशेष; (पिंग) । ३ श्रेष्ठ लक्ष्मी; ४ लक्ष्मी-विशेष; (नाट) । °लयंग न [°लताङ्ग] संख्या-विशेष, लता-नामक संख्या को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (इक; जो २) । °लया स्त्री [°लता] संख्या-विशेष, महालतांग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह; (जो २) । °लोहिअक्ख पुं [°लोहिताक्ष] बलीन्द्र के महिष-सैन्य का अधिपति; (ठा ५, १—पत्र ३०२; इक) । °वक्क न [°वाक्य] परस्पर-संबद्ध अर्थ वाले वाक्यों का समुदाय; (उप ८५६) । °वच्छ पुं [°वत्स] विजय-विशेष, विदेह वर्ष का एक प्रान्त; (ठा २, ३; इक) । °वच्छा स्त्री [°वत्सा] वही; (इक) । °वण न [°वन] मथुरा के निकट का एक वन; (ती ७) । °वण पुंन [°आपण] बड़ी दुकान; (भवि) । °वप्प पुं [°वप्र] विजयक्षेत्र-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ८०; इक) । °वय देखो मह-व्वय; (सुपा ६५०) । °वराह पुं [°वराह] १ विष्णु का एक अवतार; (गउड) । २ बड़ा सुअर; (सूअ १, ७, २५) । °वह देखो °पह; (से १, ५८) । °वाउ पुं [°वायु] ईशानेन्द्र के अश्व-सैन्य का अधिपति; (ठा ५, १—पत्र ३०३; इक) । °वाड पुं [°वाट] बड़ा बाडा, महान् गोष्ठ; "निव्वाणमहावाडं" (उवा) । °विगइ स्त्री [°विकृति] अति विकार-जनक ये वस्तु—मधु, मांस, मद्य और माखन; (ठा ४, १—पत्र २०४; अंत) । °विजय वि [°विजय] बड़ा विजय वाला; "महाविजयपुप्फुत्तरपवरपुंडरीयाओ महाविमाणाओ" (कप्प) । °विदेह पुं [°विदेह] वर्ष-विशेष, क्षेत्र-विशेष; (सम १२; उवा; औप; अंत) । °विमाण न [°विमान] श्रेष्ठ देव-गृह; (उवा) । °विल न [°बिल] कन्दरा आदि बड़ा विवर; (कुमा) । °वीर पुं [°वीर] १ वर्तमान समय के अन्तिम तीर्थंकर; (सम १; उवा; विपा १, १) । २ वि. महान् पराक्रमी; (किरात १६) । °वीरिअ पुं [°वीर्य] इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम; (पउम ५, ५) । °वीहि, °वीही स्त्री [°वीथि, °थी] १ बड़ा बाजार; (पउम ६६, ३४) । २ श्रेष्ठ मार्ग; (आचा) । °वेग पुं [°वेग] एक देव-जाति, भूतों की एक जाति; (राज; इक) । °वेजयंती स्त्री [°वैजयन्ती] बड़ी पताका, विजय-पताका; (कप्पू) । °सई स्त्री [°सती] उत्तम पतिव्रता स्त्री; (उप ७२८ टी; पडि) । °सउणि स्त्री [°शकुनि] एक विद्याधर-स्त्री; (पण्ह १, ४—पत्र ७२) । °सड्ढि वि [°श्रद्धिन्] बडी श्रद्धा वाला; (आचा; पि ३३३) । °सत्त वि [°सत्त्व] पराक्रमी; (इ ११; महा) । °समुद्द पुं [°समुद्र] महा-सागर; (उवा) । °सयग, °सयय पुं [°शतक] भगवान् महावीर का एक उपासक ; (उवा) । °सामाण न [°सामान] एक देव-विमान; (सम ३३) । °साल पुं [°शाल] एक युवराज; (पडि) । °सिलाकंटय पुं [°शिलाकण्टक] राजा कूणिक और चेटकराज की लडाई; (भग ७, ६—पत्र ३१५) । °सीह पुं [°सिंह] एक राजा, षष्ठ बलदेव और वासुदेव का पिता; (ठा ६—पत्र ४४७) । °सीहणिक्कीलिय, °सीहनिकीलिय न [°सिंहनिक्रीडित] तप-विशेष; (राज; पव २७१—गाथा १५२२) । °सीहसेण पुं [°सिंहसेन] भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर देवलोक में उत्पन्न राजा श्रेणिक का एक पुत्र; (अनु २) । °सुक्क पुं [°शुक्र] १ एक देवलोक, सातवाँ देवलोक; (सम ३३; विपा २, १) । २ सातवें देवलोक का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८५) । ३ न. एक देव-विमान; (सम ३३) । °सुमिण पुं [°स्वप्न] उत्तम फल का सूचक स्वप्न; (णाया १, १—पत्र १३; पि ४४७)। °सुर पुं [°असुर] १ बड़ा दानव; २ दानवों का राजा हिरण्यकशिपु; (से १, २; गउड) । °सुव्वय, °सुव्वया स्त्री [°सुव्रता] भगवान् नेमिनाथ की मुख्य श्राविका; (कप्प; आवम) । °सूला स्त्री [°शूला] फाँसी; (श्रा २७) । °सेअ पुं [°श्वेत] एक इन्द्र, कूष्माण्ड-नामक वानव्यन्तर देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र; (इक; ठा २, ३—पत्र ८५)। °सेण पुं [°सेन] १ ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिन-देव; (सम १५४) । २ राजा श्रेणिक का एक पुत्र जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी; (अनु २) । ३

एक राजा; (विपा १, ६—पत्र ८८)। ४ एक यादव; (णाया १, ५)। ५ न. एक वन; (विसे २०८६)। देखो °मह-सेण। °सेणकण्ह पुं [°सेनकृष्ण] राजा श्रेणिक का एक पुत्र; (पि ५२)। °सेणकण्हा स्त्री [°सेनकृष्णा] राजा श्रेणिक की एक पत्नी; (अंत २५)। °सेल पुं [°शैल] १ बड़ा पर्वत; (णाया १, १)। २ न. नगर-विशेष; (पउम ५५, ५३)। °सोआम, °सोदाम पुं [°सौदाम] वैरोचन बलीन्द्र के अश्व-सैन्य का अधिपति; (ठा ५, १; इक)। °हरि पुं [°हरि] एक नर-पति, दसवें चक्रवर्ती का पिता; (सम १५२)। °हिमव, °हिमवंत पुं [°हिमवत्] १ पर्वत-विशेष; (पउम १०२, १०५; ठा २, ३; महा)। २ देव-विशेष; (जं ४)।

महाअक्ख वि [दे] आढ्य, श्रीमन्त; (दे ६, ११६)।

महाइय पुं [दे] महात्मा; (भवि)।

महाणड पुं [दे. महानट] रुद्र, महादेव; (दे ६, १२१)।

महाणस न [महानस] रसोई-घर, पाक-स्थान; (णाया १, ८; गा १३; उप २५६ टी)।

महाणसि वि [महानसिन्] रसोई बनाने वाला, रसोइया। स्त्री—°णी; (णाया १, ७—पत्र ११७)।

महाणसिय वि [महानसिक] ऊपर देखो; (विपा १, ८)।

महाबिल न [दे. महाबिल] व्योम, आकाश; (दे ६, १२१)।

महारिय (अप) वि [मदीय] मेरा; (जय ३०)।

महाल पुं [दे] जार, उपपति; (दे ६, ११६)।

महालक्ख वि [दे] तरुण, जवान; (दे ६, १२१)।

महालय देखो **मह**=महत्; (णाया १, ८; उवा; औप), "मा कासि कम्माइं महालयाइं" (उत्त १३, २६)। स्त्री—°लिया; (औप)।

महालय पुंन [महालय] १ उत्सवों का स्थान; (सम ७२)। २ बड़ा आलय; ३ वि. बृहत्काय, बड़ा शरीर वाला; (सूअ २, ५, ६)।

महालवक्ख पुं [दे. महालयपक्ष] श्राद्ध-पक्ष, आश्विन (गुजराती भाद्रपद) मास का कृष्ण पक्ष; (दे ६, १२७)।

महावल्ली स्त्री [दे] नलिनी, कमलिनी; (दे ६, १२२)।

महासउण पुं [दे] उल्लू, घूक-पक्षी; (दे ६, १२७)।

महासद्दा स्त्री [दे] शिवा, शृगाली; (दे ६, १२०; पाअ)।

महासेल वि [माहाशैल] महाशैल नगर से संबन्ध रखने वाला, महाशैल का; (पउम ५५, ५३)।

महि° देखो **मही**; (कुमा)। °अल न [°तल] भू-पीठ, भूमि-पृष्ठ; (कुमा; गउड; प्रासू ४५)। °गोयर पुं [°गोचर] मनुष्य; (भवि; सण)। °पट्ठ न [°पृष्ठ] भूमि-तल; (षड्)। °पाल पुं [°पाल] राजा; (उव)। °मंडल न [°मण्डल] भू-मण्डल; (भवि; हे ४, ३७२)। °रमण पुं [°रमण] राजा; (श्रा २७)। °वइ पुं [°पति] राजा; (णाया १, १ टी; औप)। °वट्ठ देखो °पट्ठ; (हे १, १२६; कुमा)। °वल्लह पुं [°वल्लभ] राजा; (गु १०)। °वाल पुं [°पाल] १ राजा, नरपति; (हे १, २२६)। २ व्यक्ति-वाचक नाम; (भवि)। °वेढ पुं [°वेष्ट, °पीठ] मही-तल, भू-तल; (से १, ८; ४६)। °सामि पुं [°स्वामिन्] राजा; (कुमा)। °हर पुं [°धर] १ पर्वत; (पाअ; से ३, ३८; ४, १७; कुप्र ११७)। २ राजा; (कुप्र ११७)।

महिअ वि [मथित] विलोडित; (से २, १८; पाअ)।

महिअ वि [महित] १ पूजित, सत्कृत; (से १२, ४७; उवा; औप)। २ न. एक देव-विमान; (सम ४१)। ३ पूजा, सत्कार; (णाया १, १)।

महिअ वि [महीयस्] बड़ा, गुरु; "राअनिओओ महिओ को णाम गआगअमिह करेइ" (मुद्रा १८७)।

महिअदुद्धुअ न [दे] घी का किट्ट, घृत-मल; (राज)।

महिआ स्त्री [महिका] १ सूक्ष्म वर्षा, सूक्ष्म जल-तुषार; (पण्ण १; जी ५)। २ धूमिका, धुंध, कुहरा; (ओघ ३०; पाअ)। ३ मेघ-समूह; "घणनिवहो कालिआ महिआ" (पाअ)। देखो **मिहिआ**।

महिंद पुं [महेन्द्र] १ बड़ा इन्द्र, देवाधीश; (औप; कप्प; णाया १, १ टी—पत्र ६)। २ पर्वत-विशेष; (से ६, ५६)। ३ अति महान्, खूब बड़ा; (ठा ४, २—पत्र २३०)। ४ एक राजा; (पउम ५०, २३)। ५ ऐरवत वर्ष का भावी १५वाँ तीर्थंकर; (पव ७)। ६ पुंन. एक देव-विमान; (सम २२; देवेन्द्र १४१)। °कंत न [°कान्त] एक देव-विमान; (सम २७)। °केउ पुं [°केतु] हनूमान के मातामह का नाम; (पउम ५०, १६)। °ज्झय पुं

[°ध्वज] १ बड़ा ध्वज; २ इन्द्र के ध्वज के समान ध्वज, बड़ा इन्द्र-ध्वज; (ठा ४, ४—पत्र २३०)। ३ न. एक देव-विमान; (सम २२)। °दुहिया स्त्री [°दुहिता] अञ्जनासुन्दरी, हनूमान की माता; (पउम ५०, २३)। °विक्कम पुं [°विक्रम] इक्ष्वाकु वंश का एक राजा; (पउम ५, ६)। °सीह पुं [°सिंह] १ कुरु देश का एक राजा; (उप ७२८ टी)। २ सनत्कुमार चक्रवर्ती का एक मित्र; (महा)।

महिंदुत्तरवडिंसय न [**महेन्द्रोत्तरावतंसक**] एक देव-विमान; (सम २७)।

महिगा देखो **महिआ**; (जीवस ३१)।

महिच्छ वि [**महेच्छ**] महत्त्वाकाङ्क्षी; (सूअ २, २, ६१)।

महिच्छा स्त्री [**महेच्छा**] महत्त्वाकाङ्क्षा, अपरिमित वाञ्छा; (पण्ह १, ५)।

महिट्ठ वि [**दे**] मट्ठा से संसृष्ट, तक्र-संस्कारित; (विपा १, ८—पत्र ८३)।

महिड्ढि, **महिड्ढिय**, **महिड्ढीय** वि [**महर्द्धि, °क**] बड़ी ऋद्धि वाला, महान् वैभव वाला; (श्रा २७; भग; ओघभा ६; औप; पि ७३)।

महिम पुंस्त्री [**महिमन्**] १ महत्त्व, माहात्म्य, गौरव; (हे १, ३५; कुमा; गउड; भवि)। २ योगी का एक प्रकार का ऐश्वर्य; (हे १, ३५)।

महिला देखो **मिहिला**; (महा; राज)।

महिला स्त्री [**महिला**] स्त्री, नारी; (कुमा; हे ३, ४१; पाअ)। °थूभ पुं [°स्तूप] कूप आदि का किनारा; (विसे २०६४)।

महिलिया स्त्री [**महिलिका, महिला**] ऊपर देखो; (गाया १, २; पउम १४, १४५; प्रासू २४)।

महिलिया स्त्री [**मिथिलिका, मिथिला**] देखो **मिहिला**; (कप्प)।

महिस पुं [**महिष**] भैंसा; (गउड; औप; गा ५४८)। °ासुर पुं [°ासुर] एक दानव; (स ४३७)।

महिसंद पुं [**दे**] वृक्ष-विशेष, शिग्रु का पेड़; (दे ६, १२०)।

महिसिक्क न [**दे**] महिषी-समूह; (दे ६, १२४)।

महिसी स्त्री [**महिषी**] १ राज-पत्नी; (ठा ४, १)। २ भैंस; (पाअ; पउम २६, ४१)।

महिस्सर पुं [**महेश्वर**] एक इन्द्र, भूतवादि-देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८५)। देखो **महेसर**।

मही स्त्री [**मही**] १ पृथिवी, भूमि, धरती; (कुमा; पाअ)। २ एक नदी; (ठा ५, २—पत्र ३०८)। ३ छन्द-विशेष; (पिंग)। °नाह पुं [°नाथ] राजा; (उप पृ १६१)। °पहु पुं [°प्रभु] राजा; (उप ७२८ टी)। °पाल पुं [°पाल] वही अर्थ; (उप १५० टी; उव)। °रुह पुं [°रुह] वृक्ष, पेड़; (पाअ; सुर ३, ११०; १६, २४८)। °वइ पुं [°पति] राजा; (श्रा २८; उप १४६ टी; सुपा ३८)। °वीढ न [°पीठ] भूमि-तल; (सुर २, ७४)। °स पुं [°श] राजा; (श्रा १४)। °सक्क पुं [°शक्र] वही अर्थ; (श्रा १४)। देखो **महि°**।

महु पुं [**मधु**] १ एक दैत्य; (से १, १; अच्चु ४०)। २ वसन्त ऋतु; "सुरही महू वसंतो" (पाअ; कुमा)। ३ चैत्र मास; (सुर ३, ४०; १६, १०७; पिंग)। ४ पाँचवाँ प्रति-वासुदेव राजा; (पउम ५, १५६)। ५ एक राजा; (श्रु ६१)। ६ मथुरा का एक राज-कुमार; (पउम १२, २)। ७ चक्रवर्ती का एक देव-कृत महल; (उत्त १३, १३)। ८ मधूक का पेड़, महुआ का गाछ; (कुमा)। ९ अशोक वृक्ष; (चंड)। १० न. मद्य, दारू; (से २, २७)। ११ क्षौद्र, शहद; (कुमा; पव ४; ठा ४, १)। १२ पुष्प-रस; १३ मधुर रस; १४ जल, पानी; (प्राप्र; हे ३, २५)। १५ छन्द-विशेष; (पिंग)। १६ मधुर, मिष्ट वस्तु; (पण्ह २, १)। °अर पुंस्त्री [°कर] भ्रमर, भमरा; (पाअ; स्वप्न ७३; औप; कप्प; पिंग)। स्त्री— °रिआ, °री; (अभि १९०; नाट— मृच्छ ५७)। °अरवित्ति स्त्री [°करवृत्ति] माधुकरी, भिक्षा-वृत्ति; (सुपा ८३)। °अरीगीय न [°करीगीत] नाट्यविधि-विशेष; (महा)। °आसव वि [°आश्रव] लब्धि-विशेष वाला, जिसके प्रभाव से वचन मधुर लगे ऐसी लब्धि वाला; (पण्ह २, १—पत्र १००)। °गुलिया स्त्री [°गुटिका] शहद की गोली; (ठा ४, २)। °पडल न [°पटल] मधपुडा; (दे ३, १२)। °भार पुं [°भार] छन्द-विशेष; (पिंग)। °मक्खिया, °मच्छिआ स्त्री [°मक्षिका] शहद की मक्खी; "अह उड्डियाउ तोमरमुहाउ महुक्खि(?मक्खि)याउ सव्वत्तो" (धर्मवि १२४; गा ६३४)। °मय वि [°मय] मधु से भरा हुआ; (से १, ३०)। °मह पुं [°मथ] विष्णु, वासुदेव, उपेन्द्र; (पाअ; से १, १७)। २ भ्रमर; (से १,

१७)। °मह पुं [°मह] वसन्त का उत्सव; (से १, १७)। °महण पुं [°मथन] १ विष्णु; (से १, १; वज्जा २४; गा ११७; हे ४, ३८४; पि १४३; पिंग)। २ समुद्र, सागर; ३ सेतु, पुल; (से १, १)। °मास पुं [°मास] चैत मास, (भवि)। °मित्त पुंन [°मित्र] कामदेव; (सुपा ५२६)। °मेहण न [°मेहन] रोग-विशेष, मधु-प्रमेह; (आचा १, ६, १, २)। °मेहणि वि [°मेहनिन्] मधु-प्रमेह रोग वाला; (आचा)। °मेहि पुं [°मेहिन्] वही अर्थ; (आचा)। °राय पुं [°राज] एक राजा; (रयण ७४)। °लट्ठि स्त्री [°यष्टि] १ औषधि-विशेष, यष्टिमधु; २ इक्षु, ईख; (हे १, २४७)। °वक्क पुं [°पर्क] १ दधि-युक्त मधु, दही और शहद; २ षोडशोपचार-पूजा का छठवाँ उपचार; (उत्तर १०३)। °वार पुं [°वार] मद्य, दारू; (पाम)। °सिंगी स्त्री [°श्रृङ्गी] वनस्पति-विशेष; (पगण १—पत्र ३५)। °सूयण पुं [°सूदन] विष्णु; (गउड; सुपा ७)।

महुअ पुं [**मधूक**] १ वृक्ष-विशेष, महुआ का गाछ; (गा १०३)। २ न. महुआ का फल; (प्राप्र; हे १, १२२)।

महुअ पुं [**दे**] १ पक्षि-विशेष, श्रीवद पक्षी; २ मागध, स्तुति-पाठक; (दे ६, १४४)।

महुण सक [**मथ्**] १ विलोडन करना। २ विनाश करना। वकृ—"तम्रो विमुक्कट्टहासा जलियजलणपिंगलकेसा **महुणिंत**-जालाकरालपिसाया मुक्का" (महा)।

महुत्त (अप) देखो **मुहुत्त**; (भवि)।

महुप्पल न [**महोत्पल**] कमल, पद्म; "महुप्पलं पंकयं नलिणं" (पाम)।

महुमुह पुं [**दे. मधुमुख**] पिशुन, दुर्जन, खल; (दे ६, १२२)।

महुर पुं [**महुर**] १ अनार्य देश-विशेष; २ उस देश में रहने वाली अनार्य मनुष्य-जाति; (पगह १, १ —पत्र १४)।

महुर वि [**मधुर**] १ मीठा, मिष्ट; (कुमा; प्रासू ३३; गउड; गा ४०१)। २ कोमल; (भग ६, ३१; औप)। °भासि वि [°भाषिन्] प्रिय-भाषी; (पउम ६, १३३)।

महुरा स्त्री [**मथुरा**] भारत की एक प्रसिद्ध नगरी, मथुरा; (ठा १०; सम १५३; पगह १, ३; हे २, १५०; कुमा; वज्जा १२२)। °मंगु पुं [°मङ्गु] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य; (मिक्खा ६१)। °हिव पुं [°धिप] मथुरा का राजा; (कुमा)।

महुरालिअ वि [**दे**] परिचित; (दे ६, १२५)।

महुरिम पुंस्त्री [**मधुरिमन्**] मधुरता, माधुर्य; (सुपा २६४; कुप्र ५०)।

महुरेस पुं [**मथुरेश**] मथुरा का राजा; (कुमा)।

महुला स्त्री [**दे**] रोग-विशेष, पाद-गण्ड; (निचू २)।

महुसित्थ न [**मधुसिक्थ**] १ मदन, मोम; (उप पृ २०६)। २ पंक-विशेष, स्त्री के पैर में लगा हुआ अलता तक लगने वाला कादा; (ओघभा ३३)। ३ कला-विशेष; (स ६०२)।

महुस्सव देखो **महूसव**; (राज)।

महूअ देखो **महुअ**=मधूक; (कुमा; हे १, १२२)।

महूसव पुं [**महोत्सव**] बड़ा उत्सव; (सुर ३, १०८; नाट—मृच्छ ५४)।

महेंद देखो **महिंद**; (से ६, २२)।

महेड्ड पुं [**दे**] पंक, कादा; (दे ६, ११६)।

महेब्भ पुं [**महेभ्य**] बड़ा शेठ; (श्रा १६)।

महेभ पुं [**महेभ**] बड़ा हाथी; (कुमा)।

महेला स्त्री [**महेला**] स्त्री, नारी; (हे १, १४६; कुमा)।

महेस [**महेश**] नीचे देखो; (लि ६४; भवि)।

महेसर पुं [**महेश्वर**] १ महादेव, शिव; (पउम ३५, ६४; धर्मवि १२८)। २ जिनदेव, अर्हन्; (पउम १०६, १२)। ३ श्रीमन्त, आढ्य; (सिरि ४२)। ४ भूतवादि देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र; (इक)। °दत्त पुं [°दत्त] एक पुरोहित; (विपा १, ५)।

महेसि देखो **मह-रिसि**; (सम १२३; पगह १, १; उप ३५७; ७२८ टी; अभि ११८)।

महोअर पुं [**महोदर**] १ रावण का एक भाई; (से १२, ५४)। २ वि. बहु-भक्षी; (निचू १)।

महोअहि पुं [**महोदधि**] महासागर; (से ५, २; महा)। °रव पुं [°रव] वानर-वंश का एक राजा; (पउम ६, ६३)।

महोच्छव देखो **महूसव**; (सुर ६, ११०)।

महोदहि देखो **महोअहि**; (पगह २, ४; उप ७२८ टी)।

महोरग पुं [**महोरग**] १ व्यन्तर देवों की एक जाति; (पगह १, ४—पत्र ६८; इक)। २ बड़ा साँप; ३ महा-काय सर्प की एक जाति; (पगह १, १—पत्र ८)। °त्थ न [°स्त्र] अस्त्र-विशेष; (महा)।

महोसव देखो **महूसव**; (नाट—रत्ना २४)।

महोसहि स्त्री [**महौषधि**] श्रेष्ठ ओषधि; (गउड)।
मा अ [**मा**] मत, नहीं; (चेइय ६८४; प्रासू २१)।
मा स्त्री [**मा**] १ लक्ष्मी, दौलत; (से ३, १५; सुर १६, ५२)। २ शोभा; (से ३, १५)।
मा, माअ सक [**मा**] १ समाना, अटना। २ सक. माप करना। ३ निश्चय करना, जानना। माइ, माअइ, माइज्जा, माएज्जा; (पव ४०; कुमा; प्राकृ ६६; संवेग १८; औप)। वकृ—**मंत, माअंत;** (कुमा ४, ३०; से २, ६; गा २७८)। कवकृ—**मिज्जंत, मिज्जमाण;** (से ७, ६६; सम ७६; जीवस १४४)। कृ—**माअव्व,** "माया सहस्स-**मइया**", **माइअ**: (से ६, ३; महा; कप्प), देखो **मेअ**=मेय।
माअडि पुं [**मातलि**] इन्द्र का सारथि; (से १५, ५१)।
माअरा देखो **माइ**=मातृ; (कुमा; हे ३, ४६)।
माअलि देखो **माअडि**; (से १५, ४६)।
माअलिआ स्त्री [**दे**] मातृष्वसा, माता की बहिन; (दे ६, १३१)।
माअही स्त्री [**मागधी**] काव्य की एक रीति; (कप्पू)। देखो **मागहिआ**।
माआरा, माइ स्त्री [**मातृ**] १ मा, जननी; (षड्; ठा ४, ३; कुमा; सुपा ३७७)। २ देवता, देवी; (हे १, १३५; ३, ४६; सुख ३, ६)। ३ स्त्री, नारी; ४ माया; (पंचा १७, ४८)। ५ भूमि; ६ विभूति; ७ लक्ष्मी; ८ रेवती; ६ आखुकर्णी; १० जटामांसी; ११ इन्द्र-वारुणी, इन्द्रायण; (षड्; हे १, १३५; ३, ४६)। °**घर** न [**गृह**] देवी-मन्दिर; (सुख ३, ६)। °**ट्ठाण, ठाण** न [°**स्थान**] १ माया-स्थान; (पंचा १७, ४८; सम ३६)। २ माया, कपट-दोष; (पंचा १७, ४८; उवर ८४)। °**मेह** पुं [°**मेध**] यज्ञ-विशेष, जिसमें माता का वध किया जाय वह यज्ञ; (पउम ११, ४२)। °**हर** देखो °**घर**; (हे १, १३५)। देखो **माउ, माया**=मातृ।
माइ वि [**मायिन्**] माया-युक्त, मायावी; (भग; कम्म ४, ४०)।
माइ अ [**मा**] मत, नहीं; (प्राकृ ७८)।
माइ, माइअ वि [**दे**] १ रोमश, रोम वाला, प्रभूत बालों से युक्त; (दे ६, १२८; गाया १, १८—पत्र २३७)। २ मयूरित, पुष्प-विशेष वाला; (औप; भग; गाया १, १ टी—पत्र ५; अंत)।
माइअ वि [**मात**] समाया हुआ, अटा हुआ; (सुख ६, १)।
माइअ वि [**मायिक**] मायावी; (दे ६, १४७; गाया १, १४)।
माइअ वि [**मात्रिक**] माता-युक्त, परिमित; (तंदु २०; पन्ह १, ४—पत्र ६८)।
माइअ देखो **मा**=मा।
माइं देखो **माइ**=मा; (हे २, १६१; कुमा)।
माइंगण न [**दे**] वृन्ताक, भंटा; (उप ५६३)।
माइंद [**दे**] देखो **मायंद**; (प्राप्र; स ४१६)।
माइंद पुं [**मृगेन्द्र**] सिंह, केसरी; "एक्कसरपहरदारियमाइंद-गइंदजुज्झमामिडिए" (वज्जा ४२)।
माइंदजाल, माइंदयाल न [**मायेन्द्रजाल**] माया-कर्म, बनावटी प्रपंच; (सुर २, २२६; स ६६०)।
माइंदा स्त्री [**दे**] आमलकी, आमला का गाछ; (दे ६, १२६)।
माइण्हिआ स्त्री [**मृगतृष्णिका**] धूप में जल की भ्रान्ति; (उप २२० टी; मोह २३)।
माइलि वि [**दे**] मृदु, कोमल; (दे ६, १२६)।
माइल्ल देखो **माइ**=मायिन्; (सूअ १, ४, १, १८; गाया; भग; ओघ ४१३; पउम ३१, ५१; औप; ठा ४, ४)।
माइवाह, माईवाह पुंस्त्री [**दे, मातृवाह**] द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष, क्षुद्र कीट-विशेष; (उत्त ३६, १२६; जी १५; पुप्फ २६५)। स्त्री—°**हा**; (सुख १८, ३५; जी १५)।
माउ देखो **माइ**=मातृ; (भग; सुर १, १७६; औप; प्रामा; कुमा; षड्; हे १, १३४; १३५)। °**ग्गाम** पुं [**ग्राम**] स्त्री-वर्ग; (बृह १)। °**च्छा** देखो °**सिआ**; (हे २, १४२; गा ६७८)। °**पिउ** पुं [**पितृ**] माँ-बाप; (सुर १, १७६)। °**म्महो** स्त्री [°**मही**] माँ की माँ; (रंभा २०)। °**सिआ, °सी, °स्सिआ** स्त्री [°**ष्वसृ**] माँ की बहिन, माउसी; (हे २, १४२; कुमा; विपा १, ३; सुर ११, २१६; पि १४८; विपा १, ३—पत्र ४१)।
माउ, माउअ वि [**मातृ, क**] १ प्रमाता, प्रमाण-कर्ता, सत्य ज्ञान वाला; २ परिमाण-कर्ता, नापने वाला; ३ पुं. जीव; ४ आकाश; "माऊ", "माउओ" (षड्; हे १, १३१; प्राप्र; प्राकृ ८; हे १, १३४)।
माउअ वि [**मातृक**] माता-संबन्धी; (हे १, १३१; प्राप्र; प्राकृ ८; राज)।
माउअ पुंन [**मातृक, °का**] १ अकार आदि छयालीस अक्षर; "बंभीए णं लिवीए छायालीसं माउयक्खरा" (सम ६६; आव

५)। २ स्वर; ३ करण; (हे १, १३१; प्राप्र; प्राकृ ८)। नीचे देखो।

माउआ स्त्री [**मातृका**] १ माता, माँ; (गाया १, ६— पत्र १५८)। २ ऊपर देखो; (सम ६६)। °**पय** पुंन [°**पद**] शास्त्रों के सार-भूत शब्द—उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य; (सम ६६)।

माउआ स्त्री [**दे. मातृका**] दुर्गा, पार्वती, उमा; (दे ६, १४७)।

माउआ स्त्री [**दे**] १ सखी, सहेली; (दे ६, १४७; पाअ; गाया १, ६—पत्र १५८)। २ ऊपर के होठ पर के बाल, मूँछ; "रत्तगंडमंसुयाहिं माउयाहिं उवसोहियाइं" (गाया १, ६—पत्र १५८)।

माउक्क वि [**मृदु, °क**] कोमल, सुकुमार; (हे १, १२७; २, ६६; कुमा)।

माउक्क न [**मृदुत्व**] कोमलता; (हे १, १२७; २, २; कुमा)।

माउच्छा स्त्री [**दे. मातृष्वसृ**] देखो **माउ-च्छा**; (षड्)।

माउच्छा स्त्री [**दे**] सखी, सहेली; (षड्)।

माउच्छ वि [**दे**] मृदु, कोमल; (दे ६, १२६)।

माउत्त } देखो **माउक्क**=मृदुत्व; (कुमा; हे २, २;
माउत्तण } षड्)।

माउल पुं [**मातुल**] माँ का भाई, मामा; (सुर ३, ८१; रंभा; महा)।

माउलिअ देखो **मउलिअ**; (से ११, ६१)।

माउलिंग देखो **माहुलिंग**; (राज)।

माउलिंगा } स्त्री [**मातुलिङ्गा, °ङ्गो**] बीजौरे का गाछ;
माउलिंगी } (पराग १—पत्र ३२; पउम ४२. ६)।

माउलुंग देखो **माहुलिंग**; (हे १, २१४; अनु)।

मागंदिअ पुं [**माकन्दिक**] माकन्दिकपुत्र-नामक एक जैन मुनि; (भग १८—१ टी)। °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] वही अर्थ; (भग १८, ३)।

मागसीसी स्त्री [**मार्गशीर्षी**] १ अगहन मास की पूर्णिमा; २ अगहन की अमावास्या; (इक)।

मागह } वि [**मागध, °क**] १ मगध-देशीय, मगध देश
मागहय } में उत्पन्न, मगध देश का, मगध-संबंधी; (ओव ७१३; विसे १४६९; पव ६१; गाया १, ८; पउम ६६, ५५)। २ पुं. स्तुति-पाठक, बन्दी; (पाअ; औप)। °**भासा** स्त्री [°**भाषा**] देखो **मागहिआ** का पहला अर्थ; (राज)।

मागहिआ स्त्री [**मागधिका**] १ मगध देश की भाषा, प्राकृत भाषा का एक भेद; २ कला-विशेष; (औप)। ३ छन्द-विशेष; (सुख २, ४५; अजि ४)।

माघवई स्त्री [**माघवती**] सातवीं नरक-भूमि; (पव १४३; इक; ठा ७—पत्र ३८८)।

माघवा } [**माघवा, °वी**] ऊपर देखो; "मघव त्ति माघ-
माघवी } व त्ति य पुढवीणं नामधेयाइं" (जीवस १२; इक)।

माज्जार देखो **मज्जार**; (संक्षि २)।

माडंबिअ पुं [**माडम्बिक**] १ 'मडंब' का अधिपति; (गाया १, १; औप; कप्प)। २ प्रत्यन्त—सीमा-प्रान्त—का राजा; (पराह १, ५—पत्र ६४)।

माडिअ न [**दे**] गृह, घर; (दे ६, १२८)।

माढर पुं [**माठर**] १ सौधर्मेन्द्र के रथ-सैन्य का अधिपति; (ठा ५, १—पत्र ३०३; इक)। २ न. गोत्र-विशेष; (कप्प)। ३ शास्त्र-विशेष; (गंदि)।

माढरी स्त्री [**माठरी**] वनस्पति-विशेष; (पराग १—पत्र ३६)।

माढिअ वि [**माठित**] सन्नाह-युक्त, वर्मित; (कुमा)।

माढी स्त्री [**माठी**] कवच, वर्म, बख्तर; (दे ६, १२८ टी; पराह १, ३—पत्र ४४; पाअ; से १२, ६२)।

माण सक [**मानय्**] १ सम्मान करना, आदर करना। २ अनुभव करना। माणइ, माणेइ, माणंति, माणेमि; (हे १, २२८; महा; कुमा; सिरि ६६)। वकृ—**माणंत, माणेमाण**; (सुर २, १८२; गाया १, १—पत्र ३३)। कवकृ—**माणिज्जंत**; (गा ३२०)। हेकृ—**माणिउं, माणेउं**; (महा; कुमा)। कृ—**माणणिज्ज, माणणीअ, माणेयव्व**; (उव; सुर १२, १६५; अभि १०७; उप १०३१ टी), "जया य **माणिमो** होइ पच्छा होइ अमाणिमो" (दसचू १, ५)।

माण पुंन [**मान**] १ गर्व, अहंकार, अभिमान; "अट्ठद्धीकयमाणिणिमाणो" (कुमा), "पुव्वं विबुहसमक्खं गुरुणो एयस्स खंडियं माणं" (सम्मत्त ११६)। २ माप, परिमाण; ३ नापने का साधन, बाँट आदि; (अणु; कप्प; जी ३०; श्रा १४)। ४ प्रमाण, सबूत; (विसे ६४६; धर्मसं ५२५)। ५ आदर, सत्कार; (गाया १, १; कप्प)। ६ पुं. एक

श्रेष्ठि-पुत्र; (सुपा ५४५)। °इंत, °इत्त, °इल्ल वि [°वत्] मान वाला; (षड्; हे २, १५६; हेका ७३; पि ५६५); स्त्री—°त्ता, °त्ती; (कुमा; गउड)। °तुंग पुं [°तुङ्ग] एक प्राचीन जैन कवि; (नमि २१)। °वई स्त्री [°वती] १ मान वाली स्त्री; (से १०, ६६)। २ रावण की एक पत्नी; (पउम ७४, ११)। °संघ न [°संघ] एक विद्याधर-नगर; (इक)। °वाइ वि [°वादिन्] अहंकारी; (आचा)।

माण वि [**मान**] मान-संबन्धी, मान का; "कोहाए माणाए मायाए" (पडि)।

माण न [**दे**] परिमाण-विशेष, दस शेर का नाप; गुजराती में 'माणुं'; (उप १५४)।

माणंसि वि [**दे**] १ मायावी, कपटी; (दे ६, १४७; षड्)। २ स्त्री. चन्द्र-वधू; (दे ६, १४७)।

माणंसि देखो **मणंसि**; (काप्र १६६; संक्षि १७; षड्)।

माणण न [**मानन**] १ आदर, सत्कार; (आचा)। २ मानना; (रयण ८४)। ३ अनुभव; ४ सुख का अनुभव; "सुहसमाणणे" (अजि ३१)।

माणणा स्त्री [**मानना**] ऊपर देखो; (पण्ह २, १; रयण ८४)।

माणय देखो **माण**=(दे); (सुपा ३५८)।

माणव पुं [**मानव**] १ मनुष्य, मर्त्य; (पाअ; सुपा २४३)। २ भगवान् महावीर का एक गण; (ठा ६—पत्र ४५१; कप्प)।

माणवग } पुं [**मानवक**] १ एक निधि, अस्त्र-शस्त्रों की
माणवय } पूर्ति करने वाला निधि; (उप ६८६ टी; ठा ६—पत्र ४४६; इक)। २ ज्योतिष्क ग्रह-विशेष, एक महाग्रह; (ठा २, ३; सुज्ज २०)। ३ सौधर्म देवलोक का एक चैत्य-स्तम्भ; (सम ६३)।

माणवी स्त्री [**मानवी**] एक विद्या-देवी; (संति ६)।

माणस न [**मानस**] १ सरोवर-विशेष; (पण्ह १, ४; औप; महा; कुमा)। २ मन, अन्तःकरण; (पाअ; कुमा)। ३ वि. मन-संबन्धी, मन का; (सुर ४, ७५)। ४ पुं. भूतानन्द के गन्धर्व-सैन्य का नायक; (इक)।

माणसिअ वि [**मानसिक**] मन-संबन्धी, मन का; (श्रा २४; औप)।

माणसिआ स्त्री [**मानसिका**] एक विद्या-देवी; (संति ६)।

माणि वि [**मानिन्**] १ मान-युक्त, मान वाला; (उव; कुप्र २७६; कम्म ४, ४०)। स्त्री—°णिणी; (कुमा)। २ पुं. रावण का एक सुभट; (पउम ५६, २)। ३ पर्वत-विशेष; ४ कूट-विशेष; (राज; इक)।

माणिअ वि [**दे. मानित**] अनुभूत; (दे ६, १३०; पाअ)।

माणिअ वि [**मानित**] सत्कृत; (गउड)।

माणिक्क न [**माणिक्य**] रत्न-विशेष, माणिक; (सुपा २१७; वज्जा २०; कप्पू)।

माणिण देखो **माणि**; (पउम ७३, २७)।

माणिभद्द पुं [**माणिभद्र**] १ यक्ष-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र; (ठा २, ३—पत्र ८५; इक)। २ यक्षदेवों की एक जाति; (सिरि ६६६; इक)। ३ देव-विशेष; ४ शिखर-विशेष; (राज; इक)। ५ एक देव-विमान; (राज)।

माणिम देखो **माण**=मानय्।

माणुस पुंन [**मानुष**] १ मनुष्य, मानव, मर्त्य; (सुअ १, ११, ३; पण्ह १, १; उत्त; सुर ३, ५६; प्राप्र; कुमा), "जं पुण हिययाणंदं जणेइ तं माणुसं विरलं" (कुप्र ६), "मयाणि माइपिइपमुहमाणुसाणि सव्वाणि" (कुप्र २६)। २ वि. मनुष्य-संबन्धी; "तिविहं कहावत्थुं ति पुव्वायरियपवाओ, तं जहा, दिव्वं दिव्वमाणुसं माणुसं च" (स २)।

माणुसी स्त्री [**मानुषी**] १ स्त्री-मनुष्य, मानवी; (पव २४१; कुप्र १६०)। २ मनुष्य से संबन्ध रखने वाली; "माणुसी भासा" (कुप्र ६७)।

माणुसुत्तर } पुं [**मानुषोत्तर**] १ पर्वत-विशेष, मनुष्य-
माणुसोत्तर } लोक-सीमा-कारक पर्वत; (राज; ठा ३, ४; जीव ३)। २ न. एक देव-विमान; (सम २)।

माणुस्स देखो **माणुस**; (आचा; औप; धर्मवि १३; उपपं २; विसे ३००७), "माणुस्सं लोगं" (ठा ३, ३—पत्र १४२), "माणुस्सगाइं भोगभोगाइं" (कप्प)।

माणुस्स } न [**मानुष्य, °क**] मनुष्यत्व, मानसपन;
माणुस्सय } (सुपा १६६; स १३१; प्रासू ४७; पउम ३१, ८१)।

माणुस्सी देखो **माणुसी**; (पव २४०)।

माणूस देखो **माणुस**; (सुर २, १७२; ठा ३, ३—पत्र १४२)।

माणेसर पुं [**माणेश्वर**] माणिभद्र यक्ष; (भवि)।

माणोरमा (अप) स्त्री [**मनोरमा**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

मातंग देखो **मायंग**; (औप)।

मातंजण देखो **मायंजण**; (ठा २, ३—पत्र ८०)।
मातुलिंग देखो **माहुलिंग**; (आचा २, १, ८, १)।
माइलिआ स्त्री [दे] माता, जननी; (दे ६, १३१)।
मातु देखो **माउ**=स्त्री; (प्राकृ ८)।
माधवी देखो **माहवी**=माधवी; (हास्य १३३)।
माभाइ पुंस्त्री [दे] अभय-प्रदान, अभय-दान, अभय; (दे ६, १२६; षड्)।
माभीसिअ न [दे] ऊपर देखो; (दे ६, १२६)।
माम अ. कोमल आमन्त्रण का सूचक अव्यय; (पउम ३८, ३६)।
माम, **मामग** पुं [दे] मामा, माँ का भाई; (सुपा १६; १६५)।
मामग, **मामय** वि [मामक] १ मदीय, मेरा; (आचा; अच्चु ७३)। २ ममता वाला; (सूअ १, २, २, २८)।
मामय देखो **मामग**=(दे); (पउम ६८, ५५; स ७३१)।
मामा स्त्री [दे] मामी, मामा की बहू; (दे ६, ११२)।
मामाय वि [मामाक] 'मा' 'मा' बोलने वाला, निवारक; (ओघ ४३५)।
मामास पुं [मामाष] १ अनार्य देश-विशेष; २ अनार्य देश में रहने वाली मनुष्य-जाति; (इक)।
मामि अ. सखी के आमन्त्रण में प्रयुक्त किया जाता अव्यय; (हे २, १६५; कुमा)।
मामिआ, **मामी** स्त्री [दे] मामी, मामा की बहू; (विपा १, ३—पत्र ४१; दे ६, ११२; गा २०४; प्राकृ ३८)।
माय वि [मात] समाया हुआ; (कम्म ५, ८५ टी; पुप्फ १७२; महा)।
माय वि [मायावत्] कपट वाला; "कोहाए माणाए मायाए लोभाए" (पडि)।
माय देखो **मेत्त**=मात्र; "लोमुक्खणणमायमवि" (सूअ २, १, ४८)।
माय° देखो **माया**=माया; (आचा)।
माय° देखो **मत्ता**=मात्रा। **°न्न** वि [°ज्ञ] परिमाण का जानकार; (सूअ २, १, ५७)।
मायइ स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष; (पउम ५३, ७६)।
मायंग पुं [मातङ्ग] १ भगवान् सुपार्श्वनाथ का शासन-यक्ष; २ भगवान् महावीर का शासन-यक्ष; (संति ७; ८)। ३ हस्ती, हाथी; (पाअ; सुर १, ११)। ४ चाण्डाल, डोम; (पाअ)।
मायंगी स्त्री [मातङ्गी] १ चाण्डालिन; (निचू १)। २ विद्या-विशेष; (आचू १)।
मायंजण पुं [मातञ्जन] पर्वत-विशेष; (इक)।
मायंड पुं [मार्तण्ड] सूर्य, रवि; (सुपा २४२; कुप्र ८७)।
मायंद पुं [दे. माकन्द] आम्र, आम का पेड़; (हे २, १७४; प्राप्र; दे ६, १२८; कुप्र ७१; १०६)।
मायंदिअ देखो **मागंदिअ**; (भग १८, १)।
मायंदी स्त्री [माकन्दी] नगरी-विशेष; (स ६; कुप्र १०६)।
मायंदी स्त्री [दे] श्वेताम्बर साध्वी; (दे ६, १२६)।
मायण्हिया स्त्री [मृगतृष्णिका] किरण में जल-भ्रान्ति, मरु-मरीचिका;
"जह मुद्धमओ मायण्हियाए तिसिओ करेइ जल-बुद्धिं।
तह निव्विवेयपुरिसो कुणइ अधम्मंवि धम्ममइं" (सुपा ५००)।
मायहिय (अप) देखो **मागहिया**; (भवि)।
माया देखो **माइ**=मातृ; "मायाइ अहं भणिओ" (धर्मवि ५; पाअ; विपा १, ६; षड्)। **°पिइ**, **°पिति** पुंन [°पितृ] माँ-बाप; (पि ३६१; स १८४)। **°मह** पुं [°मह] माँ का बाप; (सुर ११, ४६; सुपा ३८४)। **°वित्त** देखो **°पिइ**; "दुहियाण होइ सरणं मायावित्तं महिलियाणं" (पउम १७, २१), "तणेव देवेण तहिं मायावित्ताइं रोवमाणाइं" (सुर ६, २३५; १, २३६; धर्मवि २१; महा)।
माया देखो **मत्ता**=मात्रा; "नो अइमायाए पाणभोयणं आहारेत्ता; (उत्त १६, ८; औप; उव; कस)।
माया स्त्री [माया] १ कपट, छल, शाठ्य, धोखा; (भग; कुमा; ठा ३, ४; पाअ; प्रासू १७५)। २ इन्द्रजाल; (दे ३, ५३; उप ८२३)। ३ मन्त्राक्षर-विशेष; 'ह्रीं' अक्षर; (सिरि १६७)। ४ छन्द-विशेष; (पिंग)। **°णर** पुं [°नर] पुरुष-वेश-धारी स्त्री-आदि; (धर्मसं १२७८)। **°बीय** न [°बीज] 'ह्रीं' अक्षर; (सिरि ४०१)। **°मोस** पुंन [°मृषा] कपट-पूर्वक असत्य वचन; (णाया १, १; पण्ह १, २; भग; औप)। **°वत्तिअ**, **°वत्तीय** वि [°प्रत्ययिक] कपट से होने वाला, छल-मूलक; (भग; ठा २, १; नव १७)। **°वि** वि [°विन्] माया-युक्त; (पउम ८८, ११); स्त्री—**°विणी**; (सुपा ६२७)।

मायि वि [**मायिन्**] माया-युक्त, मायावी; (उवा; पि ४०५)।

मार सक [**मारय्**] १ ताड़न करना। २ हिंसा करना। मारइ, मारेइ; (आचा; कुमा; भग)। भवि—मारेहिसि; (पि ५२८)। कर्म—मारिज्जइ; (उव)। वकृ—**मारंत, मारेंत**; (भत्त ६२; पउम १०५, ७६)। कवकृ—**मारिज्जंत**; (सुपा १५७)। संकृ—**मारेत्ता**; (महा), **मारि** (अप); (हे ४, ४३९)। हेकृ—**मारेउं**; (महा)। कृ—**मारियव्व, मारेयव्व**; (पउम ११, ४२), **मारणिज्ज**; (उप ३५७ टी)।

मार पुं [**मार**] १ ताड़न; (सुपा २२६)। २ मरण, मौत; (आचा; सूअ २, २, १७; उप पृ ३०८)। ३ यम, जम; (सूअ १, १, ३, ७)। ४ कामदेव, कंदर्प; (उप ७६८ टी)। ५ चौथी नरक का एक नरकावास; (ठा ४, ४—पत्र २६५; देवेन्द्र १०)। ६ वि. मारने वाला; (णाया १, १६—पत्र २०२)। °**वहू** स्त्री [°**वधू**] रति; (सुपा ३०४)।

मारग वि [**मारक**] मारने वाला; स्त्री °**रिगा**; (कुप्र २३५)।

मारण न [**मारण**] १ ताड़न; २ हिंसा; (भग; स १२१)।

मारणअ (अप) वि [**मारयितृ**] मारने वाला; (हे ४, ४४३)।

मारणंतिअ वि [**मारणान्तिक**] मरण के अन्त समय का; (सम ११; ११९; ओप; उवा; कप्प)।

मारणया } स्त्री [**मारणा**] मारना; (भग; पण्ह १, १;
मारणा } विपा १, १)।

मारय देखो **मारग**; (उव; संबोध ४३)।

मारा स्त्री [**मारा**] प्राणि-वध का स्थान, शूना; (णाया १, १६—पत्र २०२)।

मारि स्त्री [**मारि**] १ रोग-विशेष, मृत्यु-दायक रोग; (स २४२)। २ मारण; (आवम)। ३ मौत, मृत्यु; (उप ३२९)।

मारि देखो **मार**=मारय्।

मारि वि [**मारिन्**] मारने वाला; (महा)।

मारिज्ज पुं [**मारीच**] रावण का एक सुभट; (पउम ५६, ७)। देखो **मारीअ**।

मारिज्जि देखो **मरिइ**; (पउम ८२, २६)।

मारिय वि [**मारित**] मारा हुआ; (महा)।

मारिलग्गा स्त्री [**दे**] कुत्सित स्त्री; (दे ६, १३१)।

मारिव पुंन [**दे**] गौरव; "गौरवे मारिवे" (संक्षि ४७)।

मारिस वि [**मादृश**] मेरे जैसा; (कुमा)।

मारी स्त्री [**मारी**] देखो **मारि**; (स २४२)।

मारीअ पुं [**मारीच**] ऋषि-विशेष; (अभि २४९)। देखो **मारिज्ज**।

मारीइ } पुं [**मारीचि**] १ एक विद्याधर सामन्त राजा;
मारीजि } (पउम ८, १३२)। २ रावण का एक सुभट; (पउम ५६, २७)।

मारुअ पुं [**मारुत**] १ पवन, वायु; (पाअ; सुपा २०४; सुर ३, ४०; १३, १९४; आप १४; महा)। २ हनूमान का पिता; (से २, ४४)। °**तणय** पुं [°**तनय**] हनूमान; (से २, ४४; हे ३, ८७)। °**त्थ** न [°**स्त्र**] अस्त्र-विशेष, वातास्त्र; (पउम ५९, ६१))

मारुअ वि [**मारुक**] मरु देश का, मरु-संबन्धी; "को अमयवल्लरी मारुयम्मि कत्थइ थले होइ" (उप ६८६ टी)।

मारुइ पुं [**मारुति**] हनूमान; (से १, ३७)।

माल अक [**माल्**] १ शोभना। २ वेष्टित होना। कृ—"अच्चिसहस्समालणीयं" (णाया १, १—पत्र ३८)।

माल पुं [**दे**] १ आराम, बगीचा; (दे ६, १४६)। २ मञ्च, आसन-विशेष; (दे ६, १४६; णाया १, १—पत्र ६३; पंचा १३, १४)। ३ वि. मञ्जु; (दे ६, १४६)।

माल पुं [**दे. माल**] १ देश-विशेष; (पउम ६८, ६५)। २ घर का उपरि-भाग, तला, मजला; गुजराती में 'माळो' (णाया १, ६—पत्र ५७; चेइय ४८१; पंचा १३, १४; ठा ३, ४—पत्र १५९)। ३ वनस्पति-विशेष; (जं १)।

माल° देखो **माला**। °**गार** वि [°**कार**] माली; (उप पृ १६६)।

मालइ° } स्त्री [**मालती**] १ लता-विशेष; २ पुष्प-विशेष;
मालई } (पउम ५३, ७९; पाअ; कुमा)। ३ छन्द-विशेष; (पिंग)।

मालंकार पुं [**मालङ्कार**] वैरोचन बलीन्द्र के हस्ति-सैन्य का अधिपति; (ठा ५, १—पत्र ३०२; इक)।

मालणीय देखो **माल**=माल्।

मालय देखो **माल**=दे. माल; (ठा ३, १—पत्र १२३)।

मालव पुं [**मालव**] १ भारतीय देश-विशेष; (इक; उप १४२ टी)। २ मालव देश का निवासी मनुष्य; (पण्ह १, १—पत्र १४)।

मालवंत पुं [**माल्यवत्**] १ पर्वत-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ६६; ८०; सम १०२)। २ एक राज-कुमार; (पउम ६, २२०)। °**परियाग**, °**परियाय** पुं [°**पर्याय**] पर्वत-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ८०; ६६)।

मालविणी स्त्री [**मालविनी**] लिपि-विशेष; (विसे ४६४ टी)।

माला स्त्री [**माला**] १ फूल आदि का हार; "मल्लं माला दामं" (पाअ; स्वप्न ७२; सुपा ३१६; प्रासू ३०; कुमा)। २ पंक्ति, श्रेणी; (पाअ)। ३ समूह; "जलमालकद्दमालं" (सुमनि १६१)। ४ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**इल्ल** वि [°**वत्**] माला वाला; प्राप्र)। °**कारि** वि [°**कारिन्**] माली, पुष्प-व्यवसायी; स्त्री—°**णी**; (सुपा ५१०)। °**गार** वि [°**कार**] वही अर्थ; (उप १४२; टी; अंत १८; सुपा ५६२; उप पृ १५६)। °**घर** पुं [°**घर**] प्रतिमा के ऊपर के भाग की रचना-विशेष; (चेइय ६३)। °**यार**, °**र** देखो °**कार**; (अंत १८; उप पृ १५७; गा ५६६); स्त्री—°**री**; (कुमा; गा ५६७)। °**हरा** स्त्री [°**धरा**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

माला स्त्री [**दे**] ज्योत्स्ना, चन्द्रिका; (दे ६, १२८)।

मालाकुंकुम न [**दे**] प्रधान कुंकुम; (दे ६, १३२)।

मालि पुंस्त्री [**मालि**] वृक्ष-विशेष; (सम १५२)।

मालि पुं [**मालिन्**] १ पाताल-लंका का एक राजा; (पउम ६, २२०)। २ देश-विशेष; (इक)। ३ त्रि. माली, पुष्प-व्यवसायी; (कुमा)। ४ शोभने वाला; (कुमा)।

मालिअ [**मालिक**] ऊपर देखो; (दे २, ८; पराह १, २; सुपा २७३; उप पृ १५७)।

मालिअ वि [**मालित**] शोभित, विभूषित; "परलोए पुण कल्लाणमालिआमालिआ कमेणेव" (सा २३; पाअ; उप २६४ टी)।

मालिआ [**मालिका, माला**] देखो माला=माला; (सा २३; स्वप्न ५३; औप; उवा)।

मालिज्ज न [**मालीय**] एक जैन मुनि-कुल; (कप्प)।

मालिणी स्त्री [**मालिनी**] १ माली की स्त्री; (कुमा)। २ शोभने वाली; (औप)। ३ छन्द-विशेष; (पिंग)। ४ माला वाली; (गउड)

मालिण्ण, **मालिन्न** न [**मालिन्य**] मलिनता; (उप पृ २२; सुपा ३५२; ५८६)।

मालुग, **मालुय** पुं [**मालुक**] १ त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष; (सुख ३६, १३८)। २ वृक्ष-विशेष; (पगण १—पत्र ३१; गाया १, २—पत्र ७८)।

मालुया स्त्री [**मालुका**] १ वल्ली, लता; (सुअ १, ३, २, १०)। २ वल्ली-विशेष; (पगण १—पत्र ३३)।

मालुहाणी स्त्री [**मालुधानी**] लता-विशेष; (गउड)।

मालूर पुं [**दे. मालूर**] कपित्थ, कैथ का गाछ; (दे ६, १३०)।

मालूर पुं [**मालूर**] १ बिल्व वृक्ष, बेल का गाछ; (दे ३, १६; गा ५७६; गउड; कुमा)। २ न. बेल का फल; (पाअ; गउड)।

माविअ वि [**मापित**] मापा हुआ; (से ६, ६०; दे ८, ४८)।

मास देखो **मंस**=मांस; (हे १, २६; ७०; कुमा; उप ७२८ टी)।

मास पुं [**मास**] १ महिना, तीस दिन का समय; (ठा २, ४; उप ७६८ टी; जी ३५)। २ समय, काल; "काल-मासे कालं किच्चा" (विपा १, १; २; कुप्र ३५), "पसव-मासे" (कुप्र ४०४)। ३ पर्व—वनस्पति-विशेष; "वीरुणा-(ण्णी) तह इक्कडे य मासे य" (पगण १—पत्र ३३)। °**उस** देखो °**तुस**; (राज)। °**कप्प** पुं [°**कल्प**] एक स्थान में महिना तक रहने का आचार; (बृह ६)। °**खमण** न [°**क्षपण**] लगातार एक मास का उपवास; (णाया १, १; विपा २, १; भग)। °**गुरु** न [°**गुरु**] तप-विशेष, एका-शन तप; (संबोध ५७)। °**तुस** पुं [°**तुष**] एक जैन मुनि; (विवे ५१)। °**पुरी** स्त्री [°**पुरी**] १ नगरी-विशेष, भंगी देश की राजधानी; (इक)। २ 'वर्त' देश की राज-धानी; "पावा भंगी य, मासपुरी वट्टा" (पव २७५)। °**पू-रिया** स्त्री [°**पूरिका**] एक जैन मुनि-शाखा; (कप्प)। °**लहु** न [°**लघु**] तप-विशेष, 'पुरिमड्ढ' तप; (संबोध ५७)।

मास पुं [**माष**] १ अनार्य देश-विशेष; २ देश-विशेष में रहने वाली मनुष्य-जाति; (पराह १, १—पत्र १४)। ३ धान्य-विशेष, उड़द; (दे १, ६८)। ४ परिमाण-विशेष, मासा; (वज्जा १६०)। °**पण्णी** स्त्री [°**पर्णी**] वनस्पति-विशेष; (पगण १—पत्र ३६)।

मासल देखो **मंसल**; (हे १, २६; कुमा)।

मासलिय वि [**मांसलित**] पुष्ट किया हुआ; (गउड; सुपा ४७४)।

मासाहस पुं [**मासाहस**] पक्षि-विशेष; "मासाहससउणि-समो किं वा चिट्ठामि धंधलिओ" (संवे ६; उव; उर ३, ३)।

मासिअ पुं [**दे**] पिशुन, खल, दुर्जन; (दे ६, १२२)।

मासिअ वि [**मासिक**] मास-संबन्धी; (उवा; औप)।

मासिआ स्त्री [**मातृष्वसृ**] माँ की बहिन; (धर्मवि २२)।

मासु देखो **मंसु**=श्मश्रु; (हे २, ८६)।

मासुरी स्त्री [**दे**] श्मश्रु, दाढ़ी-मूँछ; (दे ६, १३०; पाअ)।

माह पुं [**माघ**] १ मास-विशेष, माघ का महिना; (पाअ; हे ४, ३५७)। २ संस्कृत का एक प्रसिद्ध कवि; ३ एक संस्कृत काव्य-ग्रन्थ, शिशुपाल-वध काव्य; (हे १, १८७)।

माह न [**दे**] कुन्द का फूल; (दे ६, १२८)।

माहण पुंस्त्री [**माहन, ब्राह्मण**] हिंसा से निवृत्त, अहिंसक;— १ मुनि, साधु, ऋषि; २ श्रावक, जैन उपासक; ३ ब्राह्मण; (आचा; सूअ २, २, ८८; ५४; भग १, ७; २, ५; प्रासू ८०; महा); स्त्री—°**णी**; (कप्प)। °**कुंड** न [°**कुण्ड**] मगध देश का एक ग्राम; (आचू १)।

माहप्प पुंन [**माहात्म्य**] १ महत्त्व, गौरव; २ महिमा, प्रभाव; (हे १, ३३; गउड; कुमा; सुर ३, ५३; प्रासू १७)।

माहप्पया स्त्री. ऊपर देखो; (उप ७६८ टी)।

माहय पुं [**दे**] चतुरिन्द्रिय कीट-विशेष; (उत्त ३६, १४६)।

माहव पुं [**माधव**] १ श्रीकृष्ण, नारायण; (गा ४४३; वज्जा १३०)। २ वसन्त ऋतु; ३ वैशाख मास; (गा ७७७; रुक्मि ५३)। °**पणइणी** स्त्री [°**प्रणयिनी**] लक्ष्मी; (स ५२३)।

माहविआ स्त्री [**माधविका**] नीचे देखो; (पाअ)।

माहवी स्त्री [**माधवी**] १ लता-विशेष; (गा ३२२; अभि १६६; स्वप्न ३६)। २ एक राज-पत्नी; (पउम ६, १२६; २०, १८४)।

माहारयण न [**दे**] १ वस्त्र, कपड़ा; २ वस्त्र-विशेष; (दे ६, १३२)।

माहिंद पुं [**माहेन्द्र**] १ एक देव-लोक; (सम ८)। २ एक इन्द्र, माहेन्द्र देवलोक का स्वामी; (ठा २, ३—पत्त ८५)। ३ ज्वर-विशेष; "माहिंदजरो जाओ" (सुपा ६०६)। ४ दिन का एक मुहूर्त; (सम ५१)। ५ वि. महेन्द्र-संबन्धी; (पउम ५५, १६)।

माहिल पुं [**दे**] महिषी-पाल, भैंस चराने वाला; (दे ६, १३०)।

माहिवाय पुं [**दे**] १ शिशिर पवन; (दे ६, १३१)। २ माघ का पवन; (षड्)।

माहिसी देखो **महिसी**; (कप्प)।

माही स्त्री [**माघी**] १ माघ मास की पूर्णिमा; २ माघ की अमावास्या; (सुज्ज १०, ६)।

माहुर वि [**माथुर**] मथुरा का; (भत्त १४५)।

माहुर न [**दे**] शाक, तरकारी; (दे ६, १३०)।

माहुर } वि [**माधुर, °क**] १ मधुर रस वाला; २
माहुरय } आम्ल-रस से भिन्न रस वाला; (उवा)।

माहुरिअ न [**माधुर्य**] मधुरता; (प्राकृ १६)।

माहुलिंग पुं [**मातुलिङ्ग**] १ बीजपूर वृक्ष; बीजौरानीबू का पेड़; (हे १, २४४; चंड)। २ न. बीजौरे का फल; (षड्; कुमा)।

माहेसर वि [**माहेश्वर**] १ महेश्वर-भक्त; (सिरि ४८)। २ न. नगर-विशेष; (पउम १०, ३४)।

माहेसरी स्त्री [**माहेश्वरी**] १ लिपि-विशेष; (सम ३५)। २ नगरी-विशेष; (राज)।

मि (अप) देखो **अवि**=अपि; (भवि)।

मि° स्त्री [**मृत्**] मिट्टी, मट्टी; "जह मिल्लेवावगमादलाबुणो-वस्समेव गइभावो" (विसे ३१४२)। °**प्पिंड** पुं [°**पिण्ड**] मिट्टी का पिंडा; (अभि २००)। °**म्मय** वि [°**मय**] मिट्टी का बना हुआ; (उप २४२; पिंड ३३४; सुपा २७०)।

मिअ देखो **मय**=मृग; "सव्वगिंदियदोसेणं मिओ मओ वाहबाणेणं" (सुर ८, १४२; उत्त १, ५; पण्ह १, १; सम ६०; रंभा; ठा ४, २; पि ५४)। °**चक्क** न [°**चक्र**] विद्या-विशेष, ग्राम-प्रवेश आदि में मृगों के दर्शन आदि से शुभाशुभ फल जानने की विद्या; (सूअ २, २, २७)। °**णअणी,** °**नयणा** स्त्री [°**नयना**] देखो **मय-च्छी**; (नाट; सुर ६, १५३)। °**मय** पुं [°**मद**] कस्तूरी; (रंभा ३५)। °**रिउ** पुं [°**रिपु**] सिंह; (सुपा ५७१)। °**वाहण** पुं [°**वाहन**] भरतक्षेत्र के एक भावी तीर्थंकर; (सम १५३)।

मिअ देखो **मित्त**=मित्र; (प्राप्र)।

मिअ वि [**दे**] अलंकृत, विभूषित; (षड्)।

मिअ वि [**मित**] मानोपेत, परिमित; (उत्त १६, ८; सम १५२; कप्प)। २ थोड़ा, अल्प; "मिअं तुच्छं" (पाअ)।

°**वाइ** वि [°**वादिन्**] आत्म आदि पदार्थों को परिमित मानने वाला; (ठा ८—पत्र ४२७)।
मिअ देखो **मिव=इव**; (गा २०६ अ; नाट)।
मिअ° देखो **मिआ**। °**गाम** पुं [°**ग्राम**] ग्राम-विशेष; (विपा १, १)।
मिअआ स्त्री [**मृगया**] शिकार; (नाट —शकु २७)।
मिअंक पुं [**मृगाङ्क**] १ चन्द्र, चाँद; (हे १, १३०; प्राप्र; कुमा; काप्र १६४)। २ चन्द्र का विमान; (सुज्ज २०)। ३ इक्ष्वाकु वंश का एक राजा; (पउम ५, ७)। °**मणि** पुं [°**मणि**] चन्द्रकान्त मणि; (कप्पू)।
मिअंग देखो **मयंग=मृदंग**; (कप्पू)।
मिअसिर देखो **मगसिर**; (पि ५४)।
मिआ स्त्री [**मृगा**] १ राजा विजय की पत्नी; (विपा १,१)। २ राजा बलभद्र की पत्नी; (उत्त १६, १) °**उत्त**, °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] १ राजा विजय का एक पुत्र; (विपा १, १; कर्म १५)। २ राजा बलभद्र का एक पुत्र, जिसका दूसरा नाम बलश्री था; (उत्त १६, २)। °**वई** स्त्री [°**वती**] १ प्रथम वासुदेव की माता का नाम; (सम १५२)। २ राजा शतानीक की पटरानी का नाम; (विपा १, ५)।
मिइ स्त्री [**मिति**] १ मान, परिमाण; २ हद, अवधि; "किं तुक्कसुवाणाणं न मिई जमुत्तायसत्तीए" (धर्मवि १४३)।
मिइ देखो **मिउ=मृत्**; (धर्मसं ५५८)।
मिइंग देखो **मयंग=मृदंग**; (हे १, १३७; कुमा)।
मिइंद देखो **मइंद=मृगेन्द्र**; (अभि २४२)।
मिउ स्त्री [**मृद्**] मिट्टी, मट्टी; "मिउदंडचक्कचीवरसामग्गीवसा कुलालुव्व" (सम्मत्त २२४), "मिउपिंडो दव्वघडो सुसावगो तह य दव्वसाहु त्ति" (उप २५५ टी)।
मिउ वि [**मृदु**] कोमल, सुकुमार; (औप; कुमा; सण)।
मिंचण न [**दे**] मींचना, निमीलन; (दे ३, ३०)।
मिंज°, **मिंजा**, **मिंजिय** स्त्री [**मज्जा**] १ शरीर-स्थित धातु-विशेष, हाड के बीच का अवयव-विशेष; (पण्ह १, १—पत्र ८; महा; उवा; औप)। २ मध्यवर्ती अवयव; "पेहुणमिंजिया इवा" (पण्ण १७—पत्र ५२६)।
मिंठ, **मिंठिल** पुं [**दे**] हस्तिपक, हाथी का महावत; (उप १२८ टी; कुप्र ३६८; महा; भत्त ७६; धर्मवि ८१; १३५; मन १०; उप १३०) देखो **मेंठ**।
मिंढ, **मिंढय** पुंस्त्री [**मेढ्**] १ मेंढा, मेष, गाडर; (विसे ३०४ टी; उप पृ २०५; कुप्र १६२), "ते य दरा मिंढया ते य" (धर्मवि १४०)। स्त्री —°**ढिया**; (पाअ)। २ न. पुरुष-लिंग, पुरुष-चिह्न; (राज)। °**मुह** पुं [°**मुख**] १ अनार्य देश-विशेष; (पव २७४)। २ न. नगर-विशेष; (राज)। देखो **मेंढ**।
मिंढिय पुं [**मेण्ढिक**] ग्राम-विशेष; (कर्म १)।
मिग देखो **मय=मृग**; (विपा १, ७; सुर २, २२७; सुपा १६८; उव), "सीहो मिगाणं सलिलाण गंगा" (सुअ १, ६, २१)। °**गंध** पुं [°**गन्ध**] युगलिक मनुष्य की एक जाति; (इक)। °**णाह** पुं [°**नाथ**] सिंह; (सुपा ६३२)। °**वइ** पुं [°**पति**] सिंह; (पण्ह १, १; सुपा ६३६)। °**वालुंकी** स्त्री [°**वालुङ्की**] वनस्पति-विशेष; (पण्ण १७—पत्र ५३०)। °**ारि** पुं [°**ारि**] सिंह; (उव; सुर ६, २७०)। °**ाहिव** पुं [°**धिप**] सिंह; (पण्ह २, ५)।
मिगया स्त्री [**मृगया**] शिकार; (सुपा २१४; कुप्र २२; मोह ६२)।
मिगव्व न [**मृगव्य**] ऊपर देखो; (उत्त १८, १)।
मिगसिर देखो **मगसिर**; (सम ८; इक; पि ४३६)।
मिगावई देखो **मिआ-वई**; (पउम २०, १८४; २२, ५५; उव; अंत; कुप्र १८३; पडि)।
मिगी स्त्री [**मृगी**] १ हरिणी; (महा)। २ विद्या-विशेष; (राज)। °**पद** न [°**पद**] स्त्री का गुह्य स्थान, योनि; (राज)।
मिच्चु देखो **मच्चु**; (षड्; कुमा)।
मिच्छ (अप) देखो **इच्छ=इष्**; "न उ देइ कण्हु मिच्छइ न न देइ" (भवि)।
मिच्छ पुं [**म्लेच्छ**] यवन, अनार्य मनुष्य; (पउम २७, १८; ३४, ४१; ती १५; संबोध १६)। °**पहु** पुं [°**प्रभु**] म्लेच्छों का राजा; (रंभा)। °**पिय** न [°**प्रिय**] पलाण्डु, लशुन; "मिच्छप्पियं तु भुत्तं जा गंधो ता न हिंडंति" (बृह ५)। °**ाहिव** पुं [°**ाधिप**] यवनों का राजा; (पउम १२, १४)।
मिच्छ न [**मिथ्य**] १ असत्य वचन, झूठ; २ वि. असत्य, झूठा; "मिच्छं ते एवमाहंसु" (भग), "तं तहा, नेव मिच्छं" (पउम २३, १६)। ३ मिथ्यादृष्टि, सत्य पर विश्वास नहीं रखने वाला, तत्त्व का अश्रद्धालु; "मिच्छो हियाहियविभागना-णसण्णासमभिओ कोइ" (विसे ५१६)।
मिच्छ° देखो **मिच्छा**; (कम्म ३, २; ४)। °**कार** पुं [°**कार**] मिथ्या-करण; (आचम)। °**त्त** न [°**त्व**] सत्य तत्त्व पर अश्रद्धा, सत्य धर्म का अविश्वास; (ठा ३, ३;

आप् ६; भग; औप; उप ५३१; कुमा)। °त्ति वि [°त्विन्] सत्य धर्म पर विश्वास नहीं करने वाला, परमार्थ का अश्रद्धालु; (दं १८)। °दिट्ठि, °दिट्ठीय, °दिट्ठि, °दिट्ठिय वि [°दृष्टि, °क] सत्य धर्म पर श्रद्धा नहीं रखने वाला, जिन-धर्म से भिन्न धर्म को माननेवाला; (सम २६; कुमा; ठा २, २; औप; ठा १)।

मिच्छा अ [मिथ्या] १ असत्य, झूठा; (पाअ)। २ कर्म-विशेष, मिथ्यात्व-मोहनीय कर्म; (कम्म २, ४; १४)। ३ गुण-स्थानक विशेष, प्रथम गुण-स्थानक; (कम्म ४, २; ३; १३)। °दंसण न [°दर्शन] १ सत्य तत्त्व पर अश्रद्धा; (सम ८; भग; औप)। २ असत्य धर्म; (कुमा)। °णाण न [°ज्ञान] असत्य ज्ञान, विपरीत ज्ञान, अज्ञान; (भग)। °सुय न [°श्रुत] असत्य शास्त्र, मिथ्यादृष्टि-प्रणीत शास्त्र; (णंदि)।

मिउंज अक [मृ] मरना। मिउंजंति; (सुअ १, ७, ६)। वकृ—मिउंजमाण; (भग)।

मिउंजंत } देखो **मा**=मा।
मिउंजमाण }

मिज्झ वि [मेध्य] शुचि, पवित्र; (उप ७२८ टी)।

मिट सक [दे] मिटाना, लोप करना। मिटिअसु; (पिंग)। प्रयो—मिटावहि; (पिंग)।

मिट्ठ वि [मिष्ट, मृष्ट] मीठा, मधुर; "मुंहमिट्ठा मणदुट्ठा वेसा सिट्ठाण कइमिट्ठा" (धर्मवि ६५; कप्पू; सुर १२, १७; हे १, १२८; रंभा)।

मिण सक [मा, मी] १ परिमाण करना, नापना, तौलना। २ जानना, निश्चय करना। मिणइ; (विसे २१८६), मिणसु; (पव २५४)।

मिणण न [मान] मान, माप, परिमाण; (उप पृ ६७)।

मिणाय न [दे] बलात्कार, जबरदस्ती; (दे ६, ११३)।

मिणाल देखो **मुणाल**; (प्राकृ ८; रंभा)।

मित्त पुं [मित्र] १ सूर्य, रवि; (सुपा ६४५; सुर ४, ६; पाअ; वज्जा १४४)। २ नक्षत्रदेव-विशेष, अनुराधा नक्षत्र का अधिष्ठायक देव; (ठा २, ३—पत्र ७७; सुज १०, १२)। ३ अहोरात्र का तीसरा मुहूर्त; (सम ५१; सुज्ज १०, १३)। ४ एक राजा का नाम; (विपा १, २)। ५ पुंन. दोस्त, वयस्य, सखा; "मित्तो सही वयंसो" (पाअ), "पेहाण-मित्तो" (सं ७०७), "तिविहा मित्ता हवंति" (सं ७१५; सुपा ६४५; प्रासू ७६)। °केसी स्त्री [°केशी] रुचक पर्वत पर रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; "अलंबुसा मित्त (?-त)केसी" (ठा ८—पत्र ४३७; इक)। °गा स्त्री [°गा] वैरोचन बलीन्द्र की एक अग्र-महिषी, एक इन्द्राणी; (ठा ४, १—पत्र २०४)। °णंदि पुं [°नन्दिन्] एक राजा का नाम; (विपा २, १०)। °दाम पुं [°दामन्] एक कुलकर पुरुष का नाम; (सम १५०)। °देवा स्त्री [°देवा] अनुराधा नक्षत्र; (राज)। °व वि [°वत्] मित्र वाला; (उत्त ३, १८)। °सेण पुं [°सेन] एक पुरोहित-पुत्र; (सुपा ५०७)।

मित्त देखो **मेत्त**=मात्र; (कप्पू; जी ३१; प्रासू १४६)।

मित्तल पुं [दे] कन्दर्प, काम; (दे ६, १२६; सुर १२, ११८)।

मित्ति स्त्री [मिति] १ मान, परिमाण; २ सापेक्षता;
"उस्सग्गववायाणं मित्तीए अह या भोयणे तुहं।
उस्सग्गववायाणं मित्तीइ तहेव उवगरणं" (अज्झ ३७)।

मित्तिआ स्त्री [मृत्तिका] मिट्टी, मट्टी; (अभि २४३)। °वई स्त्री [°वती] दशार्ण देश की प्राचीन राजधानी; (विचार ४८)।

मित्तिज्ज अक [मित्त्रीय्] मित्र की चाहना। वकृ—मित्ति-ज्जमाण; (उत्त ११, ७)।

मित्तिय न [मैत्रेय] १ गोत्र-विशेष, जो वत्स गोत्र की एक शाखा है; २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न; (ठा ७—पत्र ३९०)।

मित्तिवय पुं [दे] ज्येष्ठ, पति का बड़ा भाई; (दे ६, १३२)

मित्ती स्त्री [मैत्री] मित्रता, दोस्ती; (सुअ २, ७, ३६; श्रा १४; प्रासू ८)।

मिथुण देखो **मिहुण**; (पउम ६६, ३१)।

मिदु देखो **मिउ**; (अभि १८३; नाट—रत्ना ८०)।

मिरिअ पुंन [मिरिच] १ मरिच का गाछ; २ मिरच, मिर्चा; (पण्ण १७—पत्र ५३१; हे १, ४६; ठा ३, १ टी; पव २५६)।

मिरिआ स्त्री [दे] कुटी, झोंपड़ी; (दे ६, १३२)।

मिरिइ } पुंस्त्री [मरीचि] किरण, प्रभा, तेज; "बगल-
मिरी } मिरिइकवयं" (औप), "सप्पेहा समिरि(?री)या
मिरीइ } (औप), "निक्कंककडच्छाया समिरीया" (औप; ठा
मिरीय } ४, १—पत्र २२६), "विज्जुक्कमिरीइसूरदिप्पंत-

तेय—" (औप), "सुरमिरीयकवयं विणिम्मुयंतेहिं" (पण्ह १, ४—पत्न ७२)।

मिल अक [मिल्] मिलना। मिलइ; (हे ४, ३३२; रंभा; महा)। कर्म—मिलिज्जइ; (हे ४, ४३४)। वकृ—**मिलंत**; (से १०, १६)।

मिलक्खु पुंन. देखो **मिच्छ**=म्लेच्छ; (ओघ ४४०; धर्मसं ५०८; ती १५; उत्त १०, १६), "मिलक्खूणि" (पि ३८१)।

मिलण न [मिलन] मेल, मिलना, एकलित होना; "लोगमिलणम्मि" (उप ५७८; सुपा २५०)।

मिलणा स्त्री. ऊपर देखो; (उप १२८ टी; उप ७०६)।

मिला } अक [म्लै] म्लान होना, निस्तेज होना।
मिलाअ } मिलाइ, मिलाअइ; (हे २, १०६; ४, १८; २४०; षड्)। वकृ—**मिलाअंत, मिलाअमाण**; (पि १३६; ठा ३, ३; णाया १, ११)।

मिलाअ } वि [म्लान] निस्तेज, विच्छाय; (णाया १,
मिलाण } १—पत्न ३७; स ४२५; हे २, १०६; कुमा; महा)।

मिलाण न [दे] पर्याण (?) "—थासगमिलाणचमरीगंडपरिमंडियकडीणं" (औप)।

मिलाणि स्त्री [म्लानि] विच्छायता; (उप १४२ टी)।

मिलिअ वि [मिलित] मिला हुआ; (गा ४४३; कुमा)।

मिलिअ वि [मेलित] मिलाया हुआ; (कुमा)।

मिलिच्छ देखो **मिच्छ**=म्लेच्छ; (हे १, ८४; हम्मीर ३४)।

मिलिट्ठ वि [म्लिष्ट] १ अस्पष्ट वाक्य वाला; २ म्लान; ३ न. अस्पष्ट वाक्य; (प्राकृ २७)।

मिलिमिलिमिल अक [दे] चमकना। वकृ—**मिलिमिलिमिलंत**; (पण्ह १, ३—पत्न ४४)।

मिलीण देखो **मिलिअ**; (ओघभा २२ टी)।

मिल्ल सक [मुच्] छोड़ना, त्यागना। मिल्लइ; (भवि)। वकृ—**मिल्लंत**; (सुपा ३१७)। कृ—**मिल्लेव** (अप); (कुमा)। प्रयो—कवकृ—**मिल्लाविज्जंत**; (कुप्र १६२)।

मिल्लाविअ वि [मोचित] छुड़ाया हुआ; (सुपा ३८८; हम्मीर १८; कुप्र ४०१)।

मिल्लिअ (अप) देखो **मिलिअ**; (पिंग)।

मिल्लिर वि [मोक्तृ] छोड़ने वाला; (कुमा)।

मिल्ह देखो **मिल्ल**। मिल्हइ; (आत्मानु २२), मिल्हंति; (कुप्र १७)। भवि—मिल्हिस्सं; (कुप्र १०)। कृ—**मिल्हियव्व**; (सिरि ३५७)।

मिल्हिय वि [मुक्त] छोड़ा हुआ; (श्रा २७)।

मिव देखो **इव**; (हे २, १८२; प्राप्र; कुमा)।

मिस सक [मिस्] शब्द करना। वकृ—**मिसंत**; (तंदु ४४)।

मिस न [मिष] बहाना, छल, व्याज; (चेइय ८३१; सिक्खा २६; रंभा; कुमा)।

मिसमिस अक [दे] १ अत्यन्त चमकना। २ खूब जलना। वकृ—**मिसमिसंत**; (णाया १, १—पत्न १६; तंदु २६; उप ६४८ टी)।

मिसल (अप) सक [मिश्रय्] मिश्रण करना, मिलाना। मराठी में 'मिसलणें'। मिसलइ; (भवि)।

मिसल (अप) देखो **मीस, मीसालिअ**; (भवि)।

मिसिमिस देखो **मिसमिस**। वकृ—**मिसिमिसंत, मिसिमिसिंत, मिसिमिसिमाण, मिसिमिसीयमाण, मिसिमिसेंत, मिसिमिसेमाण**; (औप; कप्प; पि ५५८; उवा; पि ५५८; णाया १, १—पत्न ६४)।

मिसिमिसिय वि [दे] उद्दीप्त, उत्तेजित; (सुर ३, ५०)।

मिस्स सक [मिश्रय्] मिश्रण करना, मिलाना। मिस्सइ; (हे ४, २८)।

मिस्स देखो **मीस**=मिश्र; (भग)।

°**मिस्स** पुं [°मिश्र] पूज्य, पूजनीय; "वसिट्ठमिस्सेसु" (उत्तर १०३)।

मिस्साकूर पुंन [मिश्राकूर] खाद्य-विशेष; "अणुराहाहिं मिस्साकूरं भोच्चा कज्जं साधेंति" (सुज्ज १०, १७)।

मिह अक [मिध्] स्नेह करना। मिहसि; (सुर ४, २१)।

मिह देखो **मिस**=मिष; "निग्गओ अलियगामंतरगमणमिहेण" (महा)।

मिह देखो **मिहो**; (आचा)।

मिहिआ स्त्री [दे] मेघ-समूह; (दे ६, १३२)। देखो **महिआ**।

मिहिआ स्त्री [मेघिका] अल्प मेघ; (से ४, १७)। देखो **महिआ**।

मिहिर पुं [मिहिर] सूर्य, रवि; (उप पृ ३५०; सुपा ४१६; धर्मा ५),

"सायरनिसायराणं मेहसिंहडीण मिहिरनलिणीणं ।
दूरेवि वसंताणं पडिवन्नं नन्नहा होइ" (उप ७२८ टी)।
मिहिला स्त्री [**मिथिला**] नगरी-विशेष; (ठा १०; पउम २०, ४५; णाया १, ८—पत्र १२४; इक)।
मिहु } देखो **मिहो**; (उप ६४७; आचा)।
मिहुं }
मिहुण न [**मिथुन**] १ स्त्री-पुरुष का युग्म, दंपती; (हे १, १८७; पाअ; कुमा)। २ ज्योतिष-प्रसिद्ध एक राशि; (विचार १०६)।
मिहो अ [**मिथस्**] परस्पर, आपस में; (उप ६७६; स ५३६; पि ३४७)।
मीअ न [**दे**] समकाल, उसी समय; (दे ६, १३३)।
मीण पुं [**मीन**] १ मत्स्य, मछली; (पाअ; गउड; ओघ ११६; सुर ३, ५३; १३, ४६)। २ ज्योतिष-प्रसिद्ध राशि-विशेष; (सुर ३, ५३; विचार १०६; संबोध ५४)।
मीत देखो **मित्त**=मित्त्व; (संक्षि १७)।
मीमंस सक [**मीमांस्**] विचार करना। कृ—"अ-मीमंसा गुरू" (स ७३०)।
मीमंसा स्त्री [**मीमांसा**] जैमिनीय दर्शन; (सुख ३, १; धर्मवि ३८)।
मीमंसिय वि [**मीमांसित**] विचारित; (उप ६८६ टी)।
मीरा स्त्री [**दे**] दीर्घ चुल्ली, बड़ा चुल्हा; (सुपनि ७६)।
मील अक [**मील्**] मीचाना, सकुचाना। मीलइ; (हे ४, २३२; षड्)।
मील देखो **मिल**; (वि ११)।
मीलच्छीकार पुं [**मीलच्छीकार**] १ यवन देश-विशेष; "मीलच्छीकारदेसोवरि चलिदो खप्परखाणराया" (हम्मीर ३५)। २ एक यवन राजा; (हम्मीर ३५)।
मीलण न [**मीलन**] संकोच; (कुमा)।
मीलण देखो **मिलण**; "खणजणमणमीलणोवमा विसया" (वि ११; राज)।
मीलिअ देखो **मिलिअ**=मिलित; (पिंग)।
मीस सक [**मिश्रय्**] मिलाना, मिश्रण करना। कर्म—मीसिज्जइ; (पि ६४)।
मीस वि [**मिश्र**] १ संयुक्त, मिला हुआ, मिश्रित; (हे १, ४३; २, १७०; कुमा; कम्म २, १३; १५; ४, १३; १७; २४; भग; औप; दं २२)। २ न. लगातार तीन दिनों का उपवास; (संबोध ५८)।
मीसालिअ वि [**मिश्र**] संयुक्त, मिला हुआ; (हे २, १७०; कुमा)।
मीसिय वि [**मिश्रित**] ऊपर देखो; (कुमा; कप्प; भवि)।
मुअ सक [**मोदय्**] खुश करना। कवकृ—**मुइज्जंत**; (से ७, ३७)।
मुअ सक [**मुच्**] छोड़ना। मुअइ; (हे ४, ९१), मुअंति; (गा ३१६)। वकृ—**मुअंत, मुयमाण**; (गा ६४१; से ३, ३६; पि ४८५)। संकृ—**मुइत्ता**; (भग)।
मुअ वि [**मृत**] मरा हुआ; (से ३, १२; गा १४२; वज्जा १५८; प्रासू ५७; पउम १८, १६; उप ६४८ टी)। °**वहण** न [°**वहन**] शव-यान, ठठरी; (दे २, २०)।
मुअ वि [**स्मृत**] याद किया हुआ; (सुअ २, ७, ३८; आचा)।
मुअंक देखो **मिअंक**; (प्राकृ ८)।
मुअंग देखो **मिअंग**; (षड्; सम्मत्त २१८)।
मुअंगी स्त्री [**दे**] कीटिका, चींटी; (दे ६, १३४)।
मुअग्ग पुं [**दे**] 'आत्मा बाह्य और अभ्यन्तर पुद्गलों से बना हुआ है' ऐसा मिथ्या ज्ञान; (ठा ७ टी—पत्र ३८३)।
मुअण न [**मोचन**] छुटकारा, छोड़ना; (सम्मत्त ७८; विसे ३३१६; उप ५२०)।
मुअल (अप) देखो **मुअ**=मृत; (पिंग)।
मुआ स्त्री [**मृद्**] मिट्टी; (संक्षि ४)।
मुआ स्त्री [**मुद्**] हर्ष, खुशी, आनन्द; "सुरयरसाओवि मुयं अहियं उवजणइ तस्स सा एसा" (रंभा)।
मुआइणी स्त्री [**दे**] डुम्बी, चाण्डालिन; (दे ६, १३५)।
मुआविअ वि [**मोचित**] छुड़वाया हुआ; (स ४४६)।
मुइ वि [**मोचिन्**] छोड़ने वाला; (विसे ३४०२)।
मुइअ वि [**मुदित**] १ हर्षित, मोद-प्राप्त; (सुर ७, २२३; प्रासू १०५; उव; औप)। २ पुं. रावण का एक सुभट; (पउम ५६, ३२)।
मुइअ वि [**दे**] योनि-शुद्ध, निर्दोष माता वाला; "मुइओ जो होई जोणिसुद्धो" (औप—टी)।
मुइअंगा देखो **मुअंगी**; "उवलिप्पंते काया मुइअंगाई नजरि छड्डे" (पिंड ३५१)।
मुइंग देखो **मिअंग**; (हे १, ४६; १३७; प्राप्र; उवा; कप्प; सुपा ३६३; पाअ)। °**पुक्खर** पुंन [°**पुष्कर**] मृदंग का ऊपरला भाग; (भग)।

मुइंगलिया } स्त्री [दे] कीटिका, चींटी; (उप १३४ टी;
मुइंगा } संथा ८६; विसे १२०८; पिंड ३५१ टी) ।
मुइंगि वि [मृदङ्गिन्] मृदंग बजाने वाला; (कुमा) ।
मुइंद देखो मइंद=मृगेन्द्र; (प्राकृ ८) ।
मुइज्जंत देखो मुअ=मोदय् ।
मुउर वि [मोक्तृ] छोड़ने वाला; (कुमा) ।
मुउ देखो मिउ; (काल) ।
मुउंद पुं [मुचुकुन्द] १ वृक्ष-विशेष; (कप्पु ६६) ।
२ पुष्पवृक्ष-विशेष; (कप्पू) ।
मुउंद पुं [मुकुन्द] विष्णु, नारायण; (नाट—चैत १३६)।
मुउर देखो मउर=मुकुर; (षड्) ।
मुउल देखो मउल=मुकुल; (षड्; मुद्रा ८४) ।
मुंगायण न [मुद्गायण] गोत्र-विशेष, विशाखा नक्षत्र का गोत्र; (इक) ।
मुंच देखो मुअ=मुच् । मुंचइ, मुंचए; (षड्; कुमा) ।
भूका—मुंची; (भत ७६) । भवि—मोच्छं, मोच्छिहि,
मुंचिहिइ; (हे ३, १७१; पि ५२६) । कर्म—मुच्चइ;
मुच्चए, मुच्चंति; (भाषा; हे ४, २०६; महा; भग), भवि—
मुच्चिहिति; (भग) । वकृ—मुंचंत; (कुमा) । कवकृ—
मुच्चंत; (पि ५४२) । संकृ—मोत्तुं, मोत्तूआण,
मोत्तूण; (कुमा; षड्; प्राकृ ३४) । हेकृ—मोत्तुं;
(कुमा); मुंचणहिं (अप); (कुमा) । कृ—मोत्तव्व,
मुत्तव्व; (हे ४, २१२; गा ६७२; सुपा ५८६) ।
मुंज पुंन [मुञ्ज] मूँज, तृण-विशेष, जिसकी रस्सी बनाई जाती है; (सुअ २, १, १६; गच्छ २, ३६; उप ६४८ टी)।
°मेहला स्त्री [°मेखला] मूँज का कटीसूत्र; (गाया १, १६—पत्र २१३) ।
मुंजइ न [मौञ्जकिन्] १ गोत्र-विशेष; २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न; (ठा ७—पत्र ३९०) ।
मुंजायण पुं [मौञ्जायन] ऋषि-विशेष; (हे १, १६०; प्राप्र) ।
मुंजि पुं [मौञ्जिन्] ऊपर देखो; (प्राकृ ११) ।
मुंट वि [दे] हीन शरीर वाला;
"जे बंभचेरभट्ठा पाए पाडंति बंभयारीणं ।
ते हुंति टुंटमुंटा बोहीवि सुदुल्लहा तेसिं" (संबोध १४) ।
मुंड सक [मुण्डय्] १ मूँड़ना, बाल उतारना । २ दीक्षा देना, संन्यास देना । मुंडइ; (भवि), मुंडेइ; (सूअ २, २, ६३) । प्रयो—वकृ—मुंडावेंत; (संबा ११, ४८

टी), हेकृ—मुंडावेत्तं, मुंडावित्तए, मुंडावेत्तए; (संथा १०, ४८; ठा २, १; कस) ।
मुंड पुंन [मुण्ड] १ मस्तक, सिर; (हे ४, ४४६; सिक्र) ।
२ वि. मुण्डित, दीक्षित, प्रव्रजित; (कप्प; उवा; पिंड ३१४)।
°परसु पुं [°परशु] नंगा कुल्हाड़ा, तीक्ष्ण कुठार; (पण्ह १, ३—पत्र ५४) ।
मुंडण न [मुण्डन] केशों का अपनयन; (पंचा २, ३; स २७१; सुर १२, ४५) ।
मुंडा स्त्री [दे] मृगी, हरिणी; (दे ६, १३३) ।
मुंडाविअ वि [मुण्डित] मुँड़ाया हुआ; (सुपा; महा; गाया १, १) ।
मुंडि वि [मुण्डिन्] मुण्डन करने वाला; (उव; औप; भग १००) ।
मुंडिअ वि [मुण्डित] मुण्डन-युक्त; (भग; उप ६३४; महा) ।
मुंडी स्त्री [दे] नीरङ्गी, शिरो-वस्त्र, घूँघट; (दे ६, १३३) ।
मुंढ } पुं [मूर्धन्] मूर्धा, मस्तक, सिर; (हे १, ३६;
मुंढाण } २, ४१; षड्) । देखो मुद्ध=मूर्धन् ।
मुकलाव सक [दे] भेजवाना; गुजराती में 'मोकलावबुं' ।
संकृ—मुकलाविऊण; (सिरि ४७४) ।
मुक्क (अप) सक [मुच्] छोड़ना; गुजराती में 'मूकवुं' ।
मुकइ; (प्राकृ ११६) । संकृ—मुक्किअ; (नाट—चैत ७६) ।
मुक्क वि [मूक] वाक्-शक्ति से रहित; (हे २, ६६; सुपा ५५२; षड्) ।
मुक्क देखो मुकल; (विसे ५५०) ।
मुक्क वि [मुक्त] १ छोड़ा हुआ, त्यक्त; (उवा; सुपा ४७५; महा; पाअ) । २ मुक्ति-प्राप्त, मोक्ष-प्राप्त; (हे २, २) ।
३ लगातार पाँच दिन के उपवास; (संबोध ५८) । देखो मुत्त=मुक्त ।
मुक्कय न [दे] दुलहिन के अतिरिक्त अन्य निमन्त्रित कन्याओं का विवाह; (दे ६, १३५) ।
मुक्कल वि [दे] १ उचित, योग्य; (दे ६, १४७) । २ स्वैर, स्वतन्त्र, बन्धन-मुक्त; (दे ६, १४७; सुर १, २३३; विसे १६; गउड; सिरि ३६३; पाअ; सुपा ४६८) ।
मुक्कलुंडी स्त्री [दे] जूट; (दे ६, १३७) ।
मुक्कुरुड पुं [दे] राशि, ढेर; (दे ६, १३६) ।

मुक्ख पुं [मोक्ष] १ मुक्ति, निर्वाण; (सूअ १४, ६१; हे ३, ८६; सार्ध ८६) । २ छुटकारा; "रिणमुक्खं" (रयण ६६; धर्मसं २१) ।
मुक्ख वि [मूर्ख] अज्ञानी, बेवकूफ; (हे २, ११२; कुमा; गा ८२; सुपा २३१) ।
मुक्ख वि [मुख्य] प्रधान, नायक; (हास्य १२५) ।
मुक्ख पुंन [मुष्क] १ अण्डकोष; २ वृक्ष-विशेष; ३ चोर, तस्कर; ४ वि. मांसल, पुष्ट; (प्राप्र) ।
मुक्खण देखो मोक्खण; (सिक्खा ४५) ।
मुक्खणी स्त्री [मोक्षणी] स्तम्भन से छुटकारा करने वाली विद्या-विशेष; (धर्मवि १२४) ।
मुख देखो मुह=मुख; (प्रासू ६; राज) ।
मुग देखो मुग्ग; "एसमुगभक्खणहणे अससत्थो किं गिरिं भरइ" (सुपा ४६१) ।
मुगुंद देखो मउंद=मुकुन्द; (आचा २, १, २, ४; विसे ७८ टी) ।
मुगुंस पुंस्त्री [दे] हाथ से चलने वाले जन्तु की एक जाति, भुजपरिसर्प-जातीय एक प्राणी; (पराह १, १—पत्र ८) । स्त्री—°सा; (उवा) । देखो मंगुस, मुग्गस ।
मुग्ग पुं [मुद्ग] १ धान्य-विशेष, मूँग; (उवा) । २ रोग-विशेष; (ति १३) । ३ पक्षि-विशेष, जल-काक; (प्राप्र) । °पण्णी स्त्री [°पर्णी] वनस्पति-विशेष; (पराण १—पत्र ३६) । °सेल पुं [°शैल] पर्वत-विशेष, कभी नहीं भिजने वाला एक पर्वत; (उप ७२८ टी) ।
मुग्गड पुं [दे] मोगल, म्लेच्छ-जाति विशेष; (हे ४, ४०६)। देखो मोग्गड ।
मुग्गर न [मुद्गर] १ पुष्प-विशेष; (वज्जा १०६) । २ देखो मोग्गर; (प्राप्र; प्रासू ३६; कप्प) ।
मुग्गरय न [दे. मुग्धरत] मुग्धा के साथ रमण; (वज्जा १०६) ।
मुग्गल देखो मुग्गड; (ती १५) ।
मुग्गस पुं [दे] नकुल, न्यौला; (दे ६, ११८) ।
मुग्गाह सक [प्र + ग्रह] फैलाना । मुग्गाहइ); (भात्वा १४८) ।
मुग्गिल्ल } पुं [दे] पर्वत-विशेष; (ती ७; आवम १६१) ।
मुग्गिल्लग }
मुग्गुस देखो मुग्गस; (दे ६, ११८) ।
मुग्घड देखो मुग्गड; (हे ४, ४०६) ।
मुघुमुघ देखो मुमुक्ख; (दे ६, १३६) ।
मुचकुंद } देखो मुउउंद; (सुर २, ७६; कुमा) ।
मुचुकुंद }
मुच्छ सक [मूर्च्छ्] १ मूर्छित होना । २ आसक्त होना । ३ बढ़ना । मुच्छइ, मुच्छए; (कप्प; सूअ १, १, ४, ३) । वकृ—मुच्छंत, मुच्छमाण; (गा ५४६; भाता) ।
मुच्छणा स्त्री [मूर्च्छना] गान का एक अंग; (ठा ७— पत्र ३६५) ।
मुच्छा स्त्री [मूर्च्छा] १ मोह; (ठा २, ४; प्रासू १७६) । २ अचेतनावस्था, बेहोशी; (उव; पडि) । ३ गृद्धि, आसक्ति; (सम ७१) । ४ मूर्छना, गीत का एक अंग; (ठा ७— पत्र ३९३) ।
मुच्छाविअ वि [मूर्च्छित] मूर्छा-युक्त किया हुआ; (से १२, ३८) ।
मुच्छिअ वि [मूर्च्छित] १ मूर्च्छा-युक्त; (प्रासू ५७; उवा) । २ पुं. नरकावास-विशेष; (देवेन्द्र २७) ।
मुच्छिज्जंत वि [मूर्च्छायमान] मूर्च्छा को प्राप्त होता; (से १३, ४३) ।
मुच्छिम पुं [मूर्च्छिम] मत्स्य-विशेष;
"वायाए काएणं मणरहिआणं न दारुणं कम्मं ।
जोअणसहस्समाणो मुच्छिममच्छो उआहरणं " (मन ३)।
मुच्छिर वि [मूर्च्छित] १ बढ़ने वाला; २ बेहोशी वाला; (कुमा) ।
मुज्झ अक [मुह्] १ मोह करना । २ घबड़ाना । मुज्झइ; (आचा; उव; महा) । भवि—मुज्झिहिति; (औप) । कृ—मुज्झियव्व; (पराह २, ५—पत्र १४६; उव) ।
मुट्टिम पुंस्त्री [दे] गर्व, अहंकार, गुजराती में 'मोटाई'; "कय-मुट्टिमंगीकारो" (हम्मीर ३५) । देखो मोट्टिम ।
मुट्ठ वि [मुष्ट, मुषित] जिसकी चोरी हुई हो वह; (पिंड ४६६; सुर २, ११२; सुपा ३६१; महा) ।
मुट्ठि पुंस्त्री [मुष्टि] मुट्ठी, मूठी, मुक्का; "मुट्ठिणा", "मुट्ठीए" (पि ३७५; ३८५; पाअ; रंभा; भवि) । °जुज्झ न [°युद्ध] मुष्टि से की जाती लड़ाई, मुक्कामुक्की; (औपा) । °पुत्थय न [°पुस्तक] १ चार अंगुल लम्बा वृत्ताकार पुस्तक; २ चार अंगुल लम्बा चतुष्कोण पुस्तक; (पव ८०) ।
मुट्ठिअ पुं [मौष्टिक] १ अनार्य देश-विशेष; २ एक अनार्य मनुष्य-जाति; (पराह १, १—पत्र १४) । ३ मुट्ठी से

लड़ने वाला मल्ल; (पगह २, ५—पत्र १४६)। ४ वि. मुष्टि-संबन्धी; (कप्प)।

मुट्ठिअ पुं [**मुष्टिक**] १ मल्ल-विशेष, जिसको बलदेव ने मारा था; (पगह १, ४—पत्र ७२; पिंग)। २ अनार्य देश-विशेष; ३ एक अनार्य मनुष्य-जाति; (इक)।

मुड्ड देखो **मुंड**; (कुमा)।

मुड्ढ वि [**मुग्ध, मूढ**] मूर्ख, बेवकूफ; (हम्मीर ५१)।

मुण सक [**ज्ञा, मुण्**] जानना। मुणइ, मुणंति, मुणिमो; (हे ४, ७; कुमा)। कर्म—मुणिज्जइ; (हे ४, २५२), मुणिज्जामि; (हास्य १३८)। वकृ—**मुणंत, मुणिंत**; (महा; पउम ४८, ६)। कवकृ—**मुणिज्जमाण**; (से २, ३६)। संकृ—**मुणिय, मुणिउं, मुणिऊण, मुणेऊणं**; (औप; महा)। कृ—**मुणिअव्व, मुणेअव्व**; (कुमा; से ४, २४; नव ४२; कप्प; उव; जी ३२)।

मुणण न [**ज्ञान, मुणन**] ज्ञान, जानकारी; (कुप्र १८४; संबोध २५; धर्मवि १२५; सण)।

मुणमुण सक [**मुणमुणाय्**] अव्यक्त शब्द करना, बड़बड़ाना। वकृ—**मुणमुणंत, मुणमुणिंत**; (महा)।

मुणाल पुंन [**मृणाल**] १ पद्मकन्द के ऊपर की वेल—लता; (आचा २, १, ८, ११)। २ बिस, पद्मनाल; ३ पद्म आदि के नाल का तन्तु—सूत; (पाअ; णाया १, १३; औप)। ४ वीरण का मूल; ५ पद्म, कमल; "मुणालो", "मुणालं" (प्राप्र; हे १, १३१)।

मुणालि पुं [**मृणालिन्**] १ पद्म-समूह; २ पद्म-युक्त प्रदेश, कमल वाला स्थान; "मुणाली बाणाली" (सुपा ४१३)।

मुणालिआ, **मुणाली** स्त्री [**मृणालिका, °ली**] १ बिस-तन्तु, कमल-नाल का सूता; (नाट—रत्ना २६)। २ बिस का अंकुर; (गउड)। ३ कमलिनी; (राज)। देखो **मणालिया**।

मुणि पुं [**मुनि**] १ राग-द्वेष-रहित मनुष्य, संत, साधु, ऋषि, यती; (आचा; पाअ; कुमा; गउड)। २ अगस्त्य ऋषि; "जलहिजलं व मुणिणा" (सुपा ४८६)। ३ सात की संख्या; ४ छन्द-विशेष; (पिंग)। **°चंद** पुं [**°चन्द्र**] १ एक प्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार, जो वादी देवसूरि के गुरू थे; (धम्मो २५)। २ एक राज-पुत्र; (महा)। **°नाह** पुं [**°नाथ**] साधुओं का नायक; (सुपा १६०; २५०)। **°पुंगव** पुं [**°पुङ्गव**] श्रेष्ठ मुनि; (सुपा ६७; श्रु ४१)। **°राय** पुं [**°राज**] मुनि-नायक; (सुपा १६०)। **°वइ** पुं [**°पति**] वही अर्थ; (सुपा १८१; २०६)। **°वर** पुं [**°वर**] श्रेष्ठ मुनि; (सुर ४, ५६; सुपा २४४)। **°वेजयंत** पुं [**°वैजयन्त**] मुनि-प्रधान, श्रेष्ठ मुनि; (सूअ १, ६, २०)। **°सीह** पुं [**°सिंह**] श्रेष्ठ मुनि; (पि ४३६)। **°सुव्वय** पुं [**°सुव्रत**] १ वर्तमान काल में उत्पन्न भारत-वर्ष के बीसवें तीर्थंकर; (सम ४३)। २ भारतवर्ष के एक भावी तीर्थंकर; (सम १५३)।

मुणि पुं [**दे. मुनि**] वृक्ष-विशेष, अगस्ति-द्रुम; (दे ६, १३३; कुमा)।

मुणिअ वि [**ज्ञात, मुणित**] जाना हुआ; (हे १, १६६; पाअ; कुमा; भवि १६; पगह १, २; उप १४३ टी)।

मुणिंद पुं [**मुनीन्द्र**] श्रेष्ठ मुनि; (हे १, ८४; भग)।

मुणिर वि [**ज्ञातृ, मुणितृ**] जानने वाला; (सण)।

मुणीस पुं [**मुनीश**] मुनि-नायक; (उप १४१ टी; भवि)।

मुणीसर पुं [**मुनीश्वर**] ऊपर देखो; (सुपा ३६६)।

मुणीसिम (अप) पुंन [**मनुष्यत्व**] १ मनुष्यपन; २ पुरुषार्थ; (हे ४, ३३०)।

मुत्त सक [**मूत्रय्**] मूतना, पेशाब करना। मुत्तंति; (कुप्र ६२)।

मुत्त न [**मूत्र**] प्रस्रवण, पेशाब; (सुपा ६१६)।

मुत्त देखो **मुक्क**=मुक्त; (सम १; से २, ३०; जी २)। **°ालय** पुंस्त्री [**°ालय**] मुक्त जीवों का स्थान, ईषत्प्राग्भारा-नामक पृथिवी; (इक)। स्त्री—**°या**; (ठा ८—पत्र ४४०; सम २२)।

मुत्त वि [**मूर्त**] १ मूर्ति वाला, रूप वाला, आकार वाला; (चैत्य ६१)। २ कठिन; ३ मूढ़; ४ मूर्च्छा-युक्त; (हे २, ३०)। ५ पुं. उपवास, एक दिन का उपवास; (संबोध ५८)। ६ एक प्राण का नाम; (कप्प)।

मुत्त° देखो **मुत्ता**; (औप; पि ६७; चैत्य १४)।

मुत्तव्व देखो **मुंच**।

मुत्ता स्त्री [**मुक्ता**] मोती, मौक्तिक; (कुमा)। **°जाल** न [**°जाल**] मुक्ता-समूह, मोतिओं की माला; (औप; पि ६७)। **°दाम** न [**°दामन्**] मोतिओं की माला; (ठा ४, २)। **°वलि, °वली** स्त्री [**°वलि, °ली**] १ मोती की माला, मोती का हार; (सम ४४; पाअ)। २ तप-विशेष; (अंत ३१)। ३ द्वीप-विशेष; ४ समुद्र-विशेष; (राज)। **°सुत्ति** स्त्री [**°शुक्ति**] १ मोती की छीप; २ मुद्रा-विशेष; (चेइय २४०; पंचा ३, २१)। **°हल** न [**°फल**]

मोती; (हे १, २३६; कुमा; प्रासू २) । °**इल्लिल** वि [°फलवत्] मोती वाला; (कप्पू) ।

मुत्ति स्त्री [**मूर्त्ति**] १ रूप, आकार; "मुत्तिविमुत्तेसु" (पिंड ५६; विसे ३१८२) । २ प्रतिबिम्ब, प्रतिमूर्ति, प्रतिमा; "चउ मुहमुत्तिचउक्कं" (संबोध २) । ३ शरीर, देह; (सुर १, ३; पाअ) । ४ काठिन्य, कठिनत्व; (हे २, ३०; प्राप्र)। °**मंत** वि [°मत्] मूर्ति वाला, मूर्त, रूपी; (धर्मवि ६; सुपा ३८६; श्रु ६७) ।

मुत्ति स्त्री [**मुक्ति**] १ मोक्ष, निर्वाण; (आचा; पाअ; प्रासू १५५) । २ निर्लोभता, संतोष; (आ ३१) । ३ मुक्त जीवों का स्थान, ईषत्प्राग्भारा पृथिवी; (ठा ८—पत्र ४४०) । ४ निस्संगता; (आचा) ।

मुत्ति वि [**मूत्रिन्**] बहु-मूत्र रोग वाला; "उयरिं च पास मुत्तिं च सूणियं च गिलासिणिं" (आचा) ।

मुत्ति वि [**मौक्तिन्, मौक्तिक**] मोती परोने वाला; (उप पृ ३१०) ।

मुत्तिअ न [**मौक्तिक**] मुक्ता, मोती; (से ५, ४६; कुप्र ३; कुमा; सुपा २४; १४६; प्रासू ३६; १७१) । देखो **मोत्तिअ** ।

मुत्तोली स्त्री [**दे**] १ मूत्राशय; (तंदु ४१) । २ वह छोटा कोठा जो ऊपर नीचे संकीर्ण और मध्य में विशाल हो; (राज) ।

मुत्थ लि [**मुस्त**] मोथा, नागरमोथा; (गउड) । स्त्री—°**त्था**; (संबोध ४४; कुमा) ।

मुदग्ग देखो **मुअग्ग**; (ठा ७—पत्र ३८२) ।

मुदा स्त्री [**मुद्**] हर्ष, खुशी । °**गर** वि [°**कर**] हर्ष-जनक; (सूअ १, ६, ६) ।

मुदुग पुं [**दे**] ग्राह-विशेष, जल-जन्तु की एक जाति; (जीव १ टी—पत्र ३६) ।

मुद्द सक [**मुद्रय्**] १ मोहर लगाना । २ बंद करना । ३ अंकन करना । मुद्देइ; (धम्म ११ टी) ।

मुद्दंग पुं [**दे**] १ उत्सव; २ सम्मान (?); (स ४६३; ४६४) ।

मुद्दग } पुं [**मुद्रिका**] अँगूठी; (उवा), "लद्धो भद्द !
मुद्दय } तुमे किं अह अंगुलिमुद्दओ एसो" (पउम ५३, २४) ।

मुद्दा स्त्री [**मुद्रा**] १ मोहर, छाप; (सुपा ३२१; वज्जा १५६) । २ अँगूठी; (उवा) । ३ अंग-विन्यास-विशेष; (चैत्य १४) ।

मुद्दिअ वि [**मुद्रित**] १ जिस पर मोहर लगाई गई हो वह; २ बंद किया हुआ; (णाया १, २—पत्र ८६; ठा ३, १—पत्र १२३; कप्पू; सुपा १४४; कुप्र ३१) ।

मुद्दिअ° } स्त्री [**मुद्रिका**] अँगूठी; (पण्ह १, ४; कप्प;
मुद्दिआ } औप; तंदु २६) । °**बंध** पुं [°**बन्ध**] ग्रन्थि-बन्ध, बन्ध-विशेष; (ओघ ४०१; ४०५) ।

मुद्दिआ स्त्री [**मृद्वीका**] १ द्राक्षा की लता; (पण्ण १—पत्र ३३) । २ द्राक्षा; (ठा ४, ३—पत्र २३६; उत्त ३४, १५; पव १५५) ।

मुद्दी स्त्री [**दे**] चुम्बन; (दे ६, १३३) ।

मुद्दुय देखो **मुदुग**; (पण्ण १—पत्र ४८) ।

मुद्ध देखो **मुंढ**; (औप; कप्प; ओघभा १६; कुमा) । °**न्न** वि [°**न्य**] १ मस्तक में उत्पन्न; २ मस्तक-स्थ, अग्रेसर; ३ मूर्धस्थानीय रकार आदि वर्ण; (कुमा) । °**य** पुं [°**ज**] केश, बाल; (पण्ह १, ३—पत्र ५४) । °**सूल** न [°**शूल**] मस्तक-पीड़ा, रोग-विशेष; (णाया १, १३) ।

मुद्ध वि [**मुग्ध**] १ मूढ़, मोह-युक्त; २ सुन्दर, मनोहर, मोह-जनक; (हे २, ७७; प्राप्र; कुमा; विपा १, ७—पत्र ७७) ।

मुद्धा स्त्री [**मुग्धा**] मुग्ध स्त्री, नायिका का एक भेद; (कुमा) ।

मुद्धा (अप) देखो **मुद्दा**; (कुमा) ।

मुद्धाण देखो **मुंढ**; (उवा; कप्प; पि ४०२) ।

मुब्भ पुं [**दे**] घर के ऊपर का तिर्यक् काष्ठ, गुजराती में 'मोभ'; (दे ६, १३३) । देखो **मोब्भ** ।

मुमुक्खु वि [**मुमुक्षु**] मुक्त होने की चाह वाला; (सम्मत्त १४०) ।

मुम्मुइ } वि [**मूकमूक**] १ अत्यन्त मूक; २ अव्यक्त-
मुम्मुय } भाषी; (सूअ १, १२, ५; राज) ।

मुम्मुर सक [**चूर्णय्**] चूरना, चूर्ण करना । मुम्मुरइ; (प्राकृ ७५) ।

मुम्मुर पुं [**दे**] करीष, गोइंठा; (दे ६, १४७) ।

मुम्मुर पुं [**दे. मुर्मुर**] १ करीषाग्नि, गोइंठा की आग; (दे ६, १४७; जी ६) । २ तुषाग्नि; (सुर ३, १८७) । ३ भस्म-च्छन्न अग्नि, भस्म-मिश्रित अग्नि-कण; (उप ६४८ टी; जी ६; जीव १) ।

मुम्मुही स्त्री [मुन्मुखी] मनुष्य की दश दशाओं में नववीं दशा—८० से ९० वर्ष तक की अवस्था; (ठा १०—पत्र ५१९; तंदु १६)।

मुर अक [लड्] १ विलास करना। २ सक. उत्पीडन करना। ३ जीभ चलाना। ४ उपक्षेप करना। ५ व्याप्त करना। ६ बोलना। ७ फेंकना। मुरइ; (प्राकृ ७३)।

मुर अक [स्फुट्] खीलना। मुरइ; (हे ४, ११४; षड्)।

मुर पुं [मुर] दैत्य-विशेष। °रिउ पुं [°रिपु] श्रीकृष्ण; (ती ३)। °वेरिय पुं [°वैरिन्] वही अर्थ; (कुमा)। °ारि पुं [°ारि] वही अर्थ; (वज्जा १५४)।

मुरई स्त्री [दे] असती, कुलटा; (दे ६, १३५)।

मुरज } पुं [मुरज] मृदङ्ग, वाद्य-विशेष; (कप्प; पाम; **मुरय** } गा २५३; सुपा ३९३; अंत; धर्मवि ११२; कुप्र १८८; औप; उप पृ २३६)। देखो **मुरव**।

मुरल पुं.ब. [मुरल] एक भारतीय दक्षिण देश, केरल देश; "दिअर वो दिहा तुए मुरला" (गा ८७६)।

मुरव देखो **मुरय**; (औप; उप पृ २३६)। २ अंग-विशेष, गले-घण्टिका; (औप)।

मुरवि स्त्री [दे. मुरजिन्] आभरण-विशेष; (औप)।

मुरिअ वि [स्फुटित] खीला हुआ; (कुमा)।

मुरिअ वि [दे] १ त्रुटित, टूटा हुआ; (दे ६, १३५)। २ मुड़ा हुआ; वक्र बना हुआ; (सुपा ५४७)।

मुरिअ पुं [मौर्य] १ एक प्रसिद्ध क्षत्रिय-वंश; (उप २११ टी)। २ मौर्य वंश में उत्पन्न; "रायगिहे मु(? मु)रिय-बलभद्दे" (विसे २३५७)।

मुरुंड पुं [मुरुण्ड] १ अनार्य देश-विशेष; (इक; पव २७४)। २ पादलिप्तसूरि के समय का एक राजा; (पिंड ४९४; ४९८)। ३ पुंस्त्री. मुरुण्ड देश का निवासी मनुष्य; (पण्ह १, १—पत्र १४); स्त्री—°डी; (इक)।

मुरुक्कि स्त्री [दे] पक्वान्न-विशेष; (सण)।

मुरुक्ख देखो **मुक्ख**=मूर्ख; (हे २, ११२; कुमा; सुपा ६११; प्राकृ ९७)।

मुरुमुंड पुं [दे] जूट, केशों की लट; (दे ६, ११७)।

मुरुमुरिअ न [दे] रणरणक, उत्सुकता; (दे ६, १३६; पाअ)।

मुलह देखो **मुरुक्ख**; (षड्)।

मुलासिअ पुं [दे] स्फुलिंग, अग्नि-कण; (दे ६, १३५)।

मुल्लो (अप) देखो **मुंच**। मुल्लइ; (प्राकृ ११९)।

मुल्ल } पुंन [मूल्य] कीमत; "को मुल्लो" (वज्जा **मुल्लिम** } १५२; औप; पाअ; कुमा; प्रयौ ७७)।

मुव (अप) देखो **मुअ**=मुच्। मुवइ; (भवि)।

मुव्वह देखो **उव्वह**=उद् + वह्। मुव्वहइ; (हे ४, १७४)।

मुस सक [मुष्] चोरी करना। मुसइ; (हे ४, २३९; सार्ध ६१)। भवि—मुसिस्सिइ; (धर्मवि ४)। कर्म—मुसिज्जामो; (पि ४५५)। वकृ—**मुसंत**; (महा)। कवकृ—**मुसिज्जंत, मुसिज्जमाण**; (सुपा ४५०; कुप्र २४७)। संकृ—**मुसिऊण**; (स ६६३)।

मुसंढि देखो **मुसुंढि**; (सम १३७; पण्ह १, १—पत्र ८; उत्त ३६, १००; पण्ण १—पत्र ३५)।

मुसण न [मोषण] चोरी; (सार्ध ६०; धर्मवि ५६)।

मुसल पुंन [मुसल] १ मूषल, एक प्रकार की मोटी लकड़ी जिससे चावल आदि अन्न कूटे जाते हैं; (औप; उवा; षड्; हे १, ११३)। २ मान-विशेष; (सम ९८)। °धर पुं [°धर] बलदेव; (कुमा)। °उह पुं [°ायुध] बलदेव; (पाअ)।

मुसल वि [दे] मांसल, पुष्ट; (षड्)।

मुसलि पुं [मुसलिन्] बलदेव; (दे १, ११८; सण)।

मुसली देखो **मोसली**; (ओघभा १६१)।

मुसह न [दे] मन की आकुलता; (दे ६, १३४)।

मुसा अ. स्त्री [मृषा] मिथ्या, अनृत, झूठ, असत्य भाषण; (उवा; षड्; हे १, १३६; कस), "अयाणीना मुसं वए" (सूअ १, १, ३, ८; उव)। °वाद देखो °वाय; (सूअ १, ३, ४, ८)। °वादि वि [°वादिन्] झूठ बोलने वाला; (पण्ह १, २; आचा २, ४, १, ८)। °वाय पुं [°वाद] झूठ बोलना, असत्य भाषण; (सम १०; भग; कस)।

मुसाविअ वि [मोषित] चुरवाया हुआ, चोरी कराया हुआ; (ओघ २१० टी)।

मुसिय वि [मुषित] चुराया हुआ; (सुपा २२०)।

मुसुंढि पुंस्त्री [दे] १ प्रहरण-विशेष, शस्त्र-विशेष; (औप)। २ वनस्पति-विशेष; (उत्त ३६, १००; सुख ३६, १००)।

मुसुमूर सक [भञ्ज्] भाँगना, तोड़ना। मुसुमूरइ; (हे ४, १०६)। हेकृ—"तेसिं च कसमवि मुसमु[? सुमू]रिउ-मसमत्थो" (सम्मत्त १२३)।

मुसुमूरण न [भञ्जन] तोड़ना, खण्डन; (सम्मत्त १८७)।

मुसुमूराविअ वि [भञ्जित] भँगाया हुआ; (सम्मत्त १०)।

मुहमुरिअ वि [मग्न] भाँगा हुआ; (पाअ; कुमा; सण)।
मुहु देखो **मुहुत्त** । "इय मा मुहुसु मवेयं" (जीवा १०)।
°ंक—मुहिअ; (पिंग)। **कवक—मुहिज्जंत**; (से ११, १००)।
मुह न [**मुख**] १ मुँह, वदन; (पाअ; हे ३, १३४; कुमा; प्रासू १६)। २ अग्र भाग; (सुज्ज ४)। ३ उपाय; (उत्त २५, १६; सुख २५, १६)। ४ द्वार, दरवाजा; ५ आरम्भ; ६ नाटक आदि का सन्धि-विशेष; ७ नाटक आदि का शब्द-विशेष; ८ आद्य, प्रथम; ९ प्रधान, मुख्य; १० शब्द, आवाज; ११ नाटक; १२ वेद-शास्त्र; (प्राप्र; हे १, १८७)। १३ प्रवेश; (निचू ११)। १४ पुं. वृक्ष-विशेष, बडहल का गाछ; (सुज्ज १०, ८)। **°णंतग, °णंतय** न [**°ानन्तक**] मुख-वस्त्रिका; (ओघभा १५८; पव २)। **°तूरय** न [**°तूर्य**] मुँह से बजाया जाता वाद्य; (भग)। **°धोवणिया** स्त्री [**°धावनिका**] मुँह धोने की सामग्री, दतवन आदि; "मुहधोवणियं खिप्पं उवणमेहि" (उप ६४८ टी)। **°पत्ती** स्त्री [**°पत्री**] मुख-वस्त्रिका; (उवा; ओघ ६६६; द ५८)। **°पुत्तिया, °पोत्तिया, °पोत्ती** स्त्री [**°पोतिका**] मुख-वस्त्रिका, बोलते समय मुँह के आगे रखने का वस्त्र-खण्ड; (संबोध ५; विपा १, १; पव १२७)। **°फुल्ल** न [**°फुल्ल**] १ बडहल का फूल; २ चित्रा-नक्षत्र का संस्थान; (सुज्ज १०, ८)। **°भंडग** न [**°भाण्डक**] मुखाभरण; (ओप)। **°मंगलिय, °मंगलीअ** वि [**°माङ्गलिक**] मुँह से पर-प्रशंसा करने वाला, खुशामदी; (कप्प; ओप; सूम १, ७, २५)। **°मक्कडा, °मक्कडिया** स्त्री [**°मर्कटा, °टिका**] गला पकड़ कर मुँह को मोड़ना, मुख-वक्रीकरण; (सुर १२, ६७; गाया १, ८—पत्र १४४)। **°वंत** वि [**°वत्**] मुँह वाला; (भवि)। **°वड** पुं [**°पट**] मुँह के आगे रखने का वस्त्र; (से २, २२; १३, ५६)। **°वडण** न [**°पतन**] मुँह से गिरना; (दे ६, १३६)। **°वण्ण** पुं [**°वर्ण**] प्रशंसा, खुशामद; (निचू ११)। **°वास** पुं [**°वास**] भोजन के अनन्तर खाया जाता पान, चूर्ण आदि मुँह को सुगन्धी बनाने वाला पदार्थ; (उवा ४२; उर ८, ५)। **°वीणिया** स्त्री [**°वीणिका**] मुँह से विकृत शब्द करना, मुँह से वाद्य का शब्द करना; (निचू ५)।
मुहड देखो **मुहल**। **°ासय** न [**°ाशय**] एक नगर; (ती १५)।
मुहप्पडी स्त्री [**दे**] मुँह से गिरना; (दे ६, १३६)।

मुहर देखो **मुहल=मुखर**; (सुपा २२८)।
मुहरिय वि [**मुखरित**] वाचाल बना हुआ, आवाज करता; (सुर ३, ५४)।
मुहरोमराइ स्त्री [**दे**] भ्रू, भौं; (दे ६, १३६; षड्; १५३)।
मुहल न [**दे**] मुख, मुँह; (दे ६, १३४; षड्)।
मुहल वि [**मुखर**] १ वाचाट, बकवादी; (गा ५७८; सुर ३, १८; सुपा ४)। २ पुं. काक, कौआ; ३ शंख; (हे १, २५४; प्राप्र)। **°रव** पुं [**°रव**] तुमुल, कोलाहल; (पाअ)।
मुहा अ. स्त्री [**मुधा**] व्यर्थ, निरर्थक; (पाअ; सुर ३, १; धर्मसं ११३२; श्रा २८; प्रासू ६), "मुहाइ हारिंति अप्पाणं" (संबोध ४६)। **°जीवि** वि [**°जीविन्**] भिक्षा पर निर्वाह करने वाला; (उत्त २५, २८)।
मुहिअ न [**दे**] मुफत, बिना मूल्य, मुफ्त में करना; (दे ६, १३४)।
मुहिआ स्त्री [**दे. मुधिका**] ऊपर देखो; (दे ६, १३४; कुमा; पाअ), "ते सव्वेवि हु कुमरस्स तस्स मुहिआइ सेवगा जाया" (सिरि ४५७), "जिणसासणंपि कहमवि लद्धं हारेसि मुहियाए" (सुपा १२४), "मुह(? हि)आइ गिण्हइ लक्खं" (कुप्र २३७)।
मुहु, मुहुं अ [**मुहुस्**] बार बार; (प्रासू २६; हे ४, ४४४; पि १८१)।
मुहुत्त, मुहुत्तग पुंन [**मुहूर्त**] दो घड़ी का काल, अठतालीस मिनिट का समय; (ठा २, ४; हे २, ३०; ओप; भग; कप्प; प्रासू १०५; इक; स्वप्न ६४; आचा; ओघ ५२१)।
मुहुमुह देखो **महुमुह**; (पाअ)।
मुहुल देखो **मुहल=मुखर**; (पाअ)।
मुहुल्ल देखो **मुह=मुख**; (हे २, १६४; षड्; भवि)।
मूअ देखो **मुक्क=मूक**; (हे २, ६६; आचा; गउड; विपा १, १)।
मूअ देखो **मुअ=मृत**; "लज्जाइ कह य मूओ सेवंतो गामवाहलियं" (वज्जा ५४)।
मूअल, मूअल्ल वि [**दे. मूक**] मूक, वाक्-शक्ति से हीन; (दे ६, १३७; सुर ११, १५४)।
मूअल्लइअ, मूअल्लिअ वि [**दे. मूकायित**] मूक बना हुआ; (से ५, ४१; गउड; पि ५९५)।

मूइंगलिया } देखो **मुइंगलिया**; (उप १३४ टी; ओघ
मूइंगा } ५५८)।

मूइल्लअ वि [**मृत**] मरा हुआ;
"एगिहं वारेइ जणो तइआ मूइल्लओ, कहिं व गओ।
जाहे विसं व जाअं सव्वंगपहोलिरं पेम्मं" (गा ६६६ अ)।

मूड } पुं [**दे**] अन्न का एक दीर्घ परिमाण; "इगमूडलक्ख-
मूढ } समहियमवि धन्नं अत्थि तायगिहे" (सुपा ४२७), "तो तेहिं ताडिओ सो गाढं कणमूडउव्व लउडेहिं" (धर्मवि १४०)।

मूढ वि [**मूढ**] मूर्ख, मुग्ध; (प्राप्र; कस; पउम १, २८; महा; प्रासू २६)। °**नइय** न [°**नयिक**] श्रुत-विशेष; शास्त्र-विशेष; (आवम)। °**विसूइया** स्त्री [°**विसूचिका**] रोग-विशेष; (सुपा १३)।

मूण न [**मौन**] चुप्पी; (स ४७७; पगह २, ४—पत्र १३१)।

मूयग पुं [**दे. मूयक**] मेवाड़ देश में प्रसिद्ध एक प्रकार का तृण; (पगह २, ३—पत्र १२३)।

मूर सक [**भञ्ज्**] भाँगना, तोड़ना। रइ; (हे ४, १०६)। भूका—मूरीअ; (कुमा)।

मूरग वि [**भञ्जक**] भाँगने वाला, चूरने वाला; (पगह १, ४—पत्र ७२)।

मूल न [**मूल**] १ जड़; (ठा ६; गउड; कुमा; गा २३२)। २ निबन्धन, कारण; (पगह १, ३—पत्र ४२)। ३ आदि, आरम्भ; (पगह २, ४)। ४ आद्य कारण; (आचानि १, २, १—गाथा १७३; १७४)। ५ समीप, पास, निकट; (ओघ ३८४; सुर १०, ६)। ६ नक्षत्र-विशेष; (सुर १०, २२३)। ७ व्रतों का पुनः स्थापन; (औप; पंचा १६, २१)। ८ पिप्पली-मूल; (आचानि १, २, १)। ६ वशीकरण आदि के लिए किया जाता ओषधि-प्रयोग; "अमंत-मूलं वसीकरणं" (प्रासू १४)। १० आद्य, प्रथम, पहला; ११ मुख्य; (संबोध ३; आवम; सुपा ३६४)। १२ मूलधन, पुंजी; (उत्त ७, १४; १५)। १३ चरण, पैर; १४ सूरण, कन्द-विशेष; १५ टीका आदि से व्याख्येय ग्रन्थ; (संक्षि २१)। १६ प्रायश्चित्त-विशेष; (विसे १२४६)। १७ पुंन. कन्द-विशेष, मूली; (अनु ६; श्रा २०)। °**छेज्ज** वि [°**छेद्य**] मूल-नामक प्रायश्चित से नाश-योग्य; (विसे १२४६)। °**दत्ता** स्त्री [°**दत्ता**] कृष्ण-पुत्र शाम्ब की एक पत्नी; (अंत १५)। °**देव** पुं [°**देव**] व्यक्ति-वाचक नाम; (महा; सुपा ५२६)। °**देवी** स्त्री [°**देवी**] लिपि-विशेष; (विसे ४६४ टी)। °**नायग** पुं [°**नायक**] मन्दिर की अनेक प्रतिमाओं में मुख्य प्रतिमा; (संबोध ३)। °**प्पाडि** त्रि [°**उत्पाटिन्**] मूल को उखाड़ने वाला; (संक्षि २१)। °**बिंब** न [°**बिम्ब**] मुख्य प्रतिमा; (संबोध ३)। °**राय** पुं [°**राज**] गुजरात का चौलुक्य-वंशीय एक प्रसिद्ध राजा; (कुप्र ४)। °**वंत** वि [°**वत्**] मूल वाला; (औप; णाया १, १)। °**सिरि** स्त्री [°**श्री**] शाम्बकुमार की एक पत्नी; (अंत १५)।

मूलग } न [**मूलक**] १ कन्द-विशेष, मूली, मुरई; (पगण
मूलय } १; जी १३)। २ शाक-विशेष; (पव १५४; कुमा)।

मूलिगा स्त्री [**मूलिका**] ओषधि-विशेष; (उप ६०३)।

मूलिय न [**मौलिक**] मूलधन, पुंजी; (उत्त ७, १६; २१)।

मूलिल्ल वि [**मूल, मौलिक**] प्रधान, मुख्य; "मूलिल्ल-वाहणे" (सिरि ४२३)

मूलिल्ल वि [**मूलवत्**] मूलधन वाला, पुंजी वाला; "अत्थि य देवदत्ताए गाढाणुरत्तो मूलिल्लो मित्तसेणो अयलनामा सत्थ-वाहपुत्तो" (महा)।

मूली स्त्री [**मूली**] ओषधि-विशेष, वशीकरण आदि के कार्य में लगती ओषधि; (महा)।

मूस देखो **मुस=मुष्**। मूसइ; (संक्षि ३६)।

मूसग } पुं [**मूषक, मूषिक**] मूसा, चूहा; (उव; सुर १,
मूसय } १८; हे १, ८८; षड्; कुमा)।

मूसरि वि [**दे**] भग्न, भाँगा हुआ; (दे ६, १३७)।

मूसल वि [**दे**] उपचित; (दे ६, १३७)।

मूसल देखो **मुसल=मुसल**; (हे १, ११३; कुमा)।

मूसा देखो **मुसा**; (हे १, १३६)।

मूसा स्त्री [**मूषा**] मूस, धातु गालने का पात्र; (कप्प; आरा १००; सुर १३, १८०)।

मूसा स्त्री [**दे**] लघु द्वार, छोटा दरवाजा; (दे ६, १३७)।

मूसाअ न [**दे**] ऊपर देखो; (दे ६, १३७)।

मूसिय देखो **मूसय**; (आचा)। °**ारि** पुं [°**ारि**] मार्जार, बिल्ला; (आचा)।

मे अ [**मे**] १ मेरा; २ मुझसे; (स्वप्न १५; ठा १)।

मेअ पुं [**मेद**] १ अनार्य देश-विशेष; (इक)। २ एक अनार्य मनुष्य-जाति; (पगह १, १—पत्र १४)। ३ पुंस्त्री. चाण्डाल; (सम्मत्त १७२); स्त्री—**मेई**; (सम्मत्त १७२)।

मेअ वि [**मेय**] १ जानने योग्य, प्रमेय, पदार्थ, वस्तु; (उत्त १८, २३) । २ नापने योग्य; (षड्) । °**न्न** वि [°**ज्ञ**] पदार्थ-ज्ञाता; (उत्त १८, २३; सुख १८, २३) ।

मेअ पुंन [**मेदस्**] शरीर-स्थित धातु-विशेष, चर्बी; (तंदु ३८; गाया १, १२—पत्र १७३; गउड) ।

मेअज्ज न [**दे**] धान्य, अन्न; (दे ६, १३८) ।

मेअज्ज पुं [**मेदार्य**] मेदार्य गोत्र में उत्पन्न; (सूअ २, ७, ५) ।

मेअज्ज पुं [**मेतार्य**] १ भगवान् महावीर का दशवाँ गणधर; (सम १६) । २ एक जैन महर्षि; (उव; सुपा ४०६; विवे ४३) ।

मेअय वि [**मेचक**] काला, कृष्ण-वर्ण; (गउड ३३६) ।

मेअर वि [**दे**] अ-सहन, अ-सहिष्णु; (दे ६, १३८) ।

मेअल पुं [**मेकल**] पर्वत-विशेष । °**कन्ना** स्त्री [°**कन्या**] नर्मदा नदी; (पाअ) ।

मेअवाडय पुंन [**मेदपाटक**] एक भारतीय देश, मेवाड; "थाह दाहविअं सअलंपि मेअवाडयं हम्मीरवीरेहिं" (हम्मीर २७) ।

मेइणि° } स्त्री [**मेदिनी**] १ पृथिवी, धरती; (सुपा ३२;
मेइणी } कुमा; प्रासू ५२) । २ चाण्डालिन; (सुपा १६; सम्मत १७२) । °**नाह** पुं [°**नाथ**] राजा; (उप पृ १८६; सुपा १०८) । °**पइ** पुं [°**पति**] १ राजा; २ चाण्डाल; "जो विबुहपणयचरणोवि गत्तभेई न, मेइणिपईवि न हु मायंगो" (सुपा ३२) । °**सामि** पुं [°**स्वामिन्**] राजा; (उप ७२८ टी) ।

मेइणीसर पुं [**मेदिनीश्वर**] राजा; (उप ७२८ टी) ।

मेंठ पुं [**दे**] हस्तिपक, महावत; (दे ६, १३८) । देखो **मिंठ** ।

मेंठी स्त्री [**दे**] मेंढी, मेषी, गड़रिया; (दे ६, १३८) ।

मेंढ पुंस्त्री [**मेढ्र**] मेंढा, मेष, गाडर; (ठा ४, २) । स्त्री—°**ढी**; (दे ६, १३८) । °**मुह** पुं [°**मुख**] १ एक अन्तर्द्वीप; २ अन्तर्द्वीप-विशेष में रहने वाली मनुष्य-जाति; (ठा ४, २—पत्र २२६; इक) । °**विसाणा** स्त्री [°**विषाणा**] वनस्पति-विशेष, मेढासिंगी; (ठा ४, १—पत्र १८५)। देखो **मिंढ** ।

मेखला देखो **मेहला**; (राज) ।

मेघ देखो **मेह**; (कुमा; सुपा २०१) । °**मालिणी** स्त्री [°**मालिनी**] नन्दन वन के शिखर पर रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८—पत्र ४३७) । °**वई** स्त्री [°**वती**] एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८—पत्र ४३७) । °**वाहण** पुं [°**वाहन**] एक विद्याधर राज-कुमार; (पउम ५, ६५) ।

मेघंकरा स्त्री [**मेघङ्करा**] एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८—पत्र ४३७) ।

मेच्छ देखो **मिच्छ**=म्लेच्छ; (ओघ २४; औप; उप ७२८ टी; मुद्रा २६७) ।

मेज्ज देखो **मेअ**=मेय; (षड्; णाया १, ८—पत्र १३२; श्रा १८) ।

मेज्झ देखो **मिज्झ**; (महा ४, ११; ४०, २४) ।

मेट देखो **मिट** । प्रयो—मेटाव; (पिंग) ।

मेडंभ पुं [**दे**] मृग-तन्तु; (दे ६, १३६) ।

मेडय पुं [**दे**] मजला, तला, गुजराती में 'मेडो'; "तस्स य सयणट्ठाणं संचारिमकट्ठमेडयस्सुवरिं" (सुपा ३५१) ।

मेड्ढ देखो **मेंढ**; (उप पृ ११४) ।

मेढ पुं [**दे**] वणिक्-सहाय, वणिक् को मदद करने वाला; (दे ६, १३८) ।

मेढक पुं [**दे**] काष्ठ-विशेष, काष्ठ का छोटा डंडा; (पण्ह १, १—पत्र ८) ।

मेढि पुं [**मेथि**] पशुबन्धन-काष्ठ; खले के बीच का काष्ठ जहाँ पशु को बाँध कर धान्य-मर्दन किया जाता है; (हे १, २१५; गच्छ १, ८; णाया १, १—पत्र ११) । २ आधार, आधार-स्तम्भ; "सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी पमाणं आहारे आलंबणं चक्खू मेढीभूए" (उवा), "सुत्तत्थविऊ लक्खणजुत्तो गच्छस्स मेढिभूओ अ" (श्रा १; कुप्र २६६; संबोध २४) । °**भूअ** वि [°**भूत**] १ आधार-सदृश, आधार-भूत; (भग) । २ नाभि-भूत, मध्य में स्थित; (कुमा) ।

मेणआ } स्त्री [**मेनका**] १ हिमालय की पत्नी; २
णक्का } स्वर्ग की एक वेश्या; (अभि ४२; नाट—विक्र ४७; पिंग) ।

मेत्त न [**मात्र**] १ साकल्य, संपूर्णता; २ अवधारण; "भोअणमेत्तं" (हे १, ८१) ।

मेत्तल [**दे**] देखो **मित्तल**; (सुर १२, १५२) ।

मेत्ती स्त्री [**मैत्री**] मित्रता, दोस्ती; (से १, ६; गा २७२; स ७१६; उव) ।

मेधुणिया देखो **मेहुणिआ**; (निचू १) ।

मेर (अप) वि [**मदीय**] मेरा; (प्राकृ १२०; भवि) ।

मेरग पुं [**मेरक, मैरेयक**] १ तृतीय प्रतिवासुदेव राजा; (पउम ५, १५६)। २ मद्य-विशेष; (उवा; विपा १, २—पत्र २७)। ३ वनस्पति का त्वचा-रहित टुकड़ा; "उच्छु-मेरगं" (आचा २, १, ८, १०)।

मेरा स्त्री [**दे. मिरा**] मर्यादा; (दे ६, ११३; पाम; कुप्र ३३५; अच्चु ६७; सण; हे १, ८७; कुमा; औप)।

मेरा स्त्री [**मेरा**] १ तृण-विशेष, मुञ्ज की सलाई; (पण्ह १, ३—पत्र १२२)। २ दसवें चक्रवर्ती की माता; (सम १५२)।

मेरु पुं [**मेरु**] १ पर्वत-विशेष; (उव; प्रासू १५४)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)।

मेल सक [**मेलय्**] १ मिलाना। २ इकट्ठा करना। मेलइ, मेलंति; (भवि; पि ४८६)। संकृ—**मेलित्ता, मेलिय**; (पि ४८६; महा)।

मेल पुं [**मेल**] मेल, मिलाप, संगम, संयोग, मिलन; (सुपनि १५; दे ६, ५२; सार्ध १०६), "दिट्ठो पियमेलगो मए सु-विणो" (कुप्र २१०)।

मेलण न [**मेलन**] ऊपर देखो; (प्रासू ३५)।

मेलय पुं [**मेलक**] १ संबन्ध, संयोग; (कुमा)। २ मेला, जन-समूह का एकत्रित होना; (दे ७, ८६; सिरि ८६)।

मेलव सक [**मेलय्, मिश्रय्**] मिलाना, मिश्रण करना। मेल-वइ; (हे ४, २८)। भवि—मेलवेहिसि; (पि ५२२)। संकृ—**मेलवि** (अप); (हे ४, ४२९)।

मेलाइयव्व नीचे देखो।

मेलाय अक [**मिल्**] एकत्रित होना। "पडिनिक्खमित्ता एग-यओ मेलायंति" (भग)। संकृ—**मेलायित्ता**; (भग)। कृ—**मेलाइयव्व**; (ओघभा २२ टी)।

मेलाव देखो **मेलव**। मेलावइ; (भवि)।

मेलाव पुंन [**मेल**] १ मिलाप, संगम, मिलन; (सुपा ४६६), "निच्चं चिय मेलावं समग्गनिरयाण अइदुलहं" (सट्ठि १४३)।

मेलावग देखो **मेलय**; (आत्महि १६)।

मेलावड (अप) देखो **मेलय**; "मणवल्लहमेलावडउ पुन्निहिं लब्भइ एहु" (सिरि ७३)।

मेलावय देखो **मेलावग**; (सुपा ३६१; भवि)।

मेलाविअ वि [**मेलित**] मिलाया हुआ, इकट्ठा किया हुआ; (से १०, २८)।

मेलिअ वि [**मिलित**] मिला हुआ; (ठा ३, १ टी—पत्र ११९; महा; उव),

"एवं सुसीलवंतो असीलवंतेहिं मेलिओ संतो।
पावेइ गुणपरिहाणी मेलणदोसाणुसंगेणं" (प्रासू ३५)।

मेली स्त्री [**दे**] संहति, जन-समूह का एकत्रित होना, मेला; (दे ६, १३८)।

मेलीण देखो **मिलीण**; (पउम २, ६), "अण्णोण्णवलकलंक-तरपेसिअमेलीणदिट्ठिपसराइं" (गा ६६६; ७०२ अ)।

मेल्ल देखो **मिल्ल**। मेल्लइ; (हे ४, ९१), मेल्लेमि; (कुप्र १९)। वकृ—**मेल्लंत**; (महा)। संकृ—**मेल्लवि, मेल्लेप्पिणु** (अप); (हे ४, ३५३; पि ५८८)। कृ—**मेल्लियव्व**; (उप ५५५)।

मेल्लण न [**मोचन**] छोड़ना, परित्याग; (प्रासू १०२)।

मेल्लाविय वि [**मोचित**] छुड़वाया हुआ; (सुर ८, ६८; महा)।

मेव देखो **एव**; (पि ३३६)।

मेवाड, **मेवाढ** } देखो **मेअवाडय**; (ती १५; मोह ८८)।

मेस पुं [**मेष**] १ मेंढा, गाड़र; (सुर ३, ५३)। २ राशि-विशेष; (विचार १०६; सुर ३, ५३)।

मेह पुं [**मेघ**] १ अभ्र, जलधर; (औप)। २ कालागुरु, सुगंधी धूप-द्रव्य विशेष; (से ६, ४६)। ३ भगवान् सुमति-नाथ का पिता; (सम १५०)। ४ एक जैन महर्षि; (अंत १८)। ५ राजा श्रेणिक का एक पुत्र; (णाया १, १—पत्र ३७)। ६ एक देव-विमान; (देवेन्द्र १३२)। ७ छन्द-विशेष; (पिंग)। ८ एक वणिक्-पुत्र; (सुपा ६१७)। ९ एक जैन मुनि; (कप्प)। १० देव-विशेष; (राज)। ११ मुस्तक, ओषधि-विशेष, मोथा; १२ एक राक्षस; १३ राग-विशेष; (प्राप्र; हे १, १८७)। १४ एक विद्याधर-नगर; (इक)। °**कुमार** पुं [°**कुमार**] राजा श्रेणिक का एक पुत्र; (णाया १, १; उव)। °**क्खाण** पुं [°**ख्यान**] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५, २६६)। °**णाअ** पुं [°**नाद**] रावण का एक पुत्र; (से १३, ६८)। °**पुर** न [°**पुर**] वैताढ्य पर्वत के दक्षिण श्रेणी का एक नगर; (पउम ६, २)। °**मुह** पुं [°**मुख**] १ देव-विशेष; (राज)। २ एक अन्तर्द्वीप; ३ अन्तर्द्वीप-विशेष का निवासी मनुष्य; (ठा ४, २—पत्र २२६; इक)। °**रव** न [°**रव**] विन्ध्यस्थली का एक जैन तीर्थ; (पउम ७७, ६१)। °**वाहण** पुं [°**वाहन**] १ राक्षस-वंश का आदि पुरुष, जो लंका का राजा था;

(पउम ५, २६१)। २ रावण का एक पुत्र; (पउम ८, ६४)। °सीह पुं [°सिंह] विद्याधर-वंश का एक राजा; (पउम ५, ४३)। देखो मेघ।

मेह पुं [मेह] १ सेचन; (सूअ १, ४, २, १२)। २ रोग-विशेष, प्रमेह; (श्रा २०; सुख १, १५)।

मेहंकरा देखो मेघंकरा; (इक)।

मेहच्छीर न [दे] जल, पानी; (दे ६, १३६)।

मेहण न [मेहन] १ झरन, टपकना; २ प्रस्रवण, मूत्र; "महु-मेहणं" (आचा १, ६, १, २)। ३ पुरुष-लिंग; (राज)।

मेहणि वि [मेहनिन्] झरने वाला; (आचा)।

मेहर पुं [दे] ग्राम-प्रवर, गाँव का मुखिया; (दे ६, १२१; सुर १५, १६८)।

मेहरि पुंस्री [दे] काष्ठ-कीट, घुण; (जी १५)।

मेहरिया } स्री [दे] गाने वाली स्री; (सुपा ३६४)।
मेहरी }

मेहलय पुं. ब. [मेखलक] देश-विशेष; (पउम ६८, ६६)।

मेहला स्री [मेखला] काञ्ची, करधनी; (पाअ; पण्ह १, ४; औप; गा ४६३)।

मेहलिज्जिया स्री [मेखलिया] एक जैन मुनि-शाखा; (कप्प)।

मेहा स्री [मेघा] एक इन्द्राणी, चमरेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ५, १—पत्र ३०२; इक)।

मेहा स्री [मेधा] बुद्धि, मनीषा, प्रज्ञा; (सम १२५; से १, १६; हास्य १२५)। °अर वि [°कर] १ बुद्धि-वर्धक; २ पुं. छन्द-विशेष; (पिंग)।

मेहावई देखो मेघ-वई; (इक)।

मेहावण्ण न [मेघावर्ण] एक विद्याधर-नगर; (इक)।

मेहावि वि [मेधाविन्] बुद्धिमान्, प्राज्ञ; (ठा ५, ३; आचा १, १; आचा; कप्प; औप; उप १४२ टी; कुप्र १४०; धर्मवि ६८)। स्री—°णी; (नाट—शकु ११६)।

मेहि देखो मेढि; (से ६, ४२)।

मेहि वि [मेहिन्] प्रस्रवण करने वाला; "महुमेहिणं" (आचा)।

मेहिय न [मेघिक] एक जैन मुनि-कुल; (कप्प)।

मेहिल पुं [मेघिल] भगवान् पार्श्वनाथ के वंश का एक जैन मुनि; (भग)।

मेहुण } न [मैथुन] रति-क्रिया, संभोग; (सम १०;
मेहुणय } पण्ह १, ४; उवा; औप; प्रासू १७६; महा)।

मेहुणय पुं [दे] फूफा का लड़का; (दे ६, १४८)।

मेहुणिअ पुं [दे] मामा का लड़का; (बृह ४)।

मेहुणिआ स्री [दे] १ साली, भार्या की बहिन; (दे ६, १४८)। २ मामा की लड़की; (दे ६, १४८; बृह ४)।

मेहुन्न देखो मेहुण; "हिंसालियचोरिक्के मेहुन्नपरिग्गहे य निसिभत्ते" (ओघ ७८७)।

मो अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ अवधारण, निश्चय; (सुअनि ८६; श्रावक १२५)। २ पाद-पूर्ति; (पउम १०२, ८६; धर्मसं ६४५; श्रावक ६०)।

मोअ सक [मुच्] छोड़ना, त्यागना। मोअइ; (प्राकृ ७०; ११६)। वकृ—मोअंत; (से ८, ६१)।

मोअ सक [मोचय्] छुड़वाना, त्याग कराना। मोअअदि (शौ); (नाट—मालवि ४१)। कवकृ—मोइज्जंत; (गा ६७२)।

मोअ पुं [मोद] हर्ष, खुशी; (रयण १५; महा; भवि)।

मोअ वि [दे] १ अधिगत; २ पुं. चिर्भट आदि का बीज-कोश; (दे ६, १४८)। ३ मूत्र, पेशाब; (सूअ १, ४, २, १२; पिंड ४६८; कस; पभा १५)। °पडिमा स्री [°प्रतिमा] प्रस्रवण-विषयक नियम-विशेष; (ठा ४, १—पत्र ६४; औप; वव ६)।

मोअइ पुं [मोचकि] वृक्ष-विशेष; "सल्लइमोयइमालुयबउल-पलासे करंजे य" (पण्ण १—पत्र ३१)।

मोअग वि [मोचक] मुक्त करने वाला; (सम १; पडि; सुपा २३४)।

मोअग पुं [मोदक] लड्डू, मिष्टान्न-विशेष; (अंत ६; सुपा ४०६)। देखो मोदअ।

मोअण न [मोचन] नीचे देखो; (स ५७५; गउड)।

मोअणा स्री [मोचना] १ परित्याग; (श्रावक ११५)। २ मुक्ति, छुटकारा; (सूअ १, १४, १८)। ३ छुड़वाना, मुक्त कराना; (उप ५१०)।

मोअय देखो मोअग; (भग; पउम ११५, ६; सुपा ४०६; नाट—विक्र २१)।

मोआ स्री [मोचा] कदली वृक्ष, केला का गाछ; (राज)।

मोआव सक [मोचय्] छुड़वाना। मोआवेमि, मोआवेहि; (नाट—शकु ३५; मृच्छ ३१६)। भवि—मोआवइस्सदि;

(पि ५३८)। कर्म—मोयाविज्जइ; (कुप्र २६१)। वकृ—**मोयावंत**; (सुपा १८६)।
मोआवण न [**मोचन**] छुटकारा कराना; (सिरि ६१८; स ४७)।
मोआविअ } वि [**मोचित**] छुड़वाया हुआ; (पि ५५२; **मोइअ** } नाट—मृच्छ ८६; सुर १०, ६; सुपा ४७७; महा; सुर २, ३६; ६, ७८; सुपा २३२; भवि)।
मोइल पुं [**दे**] मत्स्य-विशेष; (नाट)।
मोंड देखो **मुंड**=मुण्ड; (हे १,११६; २०२)।
मोकल्ल सक [**दे**] भेजना; गुजराती में 'मोकलवुं', मराठी में 'मोकलणें'। मोकल्लइ; (भवि)।
मोक देखो **मुक**=मुक्त; (षड्)।
मोक्कणिआ } स्त्री [**दे**] कृष्ण कर्णिका, कमल का काला **मोक्कणी** } मध्य भाग; (दे ६, १४०)।
मोकल देखो **मोकल्ल**; । "नियपियरं भणसु तुमं मोक्कलइ जेण सिग्घंपि" (सुपा ६१२)।
मोकल देखो **मुकल**; (सुपा ५८०; हे ४, ३६६)।
मोकलिय वि [**दे**] १ प्रेषित, भेजा हुआ; (सुपा ५२१)। २ विसृष्ट; (सुपा १४०)।
मोक्ख देखो **मुक्ख**=मोक्ष; (औप; कुमा; हे २, १७६; उप २६४ टी; भग; वसु)।
मोक्ख देखो **मुक्ख**=मूर्ख; (उप ५५५)।
मोक्ख न [**दे**] वनस्पति-विशेष; (सूअ २, २, ७)।
मोक्खण न [**मोक्षण**] मुक्ति, छुटकारा; (स ४१८; सुर २, १७)।
मोग्गड पुं [**दे**] व्यन्तर-विशेष; (सुपा ४०८)। देखो **मुग्गड**।
मोग्गर पुं [**दे**] मुकुल, कलिका, बौर; (दे ६, १३६)।
मोग्गर पुं [**मुद्गर**] मुगरा, मोगरी; २ कमरख का पेड़; (हे १, ११६; २, ७७)। ३ पुष्पवृक्ष-विशेष, मोगरा का गाछ; (पण्ण १—पत्र ३२)। ४ देखो **मुग्गर**। °**पाणि** पुं [°**पाणि**] एक जैन महर्षि; त १८)
मोग्गरिअ वि [**दे**] संकुचित, मुकुलित; (दे ६, १३६ टी)।
मोग्गलायण } न [**मौद्गलायन**, °**ल्या**°] १ गोत्र-**मोग्गल्लायण** } विशेष; (इक; ठा ७; सुज्ज १०, १६)। २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न; (ठा ७—पत्र ३६०)।
मोग्गाह देखो **मुग्गाह**। मोग्गाहइ (?); (धात्वा १४६)।
मोघ देखो **मोह**=मोघ; "मोघमणोरहा" (पण्ह १, ३—पत्र ५५)।
मोच देखो **मोअ**=मोचय्। संकृ—**मोचिअ**; (अभि ४७)।
मोच न [**दे**] अर्धजंघी, एक प्रकार का जूता; (दे ६, १३६)।
मोच देखो **मोअ**=(दे); (सूअ १, ४, २, १२)।
मोचग देखो **मोअग**=मोचक; (वसु)।
मोट्टाय अक [**रम्**] क्रीड़ा करना। मोट्टायइ; (हे ४, १६८)।
मोट्टाइअ न [**रत**] रति-क्रीड़ा, रत, मैथुन; (कुमा)।
मोट्टाइअ न [**मोट्टायित**] चेष्टा-विशेष, प्रिय-कथा आदि में भावना से उत्पन्न चेष्टा; (कुमा)।
मोट्टिम न [**दे**] बलात्कार; (पि २३७)। देखो **मुट्टिम**।
मोड सक [**मोटय्**] १ मोड़ना, टेढ़ा करना। २ भाँगना। मोडसि; (सुर ७, ६)। वकृ—**मोडंत, मोडिंत, मोडयंत**; (भवि; महा; स २५७)। कवकृ—**मोडिज्जमाण**; उप पृ ३४)। संकृ—**मोडेउं**; (सुपा १३८)।
मोड पुं [**दे**] जूट, लट; (दे ६, ११७)।
मोडग वि [**मोटक**] मोड़ने वाला; (पण्ह १, ४—पत्र ७२)।
मोडण न [**मोटन**] मोड़न, मोड़ना; (वज्जा ३८)।
मोडणा स्त्री [**मोटना**] ऊपर देखो; (पण्ह १, ३—पत्र ५३)।
मोडिअ वि [**मोटित**] १ भग्न, भाँगा हुआ; (गा ५४६; गाया १, ६—पत्र १५७; पण्ह १, ३—पत्र ५३)। २ आम्रेडित, मोड़ा हुआ; (विपा १, ६—पत्र ६८; स ३३५)।
मोढ पुं [**मोढ**] एक वणिक्-कुल; (कुप्र २०)।
मोढेरय न [**मोढेरक**] नगर-विशेष; (दे ६, १०२; ती ७)।
मोण न [**मौन**] मुनिपन; वाणी का संयम, चुप्पी; (औप; सुपा २३७; महा)। °**चर** वि [°**चर**] मौन व्रत वाला, वाणी का संयम वाला, वाचंयम; (ठा ५, १—पत्र २६६; पण्ह २, १—पत्र १००)। °**पय** न [°**पद**] संयम, चारित्र; (सूअ १, १३, ६)।
मोणावणा स्त्री [**दे**] प्रथम प्रसूति के समय पिता की ओर से किया जाता उत्सव-पूर्वक निमन्त्रण; (उप ७६८ टी)।
मोणि वि [**मौनिन्**] मौन वाला; (उव; सुपा १४; संबोध २१)।
मोत्त देखो **मुत्त**=मुक्त; (धर्मसं ७५)।

मोत्तव्व देखो **मुंच** ।
मोत्ता देखो **मुत्ता**; (से ७, २६; संक्षि ४; प्राकृ ६; षड् ८०) ।
मोत्ति देखो **मुत्ति**=मुक्ति; (पण्ह १, ५—पत्र ६४) ।
मोत्तिअ देखो **मुत्तिअ**; (गा ३१०; स्वप्न ६३; औप; सुपा २३१; महा; गउड) । °**दाम** न [°**दाम**] छन्द-विशेष; (पिंग) ।
मोत्तुआण, **मोत्तुं**, **मोत्तूण** देखो **मुंच**=मुच् ।
मोत्थ देखो **मुत्थ**; (जी ६; संक्षि ४; पि १२५; प्रामा) ।
मोदअ देखो **मोअग**=मोदक; (स्वप्न ६०) । २ न. छन्द-विशेष; (पिंग) ।
मोब्भ [**दे**] देखो **मुब्भ**; (दे ८, ४) ।
मोर पुं [**दे**] श्वपच, चाण्डाल; (दे ६, १४०) ।
मोर पुं [**मोर**] १ पक्षि-विशेष, मयूर; (हे १, १७१; कुमा)। २ छन्द-विशेष; (पिंग) । °**बंध** पुं [°**बन्ध**] एक प्रकार का बन्धन; (सुपा ३४५) । °**सिहा** स्त्री [°**शिखा**] एक महौषधि; (ती ५) ।
मोरउल्ला अ. मुधा, व्यर्थ; (हे २, २१४; कुमा) ।
मोरंड पुं [**दे**] तिल आदि का मोदक, खाद्य-विशेष; (राज) ।
मोरग वि [**मयूरक**] मयूर के पिच्छों से निष्पन्न; (आचा २, २, ३, १८) ।
मोरत्तय पुं [**दे**] श्वपच, चाण्डाल; (दे ६, १४०) ।
मोरिय पुं [**मौर्य**] १ एक क्षत्रिय-वंश; २ मौर्य वंश में उत्पन्न; (पि १३४) । °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] भगवान् महावीर का एक गणधर—प्रधान शिष्य; (सम १६) ।
मोरी स्त्री [**मोरी**] १ मयूर पक्षी की मादा; (पि १६६; नाट—मृच्छ १८) । २ विद्या-विशेष; (सुपा ४०१) ।
मोलग पुं [**दे. मौलक**] बाँधने के लिए गाड़ा हुआ खूँटा; (उव) ।
मोलि देखो **मउलि**; (काल; सम १६) ।
मोल्ल देखो **मुल्ल**; (हे १, १२४; उव; उप पृ १०४; गाया १; १—पत्र ६०; भग) ।
मोस पुं [**मोष**] १ चोरी; २ चोरी का माल; "राया जंपइ मोसं एसिं अप्पसु" (सुपा २२१; महा) ।
मोस पुंन [**मृषा**] झूठ, असत्य भाषण; "चउव्विहे मोसे पण्णत्ते", "दसविं मोसे पण्णत्ते" (ठा ४, १; १०; औप; कप्प) ।
मोसण वि [**मोषण**] चोरी करने वाला; (कुप्र ४७) ।
मोसलि, **मोसली** स्त्री [**दे. मुशली, मौशली**] वस्त्रादि-निरीक्षण का एक दोष, वस्त्र आदि की प्रतिलेखना करते समय मुशल की तरह ऊँचे या नीचे भींत आदि का स्पर्श करना, प्रतिलेखना का एक दोष; "वज्जेयव्वा य मोसली तइया" (उत्त २६, २६; २५; ओघ २६५; २६६) ।
मोसा देखो **मुसा**; (उवा; हे १, १३६) ।
मोह सक [**मोहय्**] १ भ्रम में डालना । २ मुग्ध करना । मोहइ; (भवि) । वकृ—**मोहंत, मोहेंत**; (पउम ४, ८६; ११, ६६) । कृ—देखो **मोहणिज्ज** ।
मोह देखो **मऊह**; (हे १, १७१; कुमा; कुप्र ४३७) ।
मोह वि [**मोघ**] १ निष्फल, निरर्थक; (से १०, ७०; गा ४८२), "मोहाइ पत्थणाए सो पुण सोएइ अप्पाणं" (अच्चु १७५; आत्म १); क्रिवि. "मोहं कओ पयासो" (चेइय ७५०) । २ असत्य, मिथ्या; "मिच्छा मोहं विहलं अलिअं असच्चं असब्भूअं" (पाअ) ।
मोह पुं [**मोह**] १ मूढता, अज्ञता, अज्ञान; (आचा; कुमा; पण्ह १, १) । २ विपरीत ज्ञान; (कुमा २, ५३) । ३ चित्त की व्याकुलता; (कुमा ५, ५) । ४ राग, प्रेम; ५ काम-क्रीडा; "मोहाउरा मणुस्सा तह कामदुहं सुहं बिंति" (प्रासू २८; पण्ह १, ४) । ६ मूर्छा, बेहोशी; (स्वप्न ३१; स ६६६) । ७ कर्म-विशेष, मोहनीय कर्म; (कम्म ४, ६०; ६६) । ८ छन्द-विशेष; (पिंग) ।
मोहण न [**मोहन**] १ मुग्ध करना; २ मन्त्र आदि से वश करना; (सुपा ५६६) । ३ मूर्च्छा, बेहोशी; (निसा ६) । ४ वशीकरण, मुग्ध करने वाला मन्त्रादि-कर्म; (सुपा ५६६) । ५ काम का एक बाण; ६ प्रेम, अनुराग; (कप्पू) । ७ मैथुन, रति-क्रिया; (स ७६०; णाया १, ८; जीव ३) । ८ वि. व्याकुल बनाने वाला; (स ५५७; ७४४) । ९ मोहक, मुग्ध करने वाला; "मोहणं पसूणंपि" (धर्मवि ६५; सुर ३, २६; कर्पूर २५) ।
मोहणिज्ज वि [**मोहनीय**] १ मोह-जनक; २ न. कर्म-विशेष, मोह का कारण-भूत कर्म; (सम ६६; भग; अंत; औप)।
मोहणी स्त्री [**मोहनी**] एक महौषधि; (ती ५) ।
मोहर न [**मौखर्य**] वाचाटता, बकवाद; (पण्ह २, ५—पत्र १४८; पुप्फ १८०) ।

मोहर वि [**मौखर**] वाचाट, बकवादी; (ठा १०—पत्र ५१६)।

मोहरिअ वि [**मौखरिक**] ऊपर देखो; (ठा ६—पत्र ३७१; औप; सुपा ५२०)।

मोहरिअ न [**मौखर्य**] वाचालता, बकवाद; (उवा; सुपा ५१४)।

मोहि वि [**मोहिन्**] मुग्ध करने वाला; (भवि)।

मोहिणी स्त्री [**मोहिनी**] छन्द-विशेष; (पिंग)।

मोहिय वि [**मोहित**] १ मुग्ध किया हुआ; (पण्ह १, ४; द १४)। २ न. निधुवन, मैथुन, रति-क्रीडा; (णाया १, ६—पत्र १६५)।

मोहुत्तिय वि [**मौहूर्तिक**] ज्योतिष-शास्त्र का जानकार; (कुप्र ५)।

मौलिअ देखो **मोरिय**; "णिवेदेह दाव चंदउलगगणकुलिसस्स मौलिअकुलपडिहावकस्स अज्जचाणक्कस्स" (मुद्रा ३०६)।

म्मि अ. पाद-पूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय; (पिंग)।

म्मिव देखो **इव**; (प्राकृ २६)।

म्हस देखो **भंस**=भ्रंश्। म्हसइ; (प्राकृ ७६)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि मयाराइसद्दसंकलणो
एगतीसइमो तरंगो समत्तो।

———:o:———

य

य पुं [**य**] तालु-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष, अन्तस्थ यकार; (प्राप; प्रामा)।

य अ [**च**] १ हेतु-सूचक अव्यय; (धर्मसं ३८५)। २—देखो **च**=च; (ठा ३, १; ८; पउम ६, ८४; १५, २; श्रा १२; भाचा; रंभा; कम्म २,३३; ४, ६; १०; देवेन्द्र ११; प्रासू २७)।

°**य** देखो °**ज**; (आचा)।

°**य** वि [°**द**] देने वाला; (औप; गय; जीव ३)।

यउणा देखो **जँउणा**; (संक्षि ७)।

°**यंच** सक [**अञ्च्**] १ गमन करना। २ पूजा करना। संकृ—°**यंचिय**; (ठा ५, १—पत्र ३००)।

°**यंत** वि [**यत**] प्रयत्नशील, उद्योगी; "अ-यंते" (सूअ १, २, ६३)।

°**यंद** देखो **चंद**; (सुपा २२६)।

°**यक्क** देखो **चक्क**; "दिसा-यक्कं" (पउम ६, ७१)।

°**यड** देखो **तड**=तट; (गउड)।

°**यण** देखो **जण**=जन; (सुर १, १२१)।

यणद्दण (अप) देखो **जणद्दण**; "तो वि ण देउ यणद्दणउ गोअरीहोइ मणस्सु" (पि १४ टि)।

°**यण्ण** देखो **कण्ण**=कर्ण; (पउम ६६, २८)।

°**यत्तिअ** वि [**यात्रिक**] यात्रा करने वाला, भ्रमण करने वाला; "सगडसएहिं दिसायत्तिएहिं" (उवा; बृह १)।

यदावि अ [**यद्यपि**] अभ्युपगम-सूचक अव्यय, स्वीकार-द्योतक निपात; (पंचा १४, ३६)।

यन्नोवइय देखो **जण्णोवईय**; (उप ६४८ टी)।

यम देखो **जम**=यम; "दो अस्सा दो यमा" (ठा २, ३—पत्र ७७)।

°**यर** देखो **कर**=कर; (गउड)।

°**यल** देखो **तल**=तल; (उवा)।

या देखो **जा**=या; "सुरनारगा य सम्मद्दिट्ठी जं यंति सुरमणुएसु" (विसे ४३१; कुमा ८, ८)।

याण सक [**ज्ञा**] जानना। याणइ, याणाइ, याणेइ, याणंति, याणामो, याणिमो; (पि ५१०; उव; भग; धर्मवि १७; वै ६३; प्रासू १०२)।

याण देखो **जाण**=यान; (सम २)।

°**याल** देखो **काल**; (पउम ६, २४३)।

याव (अप) देखो **जाव**=यावत्; (कुमा)।

°**युत्त** देखो **जुत्त**=युक्त; "एवम् अयुत्तं जम्हा" (अज्झ १६७; रंभा)।

येव } (पै. मा) देखो **एव**; (पि ६०; ६५)।
येव्व }

युधिश (मा) } देखो **चिट्ठ**=स्था। युचिशदि (साकारी
युचिश्त (पै) } भाषा); (प्राकृ १०५)। युचिश्तदि (पै); (प्राकृ १२६)।

य्येव (शौ) देखो **एव**; (हे ४, २८०)।

य्येव्व देखो **येव**; (पि ६५)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि यआराइसद्दसंकलणो
बत्तीसइमो तरंगो समत्तो।

———:o:———

र

र पुं [**र**] मूर्ध-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष; (सिरि १९६; पिंग)। °**गण** पुं [°**गण**] छन्दःशास्त्र-प्रसिद्ध मध्य-लघु अक्षर वाले तीन स्वरों का समुदाय; (पिंग)।

र अ. पाद-पूरक अव्यय; (हे २, २१७; कुमा)।

रइ स्त्री [**रति**] १ काम-क्रीड़ा, सुरत, मैथुन; (से १, ३१; कुमा)। २ कामदेव की स्त्री; (कुमा)। ३ प्रीति, प्रेम, अनुराग; (कुमा; सुपा ५११)। ४ कर्म-विशेष; (कम्म २, १०)। ५ भगवान् पद्मप्रभ की मुख्य शिष्या; (पव ८)। ६ पुं. भूतानन्द-नामक इन्द्र का एक सेनापति; (इक)। °**अर**, °**कर** वि [°**कर**] १ रति-जनक; (गा ३२६)। २ पुं. पर्वत-विशेष; (पराह १, ५; ठा १०; महा)। °**कीला** स्त्री [°**क्रीडा**] काम-क्रीडा; (महा)। °**केलि** स्त्री [°**केलि**] वही अर्थ; (काप्र २०१)। °**घर** न [°**गृह**] सुरत-मन्दिर, विलास-गृह; (पि ३६६ए)। °**णाह**, °**नाह** पुं [°**नाथ**] कामदेव; (कुमा; सुर ६, ३१)। °**पहु** पुं [°**प्रभु**] वही अर्थ; (कुमा)। °**प्पभा** स्त्री [°**प्रभा**] किन्नर-नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी; (इक; ठा ४, १—पत्र २०४)। °**प्पिय** पुं [°**प्रिय**] १ कामदेव; (सुपा ७५)। २ एक इन्द्र; ३ किन्नर देवों की एक जाति; (राज)। °**प्पिया** स्त्री [°**प्रिया**] वान-व्यन्तरों के इन्द्र-विशेष की एक अग्र-महिषी; (णाया २—पत्र २५२)। °**भवण** न [°**भवन**] कामक्रीडा-गृह; (महा)। °**मंत** वि [°**मत्**] १ राग-जनक; २ पुं. कामदेव, कन्दर्प; (तंदु ४६)। °**मंदिर** न [°**मन्दिर**] शयन-गृह; (पाअ)। °**रमण** पुं [°**रमण**] कामदेव; (सुपा ४; २८६; कप्पू)। °**लंभ** पुं [°**लम्भ**] १ सुरत की प्राप्ति; २ कामदेव; (से ११, ८)। °**वइ** पुं [°**पति**] कामदेव; (कुमा; सुपा २६२)। °**विद्धि** स्त्री [°**वृद्धि**] विद्या-विशेष; (पउम ७, १४४)। °**सुंदरी** स्त्री [°**सुन्दरी**] एक राज-कन्या; (उप ७२८ टी)। °**सुहव** पुं [°**सुभग**] कामदेव; (कुमा)। °**सेणा** स्त्री [°**सेना**] किन्नरेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (इक; ठा ४, १—पत्र २०४)। °**हर** न [°**गृह**] शयन-गृह, सुरत-मन्दिर; (उप ६४८ टी; महा)।

रइ पुं [**रवि**] सूर्य, सूरज; (गा ३४; से १, १४; ३२; कप्पू)।

रइअ वि [**रचित**] बनाया हुआ, निर्मित; (सुर ४, २४४; कुमा; औप; कप्प)।

रइआव सक [**रचय्**] बनवाना। संकृ—**रइआविअ**; (ती ३)।

रइगेल्ल वि [**दे**] अभिलषित; (दे ७, ३)।

रइगेल्ली स्त्री [**दे**] रति-तृष्णा; (दे ७, ३)।

रइज्जंत देखो **रय**=रचय्।

रइलक्ख न [**दे**] जघन, नितम्ब; (दे ७, १३; षड्)।

रइलक्ख न [**दे. रतिलक्ष**] रति-संयोग, मैथुन; (दे ७, १३)।

रइल्लिय वि [**रजस्वल**] रज से युक्त, रज वाला; (पि ५९५)।

रइवाडिया देखो **राय-वाडिआ**; "सामिय रइवाडियागओ" (सिरि १०९)।

रईसर पुं [**रतीश्वर**] कामदेव, कन्दर्प; (कुमा)।

रउताणिया स्त्री [**दे**] रोग-विशेष, पामा, खुजली; (सिरि ३०६)।

रउद्द देखो **रोद्द**=रौद्र; "रउद्दखुद्दहिं अखोहणिज्जो" (यति ४१; भवि)।

रउरव वि [**रौरव**] भयंकर, घोर। °**काल** पुं [°**काल**] माता के उदर में पसार किया जाता समय-विशेष; "**नवमासहिं** नियकुक्खहिं धरियउ पुणु रउरवकालहो नीसरियउ" (**भवि**)।

रओ° देखो **रय**=रजस्; (पिंड ६ टी; सण)।

रंक वि [**रङ्क**] गरीब, दीन; (पिंग)।

रंखोल अक [**दोलय्**] १ झूलना। २ हिलना, चलना, काँपना। रंखोलइ; (हे ४, ४८; वज्जा ६४)।

रंखोलिय वि [**दोलित**] कम्पित; (गउड)।

रंखोलिर वि [**दोलितृ**] झूलने वाला; (गउड; कुमा; पाअ)।

रंग अक [**रङ्ग्**] इधर-उधर चलना। वकृ—**रंगंत**; (कप्प; पउम १०, ३१; पराह १, ३—पत्र ५५)।

रंग सक [**रञ्जय्**] रँगना। कर्म—रंगिज्जइ; (संबोध १७)। वकृ—"रायगिहं वरनयरं वर-नय-**रंगंत**-मंदिरं अत्थि" (कुम्मा १८)।

रंग न [**दे**] राँग, राँगा, धातु-विशेष, सीसा; (दे ७, १; से २, २९)।

रंग पुं [**रङ्ग**] १ राग, प्रेम; (सिरि ५१५)। २ नाट्य-शाला, प्रेक्षा-भूमि; (पाअ; सुपा १; कुमा)। ३ युद्ध-मण्डप, जय-भूमि; (धर्मसं ७८३)। ४ संग्राम, लड़ाई; (पिंग)।

५ रक्त वर्ण, लाली; (से २, ३६)। ६ वर्ण, रँग; (भवि)। ७ रँगना, रंजन, रँग चढाना; (गउड)। °अ वि [°द] कुतूहल-जनक; (से ६, ४२)।

रंगण न [रङ्गन] १ राग, रँगना; २ पुं. जीव, आत्मा; (भग २०, २—पत्र ७७६)।

रंगिर वि [रङ्गितृ] चलने वाला; (सुपा ३)।

रंगिल्ल वि [रङ्गवत्] रँग वाला; (उर ६, २)।

रंज सक [रञ्जय्] १ रँग लगाना। २ खुशी करना। रंजए, रंजेइ; (वज्जा १३६; हे ४, ४६)। कर्म—रंजिज्जइ; (महा)। वकृ—**रंजंत**; (संवे ३)। संकृ—**रंजिऊण**; (पि ५८६)। कृ—**रंजियव्व**; (आत्महि ६)।

रंजग वि [रञ्जक] रञ्जन करने वाला; (रंभा)।

रंजण न [रञ्जन] १ रँगना; (विसे २६६१)। २ खुशी करना; "परचित्तरंजणे" (उप ६८६ टी; संवे ५)। ३ पुं. छन्द-विशेष; (पिंग)। ४ वि. खुशी करने वाला, राग-जनक; (कुमा)।

रंजण पुं [दे] १ घडा, कुम्भ; (दे ७, ३)। २ कुण्डा, पात्र-विशेष; (दे ७, ३; पाअ)।

रंजविय } वि [रञ्जित] राग-युक्त किया हुआ; (सण; से
रंजिअ } ६, ४८; गउड; महा; हेका २७२)।

रंडा स्त्री [रण्डा] राँड, विधवा; (उप पृ ३१३; वज्जा ४४; कप्पू; पिंग)।

रंदुअ न [दे] रज्जु, रस्सी; गुजराती में 'राढवुं'; (दे ७, ३)।

रंध सक [रध्, राधय्] राँधना, पकाना। "रंधो राधयतेः स्मृतः" रंधइ; (प्राकृ ७०), रंधेहि; (स २४६)। वकृ—**रंधंत**; (णाया १, ७—पत्र ११७)। संकृ—**रंधिऊण**; (कुप्र २०५)।

रंध न [रन्ध्र] छिद्र, विवर; (गा ६५२; रंभा; भवि)।

रंधण न [रन्धन, राधन] राँधना, पचन, पाक; (गा १४; पव ३८; सुमनि १२१ टी; सुपा १२; ४०१)। °**घर** न [°गृह] पाक-गृह; (रयण ३१)।

रंप सक [तक्ष्] छिलना, पतला करना। रंपइ; (हे ४, १९४; प्राकृ ६५; षड्)।

रंपण न [तक्षण] तनू-करण, पतला करना; (कुमा)।

रंफ देखो **रंप**। रंफइ, रंफए; (हे ४, १९४; षड्)।

रंफण देखो **रंपण**; (कुमा)।

रंभ सक [गम्] जाना, गति करना। रंभइ; (हे ४, १६२), रंभंति; (कुमा)।

रंभ देखो **रंफ**। रंभइ; (धात्वा १४६)।

रंभ सक [आ+रभ्] आरम्भ करना। रंभइ; (षड्)।

रंभ पुं [दे] अन्दोलन-फलक, हिंडोले का तख्ता; (दे ७, १)।

रंभा स्त्री [रम्भा] १ कदली, केला का गाछ; (सुपा २५४; ६०५; कुप्र ११७; पाअ)। २ देवांगना-विशेष, एक अप्सरा; (सुपा २५४; रयण ५)। ३ वैरोचन-नामक बलीन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ५, १—पत्र ३०२; णाया २—पत्र २५१)। ४ रावण की एक पत्नी; (पउम ७४, ८)।

रक्ख सक [रक्ष्] रक्षण करना, पालन करना। रक्खइ; (उव; महा)। भूका—रक्खीअ; (कुमा)। वकृ—**रक्खंत**; (गा ३८; औप; मा ३७)। कवकृ—**रक्खीअमाण**; (नाट—मालती २८)। कृ—**रक्ख, रक्खणिज्ज, रक्खियव्व, रक्खेयव्व**; (से ३, ५; सार्ध १००; गउड; सुपा २४०)।

रक्ख पुंन [रक्षस्] राक्षस; (पाअ; कुप्र ११३; सुपा १३०; सहि ६ टी; संबोध ४४)।

रक्ख वि [रक्ष] १ रक्षक, रक्षा करने वाला; (उप पृ ३६८; कप्प)। २ पुं. एक जैन मुनि; (कप्प)।

रक्ख देखो **रक्ख**=रक्ष्।

रक्खअ } वि [रक्षक] रक्षण-कर्ता; (नाट—मालवि ५३;
रक्खग } रंभा; कुप्र २३३; सार्ध ६६)।

रक्खण न [रक्षण] रक्षा, पालन; (सुर १३, १६७; गउड; प्रासू २३)।

रक्खणा स्त्री [रक्षणा] ऊपर देखो; (उप ८५०; स ६६)।

रक्खणिया स्त्री [दे] रखी हुई स्त्री, रखात; (सुपा ३८३)।

रक्खवाल वि [दे] रखवाला, रक्षा करने वाला; (महा)।

रक्खस पुं [राक्षस] १ देवों की एक जाति; (पण्ह १, ४—पत्र ६८)। २ विद्याधर-मनुष्यों का एक वंश; (पउम ५, २५२)। ३ वंश-विशेष में उत्पन्न मनुष्य, एक विद्याधर-जाति; "तेणं चिय खयराणं रक्खसनामं कयं लोए" (पउम ५, २५७)। ४ निशाचर, क्रव्याद; (से १५, १७; नाट—मृच्छ १३२)। ५ अहोरात्र का तीसवाँ मुहूर्त; (सम ५१; सुज्ज १०, १३)। °**उरी** स्त्री [°पुरी] लंका नगरी; (से १२, ८४)। °**णअरी** स्त्री [°नगरी] वही अर्थ; (से १२, ७८)। °**णाह** पुं [°नाथ] राक्षसों का राजा; (से ८, १०४)। °**त्थ** न [°स्त्र] अस्त्र-विशेष; (पउम ७१, ६३)। °**दीव** पुं [°द्वीप] सिंहल

द्वीप; (पउम ५, १२६)। °णाह देखो °णाह; (पउम ६, ३६)। °वइ पुं [°पति] राक्षसों का मुखिया; (पउम ५, १२३; से ११, १)। °हिव पुं [°धिप] वही अर्थ; (से १५, ८७; ६१)।

रक्खसिंद पुं [**राक्षसेन्द्र**] राक्षसों का राजा; (पउम १२, ४)।

रक्खसी स्त्री [**राक्षसी**] १ राक्षस की स्त्री; (नाट —मृच्छ १३८)। २ लिपि-विशेष; (विसे ४६४ टी)।

रक्खसेंद देखो **रक्खसिंद**; (से १२, ७७)।

रक्खा स्त्री [**रक्षा**] १ रक्षण, पालन; (श्रा १०; सुपा १०३; ११३)। २ राख, भस्म; "सो चंदणं रक्खकए दहिज्जा" (सत्त २८; सुपा ६५७)।

रक्खिअ वि [**रक्षित**] १ पालित; (गउड; गा ३३३)। २ पुं. एक प्रसिद्ध जैन महर्षि; (कप्प; विसे २२८८)।

रक्खिआ देखो **रक्खसी**; (रंभा १७)।

रक्खी स्त्री [**रक्षी**] भगवान् अरनाथ की मुख्य साध्वी; (सम १५२; पव ८)।

रगिल्ल [**दे**] देखो **रइगेल्ल**; (षड्)।

रग्ग देखो **रत्त**=रक्त; (हे २, १०; ८६; षड्)।

रग्गय न [**दे**] कुसुम्भ-वस्त्र; (दे ७, ३; पाअ; गउड)।

रघुस पुं [**रघुष**] हरिवंश का एक राजा; (पउम २२, ६६)।

रच्च अक [**दे. रञ्ज्**] राचना, आसक्त होना, अनुराग करना। रच्चइ, रच्चंति, रच्चेइ; (कुमा; वज्जा ११२)। कर्म—"रत्ते रच्चिजए जम्हा" (कुप्र १३२)। वकृ—रच्चंत; (भवि)। प्रयो—रच्चावंति; (वज्जा ११२)।

रच्चण न [**दे. रञ्जन**] १ अनुराग; २ वि. अनुराग करने वाला, राचने वाला; (कुमा)।

रच्चिर वि [**दे. रञ्जितृ**] राचने वाला; (कुमा)।

रच्छा देखो **रक्खा**; (रंभा १६)।

रच्छा स्त्री [**रथ्या**] मुहल्ला; (गा ११६; औप; कस)।

रच्छामय पुं [**दे. रथ्यामृग**] श्वान, कुत्ता; (दे ७, ४)।

रज देखो **रय**=रजस्; (कुमा)।

रजअ } पुंस्त्री [**रजक**] धोबी, कपड़ा धोने का धंधा करने
रजग } वाला; (श्रा १२; दे ५, ३२)। स्त्री—°की; (दे १, ११४)।

रजय देखो **रयय**=रजत; (इक)।

रज्ज अक [**रञ्ज्**] १ अनुराग करना, आसक्त होना। २ रँगाना, रँग-युक्त होना। रज्जइ; (आचा; उव), रज्जए; (याया १, ८—पत्र १४८)। भवि—रज्जिहिति; (औप)। वकृ—**रज्जंत, रज्जमाण**; (से १०, २०; याया १, १७; उत्त २६, ३)। कृ—**रज्जियव्व**; (पराह २, ५—पत्र १४६)।

रज्ज न [**राज्य**] १ राज, राजा का अधिकृत देश; २ शासन, हुकूमत; (याया १, ८; कुमा; दं ४७; भग; प्रासू)। °पालिया स्त्री [°पालिका] एक जैन मुनि-शाखा; (कप्प)। °वइ पुं [°पति] राजा; (कप्प)। °सिरी स्त्री [°श्री] राज्य-लक्ष्मी; (महा)। °हिसेअ पुं [°भिषेक] राज-गद्दी पर बैठाने का उत्सव; (पउम ७७, ३६)।

रज्जव पुंन. नीचे देखो; "खररज्जवेसु बद्धा" (पउम ३६, ११६)।

रज्जु स्त्री [**रज्जु**] १ रस्सी; (पाअ; उवा)। २ एक प्रकार का नाप; "चउदसरज्जू लोगो" (पव १४३)।

रज्जु वि [**दे**] लेखक, लिखने का काम करने वाला; (कप्प)। °सभा स्त्री [°सभा] १ लेखक-गृह; २ शुल्क-गृह, चूँगी-घर; "हत्थिपालस्स रण्णो रज्जुसभाए" (कप्प)।

रज्झिअ देखो **रहिअ**=रहित; "अरज्झियाभितावा तहवी तविंति" (सूअ १, ५, १, १७)।

रट्ठ न [**राष्ट्र**] देश, जनपद; (सुपा ३०७; महा)। °उड, °कूड पुं [°कूट] राज-नियुक्त प्रतिनिधि, सूबा; (विपा १, १ टी—पत्र ११; विपा १, १—पत्र ११)।

रट्ठिअ वि [**राष्ट्रिय**] १ देश-संबन्धी। २ पुं. नाटक की भाषा में राजा का साला; (अभि १६४)।

रट्ठिअ पुं [**राष्ट्रिक**] देश की चिन्ता के लिए नियुक्त राज-प्रतिनिधि, सूबा; (पराह १, ५—पत्र ६४)।

रड अक [**रट्**] १ रोना। २ चिल्लाना। रडइ; (भवि)। वकृ—**रडंत**; (हे ४, ४४५; भवि)।

रडण न [**रटन**] चिल्लाहट, चीस; (पिंड २२५)।

रडिय न [**रटित**] १ रुदन, रोना; (पराह २, ५)। २ आवाज करना, शब्द-करण; "परहुयवहुय रडियं कुहकुहमहुर-सद्देण" (रंभा)। ३ चिल्लाना, चीस; (याया १, १—पत्र ६३)। ४ वि. कलहायित, झगड़ाखोर; "कलहाइअं रडिअं" (पाअ)।

रडरडिय न [**रटरटित**] शब्द-विशेष, वाद्य-विशेष का आवाज; (सुपा ५०)।

रडु वि [दे] खिसक कर गिरा हुआ, गुजराती में 'रडेलुं' (कुप्र ४५६)।

रड्डा स्त्री [रड्डा] छन्द-विशेष; (पिंग)।

रण पुंन [रण] १ संग्राम, लड़ाई; (कुमा; पाअ)। २ पुं. शब्द, आवाज; (पाअ)। °**खंभउर** न [°स्तम्भपुर] अजमेर के समीप का एक प्राचीन नगर; "रणखंभउरजिणहरे चडाविया कणयमयकलसा" (मुणि १०६०१)।

रणक्कार पुं [रणत्कार] शब्द-विशेष; (गउड)।

रणझण अक [रणझणाय्] 'रन् झन्' आवाज करना। रणझणइ; (वज्जा १२८)। वकृ—**रणझणंत**; (भवि)।

रणझणिर वि [रणझणायितृ] 'रन् झन्' आवाज करने वाला; (सुपा ६४१; धर्मवि ८८)।

रणरण अक [रणरणाय्] 'रन् रन्' आवाज करना। वकृ—**रणरणंत**; (पिंग)।

रणरण } पुं [दे. रणरणक] १ निःश्वास, नीसास; "अइ-
रणरणय } उण्हा रणरणया दुप्पेच्छा दूसहा दुरालोया" (वज्जा ७८)। २ उद्वेग, पीड़ा, अ-धृति; "गरुयपियसंग-मासाभंससमुच्छलियरणरणाइन्नं" (सुर ४, २३०; पाअ)। ३ उत्कण्ठा, औत्सुक्य; (दे १, १३६; गउड; रुक्मि ४८; संबे २)।

रणरणाअ देखो **रणरण**=रणरणाय्। वकृ—**रणरणायंत**; (पउम ६४, ३६)।

रणिअ न [रणित] शब्द, आवाज; (सुर १, २४८)।

रणिर वि [रणितृ] आवाज करने वाला; (सुपा ३२७; गउड)।

रण्ण न [अरण्य] जंगल, अटवी; (हे १, ६६; प्राप्र; औप)।

रत्त पुं [रक्त] १ लाल वर्ण, लाल रँग; २ कुसुम्भ; ३ वृक्ष-विशेष, हिज्जल का पेड़; (हे २, १०)। ४ न. कुंकुम; ५ ताम्र, ताँबा; ६ सिंदूर; ७ हिंगुल; ८ खून, रुधिर; ९ राग; (प्राप्र)। १० वि. रँगा हुआ; (हेका २७२)। ११ लाल रँग वाला; (पाअ)। १२ अनुराग-युक्त; (ओघ ७५७; प्रासू १५५; १६०)। °**कंबला** स्त्री [°कम्बला] मेरु पर्वत के पण्डक वन में स्थित एक शिला, जिसपर जिनदेवों का अभिषेक किया जाता है; (ठा २, ३—पत्र ८०)। °**कूड** न [°कूट] शिखर-विशेष; (राज)। °**कोरिंटय** पुं [°कुरण्टक] वृक्ष-विशेष; (पउम ५३, ७९)। °**क्ख**, °**च्छ** वि [°क्ष] १ लाल आँख वाला; (राज; सुर २, ६), स्त्री—°**च्छी**; (ओघभा २२ टी)। २ पुं. महिष, भैंसा; (दे ७, १३)। °**ट्ठ** पुं [°ार्थ] विद्याधर वंश का एक राजा; (पउम ५, ४४)। °**धाउ** पुं [°धातु] कुण्डल पर्वत का एक शिखर; (दीव)। °**पड** पुं [°पट] परिव्राजक, संन्यासी; (णाया १, १५—पत्र १९३)। °**प्पवाय** पुं [°प्रपात] ह्रद-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७३)। °**प्पह** पुं [°प्रभ] कुण्डल-पर्वत का एक शिखर; (दीव)। °**रयण** न [°रत्न] रत्न की एक जाति, पद्म-राग मणि; (औप)। °**वई** स्त्री [°वती] एक नदी; (सम २७; ४३; इक)। °**वड** देखो °**पड**; (सुख ८, १३)। °**सुभद्दा** स्त्री [°सुभद्रा] श्रीकृष्ण की एक भगिनी; (पण्ह १, ४—पत्र ८५)। °**ासोग**, °**ासोय** पुं [°ाशोक] लाल अशोक का पेड़; (णाया १, १; महा)।

°**रत्त** पुं [°रात्र] रात, निशा; (जी ३४)।

रत्तग देखो **रत्त**=रक्त; (महा)।

रत्तंदण न [रक्तचन्दन] लाल चन्दन; (सुपा १८१)।

रत्तक्खर न [दे] सीधु, मद्य-विशेष; (दे ७, ४)।

रत्तच्छ पुं [दे] १ हंस; २ व्याघ्र; (दे ७, १३)।

रत्तडि (अप) देखो **रत्ति**=रात्रि; (पि ५९९)।

रत्तय न [दे. रक्तक] बन्धूक वृक्ष का फूल; (दे ७, ३)।

रत्ता स्त्री [रक्ता] एक नदी; (सम २७; ४३; इक)। °**वइप्पवाय** पुं [°वतीप्रपात] ह्रद-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७३)।

रत्ति स्त्री [दे] आज्ञा, हुकुम; (दे ७, १)।

रत्ति स्त्री [रात्रि] रात, निशा; (हे २, ७९; कुमा; प्रासू ६०)। °**अंधय** वि [°अन्धक] रात को नहीं देख सकने वाला; (गा ६६७; हेका २६)। °**अर** वि [°चर] १ रात में विहरने वाला; २ पुं. राक्षस; (षड्)। °**दिवह** न [°दिवस] रात-दिन, अहर्निश; (पि ८८)। देखो **राइ**=रात्रि।

रत्तिंचर देखो **रत्ति-अर**; (धर्मवि ७२)।

रत्तिंदिअह न [रात्रिंदिवस] रात-दिन, अहर्निश, निरन्तर; (अच्चु ७८)।

रत्तिंदिय } न [रात्रिन्दिव] ऊपर देखो; (पउम ८, १६४;
रत्तिंदिव } ७५, ८५)।

रत्तिंध वि [रात्र्यन्ध] जो रात में न देख सकता हो वह; (प्रासू १७५)।

रत्तीअ पुं [दे] नापित, हजाम; (दे ७, २; पाअ)।

रत्तुप्पल न [**रक्तोत्पल**] लाल कमल; (पणह १, ४)।
रत्तोआ स्त्री [**रक्तोदा**] एक नदी; (इक)।
रत्तोप्पल देखो **रत्तुप्पल**; (नाट—मृच्छ १४५)।
रत्था देखो **रच्छा**; (गा ४०; अंत १२; सुर १, ६६)।
रद्ध वि [**रद्ध, राद्ध**] राँधा हुआ, पक्व; (पिंड १६५; सुपा ६३६)।
रद्धि वि [**दे**] प्रधान, श्रेष्ठ; (दे ७, २)।
रन्न देखो **रण्ण**; (सुपा ४०१; कुमा)।
रप्प सक [**आ + क्रम्**] आक्रमण करना। रप्पइ; (प्राकृ ७३)।
रप्फ पुं [**दे**] वल्मीक, गुजराती में 'राफडो'; (दे ७, १; पाअ)। २ राग-विशेष; "करि कंपु पायमूलिसु रप्फय" (सण)।
रप्फडिआ स्त्री [**दे**] गोधा, गोह; (दे ७, ४)।
रब्बा वि [**दे**] राब, यवागू; (श्रा १४; उर २, १२; धर्मवि ४२)।
रभस देखो **रहस**=रभस; (गा ८७२; ८६४; ६३४)।
रम अक [**रम्**] १ क्रीड़ा करना। २ संभोग करना। **रमइ**, रमए, रमंते, रमिज्जा, रमेज्जा; (कुमा)। भवि—रमिस्सदि, रमिहिइ; (कुमा)। कर्म—रमिज्जइ; (कुमा)। वकृ—**रमंत, रममाण**; (गा ४४; कुमा)। संकृ—**रमिअ, रमिउं, रमिऊण, रंतूण**; (हे २, १४६; ३, १३६; महा; पि ३१२), **रमेप्पि, रमेप्पिणु, रमेवि** (अप); (पि ५८८)। हेकृ—**रमिउं**; (उप पृ ३८)। कृ—**रमिअव्व**; (गा ४६१), देखो **रमणिज्ज, रमणीअ, रम्म**। प्रयो—रमावेंति; (पि ५५२)।
रमण न [**रमण**] १ क्रीडा, क्रीडन; २ सुरत, संभोग, रति-क्रीड़ा; (पव ३८; कुमा; उप पृ १८७)। ३ स्मर-कूपिका, योनि; (कुमा)। ४ पुं. जघन, नितम्ब; (पाअ)। ५ पति, वर, स्वामी; (पउम ५१, १६; कुमा; पिंग)। ६ छन्द-विशेष; (पिंग)।
रमणिज्ज वि [**रमणीय**] १ सुन्दर, मनोहर, रम्य; (प्राप्र; पाअ; अभि २००)। २ न. एक देव-विमान; (सम १७)। ३ पुं. नन्दीश्वर द्वीप के मध्य में उत्तर दिशा की ओर स्थित एक अन्जन-गिरि; (पव २६६ टी)। ४ एक विजय, प्रान्त-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ८०)।
रमणी स्त्री [**रमणी**] १ नारी, स्त्री; (पाअ; उप पृ १८७; प्रासू १५५; १८०)। २ एक पुष्करिणी; (इक)।
रमणीअ वि [**रमणीय**] रम्य, मनोरम; (प्राप्र; स्वप्न ४०; गउड; सुपा २५५; भवि)।
रमा स्त्री [**रमा**] लक्ष्मी, श्री; (कुम्मा ३)।
रमिअ देखो **रम**।
रमिअ वि [**रत**] १ क्रीडित, जिसने क्रीडा की हो वह; (कुमा ४, ५०)। २ न. रमण, क्रीड़ा; (णाया १, ६—पत्र १६५; कुमा; सुपा ३७६; प्रासू ६५)।
रमिअ वि [**रमित**] रमाया हुआ; (कुमा ३, ८६)।
रमिर वि [**रन्तृ**] रमण करने वाला; (कुमा)।
रम्म वि [**रम्य**] १ मनोरम, रमणीय, सुन्दर; (पाअ; से ६, ४७; सुर १, ६६; प्रासू ७१)। २ पुं. विजय-विशेष, एक प्रान्त; (ठा २, ३—पत्र ८०)। ३ चम्पक का गाछ; (से ६, ४७)। ४ न. एक देव-विमान; (सम १७)।
रम्मग } **रम्मय** } पुं [**रम्यक**] १ एक विजय, प्रान्त-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ८०)। २ एक युगलिक-क्षेत्र, जंबू-द्वीप का वर्ष-विशेष; (सम १२; ठा २, ३—पत्र ६७; इक)। ३ न. एक देव-विमान; (सम १७)। ४ पर्वत-विशेष का एक कूट; (जं ४)।
रम्ह देखो **रंफ**। रम्हइ; (प्राकृ ६५)।
रय सक [**रञ्ज्**] रँगना। "नो धोएज्जा, नो रएज्जा, नो धोयरत्ताइं वत्थाइं धारेज्जा" (आचा)।
रय सक [**रचय्**] बनाना, निर्माण करना। **रयइ, रएइ**; (हे ४, ६४; षड्; महा)। कवकृ—**रइज्जंत**; (से ८, ८७)।
रय पुंन [**रजस्**] १ रेणु, धूल; (औप; पाअ; कुप्र २१)। २ पराग, पुष्प-रज; (से ३, ४८)। ३ सांख्य-दर्शन में उक्त प्रकृति का एक गुण; (कुप्र २१)। ४ बध्यमान कर्म; (कुमा ७, ५८; चेइय ६२२; उव)। °**त्ताण** न [°**त्राण**] जैन मुनि का एक उपकरण; (ओघ ६६८; पणह २, ५—पत्र १४८)। °**स्सला** स्त्री [°**स्वला**] ऋतुमती स्त्री; (दे १, १२५)। °**हर** पुंन [°**हर**] जैन मुनि का एक उपकरण; (संबोध १५)। °**हरण** न [°**हरण**] वही अर्थ; (णाया १, १; कस)।
रय वि [**रत**] १ अनुरक्त, आसक्त; (औप; उव; सुर १, १२; सुपा ३०६; प्रासू १६६)। २ स्थित; (से ६, ४२)। ३ न. रति-कर्म, मैथुन; (सम १५; उव; गा १५५; स १८०; वज्जा १००; सुपा ४०३)।
रय पुं [**रय**] वेग; (कुमा; से २, ७; सण)।

रय देखो **रव**; (पउम ११४, १७)।

रयग देखो **रयय**=रजक; (श्रा १२; सुपा ५८८)।

रयण न [**रजन**] रँगना, रँग-युक्त करना; (सुअ १, ६, १२)।

रयण वि [**रचन**] करने वाला, निर्माता; "वेडीसचिंतारयणु" (सण)।

रयण पुं [**रदन**] दाँत, दशन; (उप ६८६ टी; पाअ; काप्र १७१; नाट—शकु १३)।

रयण पुंन [**रत्न**] १ माणिक्य आदि बहु-मूल्य पत्थर, मणि; "दुवे रयणा समुप्पन्ना"; (निर १, १; उप ५६३; णाया १, १; सुपा १४७; जी ३; कुमा; हे २, १०१)। २ श्रेष्ठ, स्व-जाति में उत्तम; (सम २६; कुमा ३, ४७), "तहवि हु चंद-सरिच्छा विरला रयणायरे रयणा" (वज्जा १५६)। ३ छन्द-विशेष; (पिंग)। ४ द्वीप-विशेष; (णाया १, ६; पउम ५५, १७)। ५ पर्वत-विशेष का एक कूट; (ठा ४, २; ८)। ६ पुं. ब. रत्नद्वीप का निवासी; (पउम ५५, १७)। °उर न [°पुर] नगर-विशेष; (सण)। °चित्त पुं [°चित्र] विद्याधर वंश का एक राजा; (पउम ५, १५)। °दीव पुं [°द्वीप] द्वीप-विशेष; (णाया १, ६—पत्र १६५)। °निहि पुं [°निधि] समुद्र, सागर; (सुपा ७, १२६)। °पुढवी स्त्री [°पृथिवी] पहली नरक-भूमि, रत्नप्रभा-नामक नरक-पृथिवी; (स १३२)। °पुर देखो °उर; (कुप्र ६; महा; सण)। °प्पभा, °प्पहा स्त्री [°प्रभा] १ पहली नरक-भूमि; (ठा ७—पत्र ३८८; औप; भग)। २ भीम-नामक राक्षसेन्द्र की एक पटरानी; (ठा ४, १—पत्र २०४)। ३ रत्न का तेज; (स १३३)। °मय वि [°मय] रत्नों का बना हुआ; (महा)। °माला स्त्री [°माला] छन्द-विशेष; (अजि २४)। °मालि पुं [°मालिन्] विद्याधर-वंश में उत्पन्न नमि-राज का एक पुत्र; (पउम ५, १४)। °मुस वि [°मुष्] रत्नों को चुराने वाला; (षड्)। °रह पुं [°रथ] विद्याधर वंश का एक राजा; (पउम ५, १४)। °रासि पुं [°राशि] समुद्र; (प्राकृ)। °वइ पुं [°पति] रत्नों का मालिक, धनी, श्रीमंत; (सुपा २६६)। °वई स्त्री [°वती] एक रानी; (रयण ३)। °वज्ज पुं [°वज्र] विद्याधर-वंशीय एक राजा; (पउम ५, १४)। °वह वि [°वह] रत्न-धारक; (गउड १०७१)। °संचय न [°संचय] १ रुचक पर्वत का एक कूट; (इक)। २ एक नगर; (इक; सुर ३, २०)। °संचया स्त्री [°संचया] १ मंगलावती-नामक विजय की राजधानी; (ठा २, ३—पत्र ८०)। २ ईशानेन्द्र की वसुन्धरा-नामक इन्द्राणी की एक राजधानी; (इक)। °समया स्त्री [°समया] मंगलावती-नामक विजय की एक राजधानी; (इक)। °सार पुं [°सार] १ एक राजा; (राज)। २ एक शेठ का नाम; (उप ७२८ टी)। °सिंह पुं [°सिंह] एक जैन आचार्य, संवेगचूलिका-कुलक का कर्ता; (संवे १२)। °सिह पुं [°शिख] एक राजा; (उप १०३१ टी)। °सेहर पुं [°शेखर] १ एक राजा; (रयण ३)। २ विक्रम की पनरहवीं शताब्दी में विद्यमान एक जैन आचार्य और ग्रन्थकार; (सिरि १३४०)। °ाअर, °ागर पुं [°ाकर] १ रत्न की खान; (षड्)। २ समुद्र; (पाअ; सुपा ३७; प्रासू ६७; णाया १, १७—पत्र २२८)। °ाभा स्त्री [°ाभा] देखो °प्पभा; (उत्त ३६, १५७)। °ामय देखो °मय; (महा; औप)। °ायरसुअ पुं [°ाकरसुत] १ चन्द्रमा; २ एक वणिक्-पुत्र; (श्रा १६)। °ावलि, °ावली स्त्री [°ावलि, °ावली] १ रत्नों का हार; (सम्म २२)। २ तप-विशेष; (अंत २५)। ३ ग्रन्थ-विशेष; (दे ८, ७७)। ४ एक विद्याधर-राज-कन्या; (पउम ८, ५२)। °ावह न [°ावह] नगर-विशेष; (महा)। °ासव पुं [°ास्रव] रावण का पिता; (पउम ७, ५६; ७१)। °ासवसुअ पुं [°ास्रवसुत] रावण; (पउम ८, २३१)। °ाहिय वि [°ाधिक] ज्येष्ठ, अवस्था में बड़ा; (राज)।

रयणप्पभिय वि [**रात्नप्रभिक**] रत्नप्रभा-संबन्धी; (पंच २, ६६)।

रयणा स्त्री [**रचना**] निर्माण, कृति; (उत्त १५, १८; चेइय ८६६; सुपा ३०४; रंभा)।

रयणा स्त्री [**रत्ना**] रत्नप्रभा-नामक नरक-भूमि; (पव १७५)।

रयणि पुंस्त्री [**रत्नि**] एक हाथ का नाप, बद्ध-मुष्टि हाथ का परिमाण; (कस; पव ५८; १७६)।

रयणि स्त्री [**रजनि**] देखो **रयणी**=रजनी; (णाया १, २—पत्र ७६; कप्प)। °अर पुं [°चर] १ राक्षस; (से १०, ६६; पाअ)। °अर, °कर पुं [°कर] चन्द्रमा; (हे १, ८ टि; कप्प)। °णाह, °नाह पुं [°नाथ] चन्द्रमा; (पाअ; सुपा ३३)। °भत्त न [°भक्त] रात्रि में खाना; (सुपा ४६५)। °रमण पुं [°रमण] चन्द्रमा; (सण)।

°वल्लह पुं [°वल्लभ] चन्द्रमा; (कप्पू)। °विराम पुं [°विराम] प्रातःकाल, सुबह; (पाअ)।
रयणिंद पुं [रजनीन्द्र] चन्द्रमा; (सण)।
रयणिद्धय न [दे] कुमुद, कमल; (दे ७, ४; षड्)।
रयणी स्त्री [रत्नी] देखो रयणि=रत्नि; (ठा १; सम १२; जीवस १७७; जी ३३; औप)।
रयणी स्त्री [रजनी] १ रात्रि, रात; (पाअ; प्रासू १३६; कुमा)। २ ईशानेन्द्र के लोकपाल की एक पटरानी; (ठा ४, १—पत्र २०४)। ३ चमरेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ५, १—पत्र ३०२)। ४ मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना; (ठा ७—पत्र ३६३)। ५ षड्ज ग्राम की एक मूर्च्छना; "मंगी कोरव्वीया हरी य रयतणी(? यणी) सारकंता य" (ठा ७—पत्र ३६३)। °भोअण न [°भोजन] रात में खाना; (श्रा २०)। °सार न [°सार] सुरत, मैथुन; (से ३, ४८)। देखो रयणि=रजनि; (हे १, ८)।
रयणुच्चय } **रयणोच्चय** } पुं [रत्नोच्चय] १ मेरु-पर्वत; (सुज्ज ५ टी—पत्र ७७; इक)। २ कूट-विशेष; (इक)।
रयणोच्चया स्त्री [रत्नोच्चया] वसुगुप्ता-नामक इन्द्राणी की एक राजधानी; (इक)।
रयत } **रयद** } **रयय** } न [रजत] १ रूप्य, चाँदी; (णाया १, १—पत्र ६६; प्राकृ १२; प्राप्र; पाअ; उवा; औप)। २ एक देव-विमान; (देवेन्द्र १३१)। ३ हाथी का दाँत; ४ हार, माला; ५ सुवर्ण, सोना; ६ रुधिर, खून; ७ शैल, पर्वत; ८ धवल वर्ण; ९ शिखर-विशेष; १० वि. सफेद वर्ण वाला, श्वेत; (प्राकृ १२; प्राप्र; हे १, १७७; १८०; २०९)। °गिरि पुं [°गिरि] पर्वत-विशेष; (णाया १, १; औप)। °वत्त न [°पात्र] चाँदी का बरतन; (गउड)। °मय वि [°मय] चाँदी का बना हुआ; (णाया १, १—पत्र ५४; पि ७०)।
रयय पुं [रजक] धोबी; (स २८६; पाअ)।
रयवली स्त्री [दे] शिशुत्व, बाल्य; (दे ७, ३)।
रयवाडी देखो राय-वाडिआ; (सिरि ७५८)।
रयाव सक [रचय्] बनवाना, निर्माण कराना। रयावेइ, रयाविंति, रयावेह; (कप्प)। संकृ—रयावेत्ता; (कप्प)।
रयाविय वि [रचित] बनवाया हुआ; (स ४३५)।
रल्ला स्त्री [दे] प्रियंगु, मालकाँगनी; (दे ७, १)।
रव सक [रु] १ कहना, बोलना। २ वध करना। ३ गति करना। ४ अक. रोना। ५ शब्द करना। "सुद्धं रवति परिसाए" (सूअ १, ४, १, १८), रवइ; (हे ४, २३३; संक्षि ३३)। वकृ—रवंत, रवेंत; (णाया १,१—पत्र ६५; पिंग; औप)।
रव सक [रावय्] बुलवाना, आह्वान करना। वकृ—रवेंत; (औप)।
रव सक [दे] आर्द्र करना। भवि—रवेहिइ; (णंदि)।
रव पुं [रव] १ शब्द, आवाज; (कप्प; महा; सण; भवि)। २ वि. मधुर शब्द वाला; "रवं अलसं कलमंजुलं" (पाअ)।
रव (अप) देखो रय=रजस्; (भवि)।
रवँण } **रवण** } (अप) देखो रमण; (भवि)।
रवण न [रवण] आवाज करना; "पच्चासन्ने य करेणुया सया रवणसीला आसी" (महा)।
रवण्ण } **रवन्न** } (अप). देखो रम्म=रम्य; (हे ४, ४२२; भवि)।
रवय पुं [दे] मन्थान-दण्ड, विलोने की लकड़ी; गुजराती में 'रवैयो'; (दे ७, ३)।
रवरव अक [रोरूय्] १ खूब आवाज करना। २ बारंबार आवाज करना। वकृ—रवरवंत; (औप)।
रवि वि [रविन्] आवाज करने वाला; (से २, २९)।
रवि न [रवि] १ सूर्य, सूरज; (से २, २९; गउड; सण)। २ राक्षस-वंश का एक राजा; (पउम ५, २६२)। ३ अर्क वृक्ष, आक का पेड़; (हे १, १७२)। °तेअ पुं [°तेजस्] १ इक्ष्वाकु वंश का एक राजा; (पउम ५,४)। २ राक्षस वंश का एक राजा; एक लंकेश; (पउम ५, २६५)। °तेया स्त्री [°तेजा] एक विद्या; (पउम ७, १४१)। °नंदण पुं [°नन्दन] शनि-ग्रह; (श्रा १२)। °प्पभ पुं [°प्रभ] वानरद्वीप का राजा; (पउम ६, ६८)। °भत्ता स्त्री [°भक्ता] एक महौषधि; (ती ५)। °भास पुं [°भास] खड्ग-विशेष, सूर्यहास खड्ग; (पउम ५५, २६)। °वार पुं [°वार] दिन-विशेष, रविवार; (कुप्र ४११)। °सुअ पुं [°सुत] १ शनिश्चर ग्रह; (से ८, २८; सुपा ३९)। २ रामचन्द्र का एक सेनापति, सुग्रीव; (से १५, ५९)। °हास पुं [°हास] सूर्यहास खड्ग; (पउम ५३, २७)।

रविय वि [दे] आर्द्र किया हुआ, भिजाया हुआ; (विसे १४५६)।
रव्वारिअ पुं [दे] दूत, संदेश-हारक; "जेण भवज्भो रव्वारिओ त्ति" (सुपा ४२८)।
रस सक [रस्] चिल्लाना, आवाज करना। रसइ; (गा ४३६)। वकृ—**रसंत**; (सुर २, ७४; सुपा २७३)।
रस पुंन [रस] १ जिह्वा का विषय—मधुर, तिक्त आदि; "एगे रसे", "एवं गंधाइं रसाइं फासाइं" (ठा १०—पत्र ४७१; प्रासू १७४)। २ स्वभाव, प्रकृति; (से ४, ३२)। ३ साहित्य-शास्त्र-प्रसिद्ध शृङ्गार आदि नव रस; (उत्त १४, ३२; धर्मवि १३; सिरि ३६)। ४ जल, पानी; (से २, २७; धर्मवि १३)। ५ सुख; (उत्त १४, ३१)। ६ आसक्ति, दिलचस्पी; (सत्त ५३; गउड)। ७ अनुराग, प्रेम; (पाअ)। ८ मद्य आदि द्रव पदार्थ; (पण्ह १, १; कुमा)। ६ पारद, पारा; (निचू १३)। १० भुक्त अन्न का प्रथम परिणाम, शरीरस्थ धातु-विशेष; (गउड)। ११ कर्म-विशेष; (कम्म १, ३१)। १२ छन्दःशास्त्र-प्रसिद्ध प्रस्तार-विशेष; (पिंग)। १३ माधुर्य आदि रस वाला पदार्थ; (सम ११; नव २८)। °**नाम**-न [°नामन्] कर्म-विशेष; (सम ६७)। °**न्न** वि [°ज्ञ] रस का जानकार; (सुपा २६१)। °**भेइ** वि [°भेदिन्] रस वाली चीजों का भेल-सेल करने वाला; (पउम ७५, ५२)। °**मंत** वि [°वत्] रस-युक्त; (भग; ठा ५, ३—पत्र ३३३)। °**वई** स्त्री [°वती] रसोई; (सुपा ११)। °**ल**, °**लु** वि [°वत्] रस वाला; (हे २, १५६; सुख ३, १)। °**ावण** पुं [°ापण] मद्य की दुकान; (पव ११२)।
रसण न [रसन] जिह्वा, जीभ; (पण्ह १, १—पत्र २३; आचा)।
रसणा स्त्री [रसना] १ मेखला, कांची; (पाअ; गउड; से १, १८)। २ जिह्वा, जीभ; (पाअ)। °**ल** वि [°वत्] रसना वाला; (सुपा ५५६)।
रसद्द न [दे] चूल्ली-मूल, चूल्हे का मूल भाग; (दे ७, २)।
रसा स्त्री [रसा] पृथिवी, धरती; (हे १, १७७; १८०; कुमा)।
रसाउ पुं [दे, रसायुष्] भ्रमर, भौंरा; (दे ७, २; पाअ)।
रसाय पुं [दे] ऊपर देखो; (दे ७, २)।
रसायण न [रसायन] वैद्यक-प्रसिद्ध औषध-विशेष; (विपा १, ७; प्रासू १६२; भवि)।
रसाल पुं [रसाल] आम्र वृक्ष, आम का गाछ; (सम्मत्त १७३)।
रसाला स्त्री [दे, रसाला] मार्जिता, पेय-विशेष; (दे ७, २; पाअ)।
रसालु पुं [दे, रसालु] मज्जिका, राज-योग्य पाक-विशेष—दो पल घी, एक पल मधु, आधा आढक दही, बीस मिरचा तथा दस पल चीनी या गुड़ से बनता पाक; (ठा ३, १—पत्र ११८; सुज्ज २० टी; पव २५६)।
रसि देखो **रस्सि**; (प्राकृ २६)।
रसिअ वि [रसिक] १ रस-ज्ञ, रसिया, शौकीन; (से १, ६)। २ रस-युक्त, रस वाला; (सुपा २६; २१७; पउम ३१, ४६)।
रसिअ वि [रसित] १ रस-युक्त, रस वाला; (पव २)। २ न. शब्द, आवाज; (गउड; पण्ह १, १)।
रसिआ स्त्री [दे, रसिका] १ पूय, पीब, व्रण से निकलता गंदा सफेद खून, गुजराती में 'रसी'; (श्रा १२; विपा १, ७; पण्ह १, १)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)।
रसिंद पुं [रसेन्द्र] पारद, पारा; (जो ३; श्रु १५८)।
रसिग देखो **रसिअ**=रसिक; (पंचा २, ३४)।
रसिर वि [रसितृ] आवाज करने वाला; (सण)।
रसोइ (अप) देखो **रस-वई**; (भवि)।
रस्सि पुंस्त्री [रश्मि] १ किरण; "भरहं समासियाओ आइच्चं चेव रस्सीओ" (पउम ८०, ६४; पाअ; प्राप्र)। २ रस्सी, रज्जु; (प्रासू ११७)
रह अक [दे] रहना। रहइ, रहए, रहेइ; (पिंग; महा; सिरि ८६३), रहसु, रहह; (सिरि ३५५; ३५३)।
रह सक [रह्] त्यागना, छोड़ना; (कप्पू; पिंग)।
रह पुं [रभस] उत्साह; "पुणो पुणो ते स-रहं दुहेंति" (सूअ १, ५, १, १८)। देखो **रहस**=रभस।
रह पुंन [रहस्] १ एकान्त, निर्जन; "तत्थ रहो त्ति आगच्छ" (कुप्र ८२), "लहु मे रहं देसु" (सुपा १७४; वज्जा १५२)। २ प्रच्छन्न, गोप्य; (ठा ३, ४)।
रह पुंन [रथ] १ यान-विशेष, स्यन्दन; "धम्मस्स निव्वाणपहे रहाणि" (सत्त १८; पाअ; कुमा)। २ एक जैन महर्षि; (कप्प)। °**कार** पुं [°कार] रथ-निर्माता, वर्धकि; (सुपा ४४४; कुप्र १०४; उव)। °**चरिया** स्त्री [°चर्या] रथ को हाँकना; "ईसत्थसत्थरहचरियाकुसलो" (महा)। °**जत्ता** स्त्री [°यात्रा] उत्सव-विशेष; (सुपा ५४१; सुर १६, १६;

सिरि ११७५)। °णेउर न [°नूपुर] नगर-विशेष; (पउम १८, ७; इक)। °णेउरचक्कवाल न [°नूपुरचक्कवाल] वैताढ्य पर्वत पर स्थित एक नगर; (पउम ५, ६४; इक)। °नेमि पुं [°नेमि] भगवान् नेमिनाथ का भाई; (उत्त २२, ३६)। °नेमिज्ज न [°नेमीय] उत्तराध्ययन सूत्र का बाईसवाँ अध्ययन; (उत्त २२)। °मुसल पुं [°मुसल] भारतवर्ष की एक प्राचीन लड़ाई, राजा कोणिक और राजा चेटक का संग्राम; (भग ७, ६)। °यार देखो °कार; (पाअ)। °रेणु पुं [°रेणु] एक नाप, आठ त्रसरेणु का एक परिमाण; (इक)। °वीरउर, °वीरपुर न [°वीरपुर] एक नगर; (राज; विसे २५५०)।

रहइं अ [**रभसा**] वेग से; (स ७६२)।

रहंग पुंस्त्री [**रथाङ्ग**] १ चक्रवाक पक्षी; (पाअ; सुर ३, २४७; कुमा); स्त्री—°गी; (सुपा ४६८; सुर १०, १८५; कुमा)। २ न. चक्र, पहिआ; (पाअ)।

रहट्ट देखो **अरहट्ट**; (गा ४६०; पि १४२)।

रहण न [**दे**] रहना, स्थिति, निवास; (धर्मवि २१; रयण ६)।

रहण न [**रहन**] १ त्याग; २ विरति, विराम; "रसरहणं" (पिंग)।

रहमाण पुं [**दे**] १ यवन मत का एक तत्त्व-वेत्ता; (मोह १००)। २ खुदा, अल्ला, परमेश्वर; (ती १५)।

रहस पुं [**रभस**] १ औत्सुक्य, उत्कण्ठा; (कुमा)। २ वेग; ३ हर्ष; ४ पूर्वापर का अविचार; (संक्षि ७; गउड)।

रहस देखो **रहस्स**=रहस्य, "रहसाभक्खाणे" (उवा; संबोध ४२; सुपा ४५४)।

रहसा अ [**रभसा**] वेग से; (गउड)।

रहस्स वि [**रहस्य**] १ गुह्य, गोपनीय; (पाअ; सुपा ३१८)। २ एकान्त में उत्पन्न, एकान्त का; (हे २, २०४)। ३ न. तत्त्व, तात्पर्य, भावार्थ; (ओघ ७६०; रंभा १६)। ४ अपवाद-स्थान; (बृह ६)।

रहस्स वि [**ह्रस्व**] १ लघु, छोटा; (विपा १, ८—पत्र ८३)। २ एक मात्रा वाला स्वर; (उत्त २६, ७२)।

रहस्स न [**ह्रास्व**] १ लाघव, छोटाई। °मंत वि [°वत्] लघु, छोटा; (सूअ २, १, १३)।

रहस्सिय वि [**राहसिक**] प्रच्छन्न, गुप्त; (विपा १, १—पत्र ५)।

रहाविअ वि [**दे**] स्थापित, रखवाया हुआ; (हम्मीर १३)।

रहि वि [**रथिन्**] १ रथ से लड़ने वाला योद्धा; (उप ७२८ टी)। २ रथ को हाँकने वाला; (कुप्र २८७; ४६०; धर्मवि १११)।

रहिअ वि [**रथिक**] ऊपर देखो; "रहिएहिं महारहिणो" (उप ७२८ टी; पण्ह २, ४—पत्र १३०; धर्मवि २०)।

रहिअ वि [**रहित**] परित्यक्त, वर्जित, शून्य; (उवा; दं ३२)।

रहिअ वि [**दे**] रहा हुआ, स्थित; (धर्मवि ११)।

रहु पुं [**रघु**] १ सूर्य वंश का एक स्वनाम-ख्यात राजा; (उत्तर ५०)। २ पुं. ब. रघु-वंश में उत्पन्न क्षत्रिय; (से ४, १६)। ३ पुं. श्रीरामचन्द्र; "ताहे कयंतसरिसी देइ रहू रिवुबले दिट्ठी" (पउम ११३, २१)। ४ कालिदास-प्रणीत एक संस्कृत काव्य-ग्रन्थ; (गउड)। °आर पुं [°कार] रघुवंश-नामक संस्कृत काव्य-ग्रन्थ का कर्ता, कवि कालिदास; (गउड)। °णाह पुं [°नाथ] १ श्री रामचन्द्र; (से १४, १६; पउम ११३, ५५)। २ लक्ष्मण; (से १४, ६२)। °तणय पुं [°तनय] वही अर्थ; (से २, १; १४, २६)। °तिलय पुं [°तिलक] श्रीरामचन्द्र; (सुपा २०४)। °त्तम पुं [°उत्तम] वही अर्थ; (पउम १०२, १७६)। °पुंगव पुं [°पुङ्गव] वही; (से ३, ५; हे २, १८८; ३, ७०)। °सुअ पुं [°सुत] वही; (से ५, १६)।

रहो° देखो **रह**=रहस्; (कप्प; औप)। °कम्म न [°कर्मन्] एकान्त-व्यापार; (ठा ६—पत्र ४६०)।

रा सक [**रा**] देना, दान करना। राइ; (धात्वा १४६)।

रा अक [**रै**] शब्द करना, आवाज करना। राइ; (प्राकृ ६६)।

रा अक [**ली**] श्लेष करना, चिपकना। राइ; (षड्)।

राअला स्त्री [**दे**] प्रियंगु, मालकाँगनी; (दे ७, १)।

राइ देखो **रत्ति**; (हे २, ८८; काप्र १८६; महा; षड्)। २ चमरेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ५, १—पत्र ३०२)। ३ ईशानेन्द्र के सोम लोकपाल की एक पटरानी; (ठा ४, १—पत्र २०४)। °भत्त न [°भक्त] रात्रि-भोजन, रात में खाना; (सुपा ४८५)। °भोअण न [°भोजन] वही अर्थ; (सम ३६; कस)। देखो **राई**=रात्रि।

राइ स्त्री [**राजि**] पंक्ति, श्रेणि; (पाअ; औप)। २ रेखा, लकीर; (कम्म १, १६; सुपा १६७)। ३ राई, राज-सर्षप, एक प्रकार का मसाला; (दे ६, ८८)।

राइ वि [**रागिन्**] राग-युक्त, राग वाला; (दसा ६)। स्त्री—°णी; (महा)।

राइ° देखो **राय**=राजन्; (हे २, १४८; ३, ५२; ५३; कुमा)।

राइअ वि [**राजित**] शोभित; (से १, ५६; कुमा ६, ६३)।

राइअ वि [**रात्रिक**] रात्रि-संबन्धी; (उत्त २६, ४६; औप; पडि)।

राइआ स्त्री [**राजिका**] राई का गाछ; "गोलाणईग्र कच्छे चक्खंतो राइग्राइ पत्ताइं" (गा १७१ ग्र)। देखो **राइगा**।

राइंद पुं [**राजेन्द्र**] बड़ा राजा; (कुमा)।

राइंदिअ पुं [**रात्रिन्दिव**] रात-दिन, ग्रहोरात्र; (भग; आचा; कप्प; पव ७८; सम २१)।

राइक्क वि [**राजकीय**] राज-संबन्धी; (हे २, १४८; कुमा)।

राइगा स्त्री [**राजिका**] राई, राज-सर्सों; (कुप्र ४५)।

राइणिअ वि [**रात्निक**] १ चारित्र वाला, संयमी; (पंचा १२, ६)। २ पर्याय से ज्येष्ठ, साधुत्व-प्राप्ति की ग्रवस्था से बड़ा; (सम ३७; ५८; कप्प)।

राइणिअ वि [**राजकल्प**] राजा के समान वैभव वाला, श्रीमन्त; (सूत्र १, २, ३, ३)।

राइण्ण, **राइन्न** पुं [**राजन्य**] राजवंशीय, क्षत्रिय; (सम १५१; कप्प; औप; भग)।

राइल्ल वि [**रागिन्**] राग-युक्त; (देवेन्द्र २७८)।

राई स्त्री [**राजी**] देखो **राइ**=राजि; (गउड; सुपा ३४; प्रासू ६२; पव २५६)।

राई स्त्री [**रात्रि**] देखो **राइ**=रात्रि; (पाग्र; णाया २—पत्र १५०; औप; सुपा ४६१; कस)। °**दिवस** न [°**दिवस**] रात्रिदिवस, ग्रहर्निश; (सुपा १२७)।

राईमई स्त्री [**राजीमती**] राजा उग्रसेन की पुत्री और भगवान् नेमिनाथ की पत्नी; (पडि)।

राईव न [**राजीव**] कमल, पद्म; (पाग्र; हे १, १८०)।

राईसर पुं [**राजेश्वर**] १ राजाग्रों के मालिक, महाराज; २ युवराज; (औप; उवा; कप्प)।

राउत्त पुं [**राजपुत्र**] राजपूत, क्षत्रिय; (प्राकृ ३०)।

राउल पुं [**राजकुल**] १ राजाग्रों का यूथ, राज-समूह; (कुमा; हे १, २६७; प्राप्र)। २ राजा का वंश; (षड्)। ३ राज-गृह, दरबार; "णं ईदिसस्स राउलस्स दूरेण पणामो कीरदि, जत्थ बंभणावि एवं विडंबिज्जंति" (मोह ११)। देखो **राओल**।

राउलिय वि [**राजकुलिक**] राजकुल-संबन्धी; (सुख १, ३१)।

राउल्ल देखो **राइक्क**; (प्राकृ ३५)।

राएसि पुं [**राजर्षि**] १ श्रेष्ठ राजा; २ ऋषि-तुल्य राजा, संयतात्मा भूपति; (ग्रभि ३६; विक्र ६८; मोह ३)।

राओ ग्र [**रात्रौ**] रात में; (णाया १, १—पत्र ६१; सुपा ४६७; कप्प)।

राओल देखो **राउल**;

> "तो किंपि धणं सयणेहिं विलसियं किंपि वाणिपुत्तेहिं।
> किंपि गयं राओले एस ग्रपुत्तत्ति भणिऊण ॥
> (धर्मवि १४०)।

राग देखो **राय**=राग; (कप्प; सुपा २४१)।

रागि देखो **राइ**=रागिन्; (पउम ११७, ४१)।

राघव देखो **राहव**। °**घरिणी** स्त्री [°**गृहिणी**] सीता, जानकी; (पउम ४६, ५७)।

राच, **राचि°** [चूपै. पै] देखो **राय**=राजन्; (हे ४, ३२५; ३०४; प्राप्र)।

राज देखो **राय**=राजन्; (हे ४, २६७; पि १६८)।

राजस वि [**राजस**] रजो-गुण-प्रधान; "राजसचित्तस्स पुरस्स" (कुप्र ४२८)।

राडि स्त्री [**राटि**] बूम, चिल्लाहट; (सुख १, १५)।

राडि स्त्री [**दे. राटि**] संग्राम, लड़ाई; (दे ७, ४)।

राढा स्त्री [**राढा**] १ विभूषा; (धर्मसं १०१८; कप्पू)। २ भव्यता; (वज्जा १८)। ३ बंगाल का एक प्रान्त; ४ बंगाल देश की एक नगरी; (कप्पू)। °**इत्त** वि [°**वत्**] भव्य ग्रात्मा; "गंजणरहिग्रो धम्मो राढाइत्ताण संपडइ" (वज्जा १८)। °**मणि** पुं [°**मणि**] काच-मणि; (उत्त २०, ४२)।

राण सक [**वि+नम्**] विशेष नमना। राणइ (?); (धात्वा १४६)।

राण पुं [**राजन्**] राणा, राजा; (चंड; सिरि ११४)।

राणय पुं [**राजक**] १ राणा, राजा; (ती १५; सिरि १२३; १२५)। २ छोटा राजा; (सिरि ६८६; १०४०)।

राणिआ, **राणी** स्त्री [**राज्ञिका, °ज्ञी**] रानी, राज-पत्नी; (कुम्मा ३; श्रावक ६३ टी; सिरि १२५; २६७)।

राम सक [**रमय्**] रमण कराना । कृ—**रामेयव्व**; (भत्त ८५) ।

राम पुं [**राम**] १ श्री रामचन्द्र, राजा दशरथ का बड़ा पुत्र; (गा ३५; उप पृ ३७५; कुमा) । २ परशुराम; (कुमा १, ३१) । ३ क्षत्रिय परिव्राजक-विशेष; (औप) । ४ बल-देव, बलभद्र, वासुदेव का बड़ा भाई; (पाअ) । ५ त्रि. रमने वाला; (उप पृ ३७५) । °**कण्ह** पुं [°**कृष्ण**] राजा श्रेणिक का एक पुत्र; (राज) । °**कण्हा** स्त्री [°**कृष्णा**] राजा श्रेणिक की एक पत्नी; (अंत २५) । °**गिरि** पुं [°**गिरि**] पर्वत-विशेष; (पउम ४०, १६) । °**गुत्त** पुं [°**गुप्त**] एक राजर्षि; (सूअ १, ३, ४, २) । °**देव** पुं [°**देव**] श्रीरामचन्द्र; (पउम ४५, २६) । °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] एक जैन मुनि; (अनु २) । °**पुरी** स्त्री [°**पुरी**] अयोध्या नगरी; (ती ११) । °**रक्खिआ** स्त्री [°**रक्षिता**] ईशानेन्द्र की एक पटरानी; (ठा ८—पत्र ४२६; इक) ।

रामणिज्जअ न [**रामणीयक**] रमणीयता, सौन्दर्य; (विक्र २८) ।

रामा स्त्री [**रामा**] १ स्त्री, महिला, नारी; (तंदु ५०; कुमा; पाअ; वज्जा १०६; उप ३५७ टी) । २ नववें जिनदेव की माता; (सम १५१) । ३ ईशानेन्द्र की एक पटरानी; (ठा ८—पत्र ४२६; इक) । ४ छन्द-विशेष; (पिंग) ।

रामायण न [**रामायण**] १ वाल्मीकि-कृत एक संस्कृत काव्य-ग्रन्थ; (पउम २, ११६; महा) । २ रामचन्द्र तथा रावण की लड़ाई; (पउम १०५, १६) ।

रामिअ वि [**रमित**] रमण कराया हुआ; (गा ५६; पउम ८०, १९) ।

रामेसर पुं [**रामेश्वर**] दक्षिण भारत का एक हिन्दू-तीर्थ; (सम्मत्त ८४) ।

राय अक [**राज्**] चमकना, शोभना । रायइ; (हे ४, १००) । वकृ—**राय**°, **रायमाण**; (कप्प) ।

राय देखो **रा=रै** । रायइ; (प्राकृ ६६) ।

राय पुं [**राग**] १ प्रेम, प्रीति; (प्रासू १८०) । २ मत्सर, द्वेष; "न पेमराइल्ला" (देवेन्द्र २७८) । ३ रँगना, रंजन; ४ वर्णन; ५ अनुराग; ६ राजा, नरपति; ७ चन्द्र, चाँद; ८ लाल वर्ण; ९ लाल रँग वाली वस्तु; १० वसन्त आदि स्वर; (हे १, ६८) ।

राय पुं [**राजन्**] १ राजा, नर-पति, नरेश; (आचा; उवा; श्रा २७; सुपा १०३) । २ चन्द्र, चन्द्रमा; (श्रा २७; हम्मीर ३; धर्मवि ३) । ३ एक महाग्रह; (सुज्ज २०) । ४ इन्द्र; ५ क्षत्रिय; ६ यक्ष; ७ शुचि, पवित्र; ८ श्रेष्ठ, उत्तम; (हे ३, ४९; ५०) । ९ इच्छा, अभिलाष; (सं १, ६) । १० छन्द-विशेष; (पिंग) । °**ईअ** त्रि [°**की-य**] राज-संबन्धी; (प्राकृ ३५) । °**उत्त** पुं [°**पुत्र**] राज-पूत, राज-कुमार; (सुर ३, १६५) । °**उल** देखो **रा-उल**; (हे १, २६७; कुमा; षड्; प्राप्र; अभि १८४) । °**कीअ** देखो °**ईअ**; (नाट—शकु १०४) । °**कुल** देखो °**उल**; (महा) । °**केर**, °**क्क** वि [°**कीय**] राज-सबन्धी; (हे २, १४८; कुमा; षड्) । °**गिह** न [°**गृह**] मगध देश की प्राचीन राजधानी, जो आजकल 'राजगिर' नाम से प्रसिद्ध है; (ठा १०—पत्र ४७७; उवा; अंत) । °**गिही** स्त्री [°**गृही**] वही अर्थ; (ती ३) । °**चंपय** पुं [°**चम्पक**] वृक्ष-विशेष, उत्तम चम्पक-वृक्ष; (श्रा १२) । °**धम्म** पुं [°**धर्म**] राजा का कर्तव्य; (नाट—उत्तर ४१) । °**धाणी** स्त्री [°**धानी**] राज-नगर, राजा का मुख्य नगर, जहां राजा रहता हो; (नाट—चैत १३२) । °**पत्ती** स्त्री [°**पत्नी**] रानी; (सुर १३, ५; सुपा ३७५) । °**पसेणीय** वि [°**प्रश्नीय**] एक जैन आगम-ग्रन्थ; (राय) । °**पह** पुं [°**पथ**] राज मार्ग; (महा; नाट—चैत १३०) । °**पिंड** पुं [°**पिण्ड**] राजा के घर की भिक्षा—आहार; (सम ३९) । °**पुत्त** देखो °**उत्त**; (गउड) । °**पुर** न [°**पुर**] नगर-विशेष; (पउम २, ८) । °**पुरिस** पुं [°**पुरुष**] राजा का आदमी, राज-कर्मचारी; (पउम २८, ४) । °**मग्ग** पुं [°**मार्ग**] राजपथ, सड़क; (औप; महा) । °**मास** पुं [°**माष**] धान्य-विशेष, बरबटी; (श्रा १८; संबोध ४३) । °**राय** पुं [°**राज**] राजाओं का राजा, राजेश्वर; (सुपा १०७) । °**रिसि** देखो **राएसि**; (णाया १, ५—पत्र १११; उप ७२८ टी; कुमा; सण) । °**रुक्ख** पुं [°**वृक्ष**] वृक्ष-विशेष; (औप) । °**लच्छी** स्त्री [°**लक्ष्मी**] राज-वैभव; (अभि १३१; महा) । °**ललिय** पुं [°**ललित**] आठवें बलदेव के पूर्व जन्म का नाम; (सम १५३) । °**वट्टय** न [°**वार्तक**] राज-संब-न्धी वार्ता-समूह; (हे २, ३०) । °**वल्ली** स्त्री [°**वल्ली**] लता-विशेष; (पण्ण १—पत्र ३६) । °**वाडिआ**, °**वाडी** स्त्री [°**पाटिका**, °**पाटी**] चतुरंग सैन्य-श्रम-करण, राजा की चतुर्विध सेना के साथ सवारी; (कुमा; कुप्र ११९; १२०; सुपा

१२१)। °सद्दूल पुं [°शार्दूल] चक्रवर्ती राजा, श्रेष्ठ राजा; (सम १६२)। °सिट्ठि पुं [°श्रेष्ठिन्] नगर-शेठ; (भवि)। °सिरी स्त्री [°श्री] राज-लक्ष्मी; (से १, १३)। °सुअ पुं [°सुत] राज-कुमार; (कप्पू ; उप ७२८ टी)। सुअ पुं [°शुक] उत्तम तोता; (उप ७२८ टी)। °सुअ पुं [°सूय] यज्ञ-विशेष; "पिइमेहमाइमेहे रायसुए आसमेह-पसुमेहे" (पउम ११, ४२)। °सेण पुं [°सेन] छन्द-विशेष; (पिंग)। °सेहर पुं [°शेखर] १ महादेव, शिव; २ एक राजा; (सुपा ५२६)। ३ एक कवि, कर्पूरमंजरी का कर्ता; (कप्पू)। °हंस पुंस्त्री [°हंस] १ उत्तम हंस-पक्षी; २ श्रेष्ठ राजा; (सुर १२, ३४; गा ६२४; गउड; सुपा ११६; रंभा; भवि); स्त्री—°सी; (सुपा ३३४; नाट—रत्ना २३)। °हर न [°गृह] राजा का महल; (पउम ८१, ८६; हे २, १४४)। °हाणी देखो °धाणी; (सम ८०; पउम २०, ८)। °हिराय, °ाहिराय पुं [°अधि-राज] राजाओं का राजा, चक्रवर्ती राजा; (काल; सुपा १०५)। °ाहिव पुं [°ाधिप] वही अर्थ; (सुपा १०५)।

राय देखो **राव**=राव; (से ६, ७२)।

राय पुं [दे] चटक, गौरैया पक्षी; (दे ७, ४)।

राय पुं [रात्र] रात्रि, रात; (आचा)।

राय° देखो **राय**=राज्।

रायंकुस } पुंन [दे] १ वेतस का पेड़; (पाअ; दे ७, **रायंबु** } १४)। २ पुं. शरभ; (दे ७, १४)।

रायंस पुं [**राजांस**] राज-यक्ष्मा, क्षय का व्याधि; (आचा)।

रायंसि वि [**राजांसिन्**] राज-यक्ष्मा वाला, क्षय का रोगी; (आचा)।

रायगद्द स्त्री [दे] जलौका; (दे ७, ५)।

रायग्गल पुं [**राजार्गल**] ज्योतिष्क ग्रह-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७८)।

रायणिअ देखो **राइणिअ**=रात्निक; (उव; अोघभा २२३)।

रायणी स्त्री [**राजादनी**] खिन्नी, खिरनी का पेड़; (पउम ५३, ७६)।

रायण्ण देखो **राइण्ण**; (ठा ३, १—पत्र ११४; उप ३५६ टी)।

रायमइया स्त्री [**राजीमतिका**] देखो **राईमई**; (कुप्र १)।

रायस देखो **राअस**; (स ३; से ३, १५)।

रायाण देखो **राय**=राजन् ; (हे ३, ५६; षड्)।

राल } पुंन [**राल**, °**क**] धान्य-विशेष, एक प्रकार की **रालग** } कङ्गु; (सुअ २, २, ११; ठा ७—पत्र ४०५; **रालय** } पिंड ६२३; वज्जा ३४)।

राला स्त्री [दे] प्रियंगु, मालकाँगनी; (दे ७, १)।

राव सक [दे] आर्द्र करना ; भवि—रावेहिति; (विसे २४६ टी)।

राव देखो **रंज**=रञ्जय्। रावेइ; (हे ४, ४६)। हेकृ—**राविउं**; (कुमा)।

राव सक [**रावय्**] पुकारना, आह्वान करना। वकृ—**रावेंत**; (ओप)।

राव पुं [**राव**] १ रोला, कलकल; (पाअ)। २ पुकार, आवाज; (सुपा ३४८; कुमा)।

रावण पुं [**रावण**] १ एक स्वनाम-प्रसिद्ध लंका-पति; (पि ३६०)। २ गुल्म-विशेष; (पण्ण १—पत्र ३२)।

राविअ वि [**रञ्जित**] रँगा हुआ; (दे ७, ५)।

राविअ वि [दे] आस्वादित; (दे ७, ५)।

रास } पुं [**रास**, °**क**] एक प्रकार का नृत्य, जिसमें एक **रासग** } दूसरे का हाथ पकड़ कर नाचते नाचते और गान करते करते मंडलाकार फिरना होता है; (दे २, ३८; पाअ; वज्जा १२२; सम्मत्त १४१; धर्मवि ८१)।

रासभ देखो **रासह**; (सुर २, १०२)।

रासय देखो **रासग**; (सुर १, ४६; सुपा ५०; ४३३)।

रासह पुंस्त्री [**रासभ**] गर्दभ, गदहा; (पाअ; प्राप्र; रंभा)। स्त्री—°**ही**; (काल)।

रासाणंदिअय न [**रासानन्दितक**] छन्द-विशेष; (अजि १२)।

रासालुद्धय पुं [**रासालुब्धक**] छन्द-विशेष; (अजि १०)।

रासि देखो **रस्सि**; (संक्षि १७)।

रासि पुंस्त्री [**राशि**] १ समूह, ढग, ढेर; (ओघ ४०७; ओप; सुर २, ५; कुमा)। २ ज्योतिष्क-प्रसिद्ध मेष आदि बारह राशि; (विचार १०६)। ३ गणित-विशेष; (ठा ४, ३)।

राह पुं [**राध**] १ वैशाख मास; २ वसन्त ऋतु; (से १, १३)। ३ एक जैन आचार्य; (उप २८५; सुख २, १५)।

राह पुं [दे] १ दयित, प्रिय; २ वि. निरन्तर; ३ शोभित; ४ सनाथ; ५ पलित, सफेद केश वाला; (दे ७, १३)। ६ रुचिर, सुन्दर; (पाअ)।

राहअ } पुं [राघव] १ रघु-वंश में उत्पन्न; (उत्तर २०)।
राहव } २ श्रीरामचन्द्र; (से १२, २२; १, १३; ४७)।

राहा स्त्री [राधा] १ वृन्दावन की एक प्रधान गोपी, श्रीकृष्ण की पत्नी; (वज्जा १२२; पिंग)। २ राधावेध में रखी जाती पूतली; (उप पृ १३०)। ३ शक्ति-विशेष; ४ कर्ण की पालन करने वाली माता; (प्राकृ ४२)। °मंडव पुं [°मण्डप] जहां पर राधावेध किया जाय वह स्थान; (सुपा २६६)। °वेह पुं [°वेध] एक तरह की वेध-क्रिया, जिसमें चक्राकार घूमती पूतली की वाम चक्षु वींधी जाती है; (उप ६३५; सुपा २५५)।

राहिआ } स्त्री [राधिका] ऊपर देखो; (गा ८६; हे ४,
राही } ४४२; प्राकृ ४२)।

राहु पुं [राहु] १ ग्रह-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७८; पाअ)। २ कृष्ण पुद्गल-विशेष; (सुज्ज २०)। ३ विक्रम की पहली शताब्दी के एक जैन आचार्य; (पउम ११८, ११७)।

राहेअ पुं [राधेय] राधा-पुत्र, कर्ण; (गउड)।

रि अ [रे] संभाषण-सूचक अव्यय; (तंदु ५०; ५२ टी)।

रि सक [ऋ] गमन करना। कर्म—अज्जए; (विसे १३६६)।

रिअ सक [री] गमन करना। रियइ, रियंति, रिए; (सूअ २, २, २०; सुपा ४४५; उत्त २४, ४)। वकृ—रियंत; (पउम २८, ४)।

रिअ सक [प्र + विश्] प्रवेश करना, पैठना। रिअइ; (हे ४, १८३; कुमा)।

रिअ न [ऋत] १ गमन; "पुरओ रियं सोहमाणे" (भग)। २ सत्य; (भग ८, ७)।

रिअ वि [दे] लून, काटा हुआ; (षड्)।

रिउ देखो उउ; (हे १, १४१; कुमा; पत्र १४१)।

रिउ वि [ऋजु] १ सरल, सीधा; (सुपा ३४६)। २ न. विशेष पदार्थ, सामान्य-भिन्न वस्तु; (पव २७०)। °सुत्त पुं [°सूत्र] नय-विशेष; (विसे २२३१; २६०८)। देखो उज्जु।

रिउ पुं [रिपु] शत्रु, वैरी, दुश्मन; (सुर २, ६६; कुमा)। °महण पुं [°मथन] राक्षस-वंश का एक राजा; (पउम ५, २६३)।

रिउ स्त्री [ऋच्] वेद का नियत अक्षर-पाद वाला अंश; °व्वेय पुं [°वेद] एक वेद-ग्रन्थ; (णाया १, ५; कप्प)।

रिंखण न [रिङ्खण] सर्पण, गति, चाल; (पउम २५, १२)।

रिंखि वि [रिङ्खिन्] चलने वाला; "गिद्धावरंखि हदन्नए (?गिद्धु व्व रिंखी हदन्नए)" (पिंड ४७१)।

रिंग देखो रिग। रिंगइ, रिंगए; (हे ४, २५६ टि; षड्; पिंग)। वकृ—रिंगंत; (हास्य १४६)।

रिंगण न [रिङ्गण] चलना, सर्पण; (पव २)।

रिंगणी स्त्री [दे] वल्ली-विशेष, कण्टकारिका, गुजराती में 'रिंगणी'; (दे २, ४; उर २, ८)।

रिंगिअ न [दे] भ्रमण; (दे ७, ६)।

रिंगिअ न [रिङ्गित] १ रेंगना, कच्छप की तरह हाथ के बल चलना; २ गुरु-वन्दन का एक दोष; (गुभा २४)।

रिंगिलिया स्त्री [दे] वाद्य-विशेष; (राज)।

रिंछ (अप) देखो रिच्छ=ऋक्ष; (भवि)।

रिंछोली स्त्री [दे] पंक्ति, श्रेणि; (दे ७, ७; सुर ३, ३१; विसे १४३६ टी; पाअ; चेइय ४४; सम्मत्त १८८; धर्मवि ३७; भवि)।

रिंडी स्त्री [दे] कन्थाप्राया, कन्था की तरह का फटा-टूटा आच्छादन-वस्त्र; (दे ७, ५)।

रिक्क वि [दे] स्तोक, थोड़ा; (दे ७, ६)।

रिक्क देखो रित्त=रिक्त; (आचा; पाअ; पउम ८, ११८; सुपा ४२२; चउ ३६)।

रिक्किअ वि [दे] खंडित, सड़ा हुआ; (दे ७, ७)।

रिक्ख अक [रिङ्ख्] चलना। वकृ—"गिरिव्व अक्खिक्खन्त-पक्खो अंतरिक्खे रिक्खंतो लक्खिज्जइ" (कुप्र ६७)।

रिक्ख वि [दे] १ वृद्ध, बूढ़ा; २ पुं. वयः-परिणाम, वृद्धता; (दे ७, ६)।

रिक्ख पुं [ऋक्ष] १ भालू, श्वापद प्राणि-विशेष; (हे २, १६)। २ न. नक्षत्र; (पाअ; सुर ३, २६; ८, ११६)। °पह पुं [°पथ] आकाश; (सुर ११, १७१)। °राय पुं [°राज] वानर-वंश का एक राजा; (पउम ८, २३४)।

रिक्खण न [दे] १ उपलम्भ, अधिगम; २ कथन; (दे ७, १४)।

रिक्खा देखो रेहा=रेखा; (ओघ १७६)।

रिग } अक [रिङ्ग्] १ रेंगना, चलना। २ प्रवेश
रिग्ग } करना। रिगइ, रिग्गइ; (हे ४, २५६; टि)।

रिग्ग पुं [दे] प्रवेश; (दे ७, ५)।

रिच स्त्रीन. देखो रिउ=ऋच्; (पि ५६; ३१८)। स्त्री—°चा; (नाट—रत्ना ३८)।

रिच्छ वि [दे] वृद्ध, बूढ़ा; (दे ७, ६)।

रिच्छ देखो **रिक्ख=ऋक्ष**; (हे १, १४०; २, १९; पाअ)। °**ाहिव** पुं [°**ाधिप**] जाम्बवान्, राम का एक सेनापति; (से ४, १८; ४५)।

रिच्छभल्ल पुं [दे] भालू, रींछ; (दे ७, ७)।

रिजु देखो **रिउ=ऋजु**; (भग)।

रिजु देखो **रिउ=ऋजु**; (विसे ७८४)।

रिज्ज देखो **रिअ=री**। रिज्जइ; (आचा)।

रिउजु देखो **रिउ=ऋजु**; (हे १, १४१; संक्षि १७; कुमा)।

रिज्झ अक [**ऋध्**] १ बढ़ना। २ रीझना, खुशी होना। रिज्झइ; (भवि)।

रिट्ठ पुं [दे. **अरिष्ट**] १ अरिष्ट, दुरित; (षड्; पि १४२)। २ दैत्य-विशेष; (षड्; से १, ३)। ३ काक, कौआ; (दे ७, ६; णाया १, १—पत्र ६३; षड्; पाअ)। °**नेमि** पुं [°**नेमि**] बाईसवें जिनदेव; (पि १४२)।

रिट्ठ पुं [**रिष्ट**] १ देव-विशेष, रिष्ट-नामक विमान का निवासी देव; (णाया १, ८—पत्र १५१)। २ वेलम्ब और प्रभञ्जन नामक इन्द्रों के लोकपाल; (ठा ४, १—पत्र १९८)। ३ एक वृष साँढ, जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था; (पण्ह १, ४—पत्र ७२)। ४ पक्षि-विशेष; (पउम ७, १७)। ५ न. रत्न-विशेष; (चेइय ६१५; औप; णाया १, १ टी)। ६ एक देव-विमान; (सम ३५)। ७ पुंन. फल-विशेष, रीठा; (उत्त ३४, ४; सुख ३४, ४)। °**पुरी** स्त्री [°**पुरी**] कच्छावती-विजय की राजधानी; (ठा २, ३—पत्र ८०; इक)। °**मणि** पुं [°**मणि**] श्याम रत्न-विशेष; (सिरि ११९०)।

रिट्ठा स्त्री [**रिष्टा**] १ महाकच्छ विजय की राजधानी; (ठा २, ३—पत्र ८०; इक)। २ पाँचवीं नरक-भूमि; (ठा ७—पत्र ३८८)। ३ मदिरा, दारू; (राज)।

रिट्ठाभ न [**रिष्टाभ**] १ एक देव-विमान; (सम १४)। २ लोकान्तिक देवों का एक विमान; (पव २६७)।

रिट्ठि स्त्री [**रिष्टि**] १ खड्ग, तलवार; (दे ७, ६)। २ अशुभ; ३ पुं. रन्ध्र, विवर; (संक्षि ३)।

रिड्ड सक [**मण्डय्**] विभूषित करना। रिडइ; (षड्)।

रिण न [**ऋण**] १ करजा, धार लिया हुआ धन; (गा ११३; कुमा; प्रासू ७७)। २ जल, पानी; ३ दुर्ग, किला; ४ दुर्ग भूमि; ५ आवश्यक कार्य, फरज; ६ कर्म; (हे १, १४१; प्राप्र)। देखो **अण=ऋण**।

रिणिअ वि [**ऋणित**] करजदार, अधमर्ण; (कुप्र ४३६)।

रिते अ [**ऋते**] सिवाय, बिना; (पिंड ३७०)।

रित्त वि [**रिक्त**] १ खाली, शून्य; (से ७, ११; गा ४९०; धर्मवि ६; ओघभा १६६)। २ न. विरेक, अभाव; (उत्त २८, ३३)।

रित्तूडिअ वि [दे] शातित, झड़वाया हुआ; (दे ७, ८)।

रित्थ न [**रिक्थ**] धन, द्रव्य; (उप ५२०; पाअ; स ६०; सुख ४, ६; महा)।

रिद्ध वि [**ऋद्ध**] ऋद्धि-संपन्न; (णाया १, १; उवा; औप)।

रिद्ध वि [दे] पक्व, पका; (दे ७, ६)।

रिद्धि पुंस्त्री [दे] समूह, राशि; (दे ७, ६)।

रिद्धि स्त्री [**ऋद्धि**] १ संपत्ति, समृद्धि, वैभव; (पाअ; विपा २, १; कुमा; सुर २, १९८; प्रासू १२; ६२)। २ वृद्धि; ३ देव-विशेष; ४ ओषधि-विशेष; (हे १, १२८; २, ४१; पंचा ८)। ५ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**म**, °**ल्ल** वि [°**मत्**] समृद्ध, ऋद्धि-संपन्न; (ओघ ६८४; पउम ५, ५६; सुर २, ६८; सुपा २२३)। °**सुंदरी** स्त्री [°**सुन्दरी**] एक वणिक्-कन्या; (उप ७२८ टी)।

रिपु देखो **रिवु**; (कप्प)।

रिप्प न [दे] पृष्ठ, पीठ; (दे ७, ५)।

रिभिय न [**रिभित**] १ एक प्रकार का नृत्य; (ठा ४, ४—पत्र २८५)। २ स्वर का घोलन; ३ वि. स्वर-घोलना से युक्त; (राज; णाया १, १—पत्र १३)।

रिंमिण वि [दे] रोने की आदत वाला; (दे ७, ७; षड्)।

रिरंसा स्त्री [**रिरंसा**] रमण की चाह, मैथुनेच्छा; (अज्झ ७९)।

रिरिअ वि [दे] लीन; (दे ७, ७)।

रिल्ल अक [दे] शोभना। वकृ—**रिल्लंत**; (भवि)।

रिवु देखो **रिउ=रिपु**; (पउम १२, ४१; ४४, ५०; स १३८; उप पृ ३३१)।

रिसभ, **रिसह** पुं [**ऋषभ**] १ स्वर-विशेष; (ठा ७—पत्र ३९३)। २ अहोरात्र का अठावीसवाँ मुहूर्त; (सम ५१; सुज्ज १०, १३)। ३ संहत अस्थि-द्वय के ऊपर का वलयाकार वेष्टन-पट्ट; "रिसहो य होइ पट्टो" (जीवस ४९)। देखो **उसभ**; (औप; हे १, १४१; सम १४९; कम्म १, १९; सुपा १६०)।

°**रिसह** पुं [°**ऋषभ**] श्रेष्ठ, उत्तम; (कुमा)।

रिसि पुं [**ऋषि**] मुनि, संत, साधु; (औप; कुमा; सुपा ३१;

भवि १०१; उप ७६८ टी)। °घाय पुं [°घात] मुनि-हत्या; (उप ४६६)।
रिइ सक [प्र+विश्] प्रवेश करना, पैठना। रिइइ; (षड्)।
री) अक [री] जाना, चलना। रीयइ, रीयए, रीयंते,
रीअ) रीइज्जा; (आचा; सूअ १, २, २, ५; उत्त २४, ७)। भूका—रीइत्था; (आचा)। वकृ—रीयंत, रीयमाण; (आचा)।
रीइ स्त्री [रीति] प्रकार, ढंग, पद्धति; "तं जयं विडंबंति निच्चं नवनवरीईहिं" (धर्मवि ३२; कप्पू)।
रीड सक [मण्डय्] अलंकृत करना। रीडइ; (हे ४, ११५)।
रीडण न [मण्डन] अलंकरण; (कुमा)।
रीढ स्त्रीन [दे] अवगणन, अनादर; (दे ७, ८), स्त्री—°ढा; (पाअ; धम्म ११ टी; पंचा २, ८; बृह १)।
रीण वि [रीण] १ क्षरित, स्नुत। २ पीडित; (भत्त २)।
रीर अक [राज्] शोभना, चमकना, दीपना। रीरइ; (हे ४, १००)।
रीरिअ वि [राजित] शोभित; (कुमा)।
रीरी स्त्री [रीरी] धातु-विशेष, पीतल; (कुप्र ११; सुपा १४२)।
रु स्त्री [रुज्] रोग, बिमारी; "अह (? रु) उवसग्गो" (तंदु ४६)।
रुअ अक [रुद्] रोना। रुअइ; (षड्; संक्षि ३६; प्राकृ ६८; महा)। भवि—रोच्छं; (हे ३, १७१)। वकृ—रुअ°, रुअंत, रुयमाण; (गा २१६; ३७६; ४००; सुर २, ६६; ११२; ४, १२६)। संकृ—रोत्तूण; (कुमा; प्राकृ ३४)। हेकृ—रोत्तुं; (प्राकृ ३४)। कृ—रोत्तव्व; (हे ४, २१२; से ११, ६२)। प्रयो—रुआवेइ; (महा), रुआवंति; (पुप्फ ४४७)।
रुअ न [रुत] शब्द, आवाज; (से १, २८; गाया १, १३; पव ७३ टी)।
रुअ देखो रूअ=रूप; (इक)।
रुअ देखो रूअ=(दे); (औप)।
रुअंती स्त्री [रुदती] वल्ली-विशेष; (संबोध ४७)।
रुअंस देखो रूअंस; (इक)।
रुअग पुं [रुचक] १ कान्ति, प्रभा; (पणह १, ४—पत्र ७८; औप)। २ पर्वत-विशेष; "नगुत्तमो होइ पव्वओ रुयगो" (दीव)। ३ द्वीप-विशेष; (दीव)। ४ एक समुद्र; (सुज्ज १६)। ५ एक विमानावास—देव-विमान; (देवेन्द्र १३२)। ६ न. इन्द्रों का एक आभाव्य विमान; (देवेन्द्र २६३)। ७ रत्न-विशेष; (उत्त ३६, ७६; सुख ३६, ७६)। ८ रुचक पर्वत का पाँचवाँ कूट; (दीव)। ९ निषध पर्वत का आठवाँ कूट; (इक)। °प्पभ न [°प्रभ] महाहिमवंत पर्वत का एक कूट; (ठा २, ३)। °वर पुं [°वर] १ द्वीप-विशेष; (सुज्ज १६)। २ पर्वत-विशेष; (पणह २, ४—पत्र १३०)। ३ समुद्र-विशेष; ४ रुचकवर समुद्र का एक अधिष्ठाता देव; (जीव ३—पत्र ३६७)। °वरभद्द पुं [°वरभद्र] रुचकवर द्वीप का अधिष्ठायक एक देव; (जीव ३—पत्र ३६६)। °वरमहाभद्द पुं [°वरमहाभद्र] वही अर्थ; (जीव ३)। °वरमहावर पुं [°वरमहावर] रुचकवर समुद्र का एक अधिष्ठाता देव; (जीव ३)। °वरा-वभास पुं [°वरावभास] १ द्वीप-विशेष; २ समुद्र-विशेष; (जीव ३)। °वरावभासभद्द पुं [°वरावभासभद्र] रुचकवरावभास द्वीप का एक अधिष्ठाता देव; (जीव ३)। °वरावभासमहाभद्द पुं [°वरावभासमहाभद्र] वही अर्थ; (जीव ३)। °वरावभासमहावर पुं [°वराव-भासमहावर] रुचकवरावभास-नामक समुद्र का एक अधि-ष्ठाता देव; (जीव ३)। °वरावभासवर पुं [°वरावभा-सवर] वही अर्थ; (जीव ३—पत्र ३६७)। °वरोद पुं [°वरोद] समुद्र-विशेष; (सुज्ज १६)। °वरोभास देखो °वरावभास; (सुज्ज १६)। °वई स्त्री [°वती] एक इन्द्राणी; (णाया २—पत्र २५२)। °ोद पुं [°ोद] समुद्र-विशेष; (जीव ३—पत्र ३६६)।
रुअगिंद पुं [रुचकेन्द्र] पर्वत-विशेष; (सम ३३)।
रुअगुत्तम न [रुचकोत्तम] कूट-विशेष; (इक)।
रुअण न [रोदन] रुदन, रोना; (संबोध ४)।
रुअय देखो रुअग; (सम ६२)।
रुअल्लइआ स्त्री [दे] उत्कण्ठा; (दे ७, ८)।
रुआ स्त्री [रुज्] रोग, बिमारी; (उव; धर्मसं ५६८)।
रुआविअ वि [रोदित] रुलाया हुआ; (गा ३८६)।
रुइ स्त्री [रुचि] १ कान्ति, प्रभा, तेज; (सुर ७, ४; कुमा)। २ अनुराग, प्रेम; (जो ५१)। ३ आसक्ति; (प्रासू १६६)। ४ स्पृहा, अभिलाष; ५ शोभा; ६ बुभुक्षा, खाने की इच्छा; ७ गोरोचना; (षड्)।
रुइअ वि [रुचित] १ अभीष्ट, पसंद; (सुर ७, २४३; महा)। २ पुंन. विमानावास-विशेष, एक देव-विमान; (देवेन्द्र १३२)।

रुइअ देखो **रुण्ण**=रुदित; (स १२०)।

रुइर वि [**रुचिर**] १ सुन्दर, मनोरम; (पात्र)। २ दीप्र, कान्ति-युक्त; (तंदु २०)। ३ पुंन. एक विमानेन्द्रक, देव-विमान-विशेष; (देवेन्द्र १३१)।

रुइर वि [**रोदितृ**] रोने वाला; स्त्री—°री; (पि ५९६; गा २१६ अ)।

रुइल वि [**रुचिर, °ल**] १ शोभन, सुन्दर; (ओप; णाया १, १ टी; तंदु २०)। २ दीप्र, चमकता; (पण्ह १, ४—पत्र ७८; सुम २, १, ३)। ३ पुंन. एक देव-विमान; (सम ३८)।

रुइल्ल न [**रुचिर, रुचिमत्**] एक देव-विमान; (सम १५)। °**कंत** न [°**कान्त**] एक देव-विमान; (सम १५)। °**कूड** न [°**कूट**] एक देव-विमान; (सम १५)। °**ज्झय** न [°**ध्वज**] देवविमान-विशेष; (सम १५)। °**प्पभ** न [°**प्रभ**] एक देव-विमान; (सम १५)। °**लेस** न [°**लेश्य**] एक देव-विमान; (सम १५)। °**वण्ण** न [°**वर्ण**] देवविमान-विशेष; (सम १५)। °**सिंग** न [°**शृङ्ग**] एक देव-विमान; (सम १५)। °**सिट्ठ** न [°**सृष्ट**] एक देव-विमान; (सम १५)। °**ावत्त** न [°**ावर्त**] एक देव-विमान; (सम १५)।

रुइल्लुत्तरवडिंसग न [**रुचिरोत्तरावतंसक**] एक देव-विमान; (सम १५)।

रुंच सक [**रुञ्च्**] रुई से उसके बीज को अलग करने की क्रिया करना। वकृ—**रुंचंत**; (पिंड ५७४)।

रुंचण न [**रुञ्चन**] रुई से कपास का अलग करने की क्रिया; (पिंड ५८८)।

रुंचणी स्त्री [**दे**] घरट्टी, दलने का पत्थर-यन्त्र; (दे ७, ८)।

रुंज अक [**रु**] आवाज करना। रुंजइ; (हे ४, ५७; षड्)।

रुंजग पुं [**दे, रुञ्जक**] वृक्ष, पेड़, गाछ; "कुहा महीरुहा वच्छा रोवगा रुंजगाइ अ" (दसनि १)।

रुंजिय न [**रवण**] शब्द, आवाज, गर्जना; (स ४२०)।

रुंट देखो **रुंज**। रुंटइ; (हे ४, ५७; षड्)। वकृ—**रुंटंत**; (स ६२; पउम १०५, ५५; गउड)।

रुंटणया स्त्री [**दे**] अवज्ञा, अनादर; (पिंड २१०)।

रुंटणिया स्त्री [**दे, रवणिका**] रोदन-क्रिया; (णाया १, १६—पत्र २०२)।

रुंटिअ न [**रुत**] गुञ्जारव, आवाज; "रुंटिअं अलिविरुअं" (पाअ; कुमा)।

रुंड पुंन [**रुण्ड**] बिना सिर का धड़, कबन्ध; "पडिया य मुंडरुंडा" (कुप्र १३५; गउड; भवि; सण)।

रुंढ पुं [**दे**] आक्षिक, कितव, जुआड़ी; (दे ७, ८)।

रुंढिअ वि [**दे**] सफल; (दे ७, ८)।

रुंद वि [**दे**] १ विपुल, प्रचुर; (दे ७, १४; गा ४०२; सुपा २६३; वज्जा १२८; १६२)। २ विशाल, विस्तीर्ण; (विसे ७१०; स ७०२; पव ६१; ओघ)। ३ स्थूल, मोटा, पीन; (पाअ)। ४ मुखर, वाचाल; (दे ७, १४)।

रुंदी स्त्री [**दे**] विस्तीर्णता, लम्बाई; (वज्जा १६४)।

रुंध सक [**रुध्**] रोकना, अटकाना। रुंधइ; (हे ४, १३३; २१८)। कर्म—रुंधिज्जइ, रुब्भइ, रुब्भए; (हे ४, २४५; कुमा)। वकृ—**रुंधंत**; (कुमा)। कवकृ—**रुब्भंत, रुब्भमाण, रुज्झंत**; (पउम ७३, २६; से ४, १७; भवि)। कृ—**रुंधिअव्व**; (अभि ५०)।

रुंधिअ वि [**रुद्ध**] रोका हुआ; (कुमा)।

रुंप पुंन [**दे**] १ त्वचा, सूक्ष्म छाल; (गा ११६; १२०; वज्जा ४२)। २ उल्लिखन; (वज्जा ४२)।

रुंपण न [**रोपण**] रोपाना, वपन कराना, वापन; (पिंड १६२)।

रुंफ देखो **रुंप**; (पि २०८)।

रुंभ देखो **रुंध**। रुंभइ; (हे ४, २१८; प्राप्र)। वकृ—**रुंभंत**; (पि ५३५)। कृ—**रुंभिअव्व**; (से ६, ३)।

रुंभण न [**रोधन**] रोक, अटकायत; (पण्ह १, १; कुप्र ३७७; गा ६६०)।

रुंभय वि [**रोधक**] रोकने वाला; (स ३८१)।

रुंभाविअ वि [**रोधित**] रुकवाया हुआ, बँद किया हुआ; (श्रा २७)।

रुंभिअ वि [**रुद्ध**] रोका हुआ; (हेका ६६; सुपा १२७)।

रुक्किणी देखो **रुप्पिणी**; (पि २७७)।

रुक्ख पुंन [**वृक्ष**] पेड़, गाछ, पादप; (णाया १, १; हे २, १२७; प्राप्र; उव; कुमा; जी २७; प्रति ६; प्रासू १६८); "रुक्खाइं, रुक्खाणि" (पि ३५८)। २ संयम, विरति; (सूअ १, ४, १, २५)। °**मूल** न [°**मूल**] पेड़ की जड़; (कप्प)। °**मूलिय** पुं [°**मूलिक**] वृक्ष के मूल में रहने वाला वानप्रस्थ; (ओप)। °**सत्थ** न [°**शास्त्र**]

वनस्पति-शाखा; (स ३११) । °उव्वेद पुं [°युर्वेद] वही अर्थ; (विसे १७७५) ।

रुक्खल्ल ऊपर देखो; (षड्) ।

रुक्खिम पुंस्त्री [वृक्षत्व] वृक्षपन; (षड्) ।

रुग्ग वि [रुग्ण] भग्न, भाँगा हुआ; (पाअ; गउड ५६१) ।

रुग्गिर देखो रुइर; (दे १, १४६) ।

रुच्च अक [रुच्] रुचना, पसंद पड़ना । रुच्चइ, रुच्चए: (वज्जा १०६; महा; सिरि १०६; भवि) । वकृ—**रुच्चंत, रुच्च-माण**; (भवि; उप १४३ टी) ।

रुच्च सक [दे] व्रीहि आदि को यन्त्र में निस्तुष करना । वकृ—**रुच्चंत**; (णाया १, ७—पत्र ११७) ।

रुच्चि देखो रुइ=रुचि; (कप्पू) ।

रुच्छ देखो रुक्ख; (संक्षि १५) ।

रुच्मि देखो रुप्पि; (हे २, ५२; कुमा) ।

रुज्ज न [रोदन] रुदन, रोना; "दीहुण्हा णीसासा, रणरणश्रो, रुज्जगिरं गेअं" (गा ८४३) ।

रुज्झ देखो रुंध । रुज्झइ; (हे ४, २१८) ।

रुज्झ° देखो रुह=रुह् ।

रुज्झंत देखो रुंध ।

रुज्झिअ वि [रुद्ध] रोका हुआ; (कुमा) ।

रुट्टिया स्त्री [दे] गेटी; (सिट्ठ ३६) ।

रुट्ठ वि [रुष्ट] रोष-युक्त; (उवा; सुर २, १२१) । २ पुं. नरकावास-विशेष; (देवेन्द्र २८) ।

रुणरुण न [दे] करुण क्रन्दन; (भवि) ।

रुणरुण अक [दे] करुण क्रन्दन करना । रुणरुणइ; (वज्जा ५०; भवि) । वकृ—**रुणरुणंत**; (भवि) ।

रुणुरुण देखो रुणरुण; (पउम १०५, ५८) ।

रुणुरुणिय वि [दे] करुण क्रन्दन वाला; (पउम १०५, ५८) ।

रुण्ण न [रुदित] रोदन, रोना; (हे १, २०६; प्राप्र; गा १८) ।

रुत्थिणी देखो रुप्पिणी; (षड्) ।

रुदिअ देखो रुण्ण; (नाट—मालती १०६) ।

रुद्द पुं [रुद्र] १ महादेव, शिव; (सम्मत्त १४५; हेका ५६)। २ शिव-मूर्ति विशेष; (णाया १, १—पत्र ३६) । ३ जिन देव, जिन भगवान्; (पउम १०६, १२) । ४ पर-माधार्मिक देवों की एक जाति; (सम २८) । ५ नृप-विशेष, एक वासुदेव का पिता; (पउम २०, १८२; सम १५२) । ६ ज्योतिष्क देव-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७७; सुज्ज १०, १२) । ७ अंग-विद्या का जानकार पुरुष; (विचार ४८४) । ८ वि. भयंकर, भय-जनक; (सम्मत्त १४५) । देखो रोद्द=रुद्र ।

रुद्द देखो रोद्द=रौद्र; (सम ६) ।

रुद्दक्ख पुं [रुद्राक्ष] वृक्ष-विशेष; (पउम ५३, ७६) ।

रुद्दाणी स्त्री [रुद्राणी] शिव-पत्नी, दुर्गा; (सम्मु १५४) ।

रुद्ध वि [रुद्ध] रोका हुआ; (कुमा) ।

रुद्ध देखो रुह; (हे २, ८०) ।

रुन्न देखो रुण्ण; (सुर २, १२६) ।

रुप्प सक [रोपय्] रोपना, बोना; "सहयारभरियदेसे रुप्पसि धत्तूरयं तुमं वच्छे" (धर्मवि ६७) ।

रुप्प न [रुक्म] १ काञ्चन, सोना; २ लोहा; ३ धतूरा; ४ नागकेसर; (प्राप्र) । ५ चाँदी, रजत; (जं ४) ।

रुप्प न [रूप्य] चाँदी, रजत; (औप; सुर ३, ६; कप्पू) । °कूड पुं [°कूट] रुक्मि पर्वत का एक कूट; (राज) । °कूलप्पवाय पुं [°कूलप्रपात] द्रह-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७३) । °कूला स्त्री [°कूला] १ एक महानदी; (ठा २, ३—पत्र ७२; ८०; सम २७; इक) । २ एक देवी; ३ रुक्मि पर्वत का एक कूट; (जं ४) । °मय वि [°मय] चाँदी का बना हुआ; (णाया १, १—पत्र ५२; कुमा) । °भास पुं [°भास] एक ज्योतिष्क महा-ग्रह; (ठा २, ३—पत्र ७८) ।

रुप्प वि [रौप्य] रूपा का, चाँदी का; (णाया १, १—पत्र २४; उर ८, ४) ।

रुप्पय देखो रुप्प=रूप्य; "रुप्पयं रययं" (पाअ; महा) ।

रुप्पि पुं [रुक्मिन्] १ कौण्डिन्य नगर का एक राजा, रुक्मि-णी का भाई; (णाया १, १६—पत्र २०६; कुमा; रुक्मि ४२) । २ कुणाल देश का एक राजा; (णाया १, ८—पत्र १४०) । ३ एक वर्षधर-पर्वत; (ठा २, ३—पत्र ६६; सम १२; ७२) । ४ एक ज्योतिष्क महा-ग्रह; (ठा २, ३—पत्र ७८) । ५ देव-विशेष; (जं ४) । ६ रुक्मि पर्वत का एक कूट; (जं ४) । ७ वि. सुवर्ण वाला; ८ चाँदी वाला; (हे २, ५२; ८६) । °कूड पुंन [°कूट] रुक्मि पर्वत का एक कूट; (ठा २, ३; सम ६३) ।

रुप्पिणी स्त्री [रुक्मिणी] १ द्वितीय वासुदेव की एक पटरानी; (पउम २०, १८६) । २ श्रीकृष्ण वासुदेव की एक अग्र-

महिषी; (पउम २०, १८७; पडि)। ३ एक श्रेष्ठि-पत्नी; (सुपा ३३४)।

रुप्पोभास पुं [रूप्यावभास] १ एक महाग्रह; (सुज्ज २०)। २ वि. रजत की तरह चमकता; (जं ४)।

रुब्भंत } देखो **रुंध**।
रुब्भमाण }

रुम्मिणी देखो **रुप्पिणी**; (षड्)।

रुम्ह सक [म्लापय्] म्लान करना, मलिन करना। "प-रुम्हाइ जसं" (से ३, ४)।

रुरु पुं [रुरु] १ मृग-विशेष; (पउम ६, ४६; पण्ह १, १—पत्र ७)। २ वनस्पति-विशेष; (पण्ण १—पत्र ३५)। ३ एक अनार्य देश; ४ एक अनार्य मनुष्य-जाति; (पण्ह १, १—पत्र १४)।

रुरुव अक [रोरूय्] १ खूब आवाज करना; २ बारंबार चिल्लाना। वकृ—**रुरुवंत**; (स २१३)।

रुल अक [लुठ्] लेटना। वकृ—**रुलंत, रुलिंत**; (पण्ह १, ३—पत्र ४५), "पाडियमयवडतुरयं रुलंतवरसुहडधडस-याइन्नं" (धर्मवि ८०)।

रुलुघुल अक [दे] नीचे साँस लेना, निःश्वास डालना। वकृ—**रुलुघुलंत**; (भवि)।

रुव देखो **रुअ**=रुद्। रुवइ; (हे ४, २२६; प्राकृ ६८; संक्षि ३६; भवि; महा), रुवामि; (कुप्र ६६)। कर्म—रुव्वइ, रुविज्जइ; (हे ४, २४६)।

रुवण न [रोदन] रोना; (उप ३३५)।

रुवणा स्त्री. ऊपर देखो; (ओघभा ३०)।

रुविल देखो **रुइल**; (औप)।

रुव्व देखो **रुअ**=रुद्। रुव्वइ; (संक्षि ३६; प्राकृ ६८)।

रुसा स्त्री [रोष] रोष, गुस्सा; (कुमा)।

रुसिय देखो **रूसिअ**; (पउम ५५, १५)।

रुह अक [रुह्] १ उत्पन्न होना। २ सक. घाव को सूखाना। रुहइ; (नाट)। कर्म—"जेण विदारियद्दीवि खग्गाइपहारो इमीए पक्खालणोयएणंपि पणट्ठवेयणं तक्खणा चेव रुज्झइ त्ति" (स ४१३)।

रुह वि [रुह] उत्पन्न होने वाला; (आचा)।

रुहरुह अक [दे] मन्द मन्द बहना। "वामंगि सुत्ति रुहरुहइ वाउ" (भवि)।

रुहुरुहय पुं [दे] उत्कण्ठा; (भवि)।

रूअ न [दे. रूत] रुई, तूला; (दे ७, ६; कप्प; पव ८४; देवेन्द्र ३३२; धर्मसं ६८०; भग; संबोध ३१)।

रूअ पुं [रूप] १—२ पूर्णभद्र और विशिष्ट-नामक इन्द्र का एक लोकपाल; (ठा ४, १—पत्र १६७)। ३ आकृति, आकार; (गा १३१)। ४ वि. सदृश, तुल्य; (दे ६, ४६)। °**कंत** पुं [°**कान्त**] १—२ पूर्णभद्र और विशिष्ट-नामक इन्द्र का एक लोकपाल; (ठा ४, १)। °**कंता** स्त्री [°**कान्ता**] १ भूतानन्द-नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी; (णाया २—पत्र २५२)। २ एक दिक्कुमारी-महत्तरिका; (राज)। °**प्पभ** पुं [°**प्रभ**] पूर्णभद्र और विशि[illegible] एक लोकपाल; (ठा ४, १—पत्र १६७; १६८)। [illegible]**भा** स्त्री [°**प्रभा**] १ भूतानन्द इन्द्र की एक अग्र-महिषी; (णाया २—पत्र २५२)। २ एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ६—पत्र ३६१)। देखो **रूव**=रूप; (गउड)।

रूअंस पुं [रूपांश] १—२ पूर्णभद्र और विशिष्ट इन्द्र का एक लोकपाल; (ठा ४, १—पत्र १६७; १६८)।

रूअंसा स्त्री [रूपांशा] १ भूतानन्द इन्द्र की एक अग्र-महिषी; (णाया २—पत्र २५२)। २ एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ६—पत्र ३६१)।

रूअग } पुंन [रूपक] १ रुपया; (हे ४, ४२२)। २
रूअय } पुं. एक गृहस्थ; (णाया २—पत्र २५२)। ३ रूपा देवी का सिंहासन; (णाया २—पत्र २५२)। °**वडिं-सय** न [°**ावतंसक**] रूपा देवी का भवन; (णाया २)। °**सिरी** स्त्री [°**श्री**] एक गृहस्थ-स्त्री; (णाया २)। °**ावई** स्त्री [°**वती**] भूतानन्द-नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी; (णाया २)। देखो **रूवय**=रूपक।

रूअरुइआ [दे] देखो **रुअरुइआ**; (षड्)।

रूआ स्त्री [रूपा] १ भूतानन्द इन्द्र की एक अग्र-महिषी; (णाया २—पत्र २५२)। २ एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ४, १—पत्र १६८)।

रूआमाला स्त्री [रूपमाला] छन्द-विशेष; (पिंग)।

रूआर वि [रूपकार] मूर्ति बनाने वाला; "मोत्तुमजोग्गं जोग्गे दलिए रूवं करेइ रूआरो" (विसे ११००)।

रूआवई स्त्री [रूपवती] एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ४, १—पत्र १६८)।

रूढ वि [रूढ] १ परंपरागत, रूढि-सिद्ध; २ प्रसिद्ध; "रूढ-क्कमेण सव्वे नराहिवा तत्थ उवविट्ठा" (उप ६४८ टी)। ३ प्रगुण, तंदुरस्त; (पाअ)।

रूढि स्त्री [**रूढि**] परम्परा से चली आती प्रसिद्धि; "पोसहसद्दो रूढीए एत्थ पव्वाणुवायओ भणिओ" (सुपा ६१६; कप्पू)।

रूप पुं [**रूप**] पशु, जनावर; (मृच्छ २००)। देखो **रूअ**=रूप; (ठा ६—पत्र ३६१)।

रूपि पुं [**रूपिन्**] शौनिक, कसाई; (मृच्छ २००)।

रूरुइय न [**दे**] उत्सुकता, रणरणक; (पाअ)।

रूव पुंन [**रूप**] १ आकृति, आकार; (णाया १, १; पाअ)। २ सौन्दर्य, सुन्दरता; (कुमा; ठा ४, २; प्रासू ४७; ७१)। ३ वर्ण, शुक्र आदि रँग; (औप; ठा १; २, ३)। ४ मूर्ति; (विसे १११०)। ५ स्वभाव; (ठा ६)। ६ शब्द, नाम; ७ श्लोक; ८ नाटक आदि दृश्य काव्य; (हे १, १४२)। ९ एक की संख्या, एक; (कम्म ४, ७७; ७८; ७६; ८०; ८१)। १०—११ रूप वाला, वर्ण वाला; (हे १, १४२)। १२—देखो **रूअ, रूप**=रूप। °**कंता** देखो **रूअ-कंता**; (ठा ६—पत्र ३६१; इक)। °**धार** वि [°**धार**] रूप-धारी; "जलयरमज्झगएयं अणेगमच्छाइरूव-धारेयं" (सा ६)। °**प्पभा** देखो **रूअ-प्पभा**; (इक)। °**मंत** देखो °**वंत**; (पउम १२, ५७; ६१, २६)। °**वई** स्त्री [°**वती**] १ भूतानन्द-नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ६—पत्र ३६१)। २ सुरूप-नामक भूतेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ४, १—पत्र २०४)। ३ एक दिक्कुमारी महत्तरिका; (ठा ६)। °**वंत**, °**स्सि** वि [°**वत्**] रूप वाला, सु-रूप; (श्रा १०; उवा; उप पृ ३३२; सुपा ४७४; उव)।

रूवग पुंन [**रूपक**] १ रुपया; (उप पृ २८०; धम्म ८ टी; कुप्र ४१४)। २ साहित्य-प्रसिद्ध एक अलंकार; (सुर १, २६; विसे ६६६ टी)। देखो **रूअग**=रूपक।

रूवमिणी स्त्री [**दे**] रूपवती स्त्री; (दे ७, ६)।

रूवय देखो **रूवग**; (कुप्र १२३; ४१३; भास ३४)।

रूवसिणी देखो **रूवमिणी**; (षड्)।

रूवा देखो **रूआ**; (इक)।

रूवि वि [**रूपिन्**] रूप वाला; (आचा; भग; स ८३)।

रूवि पुंस्त्री [**दे**] गुच्छ-विशेष, अर्क-वृक्ष, आक का पेड़; (पराग १—पत्र ३२; दे ७, ६)।

रूस अक [**रुष्**] गुस्सा करना। रूसइ, रूसए; (उव; कुमा; हे ४, २३६; प्राकृ ६८; षड्)। कर्म—**रूसिज्जइ**; (हे ४, ४१८)। हेकृ—**रूसिउं**, **रूसेउं**; (हे ३, १४१; पि ५७३)। कृ—**रूसिअव्व**, **रूसेयव्व**; (गा ४६६; पराह २, ५—पत्र १५०; सुर १६, ६४)। प्रयो—संकृ—**रूसविअ**; (कुमा)।

रूसण न [**रोषण**] १ रोष, गुस्सा; (गा ६७५; हे ४, ४१८)। २ वि. गुस्साखोर, रोष करने वाला; (सुख १, १४; संबोध ४८)।

रूसिअ वि [**रुष्ट**] रोष-युक्त; (सुख १, १३; १६)।

रे अ [**रे**] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ परिहास; २ अधिक्षेप; (संक्षि ४७)। ३ संभाषण; (हे २, २०१; कुमा)। ४ आक्षेप; (संक्षि ३८)। ५ तिरस्कार; (पव ३८)।

रेअ पुं [**रेतस्**] वीर्य, शुक्र; (राज)।

रेअव सक [**मुच्**] छोड़ना, त्यागना। रेअवइ; (हे ४,६१)।

रेअविअ वि [**मुक्त**] छोड़ा हुआ, त्यक्त; (कुमा; दे ७, ११)।

रेअविअ वि [**दे, रेचित**] खालीकृत, शून्य किया हुआ, खाली किया हुआ; (दे ७, ११; पाअ; से ११, २)।

रेआ स्त्री [**रै**] १ धन; २ सुवर्ण, सोना; (षड्)।

रेइअ वि [**रेचित**] रिक्त किया हुआ; (से ७, ३१)।

रेंकिअ वि [**दे**] १ आक्षिप्त; २ लीन; ३ ब्रीडित, लज्जित; (दे ७, १४)।

रेकार पुं [**रेकार**] 'रे' शब्द, 'रे' की आवाज; (पव ३८)।

रेड्ढि देखो **रिद्धि**; (संक्षि ३)।

रेणा स्त्री [**रेणा**] महर्षि स्थूलभद्र की एक भगिनी, एक जैन साध्वी; (कप्प; पडि)।

रेणि पुंस्त्री [**दे**] पङ्क, कर्दम; (दे ७, ६)।

रेणु पुंस्त्री [**रेणु**] १ रज, धूली; (कुमा)। २ पराग; (स्वप्न ७६)।

रेणुया स्त्री [**रेणुका**] ओषधि-विशेष; (पराग १—पत्र ३६)।

रेभ पुं [**रेफ**] १ 'र' अक्षर, रकार; (कुमा)। २ वि. दुष्ट; ३ अधम, नीच; ४ क्रूर, निर्दय; ५ कृपण, गरीब; (हे १, २३६; षड्)।

रेरिज्ज अक [**राराज्य्**] अतिशय शोभना। वकृ—**रेरिज्जमाण**; (णाया १, २—पत्र ७८; १, ११—पत्र १७१)।

रेल्ल सक [**प्लावय्**] सराबोर करना। वकृ—**रेल्लंत**; (कुमा)।

रेल्लि स्त्री [दे] रेल, स्रोत, प्रवाह; (राज)।
रेवइअ न [रैवतिक] एक उद्यान का नाम; (कप्प)।
रेवइआ स्त्री [रेवतिका] भूत-ग्रह विशेष; (सुख २, १६)।
रेवई स्त्री [रेवती] १ बलदेव की स्त्री; (कुमा)। २ एक श्राविका का नाम; (ठा ६—पत्र ४५५; सम १५४)। ३ एक नक्षत्र; (सम ५७)।
रेवई स्त्री [दे. रेवती] मातृका, देवी; (दे ७, १०)।
रेवंत पुं [रेवन्त] सूर्य का एक पुत्र, देव-विशेष; "रेवंत-तणुभवा इव अस्सकिसोरा सुलक्खणिणो" (धर्मवि १४१; सुपा ५६)।
रेवज्जिअ वि [दे] उपालब्ध; (दे ७, १०)।
रेवण पुं [रेवण] व्यक्ति-वाचक नाम, एक साधारण काव्य-ग्रन्थ का कर्ता; (धर्मवि १४१)।
रेवय न [दे] प्रणाम, नमस्कार; (दे ७, ६)।
रेवय पुं [रैवत] गिरनार पर्वत; (णाया १, ५—पत्र ६६; अंत; कुप्र १८)।
रेवलिआ स्त्री [दे] वालुकावर्त, धूल का आवर्त; (दे ७, १०)।
रेवा स्त्री [रेवा] नदी-विशेष, नर्मदा; (गा ५७८; पाअ; कुमा; प्रासू ६७)।
रेसणिआ } स्त्री [दे] १ करोटिका, एक प्रकार का कांस्य-
रेसणी } भाजन; (पाअ; दे ७, १५)। २ अक्षि-निकोच; (दे ७, १५)।
रेसम्मि देखो **रेसिम्मि**; "जो उण सद्धा-रहिओ दाणं देइ ज-सकित्तिरेसम्मि" (स १५७)।
रेसि (अप) देखो **रेसिं**; (हे ४, ४२५; सण)।
रेसिअ वि [दे] छिन्न, काटा हुआ; (दे ७, ६)।
रेसिं (अप) नीचे देखो; (हे ४, ४२५)।
रेसिम्मि अ. निमित्त, लिए, वास्ते; "दंसणनाणचरित्ताण एस रेसिम्मि सुपसत्था" (पंचा १६, ४०)।
रेह अक [राज्] दीपना, शोभना, चमकना। रेहइ, रेहए; (हे ४, १००; धात्वा १५०; महा)। वकृ—**रेहंत**; (कप्प)।
रेहा स्त्री [रेखा] १ चिह्न-विशेष, लकीर; (ओघ ४८६; गउड; सुपा ४१; वज्जा ६४)। २ पंक्ति, श्रेणि; (कप्पू)। ३ छन्द-विशेष; (पिंग)।
रेहा स्त्री [राजना] शोभा, दीप्ति; (कप्पू)।
रेहिअ न [दे] छिन्न पुच्छ, कटा हुआ पूँछ; (दे ७, १०)।
रेहिअ वि [राजित] शोभित; (सुर १०, १८६)।
रेहिर वि [रेखावत्] रेखा वाला; (हे २, १५६)।
रेहिर } वि [राजितृ] शोभने वाला; (सुर १, ५०;
रेहिल्ल } सुपा ५६), "नयरे नयरेहिल्ले" (उप ७२८ टी)।
रेहिल्ल देखो **रेहिर**=रेखावत्; (उप ७२८ टी)।
रोअ देखो **रुअ**=रुद्। रोअइ; (संक्षि ३६; प्राकृ ३८)। वकृ—**रोअंत, रोयमाण**; (गा ५४६; उप पृ १२८; सुर २, २२६)। हेकृ—**रोउं**; (संक्षि ३७)। कृ—**रोअ-व्वअ, रोइअव्व**; (से ३, ४८; गा ३४८; हेका ३३)।
रोअ देखो **रुच्च**=रुच्। रोयइ, रोयए; (भग; उव), "रोएइ जं पहूणं तं चेव कुणंति सेवगा निच्चं" (रंभा)। वकृ—**रोयंत**; (श्रा ६)।
रोअ सक [रोचय्] १ रुचि करना। २ पसंद करना, चाहना। रोयइ, रोएमि, रोएहि; (उत्त १८, ३३; भग)। संकृ—**रोयइत्ता**; (उत्त २६, १)।
रोअ पुं [रोच] रुचि;
"दुक्कररोया विउसा बाला भणियंपि नेव बुज्झंति।
तो मज्झिमबुद्धीणं हियत्थमेसो पयासो मे" (चेइय २६०)।
रोअ पुं [रोग] आमय, बिमारी; (पाअ)।
रोअग वि [रोचक] १ रुचि-जनक; २ न. सम्यक्त्व का एक भेद; (संबोध ३५; सुपा ५५१)।
रोअण न [रोदन] रोना, रुदन; (दे ५, १०; कुप्र २३५; २८६)।
रोअण पुं [रोचन] १ एक दिग्हस्ति-कूट; (इक)। २ न. गोरोचन; (गउड)।
रोअणा स्त्री [रोचना] गोरोचन; (से ११, ४५; गउड)।
रोअणिआ स्त्री [दे] डाकिनी, डाइन; (दे ७, १२; पाअ)।
रोअव्वअ देखो **रोअ**=रुद्।
रोआविअ वि [रोदित] रुलाया हुआ; (गा ३५७; सुपा ३१७)।
रोइ वि [रोगिन्] रोग वाला, बिमार; (गउड)।
रोइ देखो **रुइ**=रुचि; "अवि सुंदरेवि दिण्णे दुक्कररोई कलहमाई" (पिंड ३२१)।
रोइअ वि [रोचित] १ पसंद आया हुआ; (भग)। २ चिकीर्षित; (ठा ६—पत्र ३५५)।
रोइर वि [रोदितृ] रोने वाला; (गा ३८६; षड्)।
रोंकण वि [दे] रंक, गरीब; (दे ७, ११)।
रोंच सक [पिष्] पीसना। रोंचइ, (हे ४, १८५)।

रोक्कअ वि [दे] प्रोक्षित, अति सिक्त; (षड्) ।

रोक्कणि } वि [दे] १ शृंगी, शृंग वाला; २ नृशंस,
रोक्कणिअ } निर्दय; (दे ७, १६) ।

रोग पुं [रोग] १ बिमारी, व्याधि; (उवा; पण्ह १, ४) । २ एक ब्राह्मण-जातीय श्रावक; (उप ५३६) ।

रोगि वि [रोगिन्] बिमार; (सुपा ५७६) ।

रोगिअ वि [रोगिक, °त] ऊपर देखो; (सुख १, १४) ।

रोगिणिआ स्त्री [रोगिणिका] रोग के कारण ली जाती दीक्षा; (ठा १०—पत्र ४७३) ।

रोगिल्ल देखो **रोगि**; (प्रामा) ।

रोघस वि [दे] रंक, गरीब; (दे ७, ११) ।

रोच्च देखो **रोंच** । रोच्चइ; (षड्) ।

रोज्झ पुं [दे] ऋश्य, पशु-विशेष; गुजराती में 'रोझ'; (दे ७, १२; विपा १, ४; पाअ) ।

रोट्ट पुंन [दे] १ तंदुल-पिष्ट, चावल आदि का आटा, पिसान, गुजराती में 'लोट'; (दे ७, ११; ओघ ३६३; ३७४; पिंड ४४; बृह १) ।

रोट्टग पुं [दे] रोटी; (महा) ।

रोड सक [दे] १ रोकना, अटकायत करना । २ अनादर करना । ३ हैरान करना । रोडिसि; (स ५७५) । कवकृ— **रोडिज्जंत**; (उप पृ १३३) ।

रोड न [दे] घर का मान, गृह-प्रमाण; (दे ७, ११) ।

रोडी स्त्री [दे] १ इच्छा, अभिलाष; २ वणी की शिबिका; (दे ७, १५) ।

रोसव्व देखो **रुअ=रुद्** ।

रोद्द पुं [रौद्र] १ अहोरात्र का पहला मुहूर्त; (सम ५१) । २ एक नृपति, तृतीय बलदेव और वासुदेव का पिता; (ठा ६—पत्र ४४७) । ३ अलंकार-शास्त्र-प्रसिद्ध नव रसों में एक रस; (अणु) । ४ त्रि. दारुण, भयंकर, भीषण; (ठा ४, ४; महा) । ५ न. ध्यान-विशेष, हिंसा आदि क्रूर कर्म का चिन्तन; (औप) ।

रोद्द पुं [रुद्र] अहोरात्र का पहला मुहूर्त; (सुज्ज १०, १३)। देखो **रुद्द=रुद्र** ।

रोद्ध वि [दे] १ कुथिताक्ष; २ न. मल; (दे ७, १५) ।

रोम पुंन [रोमन्] लोम, बाल, रोंआ; (औप; पाअ; गउड)। °**कूव** पुं [°कूप] लोम का छिद्र; (णाया १, १—पत्र १३; सुर २, १०१) ।

रोमंच पुं [रोमाञ्च] रोंओं का खड़ा होना, भय या हर्ष से रोंओं का उठ जाना, पुलक; (कुमा; काल; भवि; सण) ।

रोमंचइअ } वि [रोमाञ्चित] पुलकित, जिसके रोम खड़े
रोमंचिअ } हुए हों वह; (पउम ३, १०४; १०२, २०३; पाअ; भवि) ।

रोमंथ पुं [रोमन्थ] पगुराना, चबी हुई वस्तु का पुनः चबाना; (से ६, ८७; पाअ; सण) ।

रोमंथ } अक [रोमन्थय्] चबी हुई चीज का फिर से
रोमंथाअ } चबाना, पगुराना । रोमंथइ; (हे ४, ४३) । वकृ—**रोमंथाअमाण**; (चारु ७) ।

रोमग } पुं [रोमक] १ अनार्य देश-विशेष, रोम देश;
रोमय } (पव २७४) । २ रोम देश में रहने वाली मनुष्य-जाति; (पण्ह १, १—पत्र १४) ।

रोमय पुं [रोमज] पक्षि-विशेष, रोम की पाँख वाला पक्षी; (जी २२) ।

रोमराइ स्त्री [दे] जघन, नितम्ब; (दे ७, १२) ।

रोमलयासय न [दे] पेट, उदर; (दे ७, १२) ।

रोमस वि [रोमश] रोम-युक्त, रोम वाला; (दे ३, ११; पाअ) ।

रोमूसल न [दे] जघन, नितम्ब; (दे ७, १२) ।

रोर पुं [रोर] चौथी नरक-भूमि का एक नरकावास; (ठा ४, ४—पत्र २६५) ।

रोर वि [दे] रंक, गरीब, निर्धन; (दे ७, ११; पाअ; सुर २, १०५; सुपा २६६) ।

रोरु पुं [रोरु] सातवीं नरक-पृथिवी का एक नरकावास; (देवेन्द्र २४; इक) ।

रोरुअ पुं [रोरुक, रौरव] १ रत्नप्रभा नरक-पृथिवी का दूसरा नरकेन्द्रक—नरकावास-विशेष; (देवेन्द्र ३) । २ रत्नप्रभा का तेरहवाँ नरकेन्द्रक; (देवेन्द्र ५) । ३ सातवीं नरक-पृथिवी का एक नरकावास—नरक-स्थान; (ठा ५, ३—पत्र ३४१; सम ५८; इक) । ५ चौथी नरक-भूमि का एक नरकावास; (ठा ४, ४—पत्र २६५) ।

रोल पुं [दे] १ कलह, झगड़ा; (दे ७, १५) । २ रव, कोलाहल, कलकल आवाज; (दे ७, १५; पाअ; कुमा; सुपा ५७६; चेइय १८४; मोह ५) ।

रोलंब पुं [दे. रोलम्ब] भ्रमर, मधुकर; (दे ७, ३; कुम ५८) ।

रोला स्त्री [रोला] छन्द-विशेष; (पिंग)।

रोव देखो रुअ=रुद्। रोवइ; (हे ४, २२६; संक्षि ३६; प्राकृ ६८; षड्; महा; सुर १०, १७१; भवि)। वकृ—**रोवंत, रोवमाण**; (पउम १७, ३७; सुर २, १२४; ६, २३५; पउम ११०, ३५)। संकृ—**रोविऊण**; (पि ५८६)। हेकृ—**रोविउं**; (स १००)।

रोव पुं [दे. रोप] पौधा; गुजराती में 'रोपो'; (सम्मत्त १४४)।

रोवण न [रोदन] रोना; (सुर ६, ७६)।

रोवाविअ देखो रोआविअ; (वज्जा ६२)।

रोविअ वि [रोपित] १ बोया हुआ। २ स्थापित; (से १३, ३०)।

रोविंदय न [दे] गेय-विशेष, एक प्रकार का गान; (ठा ४, ४—पत्र २८५)।

रोविर देखो रोइर; (दे ७, ७; कुमा; हे २, १४५)।

रोविर वि [रोपयितृ] बोने वाला; (हे २, १४५)।

रोस देखो रूस। रोसइ(?); (धात्वा १५०)।

रोस पुं [रोष] गुस्सा, क्रोध; (हे २, १९०; १९१)। °इल्ल, °इंत वि [°वत्] रोष वाला; (संक्षि २०; प्राप्र)।

रोसण वि [रोषण] रोष करने वाला, गुस्साखोर; (उप १४७ टी; सुख १, १३)।

रोसविअ वि [रोषित] कोपित, कुपित किया हुआ; (पउम ११०, १३)।

रोसाण सक [मृज्] मार्जन करना, शुद्ध करना। रोसाणइ; (हे १, १०५; प्राकृ ६६; षड्)।

रोसाणिअ वि [मृष्ट] शुद्ध किया हुआ, मार्जित; (पाअ; कुमा; पिंग)।

रोसिअ देखो रोसविअ; (पउम ६६, ११; भवि)।

रोह अक [रुह्] उत्पन्न होना। रोहंति; (गउड)।

रोह देखो रुंध। संकृ—**रोहिऊण, रोहेउं**; (काल; बृह ३)।

रोह पुं [रोध] १ घेरा, नगर आदि का सैन्य से वेष्टन; (णाया १, ८—पत्र १४६; उप पृ ८४; कुप्र १५८)। २ रुकावट, अटकाव; (कुप्र १; द्रव्य ४६)। ३ कैद; (पुप्फ १८६)।

रोह पुं [रोधस्] तट, किनारा; (पाअ)।

रोह पुं [रोह] १ एक जैन मुनि; (भग)। २ प्ररोह, व्रण आदि का सूख जाना; (दे ६, ६५)। ३ वि. रोहक, रोहण-कर्ता; (भवि)।

रोह पुं [दे] १ प्रमाण; २ नमन; ३ मार्गण; (दे ७, १६)।

रोहग वि [रोधक] घेरा डालने वाला, अटकाव करने वाला; "रोहगसंजुत्तीए रोहिओ कुमारेण" (स ६३५), "रोहगसंजुत्ती उण कीरउ" (सुर १२, १०१)।

रोहग देखो रोह=रोध; (स ६३५; सुर १२, १०१)।

रोहग पुं [रोहक] एक नट-कुमार; (उप पृ २१५)।

रोहगुत्त पुं [रोहगुप्त] १ एक जैन मुनि; (कप्प)। २ त्रैराशिक मत का प्रवर्तक एक आचार्य; (विसे २४५२)।

रोहण न [रोधन] १ अटकाव; (आरा ७२)। २ वि. रोकने वाला; (द्रव्य ३४)।

रोहण न [रोहण] १ चढ़ना, आरोहण; (सुपा ४३८; कुप्र ३९९)। २ उत्पत्ति; (विसे १७५३)। ३ पुं. पर्वत-विशेष; (सुपा ३२; कुप्र ६)। ४ एक दिग्हस्ति-कूट; (इक)।

रोहिअ [दे] देखो रोज्झ; (दे ७, १२; पाअ; पण्ह १, १—पत्र ७)।

रोहिअ वि [रोधित] घेरा हुआ; "रोहियं पाडलिपुरं तेण" (धर्मवि ४२; कुप्र ३९९; स ६३५)।

रोहिअ वि [रोहित] १ सुखाया हुआ (घाव); (उप पृ ७६)। २ द्वीप-विशेष; (जं ४)। ३ पुं. मत्स्य-विशेष; (स २५७)। ४ न. तृण-विशेष; (पणण १—पत्र ३३)। ५ कूट-विशेष; (ठा २, ३; ८)।

रोहिअंस पुं [रोहितांश] एक द्वीप; (जं ४)।

रोहिअंस°, **रोहिअंसा** स्त्री [रोहितांशा] एक नदी; (सम २७; इक)। °**पवाय** पुं [°प्रपात] द्रह-विशेष; (ठा २, ३; जं ४)।

रोहिअप्पवाय पुं [रोहिताप्रपात] द्रह-विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७२)।

रोहिआ स्त्री [रोहित्, रोहिता] एक नदी; (सम २७; इक; ठा २, ३—पत्र ७२; ८०)।

रोहिंसा स्त्री [रोहिदंशा] एक नदी; (इक)।

रोहिणिअ पुं [रौहिणेय] एक प्रसिद्ध चोर का नाम; (श्रा २७)।

रोहिणी स्त्री [रोहिणी] १ नक्षत्र-विशेष; (सम १०)। २ चन्द्र की पत्नी; (श्रा १६)। ३ ओषधि-विशेष; (उत्त ३४, १०; सुर १०, २२३)। ४ भविष्य में भारतवर्ष में तीर्थंकर होने वाली एक श्राविका; (सम १५४)। ५ नववें बलदेव की माता का नाम; (सम १५२)। ६ एक विद्या-

देवी; (संति ५)। ७ शक्रेन्द्र की एक पटरानी; (ठा ८—पत्र ४२६)। ८ सत्पुरुष-नामक किंपुरुषेन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ४, १—पत्र २०४)। ९ शक्रेन्द्र के एक लोकपाल की पटरानी; (ठा ४, १—पत्र २०४)। १० तप-विशेष; (पव २७१; पंचा १६, २३)। ११ गो, गैया; (पाअ)। °रमण पुं [°रमण] चन्द्रमा; (पाअ)।

रोहीडग न [**रोहीतक**] नगर-विशेष; (संथा ६८)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि रआराइसद्दसंकलणो
तेत्तीसइमो तरंगो समत्तो।

——:०:——

ल

ल पुं [**ल**] मूर्ध-स्थानीय अन्तस्थ व्यञ्जन वर्ण-विशेष; (प्राप)।

लइ अ. ले, अच्छा, ठीक; (भवि)।

लइ देखो **लय**=ला।

लइअ वि [**दे. लगित**] १ परिहित, पहना हुआ; २ अंग में पिनद्ध; (दे ७, १८; पिंड ५६१; भवि)।

लइअल्ल पुं [**दे**] वृषभ, बैल; (दे ७, १६)।

लइआ स्त्री [**लतिका, लता**] देखो **लया**; (नाट—रत्ना ७; गउड; उप ७६८ टी)।

लइणा } स्त्री [**दे**] लता, वल्ली; (षड् ; दे ७, १८)।
लइणी }

लउअ पुं [**लकुच**] वृक्ष-विशेष, बड़हल का गाछ; (औप; पि ३६८)।

लउड } पुं [**लकुट**] लकड़ी, यष्टि; (दे ७, १६; सुर २,
लउल } ८; औप)।

लउस } पुं [**लकुश**] १ अनार्य देश-विशेष; (पव २७४;
लउसय } इक)। २ पुंस्त्री. लकुश देश का निवासी मनुष्य; स्त्री—°**सिया**; (णाया १, १—पत्र ३७; औप; इक)।

लंका स्त्री [**लङ्का**] नगरी-विशेष, सिंहलद्वीप की राजधानी; (से ३, ६२; पउम ४६, १६; कप्पू)। °**लय** वि [°**लय**] लंका-निवासी; (वज्जा १३०)। °**सुंदरी** स्त्री [°**सुन्दरी**] हनूमान की एक पत्नी; (पउम ५२, २१)। °**सोग** पुं [°**शोक**] राक्षस वंश का एक राजा; (पउम ५, २६५)। °**हिव** पुं [°**धिप**] लंका का राजा; (उप पृ ३७५)। °**हिवइ** पुं [°**धिपति**] वही अर्थ; (पउम ४६, १७)।

लंका स्त्री [**दे**] शाखा; (वज्जा १३०)।

लंख } पुंस्त्री [**लङ्ख**] बड़े बाँस के ऊपर खेल करने वाली
लंखग } एक नट-जाति; (णाया १, १—पत्र २; पण्ह २, ५—पत्र १३२; औप; कप्प)। स्त्री—°**खिगा**; (उप १०१४)।

लंगल न [**लाङ्गल**] हल; "खित्तेसु वहंति लंगलाण सया" (धर्मवि २४; हे १, २५६; षड् ८०)।

लंगलि पुं [**लाङ्गलिन्**] बलभद्र, बलदेव; (कुमा)।

लंगलि° } स्त्री [**लाङ्गली**] वल्ली-विशेष, शारदी लता;
लंगली } (कुमा)।

लंगिम पुंस्त्री [**दे**] १ जवानी, यौवन; २ ताजापन, नवीनता; "पिसुणइ तणुलट्ठी लंगिमं भंगिमं च" (कप्पू)।

लंगूल न [**लाङ्गूल**] पुच्छ, पूँछ; (हे १, २५६; पाअ; कप्प; कुमा)।

लंगूलि वि [**लाङ्गूलिन्**] पुच्छ वाला, पशु; (कुमा)।

लंगोल देखो **लंगूल**; (सुज्ज १०, ८)।

लंघ सक [**लङ्घ्, लङ्घय्**] १ लाँघना, अतिक्रमण करना। २ भोजन नहीं करना। लंघइ, लंघेइ; (महा; भवि)। कर्म—लंघिज्जइ; (कुमा)। वकृ—**लंघंत, लंघयंत**; (सुपा २७१; पउम ६७, २१)। संकृ—**लंघित्ता, लंघिऊण**; (महा)। हेकृ—**लंघेउं**; (पि ५७३)। कृ—**लंघणिज्ज**; (से २, ४४), **लंघ**; (कुमा १, १७)।

लंघण न [**लङ्घन**] १ अतिक्रमण; (सुर ५, १६१)। २ अ-भोजन; (उप १३५ टी)।

लंघि वि [**लङ्घिन्**] लंघन करने वाला; (कप्पू)।

लंघिअ वि [**लङ्घित**] जिसका लंघन किया गया हो वह; (गउड)।

लंच पुं [**दे**] कुक्कुट, मुर्गा; (दे ७, १७)।

लंचा स्त्री [**लञ्चा**] घुस, रिशवत; (पाअ; पण्ह १, ३—पत्र ५३; दे १, ६२; ७, १७; सुपा ३०८)।

लंचिल्ल वि [**लाञ्चिक**] घुसखोर, रिशवत ले कर काम करने वाला; (वव १)।

लंछ पुं [**लञ्छ**] चारों की एक जाति; (विपा १, १—पत्र ११)।

लंछण न [**लाञ्छन**] १ चिह्न, निशानी; (पाअ)। २ नाम; ३ अंकन, चिह्न करना; (हे १, २५; ३०)।

लंछणा स्त्री [**लाञ्छना**] चिह्न करना; (उप ५२२)।

लंछिअ वि [**लाञ्छित**] चिह्नित, कृत-चिह्न; (पव १५४; याया १, २—पत्र ८६; ठा ३, १; कम; कप्पू)।

लंडुअ वि [**दे. लण्डित**] उत्क्षिप्त; "चंडप्पवादलंडुओ विअ वरंडो पव्वदादो दूरं आरोविअ पाडिदो म्हि" (चारु ३)।

लंतक) पुं [**लान्तक**] १ देवलोक, छठवाँ देवलोक; (भग; **लंतग** } औप; अंत; इक)। २ एक देव-विमान; (सम **लंतय**) २७; देवेन्द्र १३४)। ३ षष्ठ देवलोक के निवासी देव; ४ षष्ठ देवलोक का इन्द्र; (राज; ठा २, ३—पत्र ८५)।

लंद पुंन [**लन्द**] काल, समय; (कप्प; पव ७०)।

लंदय पुंन [**दे**] कलिन्दक, गो आदि का खादन-पात्र; (पव २)।

लंपड वि [**लम्पट**] लोलुप, लालची, लुब्ध; (पाअ; सुपा १०७; ५६६; सुर ३, १०)।

लंपाग पुं [**लम्पाक**] देश-विशेष; (पउम ६८, ५६)।

लंपिक्ख पुं [**दे**] चोर, तस्कर; (दे ७, १६)।

लंब सक [**लम्ब्**] १ सहारा लेना, आलम्बन करना। २ अक. लटकना। लंबेइ; (महा)। वकृ—**लंबंत, लंबमाण**; (औप; सुर ३, ७१; ४, २४२; कप्प; वसु)। संकृ —**लंबिऊण**; (महा)।

लंब वि [**लम्ब**] लम्बा, दीर्घ; "उड्ढा उड्ढस्स चेव लंबा" (उवा; याया १, ८—पत्र १३३)।

लंब पुं [**दे**] गोवाट, गो-वाड़ा; (दे ७, २६)।

लंबअ न [**लम्बक**] ललन्तिका, नाभि-पर्यन्त लटकती माला आदि; (स्वप्न ६३)।

लंबणा स्त्री [**लम्बना**] रज्जु, रस्सी; (स १०१)।

लंबा स्त्री [**दे**] १ वल्लरी, लता; (षड्)। २ केश, बाल; (षड्; दे ७, २६)।

लंबाली स्त्री [**दे**] पुष्प-विशेष; (दे ७, १६)।

लंबि वि [**लम्बिन्**] लटकता; (गउड)।

लंबिअ) वि [**लम्बित**] १ लटकता हुआ; (गा ५३२; **लंबिअय**) सुर ३, ७०)। २ पुं. वानप्रस्थ का एक भेद; (औप)।

लंबिर वि [**लम्बितृ**] लटकने वाला; (कुमा; गउड)।

लंबुअ वि [**लम्बुक**] १ लम्बी लकड़ी के अन्त भाग में बँधा हुआ मिट्टी का ढेला; २ भींत में लगा हुआ ईंटों का समूह; (मृच्छ ६)।

लंबुत्तर पुंन [**लम्बोत्तर**] कायोत्सर्ग का एक दोष, चोलपट्ट को नाभि-मंडल से ऊपर रख कर और जानु को चोलपट्ट से नीचे रख कर कायोत्सर्ग करना; (चेइय ४८४)।

लंबूस पुंन [**दे. लम्बूष**] कन्दुक के आकार का एक आभरण; "छत्तं चमर-पडाया दप्पणलंबूसया वियाणं च" (पउम ३२, ७६; ६६, १२)।

लंबोदर) वि [**लम्बोदर**] १ बड़ा पेट वाला; (सुख १, **लंबोयर**) १४; उवा)। २ पुं. गणपति, गणेश; (श्रा १२; कुप्र ६७)।

लंभ सक [**लभ्**] प्राप्त करना। "अज्जेवाहं न लंभामि अवि लाभो सुए सिया" (उत्त २, ३१)। भवि—लंभिस्सं; (पि ५२५)। कर्म—लंभीअदि, लंभीआमो (शौ); (पि ५४१)। संकृ—**लंभिअ, लंभित्ता**; (मा १६; नाट—चैत ६१; ठा ३, २)।

लंभ सक [**लम्भय्**] प्राप्त कराना। संकृ—**लंभिअ**; (नाट—चैत ४४)। कृ—**लंभइदव्व** (शौ), **लंभणिज्ज, लंभणीअ**; (मा ५१; नाट—मालती ३६; चैत १२५)।

लंभ पुं [**लाभ**] प्राप्ति; (पउम १००, ४३; से ११, ३१; गउड; सिरि ८२२; सुपा ३६४)। देखो **लाह**=लाभ।

लंभण पुं [**लम्भन**] मत्स्य की एक जाति; (विपा १, ८ टी—पत्र ८४)।

लंभिअ देखो **लंभ**=लभ्, लम्भय्।

लंभिअ वि [**लब्ध**] प्राप्त; (नाट—चैत १२५)।

लंभिअ वि [**लम्भित**] प्राप्त कराया हुआ, प्रापित; (सूअ २, ७, ३७; स ३१०; अच्चु ७१)।

लक्कुड न [**दे. लकुट**] लकडी, यष्टि; (दे ७, १६; पाअ)।

लक्ख सक [**लक्षय्**] १ जानना। २ पहचानना। ३ देखना। लक्खइ; (महा)। कर्म—लक्खिज्जए, लक्खीयसि; (विमे २१४६; महा; काल)। कवकृ —**लक्खिज्जंत**; (से ११, ४५)। कृ—**लक्खणीअ**; (नाट—शकु २४), देखो **लक्ख**=लक्ष्य।

लक्ख पुंन [**दे**] काय, शरीर, देह; (दे ७, १७)।

लक्ख पुंन [**लक्ष**] संख्या-विशेष, सौ हजार; (जी ४५; सुपा १०३; २४८; कुमा; प्रासू ६६)। °**पाग** पुं [°**पाक**] लाख रुपयों के व्यय से बनता एक तरह का पाक; (ठा ६)।

लक्ख वि [**लक्ष्य**] १ पहचानने योग्य; "चिरलक्खणो" (पउम ८२, ८४)। २ जिससे जाना जाय वह, लक्षण, प्रकाशक; "भुअदप्पबीअलक्खं चावं" (से ५, १७)। ३ वेध्य, निशाना; "लक्खविंधण—" (धर्मवि ५२; दे २, २६; कुमा)।

लक्ख° देखो **लक्खा**; (पडि)।

लक्खग वि [**लक्षक**] पहचानने वाला; (पउम ८२, ८४; कुप्र ३००)।

लक्खण पुंन [**लक्षण**] १ इतर से भेद का बोधक चिह्न; २ वस्तु-स्वरूप; (ठा ३, ३; ४, १; जी ११; विसे २१४६; २१४७; २१४८)। ३ चिह्न; "लक्खणपुण्णं" (कुमा)। ४ व्याकरण-शास्त्र; "लक्खणसाहित्तपमाणजोइसाईणि सा पढइ" (सुपा १४१; ६५७)। ५ व्याकरण आदि का सूत्र; ६ प्रतिपाद्य, विषय; (हे २, ३)। ७ पुं. लक्ष्मण; ८ सारस पक्षी; "लक्खणो" (प्राकृ २१)। °**संवच्छर** पुं [°**संवत्सर**] वर्ष-विशेष; (सुज्ज १०, २०)।

लक्खण पुं [**लक्ष्मण**] श्रीराम का छोटा भाई; (से १, ४८)। देखो **लक्खमण**।

लक्खणा स्त्री [**लक्षणा**] १ शब्द-वृत्ति विशेष, शब्द की एक शक्ति जिससे मुख्य अर्थ के बाध होने पर भिन्न अर्थ की प्रतीति होती है; (दे १, ३)। २ एक महौषधि; (ती ५)।

लक्खणा स्त्री [**लक्ष्मणा**] १ आठवें जिनदेव की माता; (सम १५१)। २ उसी जन्म में मुक्ति पाने वाली श्रीकृष्ण की एक पत्नी; (अंत १५)। ३ एक अमात्य की स्त्री; (उप ७२८ टी)।

लक्खणिय वि [**लाक्षणिक, लाक्षण्य**] १ लक्षणों का जानकार; २ लक्षण-युक्त; (सुपा १३६)।

लक्खमण } पुं [**लक्ष्मण**] विक्रम की बारहवीं शताब्दी
लखमण } का एक जैन मुनि और ग्रन्थकार; (सुपा ६५८)।

लक्खा स्त्री [**लाक्षा**] लाख, लाह, जतु, चपड़ा; (णाया १, १—पत्र २४; पण्ह २, ५)। °**रुणिय** वि [°**रुणित**] लाख से रँगा हुआ; (पाअ)।

लक्खिअ वि [**लक्षित**] १ जाना हुआ; २ पहचाना हुआ; ३ देखा हुआ; (गउड; नाट—रत्ना १४)।

लग न [**दे**] निकट, पास; (पिंग)।

लगंड न [**लगण्ड**] वक्र काष्ठ; (पंचा १८, १६; स ५६६)। °**साइ** वि [°**शायिन्**] वक्र काष्ठ की तरह सोने वाला; (पण्ह २, १—पत्र १००; औप; कस; पंचा १८, १६; ठा ५, १—पत्र २६६)। °**सण** न [°**सन**] आसन-विशेष; (सुपा ८५)।

लगुड देखो **लउड**; (कुप्र ३८६)।

लग्ग सक [**लग्**] लगना, संग करना, संबन्ध करना। लग्गइ; (हे ४, २३०; ४२०; ४२२; प्राकृ ६८; प्राप्र; उव)। भवि—लग्गिस्सं, लग्गिहिइ; (पि ५२७)। वकृ—**लग्गंत, लग्गमाण**; (चेइय ११२; उप ६६६; गा १०५)। संकृ—**लग्गूण**; (कुप्र ६६), **लग्गिवि** (अप); (हे ४, ३३६)। कृ—**लग्गिअव्व**; (सुर १०, ११२)।

लग्ग न [**दे**] १ चिह्न; २ वि. अ-घटमान, असं-बद्ध; (दे ७, १७)।

लग्ग न [**लग्न**] १ मेष आदि राशि का उदय; (सुर २, १७०; मोह १०१)। २ वि. संसक्त, संबद्ध; (पाअ; कुमा; सुर २, ५६)। ३ पुं. स्तुति-पाठक; (हे २, ६८)।

लग्गण न [**लगन**] संग, संबन्ध; "वडपायवसाहालग्गणेण" (सुर १५, १४; उप १३४; ५३८)।

लग्गणय पुं [**लग्नक**] प्रतिभू, जामीन; (पाअ)।

लग्गूण देखो **लग्ग=लग्**।

लघिम पुंस्त्री [**लघिमन्**] १ लघुता, लाघव; २ योग की एक सिद्धि; "लंघिज्ज लघिमगुणओ अनिलस्सवि लाघवं साहू" (कुप्र २७७)। ३ विद्या-विशेष; (पउम ७, १३६)।

लच्चय न [**दे**] तृण-विशेष, गण्डूत् तृण; (दे ७, १७)।

लच्छ देखो **लक्ख=लक्ष्य**; (नाट)।

लच्छ° देखो **लभ**।

लच्छण देखो **लक्खण=लक्षण**; (सुपा ६४; प्राकृ २१; नाट—चैत ५५)।

लच्छि° } स्त्री [**लक्ष्मी**] १ संपत्ति, वैभव; २ धन, द्रव्य;
लच्छी } ३ कान्ति; ४ औषध-विशेष; ५ फलिनी वृक्ष; ६ स्थल-पद्मिनी; ७ हरिद्रा; ८ मुक्ता, मोती; ९ शटी-नामक ओषधि; (कुमा; प्राकृ ३०; हे २, १७)। १० शोभा; (से २, ११)। ११ विष्णु-पत्नी; (पाअ; से २, ११)। १२ रावण की एक पत्नी; (पउम ७४, १०)। १३ षष्ठ वासुदेव की माता; (पउम २०, १८४)। १४ पुंडरीक द्रह की अधिष्ठात्री देवी; (ठा २, ३—पत्र ७२)। १५ देव-प्रतिमा विशेष; (णाया १, १ टी—पत्र ४३)। १६ छन्द-विशेष; (पिंग)। १७ एक वणिक्-पत्नी; (उप ७२८ टी)। १८ शिखरी पर्वत का एक कूट; (इक)। °**निलय**

पुं [°निलय] वासुदेव; (पउम ३७, ३७)। °मई स्त्री [°मती] १ छठवें वासुदेव की माता; (सम १५२)। २ ग्यारहवें चक्रवर्ती का स्त्री-रत्न; (सम १५२)। °मंदिर न [°मन्दिर] नगर-विशेष; (सुपा ६३२)। °वइ पुं [°पति] लक्ष्मी का स्वामी, श्रीकृष्ण; (प्राकृ ३०)। °वई स्त्री [°वती] दक्षिण रुचक पर रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८—पत्र ४३६; इक)। °हर पुं [°धर] १ वासुदेव; (पउम ३८, ३४)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)। ३ न. नगर-विशेष; (इक)।

लजुक (अशो) देखो **रज्जु**=(दे); (कप्प—रज्जु)।

लज्ज अक [लस्ज्] शरमाना। लज्जइ; (उव; महा)। कर्म—लज्जिज्जइ; (हे ४, ४१६)। वकृ—**लज्जंत**, **लज्जमाण**; (उप पृ ५५; महा; आचा)। कृ—**लज्जणिज्ज**; (से ११, २६; णाया १, ८—पत्र १४३)।

लज्जण } न [लज्जन] १ शरम, लाज; (सा ८; राज)।
लज्जणय } २ वि. लज्जा-कारक; "किं एत्तो लज्जणयं... ...जं पहरिज्जइ दीणे पलायमाणे पमत्ते वा" (सुपा २१५; भवि)।

लज्जा स्त्री [लज्जा] १ लाज, शरम; (औप; कुमा; प्रासू ६६; गा ६१०)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)। ३ संयम; (भग २, ५; औप)।

लज्जापइत्तअ (शौ) वि [लज्जयितृ] लजाने वाला; "जुवइवेसलज्जापइत्तअं" (मा ४२)।

लज्जालु वि [लज्जालु] लज्जावान्, शरमिंदा; (उप १७६ टी)।

लज्जालु } स्त्री [लज्जालु] १ लता-विशेष; (षड्;
लज्जालुआ } हे २, १५६; १७४)। २ लज्जा वाली
लज्जालुइणी } स्त्री; (षड्; हे २, १५६; १७४; सुर २, १५६; गा १२७; प्राकृ ३५)।

लज्जालुइणी स्त्री [दे] कलह-कारिणी स्त्री; (षड्)।

लज्जालुइर } वि [लज्जालु] लज्जाशील, शरमिंदा। स्त्री—
लज्जालुर } °री; (गा ४८२; ६१२ अ)।

लज्जाव सक [लज्जय्] शरमिंदा बनाना। लज्जावेदि (शौ); (नाट—मृच्छ ११०)। कृ—**लज्जावणिज्ज**; (स ३६८; भवि)।

लज्जावण वि [लज्जन] शरमिन्दा करने वाला; (पणह १, ३—पत्र ५४)।

लज्जाविय वि [लज्जित] लजवाया हुआ; (पणह १, ३—पत्र ५४)।

लज्जिअ वि [लज्जित] १ लज्जा-युक्त; (पाअ)। २ न. लज्जा, शरम "न लज्जिअं अप्पणोवि पलिआणं" (श्रा १४)।

लज्जिर वि [लज्जितृ] लज्जा-शील; (हे २, १४५; गा १५०; कुमा; वज्जा ८; भवि)। स्त्री—°री; (पि ५६६)।

लज्जु स्त्री [रज्जु] १ रस्सी; २ वि. रस्सी की तरह सरल, सीधा; "चाई लज्जू धन्ने तवस्सी" (पणह २, ५—पत्र १४६; भग)।

लज्जु वि [लज्जावत्] लज्जा-युक्त, लज्जा वाला; "एसणासमिओ लज्जू गामे अनियओ चरे" (उत्त ६, १७)।

लज्जु देखो **रिज्जु**=ऋजु; (भग)।

लज्झ° देखो **लभ**।

लट्ट } न [दे] १ खसखस आदि का तेल; (पभा ३१)।
लट्टय } २ कुसुम्भ; "लट्टयवसणा" (दे ७, १७)।

लट्टा स्त्री [दे. लट्टा] धान्य-विशेष, कुसुम्भ धान्य; (पव १५४)।

लट्टा स्त्री [लट्वा] १ वृक्ष-विशेष; (कुमा)। २ कुसुम्भ; (बृह १)। ३ गौरेया, पक्षि-विशेष; ४ भ्रमर, भौंरा; ५ वाद्य-विशेष; (दे २, ५५)।

लट्ठ वि [दे] १ अन्यासक्त; (दे ७, २६)। २ मनोहर, सुन्दर, रम्य; (दे ७, २६; पाअ; णाया १, १; पणह १, ४; सुर १, २६; कुप्र ११; श्रु ६; पुप्फ ३४; सार्ध ११; धण ५; सुपा १५६)। ३ प्रियंवद, प्रिय-भाषी; (दे ७, २६)। ४ प्रधान, मुख्य; "खमियव्वो अवराहो ममावि पाविट्ठलट्ठस्स" (उप ७२८ टी)। °दंत पुं [°दन्त] १ एक जैन मुनि; (अनु १)। २ द्वीप-विशेष, एक अन्तर्द्वीप; ३ द्वीप-विशेष में रहने वाला मनुष्य; (ठा ४, २—पत्र २२६; इक)।

लट्ठुरी स्त्री [दे] सुन्दर, रमणीय; (कुप्र २१०)।

लट्ठि स्त्री [यष्टि] लाठी, छड़ी; (औप; कुमा)।

लट्ठिअ न [दे] खाद्य-विशेष; "जेहाहिं लट्ठिएणं भोच्चा कज्जं साहिंति" (सुज्ज १०, १७)।

लडह वि [दे] १ रम्य, सुन्दर; (दे ७, १७; सुपा ६; सिरि ४७, ८७५; गउड; औप; कप्प; कुमा; हेका २६५; सण; भवि)। २ सुकुमार, कोमल; (काप्र ७६५; भवि)। ३ विदग्ध, चतुर; (दे ७, १७)। ४ प्रधान मुख्य; (कुमा)।

लडहक्खमिअ वि [दे] विघटित, वियुक्त; (दे ७, २०)।

लडहा स्त्री [दे] विलासवती स्त्री; (षड्)।

लडाल देखो **णडाल**; (प्राकृ ३७; पि २६०)।

लड्डिय न [दे] लाड़, छोह, प्यार; (भवि)।

लड्डुअ } पुं [**लड्डुक**] लड्डू, मोदक; (गा ६४१; प्रयौ
लड्डुग } ८३; कुप्र २०६; भवि; पउम ८४, ४; पिंड ३७७)।

लड्डुयार वि [**लड्डुककार**] लड्डू बनाने वाला, हलवाई; (कुप्र २०६)।

लढ सक [**स्मृ**] स्मरण करना, याद करना। लढइ; (हे ४, ७४)। वकृ—**लढंत**; (कुमा)।

लढिअ वि [**स्मृत**] याद किया हुआ; (पाअ)।

लण्ह वि [**श्लक्ष्ण**] १ चिकना, मसृण; (सम १३७; ठा ४, २; औप; कप्पू)। २ अल्प, थोड़ा; ३ न. लोहा, धातु-विशेष; (हे २, ७७; प्राकृ १८)।

लत्त वि [**लस, लपित**] उक्त, कथित; (सुपा २३४)।

लत्ता } स्त्री [दे] १ लात, पार्ष्णि-प्रहार; (सुपा २३८;
लत्तिआ } ठा २, ३—पत्र ६३)। २ आतोद्य-विशेष; (ठा २, ३; आचा २, ११, ३)।

लदण } (मा) देखो **रयण**=रत्न; (अभि १८४; प्राकृ
लदन } १०२)।

लद्द सक [दे] भार भरना, बोझ डालना, गुजराती में 'लादवुं'। हेकृ—**लद्दउं**; (सुपा २७५)।

लद्दण न [दे] भार-क्षेप; (स ५३७)।

लद्दी स्त्री [दे] हाथी आदि की विष्ठा, गुजराती में 'लीद'; (सुपा १३७)।

लद्ध वि [**लब्ध**] प्राप्त; (भग; उवा; औप; हे ३, २३)।

लद्धि स्त्री [**लब्धि**] १ क्षयोपशम, ज्ञान आदि के आवारक कर्मों का विनाश और उपशान्ति; (विसे २६६७)। २ सामर्थ्य-विशेष, योग आदि से प्राप्त होती विशिष्ट शक्ति; (पव २७०; संबोध २८)। ३ अहिंसा; (पण्ह २, १—पत्र ६६)। ४ प्राप्ति, लाभ; (भग ८, २)। ५ इन्द्रिय और मन से होने वाला विज्ञान, श्रुत ज्ञान का उपयोग; (विसे ४६६)। ६ योग्यता; (अणु)। °**पुलाअ** पुं [°**पुलाक**] लब्धि-विशेष-संपन्न मुनि; "संघाइयाण कज्जे चुण्णिज्जा चक्कवट्टिमवि जीए। तीए लद्धीइ जुओ लद्धिपुलाओ" (संबोध २८)।

लद्धिअ वि [**लब्ध**] प्राप्त; (वे ६६)।

लद्धिल्ल वि [**लब्धिमत्**] लब्धि-युक्त; (पंच १, ७)।

लद्धुं } देखो **लभ**।
लद्धूण }

लप्पसिया स्त्री [दे] लपसी, एक प्रकार का पक्वान्न; (पव ४)।

लब्भ नीचे देखो।

लभ सक [**लभ्**] प्राप्त करना। लभइ, लभए; (आचा; कस; विसे १२१५)। भवि—लच्छिसि, लभिस्सं, लभिस्सामि; (उव; महा; पि ५२५)। कर्म—लज्भइ, लब्भइ; (महा ६०, १६; हे १, १८७; ४, २४६; कुमा)। संकृ—**लभिय, लद्धुं, लद्धूण**; (पंच ५, १६४; आचा; काल)। हेकृ—**लद्धुं**; (काल)। कृ—**लब्भ**; (पण्ह २, १; विसे २८३७; सुपा ११; २३३; स १७५; सण)।

लय सक [**ला**] ग्रहण करना। लएइ, लयंति; (उव)। कर्म—लइज्जइ, लिज्जइ; (भवि; सिरि ६६३)। वकृ—**लयंत**; (वज्जा २८; महा; सिरि ३७५)। संकृ—**लइ, लएवि, लएविणु** (अप); (पिंग; भवि)। देखो **ले**=ला।

लय न [दे] नव-दम्पति का आपस में नाम लेने का उत्सव; (दे ७, १६)।

लय देखो **लव**=लव; (गउड; से ५, १४)।

लय पुं [**लय**] १ श्लेष; २ मन की साम्यावस्था; (कुमा)। ३ लीनता, तल्लीनता; ४ तिरोभाव; (विसे २६६६)। ५ संगीत का एक अंग, स्वर-विशेष; (स ७०४; हास्य १२३)।

लय° देखो **लया**। °**हरय** न [°**गृहक**] लता-गृह; (सुपा ३८१)।

लयंग न [**लताङ्ग**] संख्या-विशेष, चौरासी लाख पूर्व; "पुव्वाण सयसहस्सं चुलसीइगुणं लयंगमिह होइ" (जो २)।

लयण वि [दे] १ तनु, कृश, क्षाम; (दे ७, २७; पाअ)। २ मृदु, कोमल; ३ न. वल्ली, लता; (दे ७, २७)।

लयण न [**लयन**] १ तिरोभाव, छिपना; (विसे २८१७; दे ७, २४)। २ अवस्थान; (सुर ३, २०६)। ३ देखो **लेण**; (राज)।

लयणी स्त्री [दे] लता, वल्ली; (पाअ; षड्)।

लया स्त्री [**लता**] १ वल्ली, वल्लरी; (पण्ण १; गा २८; काप्र ७२३; कुमा; कप्प)। २ प्रकार, भेद; "संघाडो त्ति वा लय त्ति वा पगारो त्ति वा एगट्ठा" (बृह १)। ३ तप-विशेष; (पव २७१)। ४ संख्या-विशेष, चौरासी लाख लतांग-परिमित संख्या; (जो २)। ५ लम्बा, छड़ी, यष्टि;

"कसप्पहारे य लयप्पहारे य छिवापहारे य" (णाया १, २—पत्न ८६; विपा १, ६—पत्न ६६)। °जुद्ध न [°युद्ध] लड़ने की एक कला, एक तरह का युद्ध; (औप)।

लयापुरिस पुं [दे] वह स्थान जहां पद्म-हस्त स्त्री का चित्रण किया जाय; "पउमकरा जत्थ वहू लिहिज्जए सो लयापुरिसो" (दे ७, २०)।

लल अक [लल्, लड्] १ विलास करना, मौज करना। २ झूलना। ललइ, ललेइ; (प्राकृ ७३; सण; महा; सुपा ४०३)। वकृ—**ललंत, ललमाण**; (गा ४४६; सुर २, २३७; भवि; औप; सुपा १८१; १८७)।

ललणा स्त्री [ललना] स्त्री, महिला, नारी; (तंदु ५०; सुपा ४६७)।

ललाड देखो **णडाल**; (औप; पि २६०)।

ललाम न [ललामन्] प्रधान, नायक; (अभि ६५)।

ललिअ न [ललित] १ विलास, मौज, लीला; (पाअ; पत्र १६६; औप)। २ अंग-विन्यास-विशेष; (पण्ह १, ४)। ३ प्रसन्नता, प्रसाद; (विपा १, २ टी—पत्न २२)। ४ वि. क्रीडा-प्रधान, मौजी; (णाया १, १६—पत्न २०५)। ५ शोभा-युक्त, सुन्दर, मनोहर; (णाया १, १; औप; राय)। ६ मंजु, मधुर; (पाअ)। ७ ईप्सित, अभिलषित; (णाया १, ६)। °मित्त पुं [°मित्र] सातवें वासुदेव का पूर्व-जन्मीय नाम; (सम १५३; पउम २०, १७१)। °वित्थरा स्त्री [°विस्तरा] आचार्य श्रीहरिभद्रसूरि का बनाया हुआ एक जैन ग्रन्थ; (चेइय २५६)।

ललिअंग पुं [ललिताङ्ग] एक राज-कुमार; (उप ६८६ टी)।

ललिअय न [ललितक] छन्द-विशेष; (अजि १८)।

ललिआ स्त्री [ललिता] एक पुरोहित-स्त्री; (उप ७२८ टी)।

लल्ल वि [दे] १ स-स्पृह, स्पृहा वाला; २ न्यून, अधूरा; (दे ७, २६)।

लल्ल वि [लल्ल] अव्यक्त आवाज वाला; (पण्ह १, २)।

लल्लक्क पुं [लल्लक्क] छठवीं नरक-पृथिवी का एक नरक-स्थान; (देवेन्द्र १२)।

लल्लक्क वि [दे] १ भीम, भयंकर; (दे ७, १८; पाअ; सुर १६, १४८), "लल्लक्कनरयविअणाओ" (भत्त ११०)। २ पुं. ललकार, लड़ाई आदि के लिए आह्वान; (उप ७६८ टी)।

लल्लि स्त्री [दे] खुशामद; (धर्मवि ३८; जय १६)।

लल्लिरी स्त्री [दे] मछली पकड़ने का जाल-विशेष; (विपा १, ८—पत्न ८५)।

लव सक [लू] काटना। संकृ—**लविऊण**; हेकृ—**लविउं**; कृ—**लविअव्व**; (प्राकृ ६६)।

लव सक [लप्] बोलना, कहना। लवइ; (कुमा; संबोध १८; सण), लवे; (भास ६६)। वकृ—**लवंत, लवमाण**; (सुपा २६७; सुर ३, ६१)।

लव सक [प्र + वर्तय्] प्रवृत्ति कराना। "णो विन्नू लवंति" (सुज्ज २०)।

लव वि [लप] वाचाट, बकवादी; (सुअ २, ६, १५)।

लव पुं [लव] १ समय का एक सूक्ष्म परिमाण, सात स्तोक, मुहूर्त का सतरहवाँ अंश; (ठा २, ४—पत्न ८६; सम ८५)। २ लेश, अल्प, थोड़ा; (पाअ; प्रासू ६६; ११८; सण)। ३ न. कर्म; (सुअ १, २, २, २०; २, ६, ६)। °सत्तम पुं [°सप्तम] अनुत्तरविमान निवासी देव, सर्वोत्तम देव-जाति; (पण्ह २, ४; उव; सुअ १, ६, २४)।

लवअ पुं [दे, लवक] गोंद, लासा, चेंप, निर्यास; "लवओ गुंदो" (पाअ)।

लवइअ वि [दे, लवकित] नूतन दल से युक्त, अंकुरित, पल्लवित; (औप; भग; णाया १, १ टी—पत्न ५)।

लवंग पुंन [लवङ्ग] १ वृक्ष-विशेष; (पण्ण १—पत्न ३४; कुप्र २४६)। २ वृक्ष-विशेष का फूल; (णाया १, १—पत्न १२; पण्ह २, ५)।

लवण न [लवन] छेदन, काटना; (विसे ३२०६)।

लवण न [लवण] १ लोन, नमक; (कुमा)। २ पुं. रस-विशेष, क्षार रस; (अणु)। ३ समुद्र-विशेष; (सम ६७; णाया १, ६; पउम ६६, १८)। ४ सीता का एक पुत्र, लव; (पउम ६७, १६)। ५ मधुराज का एक पुत्र; (पउम ८६, ४७)। °जल पुं [°जल] लवण समुद्र; (पउम ५७, २७)। °य पुं [°द] लवण समुद्र; (पउम ६४, १३)। देखो **लोण**।

लवणिम पुंस्त्री [लवणिमन्] लावण्य; (कुमा)।

लवल न [लवल] पुष्प-विशेष; (कुमा)।

लवली स्त्री [लवली] लता-विशेष; (सुपा ३८१; कुप्र २४६)।

लवव वि [दे] सुप्त, सोया हुआ; (षड्)।

लविअ वि [लपित] उक्त, कथित; (सुअ १, ६, ३५; कुमा; सुपा २६७)।

लविस न [**लवित्र**] दात्र, घास काटने का एक औज़ार; (दे १, ८२)।

लविर वि [**लपितृ**] बोलने वाला; (सण)। स्त्री—°**रा**; (कुमा)।

लस अक [**लस्**] १ श्लेष करना। २ चमकना। ३ क्रीडा करना। लसइ; (प्राकृ ७२)। वकृ—**लसंत**; (सण)।

लसइ पुं [**दे**] काम, कन्दर्प; (दे ७, १८)।

लसक न [**दे**] तरु-क्षीर, पेड़ का दूध; (दे ७, १८)।

लसण देखो **लसुण**; (सूत्र १, ७, १३)।

लसिर वि [**लसितृ**] १ श्लिष्ट होने वाला; २ चमकने वाला, दीप्र; (से ८, ४४)।

लसुअ न [**दे**] तैल, तेल; (दे ७, १८)।

लसुण न [**लशुन**] ल्हसुन, कन्द-विशेष; (श्रा २०)।

लह देखो **लभ**। लहइ, लहेइ, लहए; (महा; पि ४५७)। भवि—लहिस्सामो; (महा)। कर्म—लहिज्जइ; (हे ४, २४९)। वकृ—**लहंत**; (प्रासू)। संकृ—**लहिउं**, **लहिऊण**; (कुप्र १; महा), **लहेप्पि**, **लहेप्पिणु**, **लहेवि** (अप); (पि ५८८)। कृ—**लहणिज्ज**, **लहिअव्व**; (श्रा १४; सुर ६, ५३; सुपा ४२७)।

लहग पुं [**दे**] वासी अन्न में पैदा होने वाला द्वीन्द्रिय कीट-विशेष; (जी १५)।

लहण न [**लभन**] १ लाभ, प्राप्ति; २ ग्रहण, स्वीकार; (श्रा १४)।

लहर पुं [**लहर**] एक वणिक्-पुत्र; (सुपा ६१७)।

लहरि } स्त्री [**लहरि**, °**री**] तरंग, कल्लोल; (सण; प्रासू
लहरी } ६९; कुमा)।

लहाविअ वि [**लम्भित**] प्रापित, प्राप्त कराया हुआ; (कुप्र २३२)।

लहिअ देखो **लद्ध**; (कप्प; पिंग)।

लहिम देखो **लघिम**; (षड्)।

लहु } वि [**लघु**] १ छोटा, जघन्य; (कुमा; सुपा ३६०;
लहुअ } कम्म ४, ७२; महा)। २ हलका; (से ७, ४४; पाअ)। ३ तुच्छ, निःसार; (पण्ह १, २—पत्र २८; पण्ह २, २—पत्र ११९)। ४ श्लाघनीय, प्रशंसनीय; (से १२, ५३)। ५ थोड़ा, अल्प; (सुपा ३५४)। ६ मनोहर, सुन्दर; (हे २, १२२)। स्त्री—°**ई**, °**वी**; (षड्; प्राकृ २८; गउड; हे २, ११३)। ७ न. कृष्णागुरु, सुगन्धि धूप-द्रव्य विशेष; ८ वीरण-मूल; (हे २, १२२)। ९ शीघ्र, जल्दी; (द्र ४६; पण्ह २, २—पत्र ११९)। १० स्पर्श-विशेष; (अणु)। ११ लघुस्पर्श-नामक एक कर्म-भेद; (कम्म १, ४१)। १२ पुं. एक मात्रा वाला अक्षर; (हे ३, १३४)। °**कम्म** त्रि [°**कर्मन्**] जिसके अल्प ही कर्म अवशिष्ट रहे हों, शीघ्र मुक्ति-गामी; (सुपा ३५४)। °**करण** न [°**करण**] दक्षता, चातुरी; (णाया १, ३—पत्र ९२; उवा)। °**परक्कम** पुं [°**पराक्रम**] ईशानेन्द्र का एक पदाति-सेनापति; (ठा ५, १—पत्र ३०३; इक)। °**संखिज्ज** न [°**संख्येय**] संख्या-विशेष, जघन्य संख्यात; (कम्म ४, ७२)।

लहुअ सक [**लघय्**, **लघु+कृ**] लघु करना। लहुअंति, लहुएसि; (श्रा २०; गा ३४५)। वकृ—**लहुअंत**; (से १५, २७)।

लहुअवड पुं [**दे**] न्यग्रोध वृक्ष; (दे ७, २०)।

लहुआइअ } वि [**लघूकृत**] लघु किया हुआ; (से ६,
लहुइअ } ४; १२, ५४; स २०७; गउड)।

लहुई देखो **लहु**।

लहुग देखो **लहु**; (कप्प; द्र ५८)।

लहुवी देखो **लहु**।

लाइअ वि [**लागित**] लगाया हुआ; (से २, २६; वज्जा ५०)।

लाइअ वि [**दे**] १ गृहीत, स्वीकृत; (दे ७, २७)। २ धृष्ट; (से २, २६)। ३ न. भूषा, मण्डन; (दे ७, २७)। ४ भूमि को गोबर आदि से लीपना; (सम १३७; कप्प; औप; णाया १, १ टी—पत्र ३)। ५ चर्मार्ध, आधा चमड़ा; (दे ७, २७)।

लाइअव्व देखो **लाय**=लावय्।

लाइज्जंत देखो **लाय**=लागय्।

लाइम वि [**दे**] १ लाजा के योग्य, खोई के योग्य; २ रोपण के योग्य, बोने लायक; (आचा २, ४, २, १५; दस ७, ३४)।

लाइल्ल पुं [**दे**] वृषभ, बैल; (दे ७, १९)।

लाउ देखो **अलाउ**; (हे १, ६६; भग; कस; औप)।

लाऊ देखो **अलाऊ**; (हे १, ६६; कुमा)।

लाख (अप) देखो **लक्ख**=लक्ष; (पिंग)।

लाग पुं [**दे**] चुंगी, एक प्रकार का सरकारी कर; गुजराती में 'लागो'; (सिरि ४३३; ४३४)।

लाघव न [**लाघव**] लघुता, लघुपन; (भग; कप्प; सुपा १०३; कुप्र २७७; किरात १६)।

लाघवि वि [**लाघविन्**] लघुता-युक्त, लाघव वाला; (उत्त २६, ४२; आचा)।

लाघविअ न [**लाघविक**] लघुता, लाघव; (ठा ५, ३—पत्र ३४२; विसे ७ टी; सूअ २, १, ५७; भग)।

लाज देखो **लाय**=लाज; (दे ५, १०)।

लाड पुं [**लाट**] देश-वि[illegible]ा ६५८; कुप्र २५४; सत्त ६७ टी; भवि; सण; इक)।

लाडी स्त्री [**लाटी**] लिपि-विशेष; (विसे ४६४ टी)।

लाढ पुं [**लाढ**] देश-विशेष, एक आर्य देश; (आचा; पव २७५; विचार ४६)।

लाढ वि [**दे**] १ निर्दोष आहार से आत्मा का निर्वाह करने वाला, संयमी, आत्म-निग्रही; (सूअ १, १०, ३; सुख २, १८)। २ प्रधान, मुख्य; (उत्त १५, २)। ३ पुं. एक जैन आचार्य; (राज)।

लाण न [**लान**] ग्रहण, आदान; (से ७, ६०)।

लाबू देखो **लाऊ**; (षड्)।

लाभ पुं [**लाभ**] १ नफा, फायदा; (उव; सुख ८, १३)। २ प्राप्ति; (ठा ३, ४)। ३ सुद, ब्याज; (उप ६५७)।

लाभंतराइय न [**लाभान्तरायिक**] लाभ का प्रतिबन्धक कर्म; (धर्मसं ६४८)।

लाभिय } वि [**लाभिक**] लाभ-युक्त, लाभ वाला; (औप; **लाभिल्ल** } कर्म १७)।

लाम वि [**दे**] रम्य, सुन्दर; (औप)।

लामंजय न [**दे**] तृण-विशेष, उशीर तृण; (पाअ)।

लामा स्त्री [**दे**] डाकिनी, डाइन; (दे ७, २१)।

लाय सक [**लागय्**] लगाना, जोड़ना। लाएसि; (विसे ४२३)। वकृ—**लायंत**; (भवि)। कवकृ—**लाइज्जंत**; (से १३, १३)। संकृ—**लाइवि** (अप); (हे ४, ३३१; ३७६)।

लाय सक [**लावय्**] १ कटवाना। २ काटना, छेदना। कृ—**लाइअव्व**; (से १५, ७५)।

लाय देखो **लाइअ**=(दे); "लाउल्लोइय—" (औप)।

लाय वि [**लात**] १ आत्त, गृहीत; २ न्यस्त, स्थापित; (औप)। ३ न. लग्न का एक दोष; "लायाइदोसमुक्कं नरवर अइसोहणं लग्गं" (सुपा १०८)।

लाय पुंस्त्री [**लाज**] १ आर्द्र तण्डुल; २ ब. भ्रष्ट धान्य, भुँजा हुआ नाज, खोई; (कप्पू)।

लायण न [**लागन**] लगवाना; (गा ४५८)।

लायण्ण न [**लावण्य**] १ शरीर-सौन्दर्य-विशेष, शरीर-कान्ति; (पाअ; कुमा; सण; पि १८६)। २ लवणत्व, क्षारत्व; (हे १, १७७; १८०)।

लाल सक [**लालय्**] स्नेह-पूर्वक पालन करना। लालेंति; (तंदु ५०)। कवकृ—**लालिज्जंत** (सुर २, ७३; सुपा १४)।

लालंप अक [**वि + लप्**] विलाप करना। लालंपइ; (प्राकृ ७३)।

लालंपिअ न [**दे**] १ प्रवाल; २ खलीन; ३ आक्रन्दित; (दे ७, २७)।

लालंभ देखो **लालंप**। लालंभइ; (प्राकृ ७३)।

लालण न [**लालन**] स्नेह-पूर्वक पालन; (पउम २६, ८८)।

लालप्प देखो **लालंप**। लालप्पइ; (प्राकृ ७३)।

लालप्प सक [**लालप्य्**] १ खूब बकना। २ बारबार बोलना। ३ गर्हित बोलना। लालप्पइ; (सूअ १, १०, १६)। वकृ—**लालप्पमाण**; (उत्त १४, १०; आचा)।

लालप्पण न [**लालपन**] गर्हित जल्पन; (प[illegible] ३—पत्र ४३)।

लालब्भ } देखो **लालंप**। लालब्भइ, लालम्हइ; (प्राकृ **लालम्ह** } ७३; धात्वा १५०)।

लालय न [**लालक**] लाला, लार; (दे ५, १६)।

लालस वि [**दे**] १ मृदु, कोमल; २ इच्छा; (दे ७, २१)।

लालस वि [**लालस**] लम्पट, लोलुप; (पाअ; हे ४, ४०१)।

लाला स्त्री [**लाला**] लार, मुँह से गिरता जल-लव; (औप; गा ५५१; कुमा; सुपा २२६)।

लालिअ देखो **ललिअ**; "कुसुमिअहरिअंदणकणयदंडपरिरंभलालिअंगीओ" (गउड)।

लालिअ वि [**लालित**] स्नेह-पूर्वक पालित; (भवि)।

लालिच (अप) पुं [**नालिच**] वृक्ष-विशेष; (पिंग)।

लालिल्ल वि [**लालावत्**] लार वाला; (सुपा ५३१)।

लाव सक [**लापय्**] बुलवाना, कहलाना। लावएज्जा; (सूअ १, ७, २४)।

लाव देखो **लावग**; (उप ५०७)।

लावंज न [**दे**] सुगन्धी तृण-विशेष, उशीर, खश; (दे ७, २१)।

लावक } पुं [**लावक**] १ पक्षि-विशेष; (विपा १, ७—
लावग } पत्र ७५; पराह १, १—पत्र ८)। २ वि. काटने वाला; (विसे ३२०६)।

लावणिअ वि [**लावणिक**] लवण से संस्कृत; (विपा १, २—पत्र २७)

लावण्ण } देखो **लायण्ण**; (औप; रंभा; काल; अभि ९३;
लावन्न } भवि)।

लावय देखो **लावग**; (उत्त)।

लाविय (अप) वि [**लात**] लाया हुआ; (भवि)।

लाविया स्त्री [**दे**] उपलोभन; (सूअ १, २, १, १८)।

लाविर वि [**लवितृ**] काटने वाला; (गा ३५५)।

लास न [**लास्य**] १ भरतशास्त्र-प्रसिद्ध गेयपद आदि; (कुमा)। २ नृत्य, नाच; (पात्र)। ३ स्त्री का नाच; ४ वाद्य, नृत्य और गीत का समुदाय; (हे २, ९२)।

लासक } पुं [**लासक**] १ रास गाने वाला; २ जय-
लासग } शब्द बोलने वाला, भाण्ड; (णाया १, १ टी—पत्र २; औप; पराह २, ४—पत्र १३२; कप्प)।

लासय पुं [**लासक, हासक**] १ अनार्य देश-विशेष; २ पुंस्त्री. अनार्य देश-विशेष का रहने वाला; स्त्री—°**सिया**; (औप; णाया १, १—पत्र ३७; इक; अंत)। देखो **ल्हासिय**।

लासयविहय पुं [**दे. लासकविहग**] मयूर, मोर; (दे ७, २१)।

लाह सक [**श्लाघ्**] प्रशंसा करना। लाहइ; (हे १, १८७)।

लाह देखो **लाभ**; (उव; हे ४, ३९०; श्रा १२; णाया १, ९)।

लाहण न [**दे**] भोज्य-भेद, खाद्य वस्तु की भेंट; (दे ७, २१; ६, ७३; सड्ढि ७८ टी; रंभा १३)।

लाहल देखो **णाहल**; (हे १, २५६; कुमा)।

लाहव देखो **लाघव**; (किरात १७)।

लाहवि देखो **लाघवि**; (भवि)।

लाहविय देखो **लाघविअ**; (राज)।

लिअ सक [**लिप्**] लेपन करना, लीपना। लिअइ; (प्राकृ ७१)।

लिअ वि [**लिप्त**] १ लीपा हुआ; (गा ५२८)। २ न. लेप; (प्राकृ ७७)।

लिआर पुं [**लृकार**] 'लृ' वर्ण; (प्राकृ ९)।

लिंक पुं [**दे**] बाल, लड़का; (दे ७, २२)।

लिंकिअ वि [**दे**] १ आश्लिष्ट; २ लीन; (दे ७, २८)।

लिंखय देखो **लंख**; (सुपा ३५९)।

लिंग सक [**लिङ्ग्**] १ जानना। २ गति करना। ३ आलिंगन करना। कर्म—लिंगिज्जइ; (संबोध ५१)।

लिंग न [**लिङ्ग**] १ चिह्न, निशानी; (प्रासू २४; गउड)। २ दार्शनिकों का वेष-धारण, साधु का अपने धर्म के अनुसार वेष; (कुमा; विसे २५८५ टि; ठा ५, १—पत्र ३०३)। ३ अनुमान प्रमाण का साधक हेतु; (विसे १५५०)। ४ पुंश्चिह्न, पुरुष का असाधारण चिह्न; (गउड)। ५ शब्द का धर्म-विशेष, पुंलिंग आदि; (कुमा; राज)। °**ज्झय** पुं [°**ध्वज**] वेष-धारी साधु; (उप ४८६)। °**राजीव** पुं [°**राजीव**] वही अर्थ; (ठा ५, १)।

लिंगि वि [**लिङ्गिन्**] १ साध्य, हेतु से जानी जाती वस्तु; (विसे १५५०)। २ किसी धर्म के वेष को धारण करने वाला, साधु, संन्यासी; (पउम ११, ३; सुर २, १३०); स्त्री—°**णी**; (पुष्फ ४५४)।

लिंगिय वि [**लैङ्गिक**] १ अनुमान प्रमाण; (विसे ९५)। २ किसी धर्म के वेष को धारण करने वाला साधु, सं[illegible] (मोह १०१)।

लिंछ न [**दे**] १ चुल्ली-स्थान, चुल्हा का आश्रय; २ अग्नि-विशेष; (ठा ८ टी—पत्र ४१९)। देखो **लिच्छ**।

लिंड न [**दे**] १ हाथी आदि की विष्ठा, गुजराती में 'लींद'; (णाया १, १—पत्र ६३; उप २६४ टी; ती २)। २ शैवल-रहित पुराना पानी; (पराह २, ५—पत्र १५१)।

लिंडिया स्त्री [**दे**] अज आदि की विष्ठा; गुजराती में 'लिंडी'; (उप पृ २३७)।

लिंत देखो **ले**=ला।

लिंप सक [**लिप्**] लीपना, लेप करना। लिंपइ; (हे ४, १४९; प्राकृ ७१)। कर्म—लिप्पइ; (आचा)। वकृ—**लिंपेमाण**; (णाया १, ६)। कवकृ—**लिप्पंत, लिप्पमाण**; (ओघभा १९५; रयण २९)।

लिंपण न [**लेपन**] लेप, लीपना; (पिंड २४६; सुपा ६१९)।

लिंपाविय वि [**लेपित**] लेप कराया हुआ; (कुप्र १४०)।

लिंपिय वि [**लिप्त**] लीपा हुआ; (कुमा)।

लिंब पुं [**निम्ब**] वृक्ष-विशेष, नीम का पेड़, मराठी में 'लिंब'; (हे १, २३०; कुमा; स ३५)।

लिंब पुं [**दे. लिम्ब**] आस्तरण-विशेष; (णाया १, १—पत्र १३)।

लिंबड (अप) देखो **लिंब**=निम्ब; गुजराती में 'लिंबडो'; (हे ४, ३८७; पि २४७)।
लिंबोहली स्त्री [**दे**] निम्ब-फल; (सूक्त ८६)।
लिकार देखो **लिआर**; (पि ५६)।
लिक्क अक [**नि+ली**] छिपना। लिक्कइ; (हे ४, ५५; षड्)। वकृ—**लिक्कंत**; (कुमा)।
लिक्ख न [**लेख्य**] लेखा, हिसाब; "लिक्खं गणिऊण चिंतए सिट्ठी" (सिरि ४१८; सुपा ४१५)। देखो **लेक्ख**।
लिक्ख स्त्रीन [**दे**] छोटा स्रोत; (दे ७, २१); स्त्री—°**क्खा**; (दे ७, २१)।
लिक्खा स्त्री [**लिक्षा**] १ लघु यूका; (दे ८, ६६; सं ६७)। २ परिमाण-विशेष; (इक)।
लिखाव (अशो) सक [**लेखय्**] लिखवाना। भवि—लिखापयिस्सं; (पि ७)।
लिखापित (अशो) वि [**लेखित**] लिखवाया हुआ; (पि ७)।
लिच्छ सक [**लिप्स्**] प्राप्त करने को चाहना। लिच्छइ; (हे २, २१)।
लिच्छ देखो **लिंछ**; (ठा ८—पत्र ४३७)।
लिच्छवि देखो **लेच्छइ**=लेच्छकि; (अंत)।
लिच्छा स्त्री [**लिप्सा**] लाभ की इच्छा; (उप ६३०; प्राकृ २३)।
लिच्छु वि [**लिप्सु**] लाभ की चाह वाला; (सुख ६, १; कुमा)।
लिज्जिअ (अप) वि [**लात**] गृहीत; (पिंग)।
लिट्टिअ न [**दे**] १ चाटु, खुशामद; (दे ७, २२)। २ वि. लम्पट, लोलुप; (सुपा ५६३)।
लिट्टु देखो **लेट्टु**; (वसु)।
लित्त वि [**लिप्त**] १ लेप-युक्त, लिपा हुआ; (हे १, ६; कुमा; भवि)। २ संवेष्टित; (सूअ १, ३, ३, १३)।
लित्ति पुंस्त्री [**दे**] खड्ग आदि का दोष; (दे ७, २२)।
लिप्प देखो **लित्त**; (गा ५१६; गउड)।
लिप्प देखो **लेप्प**; (कुप्र ३८४)।
लिप्पंत } देखो **लिंप**।
लिप्पमाण }
लिब्भंत देखो **लिह**=लिह्।
लिल्लिर वि [**दे**] १ हरा, आर्द्र; २ हरा रँग वाला; "अइ-लिल्लिरपट्टबंधयासिसेया चोरसु पट्टबंधं व जो फुडं तत्थ उव्वहइ" (धर्मवि ७३)।
लिवि } स्त्री [**लिपि, °पी**] अक्षर-लेखन-प्रक्रिया; (सम
लिवी } ३५; भग)।
लिस अक [**स्वप्**] सोना, शयन करना। लिसइ; (हे ४, १४६)।
लिस सक [**श्लिष्**] आलिंगन करना। भवि—लिसिस्सामो; (सूअ २, ७, १०)।
लिसय वि [**दे**] तनूकृत, क्षीण; (दे ७, २२)।
लिस्स देखो **लिस**=श्लिष्। लिस्संति; (सूअ १, ४, १, २)।
लिह सक [**लिख्**] १ लिखना। २ रेखा करना। लिहइ; (हे १, १८७; प्राकृ ७०)। कर्म—लिक्खइ; (उव)। प्रयो—लिहावेइ, लिहावंति; (कुप्र ३४८; सिरि १२७८)।
लिह सक [**लिह्**] चाटना। लिहइ; (कुमा; प्राकृ ७०)। कर्म—लिहिज्जइ, लिब्भइ; (हे ४, २४५)। वकृ—**लिहंत**; (भत्त १४२)। कवकृ—**लिब्भंत**; (से ६, ४१)। कृ—**लेज्झ**; (णाया १, १७—पत्र २३२)।
लिहण न [**लेहन**] चाटन; (उर १, ८; षड्; रंभा १६)।
लिहण न [**लेखन**] १ लिखना, लेख; (कुप्र ३६८)। २ रेखा-करण; (तंदु ५०)। ३ लिखवाना; "पत्तयणलिहणं सहस्से लक्खे जिणभवणकारवणं" (संबोध ३६)।
लिहा स्त्री [**लेखा**] देखो **रेहा**=रेखा; "इक्क च्चिय मह भइणी मयणा धन्नाण धू(? धु)रि लहइ लिहं" (सिरि ६७७)।
लिहावण न [**लेखन**] लिखवाना; (उप ७२४)।
लिहाविय वि [**लेखित**] लिखवाया हुआ; (स ६०)।
लिहिअ वि [**लिखित**] १ लिखा हुआ; (प्रासू ५८)। २ उल्लिखित; (उवा)। ३ रेखा किया हुआ, चित्रित; (कुमा)।
लिहिअ (अप) वि [**लात**] लिया हुआ, गृहीत; (पिंग)।
लीढ वि [**लीढ**] १ चाटा हुआ; (सुपा ६५१)। २ स्पृष्ट; "नरिंदसिरि(? सिर)कुसुमलीढपायवीढं" (कुप्र ५)। ३ युक्त; (पव १२५)।
लीण वि [**लीन**] लय-युक्त; (कुमा)।
लील पुं [**दे**] यज्ञ; (दे ७, २३)।
लीला स्त्री [**लीला**] १ विलास, मौज; २ क्रीड़ा; (कुमा; पाअ; प्रासू ६१)। ३ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**वई** स्त्री [°**वती**] १ विलास-वती स्त्री; (प्रासू ६१)। २ छन्द-विशेष; (पिंग)। °**वह** वि [°**वह**] लीला-वाहक; (गउड)।
लीलाइअ न [**लीलायित**] १ क्रीड़ा, केलि; (कप्पू)। २ प्रभाव; "धम्मस्स लीलाइयं" (उप १०३१ टी)।

लीलाय सक [लीलाय्] लीला करना । वकृ—**लीलायंत**; (णाया १, १—पत्र १३; कप्प) । कृ—**लीलाइयव्व**; (गउड) ।
लीव पुं [दे] बाल, बालक; (दे ७, २२; सुर १५, २१८)।
लीहा देखो **लिहा**; (णाया १, ८—पत्र १४५; कुमा; भवि; सुपा १०६; १२४) ।
लुअ सक [लू] छेदना, काटना । लुएज्जा; (पि ४७३) ।
लुअ देखो **लुंप** । लुअइ; (प्राकृ ७१) ।
लुअ वि [लून] काटा हुआ, छिन्न; (हे ४, २५८; गा ८; से ३, ४२; दे ७, २३; सुर १३, १७५; सुपा ५२४) ।
लुअ वि [लुप्त] १ जिसका लोप किया गया हो वह; २ न. लोप; (प्राकृ ७७) ।
लुअंत वि [लूनवत्] जिसने छेदन किया हो वह; (धात्वा १५१) ।
लुंक वि [दे] सुप्त, सोया हुआ; (दे ७, २३) ।
लुंकणी स्त्री [दे] लुकना, छिपना; (दे ७, २४) ।
लुंख पुं [दे] नियम; (दे ७, २३) ।
लुंखाय पुं [दे] निर्णय; (दे ७, २३) ।
लुंखिअ वि [दे] कलुष, मलिन; (से १५, ४२) ।
लुंच सक [लुञ्च्] १ बाल उखाड़ना । २ अपनयन करना, दूर करना । लुंचइ; (भवि) । भूका—लुंचिंसु; (आचा) ।
लुंचिअ वि [लुञ्चित] केश-रहित किया हुआ, मुण्डित; (कुप्र २६१; सुपा ६४१) ।
लुंछ सक [मृज्, प्र + उञ्छ्] मार्जन करना, पोंछना । लुंछइ; (हे ४, १०५; प्राकृ ६७; धात्वा १५१) । वकृ—**लुंछंत**; (कुमा) ।
लुंट सक [लुण्ट्] लूटना । लुंटंति; (सुपा ३५२) । वकृ—**लुंटंत**; (धर्मवि १२३) । कवकृ—**लुंटिज्जंत**; (सुर २, १४) ।
लुंटण न [लुण्टन] लूट; (सुर २, ४६; कुमा) ।
लुंटाक वि [लुण्टाक] लूटने वाला, लुटेरा; (धर्मवि १२३) ।
लुंठग वि [लुण्ठक] खल, दुर्जन; "वेढवंदवेढिआ उवहसि- अमाया लुंठगलोएणा, अणुकंपिज्जंती धम्मिअजणेण" (सुख २, ६) ।
लुंठिअ वि [लुण्ठित] बलाद् गृहीत, जबरदस्ती से लिया हुआ; (पिंग) ।
लुंप सक [लुप्] १ लोप करना, विनाश करना । २ उत्पी- डन करना । लुंपइ, लुंपहा; (प्राकृ ७१; सूअ १, ३, ४, ७) । कर्म—लुप्पइ; (आचा), लुप्पए; (सूअ १, २, १, १३) । कवकृ—**लुप्पंत, लुप्पमाण**; (पि ५४२; उवा) । संकृ—**लुंपित्ता**; (पि ५८२) ।
लुंपइत्तु वि [लोपयितृ] लोप करने वाला; (आचा; सूअ २, २, ६) ।
लुंपणा स्त्री [लोपना] विनाश; (पण्ह १, १—पत्र ६) ।
लुंपित्तु वि [लोप्तृ] लोप करने वाला; (आचा) ।
लुंबी स्त्री [दे. लुम्बी] १ स्तबक, फलों का गुच्छा; (दे ७, २८; कुमा; गा ३२२; कुप्र ४६०) । २ लता, वल्ली; (दे ७, २८) ।
लुक्क अक [नि + ली] लुकना, छिपना । लुक्कइ; (हे ४, ५५; षड्) । वकृ—**लुक्कंत**; (कुमा; वज्जा ५६) ।
लुक्क अक [तुड्] टूटना । लुक्कइ; (हे ४, ११६) ।
लुक्क वि [दे] सुप्त, सोया हुआ; (षड्) ।
लुक्क वि [निलीन] लुका हुआ, छिपा हुआ; (गा ४६; ५५८; पिंग) ।
लुक्क वि [रुग्ण] १ भग्न; (कुमा) । २ बिमार, रोगी; (हे २, २) ।
लुक्क वि [लुञ्चित] मुण्डित, केश-रहित; (कप्प; पिंड २१७) ।
लुक्कमाण देखो **लोअ**=लोक् ।
लुक्किअ वि [तुडित] टूटा हुआ, खण्डित; (कुमा) ।
लुक्किअ वि [निलीन] लुका हुआ, छिपा हुआ; (पिंग) ।
लुक्ख पुं [रूक्ष] १ स्पर्श-विशेष, लूखा स्पर्श; (ठा १; सम ४१) । २ वि. रूक्ष स्पर्श वाला, स्नेह-रहित, लूखा; (णाया १, १—पत्र ७३; कप्प; औप) । देखो **लूह**=रूक्ष ।
लुग्ग वि [दे. रुग्ण] १ भग्न, भाँगा हुआ; (दे ७, २३; हे २, २; ४, २५८) । २ रोगी, बिमार; (हे २, २; ४, २५८; षड्) ।
लुच्छ देखो **लुंछ**=मृज् । लुच्छइ; (षड्) ।
लुट्ट सक [लुण्ट्] लूटना । लुट्टइ; (षड्) ।
लुट्ट देखो **लोट्ट**=स्वप् । लुट्टइ; (कुमा ६, १००) ।
लुट्ट वि [लुण्टित] लूटा गया; (धर्मवि ७) ।
लुढ पुं [लोष्ट] रोड़ा, ईंट आदि का टुकड़ा; (दे ७, २६)।
लुढ देखो **लुद्ध**; (प्राकृ २१) ।
लुढ अक [लुठ्] लुढकना, लेटना । वकृ—**लुढमाण**; (स २५४) ।

लुढिअ वि [लुठित] लेटा हुआ; (सुपा ५०३; स ३६६)।

लुण देखो **लुअ**=लू। लुणइ; (हे ४, २४१)। कर्म—लुणिज्जइ, लुव्वइ; (प्राप्र; हे ४, २४२)। संकृ—**लुणिऊण, लुणेऊण**; (प्राकृ ६६; षड्), **लुणेप्पि** (अप); (पि ५८८)।

लुणिअ वि [लून] काटा हुआ; (धर्मवि १२६; सिरि ४०४)।

लुत्त वि [लुप्त] लोप-प्राप्त; "करेइ लुत्तो इकारो त्थ" (चेइय ६७७)।

लुत्त न [लोप्त्र] चोरी का माल; (श्रावक ६३ टी)।

लुद्ध पुं [लुब्ध] १ व्याध; (पण्ह १, १; निचू ४)। २ वि. लोलुप, लम्पट; (पाअ; विपा १, ७—पत्र ७७; प्रासू ७६)। ३ न. लोभ; (बृह ३)।

लुद्ध न [लोध्र] गन्ध-द्रव्य-विशेष; "सिणाणं अदुवा कक्कं लुद्धं पउमगाणि अ" (दस ६, ६४)। देखो **लोद्ध**=लोध्र।

लुप्पंत } देखो **लुंप**।
लुप्पमाण }

लुब्भ } अक [लुभ्] १ लोभ करना। २ आसक्ति करना। **लुभ** } लुब्भइ, लुब्भसि; (हे ४, १५३; कुमा), लुभइ; (षड्)। कृ—**लुभियव्व**; (पण्ह २, ५—पत्र १४६)।

लुभ देखो **लुह**=मृज्। लुभइ; (संक्षि ३५)।

लुरणी स्त्री [दे] वाद्य-विशेष; (दे ७, २४)।

लुल देखो **लुढ**। लुलइ; (पिंग)। वकृ—**लुलंत, लुलमाण**; (सुपा ११७; सुर १०, २३१)।

लुलिअ वि [लुठित] लेटा हुआ; (सुर ४, ६८)।

लुलिअ वि [लुलित] घूर्णित, चलित; (उवा; कुमा; काप्र ८६३)।

लुव देखो **लुअ**=लू। लुवइ; (धात्वा १५१)।

लुव्व° देखो **लुण**।

लुह सक [मृज्] मार्जन करना, पोंछना। लुहइ; (हे ४, १०५; षड्; प्राकृ ६६; भवि)।

लुहण न [मार्जन] शुद्धि; (कुमा)।

लूअ देखो **लुअ**=लून; (षड्)।

लूआ स्त्री [दे] मृग-तृष्णा, सूर्य-किरण में जल की भ्रान्ति; (दे ७, २४)।

लूआ स्त्री [लूता] १ वातिक रोग-विशेष; (पंचा १८, २७; सुपा १४७; लहुअ १५)। २ जाल बनाने वाला कृमि, मकड़ी; (ओघ ३२३; दे)।

लूड सक [लुण्ट्] लूटना, चोरी करना। लूडइ, लूडेइ, लूडेह; (धर्मवि ८०; संवेग २६; कुप्र ५६)। हेकृ—**लूडेउं**; (सुपा ३०७; धर्मवि १२४)। प्रयो—वकृ—**लूडावंत**; (सुपा ३५२)।

लूड वि [लुण्ट] लूटने वाला; स्त्री—°**डी**;

"सो नत्थि एत्थ गामे जो एयं महमहंतलायण्णं।
तरुणाण हिययलूडिं परिसक्कंतिं निवारेइ ॥"
(हेका २६०; काप्र ६१७)।

लूडण न [लुण्टन] लूट, चोरी; (स ४४१)।

लूडिअ वि [लुण्टित] लूटा हुआ; (स ५३६; पउम ३०, ६२; सुपा ३०७)।

लूण देखो **लुअ**=लून; (दे ७, २३; सुपा ५२१; कुमा)।

लूण न [लवण] १ लून, नमक; (जी ४)। २ पुं. वनस्पति-विशेष; (श्रा २०; धर्म २)। देखो **लवण**।

लूर सक [छिद्] काटना। लूरइ; (हे ४, १२४)।

लूरिअ वि [छिन्न] काटा हुआ; (कुमा ६, ८३)।

लूस सक [लूषय्] १ वध करना, मार डालना। २ पीड़ना, कदर्थन करना, हैरान करना। ३ दूषित करना। ४ चोरी करना। ५ विनाश करना। ६ अनादर करना। ७ तोड़ना। ८ छोटे को बड़ा और बड़े को छोटा करना। लूसंति, लूसयति, लूसएज्जा; (सूअ १, ३, १, १४; १, ७, २१; १, १४, १६; १, १४, २५)। भूका—लूसिंसु; (आचा)। संकृ—**लूसिउं**; (श्रा १२)।

लूसअ } वि [लूषक] १ हिंसक, हिंसा करने वाला; २ **लूसग** } विनाशक; (सूअ २, १, ५०; १, २, ३, ६)। ३ प्रकृति-क्रूर, निर्दय; ४ भक्षक; (सूअ १, ३, १, ८)। ५ दूषित करने वाला; (सूअ १, १४, २६)। ६ विराधक, आज्ञा नहीं मानने वाला; (सूअ १, २, २, ६; आचा)। ७ हेतु-विशेष; (ठा ४, ३—पत्र २५४)।

लूसण वि [लूषण] ऊपर देखो; (आचा; औप)।

लूसिअ वि [लूषित] १ लुण्टित, लुटा गया; (श्रा १२)। २ उपद्रुत, पीडित; (सम्मत्त १७५)। ३ विनाशित; (संबोध १०)। ४ हिंसित; (आचा)।

लूह सक [मृज्, रूक्षय्] पोंछना। लूहेइ, लूहेंति; (राय; णाया १, १—पत्र ५३)। संकृ—**लूहित्ता**; (पि ५८२)।

लूह वि [रूक्ष] १ लूखा, स्नेह-रहित; (आचा; पिंड १२६; उव)। २ पुं. संयम, विरति, चारित्र; (सूअ १, ३, १,

३)। ३ न. तप-विशेष, निर्विकृतिक तप; (संबोध ५८)। देखो लुक्ख ।

लूहिय वि [रूक्षित] पोंछा हुआ; (णाया १,१—पत्र १६; कप्प; औप)।

ले सक [ला] लेना, ग्रहण करना । लेइ; (हे ४, २३८; कुमा)। वकृ—**लिंत**; (सुपा ५३२; पिंग)। संकृ—**लेवि** (अप); (हे ४, ४४०)। हेकृ—**लेविणु** (अप); (हे ४, ४४१)।

लेक्ख न [लेख्य] १ व्यवहार, व्यापार; (सुपा ४२४)। २ लेखा, हिसाब; (कुप्र २३८)।

लेक्खा देखो **लिहा**; (गउड)।

लेख देखो **लेह**=लेख; (सम ३५)।

लेखापित देखो **लिखापित**; (पि ७)।

लेच्छइ पुं [लेच्छकि] १ क्षत्रिय-विशेष; २ एक प्रसिद्ध राज-वंश; (सुअ १, १३, १०; भग; कप्प; औप; अंत)।

लेच्छइ पुं [लिप्सुक, लेच्छकि] १ वणिक्, वैश्य; २ एक वणिग्-जाति; (सुअ २, १, १३)।

लेच्छारिय वि [दे] खरण्टित, लिप्त; (पिंड २१०)।

लेज्झ देखो **लिह**=लिह् ।

लेट्ठु पुंन [लेष्टु] रोड़ा, ईंट पत्थर आदि का टुकड़ा; (विसे २४६६; औप; उव; कप्प; महा)।

लेडु } पुंन [दे, लेष्टु] ऊपर देखो; (पाअ; दे ७, २४)।
लेडुअ }

लेडुक्क पुं [दे] १ रोड़ा, लोष्ठ; २ वि. लम्पट; (दे ७, २६)।

लेढिअ न [दे] स्मरण, स्मृति; (दे ७, २५)।

लढुक्क पुं [दे] रोड़ा, लोष्ठ; (दे ७, २४; पाअ)।

लेण न [लयन] १ गिरि-वर्ती पाषाण-गृह; (णाया १, २—पत्र ७६)। २ बिल, जन्तु-गृह; (कप्प)। °**विहि** पुंस्त्री [°विधि] कला-विशेष; (औप)। देखो **लयण**=लयन ।

लेप्प न [लेप्य] भित्ति, भींत; (धर्मसं २६; कुप्र ३००)।

लेलु देखो **लेडु**; (आचा; सुअ २, २, १८; पिंड ३४६)।

लेव पुं [लेप] १ लेपन; (सम ३६; पउम २, २८)। २ नाभि-प्रमाण जल; (ओघभा ३४)। ३ पुं. भगवान् महावीर के समय का नालंदा-निवासी एक गृहस्थ; (सुअ २, ७, २)। °**कड**, °**ड** वि [°कृत] लेप-मिश्रित; (ओघ ५६५; पत्र ४ टी—पत्र ४६; पडि)।

लेवण न [लेपन] लेप-करण; (पत्र १३३)।

लेस पुं [लेश] १ अल्प, स्तोक, लव, थोड़ा; (पाअ; दे ७, २८)। २ संक्षेप; (दं १)।

लेस वि [दे] १ लिखित; २ आश्वस्त; ३ निःशब्द, शब्द-रहित; ४ पुं. निद्रा; (दे ७, २८)।

लेस पुं [श्लेष] संश्लेष, संबन्ध, मिलान; (राय)।

लेसण न [श्लेषण] ऊपर देखो; (विसे ३००७)।

लेसणया } स्त्री [श्लेषणा] ऊपर देखो; (औप; ठा ४, ४—पत्र २८०; राज)।
लेसणा }

लेसणी स्त्री [श्लेषणी] विद्या-विशेष; (सुअ २, २, २७; णाया १, १६—पत्र २१३)।

लेसा स्त्री [लेश्या] १ तेज, दीप्ति; २ मंडल, बिम्ब; "चंदस्स लेसं आवरेत्ताणं चिट्ठइ" (सम २६)। ३ किरण; (सुज्ज १६)। ४ देह-सौन्दर्य; (राज)। ५ आत्मा का परिणाम-विशेष, कृष्णादि द्रव्यों के सांनिध्य से उत्पन्न होने वाला आत्मा का शुभ या अशुभ परिणाम; ६ आत्मा के शुभ या अशुभ परिणाम की उत्पत्ति में निमित्त-भूत कृष्णादि द्रव्य; (भग; उवा; औप; पव १५२; जीवस ७४; संबोध ४८; पण्ण १७; कम्म ४, १; ६; ३१)।

लेसिय वि [श्लेषित] श्लेष-युक्त; (स ७६२)।

लेस्सा देखो **लेसा**; (भग)।

लेह देखो **लिह**=लिख् । लेहइ; (प्राकृ ७०)।

लेह देखो **लिह**=लिह् । लेहइ; (प्राकृ ७०)।

लेह (अप) देखो **लह**=लभ् । लेहइ; (पिंग)।

लेह पुं [लेह] अवलेह, चाटन; (पउम २, २८)।

लेह पुं [लेख] १ लिखना, लेखन, अक्षर-विन्यास; (गा २४४; उवा)। २ पत्र, चिट्ठी; (कप्पू)। ३ देव, देवता; ४ लिपि; ५ वि. लेख्य, जो लिखा जाय; (हे २, १८६)। ६ लेखक, लिखने वाला; "अज्जवि लेहत्तणे तणहा" (वज्जा १००)। °**वाह** वि [°वाह] चिट्ठी ले जाने वाला, पत्र-वाहक; (पउम ३१, १; सुपा ५१६)। °**वाहग**, °**वाहय** वि [°वाहक] वही अर्थ; (सुपा ३३१; ३३२)। °**साला** स्त्री [°शाला] पाठशाला; (उप ७२८ टी)। °**रिय** पुं [°चार्य] उपाध्याय, शिक्षक; (महा)।

लेहड वि [दे] लम्पट, लुब्ध; (दे ७, २५; उव)।

लेहण न [लेहन] चाटन, आस्वादन; (पउम ३, १०७)।

लेहणी स्त्री [लेखनी] कलम, लेखिनी; (पउम २६, ५; गा २४४)।

लेहल देखो **लहड**; (गा ४६१)।

लेहा देखो लिहा; (औप; कप्प; कप्पू; कुप्र ३६६; स्वप्न ६२)।
लेहिय वि [**लेखित**] लिखवाया हुआ; (ती ७)।
लेहुड पुं [**दे**] लोष्ट, रोड़ा, ढेला; (दे ७, २४)।
लोअ देखो **रोअ**=रोचय्। संकृ—लोएया; (कस)।
लोअ सक [**लोक्, लोकय्**] देखना। वकृ—**लोअंत**; (नाट)। कवकृ—**लुक्कमाण**; (उप १४१ टी)। संकृ—**लोइउं**; (कुप्र ३)।
लोअ पुं [**लोक**] १ धर्मास्तिकाय आदि द्रव्यों का आधार-भूत आकाश-क्षेत्र, जगत, संसार, भुवन; २ जीव, अजीव आदि द्रव्य; ३ समय, आवलिका आदि काल; ४ गुण, पर्याय, धर्म; ५ जन, मनुष्य आदि प्राणि-वर्ग; (ठा १—पत्र १३; टी—पत्र १४; भग; हे १, १८०; कुमा; जी १४; प्रासू ६२; ७१; उव; सुर १, ६६)। ६ आलोक, प्रकाश; (वज्जा १०६)। °**ग्ग** न [°**ग्र**] १ ईषत्प्राग्भारा-नामक पृथिवी, मुक्त-स्थान; (पाया १, ५—पत्र १०५; इक)। २ मुक्ति, मोक्ष, निर्वाण; (पाअ)। °**ग्गथूभिआ** स्त्री [°**ग्रस्तूपिका**] मुक्त-स्थान, ईषत्प्राग्भारा पृथिवी; (इक)। °**ग्गपडिबुज्झणा** स्त्री [°**ग्रप्रतिबोधना**] वही अर्थ; (इक)। °**णाभि** पुं [°**नाभि**] मेरु पर्वत; (सुज्ज ५)। °**प्पवाय** पुं [°**प्रवाद**] जन-श्रुति, कहावत; (सुर २, ४७)। °**मज्झ** पुं [°**मध्य**] मेरु पर्वत; (सुज्ज ५)। °**वाय** पुं [°**वाद**] जन-श्रुति, लोकोक्ति; (स २६०; मा ४८)। °**गास** पुं [°**काश**] लोक-क्षेत्र, अलोक-भिन्न आकाश; (भग)। °**हाणय** न [°**भाणक**] कहावत, लोकोक्ति; (भवि)। देखो **लोग**।
लोअ पुं [**लोच**] लुञ्चन, केशों का उत्पाटन; (सुपा ६४१; कुप्र १७३; णाया १, १—पत्र ६०; औप; उव)।
लोअ पुं [**लोप**] अ-दर्शन, विध्वंस; (चेइय ६६१)।
लोअंतिय पुं [**लोकान्तिक**] एक देव-जाति; (कप्प)।
लोअग न [**दे, लोचक**] गुण-रहित अन्न, खराब नाज; (कप्प)।
लोअडी (अप) स्त्री [**लोमपटी**] कम्बल; (हे ४, ४२३)।
लोअण पुंन [**लोचन**] आँख, चक्षु, नेत्र; (हे १, ३३; २, १८४; कुमा; पाअ; सुर २, २२२)। °**वत्त** न [°**पत्र**] अक्षि-लोम, बरवनी, पदम; (से ६, ६८)।
लोअणिल्ल वि [**लोचनवत्**] आँख वाला; (सुपा २००)।
लोआणी स्त्री [**दे**] वनस्पति-विशेष; (पराण १—पत्र ३६)।
लोइअ वि [**लोकित**] निरीक्षित, दृष्ट; (गा २७१; स ७१३)।
लोइअ वि [**लौकिक**] लोक-संबन्धी, सांसारिक; (आचा; विपा १, २—पत्र ३०; णाया १, ८—पत्र १६६)।
लोउत्तर वि [**लोकोत्तर**] लोक-प्रधान, लोक-श्रेष्ठ, असाधारण; "लोउत्तरं चरिअं" (श्रा १६; विसे ८७०)। देखो **लोगुत्तर**।
लोउत्तरिय वि [**लोकोत्तरिक**] ऊपर देखो; (श्रा १)।
लोंक वि [**दे**] सुप्त, सोया हुआ; (दे ७, २३)।
लोग देखो **लोअ**=लोक; (ठा ३, २; ३, ३—पत्र १४२; कप्प; कुमा; सुर १, ७६; हे १, १७७; प्रासू २५; ४७)। ७ न. एक देव-विमान; (सम २५)। °**कंत** न [°**कान्त**] एक देव-विमान; (सम २५)। °**कूड** न [°**कूट**] एक देव-विमान; (सम २५)। °**ग्गचूलिआ** स्त्री [°**ग्रचूलिका**] मुक्त-स्थान, सिद्धि-शिला; (सम २२)। °**जत्ता** स्त्री [°**यात्रा**] लोक-व्यवहार; (णाया १, २—पत्र ८८)। °**ट्ठिइ** स्त्री [°**स्थिति**] लोक-व्यवस्था; (ठा ३, ३)। °**दव्व** न [°**द्रव्य**] जीव, अजीव आदि पदार्थ-समूह; (भग)। °**नाभि** पुं [°**नाभि**] मेरु पर्वत; (सुज्ज ५ टी—पत्र ७७)। °**नाह** पुं [°**नाथ**] जगत का स्वामी, परमेश्वर; (सम १; भग)। °**परिपूरणा** स्त्री [°**परिपूरणा**] ईषत्प्राग्भारा पृथिवी, मुक्त-स्थान; (सम २२)। °**पाल** पुं [°**पाल**] इन्द्रों के दिक्पाल, देव-विशेष; (ठा ३, १; औप)। °**प्पभ** पुं [°**प्रभ**] एक देव-विमान; (सम २५)। °**बिंदुसार** पुंन [°**बिन्दुसार**] चौदहवाँ पूर्व-ग्रन्थ; (सम ४४)। °**मज्झावसिअ** पुंन [°**मध्यावसित**] अभिनय-विशेष; (ठा ४, ४—पत्र २८५)। °**मज्झावसाणिअ** पुंन [°**मध्यावसानिक**] वही अर्थ; (राय)। °**रूव** न [°**रूप**] एक देव-विमान; (सम २५)। °**लेस** न [°**लेश्य**] एक देव विमान; (सम २५)। °**वण्ण** न [°**वर्ण**] एक देव-विमान; (सम २५) °**वाल** देखो °**पाल**; (कुप्र १३५)। °**वीर** पुं [°**वीर**] भगवान् महावीर; (उव)। °**सिंग** न [°**शृङ्ग**] एक देव-विमान; (सम २५)। °**सिट्ठ** न [°**सृष्ट**] एक देव-विमान; (सम २५)। °**हिअ** न [°**हित**] एक देव-विमान; (सम २५)। °**यय** न [°**यत**] नास्तिक-प्रणीत शास्त्र, चार्वाक-दर्शन; (णंदि)। °**लोग** पुंन [°**लोक**] परिपूर्ण आकाश-क्षेत्र, संपूर्ण जगत; (उव; पि २०२)। °**वत्त** न [°**वर्त**] एक देव-विमान; (सम २५)। °**हाण** न [°**ख्यान**] लोकोक्ति, जन-श्रुति; (उप ५३० टी)।
लोगंतिय देखो **लोअंतिय**; (पि ४६३)।

लोमिण देखो लोइअ=लौकिक; (धर्मसं ११४८) ।
लोगुत्तर देखो लोउत्तर । °वडिंसय न [°वतंसक] एक देव-विमान; (सम १५) ।
लोगुत्तरिय देखो लोउत्तरिय; (भ्रोघ ७६५) ।
लोट्ट भ्रक [स्वप्] लोटना, सोना । लोट्टइ; (हे ४, १४६) । वकृ—लोट्टंत; (पाभ) ।
लोट्ट भ्रक [लुठ्] १ लेटना । २ प्रवृत्त होना । लोट्टइ, लोट्टती; (प्राकृ ७२; सुभ १, १५, १४) । वकृ—लोट्टंत; (सुपा ४६६) ।
लोट्ट } पुं [दे] १ कच्चा चावल; (निचू ४) । २ पुंसी.
लोट्टय } हाथी का छोटा बच्चा; (णाया १, १—पत्र ६३), स्त्री—°ट्टिया; (णाया १, १) ।
लोट्टिअ वि [दे] उपविष्ट; (दे ७, २५) ।
लोट्टु वि [दे] स्मृत; (षड्) ।
लोट्टु पुं [लोष्ट] रोड़ा, ढेला; (दे ७, २४) ।
लोट्टाविअ वि [लोटित] घुमाया हुआ; (गा ७६९) ।
लोढ सक [दे] कपास निकालना; गुजराती में 'लोढवुं' । वकृ—लोढयंत; (राज) ।
लोढ पुं [दे] १ लोढ़ा, शिलापुत्रक, पीसने का पत्थर; (दस ५, १, ४५; उवा) । २ भ्रोषधि-विशेष, पद्मिनीकन्द; (पव ४; श्रा २०; संबोध ४४) । ३ वि. स्मृत; ४ शयित; (दे ७, २६) ।
लोढय पुं [दे. लोढक] कपास के बीज निकालने का यन्त्र; (गउड) ।
लोढिअ वि [लोठित] लेटवाया हुआ, सोलाया हुआ; (पउम ६१, ६७) ।
लोण न [लवण] १ लून, नमक; २ लावण्य, शरीर-कान्ति; (गा ३१६; कुमा) । ३ पुं. वृक्ष-विशेष; (पउम ४२, ७; श्रा २०; पव ४) । ४—देखो लवण; (हे १, १७१; प्राप्र; गउड; भ्रौप) ।
लोणिय वि [लावणिक] लवण-युक्त, लवण-संबन्धी; (भ्रोघ ७७६) ।
लोण्ण न [लावण्य] शरीर-कान्ति; (प्राकृ ५) ।
लोत्त न [लोप्त्र] चोरी का माल; (स १७३) ।
लोद्ध पुं [लोध्र] वृक्ष-विशेष; (णाया १, १—पत्र ६५; पण्ण १; सुभ १, ४, २, ७; भ्रौप; कुमा) । देखो लुद्ध=लोध्र ।
लोद्ध देखो लुद्ध=लुब्ध; (पाभ; सुर ३, ४७; १०, २२३; प्राप्र) ।
लोप्प देखो लुंप । "जो एवं वायं लोप्पइ सो तिण्णिवि लोप्पयंतो किं केणावि धरिउं पारीअइ" (स ४६२) ।
लोभ सक [लोभय्] लुभाना, लालच देना । कवकृ—लोभिज्जंत; (सुपा ६१) ।
लोभ पुं [लोभ] लालच, तृष्णा; (प्रासू; कप्प; भ्रौप; उव; ठा ३, ४) । २ वि. लोभ-युक्त; (पंचि) ।
लोभि } वि [लोभिन्] लोभ वाला; (कम्म ४, ४०;
लोभिल्ल } पउम ४, ४६) ।
लोम पुंन [लोमन्] रोम, रोआँ, रूँगटा; (उवा) । °पक्खि पुं [°पक्षिन्] रोम के पंख वाला पक्षी; (ठा ४, ४—पत्र २७१) । °स वि [°श] लोम-युक्त; (भवि) । °हत्थ पुं [°हस्त] पींछी, रोमों का बना हुआ झाड़ू; (विपा १, ७—पत्र ७८; भ्रौप; णाया १, २) । °हरिस पुं [°हर्ष] १ नरकावास-विशेष; (देवेन्द्र २७) । २ रोमाञ्च, रोमों का खड़ा होना; (उत्त ५, ३१) । °हार पुं [°हार] मार कर धन लूटने वाला चोर; (उत्त ६, २८) । °हार पुं [°हार] रूँगटों से लिया जाता आहार, त्वचा से ली जाती खुराक; (भग; सुअनि १७१) ।
लोमसी स्त्री [दे] १ ककड़ी, खीरा; (उप पृ १५२) । २ वल्ली-विशेष, ककड़ी का गाछ; (बृह १) ।
लोर पुंन [दे] १ नेत्र, आँख; २ अश्रु, आँसु; (पिंग) ।
लोल भ्रक [लुठ्] १ लेटना । २ सक. विलोडन करना । लोलइ; (पिंड ४१२; पिंग), "लोलेइ रवखसबलं" (पउम ७१, ४०) । वकृ—लोलंत; लोलमाण; (कप्प; पिंग; पउम ५३, ७६) ।
लोल सक [लोठय्] लेटाना । लोलेइ, लोलेमि; (उवा) ।
लोल वि [लोल] १ लम्पट, लुब्ध, भ्रासक्त; (णाया १, १ टी—पत्र ५; भ्रौप; कप्प; पाभ; सुपा ३६५) । २ पुं. रत्नप्रभा नरक का एक नरकावास; (ठा ६—पत्र ३६५; देवेन्द्र ३०) । ३ शर्कराप्रभा-नामक द्वितीय नरक-पृथिवी का प्रथम नरकेन्द्रक—नरक-स्थान; (देवेन्द्र ७) । °मज्झ पुं [°मध्य] नरकावास-विशेष; (ठा ६ टी—पत्र ३६७) । °सिट्ठ पुं [°शिष्ट] नरकावास-विशेष; (ठा ६ टी) । °वत्त पुं [°वर्त] नरकावास-विशेष; (ठा ६ टी; देवेन्द्र ७) ।
लोलंठिअ न [दे] चाटु, खुशामद; (दे ७, २२) ।
लोलण न [लोठन] १ लेटना, पोलन; (सुभ १, ५, १, १७) । २ लेटवाना; (उप ५१०) ।
लोलपच्छ पुं [लोलपाक्ष] नरक-स्थान-विशेष; (देवेन्द्र ३०) ।

लोलिक्क न [लौल्य] लम्पटता, लोलुपता; (पण्ह १, ३—पत्र ४३)।
लोलिम पुंस्त्री [लोलत्व] ऊपर देखो; (कुमा)।
लोलुअ वि [लोलुप] १ लम्पट, लुब्ध; (पउम १, ३०; १६, ४७; पात्र; सुर १४, ३३)। २ पुं. रत्नप्रभा नरक का एक नरकावास; (ठा ६—पत्र ३६५)। °च्चुअ पुं [°च्युत] रत्नप्रभा-नरक का एक नरक-स्थान; (उवा)।
लोलुंचाविअ वि [दे] रचित-तृष्णा, जिसने तृष्णा की हो वह; (दे ७, २५)।
लोलुव देखो **लोलुअ**; (सुम २, ६, ४४)।
लोव सक [लोपय्] लोप करना, विध्वंस करना। लोवेइ; (महा)।
लोव पुंन [लोप] विध्वंस, विनाश, अ-दर्शन; "कम-लोव-कारया" (कुप्र ४), "मा दुट्ठे आसु वहिं लोवं व तुमं अदं-सणा होसु" (धर्मवि १३३)।
लोह देखो **लोभ**=लोभ; (कुमा; प्रासू १७६)।
लोह पुंन [लोह] १ धातु-विशेष, लोहा; (विपा १, ६—पत्र ६६; पात्र; कुमा)। २ धातु, कोई भी धातु; "जह लोहाण सुवन्नं तणाण धन्नं धणाण रयणाइं" (सुपा ६३६)। °कार पुं [°कार] लोहार; (कुप्र १८८)। °जंघ पुं [°जङ्घ] १ भारत में उत्पन्न द्वितीय प्रतिवासुदेव राजा; (सम १५४)। २ राजा चण्डप्रद्योत का एक दूत; (महा)। °जंघवण न [°जङ्घवन] मथुरा के समीप का एक वन; (ती ७)।
लोह वि [लौह] लोहे का, लोह-निर्मित; (से १४, २०)।
लोहंगिणी स्त्री [लोहाङ्गिनी] छन्द-विशेष; (पिंग)।
लोहल पुं [लोहल] शब्द-विशेष, अव्यक्त शब्द; (षड्)।
लोहार पुं [लोहकार] लोहार, लोहे का काम करने वाला शिल्पी; (दे ८, ७१; ठा ८—पत्र ४१७)।
लोहि° } देखो **लोही**; "कुंभीसु य पयणेसु य लोहियसु य
लोहिअ° } कंदुलोहिकुंभीसु" (सुमनि ८०; ७६)।
लोहिअ पुं [लोहित] १ लाल रंग, रक्त-वर्ण; २ वि. रक्त वर्ण वाला, लाल; (से २, ४; उवा)। ३ न. रुधिर, खून; (पउम ५, ७६)। ४ गोत्र-विशेष, जो कौशिक गोत्र की एक शाखा है; (ठा ७—पत्र ३६०)।
लोहिअंक पुं [लोहित्यक, लोहिताङ्क] अठासी महाग्रहों में तीसरा महाग्रह; (सुज्ज २०)।
लोहिअक्ख पुं [लोहिताक्ष] १ एक महाग्रह; (ठा २, ३—पत्र ७७)। २ चमरेन्द्र के महिष-सैन्य का अधिपति; (ठा ५, १—पत्र ३०२; इक)। ३ रत्न की एक जाति; (णाया १, १—पत्र ३१; कप्प; उत्त ३६, ७६)। ४ एक देव-विमान; (देवेन्द्र १३२; १४४)। ५ रत्नप्रभा पृथिवी का एक काण्ड; (सम १०४)। ६ एक पर्वत-कूट; (इक)।
लोहिआ } अक [लोहिताय्] लाल होना। लोहिआइ,
लोहिआअ } लोहिआअइ; (हे ३, १३८; कुमा)।
लोहिआमुह पुं [लोहितामुख] रत्नप्रभा का एक नरका-वास; (स ८८)।
लोहिच्च } न [लौहित्यायन] गोत्र-विशेष; (सुज्ज
लोहिच्चायण } १०, १६ टी; इक; सुज्ज १०, १६)।
लोहिणी } स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष, कन्द-विशेष; (पण्ण
लोहिणीहू } १—पत्र ३५), "लोहिणीहू य थीहू य" (उत्त ३६, ६६; सुख ३६, ६६)।
लोहिल्ल वि [दे. लोभिन्] लम्पट, लुब्ध; (दे ७, २५; पउम ८, १०७; गा ४४४)।
लोही स्त्री [लौही] लोहे का बना हुआ भाजन-विशेष, कराह; (उप ८३३; चारु १)।
ल्हस देखो **लस**=लस्। ल्हसइ; (प्राकृ ७२)।
ल्हस अक [स्रंस्] खिसकना, सरकना, गिर पड़ना। ल्हसइ; (हे ४, १९७; षड्)। वकृ—**ल्हसंत**; (वज्जा ६०)।
ल्हसण न [स्रंसन] खिसकना, पतन; (सुपा ५५)।
ल्हसाव सक [स्रंसय्] खिसकाना। संकृ—**ल्हसाविअ**; (सुपा ३०८)।
ल्हसाविअ वि [स्रंसित] खिसकाया हुआ; (कुमा)।
ल्हसिअ वि [स्रस्त] खिसक कर गिरा हुआ; (कुप्र १८५; वज्जा ८४)।
ल्हसिअ वि [दे] हर्षित; (चंड)।
ल्हसुण देखो **लसुण**; (पण्ण १—पत्र ४०; पि २१०)।
ल्हादि स्त्री [ह्लादि] आह्लाद, प्रमोद, खुशी; (राज)।
ल्हाय पुं [ह्लाद] ऊपर देखो; (धर्मसं २१६)।
ल्हासिय पुं [ल्हासिक] एक अनार्य मनुष्य-जाति; (पण्ह १, १—पत्र १४)।
ल्हिक्क अक [नि+ली] छिपना। ल्हिक्कइ; (हे ४, ५५; षड् २०६)। वकृ—**ल्हिक्कंत**; (कुमा)।
ल्हिक्क वि [दे] १ नष्ट; (हे ४, २५८)। २ गत; (षड्)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि लआराइसद्दसंकलणो चउत्तीसइमो तरंगो समत्तो।